# धातुरूप-कल्पद्रुमः




विद्यानिधि





| | | |
|---|---|---|
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |



# धातुरूप-कल्पद्रुमः

# DHATURUP-KALPADRUMA.

( अर्थात भू-आदि समस्त धातुर यथासम्भव कर्त्तृकर्म्मभाववाच्ये लट्
[वर्त्तमाना, क्री] प्रभृति समस्त विभक्ति, सन्, यङ् [चेक्रीयित]
यङ्लुक् णिच् [ञि, इन् ] क्त ओ तद्धितप्रत्यय द्वारा
साधित प्रयोग, कारक, समास ओ षत्व णत्व विषये
व्यवस्था, उपसर्गादियोगे सप्रमाण प्रयोगभेद,
अर्थभेद एवं व्याकरणशास्त्रीय बहुतर
ज्ञातव्य विषय अति विषदरूपे
एकत्र सङ्कलित )

---

अध्यापक-श्रीमद्गुरुनाथ-विद्यानिधि

सम्पादितः




कलिकाता—

२०।१ सि संख्यक निवेदितालेनस्थित संस्कृतविद्यालयात्
श्रीजानकीनाथकाव्यतीर्थ-भट्टाचार्य्येण
प्रकाशितः

मूल्यं मुद्रात्रयम्—३)

प्राप्तिस्थान—

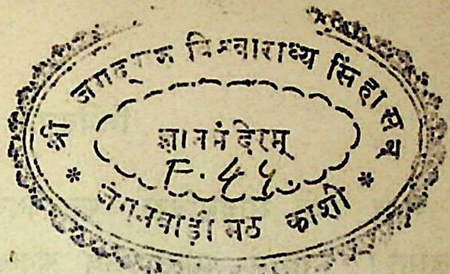
छात्र-पुस्तकालय
निवेदिता लेन वागवाजार,
कलिकाता



१३३२ बङ्गाब्दे पञ्चमं संस्करणम्



Printed by—M. N. Ghosh,
GHOSH MECHINE PRESS
38, *Shibnarayan Das Lane, Colcutta.*




"एकः शब्दः सुप्रयुक्तः सम्यग्ज्ञातः स्वर्गे लोके कामधुग्भवती"ति श्रुतिः।

## निवेदनम्—

संस्कृत-काव्य-व्याकरणादिशास्त्रेषु व्युत्पित्सूनां व्युत्पिपादयिषूणाञ्च सुमनसां किञ्चिदुपचिकीर्षया "धातुरूपकल्पद्रुमो"ऽयं निरमायि। अतीता तावत् पञ्चाब्दी एतन्मुद्रणारम्भस्य। प्रथममितो वामनाकृतिना पत्रेण मुद्रणमस्य प्रवृत्तमासीत्। धातुपाठाश्च तदानीमकारादिक्रमेण विन्यासिषत। व्यवस्थयाऽनया पुस्तकाकृतेरह्वयतरां स्थूलतामुत्पत्स्यमानामाशङ्क्य एकजातीयस्य च सीसकाक्षरस्य अतिभूमा मुद्रायन्त्रनिलयेषु दुर्घटतम इति मत्वा दविष्ठमग्रसरेऽपि मुद्रणकर्म्मणि दत्तशताधिकरजतमुद्रा-जलाञ्जलिना पुनर्भ्वाद्यदादिक्रमेण पाणिन्यादिसम्मतान् धातुपाठानुल्लिख्य शतशोऽन्तरायैरतिमात्रं प्रतिहन्यमानेनापि जगदम्बानुकम्पया श्रममगणिततनुपातेन वसुवृष्टौ चाकृतदृक्पातेन नीतो मया कथञ्चित् सिद्धिभूमिमेष सङ्कल्पः।

अत्र हि माधवीय-धातुवृत्तिप्रभृति-प्राचीन-धातुनिबन्धेभ्योऽपि पदवाक्यपंक्ति-विशेषान् यथाप्रयोजनं समाहृत्य भूप्रभृतीनां धातूनां लट् (वर्त्तमाना, की) प्रभृतिषु सन् यङ्-(चेक्रीयित) णिच (ञि, इन्) आदिषु, कृत्सु च प्रत्ययेषु, कृदन्तानाञ्च पुनस्तद्धिते प्रत्ययेषु, प्रसिद्धानि यावन्ति रूपाणि सम्भवेयुः, प्रयोजनीय-सूत्राद्युपन्यासेन तानि सर्व्वाणि कारक-समास-षत्व-णत्वादीनां विशिष्ट व्यवस्थया सह उपसर्गादियोगेन रूपविशेषान् अर्थविशेषांश्च सप्रमाणमुल्लिख्य सङ्कलितानि, सौत्रिकाणां नामधातूनाञ्च रूपाणि नोपेक्षितानि।

न तु जाने मादृगविद्यः स्वल्पविद्यो वा कीदृश् कृतकार्य्यता-मलभत। मादृशां प्रतिपदमेव स्खलनं सम्भवति खलु। अत्र भ्रान्त्या, सीसकाक्षराणां विपर्य्ययेण, त्रुटितत्वेन, योजितानाञ्च तेषां चटितत्वेन, यान्त्रिकपञ्चीयाणामपि संशोधनादि-दोषेण च, यद्यदप्रीतिकरत्वेन पर्य्यालोचिष्यते, तत्सर्वमेव चन्तव्यं पर-दोषेक्षणसहजान्धदर्शनैः कृपाप्रवणहृदयैर्महात्मभिरिति कृताञ्जलि-प्रणाममभ्यर्थये।

परन्तु कस्यचिदर्व्वाचीनस्य तावदभिनवोऽयं ग्रन्थ इति समुद्भाव्य नायमवमन्येत ननु मनस्विभिः, सुमनोभवो हि मकरन्दो द्विरेफमुखविच्युतोऽपि सुमनसामादरमवकलयतितमा-मिति शम्। * * *

द्वितीय-संस्करण-विज्ञप्तिः।—एतस्मिन् खलु संस्करणे राज-कीयभाषया धात्वर्था व्याख्याताः, रूपाणि च धातूनां बहुशः परिवर्द्धितानि, अवलम्बितश्च शोधनविधौ महान् यत्नः। इत्थं पूर्व्वतः सम्यगुपचीयमानावयवस्यापि ग्रन्थस्य पूर्व्वकल्पितं सुलभमपि मूल्यं दरिद्रविद्यार्थिजनोपकृतिकामनया न वर्द्धित-मिति। * *

तृतीय-संस्करण-विज्ञप्तिः।—वर्त्तमानमहायुद्धनिबन्धनात् काग-दादिमुद्रणोपयोगिवस्तूनां महार्घत्वात् दुर्लभत्वात् च ग्रन्थस्यास्य मूल्यं सार्द्धमुद्राद्वयस्थाने मुद्रात्रयं निर्द्धारितम् इत्येव अस्मिन् संस्करणे विज्ञापनीयो विषयः। इति—

१८४० शकाब्दीया
अक्षयतृतीया } आश्वस्य— प्रकाशकस्य

# स्थूलसूची

# गणपठितधातूनाम् अकारादि-वर्णानुक्रमेण

# सूचिपत्रम्

| धातुः | | | पृष्ठे | धातुः | | | पृष्ठे |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग्रन्थ | चु | उ | ६१२ | घिणि | भ्वा | आ | १२९ |
| ग्रन्थ | चु | " | ६१४ | घुङ् | " | आ | २८३ |
| ग्रस | चु | उ | ६०६ | घुट | " | आ | २०५ |
| ग्रसु | भ्वा | आ | १८० | घुट | तु | प | ४८८ |
| ग्रह | क्र्या | उ | ५६५ | घुण | भ्वा | आ | १३० |
| ग्राम | चु | प | ६२२ | घुण | तु | प | ४८० |
| ग्रुचु | भ्वा | प | ७८ | घुणि | भ्वा | आ | १२९ |
| ग्लुचु | " | प | ७८ | घुन्ष (ङ) | " | आ | १८५ |
| ग्लसु | भ्वा | आ | १८० | घुर | तु | प | ४८१ |
| ग्ला | " | प | २२७ | घुषिर् | भ्वा | प | १८५ |
| ग्लुन्च | भ्वा | प | ७८ | घुषिर् | चु | प | ६०० |
| ग्लुच् | " | प | ७६ | घुणँ | तु | प | ४८० |
| ग्लुन्चु | " | प | ७६ | घूरी | दि | आ | ४१६ |
| ग्लेपृ | " | आ | ११७ | घूर्णँ | भ्वा | आ | १३० |
| ग्लेपृ | " | आ | ११८ | घृ | " | प | २७७ |
| ग्लेवृ | " | आ | १५२ | घृ | चु | उ | ५९० |
| ग्लै | " | प | २६२ | घृ | अ | उ | ३२५ |
| | | | | घृणि | भ्वा | आ | १२९ |
| | घ | | | घृणु | तु | उ | ५२८ |
| घग्घ | भ्वा | प | ६६ | घृषु | भ्वा | प | १२६ |
| घघ | " | प | ६६ | घ्रा | " | प | २६८ |
| घट | " | आ | २१३ | | ङ | | |
| घट | चु | उ | ६०० | ङुङ् | भ्वा | आ | २८३ |
| घट | " | उ | ६०६ | | च | | |
| घटि | " | उ | ६०९ | चक | भ्वा | आ | ९९ |
| घट्ट | भ्वा | आ | ९४ | चक | " | प | २१० |
| घट्ट | चु | प | ५८८ | चकासृ | अ | प | ३७९ |
| घस्ळ | भ्वा | प | १९८ | | | | |

---

# त्यादि-विभक्तयः ।

## लट् ( वर्त्तमाना, ती )

| परस्मैपद । | | | | आत्मनेपद । | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन | | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
| प्रः पुः | ति(प्, ङ्) | तस् | अन्ति | प्रः पुः | ते | आते | अन्ते |
| मः पुः | सि(प्, ङ्) | थस् | थ | मः पुः | से | आथे | ध्वे |
| उः पुः | मि(प्, ङ्) | वस् | मस् | उः पुः | ए | वहे | महे |

## विधिलिङ् ( सप्तमी, खी )

| परस्मैपद । | | | | आत्मनेपद । | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन | | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
| प्रः पुः | यात् | याताम् | युस् | प्रः पुः | ईत | ईयाताम् | ईरन् |
| मः पुः | यास् | यातम् | यात | मः पुः | ईथास् | ईयाथाम् | ईध्वम् |
| उः पुः | याम् | याव | याम | उः पुः | ईय | ईवहि | ईमहि |

## लोट् ( पञ्चमी, गो )

| | परस्मैपद। | | | | आत्मनेपद। | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन | | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
| प्रः पुः | तु(प्, ङ्) | ताम् | अन्तु | प्रः पुः | ताम् | आताम् | अन्ताम् |
| मः पुः | हि | तम् | त | मः पुः | स्व | आथाम् | ध्वम् |
| उः पुः | ङ)आनि(प) | (ङ)आव(प) | (ङ)आम(प) | उः पुः | ऐ (प) | आवहै (प्) | आमहै (प) |

## लङ् ( ह्यस्तनी, घी )

| | परस्मैपद। | | | | आत्मनेपद। | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन | | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
| प्रः पुः | दि(प्,ङुङ्) | ताम् | अन् | प्रः पुः | त | आताम् | अन्त |
| मः पुः | सि(प्,सुङ्) | तम् | त | मः पुः | थास् | आथाम् | ध्वम् |
| उः पुः | अम ( पम् ) | व | म | उः पुः | इ | वहि | महि |

## लुङ् ( अद्यतनी, टी )

| | परस्मैपद। | | | | आत्मनेपद। | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन | | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
| प्रः पुः | दि (प्) | ताम् | अन् | प्रः पुः | त (न्) | आताम् | अन्त |
| मः पुः | सि (प्) | तम् | त | मः पुः | थास् | आथाम् | ध्वम् |
| उः पुः | अम् | व | म | उः पुः | इ | वहि | महि |

## लिट् ( परोक्षा, ठी )

| | परस्मैपद। | | | | आत्मनेपद। | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन | | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
| प्रः पुः | अट्(णल्,णा) | अतुस् | उस् | प्रः पुः | ए | आते | इरे |
| मः पुः | थल्(प्,ङ्) | अथुस् | अ | मः पुः | से | आथे | ध्वे |
| उः पुः | (णा)अट्(णल्) | व | म | उः पुः | ए | वहे | महे |

## लुट् ( श्वस्तनी, डी )

| | परस्मैपद। | | | | आत्मनेपद। | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन | | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
| प्रः पुः | ता (ङ्) | तारौ | तारस् | प्रः पुः | ता (ङ्) | तारौ | तारस् |
| मः पुः | तासि | तास्थस् | तास्थ। | मः पुः | तासे | तासाथे | ताध्वे |
| उः पुः | तास्मि | तास्वस् | तास्मस् | उः पुः | ताहे | तास्वहे | तास्महे |

## आशीर्लिङ् ( आशीः, ढो )

| | परस्मैपद। | | | आत्मनेपद। | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
| प्रः पुः | यात् | यास्ताम् | यासुस् | सीष्ट | सीयास्ताम् | सीरन् |
| मः पुः | यास् | यास्तम् | यास्त | सीष्ठास् | सीयास्थाम् | सीध्वम् |
| उः पुः | यासम् | यास्व | यास्म | सीय | सीवहि | सीमहि |

## लृट् ( भविष्यन्ती, तो )

| | परस्मैपद। | | | आत्मनेपद। | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
| प्रः पुः | स्यति | स्यतस् | स्यन्ति | स्यते | स्येते | स्यन्ते |
| मः पुः | स्यसि | स्यथस् | स्यथ | स्यसे | स्येथे | स्यध्वे |
| उः पुः | स्यामि | स्यावस् | स्यामस् | स्ये | स्यावहे | स्यामहे |

## लृङ् ( क्रियातिपत्ति, थी )

| | परस्मैपद। | | | आत्मनेपद। | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
| प्रः पुः | स्यत् | स्यताम् | स्यन् | स्यत | स्येताम् | स्यन्त |
| मः पुः | स्यस् | स्यतम् | स्यत | स्यथास् | स्येथाम् | स्यध्वम् |
| उः पुः | स्यम् | स्याव | स्याम | स्ये | स्यावहि | स्यामहि |

# धातुरूप-कल्पद्रुमः
## वा
# धातुवृत्तिसारसंग्रहः।

ॐ नमो गणेशाय ।

अनीशः स्वात्महेशोऽपि विना यत्करुणाकणम् ।
इष्टदं सर्व्वसेव्यं त,-मुमापादमुपास्महे ॥

## अथ भ्वादयः ।

१ । भू, सत्तायाम् । (To be, to exist.)

'भू' इति धातुः सत्तास्वरूपेऽर्थे वर्त्तत इत्यर्थः । सत्तेहात्म-भरणमिति । यदाह हरिः—"आत्मानमात्मनाबिभ्रदस्तीति व्यपदिश्यते ।" इति । हेलाराजश्च—अस्ति आत्मानं बिभर्त्ति, सत्तां भावयतीति यावदिति । कैयटकारोऽपीत्थं व्याचष्टे । नैरुक्ताश्च अस्तीत्युत्पन्नस्यात्मधारणमाचष्ट इति । सत्तेति सतो भावः—प्रवृत्तिनिमित्तं सर्वधात्वर्थानुगतं क्रियासामान्यमिति रमानाथः ।

सत्तायामित्यर्थनिर्देशस्तु उपलक्षणं हिमवतो गङ्गा प्रभवति, मल्लो मल्लाय प्रभवति, ग्रामस्य प्रभवति, परान् पराभवति, इदमेवं सम्भवति, स्थाली तण्डुलान् सम्भवति, शमनुभवती-त्यादौ प्रकाशनाङ्गनिःसरणपर्य्याप्तैश्वर्य्याभिभवोत्प्रे चान्तर्भावन-संवेदनादीनामवगमात् । न च मन्तव्यं—प्रभूप्रभृतयः समुदाया

एवैतेष्वर्थेषु वर्त्तन्त इति। एवं हीह भुवः क्रियावाचित्वाभावात् समुदायस्य च भ्वादावपाठान्न धातुत्वमिति तन्निबन्धनप्रत्ययाभावात् प्रभवतीत्यादि रूपं न स्यात्। किञ्च उपसर्गसम्बन्धमन्तरेण "भूतिकामः पुत्रो भवति बहुर्वै भवतो भ्रातृव्य" इत्यादावैश्वर्य्योत्पत्तिलिप्सादयोऽवगम्यन्ते। नचोत्पत्तिः सत्ता, उत्पन्नस्यात्मधारणलक्षणमित्युक्तत्वात्। तथाच नैरुक्ताः— "जायते अस्ति विपरिणमते वर्द्धते अपक्षीयते विनश्यती"ति क्रमेण षड्भावविकारानाहुः। लोकेऽपि सत्ताजन्मनोर्भिन्नत्वादेव घटः किमुत्पद्यत इति पृष्टो न कश्चिदप्यस्तीति प्रतिवक्ति। तथाचार्थेनापि 'तत्र जातः' 'तत्र भव' इति भेदेन निर्द्दिश्यते, तस्माद्धातुरेवानेकार्थाभिधायी, प्रादयस्तु प्रकरणादिवद्विशेषस्मृतिहेतवो द्योतकाः। द्योतकापेक्षा च शब्दशक्तिस्वाभाव्यात् क्वचिदेव, यथा हरिशब्दो भेकादावेव। एवमुत्तरत्राप्यर्थनिर्देशोऽतन्त्रम्। यथा बीजसन्ताने वपिः पठितः केशान् वपतीत्यादौ छेदनेऽपि वर्त्तते, तथा करोतिरभूतप्रादुर्भावे पठितोऽस्मानभितः पादौ कुरु, यः प्रथमः शकलः परापतेत् स स्वरुः कार्य्यः, चोरङ्कारमाक्रोशतीत्यादौ स्थापननिर्म्मलीकरणोच्चारणादौ वर्त्तते, चोरङ्कारमित्यत्र चोरशब्दमुच्चार्य्येति ह्यर्थः, न त्वचोरश्चोरः क्रियते। अर्थनिर्देशस्योपलक्षणत्व एव कुर्द खुर्द गुर्द गुद क्रीड़ायामेवेत्येवकारोपपत्तिः। गाधृ प्रतिष्ठालिप्सयोरित्यादौ त्वनेकार्थाभिधानं प्रपञ्चार्थम्। तदेवं सत्स्वपि बहुष्वर्थेषु माङ्गलिकत्वात् सुप्रसिद्धत्वात् सर्व्वपदार्थव्यापित्वाच्च सत्तानिर्देशः कृतः। उक्तं च भाष्ये—'न सत्तां पदार्थो व्यभिचरती'ति। हरिणाप्युक्तम्—

"सम्बन्धिभेदात् सत्तैव भिद्यमाना गवादिषु।
जातिरित्युच्यते तस्यां सर्वे शब्दा व्यवस्थिताः॥
तां प्रातिपदिकार्थं च धात्वर्थं च प्रचक्षते॥" इति।

माङ्गलिकत्वमपि प्रसङ्गात् सत्ताख्यस्य परब्रह्मणः स्मरणेन। आदौ भुवो निर्देशो भूशब्दस्य महाव्याहृतिस्मरणेन माङ्गलिकत्वात् सर्व्वत्रात्वर्थव्याप्यर्थाभिधायित्वात् 'भुवादयो धातव' इति प्रसङ्गात् भुवादिशब्दस्य साधुत्वलाभहेतुत्वाच्च। कृभ्वस्तयो हि क्रियासामान्यवचनाः। सामान्यं च विशेषेषु प्रत्येकं परिसमाप्यते। आत्मभरणं च पाकादिष्वप्यस्तीति भ्वस्त्योः क्रियासामान्यवाचित्वम्। उक्तं च कैयटे—"तद्यथात्मभरणं विरुद्धार्थसमवायैः पाकादिभिरविरुद्धैकार्थसमवाय"मिति। तेन यथा ब्राह्मणो गार्ग्य इत्यत्र ब्राह्मण्यं सामान्यं गार्ग्यत्वं विशेषस्तद्वदिहाप्यात्मभरणं सामान्यं पाकादिकं तु विशेषः। करोतेरपि क्रियासामान्यमर्थः, ब्राह्मणो गार्ग्य इतिवत्, किं करोति? पचतीति क्रियासामानाधिकरण्यदर्शनात्, इत्थं च करोत्यर्थः प्रश्नः पचत्यादिभिर्व्याकृतो भवति। अत्यन्तभेदे तु करोत्यर्थो न व्याकृतो भवेत्, यथा किं करोति देवदत्तः? घट इति। कथं तर्हि करोत्यर्थविशेषत्वे सर्वधात्वर्थानामासनमपि करणमिति, किं करोतीति प्रश्ने न करोत्यास्त इति करोत्यर्थनिषेधेनोत्तरं संगच्छते। उच्यते—नात्र क्रियासामान्यं पृच्छ्यते, किन्तु लोकप्रसिद्धो गमनागमनादिविशेषस्तत्रैव लौकिकानां क्रियात्वाभिमानात्, तेन तन्निषेधपूर्वकमास्त इत्युत्तरं युज्यते। यद्वा क्रियासामान्यस्यावश्यम्भावात् विशेषविषय एव प्रश्न इति तन्निराकरणेन प्रतिवचनं बोद्धव्यम्।

क्रिया च यत्खलु सिद्धमसिद्धं वा शब्देन साध्यत्वेनाभिधीयमानमाश्रितक्रमं तदिति वैयाकरणानां मतम्।

तदुक्तम्—

"यावत् सिद्धमसिद्धं वा साध्यत्वेन प्रतीयते।
आश्रितक्रमरूपत्वात् सा क्रियेत्यभिधीयते॥" इति।

तदेवं भुवः क्रियावाचित्वात् पाठाच्च 'भुवादयो धातव' इति

धातुत्वे, वर्त्तमाने लडिति वर्त्तमानत्वोपाधिकार्थाद्धातोर्लट् 'प्रत्ययः परश्चे'ति प्रत्ययसंज्ञकः परस्तात् ।

ननु बहवः क्षणा धातुवाच्यास्तत्र केचन भूताः, भविष्यन्तश्चेति तेषामविद्यमानत्वात् कथं वर्त्तमानत्वं धात्वर्थविशेषणम् ? उच्यते—नेह विद्यमानत्वं वर्त्तमानत्वं, किं तर्हि प्रारब्धापरिसमाप्तत्वं, तच्च यावतः क्षणसमूहस्य फलावधिप्रवृत्तिः, तावतः प्राक् फलजननादभेदानाध्यवसितस्यास्त्येव । एवं च काल्पनिकसमूहाकारेण विद्यमानत्वं वर्त्तमानत्वमित्युक्तं भवति ।

वर्त्तमानश्चतुर्व्विध इति बहवः । उक्तञ्च—"प्रवृत्तोपरतश्चैव वृत्ताविरत एव च । नित्यप्रवृत्तिः सामीप्यो वर्त्तमानश्चतुर्व्विधः ॥" इति ( १ )

## भूधातो रूपाणि ।

भू, सेट्, अकर्मकः, परस्मैपदी । कर्त्तरि, लट्—( वर्त्तमाना, की ) भवति, भवतः, भवन्ति । भवसि, भवथः, भवथ । भवामि, भवावः, भवामः ।

लिङ्—( सप्तमी, खी ) भवेत्, भवेताम्, भवेयुः । भवेः, भवेतम्, भवेत । भवेयम्, भवेव, भवेम । ( २ )

---

( १ ) "भूतः पञ्चविधस्तत्र भविष्यंश्च चतुर्विधः । वर्त्तमानो द्विधा स्यात् इत्येकादश कल्पनाः ॥" अत्र तावदद्यतनानद्यतनव्यामिश्रसामान्यरूपाश्चत्वारो मुख्यभूता भेदाः सामान्यमपि विशेषेभ्यो व्यावृत्तेर्भेदः । परोक्षत्वनंद्यतनभूतभेदो नतु भेद इति न पृथक् गण्यते । "आशंसायां भूतवच्च" इत्यतिदिष्टभूतकार्य्यो भविष्यंस्तथैको गौणो भूत इति भूतः पञ्चविधः भविष्यंस्तु गौणाभावात् अद्यतनादिभेदेन चतुर्विधः । वर्त्तमानसामीप्य इत्यतिदिष्टवर्त्तमानकार्य्यौ भूतभविष्यन्तौ गौणौ । तदेवमेकादश भेदाः कालस्य ।

( २ ) "विधिनिमन्त्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्" । विधिः प्रेरणम्—भृत्यादेः

लोट्—( पञ्चमी, गी ) भवतु, भवतात्; भवताम्, भवन्तु । भव, भवतात्; भवतम्, भवत । भवानि, भवाव, भवाम । ( १ )

लङ्—( ह्यस्तनी, घी ) अभवत्, अभवताम्, अभवन् । अभवः, अभवतम्, अभवत । अभवम्, अभवाव, अभवाम ( २ )

लुङ्—( अद्यतनी, टी) अभूत्, अभूताम्, अभूवन् । अभूः, अभूतम्, अभूत । अभूवम्, अभूव, अभूम । ( ३ )

लिट्—( परोक्षा, ठी) बभूव, बभूवतुः, बभूवुः । बभूविथ, बभूवथुः, बभूव । बभूव, बभूविव, बभूविम । ( ४ )

लुट्—( श्वस्तनी, डी, ) भविता, भवितारौ, भवितारः । भवितासि, भवितास्थः, भवितास्थ । भवितास्मि, भवितास्वः, भवितास्मः । ( ५ )

---

कस्याञ्चित् क्रियायां नियोजनम् । निमन्त्रणम्—नित्यनैमित्तिककर्म्मविषया प्रवर्त्तना । अधीष्टम्—सत्कारपूर्व्विका सर्व्वकर्म्मविषया प्रवर्त्तना । एषु चतुर्ष्वपि प्रवर्त्तना नाम वर्त्तते, सैव लिङर्थः । भेदेन तूपादानं प्रपञ्चार्थं प्रवर्त्तना च प्रवृत्तिहेतुर्धर्म्मः । "प्रवृत्तिहेतुं धर्म्मञ्च प्रवदन्ति प्रवर्त्तनाम् ।" इत्याचार्य्यः । संप्रश्नः—सम्प्रधारणम्, तद्वेदं वा कर्त्तव्यमिति । प्रार्थनं—याचनम् । एषु प्रत्ययार्थविशेषणेषु धातोर्लिङ् स्यात् ।

( १ ) 'लोट् च ।" विध्यादिष्वर्थेषु धातोर्लोट् स्यात् । विध्यादयो विधिलिङ्-प्रस्तावे कथ्यन्ते स्म ।

( २ ) "अनद्यतने लङ्" । अविद्यमानाद्यतनभूतोपाध्यर्थाद्धातोर्लङ् स्यात् ।

( ३ ) "लुङ्" । भूतोपाधिकार्थाद्धातोर्लुङ् स्यात् । "भूतः पञ्चविध" इत्युक्तं ( ४पृः ) तत्रानद्यतने लङ् विधानात्ततोऽन्यः सर्व्वो भूतोऽत्र गृह्यते । अनद्यतन इति बहुव्रीहिनिर्द्देशात् न व्यामिश्रे लङः प्रसङ्गः ।

( ४ ) "परोक्षे लिट् ।" भूतानद्यतनपरोक्षतोपाधिकार्थवृत्ते र्धातोर्लिट् स्यात् । धातुवाच्यायाः क्रियाया इन्द्रियेणासन्निकर्षात् परोक्षत्वे सिद्धे परोक्षग्रहणं साधन-परोक्षतार्थम् । उत्तमविषये चित्तव्याक्षेपात् परोक्षतासम्भवः ।

आशीर्लिङ्—( आशीः, ढौ) भूयात्, भूयास्ताम्, भूयासुः। भूयाः, भूयास्तम्, भूयास्त। भूयासम्, भूयास्व, भूयास्म। (१)

लृट्—( भविष्यन्तो, तौ ) भविष्यति, भविष्यतः, भविष्यन्ति। भविष्यसि, भविष्यथः, भविष्यथ। भविष्यामि, भविष्यावः, भविष्यामः। (२)

लृङ्—( क्रियातिपत्तिः, थौ ) अभविष्यत्, अभिष्यताम्, अभविष्यन्। अभविष्यः, अभविष्यतम्, अभविष्यत। अभविष्यम्, अभविष्याव, अभविष्याम। (३)

व्यति—भू; आत्मनेपदी।

कर्त्तरि, लट्—व्यतिभवते (४), व्यतिभवेते (५), व्यति-

---

(५) "अनद्यतने लुट्।" अहरुभयतोऽर्द्धरात्रम् अद्यतनः कालः अविद्यमानाद्यतनभविष्यदुपाधिकार्थाद्धातोर्लुट् स्यात्।

(१) "आशिषि लिङ्लोटौ" इति लिङ्।

(२) "लृट् शेषे च।" क्रियार्थक्रियोपपदादन्यो भविष्यत्कालः शेषस्तत्र शेषे, चात् क्रियार्थक्रियोपपदे भविष्यति च धातोर्लृट् स्यात्, चतुर्विधी भविष्यदित्युक्तम्, अत्र अनद्यतने लुड्विधानात् अन्यवायं विधिः। अनद्यतन इति बहुव्रीहिनिर्द्देशात् व्यामिश्रेऽप्ययमेव।

(३) "लिङ्निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ।" लिङो निमित्तं हेतुहेतुमद्भावादि, कुतश्चित् वैगुण्यात् क्रियाया अनभिनिर्वृत्तिः क्रियातिपत्तिः अत्र धातोर्लृङ् स्यात्।

(४) व्यतिशब्दः कर्म्मव्यतिहारद्योतनार्थः। तस्य 'ते प्राग्धातोः' ते गत्युपसर्गसंज्ञा धातोः प्राक् प्रयोक्तव्या इति नियमात् पूर्वं प्रयोगः। 'उपसर्गाः क्रियायोगे'। 'गतिश्चे'ति प्रादयो यत्क्रियायुक्तास्तं प्रत्युपसर्गसंज्ञाः सन्तो गतयः। 'इतरेतरस्य व्यतिभवन्ति, अन्योन्यस्य व्यतिभवन्तीत्यत्रेतरेतरान्योन्योपपदाच्चे'ति कर्म्मव्यतिहारलक्षणमात्मनेपदं निषिध्यते। 'अन्योन्योपपदाच्चे'ति चकारेण परस्परोपपदादपि न भवति। परस्परं व्यतिभवन्ति।

(५) 'ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्य'मिति ईदाद्यन्तस्य द्विवचनस्य प्रगृह्यत्वात् 'प्लुतप्रगृह्या अचौ'ति प्रकृतिभावाद्व्यतिभवेते एताविच्यादावयादि न भवति। श्रीपति-

भवन्ते । व्यतिभवसे, व्यतिभवेथे, व्यतिभवध्वे । व्यतिभवे, व्यतिभवावहे, व्यतिभवामहे ।

लङ्—व्यत्यभवत, व्यत्यभवेताम्, व्यत्यभवन्त । व्यत्यभवथाः, व्यत्यभवेथाम्, व्यत्यभवध्वम् । व्यत्यभवे, व्यत्यभवावहि, व्यत्यभवामहि ।

लोट्—व्यतिभवताम्, व्यतिभवेताम्, व्यतिभवन्ताम् । व्यतिभवस्व, व्यतिभवेथाम्, व्यतिभवध्वम् । व्यतिभवै, व्यतिभवावहै, व्यतिभवामहै ।

विधिलिङ्—व्यतिभवेत, व्यतिभवेयाताम्, व्यतिभवेरन् । व्यतिभवेथाः, व्यतिभवेयाथाम्, व्यतिभवेध्वम् । व्यतिभवेय, व्यतिभवेवहि, व्यतिभवेमहि ।

लुङ्—व्यत्यभविष्ट, व्यत्यभविषाताम्, व्यत्यभविषत । व्यत्यभविष्ठाः, व्यत्यभविषाथाम्, व्यत्यभविध्वम् ;(१) व्यत्यभविढ्वम् । व्यत्यभविषि, व्यत्यभविष्वहि, व्यत्यभविष्महि ।

लिट्—व्यतिबभूवे, व्यतिबभूवाते, व्यतिबभूविरे । व्यतिबभूविषे, व्यतिबभूवाथे, व्यभिबभूविढ्वे ; व्यतिबभूविध्वे । व्यतिबभूवे, व्यतिबभूविवहे, व्यतिबभूविमहे ।

लुट्—व्यतिभविता, व्यतिभवितारौ, व्यतिभवितारः । व्यतिभवितासे, व्यतिभवितासाथे, व्यतिभविताध्वे । व्यतिभविताहे, व्यतिभवितास्वहे, व्यतिभवितास्महे ।

आशीर्लिङ्—व्यतिभविषीष्ट, व्यतिभविषीयास्ताम्, व्यतिभविषीरन् । व्यतिभविषीष्ठाः, व्यतिभविषीयास्थाम्, व्यति-

---

मते "एतो द्विवे" इति सूत्रेण सर्वेषामाख्यातिकानाम् एकारान्तानां द्विवचनानां सन्धौ प्रकृतिरिति ।

(१) ध्वमि षत्वस्य पूर्वत्रासिद्धत्वात्'धि चे'ति सलोपे गुणः ।

भविषीध्वम् व्यतिभविषीढ्वम्। व्यतिभविषीय, व्यतिभविषीवहि, व्यतिभविषीमहि।

लृट्—व्यतिभविष्यते, व्यतिभविष्येते, व्यतिभविष्यन्ते। व्यतिभविष्यसे, व्यतिभविष्येथे, व्यतिभविष्यध्वे। व्यतिभविष्ये, व्यतिभविष्यावहे, व्यतिभविष्यामहे।

लृङ्—व्यत्यभविष्यत, व्यत्यभविष्येतां, व्यत्यभविष्यन्त। व्यत्यभविष्यथाः, व्यत्यभविष्येथाम्, व्यत्यभविष्यध्वम्। व्यत्यभविष्ये, व्यत्यभविष्यावहि, व्यत्यभविष्यामहि।

भावकर्म्मणोः। (१)

भावे। लट्—भूयते। लिङ्—भूयेत। लोट्—भूयताम्। लङ्—अभूयत। लिट्—बभूवे (बुभूवे)। लुङ्—अभावि। आशीः—भविषीष्ट, भाविषीष्ट। लुट्—भविता, भाविता। लृट्—भविष्यते, भाविष्यते। लृङ्—अभविष्यत, अभाविष्यत।

---

(१) अर्थविशेषे अकर्म्मकत्वात् भावे, अर्थविशेषे सकर्म्मकत्वात् कर्म्मणि प्रत्ययः। 'अकर्मकाद्भावे सकर्मकात् कर्मणी'ति नियमस्तावदयमाख्यात एव। कृति तु सकर्मकेभ्योऽपि धातुभ्यो भावार्थप्रत्यया भवन्ति। भावकर्मणोरात्मनेपदमेव। 'सार्वधातुके यगि'ति भावकर्मवाचिनि सार्वधातुके लटि लोटि लङि विधिलिङि च यक् (यण्)।

अत्र प्रत्ययेन कर्त्तुरनभिधानात्तृतीया। 'कर्त्तृकरणयोस्तृतीये'ति तिङ्कृत्तद्धितसमासैरनभिहितयोरनयोस्तृतीयोच्यते। तत्र भावस्य युष्मदस्मदर्थाविशेष्यत्वात् प्रथमपुरुष एवात्र व्याख्यायते, स्वतः क्रियाया निवृत्तभेदाया अभिधानादेकवचनमेव भवति, भवद्भ्यां, भवद्भिः, त्वया युवाभ्यां युष्माभिः, मया आवाभ्यामस्माभिर्भूयत इति। भवन्त्यादौ तु प्रत्ययेन कर्त्तुरभिधानात् तत्कृतं बहुत्वम्। भूयते मासः, भूयेते मासौ, भूयन्ते मासाः। "कालभावाध्वगन्तव्याः कर्मसंज्ञा ह्यकर्मणाम्। देशश्चाकर्मणा'मिति मासादयोऽकर्मकाणां कर्माणि। तत्र कर्मणोऽभिधानात् कर्मणि द्वितीया न भवति, सा च तिङादिभिरनभिहिते विधीयते। भूयते भवता मासमित्यत्र भावे लविधानात् कर्मणोऽनभिधानाद्द्वितीया। ननु सकर्मकत्वात् कथं भावे लकारः (त्यादिविभक्तिः)

कर्मणि। आ, लट्—अनुभूयते, अनुभूयेते, अनुभूयन्ते इत्यादि। एवं लोट् लिङ्। लङ्—अन्वभूयत, अन्वभूयेताम्, अन्वभूयन्त इत्यादि। लुङ्—अन्वभावि, अन्वभाविषाताम्, अन्वभविषाताम्; अन्वभाविषत, अन्वभविषत। अन्वभाविष्ठाः, अन्वभविष्ठाः; अन्वभाविषाथाम्, अन्वभविषाथाम्; अन्वभाविध्वम्, अन्वभाविढ्वम्; अन्वभविध्वम्, अन्वभविढ्वम्। लिट्—अनुबभूवे (अनुबुभूवे) इत्यादि व्यतिभूवत्। लुट्—अनुभाविता, अनुभविता इत्यादि। लृट्—अनुभाविष्यते, अनुभविष्यते इत्यादि। आशीः—अनुभाविषीष्ट, अनुभविषीष्ट इत्यादि। सीध्वम्—अनुभविषीध्वम्, अनुभविषीढ्वम्; अनुभाविषीध्वम्, अनुभाविषीढ्वम्। लृङ्—अन्वभाविष्यत, अन्वभविष्यत इत्यादि। सर्वत्रैव द्विवचन-बहुवनेष्वपि रूपाणि कर्त्तव्यानि।

## अन्तरादियोगे।

अन्तर्—भू, अन्तर्भावः। अन्तर्भवति। 'सर्वाण्यन्तर्भवन्ति' मनुः—१२।८७। आविस्—भू, आविर्भावः। आविर्भवति। तिरस्—भू, तिरोभावः। तिरोभवति। तूष्णीम्—

---

उच्यते—कालादिभिर्न कश्चिदप्यकर्मक इति, तद्व्यतिरिक्तेन कर्मणा अकर्मकाणां भावे लविज्ञानात् अनुभूयते सुखमित्यादौ संवेदनाद्यर्थत्वाद्भुवः संवेद्यादिभिरपि सकर्मकत्वात् कर्मण्येव लः। तादृशार्थे अनुभूयते, अनुभूयेते, अनुभूयन्ते इत्याद्युदाहार्य्यम्। लिटि न विशेषः। अत्र केचिदाहुः—'भवतेर' इति श्तिपा निर्द्देशात् भावकर्मणोरत्वं न स्यादिति। अयमस्यार्थस्य कथं प्रतिपादक इति स एव प्रष्टव्यः, तस्य तु प्रयोजनं यङ् लुकि सन्वविषये आमभावे लिट्परत्वे सत्यत्वनिवृत्तिरिति धातुवृत्तिकारः। कातन्त्रादिमते तु वैदिकप्रयोगसाधनविधानाभावात् श्तिव्निर्द्देशादत्वनिवृत्तिरेव मन्यते।

भू, तूष्णीम्भाव: । तूष्णीम्भवति । न्यक्—भू, न्यग्भाव: । न्यग्भवति । पुनर्—भू, पुनर्भाव: पुनर्भवति । प्र—भू, प्रकाश: । ऐश्वर्य्यम् । सामर्थ्यम् । हिमवतो गङ्गा प्रभवति । ग्रामस्य प्रभवति । मल्लो मल्लाय प्रभवति । परा—भू, पराभव:, सक । बली परान् पराभवति । सम्—भू, उत्प्रेक्षा । घटनम् । उत्पत्ति: । मिलनम् । इदमेवं सम्भवति । सम्—भू, णिच्, सक, सम्भावनम् । अभिनन्दनम् । अवबोध: । चिन्ता । सत्कार: । समाश्वासनम् । सम्भावयति । "सम्भावय चिरप्रमूढ़ौ तातौ ।" वीर । अनु—भू, अनुभव: सक । उद्योगी सुखमनुभवति । अभि—भू, अभिभव:, सक । बलवान् शत्रूनभिभवति । वि—भू, ऐश्वर्य्यम् । विभवति । उद्—भू, उद्भव: । उद्भवति । प्रति—भू, प्रतिभूत्वम् । सादृश्यम् । प्रतिभवति । परिभू, परिभव:—अवज्ञा, सक । परिभवति ।

## कर्मकर्त्तरि । (१)

अभि—भू, (कर्मवद्भावे) आ, लट्—अभिभूयते शत्रु: स्वयमेव । (भावे) अभिभूयते शत्रुणा स्वेनैव (स्वयमेव) इति सर्वत्रैव कर्मवत् प्रयोगा ज्ञातव्या: । लुङि तविभक्तौ तु—"अच: कर्मकर्त्तरी"ति चिणादेशविकल्पनात् पक्षे सिच्, तस्य पूर्ववत् चिण्वदिट् (इज्वदिट्) तत्पक्षे वृद्धौ अभ्यभावि, अभ्यभाविष्ट, अभ्यभविष्ट इति त्रैरूप्यम् । कर्मकर्त्तरि भावे लुङि चिणीव [इजीव] अभ्यभावि शत्रुणा स्वेनैवेति ।

---

(१) 'कर्मवत् कर्मणा तुल्यक्रिय:' इति पाणिनि: । कर्मव्यापारोपसर्ज्जनकर्त्तृव्यापारार्थौ धातुर्यत्र सौकर्य्यातिशयप्रतिपादनाय कर्मव्यापारमात्रे वर्त्तते सोऽस्य विषय: ।

## भू—सन्। *

कर्त्तरि, प, लट्—बुभूषति। लिङ्—बुभूषेत्। लोट्—बुभूषतु। लङ्—अबुभूषत्। बुभूषाञ्च (षांच) कार, बुभूषामास, बुभूषाम्ब (षांव) भूव। लुङ्—अबुभूषीत्, अबुभूषिष्टाम्, अबुभूषिषुः। अबुभूषीः। (अम्) अबुभूषिषम्। लुट्—बुभूषिता। लृट्—बुभूषिष्यति। आशीर्लिङ्—बुभूष्यात्। लृङ्—अबुभूषिष्यत्।

व्यति-भू-सन्, कर्त्तरि, आ, लट्—व्यतिबुभूषते। लिङ्—व्यतिबुभूषेत। लोट्—व्यतिबुभूषताम्। लङ्—व्यत्यबुभूषत। लिट्—व्यतिबुभूषाञ्चक्रे, व्यतिबुभूषाम्बभूव, व्यतिबुभूषामास। लुङ्—व्यत्यबुभूषिष्ट। लुट्—व्यतिबुभूषिता। लृट्—व्यतिबुभूषिष्यते। आशिषि—व्यतिबुभूषिषीष्ट। लृङ्—व्यत्यबुभूषिष्यत।

भावकर्मणोः। लट्—बुभूष्यते। अनुबुभूष्यन्ते सुखानि। लिट्—बुभूषाञ्चक्रे, बुभूषामासे, बुभूषाम्ब [म्बु] भूवे। अनुबुभूषाञ्चक्रे सुखम्—२। लुङ्—अबुभूषि। अन्वबुभूषि। अन्वबुभूषिषाताम्। अन्वबुभूषिषत। (१)

भू, सन्, णिच्, लट्—बोभूषयति इत्यादि।

---

* "धातोस्तुमन्तादिच्छायां सनि रूपं बुभूषति। ईचिच्चिषत इत्यादि पूर्व्ववच्चात्मनेपदम्॥" पूर्व्ववत् सनन्तात्' (कलापः)। सनः पूर्व्वो यो धातुः सनन्तादपि तस्मात् तत्पदम्भवति।

(१) कर्मकर्त्तरि—"भूषाकर्म"त्यादिना यक्चिणोर्निषेधात् (रुचादित्वविधानात्) सर्व्वत्र कर्त्तृवद्रूपम्। वत्करणात् स्वाश्रये भावे लकारे यक्चिणोर्विषये कर्मवद्रूपम्। कर्त्तरि तृतीया विशेषः। अभिबुभूष्यते शत्रुणा स्वयमेवेत्यादि। इच्छायाः

भू—यङ् ( यन् चेक्रीयित )।

बोभूय—कर्त्तरि, आ, लट्—बोभूयते, बोभूयेते, बोभूयन्ते। बोभूयसे, बोभूयेथे, बोभूयध्वे। बोभूये, बोभूयावहे, बोभूयामहे। लङ्—अबोभूयत। अबोभूयथाः। अबोभूये। लोट्—बोभूयताम्। बोभूयस्व। बोभूयै। लिङ्—बोभूयेत। बोभूयेथाः बोभूयेय। लुङ्—अबोभूयिष्ट, अबोभूयिषाताम्, अबोभूयिषत। अबोभूयिष्ठाः, अबोभूयिषाथाम्, अबोभूयिध्वम् (अबोभूयिढ्वम्)। अबोभूयिषि, अबोभूयिष्वहि, अबोभूयिष्महि।

लिट्—बोभूयामास, बोभूयाम्बभूव, बोभूयाञ्चक्रे।

लृट्—बोभूयिष्यते। बोभूयिष्यसे। बोभूयिष्ये। लृङ्—अबोभूयिष्यत। अबोभूयिष्यथाः, अबोभूयिष्ये। आशीर्लिङ्—बोभूयिषीष्ट, बोभूयिषीयास्तां, बोभूयिषीरन्। भावे—बोभूयते इत्यादि। अनुबोभूय्यते।—इत्यादि सनन्तवत् प्रक्रिया।

बोभूय, सन्, लट्—बोभूयिषते इत्यादि।

भू—यङ्लुक्। *

लट्—बोभवीति †, बोभोति, बोभूतः, बोभुवति। बोभवीषि, बोभोषि; बोभूथः, बोभूथ। बोभोमि, बोभवीमि, बोभूवः, बोभूमः।

---

कर्त्तृस्थत्वेन कर्मत्वाभावेऽपि दृश्यमानस्य प्राधान्यात् तस्य च कर्मस्थत्वात् अस्ति कर्मवद्भावः। अतएव 'भूषाकर्मे'ति यक्चिणौ निषिध्येते।

कर्मकर्त्तरि लुङि तशब्दे 'अचः कर्मकर्त्तरी'ति चिणो विकल्पनात् पक्षे सिजपि भवति। तेनाभ्यबोभूयि शत्रुः स्वयमेव, अभ्यबोभूष्ट इति च। वत्करणात् भावे लकारे नित्यं चिणेव, ( इजेव ) अभ्यबोभूयि शत्रुणा स्वयमेवेति।

* "यङोऽचि च"। यङोऽच्प्रत्यये लुक् स्यात् चकारात् तं विनापि बहुलं लुक् स्यात्।

† "यङो वा"। यङन्तात् परस्य हलादेः पितः सार्वधातुकस्य ईड् वा स्यात्।

लङ्—अबोभवीत्, अबोभोत्; अबोभूताम्, अबोभवुः। अबोभवीः, अबोभोः; अबोभूतम्, अबोभूत। अबोभवम्, अबोभूव, अबोभूम।

लोट्—बोभवीतु; बोभोतु; बोभूताम्, बोभुवतु। बोभूहि, बोभूतम्, बोभूत। बोभवानि, बोभवाव, बोभवाम।

लिङ्—बोभूयात्, बोभूयाताम् बोभूयुः। बोभूयाः, बोभूयातम्, बोभूयात। बोभूयाम्, बोभूयाव, बोभूयाम।

लिट्—बोभवाञ्चकार, बोभवां चकार; बोभवामास, बोभवाम्बभूव, बोभवां बभूव, बोभवाञ्चक्रतुः, बोभवाञ्चक्रुः। बोभवाञ्चकर्थ, बोभवाञ्चक्रथुः, बोभवाञ्चक्र। बोभवाञ्चकार, बोभवाञ्चकर; बोभवाञ्चकृव. बोभवाञ्चकृम। एवं बोभवामित्यस्मात् परम् आसतुः बभूवतुरित्यादि ससन्धिविकल्परूपं प्रयोज्यम्।

आशीर्लिङ्—बोभूयात्, बोभूयास्ताम्, बोभूयासुः। बोभूयाः, बोभूयास्तम्, बोभूयास्त। बोभूयासम्, बोभूयास्व, बोभूयास्म।

लुङ्—अबोभूवीत्, अबोभोत्; अबोभूताम्, अबोभूवुः अबोभूवीः, अबोभोः; अबोभूतम्, अबोभूत। अबोभूवम्, अबोभूव, अबोभूम।

लुट्—बोभविता, बोभवितारौ, बोभवितारः। बोभवितासि, बोभवितास्थः, बोभवितास्थ। बोभवितास्मि, बोभवितास्वः, बोभवितास्मः।

ऌट्—बोभविष्यति, बोभविष्यतः, बोभविष्यन्ति। बोभविष्यसि, बोभविष्यथः, बोभविष्यथ। बोभविष्यामि, बोभविष्यावः, बोभविष्यामः।

ऌङ्—अबोभविष्यत्, अबोभविष्यताम्, अबोभविष्यन्। अबोभविष्यः, अबोभविष्यतम्, अबोभविष्यत। अबोभविष्यम्, अबोभविष्याव, अबोभविष्याम।

व्यति-भू—यङ् लुक्।

आत्मनेपदम्—कर्त्तरि, लट्—व्यतिबोभूते, व्यतिबोभुवाते, व्यतिबोभुवते। लिट्—व्यतिबोभवाञ्चक्रे, व्यतिबोभवांबभूव,—आस। लुट्—व्यतिबोभवितासे। लृट्—व्यतिबोभविष्यते। लोट्—व्यतिबोभूताम्, व्यतिबोभुवाताम्,—वताम्। ऐ—व्यतिबोभवै। आवहै—व्यतिबोभवावहै। लङ्—व्यत्यबोभूत। व्यत्यबोभुवाताम्, व्यत्यबोभुवत। इ—व्यत्यबोभुवि। लिङ्—व्यतिबोभुवीत, व्यतिबोभुवीयाताम्, व्यतिबोभुवीरन्। आशीः—व्यतिबोभविषीष्ट।—षीढ्वम्,—षीध्वम्। लुङ्—व्यत्यबोभविष्ट।—ढ्वम्,—ध्वम्। लृट्—व्यतिबोभविष्यते। लृङ्—व्यत्यबोभविष्यत। भावकर्मणोः कर्मकर्त्तरि च बोभूयते त्वयेत्यादि।

बोभू—सन्, प, लट्—बोभविषति इत्यादि।

णिच् (इन्, जि)—(हेतुकर्त्तरि)। (१)

कर्त्तरि, उभयपदी, लट्—भावयति। भावयते। लिङ्—भावयेत्। भावयेत। लोट्—भावयतु। भावयताम्। लङ्—अभावयत्, अभावयत। लिट्—भावयाञ्चक्रे, भावयाञ्चकार, भावयाम्बभूव, भावयामास। (२)

लुट्—भावयिता। आशीर्लिङ्—भाव्यात्। भावयिषीष्ट। ध्वमि—भावयिषीढ्वं—ध्वम्। लुङ्—अबीभवत्—त।

---

(१) भावयते शस्यम्। भावयति शस्यम्। यदा तु फलस्य कर्तृगामित्वमुपपदेन प्रतीयते, तदा 'विभाषोपपदेन प्रतीयमान' इति परस्मैपदमपि भवति, स्वस्य शस्यं भावयतीति। यदा चित्तवत्कर्त्तृकादकर्मकादस्माण्णिच्, तदा क्रियाफलस्य कर्तृगामित्वेऽप्यणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्त्तृकादिति परस्मैपदम् एव भावयतीति। 'विभाषोपपदादप्ययमेव विप्रतिषेधेन' स्वं एव भावयतीति। 'गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणामणिकर्त्ता सणा'वित्यणौ कर्त्ता णौ कर्म।

(२) यदायं ण्यन्तः चित्तवत्कर्तृकत्वेन नित्यं परस्मैपदी तदा तु प्रयुक्तः करोतेरपि पूर्ववत् कृञोऽनुप्रयोगस्येति भिन्नेन कल्पितेन योगेन परस्मैपद्येव।

कर्मणि, ण्यन्तस्य (इनन्तस्य अन्तस्य) सकर्मकत्वाद्भावा-सम्भवः। आ, लट्—भाव्यते, भाव्येते, भाव्यन्ते। लोट्—भाव्यताम्। लङ्—अभाव्यत। लिङ्—भाव्येत इत्यादि। अतोऽन्येषु लुङ्व्यतिरिक्तेषु कर्त्तृवद्रूपम्। लुङ्-त—अभावि। अन्यत्र सिजेव—अभाविषाताम्, अभावयिषाताम्; अभावयिषत, अभाविषत। ध्वम्—अभाविध्वम्,—ढ्वम्, अभावयिध्वम्,—ढ्वम्। स्यसिजाशीःश्वस्तनीषु चिण्वत् (इट्व) दिट् पक्षे। लृट्—भाविष्यते, भावयिष्यते। लृङ्—अभाविष्यत, अभावयिष्यत। आशीः—भाविषीष्ट, भावयिषीष्ट। भाविषीध्वम्—षीढ्वम्, भावयिषीध्वम्—षीढ्वम्। लुट्—भाविता, भावयिता। (१)

तिङन्तात् तमादयः प्रत्ययाः।

भवतितराम्, भवतितमाम्, भवतिरूपम्। भवतस्तराम्, भवतस्तमां भवतोरूपमित्यादि। एवं भवतिकल्पं, भवतिदेश्य-मित्यादि। स्वभावादेतदन्तान्नपुंसकप्रथमैकवचनमेव, एवं भूयते-तरामित्यादि। सनादिप्रत्ययान्तेभ्योऽपि तमादयः कर्त्तव्याः।

कृत्।

शतृ (शन्तृङ्) भवन्, भवत् (कुलम्) भवन्ती (स्त्री)। हे सुखमनुभवन्नर्थस्य। शयनमनुभवन् यवनो भुङ्क्ते। शुश्रूषु-र्भवन् विद्यामधिगच्छति। मा भवन्। स्यप्रयोगः—व्यतिभविष्य-माणः, भविष्यन्, भविष्यत्, (कुलम्) भविष्यन्ती, भविष्यती (स्त्री। शानच् (आनश्)—व्यतिभवमानः, भूयमानः, परिभूयमानः। अनुभविष्यमाणः,—भाविष्यमाणः। कृत्य—भव्यम्। भवनीयम्। भवितव्यम्। अनुभव्यो घटः, भव्या निद्रा,

(१) अत्रापि सीध्वंलुङोर्धकारस्य पूर्ववत् विभाषया मूर्द्धन्यः। कर्मकर्त्तरि तु यक्-चिणोः प्रतिषेधे 'क्षिश्रिन्थिग्रन्थिब्रूञात्मनेपदाकर्मकाणामुपसंख्यान'मिति यक्चिणो-र्निषेधाद्यथायोगं सर्वत्र कर्त्तृवद्रूपं स्यादिषु तु कर्मवत्। वतृकरणाद्भावे तु कर्मवद्-दाहार्य्यं कर्त्तरि तृतीया विशेषः।

भाव्यम्,अवश्यभाव्यम्,समासे मलोपः। समासस्तु मयूरव्यंसका-दित्वात् तत्पुरुषः। (क्यप्)—देवभूयं गतः। णिनि—अभि-भावी, अभिभूतवानित्यर्थः। ग्रहादौ णिन्यन्तो निपातः। परिभावी, परिभवी। तत्रैव निपातनात् णिनौ पक्षे वृद्ध्यभावः। प्रभावी। वुण् (ण्वुल्)—भावकः, अभिभावकः। तृन् (तृच्)—भविता। भवतीति—भावः 'भवतेश्चे'ति वक्तव्यात् पक्षे णः। पक्षे अच—भवः। आशितो भवत्यनेनेति—आशितम्भवः ओदनः, आशितस्य भवनमाशितम्भवम्, "भावकरणयोश्चाशिते भुव" इति खः। आढ्यम्भविष्णुः, आढ्यम्भावुकः, अभूततद्भावार्थे—"भुवः खिष्णुखुकञौ कर्त्तरी"ति खिष्णुखुकञौ। भविष्णुः 'भुवश्चे"ति ताच्छील्याद्यर्थे इष्णुः। भूष्णुः "जिभुवोः स्नुक्"। भावुकः "घृकमी"त्यादिना उकञ्। परिभवी "जिदृक्षी"-त्यादिना इन्। वासरूपविधिना परिपूर्वादपि उकञ्—परि-भावुकः। क्विप्—विभूर्नाम कश्चित्। प्रतिभूः, धनिकाध-मर्णयोर्मध्यस्थः, "भुवः संज्ञान्तरयोधमर्णयोः" इति क्विप्। संज्ञा-न्तरे स्वभावात् उपसर्गनियमः। द्विवचनादौ,विभुवौ प्रतिभुवौ इत्यादि। वर्षासु भवतीति वर्षाभूः, वर्षाभुवौ इत्यादि। एवं कारभूः, करभूः आत्मभूः, स्वयम्भूः,पुनर्भूः। विभुः,प्रभुः,शम्भुः "भुवो डुविशंप्रेषु"इति डुः। स्त्रियां विभ्वी, प्रभ्वी, शंभ्वी। "भुवश्च" इति भवतेरुदन्तस्यानुपसर्ज्जनस्य स्त्रियां ङीष् (ई) उपसर्ज्जनस्थले तु अतिविभुर्ब्राह्मणीति ङीष् न भवति। भविष्य-तीति भावी, णिन्। घञ्—भावः। उपसर्गे तूपपदे अप् (अल्) प्रभवः। प्रभाव इत्यत्र तु प्रकृष्टो भावः प्रभावः इति प्रत्ययार्थ एव प्रशब्देन विशिष्यते। न प्रकृत्यर्थ इति क्रियायोगाभावात् अनुप-सर्गे घञ्सिद्धिः विभावानुभावशब्दौ विभावयतीति ण्यन्तात् (इनन्तात्) अचि व्युत्पाद्यौ। परिभवः, परिभावः, परीभावः, 'परौ भुवोऽवज्ञाने' इति पक्षे घञपौ (घञलौ)। 'उपसर्गस्य

घञ्यमनुष्ये बहुल'मिति घञन्त उत्तरपदे पूर्वोपसर्गस्य वा दीर्घोऽमनुष्ये विषये। भूतिः, अकर्त्तरि च कारके भावे च सर्वधातुभ्यः 'स्त्रियां क्तिः' इति क्तिः। भूः, सम्पदादित्वात् क्विप्। भवत्यस्मिन् अनेनेति वा भवः,'पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण' इति पुंलिङ्गयोः करणाधिकरणयोर्घः। प्रायग्रहणं क्वचिद-संज्ञायामपि यथा स्यादित्यर्थम्। ईषदाढ्यम्भवं भवता, स्वाढ्य-म्भवं भवता। दुराढ्यम्भवं भवता। "कर्त्तृकर्मणोश्च भूकृञोः।" इति खल। भुवोऽकर्मकत्वात् कर्त्तरि उपपदे भावे प्रत्ययः। सुखतो भूत्वा, सुखतोभूय, सुखतो भावं "स्वाङ्गे तस्प्रत्यये कृभ्वोः" इति तस्प्रत्ययान्ते स्वाङ्गे उपपदे क्त्वाणमुलौ। सुखतो-भूय इति समासपक्षे ल्यबादेशः। एवं विनादियोगेऽपि प्रयोक्त-व्यम्। क्त्वा—भूत्वा। यप्—सम्भूय। क्त—भूतः। भूतं घटेन। इदमेषां भूतम्। क्तवतु (क्तवन्तु)—भूतवान्। ल्युट् (युट्)—भवनम्। प्रभवणम्। खल्—सुभवम्,दुर्भवम्। तुम्—भवितुम्।

णिच्। स्त्री-ल्यु (यु)—भावना। क्त्वा—भावयित्वा—प्रभाव्य। क्तः—भावितः। क्तवतु(न्तु)—भावितवान्। तव्य—भावयितव्यः। य—भाव्यः। अनीय—भावनीयः। तुम्—भाव-यितुम्। तृच्—भावयिता। शतृ (शन्तृङ्)—भावयन्। शानच् (आनश्)। कर्त्तरि—भावयमानः। कर्मणि—भाव्यमानः, परिभाव्यमानः। स्यऽयोगः कर्त्तरि—भावयिष्यमाणः। कर्मणि—भावयिष्यमाणः, भाविष्यमाणः। ल्यु (यु)—भूतभावनः। ण्वुल् (वुण्)—भावकः।

सन्। क्त—बुभूषितः। क्तवतु( न्तु )—बुभूषितवान्। शतृ ( शन्तृङ्) बुभूषन्। उ—बुभूषुः। अ ( अङ् )—बुभूषा।

णिच्-सन्। शतृ—बिभावयिषन्। शान—बिभावयिष-माणः। कर्मणि—बिभावयिष्यमाणः। स्य—बिभावयिषिष्य-माणः। क्तवतु—बिभावयिषितवान्। अ—बिभावयिषा। तुम्—

विभावयिषितुम्। क्त्वा—विभावयिषित्वा। यप्—प्रविभावयिष्य। (१)

## उणादय:।

दृन्भू: [ दृम्भू: ] तरु:, सर्पजातिभेद इति पुरुषकारे। 'अन्धूदृन्भू' इत्यादिना दृढ़शब्द उपपदे कूप्रत्ययान्तो निपातित:। अत्र दृम्भू इति मयुक्तं केचित् पठन्ति। स्वरादावुवेव, दृन्भुवौ इत्यादि। भवनं गृहम्। "बहुलमन्यत्रापीति" युच् (युट्)। भुवनम् 'भूसूधू' इत्यादिना क्युन्। भूमि: 'भुव: कित्' इति मिन्। कृष्णभूम:, उदग्भूम:, पाण्डुभूम:, समासान्तविधि:। भूरि:, 'अदिशदी'त्यादिना क्रिन्। भुव: अन्तरिक्षलोको महाव्याहृतिश्च। 'भूरञ्जिभ्यां कित्' इति असुन्। अद्भुतम् 'अदि भुवो डुतच्' इति डुतच्।

भू प्राप्तौ आत्मनेपदी चुरादौ। वोपदेवमते तु भ्वादौ च प्राप्त्यर्थेऽयमुभयपदी। भू प्राप्तिसम्पन्नजन्मस्विति भट्टमल्ल:। (२) भूधातुश्चुरादिगणीय उभयपदी शोधने चिन्तायाञ्च वर्त्तते इति। यथा—औषधं भावयति। हरिं भावयते। भावना। "भावनाख्यस्तु संस्कार:," भाषापरिच्छेदे।

### २। एध, वृद्धौ। ( To increase )

कत्थन्ता उदात्ता अनुदात्तेत:। एध, सेट्, आत्मनेपदी, अकर्मक:। कर्त्तरि,—लट्—एधते,एधेते,एधन्ते। एधसे,एधेथे, एधध्वे। एधे, एधावहे, एधामहे। लोट्—एधताम्, एधेताम्, एधन्ताम्। एधस्व, एधेथाम्,एधध्वम्। एधै, एधावहै, एधामहै।

---

(१) क्त्वामकारान्तप्रत्ययान्तपदानामव्ययत्वम् स्थानिवत्त्वेन ल्यबन्तस्यापीति।

(२) भवते दुरितचयं यथोक्तै: क्रतुभिर्भावयते च नाकलोकम्।
भवति त्रिदशैश्च पूजितो यस्तु भावयति द्विषश्च सर्वान्॥ कवि।

लिङ्—एधेत,—एधेयाताम्, एधेरन् । एधेथाः, एधेयाथाम्, एधेध्वम् । एधेय, एधेवहि, एधेमहि । लङ्—ऐधत, ऐधेताम्, ऐधन्त । ऐधथाः, ऐधेथाम्,ऐधध्वम् । ऐधे,ऐधावहि,ऐधामहि । लिट्—एधाञ्चक्रे, एधाम्बभूव, एधामास । लुट्—एधिता । एधितासे । एधिताहे । लृट्—एधिष्यते । एधिष्यसे । एधिष्ये । आशीः—एधिषीष्ट । एधिषीष्ठाः । एधिषीय । लुङ्—ऐधिष्ट, ऐधिषाताम्, ऐधिषत । ऐधिष्ठाः, ऐधिषाथाम्, ऐधिढ्वम् । ऐधिषि, ऐधिष्वहि, ऐधिष्महि । लृङ्—ऐधिष्यत । ऐधिष्यथाः । ऐधिष्ये ।

भावे, लट्—एध्यते । लोट्—एध्यताम् । लिङ्—एध्येत । लङ्—ऐध्यत । लुङ्—ऐधि(भवता)।अन्यत्तु कर्त्तृवद्रूपम् ।

सन्-लट्, कर्त्तरि—एदिधिषते इत्यादि । भावे—एदिधिष्यते इत्यादि ।

णिच्, कर्त्तरि, लट्—एधयते (शस्यम्)'णिचश्चे'ति कर्त्रभिप्राये तङ् । अस्मिन्नुपपदे"विभाषोपपदेन प्रतीयमान" इति परस्मैपदमपि भवति । स्वं शस्यमेधयतीति । चित्तवत्कर्त्तृके त्व'णावकर्मकाच्चित्तवत्कर्त्तृका'दिति परस्मैपदमेव भवति,तेन स्वं पुत्रमेधयतीत्येव । 'गतिबुद्धी'ति सर्वत्र प्रयोज्यस्य कर्मत्वम् ।

लोट्—एधयतु । एधयताम् । लङ्—ऐधयत् । ऐधयत । लिङ्—एधयेत् । एधयेत । लिट्—एधयाञ्चक्रे । एधयाञ्चकार । —बभूव ।—आस । लुट्—एधयिता । लृट्—एधयिष्यति । एधयिष्यते । आशीः—एध्यात् । एधयिषीष्ट । एधयिषीध्वं, एधयिषीढ्वम् । लुङ्—ऐदिधत् । ऐदिधत ।

कर्म्मणि । लट्—एध्यते । लङ्—ऐध्यत । लुङ्—ऐधि । ऐधिषाताम्, ऐधयिषातामित्यादि । (लुङ्येकवचने चिण्, अन्यत्र सिचोट्गुणायादेशाः ।) ऐधयिध्वम्,—ढ्वम्, ऐधिध्वम्,

ढ्वम् (१)। अन्यत्र—कर्त्तृवद्रूपम्। लिटि कृञाद्यनुप्रयोगे नित्य-मात्मनेपदम्। स्यादिषु—एधयिष्यते, एधिष्यते इत्यादि। प्र+एधते=प्रैधते। परा+एधते=परैधते।

कृत्—एधमानः एधिष्यमाणः। एधितः। एधितमनेन। इदमेषामेधितम्। (असुन्) एधः। अ—एधा।

३। स्पर्द्ध सङ्घर्षे (२)।

( To envy, to vie with )

सङ्घर्षः पराभिभवेच्छा। स्पर्द्धा। पराभिभवस्य धात्वर्थे-नोपसंग्रहात् अकर्मकत्वम्। उक्तं च—

"धातोरर्थान्तरे वृत्ते धात्वर्थेनोपसंग्रहात्।
प्रसिद्धेरविवक्षातः कर्मणोऽकर्मिका क्रिया॥"

स्पर्द्ध, आ, सेट्। लट्—स्पर्द्धते। स्पर्द्धसे। स्पर्द्धे। लिङ्—स्पर्द्धेत। स्पर्द्धेथाः। स्पर्द्धेय। लोट्—स्पर्द्धताम्। स्पर्द्धस्व। स्पर्द्धै। लङ्—अस्पर्द्धत। अस्पर्द्धथाः। अस्पर्द्धे। लुट्—स्पर्द्धिता। स्पर्द्धितासे। स्पर्द्धिताहे। लृट्—स्पर्द्धिष्यते। स्पर्द्धिष्यसे। स्पर्द्धिष्ये। आशिषि—स्पर्द्धिषीष्ट। स्पर्द्धिषीष्ठाः। स्पर्द्धिषीय। लिट्—पस्पर्द्धे। पस्पर्द्धिषे। पस्पर्द्धे। लुङ्—अस्पर्द्धिष्ट—षाताम्,—षत। अस्पर्द्धिष्ठाः। अस्पर्द्धिषि,—ष्वहि। लृङ्—अस्पर्द्धिष्यत। अस्पर्द्धिष्यथाः। अस्पर्द्धिष्ये।

---

(१) स्यसिजाशीःश्वस्तनीषु (लुट्सु) विभाषया इड्वदिट् (चिण्वदिट्) आशी-रद्यतन्यो-(आशीर्लिङ्लुङो)र्धकारस्य ढकारविधानात् सीध्वंध्वमोः पर्यायेणातूरूप्यम्।

(२) 'स्पर्द्ध संहर्षे' इति उष्मचतुर्थमध्यं पठित्वा रमानाथो व्याचष्टे। 'स्पर्द्धा घर्षयो-रुक्तः संघर्षः शब्दवेदिभिः।' इति व्याड़िवचनात् षकारमध्यपाठे घर्षणार्थस्यापि शङ्का स्यादिति रमानाथाभिप्रायः। "नृपाङ्घ्रिपीठसंघर्षा" दिति माघानुप्रासदृष्ट्या षकारवान् पाठ एव साधीयान्। "स्पर्द्धते वल्गिनं मल्लो' इति भट्टिप्रयोगे पराभि-भवेच्छारूपधात्वर्थतया सकर्मकत्वमिति।

भावे लट्—स्पर्द्ध्यते। लोट्—स्पर्द्ध्यताम्। लिङ्—स्पर्द्ध्येत। लङ्—अस्पर्द्ध्यत। लुङ्—अस्पर्द्धि। आशीरादिषु कर्त्तृवत्।

सनादि। सन्, लट्—पिस्पर्द्धिषते। लिङ्—पिस्पर्द्धिषेत। लिट्—पिस्पर्द्धिषाञ्चक्रे,—आस,—बभूव। लुङ्—अपिस्पर्द्धिषिष्ट। लुट्—पिस्पर्द्धिषिता इत्यादि। भावे—यक्चिणोर्विशेषः पिस्पर्द्धिष्यत इत्यादि। यङ्,—लट्—पास्पर्द्ध्यते। लिट्—पास्पर्द्धाञ्चक्रे—आस,—बभूव। लुट्—पास्पर्द्धिता। लुङ्—अपास्पर्द्धिषिष्ट। भावे, लट्—पास्पर्द्ध्यते। लङ्—अपास्पर्द्ध्यत। लुङ्—अपास्पर्द्धि। यङ्लुक्—पास्पर्द्धि, पास्पर्द्धीति,-पास्पर्द्धः, पास्पर्द्धति। पास्पर्त्सि। पास्पर्द्धः। सर्वत्र हलादेः पितः सार्वधातुकस्य 'यङो वे'ति ईडुदाहार्य्यः। पास्पर्द्धाञ्चकार,—२। पास्पर्द्धिता। पास्पर्द्धिष्यति। लोट्—पास्पर्द्धु,—तातङ् (तातप्)—पास्पर्द्धात्; पास्पर्द्धाम्, पास्पर्द्धतु। हि—पास्पर्द्धि, तातङ्—पास्पर्द्धात्। लङ्—अपास्पर्त्, अपास्पर्द्; 'रात् सस्यै'वेति नियमान्न संयोगान्तलोपः। अपास्पर्द्धाम्, अपास्पर्द्धुः। अपास्पर्त्, अपास्पर्द्, अपास्पर्धाः। लिङ्—पास्पर्द्ध्यात्, पास्पर्द्ध्याताम्, पास्पर्द्ध्युः। आशीः—पास्पर्द्ध्यात्। पास्पर्द्ध्यास्ताम्। लुङ्—अपास्पर्द्धीत्, अपास्पर्द्धिष्टाम्, अपास्पर्द्धिषुः। अपास्पर्द्धीः। अपास्पर्द्धिषम्। ऌङ्—अपास्पर्द्धिष्यत् इत्यादि। भावे सर्वत्र यङन्तवद्रूपम्, पास्पर्द्ध्यते इत्यादि। णिच्—स्पर्द्धयति—ते, इत्यादि एधतिवदुदाहार्य्यम्। लुङ्—अपस्पर्द्धत्,—त। कर्म्मणि—स्पर्द्ध्यते इत्यादि। लिट्—स्पर्द्धयाञ्चक्रे इत्यादि। लुङ्—अस्पर्द्धि, अस्पर्द्धिषाताम्, अस्पर्द्धयिषातामित्यादि। सीध्वंध्वमोश्चत्वारि रूपाणि। ऌट्—स्पर्द्धिष्यते, स्पर्द्धयिष्यते(१)।

---

(१) अत्रापि स्यादिषु चिण्वदिट्पक्षे कर्मकर्त्तरि यक्चिणोर्निषेधात् अपि स्पर्द्धयत इत्यादि कर्त्तृवत्। वत्करणात् स्वाश्रये भावे लकारे सर्व्वं कर्मवत्। कर्त्तरि तृतीया विशेषः।

क्त्वा—स्पर्द्धित्वा। आस्पर्द्ध्य। तच्छीलादौ युच् (यु)—स्पर्द्धनः। अङ्—स्पर्द्धा। क्तिर्नास्ति। इदमेषांस्पर्द्धितम्। स्पर्द्धितमनेन। स्पर्द्धितः। 'क्तोऽधिकरणे चे'ति कर्त्तृभावाधिकरणेषु क्तः।

४। गाधृ, प्रतिष्ठालिप्सयोर्ग्रन्थे च।

( To set out for, to seek, to compile )

स्थापना तत्स्थापनं वा प्रतिष्ठा। लब्धुमिच्छा लिप्सा। एकत्र स्थापनं संदर्भो वा ग्रन्थः। तत्राद्येऽकर्मकः, इतरयोः सकर्मकः। प्रतिष्ठा-प्रशंसा, लिप्सा—वाञ्छा इति रमानाथः। ऋदित्।

गाध्, (ऋ) सेट्, आ। लट्—गाधते। ए—गाधे। लोट्—गाधताम्। गाधस्व। गाधै। लङ्—अगाधत। अगाधथाः। अगाधे। लिङ्—गाधेत। गाधेथाः। गाधेय। लिट्—जगाधे। जगाधिषे। लुट्—गाधिता। आशीः—गाधिषीष्ट। लुङ्—अगाधिष्ट, अगाधिषाताम्, अगाधिषत। अगाधिष्ठाः अगाधिध्वम्। अगाधिषि, अगाधिष्वहि। लृङ्—अगाधिष्यत इत्यादि।

भावे कर्मणि कर्मकर्त्तरि च लट्लोट्लङ्विध्यादिलिङ्षु यक् (यण्)—गाध्यते, गाध्येते, गाध्यन्ते। गाध्यसे, गाध्येथे। गाध्यताम्, गाध्येताम्। अगाध्यत। गाध्येत इत्यादि। लुङेकवचने—अगाधि। अन्यत्र कर्त्तृवत्।

सन्, आ। लट्—जिगाधिषते। लिट्—जिगाधिषांचक्रे। लुट्—जिगाधिषिता। लृट्—जिगाधिषिष्यते। लोट्—जिगाधिषताम्। लङ्—अजिगाधिषत। जिगाधिषेत। आशीः—जिगाधिषिषीष्ट। लुङ्—अजिगाधिषिष्ट। लृङ्—अजिगाधिषिष्यत इत्यादि।

भावकर्मणोर्यक्चिण्विषये—लट्—जिगाधिष्यते। लुङ्—अजिगाधिषि इत्यादि। कर्मकर्त्तरि यक्चिणोर्निषेधात् कर्त्तृवदेव।

यङ्, लट्—जागाध्यते। लोट्—जागाध्यताम्। लङ्—अजागाध्यत। लिङ्—जागाध्येत। लिट्—जागाधांचक्रे। लुट्—जागाधिता। आशीः—जागाधिषीष्ट। लुङ्—अजागाधिष्ट। ऌङ्—अजागाधिष्यत। यक्यप्यल्लोपयलोपयोः सर्वत्र कर्त्तृवद्रूपम्। लुङ्येकवचने—अजागाधि इति विशेषः।

यङ्लुकि, लट्—जागाधीति, जागाद्धि। जाघात्सि, जागाधीषि। लोट्—जागाद्धु, जागाधीतु, जागाद्धात्। जागाधानि। लङ्—अजाघाद्, अजाघात्। सौ—अजाघाः अजाघाद्, अजाघात्। लिङ्—जागाध्यात्, जागाध्याताम्। लिट्—जागाधाञ्चकार। लुट्—जागाधिता। आशीः—जागाध्यात्, जागाध्यास्ताम्। लुङ्—अजागाधीत्, अजागाधिष्टाम्, अजागाधिषुः। ऌङ्—अजागाधिष्यदित्यादि।

णिच्—गाधयति। गाधयेत्। गाधयतु। अगाधयत्। गाधयाञ्चकार। गाधयिता। गाधयिष्यति। गाध्यात्। अजगाधत। एवं गाधयते इत्याद्युदाहार्य्यम्। प्रतिष्ठायां 'मणावकर्म्मका'-दिति ञित्त्ववत्कर्त्तृकत्वे परस्मैपदमेव। भावकर्म्मणोर्यक्चिणो-र्विषये णिलोपे गाधतिवद्रूपम्। स्यादिषु तु ण्यन्ते कर्त्तृ-वत्। चिण्वदिटि तु णिलोपे गाधितेत्यादि प्रकृतिवदेव। कर्म्म-कर्त्तरि यक्चिणोर्निषेधादन्यासु विभक्तिषु कर्त्तृवत्।

क्त्। ताच्छील्ये ल्यु (यु)—गाधनः। गाधा। 'गुरोश्च हल' इत्यकारः, प्रतिष्ठायां स्पर्द्धिवत्, भावकर्त्त्रधिकरणेषु क्त उदाहार्य्यः, इतरयोस्तु 'तयोरेवे'ति नियमात् कर्म्मणि।

५। बाधृ लोड़ने। [ बिलोड़ने ]

( To oppress, to torment )

लोड़नं प्रतिघातः। हिंसेति गोबिन्दभट्टः। [ पीड़नम्। प्रतिबन्धः। ]

बाध्, सेट्, आ। कर्त्त, लट्—बाधते। लङ्—अबाधत।

लिट्—बबाधे। लुङ्—अबाधिष्ट, अबाधिषाताम्, अबाधिषत। लृट्—बाधिष्यते। लृङ्—अबाधिष्यत। कर्मणि, लट्—बाध्यते। लुङ्—अबाधि। सन्—बिबाधिषते इत्यादि। णिच्—बाधयति।—ते। लुङ्—अबाधयत्—त। यङ्—बाबाध्यते इत्यादि। यङ्लुक्, लट्—बाबाधि, बाबाधीति इत्यादि।

क्त्। बाधित्वा।—बाध्य। बाधितः। बाधः। बाधिता। बाधितव्यः। बाध्यः। बाधमानः। बाध्यमानः। बाधिष्यमाणः। बाधनं। बाधा इति सर्वं गाधिवत्। बाहुः। 'अर्जिदृशी'त्यादिना कुप्रत्यये धातोर्हकारः। भद्रबाहुः, चतुष्पादिशेषः। 'बाह्वन्तात् संज्ञायामिति स्त्रियामूङ् प्रत्ययः। सुबाहुर्नाम कश्चित्, तस्यापत्यं—सौबाहविः बाह्वादित्वात् अपत्ये इञ्। उभाबाहु, उभयाबाहु प्रहरति। 'द्विदण्ड्यादिभ्यश्चे'ति इच् समासान्तः, तस्य च लोपे अव्ययत्वात् सुपो लोपः। अत्र विकल्पेनोभयादेशः। धातुरयं दन्त्योष्ठ्यादिरिति वोपदेवः। सम्—परस्परपीड़ने। सम्बाधते। सम्बाधः।

६। नाधृ नाथृ उपतापैश्वर्य्याशीःषु च।

( To ask, to harass, to be master of, to bless )

'याच्ञोपतापैश्वर्य्याशीःषु' इति वृत्तिकारपाठः। उपतापो रोग इति केचित्। उपघात इति तरङ्गिण्याम्। दुर्गमते इतः पूर्वं विथृ वेथृ याचने इति पाठस्तन्मतेऽत्र चकारात् पूर्वतो याचनानुवृत्तिः। आद्यो धान्तः, अपरः थान्तः। अस्य धान्तस्य थान्तकाण्डे पाठोऽर्थसाम्यात्। उभावपि दन्त्यादी (१)।

(१) ननु आशिष्येवात्मनेपदं स्यादिति नियमे कथं "दीनस्त्वामनुनाथते कुचयुगं पत्रावृतं मा कृथाः" इत्यात्मनेपदं सङ्गच्छते। सत्यं चन्द्रिको ह्यनुबन्धकरणादात्मनेपदमिति केचित्। अन्ये च'आशिष्येव नाथ' इति आत्मनेपदनियमार्थं नेदं, किन्तु उदात्तानुबन्धलक्षणात्मनेपदानित्यत्वे नित्यात्मनेपदार्थं तेनाशिषि नित्यम्, अन्यत्र

सर्वं गाधतिवत्। द्वितीयस्य तु विशेषः—'आशिषि नाथ' इत्याशिष्येवात्मनेपदम्। नाथति बली रिपुम्, उपतापयतीत्यर्थः। नाथति धनी, लोकानां प्रभवतीत्यर्थः। आशंसने नाथते लोकः, आशंसते इत्यर्थः। (१) कर्मणि शेषत्वेन विवक्षिते षष्ठी च—सर्पिषो नाथते इत्यादि। 'षष्ठी शेषे' इत्येवात्र षष्ठीसिद्धौ वचनमिदं सर्पिषो नाथनमित्यादौ समासनिवृत्त्यर्थं षष्ठी श्रूयत एव, न लुप्यत इति, स लोपश्च समासे। उक्तं च—

"साधनैर्व्यपदिष्टे च श्रूयमाणक्रिये पुनः।
प्रोक्ता प्रतिपदं षष्ठी समासस्य निवृत्तये॥" इति।

नहि तर्हीदानीमिदं सम्भवति सर्पिर्नाथनमिति। भवति यदा कृद्योगलक्षणा षष्ठीति। तथा च वार्त्तिकं—'प्रतिपदविधाना च षष्ठी न समस्यते; कृद्योगा च षष्ठी समस्यत'-इति। न चैवं सति समासनिषेधस्य वैयर्थ्यमिति वाच्यम्। यतः शेषषष्ठ्याः समासे 'समासस्ये'त्यन्तोदात्तत्वेन भाव्यम्, अन्यस्यास्तु 'गतिकारकोपपदात् कृत्'। गत्यादिभ्यः परं कृदन्तमुत्तरपदं प्रकृतिस्वरमित्युत्तरपदप्रकृतिस्वरेण भाव्यं, स च

विकल्पं ज्ञापयतीत्याहुः। 'नाथतिस्तनयुग'मिति वा पाठः। वस्तुतस्तु चन्द्रगोमिणोक्तं याचनमप्याशंसनविशेष इति न काचिदनुपपत्तिः, एतन्मते याचमनवानुनयः।

(१) अत्र मैत्रेयाभरणकारावाद्यं णोपदेशं पठन्तौ 'णो नः' इति धात्वादित्वाण्णकारस्य नकारं विधायो-'पसर्गादसमासेऽपि णोपदेशस्ये'ति उपसर्गस्थान्निमित्तात्परस्य णोपदेशनकारस्य समासासमासयोर्णत्वविधानात् प्रणाधत इत्यादौ णत्वप्रयोजनमाहतुः। सर्वे नाद्यो णोपदेशा इत्यस्य पर्य्युदासे नृतिनन्दिनर्दिनक्किनटिनाधनाधृवर्जमित्यत्र च न पेठतुः। अत्र काश्यप.—नाधतेर्णोपदेशत्वमयुक्तं, गणकारवृत्तिकारादीनामनिष्टत्वादिति। नृतिनन्दीत्यादिवाक्ये नाधनवर्जं नृत्यादीन् पठित्वा एतान् सप्त वर्जयित्वे ति वदन् शौकरोऽप्येवं वानुकूलः। तथा पर्य्युदासवाक्ये नर्दतिवर्जं सर्वानेतान् पठतः शाकटायनन्यासकृतोऽप्ययमेव पक्षोऽभिमतः। उभयोस्थान्तपाठस्तु धान्तप्रकरणविरोधान्नाशङ्क्यः। इमौ याच्ञायां द्विकर्मकौ।

लिति प्रत्यये पूर्वमुदात्तमित्याद्युदात्तत्वम् । अनाशिषि परस्मैपदं द्रष्टव्यम्—

नाथति । नाथेत् । नाथतु । अनाथत् । नाथिता । नाथिष्यति । नाथ्यात् । ननाथ । अनाथीत् । अनाथिष्यत् । णिच्—नाथयति । अननाथत्-त । सन्—निनाथिषति । कर्मणि—नाथ्यते, अनाथि इत्यादि (१) । यङ्—नानाथ्यते इत्यादि । यङ्लुक्—नानात्ति, नानाथीति ; नानात्तः, नानाथति । नानाथः इत्यादि ।

७ । दध, धारणे । ( To hold, to present )

धारणमिह धरणम् इनः स्वार्थिकत्वात् । "नृपप्रियाभीममहोत्सवागतास्तदङ्घ्रिलाक्षामदधन्त मङ्गलम्" इति नैषधे (८।२) । दानधृत्योरिति वोपदेवः ।

दध्, सेट्, सक, आ । लट्—दधते, दधेते, दधन्ते । दधसे, दधेथे, दधध्वे । दधे, दधावहे, दधामहे । लोट्—दधताम् । दधस्व । दधै । लङ्—अदधत, अदधेताम्, अदधन्त । अदधथाः,

(१) याचनस्य धनाद्यर्थत्वात्तस्यैव प्राधान्यादन्यद्राजादि कर्म अप्रधानमिति तत्रैव कर्मविहितप्रत्यया भवन्तीति । नाथ्यते राजा धनं, नाथ्यः, नाथितः, सुनाथ इत्यादि भवति । नाथिता धनस्य राज्ञ इत्यत्र च कर्मणि षष्ठ्युभयत्र भवति । गुणकर्मण्यन्यथा गोपिकापुत्र इति भाष्ये उक्तत्वात् द्वितीयापि द्रष्टव्या । नाथिता धनस्य राजानमिति । भाष्ये नयतेरुदाहरणं प्रदर्शनमात्रं, स्पष्टं चैतत्पदमञ्जर्यादिषु । नाथितव्यो राज्ञा धनं देवदत्तेनेत्यत्र कर्तृकर्मणोः प्राप्ता कृद्योगलक्षणा षष्ठी कृत्यानां कर्तरि वेत्यत्र कृत्यानामिति योगं विभज्य प्राप्तौ नेति चानुवर्त्य उभयप्राप्तौ कृते षष्ठ्यभावस्य भाष्ये प्रतिपादितत्वान्न भवति । स्पष्टं चैतत् कैयटादौ । यत्तु 'कृत्यानां' मित्यत्रोभयप्राप्तौ षष्ठ्याः प्रतिषेध इति वृत्तिमुपादाय प्रतिषेधोऽयं कर्त्तरि षष्ठ्याः, कर्मणि षष्ठ्यास्तु प्रधानस्य कर्मणः कृत्येनाभिधानादन्यस्याप्राधान्यादप्रसङ्ग इति न्यासेऽयमुक्तं तद्द्वितीयावदप्रधाने षष्ठ्यनिवार्य्येति यत्किञ्चित् । कर्त्तरि वेति विधीयमानषष्ठीविकल्पः उभयप्राप्तिव्यतिरिक्तकृत्यविषयः । नाथितव्यं सर्पिर्देवदत्तेन देवदत्तस्येति वा ।

अदधेथाम्, अदधध्वम्। अदधे, अदधावहि,—महि। लिङ्—दधेत, दधेयाताम्। दधेथाः। दधेय, दधेवहि,—महि। लुट्—दधिता। दधितासे। दधिताहे। लृट्—दधिष्यते। आशिषि—दधिषीष्ट। लुङ्—अदधिष्ट, अदधिषाताम्, अदधिषत। अदधिष्ठाः। अदधिध्वम्। अदधिषि,—अदधिष्वहि,—ष्महि। लृङ्—अदधिष्यत इत्यादि। लिट्—देधे, देधाते, देधिरे। देधिषे, देधाथे, देधिध्वे। देधे, देधिवहे, देधिमहे। कर्म्मणि—दध्यते। दध्येत। दध्यताम्। अदध्यत। लुङ्—अदाधि। अन्यत्र कर्त्तृवत्।

सन्—दिदधिषते। दिदधिषेत। दिदधिषताम्। अदिदधिषत। दिदधिषाञ्चक्रे,—आस,—बभूव। दिदधिषिष्यते। आशिषि—दिदधिषिषीष्ट। लुङ्—अदिदधिषिष्ट। लृङ्—अदिदधिषिष्यत इत्यादि। कर्म्मणि—यक्चिण्विषये दिदधिष्यते इत्यादि। अन्यत्र कर्त्तृवत्। कर्म्मकर्त्तरि तु यक्चिणो-र्निषेधात् सर्व्वत्र कर्त्तृवत्।

यङ्—लट्—दादध्यते। लोट्—दादध्यताम्। लङ्—अदादध्यत। लिङ्—दादध्येत। लिट्—दादधाञ्चक्रे। लुट्—दादधिता। लृट्—दादधिष्यते। आशीः—दादधिषीष्ट। लृङ्—अदादधिष्यत। लुङ्—अदादधिष्ट। कर्म्मकर्त्रादौ विशेषो नास्तीति गाधतावेवोपपादितम्।

यङ्लुक्—दादद्धि, दादधीति; दादद्धः, दादधति। दाधत्सि। दादद्धि। दादद्धु। दादद्ध्यात्। दादद्धि। दादधानि। अदाधत्, अदाधद्; अदादद्धाम्, अदादधुः। अदाधाः, अदाधाद्,—त्। अदादद्ध। अदादधम्। दादध्यात्। दादध्याताम्। दादध्यात्, दादध्यास्तामित्यादि। दादधिता। दादधिष्यति। दादधाञ्चकार। लुङ्—अदादधीत्, अदादाधीत्। अदादधिष्टाम्, अदादाधिष्टामित्यादि। अदादधिष्यदित्यादि। सर्व्वत्र यङ्-

लुकः परस्य हलादेः पितः सार्वधातुकस्य पत्वे ईडुदाहार्यः। कर्म्मणि—यङन्तवदिति बाधतावुपपादितम्।

णिच्—दाधयतीत्यादि बाधयतिवत्। लुङि—अदीदध-दित्यादि।

क्त। क्त्वा—दधित्वा। क्त—दधितः इत्यादि। ल्यु (यु)—दधनः।

८। स्कुदि, आप्रवणे (आप्लवने इति दुर्गः)।

(To Jump, to raise, to lift)

इ इत् (अनुबन्धः) उपदेशावस्थायां नकारागमात् स्कुन्द् इति प्रकृतिः। आप्रवणमुतप्लवनमुत्प्लुत्य गमनं वेति तरङ्गिणी। उद्धरणमिति भोजः, अन्यार्थे सकर्म्मकः।

स्कुन्द्,(इ) सेट्,सक,आ। लट्—स्कुन्दते। लिङ्—स्कुन्देत। लोट्—स्कुन्दताम्। लङ्—अस्कुन्दत। लुङ्—अस्कुन्दिष्ट। लिट्—चुस्कुन्दे। चुस्कुन्दिषे। चुस्कुन्दिवहे। लुट्—स्कुन्दिता। लृट्—स्कुन्दिष्यते। आशीः—स्कुन्दिषीष्ट। लृङ्—अस्कुन्दिष्यत। कर्म्मणि, लट्—स्कुन्द्यते, स्कुन्द्येते इत्यादि। लिङ्—स्कुन्द्येत। लोट्—स्कुन्द्यताम्। लङ्—अस्कुन्द्यत। लुङ्—अस्कुन्दि इत्यादि।

सनादौ। सन्—चुस्कुन्दिषते। चुस्कुन्दिषेत। चुस्कुन्दिषताम्। अचुस्कुन्दिषत। चुस्कुन्दिषाञ्चक्रे—२। अचुस्कुन्दिषिष्ट। चुस्कुन्दिषिता। चुस्कुन्दिषिष्यते। चुस्कुन्दिषिषीष्ट। अचुस्कुन्दिषिष्यत। यङ्—चोस्कुन्द्यते। चोस्कुन्द्येत। चोस्कुन्द्यताम्। अचोस्कुन्द्यत। अचोस्कुन्दिष्ट। चोस्कुन्दाञ्चक्रे, ३। चोस्कुन्दिता। चोस्कुन्दिष्यते। चोस्कुन्दिषीष्ट। अचोस्कुन्दिष्यत। यङ्लुक्—चोस्कुन्दीति, चोष्कुन्ति। चोस्कुन्दाञ्चकार इत्यादि। (लङ्-द)अचोस्कुन्। भावादौ यङन्तवदित्युन्नेयम्।

णिच्—स्कुन्दयति । स्कुन्दयते । अचुस्कुन्दत्,—त इत्यादि ।
क्तत्. ल्यु—स्कुन्दनः । धातोर्गुरुमत्त्वात् स्त्रियाम् अ—स्कुन्दा ।

९ । श्विदि श्वैत्ये । ( To be white, to become white)

अकर्म्मकः । पूर्ववन्नागमः । श्वेतस्य भावः श्वैत्यं धावल्यम् । श्वेतस्य गुणस्यापि धातुना साध्यतया क्रमिकतया वाभिधानात् क्रियात्वम् । यदाह—

"श्वेततेः श्वेत इत्येतत् श्वेतत्वेन प्रकाश्यते ।
आश्रितक्रमरूपत्वादभिधानं प्रवर्त्तते ॥" इति ।

श्विन्द्, ( इ) सेट्, आ । लट्—श्विन्दते इत्यादि स्कुन्दिवत् ।

१० । वदि, अभिवादनस्तुत्योः ।
( To salute respectfully, to praise )

प्रणतिपूर्वमाशिषो याचनमभिवादनं, तथा च प्रयोगः । "अभिवदति नाभिवादयतेऽप्याचार्य्यं श्वशुरं राजन"मिति । अभिवादनं नमस्कारः । स्तुतिर्गुणकथनमिति रमानाथः ।

वन्द्, (इ) सेट्,आ,सक । लट्—वन्दते, वन्देते, वन्दन्ते । वन्दसे, वन्देथे, वन्दध्वे । वन्दे, वन्दावहे, वन्दामहे ।

लोट्—वन्दताम्, वन्देताम्, वन्दन्ताम् । वन्दस्व, वन्देथाम्, वन्दध्वम् । वन्दै, वन्दावहै,—महै ।

लिङ्—वन्देत, वन्देयाताम्, वन्देरन् । वन्देथाः, वन्देयाथाम्, वन्देध्वम् । वन्देय, वन्देवहि,—महि ।

लङ्—अवन्दत, अवन्देताम्, अवन्दन्त । अवन्दथाः, अवन्देथाम्, अवन्दध्वम् । अवन्दे, अवन्दावहि,—महि ।

लुङ्—अवन्दिष्ट,अवन्दिषाताम्, अवन्दिषत । अवन्दिष्ठाः, अवन्दिषाथाम्,अवन्दिढ्वम् । अवन्दिषि, अवन्दिष्वहि,—ष्महि ।

लिट्—ववन्दे, ववन्दाते, ववन्दिरे । ववन्दिषे, ववन्दाथे ववन्दिध्वे । ववन्दे, ववन्दिवहे,ववन्दिमहे ।

लुट्—वन्दिता, वन्दितारौ, वन्दितारः । वन्दितासे, वन्दितासाथे, वन्दिताध्वे । वन्दिताहे, वन्दितास्वहे, वन्दितास्महे ।

आशीः—वन्दिषीष्ट, वन्दिषीयास्ताम्, वन्दिषीरन् । वन्दिषीष्ठाः, वन्दिषीयास्थाम्, वन्दिषीध्वम् । वन्दिषीय, वन्दिषीवहि—महि ।

लृट्—वन्दिष्यते, वन्दिष्येते, वन्दिष्यन्ते । वन्दिष्यसे, वन्दिष्येथे, वन्दिष्यध्वे । वन्दिष्ये, वन्दिष्यावहे,—महे ।

लृङ्—अवन्दिष्यत, अवन्दिष्येताम्, अवन्दिष्यन्त । अवन्दिष्यथाः, अवन्दिष्येथाम्, अवन्दिष्यध्वम् । अवन्दिष्ये, अवन्दिष्यावहि,—महि ।

कर्मणि—वन्द्यते । अवन्द्यत । अवन्दि इत्यादि ।

सनादौ । सन्—विवन्दिषते । विवन्दिषाञ्चक्रे । अविवन्दिषिष्ट । यङ्—वावन्द्यते । वावन्दाञ्चक्रे । अवावन्दिष्ट । यङ्लुक्—वावन्दीति, वावन्ति । यङ्-सन्—वावन्दिषते । णिच्—वन्दयति,—ते । वन्दयाञ्चकार,—चक्रे इत्यादि । अववन्दत्—त । णिच्-सन्—विवन्दयिषति,—ते । अविवन्दयिषीत्,—षिष्ट ।

कृत्—वन्दनीयः । वन्दितव्यः । वन्द्यः । वन्दितः । वन्दिता । वन्दितुम् । वन्दित्वा । वन्द्यं । वन्दमानः । वन्दिष्यमाणः । वन्द्यमानः । वन्दारुः । 'शॄवन्द्योरारु'रिति आरुः । स्त्रियां युच्—वन्दना । वन्दा, वृक्षरुहा । बाहुलकात् स्त्रियां संज्ञायामकारः । "वन्दा वृक्षादनी वृक्ष,—रुहा जीवन्तिकेत्यपी"त्यमरः । स्तोतरि आवश्यकार्थे णिन्—वन्दी । 'वन्दि' इति सर्वधातुविषयेऽन्नन्तात् ङीषि (ईप्रत्यये) वन्दी हठहृतमहिला । वन्द्रः पूजकः । 'स्फायितञ्चौ'त्यादिना रक् प्रत्ययः । सन्-अ—विवन्दिषा । उ—विवन्दिषुः । णिच्,—शतृ—वन्दयन्, वन्दयमानः । सप्रयोगे—वन्दयिष्यमाणः । तृच्—वन्दयिता । अवर्गीयवकारोऽयम् ।

११। भदि, कल्याणे सुखे च।

( To be prosperous, to be glad )

कल्याणं मङ्गलम्। सुखमात्मवृत्तिगुणविशेषः। अकर्म्मकः। इदित्त्वान्नागमः।

भन्द्, (इ) सेट्, अक, आ। भन्दते। बभन्दे। अभन्दिष्ट। भन्दिता इत्यादि स्कुन्दिवत्। "ऋज्रेन्द्राग्रे"त्यादिना भन्देरक् नकारलोपः—भद्रम्। देवदत्ताय भद्रं भूयाद्देवदत्तस्येति वा। भद्रा करोति मुण्डयतीत्यर्थः। डाच्प्रत्ययः।

१२। मदि, स्तुतिमोदमदस्वप्नगतिषु।

To praise to be glad, to be proud, to sleep, to move slowly )

कान्तिगतिष्वित्येके। मोदो हर्षः। मदो गर्वः। स्वप्न आलस्यम्। चन्द्रस्तु मदि जये इत्यपि पपाठ। स्तुतिगतिभ्यामन्यत्राकर्म्मकः।

मन्द्, (इ) सेट्, सक, आ। लट्—मन्दते। लुङ्—अमन्दिष्ट, अमन्दिषाताम्, अमन्दिषत। लिट्—ममन्दे। लुट्—मन्दिता इत्यादि पूर्ववत्। उणादि—मन्दुरा, 'मन्दिवाशी'त्युरच्। मन्दिरम्, 'इषिमदिमुदी'त्यादिना किरच्। मन्द्रम्, 'स्फायितञ्चो'त्यादिना रक्। मन्दारः, 'अगिमदिमन्दिभ्य आरन्' इत्यारन्। मन्दरः, बाहुलकादरः। यद्वा मन्दं रातीति मन्दरः। अयं मदी हर्षे दिवादौ। मद हर्षलेपनयो ( ग्लपनयो )र्घटादौ। मद तृप्तियोग इति चुरादौ।

१३। स्पदि, किञ्चिच्चलने।

( To throb, to shake, to beat )

चलनं कम्पनम्। अकर्म्मकः। स्पन्द्, (इ) सेट्, आ। लट्—स्पन्दते। लिट्—पस्पन्दे। लुङ्—अस्पन्दिष्ट। लुट्—स्पन्दिता

इत्यादि पूर्ववत्। भावे—स्यन्द्यते। अस्यन्द्यत। अस्यन्दि। णिच्—स्यन्दयति। "चलनार्थेभ्यश्च"ति परस्मैपदमेव। अपस्यन्दत्। सन्—पिस्यन्दिषते। यङ्—पास्यन्द्यते। यङ्-लुक्—पास्यन्दीति, पास्यन्ति। क्त—स्यन्दनम्। स्यन्दित्वा। स्यन्दः। स्यन्दितः। स्यन्दितुम्। स्यन्दमानः। निस्यन्दः। स्यन्दितव्यम्। निस्यन्द्य। सन्-उ—पिस्यन्दिषुः। अ—पिस्यन्दिषा।

१४। क्लिदि, परिदेवने। ( To lament )

परिदेवनं शोचनम्। सकर्मकः। क्लिन्दते जननी सुतम्।

क्लिन्द्, (इ) सेट्, सक, आ। लट्—क्लिन्दते। लुङ्—अक्लिन्दिष्ट, अक्लिन्दिषाताम्, अक्लिन्दिषत। लिट्—चिक्लिन्दे। लुट्—क्लिन्दिता। आशीः—क्लिन्द्यात् इत्यादि पूर्ववत्। क्लिन्दयति,—ते। अचिक्लिन्दत्,—त। चिक्लिन्दिषते। चेक्लिन्द्यते। चेक्लिन्दीति, चेक्लिन्ति। क्लिन्द्यते। अक्लिन्दि। क्लिन्दितः। क्लिन्दित्वा। क्लिन्दितुम्। क्लिन्दनम्। क्लेदा, 'क्लेदौषधिशशाङ्कयो'रिति प्रकाशः। 'श्वनुक्षन् पूषन्नि'त्यादिना कनिन्प्रत्यये गुणानुमभावयोर्निपातितः क्लेदन् इति पुंलिङ्गः नान्तः शब्दः। अयं परस्मैपदिष्वपि पठ्यते। क्लिदू आर्द्रीभावे इति दिवादौ।

१५। मुद, हर्षे। ( To be glad, to rejoice )

बन्धुप्रभृतिसङ्गमादिजश्चित्तप्रसादो हर्षः। अकर्मकः।

मुद्, सेट्, आ। लट्—मोदते,—मोदन्ते। (ए) मोदे। लिङ्—मोदेत। लोट्—मोदताम्। लङ्—अमोदत। लुङ्—अमोदिष्ट, अमोदिषाताम्, अमोदिषत। अमोदिष्ठाः। अमोदिषि, अमोदिष्व। लिट्—मुमुदे, मुमुदाते, मुमुदिरे। मुमुदिषे। मुमुदिवहे। लुट्—मोदिता। ऌट्—मोदिष्यते। आशीः—मोदिषीष्ट। ऌङ्—अमोदिष्यत इत्यादि। भावे मुद्यते। मुद्येत। मुद्यताम्। अमुद्यत। अमोदि।

सन्—मुमुदिषते,मुमोदिषते । मुमुदिषाञ्चक्रे,—३ । मुमोदिषाञ्चक्रे,—३ । यङ्—मोमुद्यते,मोमुदाञ्चक्रे,आस,—बभूव । अमोमुदिष्ट । मोमुदिता इत्यादि । यङ् लुक्—लट्—मोमोत्ति, मोमुदीति ; मोमुत्तः, मोमुदति । मोमोत्सि, मोमुदीषि । मोमोद्मि, मोमुदीमि । लोट्—मोमोत्तु, मोमुत्तात्, मोमुदीतु । मोमुद्धि, मोमुत्तात् । मोमुदानि, मोमुदाव । लङ्—अमोमोत्, अमोमोद्, अमोमुदीत् । अमोमुत्ताम् । सि—अमोमोत्, अमोमोद्, अमोमोः, अमोमुदीः । अमोमुदम् । लिङ्—मोमुद्यात् । लिट्—मोमोदाञ्चकार—३ ।लुट्—मोमोदिता । लृट्—मोमोदिष्यति । आशीः—मोमुद्यास्ताम् । लुङ्—अमोमोदीत् । सिज्लोपस्यासिद्धत्वाद्वा प्रत्ययलक्षणेन वा गुणः । अमोमोदिष्टाम्, अमोमोदिषुः । लृङ्—अमोमोदिष्यदित्यादि । णिच्—मोदयति,—ते । मोदयाञ्चकारेत्यादि पूर्ववत् । लुङ्—अमूमुदत्,—त ।

क्त्—मुदित्वा, मोदित्वा, प्रमुद्य । मुदितमनेन ; मोदितमनेन । प्रमुदितमनेन, प्रमोदितमनेन । प्रमुदितः प्रमोदितः । प्रमुदितवान्, प्रमोदितवान् । भावादिकर्मणोरभ्यामन्यत्र मुदितो देवदत्तः,मुदितवानित्येव । ध्रौव्यार्थत्वात् कर्त्तरि क्तः। मोदनः । मत् । मुदिरः,—'इषिमदि'त्यादिना किरच् । मुद्गः,—'मुदिग्रोर्गग्गा'विति गक् । मुद्गेन संसृष्टं—मौद्गं तृतीयान्तात् अण् । मुद्रा,—'स्फायीतञ्चो'त्यादिना रक् । संसर्गार्थोऽयं चुरादौ ।

१६ । दद, दाने । ( To give )

किञ्चिदुद्दिश्य अपुनर्ग्रहणाय स्वीयवस्तुत्यागो दानम् । दद,सेट,सक,आ ।लट्—ददते । ददसे ।ददे । लिङ्—ददेत । लोट्—ददताम् । लङ्—अददत । लिट्—दददे, दददाते, दददिरे । आशीः—ददिषीष्ट ।लुङ्—अददिष्ट । लुट्—ददिता । लृट्—ददिष्यते । लृङ्—अददिष्यत ।कर्मादौ—दद्यते । दद्य-

ताम्। अदद्यत। ददेत। अदादि। शेषं कर्त्तृवत्। सन्—दिदिषते। यङ्—दाददते। यङ्लुक्—दाददीति, दादत्ति। णिच्—दादयति,—ते। अदीददत्,—त। शेषं मुदधातुवत्। ददितः। ददित्वा। ददितुम्।

१७। ष्वद, स्वाद, स्वर्द, आस्वादने।

( To be sweet or pleasing, to taste, to percieve )

ष्वद स्वर्द आस्वादने इति धातुवृत्तिकारः। संवरण इति चीरस्वामी। आस्वादनमनुभवः। अतोऽयं सकर्म्मकः "स्वदन्ति देवा उपा निह्वव्ये"ति दर्शनात्। छान्दसं परस्मैपदम्। आस्वादनमिह रसापादानं प्रीणनञ्चेति रमानाथः। तथा स्वादन इति ल्युटन्तेनार्थनिर्देशाच्च सकर्म्मकोऽयम्। यद्वक्ष्यते चुरादावास्वादने सकर्म्मक इति, अस्यार्थस्तत्र प्रपञ्चयिष्यते। यदायमनेकार्था धातव इति रुचौ वर्त्तते, तदाऽकर्म्मकः। आद्यः षोपदेशः। तदुक्तं भाष्ये—"अज् ( स्वर ) दन्त्यपराः सादयः षोपदेशाः स्मिङ्स्विदिस्वदिस्वञ्जिस्वपयश्चे"ति। प्रायेणायमाङ्पूर्वः। (१)

स्वद, सेट्, आ। लट्—स्वदते। लङ्—अस्वदत। लुङ्—अस्वदिष्ट। लिट्—सस्वदे। लुट्—स्वदिता इत्यादि ददवत्। दधि स्वदते देवदत्ताय इति सम्प्रदाने चतुर्थी। कर्म्मादौ स्वद्यते इत्यादि। सन्—सिस्वदिषते। यङ्—सास्वद्यते। यङ्लुक्—सास्वदीति, सास्वत्ति। णिच्—स्वादयति, स्वादयते। असिष्वदत्,—त। शेषं पूर्ववत्। ष्यन्तात् ( इनन्तात् ) सनि—सिस्वादयिषति,—ते।

स्वाद, सेट्, आ। लट्—स्वादते। लिट्—सस्वादे। लुङ्—अस्वादिष्ट इत्यादि स्वदिवत्। अजन्त्ये ति षोपदेशलक्षणं

(१) आस्वादते रसम्। "अपां हि तृप्ताय न वारिधारा स्वादुः सुगन्धिः स्वदते तुषारा।" इति नैषधे। "स्वदते विविधास्वादं स्वदते तु रसायन"मिति हलायुधः।

केवलदन्त्यविषयमिति दन्त्योष्ठ्यपरोऽयं न षोपदेशः । अतएव दन्त्योष्ठ्यपराः स्विद्यादयः स्मिङित्यादिना पुनः पठ्यन्ते । उक्तं—स्वादुः । स्वादस्वर्द्दौ वर्गीयवकारयुक्ताविति वर्णदेशना । अषोपदेशत्वात् असिस्वदत् इति न षत्वम् ।

स्वर्द, सेट्, आ । स्वर्दते । स्वर्दिता । अस्वर्दिष्ट इत्यादि । सिस्वर्दिषते । स्वर्दयति,—ते । असस्वर्दत्,—त । सास्वर्द्यते । सास्वर्दीति,सास्वर्त्ति । स्वर्द्यते । स्वर्दितः । स्वर्दित्वा । स्वर्दित्वा ।

१८ । उर्द्,माने क्रीड़ायाञ्च । (To measure, to play,to taste)

क्रीड़ायामकर्म्मकः । चकारादास्वादने । इह मानं सुखमिति सम्मतायाम् । मानं परिमाणमिति रमानाथः । कुस्वादिरयम् । कुस्वादिपाठिनः 'नामिनोर्वी'रित्यादिना दीर्घं विदधति । केचित् तु दीर्घमेवाधीयते ।

उर्द्, सेट्, आ । लट्—ऊर्दते । लोट्—ऊर्दताम् । लङ्—और्दत । लिङ्—ऊर्देत । लिट्—ऊर्दाञ्चक्रे । लुट्—ऊर्दिता । लृट्—ऊर्दिष्यते । आशीः—ऊर्दिषीष्ट । लुङ्—और्दिष्ट । लृङ्—और्दिष्यत । यथायोगं भावकर्म्मकर्म्मकर्त्तृषु ऊर्द्यत इत्यादि । लङ्—और्द्यत । लुङ्—और्दि । सन्—ऊर्दिदिषते । णिच्—ऊर्दयति,—ते । और्दिदत्,—त ।

१८ । कुर्द, खुर्द, गुर्द, गुद क्रीड़ायामेव ।(To play,to taste)

अत्र कैयटपुरुषकारमैत्रेयादिषु तृतीयो न पठ्यते । सम्मतामोघाविस्तारचान्द्रेषु तु त्रयोऽपि पठ्यन्ते । गुदक्रीड़ा गुदविहार इति चरके । मैत्रेयकाश्यपौ गुद इत्यपि पृथक् धातुरिति । अत्रैवकारो धातूनामनेकार्थत्वे ज्ञापक इत्युक्तम् । स्फुर्जे दीर्घोपदेशादुपधायां चेति नैषां दीर्घ इति चन्द्रः । मैत्रेयसम्मतामोघाविस्तारकारादयस्तु दीर्घत्वमिच्छन्ति । दुर्गसिंहोऽपि कूर्दते खूर्दते इति दीर्घं विदधाति । वररुचिस्तु पूर्वसत्रे

यदुपधाग्रहणं तदिहार्थं, तेन 'नामिनोर्वो'रित्यादिना प्रकृति-व्यञ्जने दीर्घो न स्यात्—कुर्दते इत्याह ।

कुर्द,सेट्,आ । लट्—कूर्दते । कूर्देत । कूर्दताम् । अकूर्दत । आशीः—कूर्दिषीष्ट । लिट्—चुकूर्दे । लुट्—कूर्दिता । लृट्—कूर्दिष्यते । लुङ्—अकूर्दिष्ट । भावे—कूर्द्यते इत्यादि । सन्—चुकूर्दिषते । यङ्—चोकूर्द्यते । यङ्लुक्—चोकूर्त्ति, चोकूर्दीति । चोकूर्त्तः । चोकूर्दाञ्चकार । चोकूर्दिता इत्यादि । लङि—अचोकूर्दीत्, अचोकूर्त्, अचोकूर्द् । सिपि (सौ) 'वा दघोरत्व'मिति अचोकूः इत्यपि । चान्द्रेऽपि मते रो रि-लोपे 'ढ्रलोप' इति दीर्घस्य विद्यमानत्वादत्र न विशेषः । णिच्—कूर्दयति,—ते । अचुकूर्दत्,—ते । सन्—चोकुर्दिषते । एवमितरयोरप्युदाहार्य्यम् ।

गुद, सेट्, आ । लट्—गोदते । लिट्—जुगुदे । लुङ्—अगोदिष्ट । अगोदिषाताम्,—षत । लुट्—गोदिता । सन्—जुगुदिषते, जुगोदिषते । णिच्—गोदयति,—ते । अजूगुदत्,—त । क्त्वा—गुदित्वा, गोदित्वा इत्यादि सुदिवन्नेयम् । गुदम्, इगुपधलक्षणः कः । गोद इति 'पचादजि'ति मते यः ।

२० । षूद, क्षरणे ( क्षपने ) ।

( To distil, to kill, to deposit, to place )

क्षरणं निःसरणम् । अत्रायमकर्म्मकः । हिंसायामपि वर्त्तते, मधुसूदन इति,—अत्रायं सकर्म्मकः,दुर्गस्तु 'षूद क्षपने' इत्येव पठति । ण्यन्तोऽयं संस्कारेऽपि वर्त्तते । 'अग्निर्हव्यं शमिता सूदयती'ति । क्षरणत्वादुकरणनाशनार्थत्व-"अहो-रात्राणि मरुतो विलिष्टं सूदयन्तु'इत्यत्राह भट्टभास्करः । तथाहि अहोरात्राणि मरुतश्च तद् विलिष्टं विनाशितं विष्टपं वा सदयन्तु क्षारयन्तु यद्विलिष्टं स्वादु कुर्वन्तु वा । यद्वा यद्विलिष्टं याग-

योग्यं यद्विरूपं विश्लिष्टं तद्विनाशयन्त्विति । चरे तु तव विलिष्टं न्यूनं पूरयन्त्विति पुराणार्थत्वं दृश्यते ।

सूदृ, सेट्, आ । सूदते । सुषूदे । सुषूदिषे । असूदिष्ट । सूदिता । सूदिष्यते । असूदिष्यत इत्यादि । भावादौ सूद्यत इत्यादि । सुसूदिषते । सोषूद्यते । सोषूत्ति, सोषूदीति । सूदयति,—ते । असूषुदत्,—त । क्तत्, ताच्छील्ये तृन्—सूदिता । णि ल्यु—मधुसूदनः । निषूदनः । चरति, चारयति रसानिति च—सूदः पङ्कः, पाचकश्च, कर्त्तरि कः । अयं चुरादावपि ।

२१ । क्रादं, अव्यक्ते शब्दे । (To sound, to roar)

अव्यक्तशब्दो वाद्यादिघोषः । शब्दस्य गुणत्वेऽपि क्रियात्वम् ।

क्रादृ, सेट्, अक, आ । क्रादते । जक्रादे । अक्रादिष्ट । क्रादिता इत्यादि । भावे—क्राद्यते इत्यादि । अक्रादि । जिक्रादिषते । जाक्राद्यते । जाक्रादीति, जाक्रात्ति, इत्यादि । क्रादयति,—ते । क्रादयाञ्चकार,—३ । अजिक्रदत्,—त । पचाद्यच् पृषोदरादित्वात् ह्रस्वः—क्रदः । घञ्—क्रादः । अस्त्यर्थे इन्, ङ्—क्रादिनी ।

२२ । ह्लादी, सुखे च । ( To be glad, to sound )

चकारादव्यक्तशब्दे च । ह्लादृ, सेट्, (ई) अक, आ । ह्लादते इत्यादि क्रादिवत् । विशेषस्त्वीदनुबन्धत्वात् निष्ठायामिड्भाव उपधाह्रस्वश्च । तथा निष्ठातकारस्य पूर्वदकारस्य च नकारः । क्त—आह्लन्नः, क्तवतु—आह्लन्नवान् । क्ति—प्रह्लत्ति, उपधाह्रस्वः क्तौ चेष्यते । क्त्वा—ह्लादित्वा । घञ्—ह्लादः, आह्लादः, प्रह्लादः ।

२३ । पर्द, कुत्सिते शब्दे । (To break wind, to fast)

रेफवद्दान्तः । इह कुत्सितः शब्दो गुदरवः । तदाह केशवस्वामी—"कौचे कर्दति पर्दते गुदरव" इत्यादि ।

पर्द, सेट्, अक, आ—पर्दते । पर्दताम् । पर्देत । अपर्दत । पपर्दे । अपर्दिष्ट । पर्दिता । पर्दिष्यते । पर्दिषीष्ट । भावे—पर्द्यते

अपर्दि । पिपर्दिषते । पापर्द्यते । पापर्दीति, पापर्त्ति इत्यादि। पृदाकुः, 'पर्देर्नित् संप्रसारणमल्लोपश्चे'ति काकुप्रत्ययो लोपः संप्रसारणञ्च ।

२४ । यती, प्रयत्ने । (To strive, to indeavour)

यत्, सेट्, (ई) अक, आ । यतते । यतताम् । यतेत । अयतत । येते । येतिषे । अयतिष्ट । यतिता । यतिष्यते । यतिषीष्ट। अयतिष्यत । भावे—यत्यत इत्यादि । यियतिषते । यायत्यते। यायतीति, यायत्ति । यातयति—ते । अयीयतत्—त । भावे 'तकी'त्यादिना यत्—यत्यम् । क्त्वा—यतित्वा । क्त—आयत्तः, क्तवतु—आयत्तवान्, ईदनुबन्धत्वात् निष्ठायामिड़भावः । भावे नङ्—यत्नः । 'इन् सर्वधातुभ्य' इतीन्—यतिः । यत निकारोपस्कारयोरिति चुरादौ ।

२५ । युत्, जुत्, भासने । (To shine)

युत्, जुत्, (ऋ) सेट्, अक, आ । योतते । युयुते । अयोतिष्ट। योतिता इत्यादि । भावे—युत्यते । अयोति । युयुतिषते, युयोतिषते । योयुत्यते । योयुतीति, योयोत्ति इत्यादि । योतयति। अयुयोतत्, ऋदनुबन्धत्वादुपधाह्रस्वनिषेधः । युतित्वा, योतित्वा। निष्ठायां द्युदिवत् उदाहार्य्यः—युतितमनेन, योतितमनेन, इत्यादि । जुत्—जोतते इत्यादि युतिवत् ।

२६ । विथृ, वेथृ, याचने । (To beg, to ask)

तवर्गद्वितीयान्तौ । आद्यो धान्त इति कौशिकः । .क्षीरस्वामिना त्वयं पक्षो दूषितः ।

विथ्, (ऋ) सेट्, सक, आ । वेथते । वेथताम् । वेथेत। अवेथत । विविथे । अवेथिष्ट । वेथिषीष्ट । वेथिता । वेथिष्यते। अवेथिष्यत । विविथिषते, विवेथिषते । वेविथ्यते । वेविथीति, वेवेत्ति । वेथयति,—ते । अविवेथत्,—त ।

वेथ, (ऋ) सेट्, सक, आ । विशेषः—विवेथे, वेथ्यते । विवेथि-

षते। विवेथ्यते। वेवेथीति, वेवेत्ति। अनयोः ऋदित्करण-मुपधाह्रस्वनिवृत्त्यर्थम्, अविवेथत्,—त। इमौ द्विकर्म्मकौ। दुह्यादित्वादप्रधाने कर्म्मणि प्रत्ययः।

२७। श्रथि, शैथिल्ये। ( To loosen, to liberate )

शैथिल्यं विश्लिष्टता, गाधता च। 'शिथिलीभावस्तत्करणञ्चे'ति रमानाथः।

श्रन्थ, (इ) सेट्, अक, आ। श्रन्थते।—ताम्। अश्रन्थत। श्रन्थेत। शश्रन्थे। अश्रन्थिष्ट। श्रन्थिषते। श्रन्थिता। श्रन्थिषीष्ट। अश्रन्थिष्यत। भावे—श्रन्थ्यते। अश्रन्थ्यत। अश्रन्थि, इत्यादि। शिश्रन्थिषते। शाश्रन्थ्यते। शाश्रन्थीति, शाश्रन्ति। लङ्-दि, सि—अशाश्रन्। श्रन्थयति,—ते। अशश्रन्थत्,—त। स्त्रियां भावे अ—श्रन्था। युविधौ लाक्षणिकत्वात् नास्य ग्रहः। प्रश्रथः, विश्रथः, घञि नलोपवृद्ध्यभावयोर्निपातनम्। गणान्तरपठितस्य वा निपातनम्। क्र्यादौ चुरादौ च श्रन्थ इति।

२८। ग्रथि, (वकि) कौटिल्ये। ( To be crooked )

कौटिल्यं शाठ्यं, वक्रता वा।

ग्रन्थ्, (इ) [वङ्क् (इ) दुर्गः] सेट्, अक, आ। ग्रन्थत इत्यादि श्रन्थिवत्। अभ्यासकार्य्यं विशेषः। केचित् श्रन्थ् ग्रन्थ् इतीमावनिदनुबन्धौ सानुषङ्गौ पठन्तः, कानुबन्धे नलोपमिच्छन्ति। अत्र तरङ्गिणी इदनुबन्धादनुनासिकलोपाभावात् श्रेथे, ग्रेथे इत्युदाहरन्, वृत्तिकारो भ्रान्त इति, अत्र वृत्तिकार इति धातुवृत्तिकृदुच्यते। तथा सानुषङ्गपाठः काशिकावृत्तिकारस्याऽप्यनभिमतः। यतः 'श्रन्थिग्रन्थिदम्भिस्वञ्जी'नामिति लिटः कित्त्वविधौ श्रेथतुर्ग्रेथतुरिति परस्मैपदिनावेवोदाजहार। ग्रन्थ सन्दर्भे इति क्र्यादौ युजादौ च। ग्रन्थ बन्धन इति च युजादौ। वकिरयं दन्त्योष्ठ्यादिरिति वोपदेवः। वङ्कते। अवङ्किष्ट। ववङ्के। चन्द्रगोमी तु 'ग्रथ ग्रथि कौटिल्ये' इति पठित्वा

ग्रथते, ग्रन्थते; अनेकार्थत्वात् सन्निहितार्थत्वाच्चानयोरिति ग्रथितं ग्रन्थितमिति उदाहृतवान् इति सुभूतिरेवं व्याचकार। दुर्गोऽच ग्रथिना सह वकिं पठति।

२९। कत्थ, श्लाघायाम्। ( To praise, to boast )

श्लाघा गुणकथनमिति रमानाथः।

कत्थ्, सेट्, अक, आ। कत्थते। चकत्थे। अकत्थिष्ट। कत्थिता इत्यादि। कत्थ्यते। अकत्थि। चिकत्थिषते। कत्थयति,—ते। अचकत्थत्,—त। चाकत्थ्यते। चाकत्थीति, चाकत्ति इत्यादि पूर्ववत्। वाचुपपदे तच्छीलादिषु घिनुण्—विकत्थी। वास-रूपेण युच्—विकत्थनः। एधादय उदात्ता अनुदात्तेतः।

## अथ तवर्गीयान्ताः परस्मैपदिनः।

३०। अत, सातत्यगमने। ( To go constantly।

सातत्यगमनं सन्ततगमनम्। निरन्तरं भ्रमणं प्रापणं वा सातत्य गमनमिति रमानाथः। ग्राममतति। अतति सूर्य्यो ग्रामाय।

अत्, सेट्, प। अतति। अततु। अतेत्। आतत्। आतीत्। मा भवानतीत्। आत, आततुः। आतिथ। आतिव। अतिता। अतिष्यति। अत्यात्। आतिष्यत्। कर्म्मणि—अत्यते। अत्यताम्। आत्यत। अत्येत। आति। अतिता। अतिष्यते। अतिषीष्ट। आति, आतिषाताम्, आतिषत। गत्यर्थानां कर्त्तृस्थक्रियत्वान्न कर्म्मकर्त्तास्ति। गत्यर्थत्वात् कर्म्मव्यतिहारे आत्मनेपदं न भवति। व्यत्यतति। अतितिषति। आतयति। आतितत्। (अजां देवदत्तं ग्रामम्, गत्यर्थत्वात् प्रयोज्यस्य कर्मत्वम्)। कर्त्तृकर्मभावाधिकरणेषु क्तः—अतितो ग्रामम्, अतितो ग्रामः। अतितं देवदत्तेन, इदमेषामतितम्। अतक आसन्नः। 'इण्भी'त्यादिना कन्। आतिः गन्ता, पक्षिविशेषश्च, 'अज्यतिभ्यां चे'तीण् प्रत्ययः। पादाभ्यामततीति पदातिः। 'पादस्य

पदाज्यातिगोपहतेष्वि'त्याज्यादिषूत्तरपदेषु पदादेशः। शोभनमततीति स्वातिः, स्वाती नक्षत्रं, स्त्रियां पक्षे ङीः। अतिथिः, 'ऋतन्यञ्जी'त्यादिना अतेरिथिन्। अतसः—क्षौमं, प्रहरणं, वायुश्च। 'अत्यविचमी'त्यादिना असच्। अतसी, उमा स्त्रियां ङीष् (ई)। सातयतीति सातयः। 'अनुपसर्गाल्लिम्पे'त्यादिना शः। सातिः सौत्रो धातुरिति वृत्तौ। बोधिन्यासेऽपि सातिः सुखे वर्त्तते सौत्र इति। जिनेन्द्रहरदत्तौ सातिर्हेतुमति स्मृत इति। इदित्त्वन्धनार्थं उत्तरत्र भविष्यति।

२१। चिती, संज्ञाने। (To understand, to notice)

संज्ञानं चैतन्यम्। निद्राविगमो वा।

चित् (ई) सेट्, प। चेतति। चेततु। चेतेत्। अचेतत्। चिचेत। चिचिततुः। चिचेतिथ। चिचित। चिचेत। चिचितिव। चिचितिम। अचेतीत्। चेतिता। चेतिष्यति। आशीः—चित्यात्। अचेतिष्यत्। भावे—चित्यत इत्यादि। चिचितिषति, चिचेतिषति। चेचित्यते। चेचितीति, चेचेत्ति। चेतयति, अचीचितत्। (देवदत्तम्, गतिबुद्धी'ति प्रयोज्ये कर्म। 'अणावकर्मकादि'ति परस्मैपदमेव)। चेतित्वा, चितित्वा। चित्तः। चित्तवान्। ईदनुबन्धत्वात् 'न ङीश्वी'त्यादिना अनिट्। इगुपधलक्षणः कः—चितः। बाहुलकात् कर्त्तरि ल्युः (युः)—चेतनः। संपदादित्वाद्भावे क्विप्—चित् चैतन्यम्। असुन्—चेतः। (१)

(१) अत्र मैत्रेयः—'कणः कश्चे'ति चितेः कण्प्रत्यये धातोरन्त्यस्य ककारे चिक्कण इति। बहुलवचनाद्गुणाभावः, प्रत्ययकस्येत्संज्ञाऽभावश्चेति। हरदत्तस्तु—चिनोतेः क्विप्, चित्, कणतेरच् कणः, तकारस्य ककारश्चिक्कणादिपाठात्। केचित्तु चिक्कणादिषु तकारमेव पठन्ति। न्यासकारोऽप्येवं निरवाह। स्मरणार्थेऽप्ययम्। चेतन्ती सुमतीनामिति दर्शनात्। 'अधीगर्थदयेशां कर्म्मणी'ति कर्म्मणः शेषत्वे षष्ठी। अधीगर्थाः स्मरणार्थाः। तथा सन्धानार्थोऽपि। यदाह श्रीरामस्वामी—प्राप्ती विनाशः,

३२। च्युतिर्, आसेचने। ( To flow, to trickle )

सेचनमार्द्रीभावनम्। यदाह हरदत्तः—सिचिः कर्म्मस्थक्रियः, आर्द्रभावनं ह्यत्र प्रधानं तदर्थत्वात्कारकव्यापारस्येति। आङीषदर्थेऽभिव्याप्तौ वा।

च्युत् ( इर् ) सेट्, सक, प। च्योतति। च्योततु। च्योतेत्। अच्योतत्। चुच्योत। चुच्योतिथ। चुच्युतिव। अच्युतत्, अच्योतीत्; अच्युतताम्, अच्योतिष्टाम्; अच्युतन्, अच्योतिषुः, इत्यादि। च्योतिता। च्योतिष्यति। आशीः—च्युत्यात्। कर्म्मादौ च्युत्यते इत्यादि। चुच्युतिषति, चुच्योतिषति। चोच्युत्यते। चोच्युतीति, चोच्योत्ति। च्योतयति,—त। अचुच्युतत्,—त। च्योतित्वा, च्युतित्वा। च्युतितमनेन, च्योतितमनेनेत्यादि। कर्म्माविवक्षायां कर्म्मकर्त्तरि भावसम्भवः।

३३। श्चुतिर्, क्षरणे। ( To ooze, to trickle )

क्षरणं स्रुतिः। श्चुत् ( इर् ) सेट्, प। श्चोतति। चुश्चोत इत्यादि च्युतिवत्। विशेषः—अभ्यासे शलोपः—चुश्चोत। मधु श्चोततीति मधुश्चुत्, क्विप्। अस्मात् 'तत् करोति तदाचष्टे' इति णिचि मधुश्चयतेः क्विपि मधुक् इति। (१)

३४। मन्थ, विलोड़ने। ( To churn, to shake )

विलोड़नं क्षोभणम्।

मन्थ्, सेट्, सक, प। मन्थति। मन्थतु। अमन्थत्। मन्थेत्। ममन्थ। ममन्थिथ। मन्थिता। अमन्थीत्। मन्थिष्यति। आशीः—मथ्यात्। अमन्थिष्यत्। कर्म्मादौ मथ्यते इत्यादि।

चित्तं सन्धानं—प्रायश्चित्तमिति। 'प्रायस्य चित्तिचित्तयो'रिति पारस्करादिपाठात् सुट्।

(१) अत्र श्चुतिरित्ययकारमपि पठन्ति। तथाच—"मधुश्चुतं घृतमिव सुपूतं श्चोतन्ति ते" इत्यादौ भट्टभास्करः। मैत्रेयोऽपि श्चुतिरित्ययकारं पठन्ति, चुतिर् क्षासन इति च।

मिमन्थिषति । मामथ्यते । मामन्थीति, मामन्थि । ( दि, सि ) अमामन् । मन्थयति,—त । अममन्थत्,—त । मथित्वा, मन्थित्वा । मन्थः, करणे घञ् । अधिकरणे ल्युडन्तात् ( युडन्तात् ) ङीप (ई) मन्थनी । 'सम्यनचक्षुव' इत्यानज् बाहुलकादस्मादपि । मन्थानः । (१)

३ । कुथि, पुथि, लुथि, मथि, हिंसासंक्लेशयोः ।
( To hurt, to kill, to suffer pain )

प्राणवियोगफलकव्यापारो हिंसा । दुःखं क्लेशः । सर्वे इदनुबन्धाः ।

कुन्थ्, पुन्थ्, लुन्थ्, मन्थ् (इ) सेट्, प । कुन्थति । अकुन्थीत् । चुकुन्थ इत्यादि मन्थिवत् । विशेषस्त्विदनुबन्धत्वात् नलोपाभावः । कुन्थ्यते इत्यादि, तथा हिंसार्थत्वात् 'अनियमे चागतिहिंसे'ति कर्म्मव्यतिहारे हिंसायाम् आत्मनेपदनिषेधश्च एवं पुन्थतिलुन्थतिमन्थतयोऽपि । (२)

---

(१) अत्रायं धातुर्यद्यपि चीरस्वाम्यादिभिर्न पठ्यते, तथापि मैत्रेयचन्द्रदुर्गैः पठितत्वात् "अमौगर्भादग्निं मन्थति ततो यथा प्राग्नु मन्थति यदि मथ्यमानो न जायेत"इत्यादिदर्शनादस्त्येव । अयं द्विकर्म्मकः । दुह्यादित्वादप्रधाने कर्म्मणि प्रत्ययः—"अमृतमम्बुनिधिमथ्यत" इति । द्वितीयावत् कृद्योगलक्षणा षष्ठ्युभयत्र, कर्म्मणि गुणे तूभयथा गोणिकापुत्र इति वचनाद्द्वितीयापि । अमृतस्याम्बुनिधेर्मन्थिता, अम्बुनिधिमिति च अमृतं मन्थितव्योऽम्बुधिर्देवैरित्यत्र 'कृत्याना'मिति योगविभागेन कर्त्तृकर्म्मणोः षष्ठी निषिध्यते । नाथतौ सर्वमेतद् उपपादितम् अयं क्र्यादावपि । इह चाग्रे निरनुषङ्ग एदित् ।

(२) अत्र च चीरस्वामी—मन्थं सानुषङ्गमनिदितं पठित्वा मथ्यत इति चोदाहृत्य मथीति दौर्गा मन्यन्त इत्याह । सम्मतायां तु द्वावपि पठ्येते । खड्गोपकुकुन्थ्यं शत्रुं मारयति । खड्गेनोपकुन्थमिति वा । वासरूपेण क्वापीति । तेन खड्गेनोपकुन्थ्येति । कुन्थसंश्लेषण इति क्र्यादौ । कुथ पूतीभावे । पूथ हिंसायामिति दिवादौ । पुथभाषार्थश्चुरादौ । केचित् 'पूथि' इत्यत्र 'युथि' इति पठित्वा युन्थतीत्याद्युदाहरन्ति । तत्र 'मन्थि' इति च केचित् पठन्ति ।

३६ । षिध्, गत्याम् । To go, to move )

षिधु गत्यामिति दुर्गः । केचिदुदितं पठन्ति । यदाह काश्यपः—'उकार उदितो वे'ति विशेषणार्थ इति, तरङ्गिणी चायमुदिदिति, तद्वृत्तिविरोधादुपेक्ष्यं, यदाह—"ततः परं सिध्यतिरेव नेतर" इत्यनिट्कारिकायां सिध्यतिबुध्यत्योः श्यना निर्देशादन्यविकरणयोर्बुधिसिध्योरिड् भवत्येव । बोधिता। सेधिता । निष्ठायामपि प्रतिषेधाभावाद्बुधितं सिधितमित्येव भवतीति । उदित्त्वे हि 'उदितो वे'ति क्त्वाप्रत्यये इटो विकल्पस्योक्तत्वाद् 'यस्य विभाषा' यस्य धातोः क्वचिद्विभाषेडुक्तस्तस्य निष्ठायामिट् नेति प्रतिषेधेन भाव्यमिति कथमेवं ब्रूयात्। तत्र न्यासपदमञ्जर्योरपि सिधेरुदित्त्वमनार्षमित्युक्तम् । अत एव क्षीरस्वामी सिद्धमित्युदाहृत्य निरनुबन्धपाठे तु सिधित इत्यपरितुष्यन्नुदाजहार ।

सिध्, सेट्, प । सेधति । सेधतु । सेधेत् । असेधत्। प्रत्यषेधत् । सिषेध । सिषेधिथ । सिषिधिव । सेधिता । सेधिष्यति । सिध्यात् । असेधीत् । असेधिष्यत् । सिध्यते इत्यादि। गत्यर्थत्वेन कर्त्तृस्थक्रियत्वात् न कर्म्मकर्त्तास्ति । सन्—सिसेधिषति, सिसिधिषति । प्रतिषिषि(षे)धिषति । यङ्—सेषिध्यते। यङ्लुक्—सेषिधीति, सेषेद्धि । णिच्—सेधयति । असीषिधत्।

प्रति, नि—प्रतिषेधः—निवारणं सङ्क । ग्रीष्मकाद्यात् प्रतिषेधति । परि—वेष्टनम् । "द्विषो घ्नन् प्रतिषेधतः ।" भट्टि—८—८८ । गत्यर्थे—प्रतिसेधति गा इत्यादौ षत्वं न भवति। क्त्वा—सिधित्वा, सेधित्वा । क्त—सिधितः । 'षिधु' इति उदनुबन्धपाठे तु—सिध्वा, सेधित्वा, सिधित्वा इति । क्त—सिद्धः। क्तवतु—सिद्धवान् इति च । सुषेधः, दुःषेधः, निःषेधः । रक्—सिध्रः साधुपर्य्यायः । संज्ञायां कन्—सिध्रको वृक्षविशेषः । सिध्र

कावणम्, कोटरादित्वाद्दीर्घः, पूरगेत्यादिना वननकारस्य णत्वञ्च। बाहुलकान्मन्—सिध्मम्, अस्त्यर्थे लच्—सिध्मलः।

३७। षिधू, शास्त्रे माङ्गल्ये च।

( To command in general, to ordain relatively, to do an auspicious act etc )

शास्त्रं शासनमिति मैत्रेयशाकटायनौ, शिष्टावित्येव चन्द्रः। शास्त्रं शास्त्रविषयं शासनम्, माङ्गल्यं मङ्गलक्रियेति चीरस्वामी। एवं तरङ्गिण्यामपि।

सिध् (ऊ) वेट्, प। लट्—सेधति। लङ्—असेधत्। लुङ्—असेधीत्, असैत्सीत्; असेधिष्टाम्, असैद्धाम्; असेधिषुः, असैत्सुः। असेधीः, असैत्सीः; असेधिष्टम्, असैद्धम्;—ष्ट,—द्ध। असेधिषम्, असैत्सम्। असेधिष्व, असैत्स्व—ष्म—त्स्म। लिट्—सिषेध, सिषिधतुः, सिषिधुः। सिषेधिथ, सिषेद्ध। (व) सिषिधिव, सिषिध्व। लृट्—सेत्स्यति, सेधिष्यति। लुट्—सेद्धा, सेधिता। लृङ्—असेत्स्यत्, असेधिष्यत्। कर्म्मणि—सिध्यते। असेधि। सन्—सिषित्सति, सिसिधिषति, सिसेधिषति। यङ्—सेषिध्यते। यङ्लुक्—सेषेद्धि, सेषिधीति। णिच्—सेधयति। असीषिधत्। सेधयाञ्चकार—२।

अप—खण्डनम्। 'पापमपसेधति' मनु—११—१९८। आ—अवरोधः। उद्—उत्सेधः उच्चता। नि, प्रति—निषेधः। निवारणम्। 'भूतगणान्यषेधीत्' भट्टिः—१—१५। व्यति—सिध्, आ। व्यतिषेधते। आशीः—व्यतिषित्सीष्ट व्यतिषेधिषीष्ट। लुङ्—व्यत्यषिद्ध, व्यत्यषिधिष्ट।

क्त्वा—सिधित्वा, सेधित्वा, सिद्ध्वा। निषिध्य। सेधः। सेधनीयम्। सेद्धव्यः, सेधितव्यः। सिद्धः। सिद्धिः। सेधकः। निषेधः। प्रतिषेधः। सेद्धुम्, सेधितुम्। तृच—सेद्धा, सेधिता। सेधन्। सिध्यमानः। सेत्स्यमानः, सेधिष्यमाणः। णिच्—सेध-

यितम्। सेधितः। सेधना। सेधयित्वा।—सेध्य। सन्—सिसित्सः सिसेधिषुः, सिसिधिषुः। सिषित्सा, सिसिधिषा, सिसेधिषा।

३। खादृ, भक्षणे। ( To eat )

खाद् ( ऋ ) सेट्, सक, प। खादति। खादतु। खादेत्। अखादत्। चखाद। चखादिथ। अखादीत्। खादिता। खादिष्यति। अखादिष्यत्। आशीः—खाद्यात्। कर्म्मादौ खाद्यते इत्यादि। चिखादिषति। चाखाद्यते। चाखादीति, चाखात्ति। खादयति। (१) अचखादत्। क्त—खादितो मोदकः, खादितमनेन, इदमेषां खादितं,—'कर्म्मभावादिकरणेषु' क्तः। ताच्छील्ये वुञ्—खादकः। खादिता।—खादित्वा,—खाद्य। खादनीयः, खादितव्यः, खाद्यः। खादितुम्। खादनम्। खादन्। खादमानः। खादयिता। चिखादिषुः। चिखादिषा।

३९। खद, स्थैर्य्ये हिंसायाञ्च। (To be steady, to kill, to eat)

चकाराद्भक्षणे च। स्थैर्य्ये ऽकर्मकः।

खद् सेट्, प। खदति। चखाद इत्यादि खादिवत्। लुङि—अखदीत्, अखादीत्। खादयति। अचीखदत्। स्थैर्य्ये प्रयोज्यं कर्म्म भवति। किरच्—खदिरः। यवखदा, यवसारः, स्वभावात् स्त्रीविषयोऽयम्। इन्—यवखदी।

४०। बद, स्थैर्य्ये। ( To be firm )

ओष्ठ्यादिरयम्। बद्, सेट्, अक, प। बदति। बबाद। बेदतुः, बेदुः। बेदिथेत्यादि (२)। लुङ्—अबादीत्,

(१) खादयति मोदकं देवदत्तेन 'गतिबुद्धी'त्यादिना प्राप्तं, प्रयोज्यस्य कर्म्मत्व'मदिखाद्योः प्रतिषेध' इति निषिध्यते। 'निगरणचलने'ति नित्यं परस्मैपदम्।

(२) आदेशादित्वानाश्रयणात् एत्वाभ्यासलोपौ। कलापमते 'नशददे'त्यादौ दन्त्योष्ठ्यवादिग्रहणात् ओष्ठ्यवादेरस्य एत्वाभ्यासलोपौ भवत एव।

अवदीत्। (१) बाहुलकादरन्—बदरम्। बदरी—'षिद्गौरादिभ्यश्च' इति ङीष्।

४१। गद, व्यक्तायां वाचि (२)। ( To speak, to say )

गद्, सेट्, सक, प। गदति। गदतु, गदतात्। अगदत्। गदेत्। जगाद, जगदतुः, जगदुः। अगदीत्, अगादीत्। अगादिष्टाम्, अगदिष्टाम्। गद्यात्। गदिता। गदिष्यति। अगदिष्यत् इत्यादि। प्रणिगदति, प्रण्यगदत् (३)। गादयति,—ते, पुत्रं श्लोकं देवदत्तः,—प्रयोज्यस्य कर्म्मत्वम्। अजीगदत्,—त। सन्—जिगदिषति। यङ्—जागद्यते। यङ्लुक्—जागत्ति, जागदीति। कर्म्मणि—गद्यते। अगद्यत। अगादि। कृत्—गद्यम्। उपसर्गात्तु ण्यत् (घ्यण्)—प्रगाद्यमिति। निगदः—"नौ गदे"ति पचे अप् ( अल् )। अन्यदा घञ्—निगादः। (४) गदनम्। गदित्वा। गदितः। जिगदिषा। इन्—गदी।

४२। रद, विलेखने। ( To split, to scratch )

विलेखनं भेदनम्। रद्, सेट्, सक, प। लट्—रदति। लिट्—रराद, रेदतुः। रेदिथ। रदिता। रदिष्यति। अरदीत्, अरादीत्। रद्यात्। अरदिष्यत्। रादयति—ते। अरीरदत्—त।

(१) वदव्रजेत्यादौ व्रजसाहचर्य्यात् दन्त्योष्ठास्य विषयत्वात् ओष्ठ्यस्याप्रसङ्ग इति 'व्यञ्जनादीनां सेटा'मित्यादिना वा दीर्घः।

(२) वचनं शब्दप्रकाशफलत्वात् कर्म्मस्थमिति न्यासपदमञ्जरीकैयटेषु।

(३) "नेर्गदनदे"ति। णत्वम्। अड्व्यवायेऽपि इदमिष्यत इति प्रण्यगददित्यादावपि णत्वं भवति।

(४) अनुगदतीत्यानुगादिकः। "अनुगादिनष्ठगि"ति ठक्, अस्मादेव निपातनात् णिनिः। न त्वयं केवलं प्रयोगार्हः ठको नित्यत्वादिति न्यासपदमञ्जर्य्यादिषु। कर्मव्यतीहारे नास्य तङस्ति 'आत्मनेपदम्'। "प्रतिषेधे हसादीनामुपसंख्यान"मिति निषेधात्। हसादयो हसिप्रकारास्ते च शब्दनक्रियाः।

रिरदिषति। रारद्यते। रारदीति, रारत्ति। कर्म्मणि—रद्यते। अरादि। क्त्वा—रदित्वा। रदितुम्। रदितः। इत्यादि पूर्ववत्। करणे ल्युट् (युट्)—रदनः।

४३। णद, अव्यक्ते शब्दे। (To sound inarticulately)

'णो नः' इति नत्वम्। नद, सेट्, अक, प। नदति। ननाद। नेदिथ। नदिता। नदिष्यति। अनदीत्, अनादीत्। नद्यात्। अनदिष्यत्। नादयति,—ते। अनीनदत्,—त। यङ्—नानद्यते। नानदीति, नानत्ति। भावादौ—नद्यते। अनादि। प्रणदति। प्रणनाद, प्रणेदतुः। प्रणेदिथ इत्यादि गदिवत्। उपसर्गस्थान्निमित्तात् नकारस्य णत्वम्। प्रणिनदति। प्रण्यनदत्। परिणिनदति, परिण्यनदत्। अशब्दकारकत्वेऽप्य'णावकर्म्मक' इति प्रयोज्यस्य कर्म्मत्वं—घटं नादयति। नदित्वा। नदितः। अच्—नदः, स्त्रियां—नदी। अप् (अल्)—निनदः। पक्षे घञ्—निनादः। पञ्चानां नदीनां समाहारः—पञ्चनदम्। 'नदीभिश्चे'ति नदीवचनैः सह संख्याया अव्ययीभावः।

४४। अर्द्, गतौ याचने च। To go, to beg)

याचने द्विकर्म्मकः। अर्द्, सेट्, सक, प। अर्दति। अर्दतु। आर्दत्। अर्देत्। आनर्द, आनर्दतुः, आनर्दुः। आनर्दिथ। आनर्दिव। अर्दिता। अर्दिष्यति। आशिषि—अर्द्यात्। लुङ्—आर्दीत्। माभवानर्दीत्। कर्म्मणि—अर्द्यते। आर्दि। गत्यर्थत्वे कर्त्तृस्थक्रियत्वान्न कर्म्मकर्त्तास्ति। 'क्तोऽधिकरणे चे'त्यादिना कर्त्तृकर्म्मभावाधिकरणेषु क्त उदाहार्य्यः। तथा 'गत्यर्थकर्म्मणी'ति द्वितीयाचतुर्थ्यौ। गत्यर्थे कर्म्मव्यतिहारे नात्मनेपदम्। णौ (इति) 'गतिबुद्धी'ति प्रयोज्यस्य कर्म्मत्वञ्च। अर्दयति,—ते। आर्दिदत्,—त। अर्दिदिषति। क्त—अर्दितः। संनिविपूर्वकस्य निष्ठायामनिट्। सम्—अर्द+क्त—समर्णः। नि—न्यर्णः। वि—व्यर्णः। सामीप्ये अभि-अर्द क्त—अभ्यर्णः। अन्यत्र अभ्यर्दितः।

४५। नर्द, गर्द, शब्दे। (To sound)

दन्त्यादिरयं नृतिनन्दिनर्दीति पर्य्युदासात्।

नर्द्, सेट्, अक, प। नर्दति। प्रनर्दति। ननर्द। ननर्दिथ। अनर्दीत्। नर्दिता। निनर्दिषति। नर्दयति,—ते। अननर्दत्,—त। नानर्द्यते, नानर्दीति। नानर्त्ति। नर्द्यते। अनर्दि। नर्दित्वा। नर्दितः। नर्दितुम्। णिनि—नर्दी। गेहेनर्दी, 'पात्रेसमितादयश्चे'ति पत्रे तत्पुरुषः। तत्रैव पाठात् सप्तम्या अलुक्।

गर्द, सेट्, अक, प। गर्दति। जगर्द। गर्दिता। अगर्दीत्। जिगर्दिषति। गर्दयति। अजगर्दत्। गर्द्यते। अगर्दि। नर्दवत्। गर्दभः—'शृकरिकलिगर्दिभ्योऽभजि'त्यभच्।

४६। तर्द, हिंसायाम्। (To kill)

तर्द, सेट्, सक, प। तर्दति इत्यादि पूर्ववत्। हिंसार्थत्वात् 'न गतिहिंसे'ति तङ्निषेधात् कर्म्मव्यतिहारेऽपि परस्मैपदम्। दण्डोपतर्दं गाः कालयति, दण्डेनोपतर्दमिति च, हिंसार्थाना'मिति णमुल् ( णम् )—'तृतीयाप्रभृती'ति समासविकल्पः। वासरूपेण क्त्वाप्रत्यये—दण्डेनोपतर्द्य।

४७। कर्द, कुत्सिते शब्दे।

( To rumble as the bowels, to cow as a crow)

कुत्सितशब्द इह कौचः। यदाह केशवस्वामी—"कौचे कर्दति पर्दते गुदरव" इत्यादि।

कर्द, सेट्, अक, प। कर्दति। चकर्द। अकर्दीत् इत्यादि गर्दतिवत्। बाहुलकात् असच्—कर्दमः।

४८। खर्द, दन्दशूके। ( To bite )

दन्दशूक इति दन्दशूककर्त्तृका क्रियाऽभिधीयते। (१)

खर्द, सेट्, सक, प। खर्दति। अखर्दीत्। चखर्द। पूर्ववत्।

(१) साधनप्रधानप्रयोगित्वव्यवस्थापनार्थं दन्दशूकग्रहणमिति सम्मता-

४८ । अति, अदि, बन्धने । ( To bind )

अत्र धनपालः—तान्तं द्राविड़ाः पठन्ति । आर्य्यास्तु दान्तमिति । उभयमिति मैत्रेयस्वामिकाश्यपसम्मताकारादयः ।

अन्त्, (इ) अन्द् (इ) सेट्, सक, प । अन्त्. लट्—अन्तति। लङ्—आन्तत् । लिट्—आनन्त, आनन्ततुः, आनन्तुः। आनन्तिथ । आनन्तिव । लुट्—अन्तिता । अन्तिष्यति। अन्त्यात् । लुङ्—आन्तीत्, आन्तिष्टाम्, आन्तिषुः । लृङ्—आन्तिष्यत् इत्यादि । कर्म्मणि—अन्त्यते । आन्त्यत । आन्ति। सन्—अन्तितिषति । णिच्—अन्तयति,—ते । आन्तितत्,—त। अन्तितः । अन्तित्वा, अन्तितुम् । अन्तः—घञ् अच् वा। उणादिवृत्तौ तु 'हसिमृ'—इत्यादिना अमेस्तनि व्युत्पाद्यते। (१)

अन्द् लट्—अन्दतीत्यादि । अन्दूः, भाषायां शृङ्खले च। "अन्दूदृम्भू' इत्यूप्रत्यये निपातितः । अन्दुकः गजनिगड़ः, संज्ञायां कनि ह्रस्वः ।

---

तरङ्गिण्यौ । दन्तशूको गर्हितदंशनशीलः । इह तु तत्स्था क्रिया दंश इत्युक्तिस्ताच्छील्यादिप्रतिपत्त्यर्थेति मैत्रेये प्रतिपादितम् । दन्तशूक इति केशवस्वामी दकारस्य स्थाने तकारमाह, तन्मह्वान्तो न सहन्ते । यदाह 'दन्दशूको विलेशय' इति,अत्र सुभूतिचन्द्राः दंशेर्यङन्तादूकप्रत्यये ऽल्लोपयलोपयोरिति । तथा "इषुमति रघुसिंहे दन्दशूकान् जिघांसा"विति भट्टिश्लोकव्याख्याने दन्दशूकान् हिंस्रान् दंशेर्लुपसदेत्याद्युक्तं शङ्कराचार्य्येण । हिंस्रमात्रे प्रयुञ्जानो भट्टिकारो दन्दशूकशब्दस्य नैघण्टुकप्रसिद्धिं नाद्रियते।

(१) अन्ते भवम्—अन्त्यम् । 'दिगादिभ्यो यत्' इति भवार्थे सप्तम्यन्तात् यत् । अन्तिमम्—'अन्ताच्चेति वक्तव्य'मिति शैषिको डिमच्। अन्तिकः—अत इनिठनौ । ग्रामात् अन्तिके ग्रामस्य वा 'दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्या'मिति अन्तिकयुक्तात् षष्ठीपञ्चम्यौ । अन्तिकशब्दात् असत्त्ववचनात् द्वितीया तृतीया पञ्चमी सप्तमीति चतस्रो विभक्तयः स्युः । अन्तिकम् अन्तिकेन, अन्तिकात्, अन्तिके इति ।

## ५० । इदि, परमैश्वर्य्ये ।

( To have superhuman power )

ईश्वरस्य भावः ऐश्वर्य्यम्, ततः परमेण सह कर्म्मधारयः ।

इन्द्, (इ) अक. सेट्, प । इन्दति । ऐन्दत् । इन्दाञ्चकार—३ । इन्दिता । ऐन्दीत् । ऐन्दिष्यत् । इन्दिदिषति । इन्दयति । ऐन्दिदत् । इन्द्रः—"ऋज्रेन्द्रे"ति रगन्तो निपातितः । इन्द्रस्य पत्नी—इन्द्राणी,—"इन्द्रे"त्यादिना ङीषानुकौ । इन्द्रमात्मन इच्छति—इन्द्रीयति । ततः सनि—इन्द्रिद्रीयिषति इत्यादि । किरच्—इन्दिरा ।

## ५१ । बिदि, अवयवे । (१)

(To split, to divide, to cleave)

बिन्द्, (इ) अक, सेट्, प । बिन्दति । बिबिन्द, बिबिन्दतुः । बिबिन्दिथ । बिन्द्यात् । बिन्दिष्यति । बिन्दिता । अबिन्दीत् । बिबिन्दिषति । बिन्दयति,—ते । अबिबिन्दत्,—त । बिन्दुः, बाहुलकादुप्रत्ययः ।

## ५२ । गड़ि, वदनैकदेशे । ( To affect the cheek) (२)

इह वदनैकदेशारम्भलक्षणा क्रिया वदनैकदेशशब्देनोच्यते । गण्ड्, (इ) अक, सेट्, प । लट्—गण्डति । अच्—गण्डः ।

## ५३ । णिदि, कुत्सायाम् । ( To censure, to blame )

निन्द्, (इ) सक, सेट्, प । लट्—निन्दति । निन्दतु, निन्दतात्, निन्दताम्, निन्दन्तु । निन्द, निन्दतात् । ( आनिप् )

---

(१) अत्र सम्मतायां 'भिदि अवयवे' भिन्दति । यद्यभिधानमस्ति भिन्दुरिति दृश्यत इति । अवयव इति अवयवक्रियोच्यते ।

(२) अत्यादयः पञ्चैते न तिङ्विषया इति काश्यपः । सम्मतायां विदिभिदी एव प्रकृत्यैवमुक्तम् । अविगीतमत्र सर्वेषां तिङुदाहरन्ति ।

निन्दानि। निन्देत्। अनिन्दत्। लिट्—निनिन्द, निनिन्दतुः, निनिन्दुः। निनिन्दिथ। निनिन्दिव। लुट्—निन्दिता। लृट्—निन्दिष्यति। लृङ्—अनिन्दिष्यत्। लुङ्—अनिन्दीत्, अनिन्दिष्टाम्, अनिन्दिषुः। आशीः—निन्द्यात्। कर्म्मादौ—निन्द्यते। अनिन्दि इत्यादि। प्रणिन्दति। 'उपसर्गादसमासेऽपी'ति णत्वम्। निन्दयति,—ते। अनिनिन्दत्,—त। निनिन्दिषति। नेनिन्द्यते। नेनिन्दीति, नेनिन्ति। निन्दकः—'निन्दहिंसे'ति वुण्। निन्दितः। निन्दित्वा। विनिन्द्य, निन्दितुम्। अनिन्दा। निद्द कुत्सासन्निकर्षयोरिति दिवादौ। (१)

५४। टु नदि, समृद्धौ। ( To be glad )

अयं तवर्गीयोपदेशः, "नृतिनन्दी"ति णोपदेशपर्य्युदासात्। नन्द ( इ, टु, ) अक, सेट्, प। नन्दति। नन्दतु, नन्दतात्। नन्द, नन्दतात्। नन्देत्। अनन्दीत्। नन्दिष्यति। नन्दिता, नन्द्यात्। ननन्द, ननन्दतुः। अनन्दिष्यत् इत्यादि। भावे—नन्द्यते। अनन्द्यत। अनन्दि। सन्—निनन्दिषति। यङ्—नानन्द्यते। यङ्लुक्—नानन्दीति, नानन्ति। णिच्—नन्दयति,—ते। अननन्दत्,—त। नन्दित्वा। नन्दितः। अभिनन्द्य। नन्दयतीति नन्दनः 'नन्दिग्रही'ति ल्युः ( युः )। ( टु ) अथुच्—नन्दथुः। न नन्दतीति ननान्दा। ननान्दरौ। 'नञि च नन्दे'रिति ऋण्प्रत्ययो वृद्धिश्च, 'न षट्स्वस्रादिभ्य' इति ङीपो निषेधः। स्वस्रादिपाठादेव नञो नलोपाभावः। ननान्दुरपत्यं—नानान्द्रः।

(१) अत्र मैत्रेयाभरणसम्मताकाराः 'वा निंसनिचनिन्दा'मिति णत्वविकल्पमिच्छन्ति तदयुक्तम्। यतोऽत्र 'कृत्यच' इत्यतः कृतीति वर्त्तते, तच्च निन्दादिभिर्विशिष्यमाणमर्थात् परसप्तम्यन्तमिति उपसर्गस्थान्निमित्तात् परस्य निंसादिनकारस्य कृति परे वा णत्वमिति सूत्रार्थः। तथाच शाकटायनः—"निंसनिचनिन्दां कृति वे'ति। एवं हि प्रकरणमबाधितं, णोपदेशश्च सार्थकः। वृत्तौ च प्रणिन्दनं, प्रनिन्दनमिति कृदन्तमेवोदाहारि।

५५ । चदि, आह्लादने दीप्तौ च ।

( To be satisfied, to shine )

चन्द् ( इ ) सेट्, अक, प । चन्दति । चचन्द । अचन्दीत् । चन्दिता । चन्दनः—ल्युट् । चन्द्रः—'स्फायितञ्ची'त्यादिना रक् । चन्द्रकम्—संज्ञायां कन् । चन्द्रिका—टापि इत्वमकारस्य । चन्दिरः—'इषिमुषी'त्यादिना किरच् ।

५६ । त्वदि, चेष्टायाम् । ( To try )

त्वन्द्, ( इ ) अक्, सेट्, प । त्वन्दति । तत्वन्द । त्वन्दिता ।

५७ । कदि, क्रदि, क्लदि, आह्वाने रोदने च ।

( To call, to cry )

आह्वाने सकर्म्मकः, रोदने तु अकर्म्मकः । कन्द्, क्रन्द्, क्लन्द्, (इ) सेट्, प । कन्द्—कन्दति । कन्देत् । चकन्द । कन्द्यात् । कन्दिष्यति । अकन्दीत् इत्यादि । चिकन्दिषति । चाकन्द्यते । चाकन्दीति, चाकन्ति । कन्दयति पुत्रं देवदत्तेन । 'गतिबुद्धी'त्यत्र शब्दकर्म्मेति साधनकर्म्मणो ग्रहणात् प्रयोज्यस्य न कर्म्मत्वं, शाकटायनमते त्वस्येव सर्वमेतन्नतौ प्रतिपादितं तत एवावगन्तव्यम् । क्रन्द्—क्रन्दति । क्रन्दतु, क्रन्दतात् । (हि) क्रन्द, क्रन्दतात् । आनिप्—क्रन्दानि । लिट्—चक्रन्द, चक्रन्दतुः, चक्रन्दुः । चक्रन्दिथ, चक्रन्दथुः, चक्रन्द । चक्रन्दिव । लुङ्—अक्रन्दीत्, अक्रन्दिष्टाम्, अक्रन्दिषुः इत्यादि कन्दिवत् । संक्रन्दयतीति—संक्रन्दनः, नन्द्यादित्वात् ल्युः (युट्) । आक्रन्दत्यस्मिन्नित्याक्रन्दो देशः । आक्रन्द्यत इत्याक्रन्दः शरणम्—कर्म्मणि अधिकरणे वा घञ् । आक्रन्दिरिह रक्षणार्थः, आक्रन्दं धावति—आक्रन्दिकः । कन्दरः—बाहुलकादरः । यद्वा कन्दं वैक्लव्यं राति भीरूणामिति कन्दरः । कन्दलः—बाहुलकात् लप्रत्ययः । यद्वा पूर्व-

वद्धातेः कः, 'कपिलिकादीनां संज्ञाच्छन्दसो'रिति लत्वम्। ङीष्—कन्दली। क्लन्द्—क्लन्दतीत्यादि।

५८। क्लिदि, परिदेवने। ( To lament )

क्लिन्द्, (इ) सेट्, सक, प। लट्—क्लिन्दति। लिट्—चिक्लिन्द। लुङ्—अक्लिन्दीत्, अक्लिन्दिष्टाम्, अक्लिन्दिषुः। अक्लिन्दीः, अक्लिन्दिष्टम्,-ष्ट। अक्लिन्दिषम्, अक्लिन्दिष्व,—ष्म। अस्यानुदात्तेत्सु पठितस्येह पाठः परस्मैपदार्थः, स्वरितेत्सु पाठः क्रियाफलस्य कर्त्तृगामित्वेऽपि परस्मैपदं यथा स्यात्।

५९। शुन्ध, शुद्धौ। ( To purify )

शुन्ध, सेट्, अक, प। लट्—शुन्धति। लिट्—शुशुन्ध, शुशुन्धतुः, शुशुन्धुः। शुशुन्धिथ। शुशुन्धिव। लुट्—शुन्धिता। लृट्—शुन्धिष्यति। लुङ्—अशुन्धीत्। आशीः—शुध्यात्। शुन्धयति,—ते। अशुशुन्धत्,—त। शुशुन्धिषति। भावे—शुध्यते। अशुध्यत। अशुन्धि। यङ्—शोशुध्यते। शोशुन्धीति, शोशुन्धि। (१) क्त—शुधितः। शुधितवान्। (२) शुधित्वा। वोपदेवमतेऽयमुभयपदी—शुन्धति, शुन्धते। (३) अयं शौचकर्मणि युजादौ। शुध शौच इति दिवादौ। अनुषङ्गो नेह। अतादय उदात्ता उदात्तेतो गताः।

---

(१) यङ्लुकि लङि तिप्सिपोर्हल्ङ्यादिलोपे संयोगान्तलोपे च प्रत्ययलोपलक्षणेन लघूपधगुणो न भवति, संयोगान्तलोपस्य पूर्वत्रासिद्धत्वात्।

(२) 'उदुपधा'दिति निष्ठायाः कित्त्वविकल्पो न भवति 'सन्निपातलक्षणो विधिरनिमित्तं तद्विघातस्ये'ति। अत्र कित्त्वसन्निपातनिमित्तमुदुपधत्वं यदिदं कित्त्वाश्रये नलोपे भवति।

(३) "यो मां शुन्धति सत्येन शुन्धते तपसा तनुम्।" कवि २०

## अथ कवर्गीयान्ता आत्मनेपदिनः।

६०। शीकृ, सेचने। ( To shrinkle )

तालव्यादिरयं "शिशीके शोणितं व्योम" इत्यादि भट्टिकाव्ये १४।७६ तालव्यानुप्रासे पाठात्। दन्त्यादिरिति धनपाल-काश्यपौ, तौ षोपदेशलक्षणे 'स्मिस्वदिस्विदिस्वञ्जिस्तृस्त्यासीकृसेकसृवर्ज्ज-मिति' पेठतुः। पुरुषकारस्तु तन्न मृष्यति, यदाह—सीकृ इत्याद्यौ इति धनपालः। तत्र चायं पक्षः शीकर इति प्रयोगाननु-गुणः। योऽपि षोपदेशलक्षणे सीकृपाठः सोऽप्येवं प्रत्युक्त इति।

शीक्, ( ऋ ) सेट्, सक, आ। शीकते। शीकताम्। शीकेत। अशीकत। शिशीके। शीकिता। शीकिषीष्ट। लुङ्—अशीकिष्ट। लृङ्—अशीकिष्यत। कर्म्मणि शीक्यते इत्यादि। सन्—शिशीकिषते। यङ्—शेशीक्यते। यङ्लुक्—शेशीकीति, शेशीक्ति। लुङि अशेशीकीत्। अशेशीक्। णिच्—शीकयति, —ते। अशिशीकत्,—त। अ—शीका। शीकायते। तत्करोत्य-र्थेऽटाट्टाशीकाकोटापोटासोटाप्लुष्टाग्रहणं कर्त्तव्यमिति क्यङ। अयमपि पाठस्तालव्यादित्वे प्रमाणम्। अयं क्यङ् 'तत्करोती'ति णिचोऽपवाद इत्येके, सोऽपीष्यत इति न्यासादौ। कान्तत्वाद-स्मात् क्विप् नोदाहर्त्तव्यः, स्थितञ्चैवं 'परेश्च घाङ्कयोरि'त्यत्र भाष्यकैयटयोः। तथा 'स्कोः संयोगाद्यो'रित्यत्र वृत्तितद्व्याख्याने-ष्वपि। उणादौ शीकरः। मर्षणार्थोऽयं युजादौ।

६१। लोकृ, दर्शने। ( To see )

लोक्, ( ऋ ) सक, सेट्, आ। लट्—लोकते। लङ्—अलोकत। लुङ्—अलोकिष्ट। लिट्—लुलोके। लृट्—लोकि-ष्यते। लुट्—लोकिता। लृङ्—अलोकिष्यत। आशीः—लोकिषीष्ट। सन्—लुलोकिषते। यङ्—लोलोक्यते, लोलो-

कीति, लोलोक्ति। णिच्—लोकयति,—ते। अलुलोकत्,—त। क्त—लोकितः। लोकित्वा। विलोक्य। लोकः। आलोकः। भाषार्थोऽयं चुरादौ। लोक्कदीप्ताविति वोपदेवः।

६२। श्लोक, सङ्घाते। ( To heap together, to versify, to make verses, to compose )

सङ्घातो ग्रन्थः, स चेह ग्रथ्यमानव्यापार इति स्वाम्यादयः। काश्यपादयस्तु ग्रन्थितृव्यापार इति ग्रथ्नातिवत् सकर्म्मक इति।

श्लोक्, (ऋ) सेट्, सक, आ। श्लोकते। शुश्लोके। अश्लोकिष्ट। श्लोकिषीष्ट। णिच्—श्लोकयति,—ते। अशुश्लोकत्,—त। शुश्लोकिषते। यङ्—शोश्लोक्यते, शोश्लोकीति, शोश्लोक्ति। श्लोकैरुपस्तौति—उपश्लोकयति। घञ्—श्लोकः।

६३। द्रेक्ट, ध्रेक्ट, शब्दोत्साहयोः।
( To sound, to increase, to be elevated with joy )

"शब्दोत्साहे" इति केचित्। यदाह काश्यपः—द्रेकते, शब्देनोत्साहं करोतीति। उत्साहो वृद्धिरिति चन्द्रः। औद्धत्यमिति स्वामी।

द्रेक्, ध्रेक्, सेट्, अक, आ। द्रेकते। दिद्रेके। अद्रेकिष्ट। द्रेकिता इत्यादि। द्रेकणः। एवं ध्रेकते इत्यादि।

६४। रेक्ट, शङ्कायाम्। ( To suspect )

"रेक्ट शकि शङ्काया"मिति। भयं संशयश्च शङ्केति रमानाथः। रेफादिरयम् आङ्पूर्वः संशये "आरेकं संशयं प्राहु"रिति वचनात्।

रेक्, (ऋ) सेट्, अक, आ। रेकते। रिरेके। अरेकिष्ट। रेकयति,—ते। अरिरेकत्,—त। रिरेकिषते। रेरेक्यते, रेरेक्ति इत्यादि।

६५। सेकृ, स्रेकृ, स्रकि, श्रकि, श्लकि, गत्यर्थाः।

( To go, to move )

अन्त्यौ तालव्यादी, अन्ये दन्त्यादयः। सेक्, स्रेक्, (ऋ) स्रङ्क्, श्रङ्क्, श्लङ्क्, (इ) सेट्, सक, आ। सेक्—सेकते। सिसेके। असेकिष्ट। सेकिता। स्रेक्—स्रेकते। सिस्रेके। अस्रेकिष्ट। स्रङ्क्—स्रङ्कते। सस्रङ्के। अस्रङ्किष्ट। स्रङ्किता। श्रङ्क्—श्रङ्कते। शश्रङ्के। श्रङ्किता। अश्रङ्किष्ट। श्लङ्क्—श्लङ्कते। शश्लङ्के। श्लङ्किता। अश्लङ्किष्ट। (१)

६६। शकि, शङ्कायाम्।

( To fear, to suspect, to think probable )

शङ्का त्रासः भयं संशयश्च। संशयारोप इति वोपदेवः। शङ्क्, (इ) सेट्, सक, अक, आ। लट्—शङ्कते। लिट्—शशङ्के। शशङ्किषे। शङ्किता। शङ्किष्यते। शङ्क्यात्। अशङ्किष्यत। लुङ्—अशङ्किष्ट, अशङ्किषाताम्, अशङ्किषत। कर्म्मभावयोः—शङ्क्यते। अशङ्कि। शिशङ्किषते। शाशङ्क्यते। शाशङ्कीति, शाशङ्क्ति। लङि ईडंभावे अशाशन्। शङ्कयति,—ते। अशशङ्कत्,—त। क्त्—शङ्कित्वा आशङ्क्य। शङ्कितः। शङ्का।

(१) अत्र मैत्रेयः तृतीयं श्रेकृ इति तालव्यादिमेकारोपधं पठति। अत्र क्वचित् सीकृ इति दन्त्यादिरपरोऽपि धातुः पठ्यते, तदनार्षम्। "स्मृदृत्वजिस्वपिसृस्त्यासेकृसृवर्ज्ज"मिति षोपदेशपर्य्युदासे भाष्यादिष्वपाठात्। कलापादौ तु षोपदेशपर्य्युदासे 'सीकृसेकृवर्ज्ज'मिति पाठो वर्त्तते, तन्मते ककिवकीत्यादिदण्डके सीकृधातोः पाठः। सेकृस्रेकृप्रभृतयोऽपि तत्रैव पठिताः, नत्विह पृथक्पाठः। अत्र क्षीरस्वामी अत्र दन्त्यादेः सीकृधातोः स्थाने तालव्यादिं पठित्वाऽर्थभेदात् पुनःपाठ इत्युक्त्वा षेकृ इत्यन्ये विकल्पेन षोपदेशं कार्य्यार्थं पेठुरित्याह।

शङ्कितुम् । शङ्कनीयम् । शङ्क्यम् । शङ्कितव्यम् । शङ्कुः, 'खरुशङ्कुपीयुनीलङ्गुलिगु' इत्युप्रत्ययान्तो निपातितः । शङ्कुला— बाहुलकादुलच् । शङ्कुपूर्वात् लातेर्वञर्थे क इति वामनः ।

९७ । अकि, लक्षणे । ( To mark )

अङ्क, सेट्, सक, आ । अङ्कते । आनङ्के । आङ्किष्ट । अङ्किता । अङ्किष्यते । आङ्किष्यत । अङ्क्यात् । अञ्चिकिषते । (१)

अङ्कयति,—ते । आञ्चिकत्,—त । प्राङ्कनम् । 'कृत्यच' इति णत्वस्य 'इजादेः सनुमः' इति नियमादभावः । अङ्कुरः— 'मन्दिवाशी'त्यादिना उरच् । अङ्कितः । अङ्कित्वा । अकि कुटिलायां गतावित्यन्ये । अङ्क लक्षण इति चुरादौ ।

९८ । वकि, कौटिल्ये ।

( To be crooked, to go crookedly )

कौटिल्यं वक्रता । वङ्क, (इ) अक, सेट्, आ । वङ्कते । ववङ्के । अवङ्किष्ट, अवङ्किषाताम्, अवङ्किषत । वङ्किता इत्यादि । प्रवङ्कनम् पूर्ववदणत्वम् । वङ्किः—'वङ्क्यादयश्चे'ति क्रिन्नन्तो निपातितः । अयं गत्यर्थः पठिष्यते ।

९९ । मकि, मण्डने । ( To decorate, to adorn )

मण्डनं भूषणम् । मङ्क, ( इ ) सक, सेट्, आ । मङ्कते इत्यादि । प्रमङ्कनम्, अङ्किवदणत्वम् । मङ्कनः । 'क्रुधमण्डार्थेभ्यश्चे'ति युच् । कर्म्मकर्त्तरि 'भूषाकर्मेति' यक्चिणोर्निषेधात् मङ्कते कन्या स्वयमेव, अमङ्किष्ट कन्या स्वयमेवेति शप् [ अन् ] सिचौ भवतः । मङ्किः—'इन्नि'तीन् ।

(१) अनुस्वारपरसवर्णयोः पूर्वत्रासिद्धत्वात् । 'नन्द्रा' [ ननवदरा ] इति निषेधात् ककारादिर्द्विरुच्यते ।

७० । कक, लौल्ये । ( To be proud )

लौल्यं गर्वश्चापल्यञ्च । कक्, सेट्, अक, आ । ककते । चकके । ककिता इत्यादि । काकः—घञ् कर्त्तरि । गत्यर्थः पठिष्यते, तस्माद्वा घञ् ।

७१ । कुक, वृक, आदाने । ( To take )

आदानं ग्रहणम् । कुक्, सक, सेट्, आ । कोकते । चुकुके । कोकिता । अकोकिष्ट । सन्—चुकुकिषते, चुकोकिषते । कोकयति,—ते । क्त्वा—कुकित्वा, कोकित्वा । कुकितमनेन, कोकितमनेन । प्रकुकितः, प्रकोकितः । प्रकुकितवान्, प्रकोकितवान् । प्रकोकनम्, प्रकोकणम् । अच्—कोकः । कोकिलः—"सलिकल्यनिमहि-वडि-भडि-भण्डि-शण्डि पिण्डितुण्डिकुकिभूभ्य इलजि"ति इलच् । कोकिला—जातिलक्षणं ङीषं बाधित्वाऽजातित्वाट्टाप् ।

वृक्, सेट्, अक, आ । वर्कते । ववृके । वर्किता । अवर्किष्ट । विवर्किषते । वरीवृक्यते, वर्वर्त्ति, वरिवर्त्ति, वरीवर्त्ति, ववृंकीति, वरिवृकीति । वरीवृकीति । तस्—वर्वृक्तः इत्यादि । णिच्—वर्कयति,—ते । अववर्कत्,—त । अवीवृकत्,—त । वृकः—इगु-[ नाम्यु ] पधलक्षणः कः । मृगविशेष आयुधजीविसङ्घविशेषश्च, तत्र द्वितीयार्थाभिधायिनो 'वृकाट्टेण्यणि'ति स्वार्थे टेण्यणि—वार्केण्यः । वर्करस्तरुणः पशुः—बाहुलकादरच् ।

७२ । चक. तृप्तौ । ( To be satisfied )

चक तृप्तौ प्रतिघाते चेति धनपालमैत्रेयादयः । चक तृप्तावित्येव चीरस्वामिशाकटायनौ । चक्, सेट्, सक, आ । चकते । अचकिष्ट । चेके । चकिता इत्यादि । 'प्रतिघाते णिच्,—चाकयति,—ते । अचीचकत्,—त । चकोरः—'कटिचकिभ्यामोरजि'त्योरच् । अयं घटादावपि ।

७३। ककि, वकि, [मकि] श्वकि, त्रकि, ढौकृ, त्रौकृ, ष्वष्क, वस्क, मस्क, टिकृ, टीकृ, [ सेकृ, स्रेकृ, स्रकि, श्लकि ] रघि, लघि, गत्यर्थाः। ( To go )

सर्वे सेटः, आत्मनेपदिनश्च। कङ्क् ( इ )—कङ्कते। चकङ्के। अकङ्किष्ट। 'क्त्वाच' इति णत्वम् 'इजादेः सनुम' इति नियमान्न भवति। कङ्कतम्—बाहुलकादतच्। कङ्कत एव कङ्कतिका, संज्ञायां कनि टापि इत्वम्। [ मङ्क ( इ )—मङ्कते इत्यादि ] श्वङ्क् (इ)—श्वङ्कते। शश्वङ्के। अश्वङ्किष्ट। श्वङ्किता। श्वङ्किता। त्रङ्क् ( इ )—त्रङ्कते। तत्रङ्के। अत्रङ्किष्ट। त्रङ्किता। ढौक् ( ऋ )—ढौकते। डुढौके। अढौकिष्ट। ढौकिता। त्रौक् ( ऋ )—त्रौकते। तुत्रौके। अत्रौकिष्ट। त्रौकिता। ष्वष्क—ष्वष्कते। अष्वष्किष्ट। ष्वष्किता। 'सुब्धातुष्ठिवुष्वष्कतीनां सत्वप्रतिषेधो वक्तव्य' इति सत्वनिषेधः। वस्क—वस्कते। ववस्के। अवस्किष्ट। वस्किता। मस्क—मस्कते। ममस्के। अमस्किष्ट। मस्किता। टिक ( ऋ )—टेकते। टिटिके। अटेकिष्ट। टीक (ऋ) टीकते। टिटीके। अटीकिष्ट। रङ्घ, (इ) —रङ्घते। ररङ्घे। रङ्घिता। लङ्घ, ( इ ) लङ्घते। ललङ्घे। अलङ्घिष्ट इत्यादि। ढौकृप्रभृतीनामृदनुबन्धत्वात् णिचि लुङि ह्रस्वाभावो विशेषः—अडुढौकत्। अतुत्रौकत्। अटिटेकत्। अटिटीकदित्यादि।

लघु—'लङ्घिबंह्योर्नलोपश्चे'त्युप्रत्ययनलोपौ। लघोर्भावः— लघिमा। 'पृथ्वादिभ्य इमनिज्वे'ति भावकर्म्मणोरिमनिच्। वाग्रहणा'दिगन्ताच्च लघुपूर्वा'दिति अणि—लाघवम् इति। इष्ठ—लघिष्ठः। ईयस् ( ईयन्सु )—लघीयान्। रघुः, 'वालमूललघ्वङ्गुलीनां वा लो रत्वमापद्यत' इति पक्षे लकारस्य रेफः। श्वङ्कतिः सम्मतायां दन्त्यादिः पठ्यते। अत्र दण्डके तिक्रतीक

इति द्वौ क्वचित् पठ्येते, तदपि तिकः प्रतीक इति दर्शनाद्-आद्यमेव । तिकस्यापत्यं—तैकायनिः । 'तिकादिभ्यः फिञ्'ति फिञ्, फस्यायनादेशः । तैकायनश्च कैतवायनश्च तिककितवाः । 'तिककिते'ति बहुत्वे द्वन्द्वे फिञो लुक् । लघि भोजननिवृत्तौ चेति स्वाम्यादयः । लघि शोषण इत्यन्ये । भाषार्थोऽयं चुरादौ ।

७४ । अघि, वघि, मघि, गत्याक्षेपे । ( To go, to blame )

आक्षेपो निन्दा, गतौ गमनारम्भे चेति स्वामी ।

अङ्घ् (इ) सेट्, आ । अङ्घते । आनङ्घे । अङ्घिता । आङ्घिष्ट इत्यादि । अङ्घिघिषते । अङ्घयति,—ते । आङ्घिघत्,—त । वङ्घ्, (इ) सेट्, आ—वङ्घते । मङ्घ् (इ) सेट्, अक, आ—मङ्घते इत्यादि । प्राङ्घनम् । प्रवङ्घनादिवत् 'इजादेः सनुम' इति नियमादणत्वम् । मघि कैतवे च ।

७५ । राघृ, लाघृ, सामर्थ्ये । ( To be able )

राघ् (ऋ) सेट्, अक, आ । राघते । रराघे । राघिता । अराघिष्ट इत्यादि । रिराघिषते । राराघ्यते । राराघीति, राराग्धि । लङ्—अराराक् । राघयति । अरराघत् । लाघ्, (ऋ) सेट्, आ—राघवत् । क्त—उल्लाघः, 'अनुपसर्गात् फुल्लक्षीव-कृशोल्लाघा' इति क्ते इडभावस्तलोपश्च निपात्यते । उल्लाघेति वचनादनुपसृष्टादन्योपसृष्टाच्च लाघितः,प्रलाघित इति भवति ।

७५-क । द्राघृ, आयामे च । ( To lenthen, to be able )

आयामो दैर्घ्यं क्रियेति कौशिकः । चकारात् सामर्थ्यानु-वृत्तिः । 'आयासे च' इति दुर्गः पठति । आयासः खेदः । द्राघते वपुः । खिद्यते इत्यर्थ इति रमानाथः । कदर्थनमिति स्वामी । 'ध्राघृ' इति तवर्गचतुर्थादिमपि केचित् पठन्ति । द्राघ् (ऋ) सेट्, आ । द्राघते । दद्राघे । अद्राघिष्ट इत्यादि । "द्राघते वपुरत्यर्थं यद्वियोगी मृगीदृशाम् ।" कवि १०९ ।

७६। श्लाघृ, कत्थने। ( To praise )

कत्थनं श्लाघनम्, प्रशंसेति यावत्। देवदत्ताय श्लाघते। देवदत्तं स्तुवंस्तमेव बोधयितुमिच्छतीत्यर्थः। 'श्लाघह्नुङ्स्थाशपां ज्ञीप्स्यमानः' इति सम्प्रदानात् देवदत्ताच्चतुर्थीति केचिदाहुः। आत्मानं परं वा स्तुवन् तां स्तुतिं बोधयितुमिच्छतीत्यर्थ इति। तथाच भट्टिः—"श्लाघमानः परस्त्रीभ्यस्तत्रागाद्राक्षसेश्वर" इति। देवदत्तं श्लाघत इति ज्ञीप्स्यमानत्वाविवक्षायां कर्म्मत्वम्।

श्लाघ् ( ऋ ) सेट्, सक, आ। श्लाघते। शश्लाघे; शश्लाघिषे। अश्लाघिष्यत। अश्लाघिष्ट। अश्लाघिषाताम्। श्लाघिता। श्लाघिष्यते। आशीः—श्लाघिषीष्ट। श्लाघयति,—ते। अशश्लाघत्—त। यङ्—शाश्लाघ्यते। शाश्लाघीति, शाश्लाग्धि। क्त—श्लाघा। श्लाघ्यः। श्लाघनीयः।

## अथ कवर्गीयान्ताः परस्मैपदिनः।

७७। फक्क, नीचैर्गतौ। ( To go softly )

नीचैर्गतिर्मन्दगमनमसद्व्यवहारो वा इति स्वामी। फक्क, सेट्, प। फक्कति। फक्कतु। अफक्कत्। फक्केत्। पफक्क। फक्किता। फक्किष्यति। फक्क्यात्। अफक्कीत्। अफक्किष्यत्। कर्म्मादौ फक्क्यत इत्यादि। पिफक्किषति। पाफक्क्यते। पाफक्कीति, पाफक्ति। फक्कयति। अपफक्कत्।

७८। तक, हसने ( To lough )

तक, सेट्, अक, प। तकति। तताक; तेकतुः। तकिता। अतकीत्, अताकीत् इत्यादि। तितकिषति। ताकयति,—ते। अतीतकत्,—त। व्यतितकति। हसनार्थत्वात् नात्मनेपदम्। 'तकिशसी'ति यत्—तक्यम्। 'तक हसने सहने च' इति केचित्।

७९ । तकि, कृच्छ्रजीवने । ( To live in bistress )

कृच्छ्रजीवनं दुःस्थता । तङ्क् ( इ ) सेट्, अक, प । तङ्कति । ततङ्क । अतङ्कीत्, अतङ्किष्टाम्, अतङ्किषुः । तङ्किता इत्यादि । यङ्लुकि लङि ईडभावे अतातन् । तितङ्किषति । अस्यानन्तरं मैत्रेयः'शुक गता'विति पठित्वा शोकति शुकः, रकि शुक्र इत्युदाजहार ; अस्मिन् हि सति "शुकवल्कोल्का" इति शुभेः कनि भलोपे शुकशब्दनिपातनमनर्थकं स्यात्, इगुपधलक्षणेन कप्रत्ययेनैव सिद्धत्वात्, तथा शुकेरग्विधानेनापि शुक्रशब्दे सिद्धे 'ऋज्रेन्द्रा'दौ शुचेर्निपातनमनर्थकं स्यादित्यस्य पाठोऽनार्ष इव प्रतीयते ।

८० । बुक्क, भषणे । (To bark )

भषणमिह श्वरवः । बुक्क्, सेट्, अक, प । बुक्कति । बुबुक्क । बुक्किता । अबुक्कीत् इत्यादि । अयं चुरादावपि ।

८१ । कख, हसने । To lough )

कख्, सेट्, अक, प । कखति । चकाख । अकखीत्,अकाखीत् । तकधातुवत् ।

८२ । ओखृ, राखृ, लाखृ, द्राखृ, ध्राखृ, शोषणालमर्थयोः ।

( To be dry, To adorn, to suffice )

शोषणं स्नेहराहित्यम् । अलमर्थः—भूषणम्, पर्य्याप्तिः, वारणं, सामर्थ्यञ्च । पञ्चैव ऋदनुबन्धाः, परस्मैपदिनः, सेटश्च । ओख्—ओखति । औखत् । ओखांचकार । औखीत् । औखिष्यत् । ओचिखिषति । ओखयति । औचिखत् । मा भवानोचिखत् । प्र+ओखति = प्रोखति । राख्—राखति । रराख । अराखि । राखयति । अरराखत् रराख्यते । राराक्ति, रराखीति लाख्—लाखति । द्राख्—द्राखति । ध्राख्—ध्राखति इत्यादि ।

८३। शाखृ, श्लाखृ, व्याप्तौ। ( To borvade )

शाख्, श्लाख्, (ऋट्) सेट्, सक, प। शाखति। श्लाखति। राखधातुवत्। अ—शाखा। शाखेव—शाख्यम्। 'शाखादिभ्यो य' इति इवार्थे यः। प्रतिशाखं भवं—प्रातिशाख्यम्। 'अव्ययीभावाच्चे'ति भवार्थे ण्यः। शाखा अस्य सन्तीति शाखी— 'व्रीह्यादिभ्यश्चे'ति इनिः। विशिष्टा शाखा—विशाखा। सा प्रयोजनं यस्य—वैशाखो मन्थः, 'विशाखाषाढ़ादमन्थदण्डयो'रिति प्रयोजने अण्प्रत्ययः। विशाखेति नक्षत्रं, तत्र जात इत्यर्थे 'सन्धिवेलाद्यृतुनक्षत्रेभ्योऽणि'त्यण्,तस्य'श्रविष्ठाफल्गुनी'त्यादिना लुकि'लुक् तद्धितलुकी'ति स्त्रीप्रत्ययस्य लुकिविशाखो माणवकः।

८४। उख, उखि, वख, वखि, मख, मखि, णख, णखि, रख, रखि, लख, लखि, इख, इखि, ईख, वल्ग, रगि, लगि, अगि, वगि, मगि, तगि, त्वगि, श्रगि, श्लगि, इगि, रिगि, लिगि, गत्यर्थाः। ( To go )

द्वितीयान्ताः पञ्चदश, तृतीयान्तास्त्रयोदश, सर्वे सेटः, परस्मैपदिनश्च। दुर्गसम्मतः पाठो यथा—"उख णख वख मख रख लख रखि लखि इखि ईखि वल्ग रगि लगि अगि वगि मगि त्वगि इगि रिगि लिगि गत्यर्थाः" इति।

उख्—ओखति। प्र+ओखति=प्रोखति। उवोख, ऊखतुः, ऊखुः। उवोखिथ। ओखिता। औखीत्। मा भवानोखीत्। ओचिखिषति। औचिखत्। मा भवानुचिखत्। ओखित्वा। उखितमनेन, ओखितमनेनेत्यादि। उखो मुनिः इगुपधत्वात् कः। उखेन प्रोक्तः—औखीयः श्लोकः, 'तित्तिरिवरतन्त्वि'त्यादिना तृतीयान्तात् प्रोक्तार्थे छण्। उखायां संस्कृतम् उख्यम्, 'शूलोखाद्यदि'ति सप्तम्यन्तात् संस्कृतमित्यर्थे यत्।

ल्युट्—प्रोखणम्, 'स्वरात् कृत' इति णत्वम्। उङ्ख् (इ)—उङ्खति। उङ्खाञ्चकार। औङ्खीत्। उङ्खिता। उङ्खिखिषति। उङ्खयति। औञ्चिखत्। माभवानुञ्चिखत्। प्रोङ्खणम्। बख्—बखति। बखिता। बबाख, बबखतुः। अबखीत्, अबाखीत्। बङ्ख् (इ)—बङ्खति। प्रबङ्खणम्। मख्—मखति। ममाख। मखिता। मङ्ख् (इ)—मङ्खति। नख्—नखति। नङ्ख् (इ)—नङ्खति। मूर्द्धन्यादिरुपदेश 'उपसर्गादि'ति णत्वेन प्रणखतीत्याद्यपि यथा स्यादिति। रख—रखति। रङ्ख (इ)—रङ्खति। प्ररङ्खणम्। 'रषाभ्यामि'ति णत्वम्। "इजादे"रिति नियम "उपसर्गात् कृत्यच" इति प्राप्तस्यैव। लख्—लखति। लङ्ख्—(इ) लङ्खति। इख्—एखति। इयेख। एखिता। ऐखीत्। इङ्ख् (इ)—इङ्खति। इङ्खाञ्चकार। ईख्—ईखति। ईखाञ्चकार। यद्यपि मैत्रेयेणादितस्त्रय इदित उखिबखिमखयः, मूर्द्धन्यादिर्नखिरनिदित्, इखिश्च न पठ्यते, तथापि इतरानेकव्याख्यातॄणां प्रामाण्यादस्माभिः पठितः। अत्र चन्द्रो 'मुखि'मपि पपाठ। सम्मतायान्तु 'लख लखि शिखि' इति त्रयः पठ्यन्ते। द्राविड़ास्तु 'रिख'मपि पठन्ति, एवमेकोनविंशतिः खान्ताः। बल्ग—बल्गति। रङ्ग्—(इ) रङ्गति। रङ्गत्यस्मिन् प्रेक्षकाणां मनांसीति—रङ्गः, 'हलश्चे'ति संज्ञायामधिकरणे घञ्। रञ्जेर्वा घो द्रष्टव्यः। लङ्ग् (इ)—लङ्गति। विलगितः, अनिदितां नलोपे 'लङ्गिकम्प्योरुपतापशरीरविकारयोरुपसंख्यान'मिति नलोपः। उपतापादन्यत्र लङ्गितः।

अङ्ग् (इ)—अङ्गति। अङ्गत्यत्रावयवीत्यङ्गम्, रङ्गवद् घञ्। अङ्गत्यत्रेति अङ्गो जनपदः, पूर्ववद्घञ्। "अङ्गवङ्गकलिङ्गेषु" इत्यादिशास्त्रेण तत्र गमननिषेधात् अत्र अङ्गिरगतौ विपरीतलक्षणया प्रवर्त्तते, दर्श इत्यत्र दृशिवत्। न दृश्यतेऽस्मिन्

चन्द्र इति हि दर्शशब्दो धूर्त्तस्वामिना व्युत्पादितः। कल्याणानि अङ्गानि अस्याः सन्तीति अङ्गिना 'अङ्गात् कल्याणे' इति पामादिपाठात् नः। विशिष्टं विहीनं वा अङ्गमस्य व्यङ्गः, तस्यापत्यं व्याङ्गिः 'अत इञ' 'स्वागतादीनाञ्चे'ति सिद्धिः। एवं स्वाङ्गिः। सर्व्वाङ्गं व्याप्नोतीति सर्व्वाङ्गीणः स्नायुः 'तत्सर्व्वादि' अङ्गिनः, 'अगेर्निर्नलोपश्चे'ति निप्रत्ययो नलोपश्च। अग्रम्—'ऋज्रेन्द्राग्रे'ति निपातनाद्रक्कि नलोपः। अङ्गारः—'अखिसखिनन्दिभ्य आर'न्नित्यारन्। अङ्गुलिः—'ऋतन्यञ्जी'त्यादिना उलिप्रत्ययः। अङ्गुरिः—पूर्ववदुलिप्रत्यये "वालमूले"त्यादिना पक्षे रः। वङ्गतीति—वङ्गः जनपदः। अङ्गवद्व्युत्पत्तिः। मङ्ग (इ)—मङ्गति। मङ्गतीति मङ्गलम्, 'मङ्गेरलजि'त्यलच्। तङ्ग (इ) तङ्गति। त्वङ्ग् (इ)—त्वङ्गति। श्रङ्ग् (इ)—श्रङ्गति। श्लङ्ग् (इ)—श्लङ्गति। इङ्ग् (इ) —इङ्गति। ज्योतिस्—इङ्ग्+युच्= ज्योतिरिङ्गणः। रिङ्ग् (इ)—रिङ्गति। लिङ्ग् (इ)—लिङ्गति। अच्—लिङ्गम्। लिगि चित्रीकरणे इति चुरादौ च।

८५। त्वगि, कम्पने [ च ]। To move, to go )

त्वङ्ग्, सेट्, अक, प। त्वङ्गति। तत्वङ्ग। अत्वङ्गीत्। त्वङ्गिता इत्यादि।

८६। युगि, जुगि, वुगि, [ दुगि] वर्ज्जने (To abandon)

युङ्ग्, जुङ्ग्, वुङ्ग्, (इ) सेट्, सक, प,। युङ्गति। जुङ्गति। वुङ्गति इत्यादि।

८७। घघ, [ घग्घ, गग्घ, ] हसने। (To lough)

घघ्, सेट्, अक, प। घघति। जघाघ। अघघीत्, अघाघीत्। घघिता इत्यादि। 'तक्, कक्ख, घग्घ, हसने' इति दुर्गः।

८८। मघि, मण्डने। ( To adorn )

मङ्घ्, ( इ ) सेट्, सक, प। मङ्घति। ममङ्घ। अमङ्घीत्।

मङ्क्ते कन्या स्वयमेव। अमङ्क्ष्ट कन्या स्वयमेव, भूषाकर्म्मत्वान्न यक्चिणौ। युच्—मङ्कनः।

८९। शिघि, आघ्राणे। ( To smell )

शिङ्घ्, (इ) सेट्, सक, प। शिङ्घति। शिशिङ्घ। शिङ्घिता। अशिङ्घीत्। शिङ्घ्यते। शिङ्घितः। शिङ्घित्वा। शिङ्घानको रोगविशेषः। 'लूशिघिधाभ्यश्च'त्यादिना आनकप्रत्ययः। फक्कादय उदात्ता उदात्तेतः।

## अथ चवर्गान्ता आत्मनेपदिनः।

९०। वर्च्च, दीप्तौ। ( To shine )

एतदादय ईजन्ता उदात्ता अनुदात्तेतः। वकारोऽयं दन्त्योष्ठ्यः। वर्च, सेट्, अक, आ। वर्चते। अवर्चत। वर्चेत। वर्चिषीष्ट। अवर्चिष्ट। वर्चिता। ववर्चे। वर्चिष्यते। वर्चिषीष्ट। अवर्चिष्यत। भावे—वर्च्यते। अवर्च्यत। अवर्चि। सन्—विवर्चिषते। यङ्—वावर्च्यते। यङ्लुक्—वावर्चीति,वावर्त्ति। अवावर्चीत्, अवावर्क्। 'रात्सस्ये'ति नियमान्न संयोगान्तलोपः। णिच्—वर्चयति,—ते। अववर्चत्,—त। असुन्—वर्चः, दीप्तिः पुरीषञ्च। वर्चस्कः, पुरीषम्—संज्ञायां कन्। समासान्तविधिः—ब्रह्मवर्च्चसम्, हस्तिवर्चसम्, पल्यवर्चसम्, राजवर्चसम् ब्रह्मवर्चसनिमित्तं संयोग उत्पातो वा ब्रह्मवर्चसम्. 'तस्ये'त्याद्युपसंख्यानात् यत्। ण्यत्—वर्च्यम्। (१)

(१) ण्यति 'चजोः कुघिण्ण्यतो'रिति कुत्वं न भवति। 'न क्वादे'रित्यत्र क्वायजिव्रजियाचिरुच्यादीनां न प्रतिषेधो निष्ठायामनिटः कुत्ववचनात्। अस्यार्थः—'चजोः कुघिण्ण्यतोर्निष्ठायामनिट' इति सूत्रं कर्त्तव्यं, तेन 'न क्वादेः' 'अजिव्रज्योश्चे'ति योगद्वयं यजयाचरुचप्रवर्चर्चश्चे'त्यत्र याचिरुच्यर्चिग्रहणं न कर्त्तव्यं भवतीति तेषां सेट्त्वादित्यभिप्रायः। अयमत्र विवेकः—ये क्वादयोऽन्ये वा निष्ठायामनिटस्तेषां

८१। षच, सेचने (२)। ( To sprinkle. )

सच्, सेट्, सक,आ। सचते। सचताम्। असचत। सचेत। सेचे। सेचिषे। असचिष्ट। सचिता। सचिष्यते। सचिषीष्ट। असचिष्यत। सिसचिषते। सासच्यते। सासचीति, सासक्ति। साचयति,—ते। असीषचत्,—त। कर्म्मणि—सच्यते। असच्यत। असाचि। सक्तु:—'सितनी'ति मत्वर्थे लः। सचिवः—बाहुलकादः। यद्वा सचिः सेवा, इन्प्रत्ययः, तां वातीति—सचिवः, 'आतोऽनुपसर्गे कः'। यद्वा 'केशाद्वोऽन्यतरस्या'मिति वप्रत्ययः 'अन्येभ्योऽपि दृश्यत'इति मणिवराजीवादिवदस्मादपि। अयं समवाये स्वरितेदग्रे।

८२। लोचृ, दर्शने। ( To see )

लोच्, (ऋ) सेट्, सक, आ। लोचते। लोचेत। लोचताम्। अलोचत। अलोचिष्ट। लुलोचे। लोचिता। लुलोचिषते। लोलोच्यते। लोलोचीति, लोलोक्ति। लोचयति,—ते। अलुलोचत्,—त। ऋदित्वाणौ चङि ह्रस्वाभावः। भाषार्थोऽयं चुरादौ। आ—आलोचनम्। "आलोचते सदा नीतिमालोचयति सत्क्रियाम्॥" कवि २४८। सम्—समालोचनम्।

---

कुत्वं, ये तु सेटस्तेषां नेति। एवञ्चात्र मतं ग्लुचादीनां कवर्गादित्वेऽपि निष्ठायामनिट्त्वात् कुत्वेन भाव्यम्। अत्र हरदत्तः—यथोत्तरं मुनीनां प्रामाण्यमिति वार्त्तिककारानुसारेण कुत्वस्य भावाभावौ व्यवस्थाप्याविति। कथन्तर्हि श्लोकः समङ्ग इति, यतः शुचञ्जौ निष्ठायां सेटौ। अत्र भाष्यं—शुचञ्जोर्घञि कुत्वं वक्तव्यमिति। अत्र हरदत्तः—तत्र यथा न्यासेऽपि वक्तव्यं घञेव यथा स्यात् ख्यति माभूदिति, तदेव वार्त्तिककारपक्षे विध्यर्थं स्यादिति।

(२) अयं सेवनार्थोऽपि। तथाच "त्वय एनां मद्धिमानः सचन्त" इत्यत्र चुरभट्टभास्करीययोः सचते सेवत इति निरुक्ते च सक्तः सचित इति, सेव्यमानस्येति—अस्य तौ वाचकावित्यर्थः। 'प्रनूमह्वित्वं वृषभस्य वोचं, यं पूरवो वृत्रहणं सचन्ते' इति।

८३। श्रच, व्यक्तायां वाचि। ( To speak )

श्रच्, सेट्, सक, आ। श्रचते। शश्रेचे। श्रचिता। अश्रचिष्ट। श्राचयति,—ते। शाश्रच्यते। शाश्रक्ति, शाश्रचीति। श्रची इनन्तात् 'कृदिकारादक्तिन' इति ङीष्, पक्षे श्रचिः।

८४। श्वच, श्वचि, गतौ। ( To go )

श्वच्, श्वञ्च्, (इ) सेट्, सक, आ। श्वचते। शश्वचे। श्वचिता। अश्वचिष्ट। श्वञ्—श्वञ्चते। शश्वञ्चे। श्वञ्चिता। अश्वञ्चिष्ट।

८५। कच, बन्धने ( To bind )

कच्, सेट्, सक, आ। कचते। चकचे। कचिता। अकचिष्ट इत्यादि। कचते यूनां मनांसि बध्नातीति—कचः, पचाद्यच्। काचः—'हलश्चे'ति संज्ञायां घञ्।

८६। कचि, काचि, दीप्तिबन्धनयोः। (To shine, to fasten)

कञ्च् ( इ ) काञ्च् ( इ ) सेट्, आ। कञ्चते। चकञ्चे। कञ्चिता। अकञ्चिष्ट इत्यादि। भावादौ कञ्चते इत्यादि। कञ्चुकः—बाहुलकादुकः प्रत्ययः। काञ्च—काञ्चते। चकाञ्चे। अकाञ्चिष्ट। रुचादित्वाद्युः ( युच् )—काञ्चनम्। काञ्चनस्य विकारः काञ्चनम्। "प्राणिरजतादिभ्योऽञ्" इति अञ् मयटोऽपवादः। इन् [इः]—काञ्चिः। काञ्ची—इदन्तात् "कृदिकारादक्तिनः" इति वा [ई] ङीष्। काञ्चिकम्—संज्ञायां कन्। दीप्तौ चेति वक्तव्ये बन्धनग्रहणं प्रपञ्चार्थम्। दुर्गमते 'कचौ'ति धातुर्दीप्तावेव दृश्यते। 'काचौ'ति तु नास्त्येव।

८७। मच, मुचि, कल्कने।

To found, to boast to cheat )

कल्कनं दम्भः शाठ्यञ्चेति मैत्रेयः। दम्भः, कत्थनञ्चेति स्वामी। मच, मुञ्च (इ) सेट, आ। मच—मचते। अमचिष्ट। मेचे। मचिता। मुञ्च्—मुञ्चते। अमुञ्चिष्ट। मुमुञ्चे। मुञ्चिता

इत्यादि। मुच् इति चन्द्रः, तन्मते मोचत इति। मुच्ऌ मोचण इति तुदादौ। मुच् प्रमोचन इति चुरादौ।

१८। मचि, धारणोच्छ्रायपूजनेषु।
( To hold, to grow high, to adore )

धारणम् उच्छ्रायः पूजनञ्चेति अर्थास्त्रयः। उच्छ्रायः उच्चता। मञ्च्, (इ) सेट्, आ। मञ्चते। ममञ्चे। अमञ्चिष्ट। माम-ञ्चयते। मामङ्क्ति, मामञ्चीति। मञ्चः—पचाद्यच्। शाकटाय-नस्तु मुञ्चिं हित्वा द्वावेव धातू पपाठ—मचि बन्धने, मञ्चु धारणोच्छ्रायपूजनेष्विति; तेन चानुदात्तेत्स्थाने इड्विक्रियते, तस्य स्थाने वोदित्।

८८। पचि, व्यक्तीकरणे। ( To make clear )

पञ्च् ( इ ) सेट्, सक, आ। पञ्चते। पपञ्चे। अपञ्चिष्ट। पञ्चिष्यते। पञ्चयति,—ते। अपपञ्चत्,—त। पापञ्चयते। पाप-ञ्चीति, पापङ्क्ति। सन्—पिपञ्चिषते। "वाचमुच्चैः प्रपञ्चते" इति हलायुधः। कर्म्मणि—पञ्चयते। पञ्चन्—बाहुलकात् कनिन्, बहुवचनान्तः। पञ्चानामपत्यं पाञ्चिः—बाह्वादित्वादिञ् [इण्]। पङ्क्तिः—"पङ्क्तिविंशतित्रिंशच्चत्वारिंशत्पञ्चाशत्षष्टिसप्तत्यशीति नवतिशतम्" इति 'तदस्य परिमाणम्' इति तिप्प्रत्ययो निपात्यते। पञ्च परिमाणमस्य वर्गस्य पञ्चत्—"पञ्चद्दशतौ वर्गे वा" इति डत्यन्तो निपातितः। वाग्रहणात् "संख्याया अतिशदन्तायाः कन्" इति कनि पञ्चकः। 'पच्' इति दुर्गः। तथा वर्द्धमानोऽपि यदाह—अनिड्विधौ पचादि-सूत्रे डु पच् ष पाके, पच व्यक्तीकरणे इति। सम्मतायान्तु वर्द्ध-मानवदुक्त्वा अन्यैस्त्वयमिदित् पठ्यत इत्युक्तम्। "तिङौ गोत्रादीनि" इत्यत्र पचतिगोत्रमित्युपादाय पच व्यक्तीकरण इति पठन् न्यासकारः परस्मैपदिनञ्च मन्यते। वोपदेवमते तु

पच् पच्च् ( इ ) इति द्वावेव व्यक्तीकरणे भ्वादावात्मनेपदिनौ। डु पच् ष पाके इत्यग्रे। पचि विस्तारवचने इति चुरादौ।

१००। ष्टुच, प्रसादे। ( To be pleased )

स्तुच्, सेट्, अक, आ। स्तोचते। तुष्टुचे। अस्तोचिष्ट। स्तोचिता इत्यादि। सन्—तुस्तुचिषते; तुस्तोचिषते। स्तुचित्वा, स्तोचित्वा। तोष्टुच्यते। तोष्टुचीति, तोष्टोक्ति। णिच्—स्तोचयति,—ते। अतुष्टुचत्,—त। घञ्—स्तोकः। स्तोकान्मुक्तः। स्तोकेन मुक्तः, स्तोकत्वेन मुक्त इत्यर्थः। करणे तृतीया-पञ्चम्यौ। संस्तोज इति वर्णविकाराभ्युपगमादिति मैत्रेयः।

१०१। ऋज, गतिस्थानार्जनोपार्ज्जनेषु।
( To go, to stand, to gain, to be strong )

अयं पाठो मैत्रेयस्य। अर्जनेष्विति चौरस्वामिधनपाल-शाकटायनाः। गतिस्थैर्य्योर्जनार्जने इति वोपदेवः। ऋच, ऋचि, ईज, ईजि, बीज, ऋज गतौ इति दुर्गः।

ऋज्, सेट्, सक, आ। अर्जते। अर्जताम्। अर्जेत। आर्जत। आनृजे। अर्जिता। अर्जिष्यते। अर्जिषीष्ट। आर्जिष्ट। आर्जिष्यत। अर्जिजिषते। अर्जयति—ते। आर्जिजत्,—त। आर्जि। कर्म्मणि—ऋज्यते। प्र+ऋज्यते=प्रार्ज्यते। आर्ज्यत। आर्जि। ऋजितः। अर्जित्वा। ऋज्यम्—ऋदुपधत्वात् क्यप्।

१०२। ऋजि, भृजी, भर्जने। ( To fry )

ऋञ्ज्, ( इ ) भृज्, (ई) सेट्, सक, आ। भर्ज्जनं पाक-विशेषः। (भाजा इति भाषा)। ऋञ्जते। प्र+ऋञ्जते= प्रार्ञ्जते। ऋञ्जताम्। आर्ञ्जत। ऋञ्जेत। ऋञ्जाञ्चक्रे। आनृञ्जे इति सम्मतातरङ्गिण्योः, तदसत्—नुम्विधावुपदेशि-वद्वचनात्, अतएव काश्यपमैत्रेयादय आममेव उदाजह्रुः। ऋञ्जिता। ऋञ्जिष्यते। ऋञ्जिषीष्ट। आर्ञ्जिष्यत। ऋञ्जि-

जिषते। ऋञ्जयति। आर्ञ्जिजत्। मा भवान् ऋञ्जिजत्। भृज्—भर्ज्जते। अभर्ज्जिष्ट। बभृजे। भर्ज्जिता इत्यादि। बिभर्ज्जिषते। बरीभृज्यते। बर्भृजीति, बरिभृजीति, बरीभृजीति, बर्भर्क्ति, बरिभर्क्ति। भर्ज्जयति। अबीभृजत्, अबभर्जत्। ईदनुबन्धत्वात् निष्ठायामनिट्—भृक्तः, भृक्तवान्। घञ्—भर्गः। भ्रस्ज पाक इति तुदादौ।

१०२। एजृ, भ्रेजृ, भ्राजृ, दीप्तौ। ( To shine )

एज्, भ्रेज, भ्राज्, ( ऋ ) सेट्, अक, आ। 'वर्च्च, कचि, एजृ, भ्रेजृ, भ्राजृ, दीप्ता'विति दुर्गकृतः पाठः। एजते। प्र+एजते=प्रेजते। एजाञ्चक्रे। ऐजत। एजिता। एजिष्यते। ऐजिष्ट, ऐजिषाताम्, ऐजिषत। एजिषीष्ट। एजिजिषते। एजयति—ते। ऐजिजत्,—त। मा भवान् एजिजत्। एज्यते। ऐज्यत। ऐजि। खश्—अङ्गमेजयतीति अङ्गमेजयः। पाणिनीयवृत्तौ तु एजृ कम्पन इति परस्मैपदिण्यन्तात् खश् उक्तः। प्र—उदेजयतीति उदेजयः। भ्रेज्—भ्रेजते। बिभ्रेजे। अभ्रेजिष्ट। भ्रेजिता इत्यादि। सन्—बिभ्रेजिषते। यङ्—बेभ्रेज्यते। यङ्लुक्—बेभ्रेजीति, बिभ्रेक्ति। णिच्—भ्रेजयति—ते। अबिभ्रेजत्—त। ऋदनुबन्धत्वात् नोपधाह्रस्वः। भ्राज्—भ्राजते। बभ्राजे। अभ्राजिष्ट,—षाताम्,—षत। यङ्—बाभ्राज्यते। यङ्लुक्—बाभ्राजीति, बाभ्राक्ति इत्यादि। णिच्—भ्राजयति। अबिभ्रजत्, अबभ्राजत्—'भ्राजे'त्यादिना विकल्पे नोपधाह्रस्वः। एवञ्चास्य ऋदित्वमनुदात्तेत्त्वमात्रफलम्। इष्णुच्—भ्राजिष्णुः। ताच्छील्ये क्विप्—विभ्राक्। *

* व्रश्चादिसूत्रे राजिसाहचर्य्यात् फणादिकस्यैव भ्राजो ग्रहणमित्युक्तत्वात् न षत्वम्। यत्तु पाणिनीयवृत्तौ क्विप्सूत्रे विभ्राडिति—कृतषत्वस्यैवोदाहरणं तदचरानुबन्धकस्यापि कणादिकमपि गृह्यत इति सूचयितुं णत्वस्यापि षत्वमस्तीति।

१०४। ईज, गतिकुत्सनयोः। ( To go, to blame)

ईज्, सेट्, सक, आ। ईजते। ऐजत। ईजाञ्चक्रे इत्यादि। ऐजिष्ट। ईजिता इत्यादि। कर्म्मणि—ईज्यते। ऐज्यत। ऐजि, ऐजिषाताम्, ईजिषत। ऐजिजिषते। ईजयति,—ते। ऐजिजत्,—त। मा भवान् ईजिजत्। वर्च्चादय उदात्ता अनुदात्तेतः।

## अथ चवर्गीयान्ताः परस्मैपदिनः।

१०५। शुच, शोके। ( To grieve for, to regret )

एतदादयो व्रजन्ता उदात्ता उदात्तेतः।

शुच्, सेट्, अक, प। शोचति। अशोचीत्, अशोचिष्टाम्, अशोचिषुः। अशोचीः। अशोचिष्टम्, अशोचिष्ट। अशोचिषम्,—ष्व,-ष्म। शुशोच। शुशुचतुः, शुशुचुः। शुशोचिथ, शुशुचथुः, शुशुच। शुशोच, शुशुचिव,—म। शोचिता। शोचिष्यति। शुच्यात्। अशोचिष्यत्। शुशुचिषति, शुशोचिषति। शोशुच्यते। शोशुचीति, शोशोक्ति। शोचयति,—ते। अशूशुचत्,—त। शुच्यते। अशोचि। शुचितः। शोचितः। शुचित्वा, शोचित्वा। परिशुच्य। ताच्छील्यादौ लुग(युं)—शोचनः। प्रशुचितः, प्रशोचितः। शूद्रः—'शुचेर्द्रश्च' इति रक्प्रत्ययो दकारोऽन्तादेशो दीर्घश्च। घञ्—शोकः। वार्त्तिकमते—'तुन्दशोकयोः' इति निपातनात् कुत्वमिष्टव्यम्। क्विप्—शुक्। कृत्यादौ—शोचितव्यः। शोचनीयः। शोच्यः। शोचितुम्। शोचनम्। शुचिर् पूतीभाव इति दिवादौ।

१०६। कुच, शब्दे तारे [च]। ( To sound high )

तारे उच्चे इत्यर्थः, शब्द इत्यस्य विशेषणम्। प्राचीनास्तु शब्दे तारे च इति पठित्वा तारश्चिक्कणता इत्याहुः। "शब्दे

तारे संपचनकौटिल्यप्रतिष्टम्भविलेखनेषु च" इत्यपि केचित् पठन्ति। कोचति काञ्चीं वणिक्—चिक्कणयतीत्यर्थः। केचिदुक्तसमुच्चयार्थं चकारमाहुः।

कुच्, सेट्, अक, प। कोचति। अकोचीत्। चुकोच। कोचिता इत्यादि पूर्ववत्। कुचः—इगुपधत्वात् कः। कुच गताविति स्वामी। अयं सम्पर्चनार्थे ज्वलादौ, पुनः पाठे प्रयोजनं तत्रैव वक्ष्यते। सङ्कोचनार्थस्तु तुदादौ।

१०७। कुन्च्, क्रुन्च्, कौटिल्याल्पीभावयोः।
( To make crooked, to lessen )

दन्त्योपधौ। गतिकौटिल्याल्पीभावयोः, गतौ कौटिल्ये द्रव्याल्पत्वे चेति चीरस्वामी।

कुन्च्, क्रुन्च्, सेट्, अक, प। कुञ्चति। अकुञ्चीत्। चुकुञ्च। कुञ्चिता इत्यादि। चुकुञ्चिषति। चोकुच्यते। चोकुञ्चीति; चोकुङ्क्ति। (१) अचोकुञ्चीत्। अचोकुन्। (२) कुञ्चयति,—ते। अचुकुञ्चत्,—त। कुचितः, कुञ्चितवान्। निकुचितमनेनेति भावादिकर्म्मणोरिति कित्वविकल्पो न भवति "सन्निपातलक्षणो विधिरनिमित्तं तद्विघातस्ये"ति। कुञ्चित्वा। एवं क्रुञ्चतीति। क्रुङ् 'ऋत्विगि'त्यादिना क्विन् (क्विप्)। (३) अजादिपाठात् टाप्—क्रुञ्चा। क्रुञ्च एव—क्रौञ्चः स्वार्थे अण्।

---

(१) न लुमताङ्गस्येति निषेधात् प्रत्ययलक्षणेन नलोपो न भवति, चोकुरिति कुत्वं न चकारे निवर्त्तिते निमित्ताभावे नैमित्तिकस्याप्यभाव इति ञकारे निवृत्तेऽनुस्वारस्य पुनः परसवर्णो ङकारः।

(२) संयोगान्तलोपे सति पूर्ववन्निमित्ताभावात् ञकारेऽनुस्वारे च निवृत्ते नकारोऽवतिष्ठते।

(३) "अक्रुञ्चे"दिति वर्जनादस्यानुषङ्गलोपो नास्ति।

१०८। लुन्च, अपनयने। ( To remove, to pluck )

अपनयनं छेदनमित्यर्थः। लुञ्चति केशान् शोकार्त्त इति रमानाथः। "अलुञ्चीत् कर्णनासिक"मिति भट्टिः १५।५७।

लुन्च, सेट्, सक, प। लुलुञ्च। लुञ्चिता। लुञ्चिष्यति। अलुञ्चिष्यत्। अलुञ्चीत्, अलुञ्चिष्टाम्, अलुञ्चिषुः। लुच्यात्। लुलुञ्चिषति। लोलुच्यते। लोलुञ्चीति,लोलुङ्क्ति। लुञ्चयति,—ते। अलुलुञ्चत्,-त। लुच्यते। अलुच्यत। अलुञ्चि। लुञ्चित्वा, लुचित्वा। केचिदसुमुदितं पठन्ति, तदनार्षं भ्रष्टलुचितमिति, राजदन्तादिषु लुचितमिति पाठात्। उदितो हि क्त्वाप्रत्यये 'उदित्वे वा' इतीटो विकल्पनात् निष्ठायां 'यस्य विभाषा' इति प्रतिषेधाल्लुचितमिति न स्यात्।

१०९। अन्चु, गतिपूजनयोः। ( To go, to worship )

अन्च (उ) सेट्, सक, प। लट्—अञ्चति। लोट्—अञ्चतु, अञ्चतात्; अञ्चताम्, अञ्चन्तु। लिङ्—अञ्चेत्। लङ्—आञ्चत्। लुङ्—आञ्चीत्, आञ्चिष्टाम्, आञ्चिषुः। लिट्—आनञ्च, आनञ्चतुः, आनञ्चुः। आनञ्चिथ, आनञ्चथुः, आनञ्च। आनञ्च, आनञ्चिव। आशीः—अञ्च्यात्। लृट्—अञ्चिष्यति। लुट्—अञ्चिता। लृङ्—आञ्चिष्यत। सन्—अञ्चिचिषति, आञ्चिचिषीत्। अञ्चिचिषाञ्चक्रे—२। णिच्—अञ्चयति। आञ्चिचत्। अञ्चयाञ्चकार। कर्म्मणि—अञ्च्यते। आञ्चि। गत्यर्थे आशीः—अच्यात्। कर्म्मणि—अच्यते, आच्यत इत्यादि। गतौ व्यत्यञ्चतीत्यादि 'न गतिहिंसा' इति आत्मनेपद-निषेधः। क्त, क्त्वा—अञ्चित्वा, अङ्क्त्वा। उदनुबन्धादिड्-विकल्पः। अक्तः, अक्तवान् 'अञ्चोऽनपादाने' इति निष्ठानत्वम्। अपादाने तु—उदक्तमुदकं कूपादिति। पूजायां क्त्वानिष्ठयो-

निंत्यमिट् । अञ्चित्वा । अञ्चितोऽस्य (१) गुरुः, वर्त्तमाने क्तः । तैलमुदच्यतेऽस्मिन्निति तैलोदङ्कश्चर्म्ममयस्त्रिकाष्ठिः । 'उदञ्चोऽनुदके' इति घञ् निपात्यते । उदके तु—उदकोदञ्चनम् । प्रत्यञ्चतीति क्विन् ( क्विप् ) प्रत्यङ् । नपुंसके तु स्वमोर्लुकि-प्रत्यक् । स्त्रियां—प्रतीची । प्रतीच्यम्—'द्युप्रागपागुदक् प्रतीचो यत्' इति यत् । समञ्चतीति सम्यक्—'समः समि' ति अञ्चताव-प्रत्ययान्त उत्तरपदे समः सम्यादेशः । तिरोऽञ्चतीति तिर्यङ्—'तिरसस्तिर्य्यलोप' इति 'अच' इति लोपाभावे तिर्य्यादेशे यण् लोपे तु तिरश्च इत्यादि । सहाञ्चतीति सध्र्यङ्—'सहस सध्रिः' इत्यञ्चतावप्रत्ययान्त उत्तरपदे सध्र्यादेशः । (१)विष्व-गञ्चतीति विष्वद्र्यङ्, देवानञ्चतीति देवद्र्यङ् । चकारात् सर्व-नाम्नश्च—सर्वद्र्यङ् इत्यादि । मतभेदात् असुमुयङ्, अदद्र्यङ्, असुद्र्यङ् इत्यादयो बहवः प्रयोगा दृश्यन्ते । अत्र कारिका—

"अदस्योऽद्रेः पृथङ्मुत्वं केचिदिच्छन्ति लत्ववत् ।
केचिदन्त्यसदेशस्य नेत्येकेऽसेर्हि दृश्यते ॥"

११० । वनृचु, चनृचु, तनृचु, त्वनृचु, स्त्रनृचु, म्लुनृचु, ग्रुनृचु, ग्लुनृचु, म्रुचु, म्लुचु गत्यर्थाः । ( To go ) सर्वे उदनुबन्धाः, सेटः, सकर्म्मकाश्च । गत्यर्था इत्यत्र 'गतौ' इति दुर्गः पठति ।

वनृच्—वञ्चति । ववञ्च । ववञ्चिथ । अवञ्चीत् । वञ्चिता ।

(१) अस्येति कर्त्तरि षष्ठी । अस्याश्च क्तेन च पूजायाम्' इति समासो निषिध्यते । 'पूजितो यः सुरासुरैरपी'त्यत्र वर्त्तमानक्तेन 'तक्रकौण्डिन्य'-न्यायेन भूते बाधात् तृतीया चिन्त्या । यद्वा तेनेत्यधिकारे 'उपज्ञात' इति भूते क्तेन निर्द्देशात् अयं वर्त्तमानक्तेन न बाध्यत इति सामान्येन ज्ञापकाश्रयेणायं प्रयोगः समर्थनीयः ।

अवञ्चिष्यत् इत्यादि। आशीः—वच्यात्। सन्—विवञ्चिषति। यङ्—वनीवच्यते। वनीवञ्चीति, वनीवङ्क्ति, वनीवक्तः। णिच्—माणवकं वञ्चयते। विप्रलभत इत्यर्थः। 'गृधिवञ्च्योः प्रलम्भन' इति ण्यन्ताभ्यामाभ्यामकर्त्रभिप्रायेऽपि आत्मनेपदम्। प्रलम्भनं मिथ्याफलाख्यानमतोऽन्यत्र वञ्चयति, वञ्चयते इत्युभयं भवति। कर्म्मणि—वच्यते। अवञ्चि। वङ्क्त्वा, वञ्चित्वा, वचित्वा, उदनुबन्धत्वादिड्विकल्पः। सेटि क्त्विपच्चे नलोपः। वक्तः, वक्तवान्। वञ्चंश्च वञ्चन्ति वणिजः, गन्तव्यं गच्छन्तीत्यर्थः। 'वञ्चेर्गतौ' इति कुत्वं स्यति निषिध्यते। अन्यत्र वङ्कंश्च काष्ठमिति कुत्वं भवति, कुटिलमित्यर्थः। वक्रम्—'स्फायितञ्ची'त्यादिना रक्। चन्‌च—चञ्चतीत्यादि पूर्ववत्। शतृ—चञ्चन्। चञ्चन्नेव कश्चिद्विशिष्यञ्चत्कः। यश्च मण्यादिः स्वयमचञ्चन्नपि प्रभया चञ्चन्निव लक्ष्यते, सोऽपि चञ्चत्कः। 'स्थूलादिभ्यः प्रकारवचने कन्' इत्यत्र चञ्चद्बृहतोरुपसंख्यानात् कः। प्रकारस्तु भेदः साद्दृश्यम्। अपरे "चञ्चाद्बृहतोरुपसंख्यान"मिति पठन्ति। तृणमयः पुरुषश्चञ्चा, तत्प्रकारश्चञ्चकः। 'केण' इति ह्रस्वः। तन्‌च्—तञ्चति। तक्रम्—'स्फायितञ्ची'त्यादिना रक्। त्वन्‌च्—त्वञ्चति। म्रुन्‌च्—म्रुञ्चति। म्लुन्‌च्—म्लुञ्चति। म्रुच्—म्रोचति। म्लुच्—म्लोचति। ग्रुन्‌च्—ग्रुञ्चति। ग्लुन्‌च्—ग्लुञ्चति। अग्लुचत्, अग्लोचीत्। अम्रुचत्, अम्रोचीत्। मुम्रुचिषति, मुम्रोचिषति। म्रुचित्वा, म्रोचित्वा। भावादिकर्म्मणोर्विकल्पनात् म्रुचितमनेन, म्रोचितमनेनेत्यादि। एवं म्लुचेरपि। सर्वेषामुदनुबन्धत्वात् क्त्वाप्रत्यये इड्विकल्पनान्निष्ठायामनिट्त्वम्। वच प्रलम्भन इति चुरादौ। तन्‌च् सङ्कोचन इति रुधादौ।

१११। ग्रुचु, ग्लुचु, कुजु, खुजु, स्तेयकरणे। (To rob)

स्तेयकरणं चौर्य्यम्। सर्वेऽप्युदनुबन्धाः, सेटः, सकर्मकाश्च। ग्रुच्—ग्रोचति। अग्रोचत्। जुग्रोच। अग्रोचिष्यत्। अग्रुचत्, अग्रोचीत्। अङ् [ अण् ] विधौ ग्रुचिमपि केचित् पठन्ति। ग्रुच्यात्। ग्रोचयति, –ते। अजुग्रोचत्,–त। जुग्रोचिषति, जुग्रुचिषति। जोग्रुच्यते; जोग्रुचीति, जोग्रोक्ति। ग्रुच्यते। अग्रोचि। ग्लुच—ग्लोचतीत्यादि ग्लुचिवत्। अग्लुचत्, अग्लोचीत्। कुज् (उ)—कोजति। अकोजीत्। (उ) कोजित्वा, कुजित्वा, कुक्त्वा। कुक्तः। कुक्तवान्। कुजितं कोजितम् इत्यादि ग्रुचिवत्। खुज्(उ)—खोजति। कुजिवत्। प्रणिकोजति। प्रणिखोजति। 'शेषे विभाषा' इति उपसर्गस्थान्निमित्तात् परस्य नेर्णत्वं, तत्रैव सूत्रे 'कखादावषान्त उपदेश' इति पर्य्युदासान्न भवति, शेषश्च गदादिव्यतिरिक्तो धातुः। ग्रोकं, ग्रोक्य—'घञ्ण्यतोश्चजोः कुघिण्ण्यतोर्निष्ठायामनिट' इति वार्त्तिकसूत्रेण कुत्वम्। ग्रुचित्वा। ग्रोचित्वा, ग्रुक्त्वा। ग्रुक्तः। ग्रुचिवत्। एवं ग्लुचेरपि।

११२। ग्लुन्च, षस्ज, गतौ। (To go)

ग्लुन्च्, सेट्, सक, प। ग्लुञ्चति। जुग्लुञ्च। ग्लुञ्चिता। अग्लुचत्, अग्लुञ्चीत्। (१) ग्लुच्यते। ग्लुक्तः। ग्लुचित्वा, ग्लुचितुम्। सस्ज्—सज्जति। ससज्ज। सज्जिता। असज्जीत्

(१) अङ्विधौ ग्लुञ्चिग्लुच्योरेकतरोपादानेनापि अग्लुचत् अग्लोचीदिति सिद्धौ उभयोपादानमर्थभेदादिति केचित्। अपरे तूभयोपादानसामर्थ्याद्ग्लुञ्चेर्नलोपो न भवतीति अग्लुञ्चदिति चतुर्थमपि रूपमाहुः। इदमुद्भाष्यमन्यतरोपादानेनापि रूपद्वयसिद्धेरन्यतरच्छक्यमकर्त्तुमिति प्रतिपादितत्वात्। अनेकार्थत्वाद्धातूनामत्र विषयेऽर्थभेदो न प्रयोजक इति।

इत्यादि । सञ्जयति,—ते । असषज्जत्,—त । सन्—सिसञ्जिषति 'स्तौतिण्योरेव' इति नियमात् अणावषत्वम् ( १ ) सासज्यते । सासज्जीति, सासक्ति । सज्यते । असञ्जि ।

११३ । गुजि, अव्यक्ते शब्दे । ( To hum, to buzz )

गुन्ज (इ) सेट्, अक, प । गुञ्जति । गुञ्जतु । गुञ्जेत् । अगुञ्जत्, अगुञ्जिष्टाम्, अगुञ्जिषुः । जुगुञ्ज । जुगुञ्जिथ । गुञ्जिता । गुञ्जिष्यति । अगुञ्जिषत् इत्यादि । गुञ्ज्यते । गुञ्जा । गुञ्जनम् । गुञ्जितः । गुञ्जन् । गुन्ज शब्दे इति तुदादौ ।

११४ । गुज, शब्दे । ( To sound )

गुज, सेट्, अक, प । गोजति । अगोजत् । जुगोज । गोजिता । अगोजीत् । नायं सर्वैराद्रियते ।

अर्च, पूजायाम् । ( To worship )

अर्च्च, सेट्, सक, प । लोट्—अर्चति, अर्च्चतः, अर्च्चन्ति । अर्च्चसि, अर्च्चथः, अर्च्चथ । अर्च्चामि, अर्च्चावः, अर्च्चामः । लोट्—अर्च्चतु, अर्च्चतात्; अर्च्चताम्, अर्च्चन्तु । अर्च्च, अर्च्चतात्; अर्च्चतम्—त । अर्च्चाणि, अर्च्चाव,—म । लिङ्—अर्च्चेत्, अर्च्चेताम्, अर्च्चेयुः । अर्चेः, अर्चेतम्, अर्चेत । अर्चेयम्, अर्चेव, अर्चेम । लङ्—आर्चत्, आर्चताम्, आर्चन् । आर्चः, आर्चतम्, आर्चत । आर्चम्, आर्चाव, आर्चाम । लुङ्—आर्चीत्, आर्चिष्टाम्, आर्चिषुः । आर्चीः, आर्चिष्टम्, आर्चिष्ट । आर्चिषम्, आर्चिष्व,—ष्म । लिट्—आनर्च, आनर्चतुः, आनर्चुः । आनर्चिथ, आनर्चथुः, आनर्च । आनर्च, आनर्चिव,—म । लुट्—अर्च्चिता, अर्च्चितारौ

(१) 'हेतुमति च' इत्यत्र 'यदभिप्रायेषु सज्जत' इति भाष्यप्रयोगादयमात्मनेपद्यपि, अतोऽस्यात्मनेपदं दूषयन्तो वर्द्धमानचीरस्वाम्यादय एव दुष्टाः । सस्जिमपि केचित् पठन्ति ।

—तारः। ऌट्—अर्चिष्यति। आशीः—अर्च्यात्, अर्च्यास्ताम्, अर्च्यासुः। अर्च्याः, अर्च्यास्तम्, अर्च्यास्त। अर्च्यासम्, अर्च्यास्व, अर्च्यास्म। आर्चिष्यत्। कर्म्मणि—अर्च्यते। आर्च्यत। आर्चि, आर्चिषाताम्, आर्चिषत। आर्चिष्ठाः—षाथाम्—ध्वम्।—षि,—ष्व,—ष्म। लिट्—आनर्चे, आनर्चाते, आनर्चिरे। आनर्चिषे, आनर्चाथे,—र्चिध्वे। आनर्चिवहे।

सन्—अर्चिचिषति। णिच्—अर्चयति,—ते। आर्चिचत्,—त। क्त्—अर्चित्वा। अर्च्यः। अर्चनीयः। अर्चितः। अर्चितुम्। अर्चा। अर्चकः। अर्चन्। अर्च्यमानः। अर्चिचिषुः। अर्चिचिषा। अयं युजादौ—स्वरितेत् पठिष्यते। (१)

११६। म्लेच्छ, अव्यक्ते शब्दे। (२) (To speak confusedly)

इहाव्यक्तशब्दोऽस्फुटशब्दोऽपशब्दश्च। उक्तं हि पस्पशायां—'तस्माद्ब्राह्मणेन न म्लेच्छितवै म्लेच्छो ह वा एष यदपशब्द इति' न म्लेच्छितवा इत्यस्य पर्यायो नापभाषितवा इति कैयटे।

म्लेच्छ, सेट्, अक, प। म्लेच्छति। मिम्लेच्छ। म्लेच्छिता। अम्लेच्छीत्। म्लेच्छिष्यति। मिम्लेच्छिषति। मेम्लेच्छ्यते। मेम्लेच्छीति, मेम्लेष्टि; मेम्लेष्टः, मेम्लेच्छति।

---

(१) तत एवार्चतीति सिद्धे क्रियाफलस्य कर्तृगामित्वे परस्मैपदार्थ एव पाठः। अयमात्मनेपदीति शाकटायनः। प्रयोजनन्तु तन्मते क्रियाफलस्याकर्तृगामित्वेऽपि तङ् (आत्मनेपदम्) "यः पूर्णादुदचति अविरघ्नोमुद्दचन्वाप" इत्यादि दर्शनात् ऋच् [अर्च्] इत्येक इत्याभरणोक्तं युक्तम्।

(२) अस्य अपि पाठो म्लेच्छतीति "शपृश्यनोर्नित्य"मिति नित्यनुमर्थः श्रे हि विकल्पः स्यात्, स्वरे भेदः। शपि शपः पित्वात् अनुदात्तौ सुप्पिताविति अनुदात्तः। शस्तु प्रत्ययस्वरेणानुदात्तः। एवमीदृशामन्येषामपि धातूनां विकरणभेदे फलत्रयम्।

मेम्लेच्छि। मेम्लेच्छ्मि। क्त—म्लिष्टम् 'क्षुब्धे'त्यादिना अविस्पष्टार्थे निपातः। अपशब्दे तु—म्लेच्छितम्। अयं चुरादावपि।

११७। लछ, लाछि, लक्षणे। (To mark)

लछ्, लाञ्छ् (इ) सक, सेट्, प। लच्छति। ललच्छ। अलच्छीत्। लच्छिता इत्यादि। लिलच्छिषति। लच्छयति,—ते। अललच्छत्,—त। लालच्छ्यते। लालच्छीति, लालष्टि। लच्छितः लच्छित्वा। लाञ्छ्—लाञ्छति। ललाञ्छ। अलाञ्छीत्। लिलाञ्छिषति। लाञ्छयति,—ते। अललाञ्छत्,—ते। लालाञ्छ्यते। लालाञ्छीति, लालांष्टि; लालांष्ट इत्यादि पूर्ववद्भवति। क्वत्—क्विपि एकवचने—लाण्ट्, लान्। द्विवचने—लांशौ। बहुवचने—लांश इत्यादि। लाञ्छितः। लाञ्छनम्। लाञ्छित्वा।

११८। वाछि, इच्छायाम्। (To wish)

वाञ्छ (इ) सेट्, सक, प। वाञ्छति। अवाञ्छीत्, अवाञ्छिष्टाम्, अवाञ्छिषुः। ववाञ्छ, ववाञ्छतुः, ववाञ्छुः। ववाञ्छिथ। ववाञ्छिव। वाञ्छिता। अवाञ्छिष्यत्। विवाञ्छिषति। वाञ्छयति,—ते। अववाञ्छत्,—त। वावाञ्छ्यते, वावाञ्छीति, वावांष्टि। वाञ्छित्वा। वाञ्छितः। वाञ्छनम्। वाञ्छा। वाञ्छनीयः। वाञ्छकः। वाञ्छितव्यः। क्विप्—वान्, वाण्ट् इत्यादि लाञ्छिवत्।

११९। आछि, आयामे। (To lenthen)

आञ्छ् (इ) सेट्, अक, प। आञ्छति। आञ्छेत्। आञ्छीत्, आञ्छिष्टाम्, आञ्छिषुः। आञ्छीः, आञ्छिष्टम्। आञ्छिषम्,—ष्व। आञ्छिता। आनाञ्छ। आनाञ्छिव,—म। आञ्चिच्छिषति। आञ्छयति। आञ्चिच्छत्। क्त—आच्छः। आञ्छितः। आञ्छित्वा।

१२० । ह्रीच्छ, लज्जायाम् । ( To be ashmed )

ह्रीच्छ, सेट्, अक, प । ह्रीच्छति । जिह्रीच्छ । ह्रीच्छिता इत्यादि म्लेच्छिवत् । ह्री लज्जायामपि जुहोत्यादौ ।

१२१ । हुर्च्छा, कौटिल्ये । ( To be crooked )

हुर्च्छ (आ) सेट्, अक, प । इह कौटिल्यमपसरणमिति मैत्रेयस्य मतम् । हूर्च्छति । जुहूर्च्छ । हूर्च्छिता । 'उपधायां च' इति इको दीर्घः । सन्—जुहूर्च्छिषति । जोहूर्च्छ्यते । जोहूर्च्छीति, जोहोर्त्ति, जोहूर्त्तः । जोहोर्षि । जोहोर्मि, जोहूर्वः,जोहूर्मः । हूर्च्छयति,—ते । अजुहूर्च्छत्, —त । क्विप्—हूः, हुरौ, हुरः । हूर्णः, हूर्णवान् । भावादिकर्मणोस्तु—हूर्णम्, हूर्च्छितमनेन इत्यादि ।

१२२ । मुर्च्छा, मोहसमुच्छ्राययोः ।

( To faint, to grow, to increase )

मुर्च्छ (आ) सेट्, अक, प । मूर्च्छति । मूर्च्छेत् । मूर्च्छतु । अमूर्च्छत् । मुमूर्च्छ, मुमूर्च्छतुः, मुमूर्च्छुः । मुमूर्च्छिथ, मुमूर्च्छथुः, मुमूर्च्छ । मुमूर्च्छ, मुमूर्च्छिव,—म । अमूर्च्छीत्, अमूर्च्छिष्टाम्,—र्च्छिषुः । अमूर्च्छीः, अमूर्च्छिष्टम्,—ष्ट । अमूर्च्छिषम्,—ष्व,—ष्म । मूर्च्छिता । मूर्च्छ्यात् । अमूर्च्छिष्यत् । सन्—मुमूर्च्छिषति । णिच्—मूर्च्छयति,—ते । अमुमूर्च्छत्,—त । यङ्—मोमूर्च्छ्यते । मोमोर्त्ति,मोमूर्च्छीति । मूर्च्छयते । अमूर्च्छि । निष्ठायां नत्वनिषेधः—मूर्त्तः, मूर्त्तवान् । मूर्त्तं, मूर्च्छितमनेन, प्रमूर्त्तः, प्रमूर्च्छितः रोगी । मूर्च्छास्य सञ्जाता इत्यर्थे—इतच्—मूर्च्छितः । क्त्वा—मूर्च्छित्वा । प्रमूर्च्छ्य । क्ति—मूर्त्तिः । क्विप्—मूः, मुरौ, मुरः । णिच्-युच्—मूर्च्छना ।

१२३ । स्फुर्च्छा [स्फूर्च्छा] विस्तृतौ । (To extend)

'विस्मृतौ' इति कातन्त्रम् । स्फुर्च्छ् ( आ ) सेट्, सक, प । स्फूर्च्छति । पुस्फूर्च्छेत्यादि पूर्ववत् । अभ्यासे खयः (शिटः) शेषः । क्विप्—स्फूः, स्फूरौ, स्फूरः । प्रदीपादिमते—स्फुः, स्फुरौ, स्फुरः ।

१२४ । युच्छ, प्रमादे । ( To be negligent )

युच्छ्, सेट्, अक, प । युच्छति । युयुच्छ । अयुच्छीत् । युच्छिता । युयुच्छिषति । युच्छयति,—ते । अयुयुच्छत्,—त ।

१२५ । उच्छि, उञ्छे । ( To glean )

उञ्छः कणश आदानम् कणिशाद्यर्जनं शिलमिति यादव-प्रकाशः । एवं विज्ञानेश्वरोऽपि 'उञ्छति' सूत्रे उञ्छति उच्चिनोतीत्यर्थः इति । न्यासे—वदराण्युञ्छति—वादरिकः, श्यामाकानुञ्छति—श्यामाकिक इत्युदाहरतो वृत्तिकारस्यापि व्यापिलेनोच्चयार्थ इत्यभिप्रायो लक्ष्यते ।

उञ्छ् ( इ ) सेट्, सक, प । उञ्छति । उञ्छाञ्चकार । औञ्छीत् । उञ्छिष्यति । उञ्छ्यात् । उञ्छयति । ना--औञ्चिच्छत् । सन्—उञ्छिच्छिषति । क्त—उञ्छः । उञ्छित्वा । उञ्छितः ।

१२६ । उच्छी, विवासे [ विपाशे ] । ( To finish )

समाप्तिर्विवास इति तरङ्गिण्याम् । वोपदेवमते निवासेऽयं धातुः । विपाश इति प्रदीपः । विपूर्वश्चायं प्रायः प्रयुज्यत इति पुरुषकारे । उच्छ् ( ई ) सेट्, प । व्युच्छति । व्युच्छाञ्चकार । व्युच्छिता । व्यौच्छीत् । व्युष्टः । व्युष्टवान् । व्युष्टं, प्रभातम् । ईदनुबन्धत्वात् निष्ठायामिड़भावः । व्युष्टे दीयते, कार्यं वा—वैयुष्टम् । 'व्युष्टादिभ्योऽण्' इति अण्प्रत्ययः । अयमपि तुदादौ पठिष्यते । पूर्ववदुभयत्र प्रयोजनम् ।

१२७। भ्रज, भ्रजि, धृज, धृजि, ध्वज, ध्वजि, गतौ। (To go)

भ्रज्, भ्रञ्ज् (इ) धृज्, धृञ्ज (इ) ध्वज, ध्वञ्ज् (इ) सेट्, सक, प। भ्रजति। दभ्राज। भ्रजिता। अभ्रजीत्, अभ्राजीत्। सन्—दिभ्रजिषति। यङ्—दाभ्रज्यते। दाभ्रजीति, दाभ्रक्ति। णिच्—भ्राजयति। अदिभ्रजत्। भ्रञ्ज्—भ्रञ्जति। दभ्रञ्ज। अभ्रञ्जीत्। भ्रञ्जिता। दिभ्रञ्जिषति। दाभ्रञ्ज्यते। दाभ्रञ्जीति, दाभ्रङ्क्ति। लङि—तिप्सिपोः—अदाभ्रन्। धृज्—धर्जति। दधर्ज। धर्जिता। अधर्जीत्। दिधर्जिषति। दरीधृज्यते। दर्धृजीति, दरिधृजीति, दर्धर्क्ति, दरिधर्क्ति, दरीधर्क्ति। दर्धक्तः इत्यादि। धर्जयति। अदधर्जत्, अदीधृजत्। धर्जित्वा।—धृज्यम्। घञ्—धर्जः।

धृञ्ज् (इ)—धृञ्जति। दधृञ्ज। धृञ्जिता। अधृञ्जीत्। दिधृञ्जिषति। दरीधृञ्ज्यते इत्यादि। धृञ्जयति। अदधृञ्जत्।

ध्वज्—ध्वजति। ध्वञ्ज् (इ) ध्वजति इत्यादि। सर्वं एव तवर्गीयचतुर्थवर्णादयः। तरङ्गिण्यादौ तु भादौ व्रजव्रजी इति दन्त्योष्ठ्यादौ पठ्यते।

१२८। कूज, अव्यक्ते शब्दे।

( To make any monotonous sound )

कूज्, सेट्, अक, प। कूजति। कूजेत्। अकूजत्। कूजतु। कूज। कूज्यात्। चुकूज, चुकूजतुः, चुकूजुः। चुकूजिथ, चुकूजथुः। चुकूजिव। कूजिता। कूजिष्यति। अकूजीत्, अकूजिष्टाम्, अकूजिषुः। अकूजीः अकूजिष्टम्, अकूजिष्ट। अकूजिषम, अकूजिष्व,—ष्म। चोकूज्यते। चोकूजीति, चोकूक्ति। कूजयति। अचूकुजत्। कूजः। कूज्यम्। कूजनम्। कूजितः। कूजितवान्।

१२९। अर्ज, षर्ज, अर्जने। ( To earn )

अर्ज, सर्ज, सेट्, सक, प। अर्जति। आर्जत। आनर्ज।

आनर्जतुः आनर्जुः । आनर्जिथ,—व । अर्जिता । आर्जीत्, आर्जिष्टाम्, आर्जिषुः । आर्जीः, आर्जिष्टम् । आर्जिषम्, आर्जिष्व । आर्जिष्यत् । अर्जिजिषति । अर्जयति । आर्जिजत् । अर्जितः । अर्जित्वा । अर्जनम् । सु—अर्ज—घञ् । स्वर्गः । वार्त्तिककारमते न्यङ्क्वादित्वात् कुत्वम् । ऋजुः,'अर्जिदृशी'त्यादिना कुप्रत्ययः, ऋजादेशश्च । अर्ज प्रयत्न इति चुरादौ । सर्ज—सर्जति । ससर्ज, ससर्जतुः, ससर्जुः । ससर्जिथ । सर्जिता । सर्ज्यात् । असर्जीत् । सिसर्जिषति । सासर्ज्यते । सासर्जीति, सासर्क्तीत्यादि । सर्जयति,—ते । अससर्जत्,—त । सर्जित्वा ।

१३० । गर्ज, शब्दे । ( To roar )

गर्ज, सेट्, अक, प । गर्जति । अगर्जत् । जगर्ज । जगर्जिथ । अगर्जीत्, अगर्जिष्टाम्, अगर्जिषुः । गर्जिता । गर्ज्यात् । अगर्जिष्यत् । जिगर्जिषति । गर्जयति,—ते । अजगर्जत्,—त । जागर्ज्यते । जागर्जीति, जागर्क्ति । गर्जनम् । गर्जितम् । गर्जित्वा । गर्जः ।

१३१ । तर्ज, भर्त्सने । ( To menace, to threaten )

तर्ज, सेट्, सक, प । तर्जति । तर्जिता । ततर्ज । अतर्जीत् । तितर्जिषति । तर्जयति । अततर्जत् तातर्ज्यते । तातर्जीति, तातर्क्ति । तर्जनम् । तर्जनी । तर्जित्वा । तर्जितः । अयं चुरादावपि ।

१३२ । कर्ज, व्यथने । ( To pain )

कर्ज, सेट्, सक, प । कर्जति । चकर्ज । कर्जिता । अकर्जीत् । कर्जिष्यति । चिकर्जिषति । कर्जयति,—ते । अचकर्जत्,—त । काकर्ज्यते, चाकर्जीति, चाकर्क्ति ।

१३३। खर्ज, व्यथने पूजने च।

( To worship, to be uneasy )

खर्ज्, सेट्, अक, प। खर्जतीत्यादि कर्जिवत्। खर्जूः, 'खर्जपिञ्जादिभ्य ऊरोलचौ' इति ऊरः। 'खर्ज व्यथने' इति दुर्गः पठति।

१३४। अज, गतिक्षेपणयोः। ( To go, to drive)

अज्, सेट्, सक, प। लट्—अजति। लोट्—अजतु, अजतात्; अजताम्, अजन्तु। अज, अजतात्। लिङ्—अजेत्, अजेताम्, अजेयुः। अजेः, अजेतम्, अजेत। अजेयम्, अजेव, अजेम। लङ्—आजत्, आजताम्, आजन्। आजः, आजतम्,—त। आजम्, आजाव, आजाम।

लिट्—विवाय, विव्यतुः, विव्युः। विवयिथ, विवेथ, आजिथ; विव्यथुः, विव्य। विवाय, विवय; विव्यिव, आजिव, विव्यिम, आजिम।*

लुट्—अजिता, वेता; अजितारौ, वेतारौ; अजितारः, वेतार इत्यादि। लृट्—अजिष्यति, वेष्यति। आशीः—वीयात्, वीयास्ताम्, वीयासुः नित्यं वीभावः। लुङ्—आजीत्, अवैषीत्; आजिष्टाम्, अवैष्टाम्; आजिषुः, अवैषुः। आजीः, अवैषीः; आजिष्टम्, अवैष्टम्, आजिष्ट, अवैष्ट। आजिषम्, अवैषम्। आजिष्व, अवैष्व—ष्म।—ष्म इत्यादि। लृङ्—आजि

* 'अजेर्व्यघञपोः।' घञपोरन्यस्मिन् आर्द्धधातुके विषयभूते वीभाव इति। अजेरुदात्तत्त्व इड्र्थत्वात् वलादावार्द्धधातुकेऽयमादेशो विकल्प इति पक्षे व्यादेशाभावात् आजिथ इत्यपि। एवं वमयोरपि आजिव आजिम इति।

ष्यत्, अवेष्यत् । सन्—अजिजिषति, विवीषति । यङ्—वेवीयते । † णिच्—वाययति,—ते । लुङ्—अवीवयत्,—त ।

कर्म्मणि लट्—वीयते इत्यादि । लुङ्-त—अवायि । लृट्—वायिष्यते, वेष्यते । लृङ्—अवायिष्यत, अवेष्यत । लुट्—वेता, वायिता । आशीः—वायिषीष्ट, वेषीष्टेत्यादि । चिण्वदिटो विकल्पात् द्वैविध्यम् । व्यादेशाभावपक्षे—लृट्—अजिष्यते । लृङ्—आजिष्यत । लुङ्—आताम्, आजिषाताम्, अन्त—आजिषत । आशीः—अजिषीष्ट । लुट्—अजितेत्यादि त्रैरूप्यम् । लिटि ध्वमि चिण्वत् ( इड्वत् ) पक्षे व्रद्ध्रायादेशयोः 'विभाषेट' इति मूर्द्धन्यो विकल्पेन । अन्यदा 'लिणः षीध्वमिति नित्यो व्यादेशाभावश्चेति चातूरूप्य'—वायिषीध्वम्, वायिषीढ्वम् वेषीढ्वम्, अजिषीध्वमिति ।

लुङि तु 'धि चे' ति सिचो लोपे चिण्वदिटि [ इड्वदिटि ] व्यादेशस्य व्रद्ध्रायोर्मूर्द्धन्यस्य पूर्व्ववद्विकल्पः । अचिण्वत्पक्षे तु नित्यः, आदेशाभावे च सिज्लोपे इदमङ्गमिणन्तमिति नित्यो मूर्द्धन्यः—अवायिध्वम्, अवायिढ्वम्, अवेढ्वम्, आजिढ्वम्, इति चातूरूप्यम् । येषान्तु दर्शनम् इणः सिध्वमित्यत्रेण्ग्रहणेनेटो न ग्रहणमिति, तेषां मूर्द्धन्याभावात् लिङ्वदेव रूपाणि ।

कर्म्मकर्त्तरि लुङि 'त'विभक्तौ 'अचः कर्म्मकर्त्तरि' इति चिणो विकल्पनात्पक्षे सिचि चिण्वदिटि अवायि, अवेष्ट, अवायिष्ट इति त्रैरूप्यम् । अन्यत् सर्वं कर्मवत् । सम्भवति च क्षेपणार्थस्य कर्म्मकर्त्ता ।

क्त, ल्युट् ( युट् )—प्रवयणं, प्रवयनं, प्राजनम् । समजः, पशूनां सङ्घ इत्यर्थः । उदजः, पशूनां प्रेरणमित्यर्थः । "समुदो-

---

† अस्य यङ्लुकप्रयोगो नास्ति, यतो लुका यङार्द्धधातुकस्य विषयत्वापहारात् नार्द्धधातुकाभिव्यक्तिरिति ।

रजः पशुषु" इत्यप्। अपशुविषये—समाजः, उदाजः इति घञेव। स्त्रियां भावे क्यप्—समज्या। यत्—प्रवेयम्। खश्—वातमजाः, मृगाः। अजिरम्, 'अजिरशिशिरे'ति निपातितम्। वेणुः, 'अजिवरीभ्यो नि'दिति णुः। वेणुकीयम्, चातुर्थिकश्छः, कुक् च। आजिः, "अन्यतिभ्याच्च" इति इण्। अजा, अच्, अजादिपाठात् टाप्। अजानां समूहः—आजिकम्, "गोत्रोक्षोष्ट्रोरभ्र"त्यादिना वुञ्। प्रवायकः। प्रवयणीयम्। संवीतिः। व्याजः। प्राजितः, प्रवीतः। अजित्वा, वीत्वा।

१२५। तेज, पालने। ( To protect )

तेज्, सेट्, सक, प। तेजति। तितेज। तेजिता। अतेजीत्। तेजः, नित्यासुन्नन्तम्। क्षमार्थोऽप्ये। तिज् निशाने इति चुरादौ।

१२६। खज, मन्थे। ( To churn )

खज्, सेट्, सक, प। खजति। चखाज। खजिता। अखजीत्, अखाजीत्। खजाकः, 'खजेराकः' इत्याकः। अत्र केचित् 'कज मदे' इत्यपि पठन्ति। 'विलोडने' इत्यपरे।

१२७। खजि, गतिवैकल्ये। ( To limp )

खञ्ज्, (इ) सेट्, अक, प। खञ्जति। चखञ्ज। खञ्जिता इत्यादि। अखञ्जीत्। इदित्त्वान्नलोपाभावः। खोटन इति केचित्। क्त—खञ्जः। खञ्जनः।

१२८। एजृ, कम्पने। ( To shake )

एज् (ऋ) सेट्, अक, प। एजति। लङ्—ऐजत्। लिट्—एजाञ्चकार। लुङ्—ऐजीत्। लुट्—एजिता इत्यादि। णिच्—एजयति। ऐजिजत्। मा भवानेजिजत्। सन्—

एजिजिषति। खश्—जनमेजयः, अङ्गमेजयः। प्र+एजते = प्रेजते। एजतिर्दीप्तौ गतः।

१३९। टु ओ स्फुर्जा, वज्रनिर्घोषे। ( To thunder )

स्फुर्ज् (टु, ओ, आ) सेट्, अक, प। स्फूर्जति। पुस्फूर्ज। अस्फूर्जीत्। स्फूर्जिता। पुस्फूर्जिषति। पोस्फूर्ज्यते। पोस्फूर्जीति, पोस्फूर्त्ति। अपोस्फर्क्। स्फूर्जयति। अपुस्फूर्जत्। टूनुबन्धात् अथुचि—स्फूर्जथुः। ओदनुबन्धो निष्ठानत्वार्थः—स्फूर्गृणवान्। आदनुबन्ध इड्विकल्पार्थः—स्फूर्गृणमनेन, स्फूर्जितमनेनेत्यादि। 'वज्रनिष्पेषे' इति दुर्गः पठति। वज्रनिष्पेषो वज्रसंघट्टजध्वनिरिति रमानाथः। धातुरयं ह्रस्वमध्यः। *

१४०। चि, चये। ( To decay )

चि, अनिट्, अक, † प। चयति। चयतु। चयेत्। अचयत्। चिचाय, चिचियतुः, चिचियुः। चिचेथ, चिचयिथ। चिचियिव। चेता। चेष्यति। चीयात्। अचैषीत्, अचैष्टाम्, अचैषुः। अचैषीः, अचैष्टम्, अचैष्ट। अचैषम्, अचैष्व,—ष्म। भावादौ—चीयत इत्यादि वीवत्। सन्—चिचीषति। यङ्—चेचीयते। चेचयीति, चेचेति। णिच्—चाययति। अचिचयत्। क्त—चीणः, चीणवान्। चीणमिदम्।

अस्य ध्रौव्यार्थत्वात् अधिकरणे क्तः। कर्त्तरि षष्ठी। भावकर्म्मणोः—चितमनेन, चितोऽयमनेन। चीणः, तपस्वी। चितः,

* अस्य दीर्घोपदेशेनोपधायाश्चेति, दीर्घस्यानित्यत्वज्ञापनात् स्फुर्च्छति, स्फुर्च्छति, स्फुर्च्छतीत्यपि भवतीति केचिदिति मैत्रेयप्रतिपादिते।

† अन्तर्भावितण्यर्थोऽयं सकर्म्मकः, 'न चीयत इत्यचर'मिति भाष्ये दर्शनात्।

चीणः ; जाम्नः । चितायुः, चीणायुः । "वा क्रोशदैन्ययोः" इति चियो निष्ठायां वा दीर्घः । पूर्ववद्दीर्घपक्षे नत्वम् । चेतुं शक्यः—चय्यः । प्रचीय । चि निवासगत्योरिति तुदादौ । चिष् हिंसायामिति क्र्यादौ । चिणु हिंसायामिति तनादौ ।

१४१ । चीज, अव्यक्ते शब्दे । ( To speak inarticulately )

'चीज कुज गुजि अव्यक्ते शब्दे' इति दुर्गः पठति । चीज, सेट्, अक, प । चीजति । चिचीज । चीजिता । चिचीजिषति । चेचीज्यते । चेचीक्ति, चेचीजिति । चीजयति । अचिचिजत् ।

१४२ । लज, लजि, भर्त्सने (भर्जने) ( To menace, to fry )

'लज लाजि लाज लजि तर्ज्ज भर्त्सने इति दुर्गः पठति । लज्, लञ्ज ( इ ) सेट्, सक, प । लजति । अलजीत्, अलाजीत् । लजिता । ललाज, लेजतुः । लाजयति, अलीलजत् । लञ्ज्—लञ्जति । ललञ्ज । लञ्जिता । अलञ्जीत् ।

१४३ । लाज, लाजि, भर्त्सने च । ( To blame, to fry )

लाज्, लाञ्ज् ( इ ) सेट्, सक, प । चकारो भिन्नक्रमे । एतावपि भर्त्सन इति‌ मैत्रेयः । भर्त्सनग्रहणं भर्ज्जनस्याप्युपलक्षणमिति पुरुषकारः । लाजति । ललाज, ललाजतुः । लाजिता । अलाजीत् । लिलाजिषति । लालाज्यते । लालाक्ति, लालाजीति । लाजयति,—ते । अलीलजत्,—त ।

लाञ्ज्—लाञ्जति । ललाञ्ज । लाञ्जिता । लिलाञ्जिषति । लालाञ्ज्यते । लालाङ्क्ति, लालाञ्जीति । लाञ्जयति । अललाञ्जत् । घञ्—लाजः । ओ लजी ओ लस्जी व्रीडन इति तुदादौ । लज प्रकाशन इति कथादौ । लजिति दण्डके भाषार्थः ।

१४४ । जज, जजि, युद्धे । ( To fight )

जज्, जञ्ज् ( इ ) सेट्, अक, प । जजति । लजिवत् ।

जञ्जति । जङ्गलम्—बाहुलकात् कलप्रत्ययः कुत्वञ्च । कुरुजङ्गलेषु भवं कौरुजाङ्गलम्, कौरुजङ्गलम् । 'तत्र भवः' इत्यण् । 'जङ्गलधेनुवलजान्तस्य विभाषितमुत्तरम्' इति पूर्वपदस्य नित्या वृद्धिः, उत्तरपदस्य तु वा ।

१४५ । तुज, हिंसायाम् । ( To kill )

तुज्, सेट्, सक, प । तोजति । तुतोज । तोजिता । तुतोजिषति, तुतुजिषति । तुजित्वा, तोजित्वा । तोतुज्यते । तोतोक्ति, तोतुजीति । तोजयति,—ते । अतूतुजत्,—त भावादिकर्म्मणोस्तु तुजितमनेन, तोजितमनेनेत्यादि ।

१४६ । तुजि, पालने । ( To protect )

'तुजि बलने च' इति कातन्त्रम् । केचित् 'प्रापणे हिंसायां बले च' इत्यपि पठन्ति ।

तुञ्ज् ( इ ) सेट्, सक, प । तुञ्जति । तुतुञ्ज । तुञ्जिता । तुतुञ्जिषति । तोतुञ्ज्यते । तोतुङ्क्ति, तोतुञ्जीति । अतोतुन् । तुञ्जयति,—ते । अतुतुञ्जत्,—त । तुङ्गः । वार्त्तिकमते न्यङ्क्वादित्वात् कुत्वम् । उत्—उत्तुङ्गः । भाषार्थोऽयं युजादौ ।

१४७ । गज, गजि, गृज, गृजि, मुज, मुजि, शब्दार्थाः ।

( To sound )

'गज गृजि मृज मुजि गर्ज, शब्दार्थाः' इति दुर्गः पठति । सर्वे सेटः, अकर्म्मकाः, परस्मैपदिनश्च । गज्—गजति । गञ्ज् ( इ )—गञ्जति इत्यादि लजलजिवत् । गज्, अच्—गजः । गञ्ज्, आ—गञ्जा । 'गञ्जा तु मदिरागृहम्' इत्यमरः । गृज्—गर्जति । जगर्ज । अगर्जीत् । गर्जिता इत्यादि । सन्—जिगर्जिषति । यङ्—जरीगृज्यते । यङ्लुक्—जरीगृजीति

इत्यादि। णिच्—गर्जयति। अजगर्जत्, अजीगृजत्। गृञ्ज्—गृञ्जति। जगृञ्ज। अगृञ्जीत्। गृञ्जिता। जिगृञ्जिषति। जरीगृञ्ज्यते। जरिगृञ्जीति इत्यादि। मुज—मोजति। मुञ्ज—मुञ्जति, तुजिवत्। अच्—मुञ्जः। मृजमृजीति स्वामिचन्द्रौ। गज मदने च। अयं चुरादौ शब्दार्थः। गज शब्द इत्यन्ये।

१४८। वज, व्रज, गतौ। ( To go)

वज, व्रज, सेट्, सक, प। वजति। ववाज, ववजतुः। वजिता इत्यादि। लुङ्—अवजीत्, अवाजीत्। घञ्—वाजः। ण्यत्—वाज्यम्। 'अजिव्रज्योश्च' इति चकारेण कुत्वनिषेधः। व्रज—व्रजति। इत्यादि। लुङ्—अव्राजीत्, अव्राजिष्टाम्, अव्राजिषुः। लिट्—वव्राज, वव्रजतुः, वव्रजुः। व्रजिता। व्रज्यात्। वाव्रज्यते। वाव्रजीति, वाव्रक्ति। व्रज्यते। अव्राजि। सन्—विव्रजिषति। णिच्—व्राजयति। अविव्रजत्। क्त्वा—व्रजित्वा। तुम्—व्रजितुम्। क्वसु—विव्रजिवान्। क्यप्—व्रज्या। अच्—व्रजः। 'गोचरसञ्चर' इत्यादिना अधिकरणे घञन्तो निपातितः'। क्विप्—परिव्राट्। 'परौ व्रजेः षः पदान्ते' इति क्विपि षत्वं दीर्घश्च। एतौ चुरादौ च। शुचादय उदात्ता उदात्तेतः च्विवर्जम्।

## अथ आत्मनेपदिनष्टवर्गीयान्ताः।

१४९। अट्ट, [ अतृ, अड्ड, अदृ ] अतिक्रमहिंसयोः। ( To transgress, to kill )

इतः षाड्यन्ता उदात्ता अनुदात्तेतः। टोपधोऽयं स्मर्यत इति मैत्रेयः। तोपधोऽयमिति 'ष्टुना ष्टुः' इत्यत्र न्यासवृत्तिप्रदीपकारादयः। स्वाम्यपि क्विपि 'अत्' इवि तकारश्रवणार्थं

तोपधत्वमुक्त्वा * दोपधत्वमप्याह । मैत्रेयस्तु स्वमते दोपधत्वमुक्त्वा तोपधत्वं मतान्तर आह ।

अट्ट, (अतट्) सेट्, सक, आ । अट्टते । आनट्टे । अट्टताम् । आट्टत । अट्टेत । आशिषि—अट्टिषीष्ट । मा भवानट्टिष्ट । आट्टिष्यत् । ष्टुत्वं सर्वत्र, डोपधत्वे चर्त्वे अटिट्टिषते । अट्टयति । आटिट्टत् । दोषधत्वे तु—आट्टिटत् । अट्टा । 'गुरोश्च' इत्यकारः । अट्टां करोति—अट्टायते 'अटाट्ये'त्यादिना क्यप् । क्विप्—अट् । [ अत् ] अयमनादरे चुरादिः ।

१५० । वेष्ट, वेष्टने । ( To surround )

वेष्ट, सेट्, सक, आ । वेष्टते । विवेष्टे । वेष्टिता । अवेष्टिष्ट, अवेष्टिषाताम्, अवेष्टिषत । विवेष्टिषते । वेवेष्ट्यते । वेवेष्टीति, वेवेष्टि । वेवेष्टः । लङ्—अवेवेट् । वेष्टयति । अविवेष्टत्, अववेष्टत् । कर्म्मादौ—वेष्ट्यत इत्यादि । क्त—वेष्टितः । वेष्टमानः । वेष्टित्वा ।

१५१ । चेष्ट, चेष्टायाम् ( To try )

चेष्ट, सेट् अक, आ । चेष्टिवत् । अ—चेष्टा ।

---

* तोपधत्वे 'पूर्वत्रासिद्धीयमद्विर्वचन' इति ष्टुत्वस्यासिद्धत्वाभावाद्द्विटकारस्य सनन्तस्य द्विर्वचने हलादिशेषे रूपम् । यदापि प्राणिनिषतीत्यादौ णत्वे कृते तस्यासिद्धत्वाभावात् सनो द्विर्वचनेनैवेष्टसिद्धौ 'उभौ साभ्यासस्य' इति पुनर्णत्वविधानात् 'पूर्वत्रासिद्धीयमद्विर्वचन' इत्यस्यानित्यत्वज्ञापनात् ष्टुत्वस्यासिद्धत्वात् तकारादेर्द्विर्वचनं, तदापि 'शपूर्वाः खय' इति टकारस्यैव शेषादिदमेव रूपम् । एवञ्च पुरुषकारादिषु अतिट्टिषतीति तकारस्य शेषेणोदाहरणप्रदर्शनं चिन्त्यम् । दोपधत्वे तु 'पूर्वत्रासिद्धीयमद्विर्वचन' इत्यस्य द्विर्वचनविषयत्वा'न्नन्द्रा' इति द्विर्वचननिषेधे प्रवृत्त्यभावात् ष्टुत्वस्यासिद्धत्वात् दकारवर्जं द्विरुच्यते, दकारस्य पुनष्टुत्वे चर्त्वे च अट्टिटिषत इति भाव्यम् ।

१५२। गोष्ट, लोष्ट, संघाते। ( To assemble )

गोष्ट्, लोष्ट्, सेट्, अक, आ। 'गोष्ट, लोष्ट, हुड़ि, पिढ़ि, संघाते' इति दुर्गः पठति। गोष्टते। जुगोष्टे। गोष्टिता। अगोष्टिष्ट। लोष्टते। लुलोष्टे। अलोष्टिष्ट। लोष्टिता इत्यादि वेष्टिवत्।

१५३। घट्ट, चलने। ( To move )

घट्ट्, सेट्, अक, आ। घट्टते। जघट्टे। घट्टिता इत्यादि। घञ्—घट्टः। "घट्टं तरन्ति न शठा महदाख्यया किम्।" अयं चुरादावपि।

१५४। स्फुट, विकसने। ( To blossom, to burst )

स्फुट्, सेट्, अक, आ। स्फोटते। पुस्फुटे। स्फोटिष्यते। स्फोटिता। अस्फोटिष्ट। स्फोटिषीष्ट। स्फुट्यते इत्यादि। सन्—पुस्फुटिषते, पुस्फोटिषते। यङ्—पोस्फुट्यते पोस्फुटीति, पोस्फोट्टि। अपस्फोट्। स्फोटयति,—ते। अपुस्फुटत्,—त। क्त्—स्फुटित्वा, स्फोटित्वा। अयं तुदादावपि। विशरणार्थो ऽग्रे भेदनार्थश्चुरादौ।

१५५। अटि, गतौ। ( To go )

अण्ट् (इ) सेट्, सक, आ। अण्टते। आनण्टे। आनण्टिषे। अण्टिता। अण्टिटिषते। अण्टयति। आण्टिटत् इत्यादि।

१५६। वठि, एकचर्य्यायाम्। ( To go alone )

एकचर्य्या सहायगमनम्। वण्ठ् ( इ ) सेट्, अक, आ। वण्ठते। ववण्ठे। अवण्ठिष्ट। विवण्ठिषते। वावण्ठीति, वावण्टि, ण्टुत्वम्, चर्त्वम्। लोट्-हि—वावण्टि। लङ्—अवावन्। वण्ठयति। अववण्ठत्। अयमनिदित् स्थौल्यार्थः।

१५७। मठि, कठि, शोके। ( To be anxious )

मण्ठ् ( इ ), कण्ठ् ( इ ) सेट्, सक, आ। इह शोक आध्यानम्। मण्ठते। ममण्ठे। अमण्ठिष्ट। एवं कण्ठते इत्यादि। घञ्—कण्ठः। अ—कण्ठा। उत्कण्ठा। मातुर्मण्ठते उत्कण्ठत इत्यर्थः। 'अधीगर्थे'ति कर्मणि शेषे षष्ठी। मठ कठ मदनिवासयोः, कठ कृच्छ्रजीवन इत्यग्रे परस्मैपदिष्वनिदितौ। कठि शोक इतीदित् चुरादौ।

१५८। मुठि, पालने। ( To protect )

मुण्ठ् ( इ ), सेट्, सक, आ। मुण्ठते। मुमुण्ठे। अमुण्ठिष्ट इत्यादि।

१५९। हेठ, विबाधायाम्। (To be wicked, to annoy)

अमुं परस्मैपदिष्वपि केचित् पठन्ति। विबाधा शाठ्यम्। हेठ्, सेट्, अक, आ। हेठते। जिहेठे। अहेठिष्ट। हेठयति। अजीहिठत्, अजिहेठत्। *

१६०। एठ च। ( To annoy )

चकारेण पूर्वोक्तोऽर्थः परामृश्यते। विपूर्वोऽयमिति स्वामिकाश्यपौ, मैत्रेयादयस्तु केवलमेवोदाजह्रुः। एठ्, सेट्, अक, आ। एठते। एठाञ्चक्रे। एठिता। ऐठिष्ट। एटिठिषते। एठयति, —ते। ऐटिठत्, —त। मा भवानिटिठत्। पूर्वसुपधाह्रस्वः।

---

* 'काण्यादीनां वा' इति णौ चङ्युपधाया ह्रस्वविकल्पः। "काणिराणि स्तथा श्राणि भाणि हेठि लुंठि रपी'ति ण्यन्तस्य भाष्यकारेण काण्यादित्वमुक्तम्। अत्र कारिका—"बोधिन्यासकृता लोठिर्लोपिर्वाणिश्च छायिना। सहिताः पूर्वमुक्ताश्च काण्यादौ परिकीर्त्तिताः॥ दुर्गश्चाणिञ्च काण्यादिं मन्यते शाकटायनः। लोटिं तदेव मैत्रेयो धातवो द्वादश स्मृताः॥"

१६१। हिडि़, गत्यनादरयोः। (To go, to disregard)

हिण्ड् (इ) सेट्, आ, सक। हिण्डते। जिहिण्डे। हिण्डिता। अहिण्डिष्ट। जिहिण्डिषते। जेहिण्ड्यते जेहिण्डीति, जेहिण्डि। अजेहिन्। हिण्डयति। अजिहिण्डत्। क्तत्—हिण्डीरः।

१६२। हुडि़, सङ्घाते। (To collect)

हुण्ड् (इ) सेट्, अक, आ। हुण्डते। जुहुण्डे। हुण्डिता। अहुण्डिष्ट।

१६३। कुडि़, दाहे। (To burn)

कुण्ड् (इ) सेट्, सक, आ। कुण्डते। चुकुण्डे। अकुण्डिष्ट। अच्—कुण्डः, कुण्डम्। स्त्रियां—कुण्डी। 'जानपद-कुण्ड—' इत्यादि सूत्रेण अमत्रे ङीष्, अन्यत्र कुण्डा। वैकल्यार्थोऽत्रैव पठिष्यते, रक्षणार्थश्चुरादौ।

१६४। वडि़, विभाजने। (To divide)

वण्ड् (इ) सेट्, सक, आ। दुर्गस्तु 'वडि़ मडि़ वेष्टने' इति पठति। वण्डते। ववण्डे; ववण्डिषे। वण्डिता। अवण्डिष्ट। विवण्डिषते। वण्डयति—ते। अववण्डत्,—त। वण्डित्वा। वण्डितः। वण्डितुम्। वावण्ड्यते इत्यादि।

१६५। मडि़, च। (To divide)

अस्यार्थं उक्तः। स्वामी—वडि़ विभाजने, मडि़ चेति पृथक् सूत्रणादर्थान्तरेऽपि। नन्दी तु—वडि़ विभाजने, मडि़ वेष्टने इति भङ्क्त्वा पठतीति।

मण्ड्, (इ), सेट्, सक, आ। मण्डते। ममण्डे। ममण्डिषे। मण्डिता। अमण्डिष्यत। अमण्डिष्ट। मण्डयति—ते। अममण्डत्,—त। मिमण्डिषते। मण्ड्यते। अमण्डि।

मण्डितः । मण्डित्वा । मण्डितुम् । मण्डूकः, 'शरिमण्डिभ्यामूकण्' इत्यूकण् । कूपमण्डूकः इत्यादि * । मडि भूषायामित्यग्रे, णौ हर्षे च ।

१६६ । भडि, परिभाषणे । ( To chide )

परिहास इति वोपदेवो दुर्गश्च । परितो भाषणं परिभाषणमिति स्वाम्यादयः । "यः सनिन्द उपालम्भस्तत्र स्यात् परिभाषणम् ।" इति निघण्टुः ।

भण्ड् ( इ ) सेट्, सक, आ । भण्डते इत्यादि । अच्—भण्डः । इलच्—भण्डिलः । कल्याणार्थश्चुरादौ ।

१६७ । पिडि, संघाते । ( To heap )

पिण्ड् ( इ ) सेट्, अक, आ । पिण्डते इत्यादि । अच्—पिण्डः । इलच्—पिण्डिलः चुरादावप्ययम् ।

१६८ । मुडि, मार्ज्जने । ( To purify )

मुण्ड् ( इ ) सेट्, सक, आ । शुद्धिन्यग्भावौ मार्ज्जनम् । मुण्डते इत्यादि । खण्डनार्थः परस्मैपदिषु । क्त—मुण्डनम् ; मुण्डितः । मुण्डः, मुण्डयित्वा । "मुण्डयितारः आविष्ठायना वधूमूढ़ाम् ।"

१६९ । तुडि, तोड़ने । ( To tear )

तुण्ड् ( इ ) सेट्, सक, आ । तोड़नं, दारणं हिंसनञ्च । तुण्डते इत्यादि । घञ्—तुण्डः । तुण्डिः—'इनि'-तीनृप्रत्ययो नाभिवृद्धौ, सास्यास्तीति तुण्डिलः—'तुण्डादिभ्य इलचे'ति

---

* 'पात्रे समितादयश्च' इति चेपे सप्तमीतत्पुरुषः । चेपश्च कूपे मण्डूक इवेत्यदृष्टविस्तारताद्यवगमात् । 'क्रुधमण्डार्थेभ्यश्च' इति युज्विधौ भूषणार्थं एव वृत्तौ उदाहृतः, तस्यानुदात्तेत इति युचः सिद्धत्वाच्चास्य युज् नेतीति ।

वृद्धौ वृत्तात् स्वाङ्गादस्मादिलच्। तुण्डिल एव तुण्डिभः, 'तुण्डिवलिवटेर्भः' इति मत्वर्थीयो भः। तुण्डिलो बहुभाषी। 'सलिकल्यनी'त्यादिना इलच्। अयमनिदित् परस्मैपदिषु।

१७०। हुडि़, वरणे। ( To select )

'संघाते' इति दुर्गः। वरणं स्वीकारः। हरणमिति मैत्रेयः। हुण्ड् ( इ ) सेट्, सक, आ। हुण्डते। अहुण्डिष्ट। जुहुण्डे। हुण्डिता इत्यादि। स्फुडि़ विकसन इत्येके पठन्ति।

१७०। (क)। चडि़, कोपे। ( To be angry )

चण्ड् ( इ ) सेट्, अक, आ। चण्डते इत्यादि। चण्डनः–'क्रुधमण्डे'ति वा 'अनुदात्तेत' इति वा युच्। चण्डालः–'चण्डपतिभ्यामालच्'इति आलच्। चण्डालस्यापत्यं—चाण्डालकिः। अत इञि 'सुधातुरकञ् च' 'व्यासवरुडनिषादचण्डालविम्बाना'-मित्यकङादेशोऽन्त्यस्य। चाण्डाली—शार्ङ्गरवादित्वात् ङीष्। इन्—चण्डिः। पक्षे ङीष्—चण्डी। अयं चुरादौ च।

१७१। शडि़, रुजायां संघाते च। ( To hurt, to collect)

तालव्योष्मादिः। शण्ड् ( इ ) सेट्, अक, आ। शण्डते इत्यादि। शण्डः, असुरपुरोहितः। शण्डिलः तीर्थम्, ऋषिश्च। 'सलो'त्यादिना इलच्।

१७२। तडि़, ताड़ने। ( To beat )

तण्ड् ( इ ) सेट्, सक, आ। तण्डते इत्यादि। अच्—तण्डः। वतण्डः—वष्टीत्यादिनाकारलोपः। वतण्डस्य गोत्रापत्यं—वातण्ड्यः, गर्गादित्वात् यञ्। वातण्डः—शिवादित्वात् अण्। स्त्रीलिङ्गे—वतण्डी, वातण्ड्यायनी, वातण्डी। अङ्—वितण्डा। तण्डुलः—'कुठितनोत्यादिना' उलच्।

१७३। पडि़, गतौ। ( To go )

पण्ड् ( इ ) सेट्, सक, आ। पण्डते। अ—पण्डा। इतर्

—पण्डितः। गोष्ठे पण्डितः 'पात्रे समितादयश्च' इति क्षेपे सप्तमीतत्पुरुषः, अलुक् च। गोष्ठ एव पण्डितो न सदसीति क्षेपावगतिः। पण्डः—अच्। पणतेर्वा 'अमन्तात् डः' इति डः। तस्यापत्यं—पाण्डारः, आरक्। नाशार्थश्चुरादौ।

१७४। कडि, मदे। ( To be pleased )

मदो हर्षः। कण्ड् (इ) सेट्, अक, आ। कण्डते इत्यादि। भेदने चुरादिः। अनिदिदित्येव।

१७५। खड़ि, मन्थे। ( To break in pieces )

खुड़ीत्यप्येके पठन्ति। खण्ड् (इ) सेट्, सक, आ। खण्डते। चखण्डे। अखण्डिष्ट। खण्डः। खड़ि भेदने चुरादिः।

१७६। हेड़ृ, होड़ृ, अनादरे। ( To disrgard )

अनादरः अवज्ञा। हेड् (ऋट) होड् (ऋट) सक, सेट्, आ। हेडते। हेडिता।—जिहेडे। अहेडिष्ट। जिहेडिषते। जेहिड्यते। जेहेडीति, जेहेड्डि। हेड़यति। (ऋट) अजिहेडत्। एवं होड़ते। जुहोडे। अहोडिष्ट इत्यादि। अच्—होड़ः। होड़ इवाचरति—होड़ते, होड़ायते। हेडृ वेष्टने घटादौ। होडृ गतावित्यन्ये।

१७७। बाडृ, आप्लाव्ये। ( To sink )

वयादिः। आप्लवनमाप्लावः। उन्मज्जनमित्येके। तस्मात् यप्रत्यये आप्लाव्य' स्नानमिति गोविन्दभट्टः। अनेनैव चक्र[वाल]-वाड़पदं व्युत्पादितममरटीकाकारेण।

बाड् (ऋट) सेट्, आ, सक। बाड़ते। बबाडे। अबाडिष्ट। बाड़यति,—ते। अबबाड़त्,—त इत्यादि।

१७८। द्राडृ, ध्राडृ, विशरणे। ( To divide )

विशरणं विभेदः, भट्टमल्लेन तालव्यमध्यपठितत्वात्।

द्राड्, ध्राड् (ऋ) सेट्, सक, आ। द्राडते। ध्राडते।

१७९। शाड्, श्लाघायाम्। (To praise)

तालव्यादिरयम्। शाड् (ऋ) सक, सेट्, आ। शाडते इत्यादि। लडयोरैक्यात् शालत इति काश्यपः। अतएव मैत्रेयो रूपशालो शालेत्युदाहृतं 'लक्ष'इत्यत्र भाष्यकैयटयोः शालेति श्यतेर्लप्रत्यये व्युत्पादनीयम्। शालीनः, अधृष्टः 'शालीनकौपीने अधृष्टाकार्य्ययोः' इति खञि निपातितः। गवां शाला—गोशालं, गोशाला; सेनाद्यन्तस्य तत्पुरुषस्य वा नपुंसकत्वम्। गोशाले गोशालायां वा जातः—गोशालः अण्, तस्य लुक्। एवं खरशालः। वत्सशालायां जातः—वत्सशालः, वात्सशालो वा। 'वत्सशाले'ति अणो वा लुक्। शालिः—'इनि'तीन्। शालीनां भवनं क्षेत्रं—शालेयम्। 'व्रीहिशाल्यो-र्ढगि'ति ढक्। अट्टादय उदात्ता अनुदात्तेतः।

## परस्मैपदिनः।

१८०। शौटृ, गर्वे। (To be proud)

इतो गद्यन्ता उदात्ता उदात्तेतः। शौट् (ऋ) सेट्, अक, प। शौटति। शुशौट, शुशौटिथ। शौटिता। शौटिष्यति। आशिषि—शौट्यात्। अशौटीत्। अशौटिष्यत्। शुशौटिषति। शोशौट्यते। शोशौट्टि, शोशौटीति। अभ्यासस्य ह्रस्वः, गुणश्च। शौटयति,—ते। अशुशौटत्,—त। शौटीरः। 'कृशृपृकटिपटि-शौटिभ्य ईरन्' इतीरन्।

१८१। यौटृ, बन्धे। (To bind)

यौट् (ऋ) सक, सेट्, प। यौटति इत्यादि।

१८२। म्रेटृ, म्रेडृ [ म्लेडृ ], उन्मादे। (To be mad)

प्रथमः टान्तः, द्वितीयः डान्तः। तथाच—'तस्य परमा-

क्ष्वे ड़ित'मिति दृश्यते, अत्र न्यासे आम्रेड्यते आधिक्ये नोच्यत- इति । डान्तमध्ये पाठस्तु तदर्थसाम्यान्नाथतिवत् ।

क्ष्वे ट् (ऋ) क्ष्वे ड् [ क्ष्वेड ] (ऋ) अक, सेट् प । क्ष्वे टति । क्ष्वे डति [क्ष्वेडति] इत्यादि ।

१८३ । कटे, वर्षावरणयोः । ( To rain, to cover )

वर्षश्च आवरणञ्च तयोः । अयमनेदित्यः । कट् (ए) सक, सेट, प । कटति । चकाट, चकटतुः । चकटिथ । कटिता । अकटीत् । कट्यात् । काटयति,—ते । अचीकटत्—त । चिकटिषति । कटः—पचाद्यच् । कटी—'कटात्तु श्रेणिवचन' इति ङीष् । निकटे वसति—नैकटिकः । 'निकटे वसतौ'ति सप्तम्यन्ताद्वसत्यर्थे ढक् ( इकण् ) । काटः अङ्गनम्,—अधिकरणे संज्ञायां घञ् । कटीरः—जघनं, कन्दुकम् । 'कशम्र्' इत्यादिना ङीरन् । कटिरं चर्म्म, अशित्रादिनेरन् । कटित्रं चर्म्म, 'अशित्रादिभ्यः' इतीत्रः । कटकम् 'क्वुन् शिल्पिसंज्ञयोः' इति क्वुन् । कटुः—बाहुलकादुप्रत्ययः । कटुरः—'छित्वर-छत्वरधीवर-पीवर-मीवर-चीवर-नीवर-गह्वर-कटुर-संयद्वराः' इति वरचि निपात्यते ।

चटे त्येक इति काश्यपः । चटति इत्यादि कटवत् । चाटुः —'सनिजनिचटिरहिभ्यः' उणिति उण् । चटुः—बाहुलकादुकारः । चटुलः—बाहुलकादुलच् । चटकः—'क्वुन् शिल्पिसंज्ञयोरि'ति क्वुन् । चटका, अजादिपाठात् टाप्, 'प्रत्ययस्थादि'तीत्वाभावश्च । चटकाया अपत्यं—चाटकैरः, 'चटकाया ऐरक्' इत्यैरक् । 'चटकाच्चे'ति वक्तव्यात् चटकस्यापत्यमपि—चाटकैरः । स्त्रियां त्वपत्ये 'स्त्रियामपत्ये लुग्वक्तव्य' इति ऐरको लुकि चटकेति भवति । भेदनार्थोऽयं चुरादौ ।

१८४ । अट, पट, गतौ । ( To wander )

'अट पट कट किट इट इ गतौ' इति दुर्गः पठति ।

अट, सेट्, सक, प। अटति। अटतु। आटत्। अटेत्। आशीः--अट्यात्। लिट्—आट, आटतुः, आटुः। आटिथ, आटथुः, आट। आट, आटिव, आटिम। लुङ्—आटीत्, आटिष्टाम्, आटिषुः। आटीः, आटिष्टम्, आटिष्ट। आटिषम्, आटिष्व, आटिष्म। मा भवानटीत्। आटयति,—ते। आटिटत्,—त। अटिटिषति। अटाट्यते।—'सूचिसूत्रे'त्यादिना यङ्। "अटाट्यमानोऽरण्यानी"मिति भट्टिः। यङ्लुक्—आट्टि, आटीति; आट्टः, आटति। आट्सि, आटीषि। आट्टः। लोट् हि—आड्ढि। आटाञ्चकार। लुङ्—आट। अटतीत्यटा, पचि टाप्, तां करोति अटायते। अटाट्येत्यादिना क्यङ्। कुत्सिता अटा—कुलटा। शकन्ध्वादित्वात् साधु।(१) अटाट्या 'परिचर्य्या-परिसर्य्या-मृगयाटाट्यानामुपसंख्यान'मिति गमनमात्रे शप्रत्यये यकि द्विर्वचनहलादिशेषाभ्यासदीर्घेषु निपात्यते। परि—पर्य्यटनम्। पर्य्यटति। 'पर्य्यटन् पृथिवीमिमाम्'। 'तीर्थानि पर्य्यटस्व' इति महाभारतम्। क्त—आटः। अटनम्। अटित्वा। अटितः। अटितवान्। ल्यप्—अट्या। अनि—अटनिः।

पट्—पटति। पटतु। अपटत्। पटेत्। पपाट, पेटतुः, पेटुः। पेटिथ। पपाट, पपट। पटिता। पटिष्यते। अपटीत्, अपाटीत्, अपाटिष्टाम्, अपटिष्टाम्, अपाटिषुः, अपटिषुः। अपाटिषम्, अपटिषम्। सन्—पिपटिषति। यङ्—पापट्यते। पापटीति, पापट्टि। णिच्—पाटयति,—ते। अपीपटत्,—त। पाटपटः—ण्यन्तात् पचाद्यचि सिद्धिः। पाट्यका सुराविशेषः।

(१) कुलटाया अपत्यं कौलटिनेयः, कौलटेयः स्त्रीभ्यो ढकि 'कुलटाया वे'ति पक्षे इनङादेशोऽन्तस्य। यदायं कुलटाशब्दः क्षुद्रार्थे वर्त्तते—क्षुद्रा दुःशीला अङ्गहीना वा तदा 'क्षुद्राभ्यो वा' इति ढ्रकि कौलटेर इति भवति। तदभावे ढकि कौलटेयः।

स्थूलादिपाठात् ण्यन्तादस्मात् कुन्। पटुः—'फलिपाटिनमिमनिजनां गुक्पटिनाकिधतश्चे'त्युप्रत्यये यथासंख्यात् पटादेशः। (२) पटाका। शलिपटिपदिभ्यो निदित्याकिन्निच्च। पटलम्। 'वृषादिभ्यश्चि'दिति कलप्रत्ययः, चिच्च। पटलिका—कन्। पटोरः। 'कॄगॄ' इत्यादिनेरन्। पाटलम्। ण्यन्तात्कलप्रत्ययो बाहुलकात्। पाटली—'जातेरस्त्रीविषयादयोपधा'दिति ङीष्।*

१८५। रट, परिभाषणे। ( To speak )

समन्तात् प्रचारः परिभाषणम्। रट्, सेट्, सक, प। रटति इत्यादि। क्त—परिराठी। 'संपृचे'त्यादिना घिनुण्। परिराटकः—वुण् ताच्छीलिकः।

१८६। लट, बाल्ये। ( To be childish )

लट, सेट्, अक, प। लटति इत्यादि। लट्वा—'अशुप्रुषि-पुटिलटिकणिखटिविशिभ्यः क्वन्'िति क्वन्। लाटयतीति लाटः—ण्यन्तादच्।

१८७। शट, रुजाविशरणगत्यवसादनेषु।

( To be sick, to divide, to go, to be weary )

रुजा च विशरणञ्च गतिश्च अवसादनञ्च तेषु। शट्, सेट्, प। शटति इत्यादि। शाटकः। घञन्तात् संज्ञायां कन्। शाटी—जातिलक्षणो ङीष्।

(२) पटोर्भावकर्मणी पटिमा। 'पृथ्वादिभ्य इमनिच् वा' इति इमनिच्। तदभावे 'इगन्ताच्च लघुपूर्वादि'त्यणि पाटवम्। गोष्ठपटुः। 'पात्रे समितादयश्चे'ति क्षेपे सप्तमीतत्पुरुषः, तत्रैव पाठादलुक्, गोष्ठ एव पटुर्न सदसीति क्षेपावगतिः।

* पाटल्याः पुष्पाणि, पाटलानि। 'बिल्वादिभ्योऽणि'ति विकारावयवयोरण्, तस्य 'पुष्पफलमूलेषु बहुल'मिति लुप्, तत्रैव बहुलग्रहणाच्च भवति, लुपि हि कोशातक्याः फलानीत्यादिवत् 'लुपि युक्त'वदित्यादिना युक्तवद्भावः स्यात्।

१८८। वट, वेष्टने। ( To cover )

वट्, सेट्, सक, प। वटति। ववाट, ववटतुः। अवटीत्, अवाटीत्। वाटयति। वटिः—'इनि' तीन्प्रत्ययः। वटिभः—'तुन्दवलिवटेर्भ' इति मत्वर्थे भः। वटकः—संज्ञायां कन्। वटका अस्यां पौर्णमास्यां वटकिनी पौर्णमासी। 'तदस्मिन्नन्नं प्रायेण संज्ञाया'मित्यत्र 'वटकेभ्य इनिर्वक्तव्य' इतीन्। घटादावयं परिभाषणार्थः। पट वट ग्रन्थ इति कथादौ। वट वेष्टन इति क्षीरस्वामी। यस्तु तत्र विभाजनार्थः तं वण्टि शाकटायनादयः पठन्ति। वटी विभाजन इति इहैवाग्रे चुरादौ चानदन्तेषु।

१८९। किट, खिट, त्रासे। ( To alarm )

किट्, खिट्, सेट्, सक, प। केटति। चिकेट, चिकिटतुः। अकेटीत्, अकेटिष्टाम्, अकेटिषुः। केटिता। चिकिटिषति, चिकेटिषति। किटित्वा, केटित्वा इत्यादि। एवं खेटति इत्यादि। खेटः—'हलश्चे'ति संज्ञायां घञ्। इह त्रासो भयोत्पादनम्। किटिर्गत्यर्थोऽग्रे भविष्यति। इहैके न पठन्ति।

१९०। शिट, षिट, अनादरे। ( To disregard )

आद्यस्तालव्यादिः, अपरो मूर्द्धन्यादिः। शिट्, षिट्, सेट्, सक, प। शेटति। सेटति इत्यादि किटिवत्। सिसेटिषतीत्यत्र 'स्तौतिण्योरेवे'ति नियमान्न षत्वम्। बोपदेवमतानुसेषिष्यति, असीषिटदित्यादौ।

१९१। जट, झट, सङ्घाते। ( To clot )

जट्, झट्, सेट्, अक, प। जटति। जजाट, जेटतुः। जटिता। अजटीत्, अजाटीत्। जटिष्यति। जिजटिषति। जाटयति। अजीजटत्। अच्—जटः, अजादित्वात् टाप्—जटा।

निन्दिता जटा अस्य—जटालो जटिलः। जटाघटाकलाः क्षेप इति सिध्मादौ पिच्छादौ पाठाल्लजिलचौ। जटीति भाष्यकार-प्रयोगात् अनदन्तत्वेऽपीनिः। झट्—झट्ति। जझाट; जझ-टतुः। झटिता इत्यादि।

१८२। भट, भृतौ। ( To hire )

भट्, सेट्, सक, प। भटति। बभाट। बभटिथ। भटि-ष्यति। अभटीत्, अभाटीत्। भाटयति, अबीभटत्। भट्टित्रं—"शूलेन संस्कृतं मांसम्" इति निघण्टुः। वेतनमित्युणादिवृत्तौ। 'अशित्रादिभ्य' इति इत्रः। घटादिः परिभाषणार्थः।

१८३। तट, उच्छ्राये। ( To be raisad )

तट्, सेट्, अक, प। तटति। तताट। अताटीत्, अतटीत्। अच्—तटस्त्रिषु। तटोऽस्या अस्तीति तटिनी। 'अत इनि-ठना'विति मत्वर्थे इनिः। तटी—गौरादिपाठात् ङीष्। तड़ आघात इति डकारान्तश्चुरादौ।

१८४। खट, काङ्क्षायाम्। ( To wish )

खट्, सेट्, सक, प। खटति। चखाट। अखाटीत्, अख-टीत्। खट्वा—'अशु'इत्यादिना क्वन्। खट्वारूढो जाल्मः। 'खट्वा क्षेप' इति क्षेपे गम्यमाने द्वितीयान्तस्य क्तान्तेन तत्पुरुषः।

१८५। णट, नृतौ। * ( To dance )

नट्, सेट्, अक, प। नटति। ननाट, नेटतुः, नेटुः। नटि-ष्यति। अनटीत्, अनाटीत्। नट्यात्। अनटिष्यत्। नट्यते। अनाटि। नृतिनतिगतिषु घटादिः। ( कौ ८२ ) नटयति,—ते। अनीनटत्,—त। निनटिषति। नानट्यते। नानटीति, नानट्टि। नट्यते। अनटि, अनाटि। "नाट्येन केन नटयिष्यति दीर्घमायुः" अनर्थः। प्रणटति इत्यादि। अच्—नटः। गौरादि-त्वात् ङीष्—नटी। नटितः। नटित्वा। नटितुम्।

१९६। पिट, शब्दसंघातयोः। ( To sound, to assemble )

पिट्, सेट, अक, प। पेटति। पिपेट। पेटिता। पिपिटिषति, पिपेटिषति। पिटित्वा, पेटित्वा। पेटयति। अपीपिटत्। 'क्वुन्'—पिटकम्। पिटाकः। 'पिटाकादय'श्चेत्याकः।

१९७। हट, दीप्तौ। ( To shine )

हट्, सेट्, अक, प। हटति। जहाट। हटिता। अहटीत्, अहाटीत् इत्यादि। हाटकम्। 'संज्ञाया'श्चेति ण्वुल्। हाट-शब्दात् कन् वा।

१९८। षट, अवयवे। ( To be a part )

सट्, अक, सेट्, प। सटति। ससाट। सेटतुः। सटिता। असटीत्, असाटीत्। सिसटिषति। साटयति। असीषटत्। सटा—अच्-टाप्।

१९९। लुट, विलोड़ने। ( To churn )

लुट्, सेट्, सक, प। लोटति, लुलोट। लोटिता। अलो-टीत्। लुलुटिषति, लुलोटिषति। लुटित्वा, लोटित्वा। लोट-यति। अलूलुटत्, अलुलोटत्। काण्वादित्वादुपधाह्रस्व-विकल्पः। लूसूले सुधाकरः। लुल विलोड़न इति लान्तोऽपि दृश्यते। 'लोलद्भुजाकारबृहत्तरङ्गम्' इति माघः। डलयो-

* अत्र पुरुषकारे णट नृत्तावित्यपि चीरस्वामी, इत्युभयथापि नर्त्तन-मेवार्थं इति। अयं णोपदेशः नृतिनन्दीति णोपदेशपर्य्युदासवाक्ये नाटीति सवृद्धिकस्य ग्रहणादस्य घटादित्वान्मित्वात् नाटिरूपाभावादग्रहणम्। इह नृतिर्नर्त्तनं यत्कारिषु नटव्यपदेशः, न तु मार्गदेशीशब्दाभ्यां प्रसिद्धं नृत्तं नृत्यञ्च, यत्कारिषु नर्त्तकव्यपदेशः, तत्र वाक्यार्थाभिनयो नाट्यः, पदार्था-भिनयस्तु नृत्यम्। अभिनयशून्यः पुनः शास्त्रोक्ताङ्गभङ्गः, स्वगात्रविक्षेपो नृत्तमिति तद्विदः। नैघण्टुकानान्तु "ताण्डवं नटनं नाट्यं लास्यं नृत्यञ्च नर्त्तनम्" इति अभेदव्यवहारो निरूढ़लक्षणया नेय इति।

रेकत्वस्मरणमिति वा प्रतिविधेयमिति। अयं दिवादावपि। भाषार्थश्चुरादौ। प्रतिघाते द्युतादौ। स्तेयार्थः परस्मैपदिषु।

२००। चिट, परप्रेष्ये। ( To send out )

चिट्, अक, सेट्, प। चेटति इत्यादि पूर्ववत्। कारणादित्वाभावो विशेषः। चेटी। इनन्तात् 'सर्वतोऽक्तिन्नर्थादित्येके' इति ङीष्।

२०१। विट, शब्दे। ( To sound )

विट, अक, सेट्, प। वेटति इत्यादि। विटः इगुपधलक्षणः कः। विटपः—'विटपविष्टपविशिपोलपा' इति निपातितः।

२०२। बिट, आक्रोशे। ( To curse )

बिट, अक, सेट्, प। बेटति इत्यादि। अत्र हिटेति केचित् पठन्ति।

२०३। इट, किट, कट, ई [कटी] गतौ। * ( To go )

इट्, सेट्, सक, प। एटति। इयेट, ईटतुः। इयेटिथ। ऐटीत्। एटिता एटिषति। एट्यति। ऐटिटत्। मा भवानिटिटत्।

किट्. सेट्, सक, प। केटति। चिकेट। केटिता। अकेटीत्। चिकेटिषति, चिकिटिषति। किटित्वा, केटित्वा। किटिः। इगुपधादितीन्, कित्वान्न गुणः।

कट्, सेट्, सक, प। कटतीत्यादि। कटित्वा। कटितः।

---

* अत्र मैत्रेयः—कटीति ह्रस्वान्तं पठन्तीति चतुर्थं धातुमुक्त्वा मतान्तरेण दीर्घान्तं पठन् ई इति चतुर्थं धातुं दीर्घमुक्त्वा फलञ्च व्यपदेशिवद्भावेन

ईदनुबन्धस्य तु क्त्वाप्रत्यये कटित्वा, कट्ट्वा। निष्ठा—कट्टः, कट्टवान्।

इ, अनिट्, सक, प। अयति, अयतः, अयन्ति। अयसि, अयथः, अयथ। अयामि, अयावः, अयामः। अयतु। आयत्, आयताम्, आयन्। आयः, आयतम्, आयत। आयम्, आयाव,

गुरुमत्त्वे इजादित्वात् अयाञ्चकारेत्याम्सिद्धिमाह। चीरस्वामी तु त्रयो धातवः। तृतीय ईदिदित्यङ्गीकृत्य कटित्वा कट्ट्वा, कट्टवानित्युदाहृत्य अन्ये कटीति धात्वन्तरं प्रश्लिष्टमाहुरिति चोक्त्वा कण्टति। कण्टकः। 'उदयति दिननाथे याति शीतांशुरस्तम्' इति चोदाजहार। सम्मतातारङ्गिण्यान्तु कटि इति चत्वारो धातव इति व्याख्यायि। धनपालशाकटायनौ त्रीनेव धातूनाहतुः। अयं पक्षः समर्थितः पुरुषकारेण। यदाह —इ ई इति ह्रस्वं दीर्घञ्च धातुं प्रस्तुत्य अन्ये पुनरपि न पठन्ति। व्यक्तञ्चैतत् धनपालशाकटायनवचसोः। अपि च शौट्ट गर्वे इत्यादिकान् कांश्चन धातून् पठित्वा अन्ते चोदात्ता इत्युच्यन्ते, तच्चास्मिन् प्रकरणे ऽयतेरपि पाठे सति तस्य अनिट्स्वरान्तो भवतीति दृश्यतामित्यनुदात्तत्वात् प्राचुर्याभिप्रायेण कथञ्चिन्नेयं स्यात्, यथाह मैत्रेयरक्षितः—उदात्तत्वमयतिवर्ज्जं भट्टग्रामन्यायेनोदात्ता इत्युच्यन्ते इति, स चायं न्यायः सुनिश्चित एवायतः पाठे शोभते, विप्रतिपन्ने पुनरुदात्तत्वोक्त्यासामञ्जस्यवशादपपाठ एव ज्यायान्। उदयतीत्यादि चैवमसाध्वेवास्त्विति हरदत्तस्यावभिप्रायोऽस्यैव पक्षोऽभिमतः। यदाह—'उपसर्गस्यायता' वित्यत्रायतिरनुदात्तेत्। कथं तर्हि 'उदयति विततोर्द्ध्वरश्मिरज्जा'विति परस्मैपदं, किमनेन वचनगवेशेनैन, यदि वा पचाद्यजन्तादुदयशब्दादाचारक्विपि लट्। केचित्तु इट किट कटीत्यत्र इकारमपि धातुं पठन्तीति। वृत्तिकारोऽपि प्रायेणैवानुकूलः। तदाह—'एतिस्तुशास्वि'त्यत्र क्यपि इत्य इत्युदाहृत्य कथमुपेयमिति ई इत्यस्यैतद्रूपमिति। यदि ह्येमौ स्याताम् प्राथम्यादन्यतरेकमुपाददीत।

आयाम: । अयेत्, अयेताम्, अयेरन् । अयेः, अयेतम्, अयेत । अयेयम्, अयेव, अयेम । इयाय, इयतुः, इयुः । इययिथ, इयेथ ; इयथुः, इय । इयाय, इयय ; इयिव, इयिम । एता, एतारौ, एतारः । एष्यति, एष्यतः, एष्यन्ति । ईयात्, ईयास्ताम्, ईयासुः । लुङ्—ऐषीत्, ऐष्टाम्, ऐषुः । ऐषीः, ऐष्टम्, ऐष्ट । ऐषम्, ऐष्व, ऐष्म । मा भवानेषीत् । ऐष्यत्, ऐष्यताम्, ऐष्यन् । कर्म्मणि—ईयते, ईयेते, ईयन्ते । लङ्—ऐयत, ऐयेताम्, ऐयन्त । स्यादौ वा चिण्वदिटि वृद्धौ—आयिष्यते, एष्यते । आयिष्यत, ऐष्यत । लुङ्—आयि, ऐषाताम्, आयिषाताम् ; ऐषत, आयिषत । ऐष्ठाः आयिष्ठाः ; ऐषाथाम्, आयिषाथाम् ; ऐढ्वम्, आयिढ्वम्, आयिध्वम् । ऐषि, आयिषि ; ऐष्वहि, आयिष्वहि । एवं मह्वि । एता, आयिता । एषीष्ट, आयिषीष्ट । एषीढ्वम्, आयिषीढ्वम्,—ध्वम् । सन्—ईषिषति । णिच्—आययति । मा भवानयियत् । क्त—इतः । इतवान् । इत्वा । उदित्य । प्रेत्य । एत्य । उत्—उदयः । “उदयति यदि भानुः पश्चिमे दिग्विभागे” उद्भटः । क्रिटेति मैत्रेयमतेन त्रासे गतः । क्रटिश्च वर्षावरणयोः ।

२०४ । मडि, भूषायाम् । ( To adorn oneself )

मण्ड् (इ), सेट्, सक, प । मण्डति । ममण्ड । मण्डिता इत्यादि । मण्डते कन्या स्वयमेव । अमण्डिष्ट कन्या स्वयमेव । मिमण्डिषति । मामण्ड्यते । मामण्डीति, मामण्टि । अमामन् । मण्डयति । अममण्डत् । मण्डित्वा । मण्डितः । मण्डितुम् । मण्डनः । मण्ड इति विभागे गतः ।

२०५ । कुडि, वैकल्ये । ( To be lame )

कुण्ड् (इ), सेट्, अक, प । कुण्डति इत्यादि । कुण्डते इति दाहे गतम् । अत्र स्वामी—कुटीति कौशिकदुर्गाविति ।

२०६। मुट, प्रमर्द्दने। (To crush)

मुट्, सेट्, सक, प। मोटति। मुमोट। मोटिता। मुमुटिषति, मुमोटिषति। मुटित्वा, मोटित्वा। * मुट प्रमर्द्दनाक्षेपयोरिति तुदादौ।

२०७। चुड़ि, अल्पीभावे। (To become less)

चुण्ड् (इ) सेट्, अक, प। चुण्डति इत्यादि। चुटेति दुर्गः।

२०८। मुड़ि, खण्डने। (To grind)

मुण्ड् (इ), सेट्, सक, प। मुण्डति, मुमुण्ड इत्यादि। घञ्—मुण्डः, तत् करोतीति मुण्डयति। 'मुण्डमिश्र'इत्यादिना णिच्। टिलोपः। यवनमुण्डः। काम्बोजमुण्डः। मयूरव्यंसकादित्वाद्विशेषणस्य परनिपातः। अत्र मैत्रेयः—पुड़ि चेत्येके। पुण्डति। पुण्डः। पुण्डरीकमिति।

२०९। रुठि, लुठि, स्तेये। † (To rob, to steal)

रुण्ठ् (इ) लुण्ठ् (इ) सेट्, सक,-प। रुण्ठति इत्यादि। लुण्ठतिवत्। लुण्ठति। अलुण्ठत्। लुलुण्ठ। लुण्ठिता। लुण्ठिष्यति। लुण्ठ्यात्। लुलुण्ठ, लुलुण्ठतुः। लुलुण्ठिथ। लुलुण्ठिव। अलुण्ठीत्, अलुण्ठिष्टाम्, अलुण्ठिषुः। लुण्ठयति,—ते। अलुलुण्ठत्,—त। लुलुण्ठिषति। लुलुण्ठ्यते। लोलुण्ठीति। लोलुण्टि। लुण्ठ्यते। अलुण्ठि। लुण्ठितः। लुण्ठित्वा। लुण्ठि-

---

* मुड़ेति धनपालः। पुड़िति पकारादिडान्त इति शाकटायनः। क्षीरस्वामी तु द्वावपीदितौ पपाठ। मैत्रेयस्तु टान्तमेव पठित्वा मुटि खण्डन इति चाग्रे पठित्वा पुड़ि चेत्येक इत्याह।

† कुठि लुठि आलस्ये च। रुठि लुठि गतौ। इति दुर्गः।

तुम्। शाकटायनस्तृतीयान्तौ पपाठ। तृतीयान्तपक्षे रुण्ठति लुण्ठति इत्यादि। लोटतीति विलोड़ने गतम्। लुठ प्रतिघात इति युजादौ। रुठ रोषण इति चुरादौ।

२१०। स्फुटिर्, विशरणे। ( To break forth )

अयं पाठो मैत्रेयादीनाम्। स्फुट् (इर्) सेट्, अक, प। स्फोटति। पुस्फोट। स्फोटिता। स्फोटिष्यति। स्फुट्यात्। अस्फोटीत्। अस्फोटिष्यत्। पुस्फुटिषति, पुस्फोटिषति। पुस्फोट्यते। पोस्फुटीति। पोस्फोट्टि। स्फुट्यते। अस्फुट्यत। अस्फोटि। स्फोटयति,—ते। अपुस्फोटत्,—त। स्फुटित्वा, स्फोटित्वा। प्रस्फुट्य। स्फट इति चन्द्रः। अस्याङ् [अण्] नास्ति—अस्फोटीदिति। स्वामिकाश्यपौ तु स्फुट स्फुटि स्फूटिरिति त्रीन् धातून् पठतः। स्फोटति। स्फुण्टति स्फूटति इत्यादि। स्फूटा—अ, टाप्। स्फुट विकशन इत्यात्मनेपदिषु टान्तः।

२११। पठ, व्यक्तायां वाचि। ( To declare, to read )

पठ्, सेट्, सक, प। पठति। पठतु। पठेत्। अपठत्। लिट्—पपाठ, पेठतुः, पेठुः। पेठिथ, पेठथुः, पेठ। पपाठ, पपठ; पेठिव, पेठिम। लुङ्—अपाठीत्, अपठीत्; अपाठिष्टाम्, अपठिष्टाम्; अपाठिषुः, अपठिषुः। अपाठीः, अपठीः; अपाठिष्टम्, अपठिष्टम्।—ष्ट—ष्ट। अपाठिषम्, अपठिषम्। अपाठिष्व, अपठिष्व।—ष्म—ष्म। सन्—पिपठिषति, अपिपठिषीत्। पिपठिषाञ्चकार—३। यङ्—पापठ्यते। पापट्ठि, पापठीति। कर्म्मणि—पठ्यते। अपठ्यत। पेठे, पेठाते, पेठिरे। पेठिषे। अपाठि, अपठिषाताम्, अपठिषत। णिच्—पाठयति। ( श्लोकं पुत्रमित्यादि )। अपीपठत्। पाठयाञ्चकार। घञ्—पाठः। पाठकः। स्त्रियां पाठिका। वेदपाठी। तृन्—पठिता

भवान् विद्यात्। पठन्। स्त्रियां—पठन्ती। पठित्वा। पठितः। पठितवान्। पठितिः। पिपठिषा। पिपठिषुः। ( णिच्-युः ) पाठना। चतुर्णां वेदानां पाठो यस्यां सा, बहुव्रीहौ संज्ञात्वात् ङीप्—चतुष्पाठी, चौपाड़ी इति भाषा।

२१२। वठ, स्थौल्ये। ( To be large )

वठ्, सेट्, अक, प। वठति। ववाठ, ववठतुः। वठिता इत्यादि पठवत्। वठि एकचर्य्यायाम् आत्मनेपदी गतः।

२१३। मठ, कठ, मदनिवासयोः। (To be proud, to dwell)

अयं पाठो मैत्रेयस्य। अन्येषां मठ मद निवासयोः। दुर्गस्य तु 'मठ निवासे, कठ कृच्छ्रजीवने' इति पाठः।

मठ्, कठ्, सेट्, अक, प। मठति, कठति इत्यादि। कठः—अच्। कठेन प्रोक्तं छन्दः—'कलापिवैशम्पायनान्तेवासिभ्यश्चे'ति वैशम्पायनान्तेवासित्वाणिनिः। तस्य 'कठचरकाल्लुगि'ति लुक्। 'छन्दोब्राह्मणानि च तद्विषयाणी'ति नियमात् 'तदधीते तद्वेदे'ति अध्येतृ-वेदितृ-प्रत्ययान्त एव प्रयोगार्हः। तस्य चाणः 'प्रोक्तात् लुगि'ति लुक्। तदेव कठेन प्रोक्तं छन्दोऽधीयमानोऽपि—कठः। कठिनम्—औणादिक इनः। कठोरम्—'कठिचकिभ्यामोरच्' इत्योरच्। मठः—घः, पुंसि देवगृहं, छात्रावासश्च।

२१४। रठ, परिभाषणे। ( To speak )

रठ्, सेट्, सक, प। रठति इत्यादि।

२१५। हठ, प्लुतिशठत्वयोः। (To leap, to be wicked)

हठ्, सेट्, अक, प। हठति। जहाठ। अहठीत्, अहाठीत्। हठ बलात्कार इति चन्द्रदुर्गौ।

२१६ । रुठ, लुठ, उठ, उपघाते । ( To fell )

रुठ्, लुठ्. उट्, सेट्, सक, प । रोठोति । लोठति इत्यादि । अत्र मैत्रेयः । उठेत्यप्येक इति । धनपालशाकटायनौ तु रुठ· लुठेत्येव पेठतुः । चीरस्वामी तु उठिं पठित्वा रुठ लुठ इत्यपि दुर्गादय इत्याह । ओठति । उवोठ, ऊठतुः । ओठिता इत्यादि । लुठेः काख्यादित्वात् अलूलुठत्, अलुलोठदिति भवति । लुठि आलेख्ये प्रतिघाते च । रुठि, लुठि गतावित्यग्रे इदितौ । लुठ स्लेषण इति तुदादौ । असौ डान्त इत्येक इति मैत्रेयः । लुठ प्रतिघात इति द्युतादौ ।

२१७ । पिठ, हिंसासंक्लेशनयोः ।
( To injure, to fill pain )

पिठ्, सेट्, सक, प । पेठति इत्यादि । पीठम्—घञ् । 'अन्येषामपि दृश्यते' इति दीर्घः । पीठी—इजन्तात् 'कृदिकारादक्तिन' इति ङीष् ।

२१८ । शठ, कैतवे च । ( To cheat etc )

चकाराद्धिंसासंक्लेशनयोश्च । स्वाम्यादयः पुनश्चकारं नैव पेठुः । शठ्, सेट्, प ( कितवे अकः अन्यत्र सक ) । शठति । अशाठीत्, अशठीत्, इत्यादि । अयं चुरादौ च ।

२१९ । शुठ, गतिप्रतिघाते । ( To go lame )

प्रतिघात इत्येव धनपालः । तथाच कुठि इत्युत्तरधातौ प्रतिहतिमात्रं प्रतीयते इत्यर्थः इति स एवाह । शुठ्, सेट्, अक, प । शोठति इत्यादि । शुठोति चीरस्वामी । आलाप इति चुरादौ । शोषणेऽग्रे ।

२२० । कुठि च । (To go lame)

कुण्ठ् (इ) सेट्, अक, प । कुण्ठति इत्यादि । घञ्, अच् वा—कुण्ठः । अ, टाप्—कुण्ठा ।

२२१ । लुठि, आलस्ये प्रतिघाते च ।
( To be idle, to resist )

लुण्ठ् (इ) सेट्, अक, प । लुण्ठति इत्यादि । लोठतीत्युपघाते गतम् ।

२२२ । शुठि, शोषणे । ( To dry )

शुण्ठ् (इ) सेट्, सक, प । शुण्ठति । शुण्ठः । शुण्ठी । शोठतीति गतः ।

२२३ । रुठि, लुठि, गतौ । ( To move )

रुण्ठ्, लुण्ठ् (इ) सेट्, सक, प । अर्थभेदात् पुनःपाठो लुण्ठेरित्याहुः । रुण्ठति । लुण्ठति इत्यादि ।

२२४ । चुदुङ, भावकरणे । ( To hint one's meaning)

दोपधोऽयम् । भावकरणमभिप्रायसूचनम्, हावकरणे इति दुर्गः । चुड्ड्, सेट्, अक, प । चुड्डति । चुचुड्ड । चुड्डिता इत्यादि । चुचुड्डिषति । चोचुड्यते । अचोचुत् । अयं दोपध इति संयोगान्तलोपे तकारस्य श्रवणम् । चुड्डयति । अचुचुड्डत् ।

२२४ (क) । अदुङ्, अभियोगे । (To attack)

अड्ड्, सेट्, अक, प । अयमपि दोपध इति क्विपि—अत् इति भवति । अड्डति, आनड्ड । अड्डिता । अड्डिडिषति । 'नन्द्रा' इति दकारवर्ज्जस्य द्विर्वचनम् । अड्डयति । आड्डिडत् ।

२२५ । कदुङ्, कार्कश्ये । ( To be hard )

कड्ड्, सेट्, अक, प । कड्डति इत्यादि । अस्यापि दोप-

धत्वाद्यङ्लुकि क्विपि च—अचीकत्, कट् इति च भवति। कच्च तत् जलं चेति—कज्जलम् ।

२२६। क्रीड़्, विहारे। ( To play )

क्रीड़् (ऋ) सेट्, अक, प। क्रीड़ति। चिक्रीड़, चिक्रीड़तुः, चिक्रीड़ुः। चिक्रीड़िथ, चिक्रीड़थुः इत्यादि। क्रीड़िता। अक्रीड़ीत्, अक्रीड़िष्टाम्, अक्रीड़िषुः। चिक्रीड़िषति। चेक्रीड्यते। चेक्रीड्टि। अचेक्रीट्। आक्रीड़ते। 'क्रीड़ोऽनुसंपरिभ्यश्च'ेति अध्वादिपूर्वाच्चकारादाङ्पूर्वकाच्च तङ् ( आत्मनेपदम् ) एवम् अनुक्रीड़ते इत्याद्युदाहार्य्यम्। समा साहचर्य्यादनोरुपसर्गस्य ग्रहणं, तेन 'तृतीयार्थं' इति यदानोः कर्म्मप्रवचनीयत्वं तदा तङ् न भवतीति माणवकमनुक्रीड़तीति, माणवकेन सह क्रीड़तीत्यर्थः। संक्रीड़न्ति शकटानीत्यत्र 'समोऽकूजन, इति वक्तव्य'मिति उक्तत्वान्न तङ्। कूजन्ति शकटानीति ह्यस्यार्थः। आक्रीड़ी। 'संपृचे'त्यादिना घिनुण्। चिक्रीड़ः। 'क्वादीनां के द्वे भवत' इति कप्रत्यये द्विर्वचनम्।

२२७। तुड़्, तोड़ने। ( To tear, to kill )

तुड़् ( ऋ ) सेट्, सक, प। तोड़नं दारणं हिंसनं चेत्युक्तम्। तोड़ति। तुतोड़। तोड़िता इत्यादि। तोड़ते इत्यात्मनेपदी गतः।

२२८। हुड़्, हुड़्, होड़्, गतौ। ( To go )

हुड्, हुड्, होड् ( ऋ ) सेट्, सक, प। हुड्—हुड़ति। जुहुड़। हुड़िता। हुड़यति। ( ऋ ) अजुहुड़त्। हुड्—होड़ति। जुहोड। होडिता। होडयति। ( ऋ ) अजुहोडत्। होड्—होडति इत्यादि। हुड़्, हुड़् गताविति धनपालशाकटायनौ। होडत इत्यनादरे गतः।

२२९। काडृ, अनादरे। ( To disregard )

काड् (ऋ) सेट्, सक, प। काडति इत्यादि। माधवे- नैवायमाद्रियते।

२३०। रोडृ, लोडृ, उन्मादे। ( To be mad )

रोड्, लोड् ( ऋ ) सेट्, अक, प। लट्—रोडति इत्यादि।

२३१। अड, उद्यमे। ( To endeavour )

अड्, सेट्, सक, प। अडति। अडो वृश्चिकलाङ्गूलं, तेन तैक्ष्ण्यं लक्ष्यते। विशिष्टोऽडस्तैक्ष्ण्यमस्य व्यडः, तस्यापत्यं- व्याडिः। 'अत इञ्' 'स्वागतादीनां चे'ति वृद्धिप्रतिषेधेजाग- मयोर्निषेधः।

२३२। लड़, विलासे। ( To be luxurious )

लड़्, सेट्, अक, प। लड़ति इत्यादि। जिह्वोन्मथने घटादौ। अनन्तरं लल ईप्सायामिति क्वचित् पठ्यते। तद् क्षीरस्वामिपुरुषकारादयो नानुमन्यन्ते। यतः रलयोश्चैकत्व- स्मरणात् ललयति ललनेत्याहुः। लड़ उपसेवायां चुरादौ।

२३३। कड़, मदे। ( To be proud )

कड़्, सेट्, अक, प। कड़ति, चकाड़, कड़िता इत्यादि। अयं तुदादौ च।

२३४। गड़ि, वदनैकदेशे। ( To affect the cheek )

गण्ड् ( इ ) सेट्, अक, प। गण्डति इत्यादि। अत्र वक्त्व- दन्त्यादिष्वमुं पठित्वोक्तम्। शौटादय उक्तान्ता उदात्तेतस्त- वर्गान्ताः।

केचनैधत्यादयो गताः, केचन द्युतादौ वक्ष्यन्ते, इति अत्र- प्राप्तानात्मनेपदिनः पवर्गान्तानाह।—

२३५। तिपृ, तेपृ, ष्टिपृ, ष्टेपृ, क्षरणार्थाः। ( To ooze )

तिप् ( ऋ ) अनिट्, तेप् ( ऋ ), ष्टिप् ( ऋ ) सेट्, अक-

आ । एतदादयस्तोभत्यन्ता उदात्ता अनुदात्तेतः । 'तपिं तिपिं चापी'त्यनिट्कारिकासु पाठात् तिपिरेकोऽनुदात्तः । ऋदित्पवर्गान्तात्मनेपदित्वसाम्याच्चेह पाठः । क्षीरस्वामिना त्वयं सेडुदाहृतः, तत् काश्यपवृत्तिन्यासपदमञ्जर्यादिविरोधात् 'तपिं तिपि'मिति व्याघ्रभूतिवचनविरोधाच्चोपेक्ष्यम् । तिप्—तेपते । तेपताम् । तेपेत । अतेपत । तितिपे । तितिपिषे । तितिपिवहे । क्रादिनियमादिट् । तेप्ता । तेप्स्यते । अतेप्स्यत । आशिषि—तिप्सीष्ट । लुङ्—अतिप्त, अतिप्साताम्, अतिप्सत । तितिप्सते । तेतिप्यते । तेतिपीति, तेतेप्ति । तेपयति । अतितेपत् । ऋदित्त्वात् ह्रस्वाभावः । तेप्—तेपते । तेपताम् । अतेपत । तेपेत । तितेपे । तेपिता । तेपिष्यते । तेपिषीष्ट । अतेपिष्ट । तितेपिषते । तेतिप्यते । तेतेपीति, तेतेप्ति । स्तिप्—स्तेपते । तिष्टिपे, तिष्टिपाते । स्तेपिता इत्यादि तिपिवत् । तिस्तेपिषते, तिस्तिपिषते । स्तिपित्वा, स्तेपित्वा । तेष्टिप्यते । तेष्टिपीति, तेष्टेप्ति । तेष्टिप्तः । तिपिवत् । अभ्यासे खयः शेषो विशेषः । स्तेप—स्तेपते इत्यादि । दिपृ, देपृ इति च काश्यपः ।

२२६ । तेपृ, कम्पने च । ( To shake, to drop )

तेप् ( ऋ ) सेट्, अक, आ । तेपते । तितेपे । अतेपिष्ट । इत्यादि पूर्ववत् ।

२२७ । ग्लेपृ, दैन्ये । ( To be poor )

ग्लेप् ( ऋ ) सेट्, अक, आ । ग्लेपते । जिग्लेपे । ग्लेपिता इत्यादि ।

२२८ । टु वेपृ, कम्पने । ( To tremble )

वेप् ( टु, ऋ ) सेट्, अक, आ । वेपते । विवेपे । अवेपिष्ट, अवेपिषाताम्, अवेपिषत । वेपिष्यते । वेपिषीष्ट । विवे-

पिषते। वेपयति। ( ऋट ) अविवेपत्। वेपितः। ( टु ) वेपथुः। वेपमानः। प्रवेपनम्। प्रवेपनीयः, णत्वाभावः। विपिनम्। 'वेपितुह्योर्ह्रस्वश्चे'तीनचि ह्रस्वः। टु वेपृ कपिचलने इति दुर्गः पठति। वकारोऽन्तस्थीयः।

२३९। केपृ, गेपृ, ग्लेपृ, च। ( To tremble, to go )

चकारात् कम्पने गतौ च सूत्रविभागादिति स्वामी। मैत्रेयस्तु चकारमन्तरेण पठित्वा कम्पन इत्यपेक्षत इत्याह। वेपतिना सहैषामपाठोऽप्रसिद्धत्वज्ञापनार्थेति तस्याभिप्रायः। ग्लेपेरर्थभेदात् पुनः पाठः।

केप्, गेप्, ग्लेप् ( ऋट ) सेट्, सक, आ। केपते इत्यादि। केपादीनां तपवेपोश्च 'निगरणे'ति णौ परस्मैपदमेव। युचि वेपन इति।

२४०। मेपृ, रेपृ, लेपृ, गतौ। ( To move )

अयं पाठः स्वामिनः। मैत्रेयस्तु मेपृ, लेपृ सेवने, रेपृ प्लव-गतावित्याह। मेप्, रेप्, लेप् ( ऋट ) सेट् सक, आ। मेपते। रेपते। लेपते इत्यादि। क्वचित् पठ्यते—हेपृ रेपृ इति च।

२४१। त्रपू ष, लज्जायाम्। ( To be ashmed )

त्रप् ( ऊ, ष ) वेट्, अक, आ। त्रपते। त्रेपे, त्रेपाते, त्रेपिरे। ( ऊ ) त्रपिता, त्रप्ता। त्रपिष्यते, त्रप्स्यते। त्रपिषीष्ट, त्रप्सीष्ट। अत्रपिष्ट, अत्रप्त। तित्रपिषते, तित्रप्सते। तात्रप्यते, तात्रपीति, तात्रप्ति। त्रपयति। अतित्रपत्। त्रपित्वा, त्रप्त्वा। त्रप्तः। त्रप्तवान्। त्राप्यम्, भावे ण्यत्, यतोऽपवादः। (ष) त्रपा—अङ्। अपत्रपिष्णुः—तच्छीलादाविष्णुच्। त्रपु—'शस्वृस्निहित्रप्यसिवसिहनिक्लिदिबन्धिमनिभ्यश्चे'ति उप्रत्ययः। त्रपुणो विकारः—त्रापुषम्, 'त्रपुजतुनोः षुगि'ति षुगागमोऽण्प्रत्ययश्च।

२४२ । कपि, चलने । ( To shake )

कम्प् ( इ ) सेट्, अक, आ । कम्पते । चकम्पे । कम्पिता । कम्पिष्यते । अकम्पिष्यत । अकम्पिष्ट । कम्पिषीष्ट । कम्पयति । अचकम्पत् । चिकम्पिषते । चंकम्प्यते, चङ्कम्प्यते, चंकम्पीति, चंकम्प्ति । भावे—कम्प्यते । अकम्पि । क्त—कम्पितः । कम्पित्वा । कम्पितुम् । 'निगरणचलने'ति नित्यं परस्मैपदम् । कम्पः । तच्छीलादौ रः । कम्प्रः । * विकपितः विकृतशरीर इत्यर्थः । 'लङ्घिकम्प्योरुपतापशरीरयोः' इति नलोपः । कपिः—'कटिकम्प्योर्नलोपश्चे'तीन्प्रत्यये नलोपः । कपेर्भावकर्म्मणी—कापेयम् । कपिज्ञात्योर्ढगिति ढक् । वृषो धर्म्मस्तस्याकपिः, अकम्पिता—वृषाकपिः,—विष्णुः, रुद्रश्च । वृषाकपायी,—श्रीः गौरी च । वृषाकपीत्यादिना पुंयोगलक्षणे ङीषि अन्त्यस्यैकारः । कपिलः—'कपेश्चे'तीलच्प्रत्ययः । बाहुलकादत एव निर्द्देशाद्वा नलोपः । कवलः, कम्बलः,—बाहुलकात् कलप्रत्यये पकारस्य बकारः, पक्षे नलोपश्च ।

२४३ । रबि, लबि, अबि, शब्दे । ( To sound )

रम्ब्, लम्ब्, अम्ब् ( इ ) सेट्, अक, आ । रम्बते । ररम्बे । अरम्बिष्ट । रिरम्बिषते । रारम्ब्यते, रारम्बीति, रारम्प्ति । अरारन् । हे इति रम्बते—हेरम्बः, अच् । लम्ब—लम्बते । अम्ब—अम्बते । अम्बिबिषते । अम्बयति, आम्बिबत् । लोष्ट-

---

* ननु पदेरनुदात्तत्वादेव युचि सिद्धे 'जुचङ्क्रम्ये'त्यादिना पुनर्युज्विधानेन ताच्छीलिकेषु वासरूपविधिर्नेति ज्ञापितम् । अन्यथा 'लषपतपदे'त्युकञा अनुदात्तेत्त्वप्रयुक्तयुचः' समावेशे सिद्धे पुनस्तद्विधानमनर्थकं स्यात् । नैतदस्ति । 'सूददीपे'ति युज्निषेधादस्यानित्यत्वज्ञापनात्, नित्ये हि 'नमी'त्यादिना रप्रत्ययेन युचो बाधस्य सिद्धेः किं तन्निषेधेन ।

म्बकानि चक्षूंषि अस्येति त्र्यम्बकः, त्रयाणां लोकानामम्बः पितेत्यागमविदः। अम्बरीषम्—'भ्राष्टमम्बरीष'मिति निपात्यते। अम्बते इति अम्बा—अच्। हे अम्ब।

२४४। लबि, अवस्रंसने च। ( To sound, to fell )

लम्ब् ( इ ) सेट्, अक, आ। लम्बते। ललम्बे। अलम्बिष्ट। आ—आश्रयः। ग्रहणम्—"आललम्बे महास्त्राणि"। अवलम्बनम्। अव—अवलम्बनम्। आलम्बितः। आलम्बः। वि—विलम्बः। विलम्बते, विडम्बते। "विडम्बयन्त्यं शितिवाससस्तनुम्" माघ १।६। अत्रानुकरणमर्थः। अवस्रंसनम्, अवलम्बनम् इति गोविन्दभट्टः। 'नञि लम्बेर्नलोपश्च'ति नञुपपदे उप्रत्ययो नलोपो वृद्धिश्च—अलाबुरिति।

२४५। कबृ, वर्णे। ( To colour )

कब् ( ऋ ) सेट्, अक, आ। कबते। चकबे। कबिता। अकबिष्ट। चिकबिषते। चाकब्यते। चाकब्धि। काबयति (ऋ) अचकाबत्। कबरः—बाहुलकादरः। कबरी—'जानपदे'त्यादिना केशविशेषे ङीष्, अन्यत्र कबरा। कर्बुरः—बाहुलकादुरप्रत्ययः, रेफोऽपजनश्च।

२४६। क्लीबृ, अधार्ष्ट्ये। ( To be timid )

क्लीब् (ऋ) सेट्, अक, आ। क्लीबते। चिक्लीबे। क्लीबिता। अक्लीबिष्ट। क्लीबयति, (ऋ) अचिक्लीबत्। क्लीब इवाचरति—क्लीबते। 'आचारे गल्भक्लीबे'ति क्विप्। क्लिबभावे 'उपमानादाचार' इति क्यङ्—क्लीबायते।

२४७। चीबृ, मदे। ( To be proud )

चीब् (ऋ) सेट्, अक, आ। चीबते। चिचीबे। चीबिता।

अचिचीवत्। क्त—चीव:, 'अनुपसर्गात् फुल्लचीबे'ति निष्ठाया-मिड़भावस्तल्लोपश्च।

२४८। शोभृ, कत्थने। ( To be boast )

शोभ् ( ऋट ) सेट्, अक, आ। शोभते। शिशोभे। अशो-भिष्ट। शिशोभिषते। शेशोभ्यते। शेशोब्धि। शोभयति। अशिशोभत्। अर:—शोभर:।

२४९। चीभृ, च। [ वीभृ, दुर्ग: ] ( To be boast )

चीभ् ( ऋट ) सेट्, अक, आ। चीभते इत्यादि शोभवत्।

२५०। रेभृ, शब्दे। ( To sound )

रेभ् ( ऋट ) सेट्, अक, आ। रेभते इत्यादि। विरिब्ध: स्वर:। 'क्षुब्धस्वान्ते'त्यादिना निपात्यते। अन्यत्र रेभित:। अभिरभी च क्वचित् पठ्यते। अम्भ् (इ)—अम्भते। रम्भ् (इ)—रम्भते। अम्भ:—असुन्। अम्भसोऽपत्यम्—आम्भि:, इञ्। 'अम्भस: सलोपश्चे'ति इञि सलोप:।

२५१। ष्टभि, स्कभि, प्रतिबन्धे। ( To hinder )

स्तन्भ्, स्कन्भ् ( इ ) सेट्, अक, आ। स्तम्भते। तस्तम्भे, तस्तम्भिषे। स्तम्भिता। स्तम्भिष्यते। अस्तम्भिष्ट। स्तम्भयति,—ते। अतस्तम्भत्,—त। तिस्तम्भिषते। तास्तम्भ्यते। तास्त-म्भीति, तास्तम्ब्धि। स्तभ्यते। स्तम्भित:। स्तम्भित्वा। उत्—उत्तम्भते। उत्तम्भिता। उत्तम्भित:। उत्तम्भ्य। स्तम्भि-तुम्। 'स्तम्भे'रित्यादावुपसर्गात् परस्य षत्वविधौ 'स्तम्भु-स्तुम्भु'इति प्रतिपदोक्तस्यैव स्तम्भेर्ग्रहणं न त्वस्य लाक्षणिकस्येति विस्तम्भ इत्यादौ न षत्वम्। 'उद: स्थास्तम्भो'रित्यत्र तु नायं न्याय:। यतस्तम्भरूपसुभयोरपि लाक्षणिकत्वम्। अत्र स्वामि-

मैत्रेयो ष्टम्भेष्टकारमेकीयमतेनोपदेशिकमाहतुः। तत्र ष्टम्भते, विष्टम्भते इत्यादौ सर्वत्र ष्टुत्वेन षत्वे लिड़ादावभ्यासे टकारस्य शेषे तष्टम्भ इत्यादि भवति। स्कन्भ—स्कम्भते। चस्कम्भे। स्कम्भितः। स्कभितः।

२५२। जभी, जृभि, गात्रविनामे। ( To gape )

जभ, जृभी गात्रविनामे इति दुर्गः पठति। गात्रविनामो गात्रशैथिल्यम्। जृम्भणम् इति गोविन्दभट्टः। जभीत्येके, जब्धमिति मैत्रेयः। अयमेव पाठः प्रायेण वृत्तिकारस्य सम्मतः। यदाह—'रधिजभोरचि' इत्यत्र अजग्रहणप्रत्युदाहरणे जब्धमिति अनीदित्त्वे इटा भाव्यमिति कथमेवमुदाहरेत्।

जभ् (ई) जृभ् ( इ ) सेट्, अक, आ। जम्भते। जजम्भे। जम्भिता। जम्भिष्यते। जम्भिषीष्ट। अजम्भिष्ट। अजम्भिष्यत। जिजम्भिषते। यङ्—जञ्जभ्यते ( १ )। अनुस्वारस्यापि पक्षे स्थितिर्भवति—जंजभ्यते इत्यादि। यङ्लुक्—जञ्जभीति, जञ्जब्धि। जञ्जब्धः। जञ्जभति इत्यादि। णिच्—जम्भयति। अजजम्भत्। घञ्—जम्भः, दन्तविशेषः अभ्यवहार्य्यञ्च, शोभनो जम्भोऽस्यास्तीति—सुजम्भा। 'जम्भासुहरिततृणसोमेभ्य' इति बहुव्रीहौ स्वाद्यादेर्जम्भात् अनिच्, राजन्शब्दवत् रूपाणि। ङौ सम्बोधने च नलोपनिषेधः। नपुंसके तु 'वा नपुंसकाना'मिति पक्षे नलोपः। (ई) क्त—जब्धः। अनीदनुबन्धताखोकारे जभित इति।

जृम्भ् (इ) जृम्भते। जजृम्भे ; जजृम्भिषे। जृम्भिता। अजृम्भिष्ट। जरीजृम्भ्यते, जरीजृम्भीति इत्यादि। जृम्भयति। अजजृम्भत्।

( १ ) लुपसदेत्यादिना धात्वर्थगर्हायां यङ्, अयञ्च यङ् क्रियासमभिहारयङो बाधक इति भाष्यादौ स्थितम्।

ष्यत्। जभि इति विनाशनार्थे चुरादौ। भाषायाँऽयं परस्मैपदि-ष्वपि इति केचित्। रमणार्थे भ्वादौ परस्मैपदीति वोपदेवः।

२५३। शल्भ, कत्थने। ( To be boast )

शल्भ्, सेट्, अक, आ। शल्भते। शशल्भे। शल्भिता। अशल्भिष्ट इत्यादि।

२५४। वल्भ, भोजने। ( To eat )

वल्भ्, सेट्, सक, आ। दन्त्योष्ठ्यादिः। वल्भते। णौ नित्यं परस्मैपदम्—वल्भयति।

२५५। गल्भ, धार्ष्ट्ये। ( To be bold )

धार्ष्ट्यं प्रगल्भता। गल्भ्, सेट्, अक, आ। गल्भते। जगल्भे। अगल्भिष्ट। गल्भिता। गल्भयति,—ते। अज-गल्भत,—त। जिगल्भिषते। जागल्भ्यते। जागल्भीति, जागल्ब्धि। गल्भ्यते इत्यादि। प्रगल्भः अवगल्भः इवाचरति —प्रगल्भति, अवगल्भते। 'आचारेऽवगल्भे'ति क्विप्। तत्सन्नि-योगेनाकारस्यानुदात्तत्वानुनासिकत्वप्रतिज्ञानात् प्रागेवोक्त-मित्यनुदात्तत्वात् तङ्क्विपोरभावे क्यङि अवगल्भायते। अव-गल्भेति विशिष्टग्रहणादनुपसृष्टादन्योपसृष्टाच्चाचारक्विपि— गल्भति, प्रगल्भति इति भवति।

२५६। श्रन्भु, प्रमादे। ( To err )

तालव्योष्ठादिः। श्रन्भ् (उ) सेट्, अक, आ। दन्त्यादि-रिति चन्द्रः। श्रम्भते। शश्रम्भे। अश्रम्भिष्ट। श्रम्भिता। (उ) श्रम्भित्वा, श्रब्ध्वा। श्रब्धः।

२५७। ष्टुभु, स्तम्भे। ( To stop )

स्तुभ् (उ) सेट्, अक, आ। स्तोभते। तुष्टुभे, स्तोभिता

इत्यादि। अस्तोभीत्। तुस्तुभिषते, तुस्तोभिषते। (उ) स्तुभित्वा, स्तोभित्वा। क्विप्—अनुष्टुप्, त्रिष्टुप्, सुषामादित्वात् षत्वम्। अनुष्टुबेवानुष्टुभम्। एवं त्रैष्टुभं, नपुंसके स्वार्थे अण्। तिप्याद्य उदात्ता अनुदात्तेतः, तिपिवर्जम्।

## परस्मैपदिनः।

२५८। गुपू, रक्षणे। (To conceal, to protect)

गुप् (ऊ) वेट्, सक, प। गोपायति। गोपायतु। गोपायेत्। अगोपायत्। गोपायाञ्चकार—३। गोपाय्यात्। अगोपायीत्, अगोपायिष्टाम्, अगोपायिषुः। जुगोपायिषति। गोपाययति। अजुगोपायत्। गोपाय्यम्—अचो यत्। गोपायितः। गोपायित्वा। प्रगोपाय्य। अ—गोपाया। आयाभावे—जुगोप, जुगुपतुः। (ऊ) जुगोपिथ, जुगोप्थ। जुगुपिव, जुगुप्व। गोपिता, गोप्ता। गोपिष्यति, गोप्स्यति। गुप्यात्। अगोप्सीत्, अगौप्ताम्, अगौप्सुः। अगोपीत्, अगोपिष्टाम्, अगोपिषुः। अगोपिष्यत्, अगोप्स्यत्। जुगुप्सति, जुगुपिषति, जुगोपिषति। गुप्त्वा, गुपित्वा, गोपित्वा। जोगुप्यते। गोपयति। अजूगुपत्। गुप्तः। गुप्तिः। गोप्यम्—ण्यत्। कुप्यम्—'राजसूये'त्यादिना क्यपि गुपेर्निपात्यते। अयं भाषार्थो रक्षणार्थश्च चुरादौ। गुप गोपनेऽग्रे। व्याकुलत्वे दिवादौ।

२५९। धूप, सन्तापे। (To heat)

धूप्, सेट्, सक, प। अस्यापि पूर्ववदायस्तदभावश्च। धूपायति। धूपायाञ्चकार—३। अधूपायीत्, अधूपीत्। धूपायिता, धूपिता। आयाभावे वलादौ (असार्वधातुके अयकारादौ) सर्वत्र नित्यमिडस्य विशेषः।

२६०। जल्प, जप, व्यक्तायां वाचि ; जप, मानसे च ।
( To whisper, to talk, to meditate )

रप, लप, जल्प, व्यक्तायां वाचि, जप, मानसे च इति पाठद्वयं दुर्गसम्मतम् । रप्, लप्, जल्प्, जप्, सेट्, सक, प । धात्वर्थः—कथनं मानसञ्च । मानसन्तु मनसोच्चारणम्, जिह्वोष्ठादिव्यापाररहितं शब्दार्थयोश्चिन्तनम् ।

जल्प्—जल्पति । जजल्प । अजल्पीत् । जल्पिता । जल्प्यात् । जल्पयति,—ते । अजजल्पत्,—त । जिजल्पिषति । जाजल्प्यते । जाजल्पीति, जाजल्पि इत्यादि । जल्पाकः—तच्छीलादौ षाकन् । स्त्रियां जल्पाकी । जल्पति पुत्रं देवदत्तः । जल्पयति पुत्रं देवदत्तं यज्ञदत्तः । 'जल्पत्यादीनामुपसंख्यान'मिति प्रयोज्यस्याशब्दकारकत्वेऽपि कर्मत्वम् ।

जप्—जपति । जजाप । जेपतुः, जेपिथ । जपिता । अजपीत्, अजापीत् ; अजपिष्टाम्, अजापिष्टाम् ; अजापिषुः अजपिषुः । जिजपिषति । जञ्जप्यते, जंजप्यते—भावगर्हायां यङ् । जञ्जपीति, जञ्जप्ति । जापयति, अजीजपत् । यत्—जप्यम् । अच्—कर्णेजपः, सूचकः । सप्तम्या अलुक् । जञ्जपूकः, यङन्तात्तच्छीलादावूकः । अप् (अल्)—जपः । उपसृष्टात्तु घञि उपजापः । जपित्वा । जप्त्वा इत्येके । जप्तः, जपितः । (१) "गायत्रीं दशधा जप्त्वा" इति स्मृतिः । "जपित्वा सूक्तं" मनुः ११।२५१ । अभि—अभिमन्त्रणम् । उप—भेदः । अनयोः कर्मव्यतिहारे नात्मनेपदम् । 'प्रतिषेधे हसादीनामुपसंख्यान'मित्युक्तत्वात् ।

२६१ । चप, सान्त्वने । ( To console )

चप्, सेट्, सक, प । चपति । चचाप, चेपतुः । अचपीत्,

(१) चकारोऽनुक्तसमुच्चयार्थः, तेन 'वमिजपिभ्यां वा' इति कातन्त्र—कृत्-५२१ । सूत्र ।

अचापीत्। चपिता इत्यादि जपिवत्। चपयति घठादिः। चपो वृच इति मैत्रेयः। वेणुविशेष इति दण्डनाथः। तस्य विकारः—चापम्। 'तालादिभ्योऽणि'त्यण्।

२६२। षप, समवाये। ( To join )

समवायः सम्बन्धः, सम्यगवबोधो वा। सपति इत्यादि जपिवत्। सिसपिषति। 'स्तौतिण्योरेवे'ति अषत्वम्। सापयति। असीषपत्। सप्तिः। 'क्तिच्क्तौ च संज्ञाया'मिति क्तिच्। सप्त 'सप्यशूभ्यां तुट् चे'ति कनिन्प्रत्ययः, तुड़ागमश्च। पञ्चशब्दवत् षट्संज्ञा तत्कार्य्यञ्च। सप्तानामपत्यं—साप्तिः, 'बह्वादिभ्यश्चे'तोञि 'नस्तद्धित' इति टिलोपः। अत्र शाकटायनः—क्षीरस्वामी सचतिं चाहुरित्युक्ता सचति सचिव इत्यप्याह।

२६३। रप, लप, व्यक्तायां वाचि। ( To talk )

रप, लप, सेट्, सक, प। रपति, लपति इत्यादि जपिवत्। विलापयति पुत्रमित्यादौ काण्वादित्वात् उपधाह्रस्वविकल्पः। ण्यत्—राप्यः, लाप्यः। रपित्वा, लपित्वा। रपितः, लपितः। अनु—मुहुर्भाषणम्, अनुलापः। अप—अपह्नवः, अपलापः। आ—आलापः। प्र—प्रलापः। सं—संलापः, मिथोभाषणम्। "विप्रलापो विरोधोक्तिः" "संलापो भाषणं मिथः।" वि—विलापः। रिपुः—'रपेरिच्चोपधाया' इति उप्रत्यय उपधाया इकारः।

२६४। चुप, मन्दायां गतौ च। ( To move slowly )

चुप, सेट्, सक, प। चोपति। चुचोप। चोपिता। चुचुपिषति, चुचोपिषति। चुपित्वा, चोपित्वा। चोचुप्यते। चोचुपोति, चोचोप्ति। चोपयति। अचूचुपत्। चोपनः—चलनार्थत्वात् युच्। णौ (इनि) नित्यं परस्मैपदम्। गले चोप्यते—गले-

चोपकः,—खन्तात् कर्म्मणि खुल्। चोपितं, चुपितम् अनेन इत्यादि। चुप्रम्—ऋजेन्द्रादौ रकि निपातितः।

२६५। तुप, तुन्‌प, त्रुप, त्रुन्‌प, तुफ, तुन्‌फ, त्रुफ, त्रुन्‌फ, हिंसार्थाः। ( To kill )

तुप्, तुन्‌प्, त्रुप्, त्रुन्‌प्, तुफ, तुन्‌फ, त्रुफ, त्रुन्‌फ, सर्वे सेटः, सकर्म्मकाः, परस्मैपदिनश्च। तोपति इत्यादि चुपिवत्। तुन्‌प—तुम्पति। तुम्पतु। अतुम्पत्। तुप्यात्। किश्वादनिदितामिति नलोपः। तुतुम्प, तुतुम्पतुः। अतुम्पीत्। अतुम्पिष्यत्। तुतुम्पिषति। तोतुप्यते। तोतुम्पीति, तोतुम्प्ति। तोतुम्पः। तुम्पयति। अतुतुम्पत्। प्रस्तुम्पति गौः। प्रात्तुम्पतौ गवि कर्त्तरीति सुट्। तुम्पतेस्तुम्पताविति धातुनिर्द्देशो न तिङन्तानुकरणमिति प्रस्तुम्पः, प्रस्तुम्पक इत्यादावपि भवति। प्रतोतुम्पीति इत्यादावतएव श्तिपा निर्द्देशान्न भवति। त्रुप—त्रोपति। त्रुन्‌प—त्रुम्पति। तुफ—तोफति। तुन्‌फ—तुम्फति। त्रुफ—त्रोफति। त्रुन्‌फ—त्रुम्फति इत्यादि तुपितुम्फिवत्। नत्वारेफसरेफयोः सानुषङ्ग-द्वितीयान्तयोः सेट्त्वात् 'नोपधात् थफान्ताद्दे'ति क्त्वविकल्पनात् पक्षे नलोपे त्रुपित्वा, त्रुम्पित्वा, त्रुफित्वा, त्रुम्फित्वा इति च भवति। अरेफास्तत्वारस्तुदादावपि आद्यस्तु चुरादावपि तत्र त्वर्दनमर्थः।

२६६। पर्प, रफ, रफि, अर्ब, पर्ब, लर्ब, बर्ब, मर्ब, कर्ब, खर्ब, गर्ब, शर्ब, षर्ब, चर्ब, गतौ। (To go)

आद्यः प्रथमान्तः। परौ द्वावपि द्वितीयान्तौ। एकादश परे तृतीयान्ताः। द्वितीयतृतीयौ मुक्त्वा सर्वे रोपधाः।

सर्वे सेटः, सकर्म्मकाः, परस्मैपदिनश्च। पर्प—पर्पति, पर्पिता इत्यादि। पर्पति अनेनेति पर्पः—घञ्; येन पीठेन

पञ्चमस्वरलिप्त स उच्यते। पर्पेण चरति पर्पिकः। स्त्रियां पर्पिकी। रफ—रफति। (इ) रम्फ—रम्फति इत्यादि। अर्ब अर्बति। आनर्ब। अर्बिता। पर्ब—पर्बति। लर्ब—लर्बति। बर्ब—बर्बति। मर्ब—मर्बति। कर्ब—कर्बति। खर्ब—खर्बति। गर्ब—गर्बति। शर्ब—शर्बति। सर्ब—सर्बति। असर्बत्। चर्ब—चर्बति।

२६७। कुबि, च्छादने। ( To cover )

कुन्ब (इ) सेट्, सक, प। कुम्बति इत्यादि। अ—कुम्बा। 'भीषिचिन्ती'त्याद्यङ्विधौ चौरादिकस्य ग्रहणम्।

२६८। लुबि, तुबि, अर्दने। ( To torment )

'अर्दनमिह हिंसा, याचनमित्यपरे' इति रमानाथः। लुन्ब्, तुन्ब्, (इ) सेट्, सक, प। लुम्बति, तुम्बति इत्यादि। तुम्बी अलाबूः, गौरादित्वात् ङीष्।

२६९। चुबि, वक्त्रसंयोगे। ( To kiss )

चुम्ब् (इ) सेट्, सक, प। चुम्बति। चुचुम्ब। अचुम्बीत्, अचुम्बिष्टाम्, अचुम्बिषुः। चुम्बिता। चुम्बिष्यति। अचुम्बिष्यत्। चुम्ब्यात्। चुचुम्बिषति। चुम्बयति,—ते। अचुचुम्बत्,—त। चोचुम्ब्यते। चोचुम्बीति, चोचुम्प्ति। कर्मणि—चुम्ब्यते। अचुम्बि। चुम्बनम्। चुम्बित्वा।—चुम्ब्य। चुम्बितुम्। चुम्बितः। लुम्बादयस्त्रयश्चुरादौ च। *

२७०। षृभु, षृन्भु, हिंसार्थौ। ( To injure )

अत्र मैत्रेय एवं पठित्वा षिभु षिम्भु इत्येक इति ऋकारस्य

* 'प्रियासुखं किम्पुरुषश्चुचुम्बे' इत्यत्र आत्मनेपदं चिन्त्यमिति दर्पणः। अत्र कर्मव्यतीहारे आत्मनेपदमिति वोपदेवः। दाक्षिणात्यास्तु 'चुचुम्ब' इति पठन्तीति रमानाथः।

स्थाने इकारमप्याह। तरङ्गिण्यान्तु ऋकारवन्तौ दन्त्यादौ पठित्वा षोपदेशपर्य्युदासे सृग्रहणेनानर्थकस्यापि ग्रहणमित्युक्तम्।

स्तृभ्, स्तृन्भ् (उ सेट्, सक, प। सर्भति। सस्र्भ। सर्भिता इत्यादि। सिसर्भिषति। मैत्रेयपाठे 'स्तौतिण्योरेवे'त्यषत्वम्। सरीसृभ्यते, सरीसृभीति, सरिसृभीति, सर्सृभीति, सरीसृब्धि, सरिसृब्धि, सर्सृब्धि। सर्भयति। असस्र्भत्, असीसृभत्। सिस-र्भिषति। तरङ्गिणीमते तु षत्वं न भवति। सर्भित्वा, स्तृप्त्वा [स्तृब्ध्वा]। स्तृब्धः। स्तृभ्यम्—ऋदुपधत्वात् क्यप्।

स्तृन्भ्—स्तृम्भति। सस्तृम्भ। सस्तृम्भतुः। स्तृभ्यात्। इकार-वत्पाठपक्षे स्तिम्भति। सिस्तिम्भति इत्यादि। दुर्गमते तुपेत्यादि दण्डके पठितम्।

२७१। शुभ, शुन्भ, भाषणे। ( To speak )

हिंसायां द्वाविमौ दैवमैत्रेयादयः पठन्ति। स्वामी तु निर नुषङ्गेण पपाठ। इदमेवात्रेयस्यापि मतम्। तुदादौ शोभत इति शपीति वचनात्। दुर्गस्तु भासन इत्यस्यार्थमाह। एवं धनपाल-शाकटायनौ। शुमस्तु सावष्टम्भनिशुम्भसम्भ्रमनमद्भूगोल इत्यादि दर्शनान्मूर्द्धन्यादित्वमाह।

शुभ्, शुन्भ्, सेट्, सक, प। शोभति. शुम्भति इत्यादि। तोपति तुम्पतिवत्। शुभः—इगुपधलक्षणः कः। शुम्भम्—'स्फायितञ्चि'त्यादिना रक्। इमौ शोभार्थौ तुदादौ। निरनु-षङ्गत्वम्। शुपादय उदात्ता उदात्तेतः।

## अथानुनासिकान्ता आत्मनेपदिनः।

२७२। घिणि, घुणि, घृणि, ग्रहणे। ( To take )

घिण्, घुण्, घृण् ( इ ) सेट्, सक, आ। घिण्णते।

चिखताम् । अचिखत । चिख्खे त । जिचिखे । चिखिता । चिखिष्यते । आशिषि—चिखिषीष्ट । अचिखिष्यत । जिचिखिषते । जेजिख्यते, जेचिखीति, जेचिखिट । लङि—अजेचिन् । चिखयति । अजिचिखत् । चिखित्वा । सर्वत्र नागमे तवर्गस्य टवर्गः । यङ्लुकि लङि संयोगान्तलोपस्यासिद्धत्वात् नकारान्त एव । घुख्—घुखते इत्यादि । घृख—घृखते । जघृखे इत्यादि । जरीघृख्यते । जरीघृखीति, जर्घृखीति इत्यादि । (लङ्) अजरीघृन् इत्यत्र संयोगान्तलोपस्यासिद्धत्वान्न गुणः । एतदादयः कस्यन्ता उदात्ता अनुदात्तेतः ।

२७२ । घुण, घूर्ण, भ्रमणे । (To whirl)

घुण्, घूर्ण्, सेट्, सक, आ । घोणते । जुघुणे । घोणिता । जुघुणिषते, जुघोणिषते । घुणित्वा, घोणित्वा । जोघुण्यते । जोघुणीति, जोघुण्टि । जोघुण्ट इत्यादौ अगुणे धुटि उपधाया दीर्घः । घोणयति । अजूघुणत् । भावादिकर्मणोः—घोणितमनेन, घुणितमनेनेत्यादि । घोणा—क्रोडादित्वान्निपातनादचि टाप् । बहुव्रीहौ कल्याणघोणा ।

घूर्ण्—घूर्णते । अघुर्णिष्ट । जुघूर्णे । घूर्णिता । घूर्णिष्यते । अघूर्णिष्यत । घूर्णिषीष्ट । घूर्णयति,—ते । अजुघूर्णत्,—त । जुघूर्णिषते । जोघूर्ण्यते । जोघूर्णीति, जोघूर्ण्टि । घूर्ण्यते । घूर्णितम् । घूर्णनम् । घूर्णमानः । "घूर्णते गात्रवस्त्रापि यद्गुणश्रवणाच्छिरः । मित्रोदासीनभूनानां घूर्णतीति किमद्भुतम् ॥" कवि २३१ । यङ्लुकि लङि—अजोघूर्ण् । 'रात् सस्ये'ति नियमात् संयोगान्तलोपाभावः । इमौ तुदादौ परस्मैपदिनौ ।

२७४। पण, व्यवहारे स्तुतौ च। (१)

( To transact business, to bet, to praise ).

व्यवहारः क्रयविक्रयलक्षणः । गुणकथनं स्तुतिः । पण्, सेट्, सक, आ । व्यवहारार्थे—पणते । पणताम् । पणेत । अपणत । पेणे । पेणिषे—पेणिध्वे । अपणिष्ट । पणिता । पणिष्यते । पणिषीष्ट । अपणिष्यत । पिपणिषते । पम्पण्यते । पम्पणीति, पम्पण्टि । पम्पाण्टः ; अपम्पण् । पाणयति,—ते । अपीपणत्,—त । कर्म्मणि—पण्यते । अपण्यत । अपाणि । पण्यम्, व्यवहर्त्तव्ये निपातितम् । अन्यत्र ण्यत् (घ्यण्)—पाण्यम् । पणित्वा । पणितः । पणनम् । मूलकपणः, शाकपणः । यः संव्यवहाराय मूलकादीनां परिमितो मुष्टिर्बध्यते स उच्यते । 'नित्यं पणः परिमाणे' इति अप् ( अल् ) अन्यत्र—पाणः । व्यावहारिकोऽप्युन्मानलक्षणपरिमाणयोगात् पण इत्युच्यते । "स पणस्त्रैद्विवादः स्या"दित्यादौ इदं दास्यामीति पणनस्य परिच्छेदनात् पणोक्तिः । अध्यर्द्धपण्यम्, द्विपण्यम्—'पणपादमाषशता'दिति यत् ।

एत्यात्र आपणत इति—आपणः । 'गोचरसञ्चरवहव्रजव्यजापणनिगमाश्चे'त्यधिकरणे घान्तो निपातितः । क्तिन्—पणितिः । क्विप्—पाण् । वणिक्—'पणेरिज्यादेश्च वः' इति इजिप्रत्ययः, पकारस्य च वकारः । वणिजो भावः—वाणिज्या, 'दूतवणिग्भ्याञ्चे'ति यत्, यद्यप्ययं भावकर्म्माधिकारे तथापि स्वभावादभाव एव स्त्रियाञ्च । वाणिज्यम्—'ब्रह्मादिभ्यश्चे'त्यणन्तादवाणिजशब्दात् 'गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः कर्म्मणि चे'ति ब्राह्मणादेराकृतिगणत्वात् ष्यञ् । कर्म्मणि चेति चकारेण भावः

(१) शतस्य पणते, शतं पणते । 'व्यवहृपणोः समर्थयो'रिति कर्म्मणि शेषे षष्ठी, अन्यदा द्वितीयैव । समर्थयोरिति समानार्थयोरित्यर्थः । शकन्ध्वादित्वात् साधुः द्यूते क्रयविक्रयव्यवहारे च समानार्थत्वमनयोः ।

समुच्चीयते। विविधमत्र पणन्त इति विपणिः, 'इनि'तीन्। पणसम्—पण्यपर्य्यायः, 'अत्यविचमी'त्यादिना असच्।

स्तुत्यर्थे—पणायति ( राजानम् )। पणायतु। पणायेत्। अपणायत्। अपणायीत्, अपणायिष्टाम्, अपणायिषुः। पणायाञ्चकार,—३। पणायिता। पणाय्यात्। अपणायिष्यत्।* आर्द्धधातुक-[ असार्वधातुक ] विवक्षायामायानुत्पत्तिपक्षे व्यवहारार्थं प्रागुक्तान्येव उदाहरणानि।

२७५। पन च। ( To praise )

पृथक् निर्द्देशात् स्तुतावित्यनेनैवायं सम्बध्यते। पन्, सेट्, सक, प। पनायति इत्यादि सर्वं पणिवत्। असच्—पनसः।

२७६। भाम, क्रोधे। ( To be angry )

भाम्, सेट्, अक, आ। भामते। बभामे। भामिता।

---

* 'गुपूधूपि'त्यायो व्यवहारार्थस्य न भवति। तथाच वृत्तिः—स्तुत्यर्थेन पणिना साहचर्य्यात्तदर्थः पणिः प्रत्ययमुत्पादयतीति। एवं न्यासपदमञ्जर्य्यादिष्वपि। अतएव तरङ्गिण्यामपि—"न चोपलेभे वणिजां पणायाः" इति प्रयुञ्जानो भट्टिर्भ्रान्त इत्युक्तम्। दुर्गवोपदेवादयो व्यवहारार्थस्यापि पणेरायप्रत्यय इत्याहुः। "न चोपलेभे वणिजां पणायान्" इति जयमङ्गलधृतः पाठः। स्वामिकाश्यपसम्मताकारवासुदेवादयः पणायत इत्यायप्रत्ययान्तात् आत्मनेपदमुदाहरन्ति। सायणस्तु धातुवृत्तौ तदसदित्युक्त्वा परस्मैपदमेव समर्थितवान्। आयप्रत्ययान्तादात्मनेपदं न भवति ( कौ ५८ )। यैः स्तुत्यर्थस्य पणेरेवायप्रत्यय इष्यते, तन्मते "जिह्वा परीरम्भमथाधरौष्ठं पुनः पणायस्वे"त्युत्तरकुमारे सामान्येन स्मरणात् मतमेतदनार्षमिति भागवृत्त्यादय इति। 'कश्चिदायप्रत्ययान्तादुभयपदमुदाहरति' इति रमानाथः। कातन्त्रटीकाकारमते आयान्तादपि पणेरात्मनेपदमेव भवति। यन्मते आयान्तादात्मनेपदं, तन्मते—पणायते। पणायताम्। पणायेत। अपणायत। अपणायिष्ट, अपणायिषाताम्, अपणायिषत। पणायाञ्चक्रे—३। पणायिषीष्ट। पणायिता। अपणायिष्यत। पणायिष्यते। शतृ—पणायमानः। कर्म्मणि—पणाय्यते। अपणायि। एवं दन्त्यान्तपनधातोरपि।

अभामिष्ट, अभामिषाताम्, अभामिषत। बिभामिषते। बाभास्यते। बाभामीति, बाभान्ति। बाभान्मि। लुङ्—अबाभान्। क्विप्—भान्, ओ—भामौ। भामः क्रोधः, सोऽस्यास्तीति भामिनी। 'देवदत्ताय भामत' इत्यत्र कोपविषयत्वेन सम्प्रदानत्वम्। "भामते युवती सपत्नीम्" इति रमानाथः।

२७८। क्षमू ष्, सहने। ( To endure, to forgive )

क्षम् ( ऊ, ष ) सक, वेट्, आ। सहनं मर्षणं क्षमा। क्षमते क्षमेते, क्षमन्ते। क्षमताम्। अक्षमत। क्षमेत। चक्षमे। (ऊ) चक्षमिषे, चक्षंसे। चक्षमिध्वे, चक्षन्ध्वे। चक्षमिवहे, चक्षण्वहे, चक्षमिमहे, चक्षण्महे। क्षमिष्यते, क्षंस्यते। क्षमिषीष्ट, क्षंसीष्ट। अक्षमिष्ट, अक्षंस्त; अक्षमिषाताम्, अक्षंसाताम्; अक्षमिषत, अक्षंसत। अक्षमिष्ठाः, अक्षंस्थाः; अक्षमिषाथाम्, अक्षंसाथाम्; अक्षमिध्वं, अक्षंध्वम्। अक्षमिषि, अक्षंसि; अक्षमिष्वहि, अक्षंस्वहि। अक्षमिष्यत, अक्षंस्यत। कर्म्मादौ—क्षम्यते। अक्षमि। सन्—चिक्षमिषते, चिक्षंसते। यङ्—चङ्क्षम्यते, चंक्षम्यते। यङ्लुक्—चङ्क्षमीति, चङ्क्षन्ति। अचङ्क्षमीत्। णिच्—क्षमयति,—ते। अचिक्षमत्—त। ण्यन्तात् कर्म्मणि लुङ् त—अक्षमि, अक्षामि। स्यादिष्वपि दीर्घविकल्पः चिण्वदिट् पक्षे भवति। क्षामिष्यते, क्षमिष्यते। अक्षामिषाताम्, अक्षमिषाताम्। क्षामिषीष्ट, क्षमिषीष्ट। क्षामिता, क्षमिता इत्यादि। चिण्वदिटोऽभावे—क्षमयिष्यते। अक्षमयिषाताम्। क्षमयिषीष्ट। क्षमयिता। लुङ्येकवचने चिण्परो णिरिति पक्षे दीर्घो भवति—अक्षमि, अक्षामि। ( यङ्लुगन्तादपि चिण्णमुलोश्चिण्वदिटि च अयं दीर्घविकल्पो द्रष्टव्यः) अचङ्क्षामि, अचङ्क्षमि। चङ्क्षामञ्चङ्क्षमम्। चङ्क्षामिष्यते, चङ्क्षमिष्यते इत्यादि। अत्राप्यचिण्वत्पक्षे—चङ्क्षमिष्यते इत्यादि।

क्षमित्वा, क्षान्त्वा। क्षमितुं, क्षन्तुम्। क्षान्तः। क्षान्तवान्। क्षान्तिः। (ष) अङ्—क्षमा। घञ्—क्षमः। अन्[अच]—क्षमः। ण्वुल्—क्षमकः। ण—अपराधक्षमः, अपराधक्षमा। णमुल्—क्षमंक्षमम्, क्षामंक्षामम्। क्षमा अस्यास्तीत्यर्थे—क्षमावान्। क्षमी। अयं दिवादौ च।

२७९। कमु, कान्तौ। ( To desire )

कम् (उ) अक, सेट्, आ। कामयते। कामयताम्। अकामयत। कामयेत। कामयाञ्चक्रे—३, चकमे। कामयिता, कमिता। कामयिष्यते, कमिष्यते। (१) कामयिषीष्ट, कमिषीष्ट। अचीकमत, अचकमत। चिकामयिषते, चिकमिषते। णिङन्तात् णौ (इनङन्तादिनि) कामयति,—ते। कामयिता। कामना—युच्। मांसकामः, मांसकामा—ण। पणधातुवत् आर्द्धधातुके णिङ् (इनङ्) विकल्पात् सर्वत्र रूपद्वयम्। यङ्—चंकम्यते। (२) कामयित्वा, (उ) कमित्वा, कान्त्वा। कामितः, कान्तः। उकञ्—कामुकः। खमुल् (णम्) कामङ्कामम्। स्त्रियां कामुकी—मैथुनेच्छायां ङीष्। अन्या कामुका। कम्रः—ताच्छील्ये रः। युच्—कमनः। कन्तुः, कामः—'अजिहृणी'त्यादिना उप्रत्ययस्तुगागमश्च। कन्तुकम्—'कुमारीक्रीड़नकानि चे'ति कन्। कंसः—'वृतृवदिहनिकमिकषिभ्यः स' इति सः। कंसाय हितं कंसीयम्—'प्राक्क्रीताच्छ' इति छः। तस्य विकारः—कांस्यम् 'कंसीयपरशव्ययोर्यञञौ लुक

(१) तथा चिण्वदिटापि मित्त्वाभावात् कामिष्यत इत्यादिं भवति, न तु कमिष्यत इत्यादि। अचिण्वत्पक्षे तु गुणायवौ: कामयिष्यत इत्यादि।

(२) अत्र यङ्लुक् नेति गुपू रक्षण इत्यत्र ज्ञापितम्, तत एव तदवगन्तव्यम्।

चेति' यङ्, छस्य च लुक्। कंसेन क्रीतं—कंसिकम्। 'कंसाट्टिठनि'ति टिठन्। स्त्रियां—कंसिकी। घिषादय उदात्ता अनुदात्तेतः।

## परस्मैपदिनः।

२८०। अन, रण, वण, भण, मण, कण, क्वण, व्रण, भ्रण, ध्वण, शब्दार्थाः। ( To ring, to sound, to speak ).

इतः क्रमान्ता उदात्ता उदात्तेतः। अण, रण, वण, भण, मण, कण, क्वण, ष्टण, वन, ध्वन, शब्दे इति दुर्गः।

सर्वे सेटः, अकर्म्मकाः, सकर्म्मकाश्च, परस्मैपदिनः। अण—अणति। आण, आणतुः। आणिथ। अणिता। अणिणिषति। आणयति। मा भवानणिणत्। अणुः—स्वल्पो धान्यविशेषश्च। 'अणश्च' 'धान्येनि'दित्युप्रत्ययः। अणूनां धान्यानां भवनं क्षेत्रम्—अणव्यम्, आणवीनम्—'विभाषे'ति यत्, खञ्च। अणुप्रकारः—अणुकः, कन्। अणुकः—सूक्ष्मदृक्, यावादिपाठात् कन्। अण्डः—'अमन्ताड्डः' इति डः। अड्डुः—जलतरणिः 'अणो डश्चे'त्युकारप्रत्ययो डश्चान्तादेशः।

रण्—रणति। रराण, रेणतुः, रेणुः। रणिता। रणिष्यति। अरणिष्यत्। अरणीत्, अराणीत्। रण्यात्। रिरणिषति। रंरण्यते। रंरणीति, रंरण्टि; रंराण्टः। रणयति,—ते। अरीरणत्,—त। अररणत्,—त। रण्यते। अराणि। काण्यादित्वात् ह्रस्वविकल्पः। राणयतीति गतौ घटादिः। रणनं शब्दः। रणन्त्यस्मिन्निति—रणः यज्ञः, संग्रामश्च। 'वशिरण्योरुपसंख्यान'मिति अकर्त्तरि कारके अप्प्रत्ययः। रणितं—रण्डा। 'अमन्ताड्डः'। रणरणको ह्युत्क्षेपः। घञर्थे कविधान-

मिति कः 'कणग्रादीनां के द्वे भवत' इति द्विर्वचनम्, संज्ञायां कन्। पृषोदरादित्वात् साधुः।

वण्—वणति। ववाण, ववणतुः इत्यादि (१) अवाणीत्, अवणीत्। वकारादित्वादेत्वाभ्यासलोपाभावः। वाणयति,—ते। अवीवणत्, अववाणत्। काण्वादिः। वाणः—शतं तनुः, संज्ञायां घञ्। वाणी—'इञ् वपादिभ्य' इति इञन्तात् 'सर्वतोऽक्ति- न्नर्थादित्येक' इति ङीष्। * अवश्यं वणतीति—वाणिनी, आवश्यकणिन्यन्तात् ङीष्। वण्डः—पूर्ववत् डः, अल्पतनुः पशुः।

भण—भणति। भणतु। भणेत्। अभणत्। अभणीत्, अभाणीत्। भण्यात्। भणिष्यति। अभणिष्यत्। बभाण, बभ- णतुः। भणिता। भाणयति,—ते। अबीभणत्,—त। अबभाणत्, —त। बिभणिषति। बंभण्यते, बंभणीति, बंभण्टि। भण्यते। अभाणि। अयमपि काण्वादिः। भाणः—कर्मणि घञ्। भणितिः —'तितुत्रे'तीण्निषेधे 'तितुत्रेष्वग्रहादीना'मिति वचनादिडा- गमः। भण्डः—डः। भाण्डः—'पुच्छभाण्डे'ति निर्देशाद्दीर्घः। भामेर्वा डप्रत्यये सिद्धिः। सम्भाण्डयते, भाण्डानि संचिनोती- त्यर्थः। 'पुच्छे'त्यादिना णिङ्। (लुङ्) समबभाण्डत।

मण्—मणति। अमाणीत्, अमणीत्। ममाण, मेणतुः। मणिता इत्यादि। मणितम्। मणिः—इन्प्रत्ययः। मणि- प्रकारः—मणिकः, स्थूलादित्वात् कन्। मणिरेव—मणिकः, यावादित्वात् कन्। मणिकः—अलञ्जरः, संज्ञायां कन्। मण्डः—डः।

(१) वर्णं देशनामते न शशददवादीत्यादौ दन्त्योष्ठ्यवादीत्यादीना- मग्रहणात् अस्य च तथात्वात् एत्वाभ्यासलोपो नास्ति।

* अन्तर्वाण्यस्येति—अन्तर्वाणिः, विपश्चित्। 'निष्प्रवाणिश्चे'ति चकारात् 'नेय तसे'ति कपो निषेधः।

कण्—कणति । चकाण । अकणीत्, अकाणीत् । कणिता इत्यादि । अयमपि काण्वादिः । कणयतीति गतौ घटादित्वात् । कणः—लेशः, सूक्ष्मतण्डुलश्च । 'गोचरा'दि-सूत्रे चकारस्यानुक्तसमुच्चयार्थत्वात् घः । कणिका—संज्ञायां कणि 'प्रत्ययस्थादि'तीत्वम् । कण्ठः—ठः । अयं निमीलनार्थश्चुरादौ ।

क्वण्—क्वणति । चक्वाण । अक्वाणीत्, अक्वणीत् । क्वणिता इत्यादि । क्वाणः, क्वणः । निक्वाणः निक्वणः । (क)

व्रण्—व्रणति । वव्राण । व्रणिता इत्यादि । अयं वश्चादिः क्वचित् पठ्यते । दन्त्योष्ठ्यादिरेव सर्वत्र, तथाच यादवः, व्रणिः शब्दार्थविषये, व्रणगात्रचूर्णने इति गात्रचूर्णनार्थोऽयं कथादिः ।

स्वण्—स्वणति । बस्वाण । स्वणिता । ध्वण्—ध्वणति । दध्वाण । ध्वणिता इत्यादि । भ्रणिरपि सम्मतायामत्र पठ्यते ।

२८१ । ओणृ, अपनयने । ( To remove ).

ओण् (ऋट) सक, सेट्, प । ओणति । प्रोणति । औणत् । ओणाञ्चकार । ओणिता । औणीत् । ओणिणिषति । ओणयति,—ते । औणिणत्,—त । मा भवानोणिणत् । ( ख ) । ओण्यते । औणि ।

वनिप्—अवावा । स्त्रियाम्--अवावरी । 'वनो र चे'ति ङीप् रश्च । ओणित्वा । ओणितः । ओणितुम ।

(क) कल्याणप्रक्वणा वीणा । कल्याणप्रक्वाणेति वा । 'क्वणो वीणायाञ्च' इति अनुपसृष्टान्निपूर्वात् वीणाविषयाच्च क्वणेर्वा अप्प्रत्ययः । सोपसर्गार्थं वीणाग्रहणम् । कुणालः—धान्यं, यज्ञोपकरणञ्च । 'पीयुक्वणिभ्यां कालन्ह्रस्वः संप्रसारणञ्चे'ति कालन्प्रत्ययः, यथासंख्यं संप्रसारणञ्च । कुणपम्—'क्वणः सम्प्रसारणञ्च' इति पलप्रत्ययः सम्प्रसारणञ्च । कङ्कणीका—प्रतिसरः 'चङ्क्वणः कङ्कणश्चे'ति यङ्लुगन्तादीकन्प्रत्ययः कङ्कणादेशश्च ।

( ख ) ऋदित्वान्नोपधाह्रस्वः । इदमेव ऋदित्वं द्विर्वचनात् पूर्वमुपधाह्रस्वत्वे ज्ञापकमित्युक्तम् ।

२८२। शोणृ, वर्णगत्योः। ( To be red, to go ).

वर्ण इह लोहितभावः। शोण् ( ऋट ) सेट्, अक, प। शोणति। [शोणति पद्ममिति मनोरमा]। शुशोण। अशोणीत्। शोणिता। शुशोणिषति। शोशोण्यते। शोशोण्टि, शोशोणीति। शोणयति,—ते। अशुशोणत्,—त। शोणितम्। शोणः। शोणी, शोणा—'शोणात् प्राचामि'ति वा ङीष्।

२८३। श्रोणृ, संघाते। ( To collect ).

श्रोणृ ( ऋट ) सेट्, अक, प। श्रोणति। श्रोणिः—इन्-प्रत्ययः। श्रोणी—कृदिकाराद्वा ङीष्। श्रोणा—नक्षत्रम्। अजन्ताट्टाप्।

२८४। श्लोणृ च। ( To collect ).

श्लोण् (ऋट) सेट्, अक, प। श्लोणति इत्यादि। शोणादयः तालव्योष्मादयः।

२८५। पैणृ, गतिप्रेरणाश्लेषणेषु।

( To go, to send, to embracec ).

पैण् ( ऋट ) सेट्, सक, प। लैणृ इति क्वचित् पठ्यते। पैणति इत्यादि। नायं सर्वैराद्रियते।

२८६। भ्रन, शब्दे। ( To sound ).

उपदेशे नान्तोऽयमिति प्रागस्य निर्देशो न कृतः। तस्य प्रयोजनं यङ्लुकीति मैत्रेयः। अतोऽस्य दण्डके पाठः प्रत्युक्तः।

भ्रन्, सेट्, अक, प। भ्रणति। दभ्राण। अभ्रणीत्, अभ्राणीत् इत्यादि। 'रषाभ्या'मिति णत्वम्। दम्भ्रण्यते। यङ्लुकि—दम्भ्रन्ति, दम्भ्रान्त इत्यादौ णत्वस्य 'नश्चापदान्तस्येत्यनुस्वारे' ऽसिद्धत्वात् कृते परसवर्णः, तस्यासिद्धत्वात् पुनर्णत्वं न भवति। अभ्यासस्य 'नुगत' इति नुक्।

२८७। कनी, दीप्तिकान्तिगतिषु। ( To shine, to desire, to go ).

कन् ( ई ) सेट्, अक, प। कनति। चकान। अकानीत्, अकनीत्। कनिता। कान्तः। कनित्वा। य—कन्या। कन्याया अपत्यं—कानीनः 'कन्यायाः कनीनश्चे'ति अण्, कनीनादेशश्च। कनकम्—'क्वुन् शिल्पिसंज्ञयो'रिति क्वुन्।

२८८। ष्टन, वन, शब्दे। ( To thuder, to sound ).

स्तन्, वन्, सेट्, अक, प। स्तनति। तस्तान। स्तनिता। अस्तनीत्, अस्तानीत्। स्तन्यात् इत्यादि। तिस्तनिषति। तंस्तन्यते। तंस्तनीति, तंस्तन्ति। ध्वनतिवत्प्रक्रिया। स्तनयति,—ते। अतिष्टनत्,—त। अभिनिष्टानः—विसर्जनीयः। 'अभिनिसः स्तनः शब्दसंज्ञाया'मिति षत्वम्। अन्यत्र अभिनिस्तनति मृदङ्गः। ण्यत्—स्तान्यम्। अच्—स्तनः। स्तन्यम्—'शरीरावयवाद्यत्' इति भवार्थे यत्। स्तनितम्। स्तनयतीति देवशब्दार्थस्य कथादिपठितस्य।

वन्—वनति। ववान, ववनतुः। अवानीत्, अवनीत्। वनिता इत्यादि। वनितम्। वनित्वा। क्तिन्—वतिः। (१) प्रवत्य (२)। वन्तिः—क्तिच् (तिक्) (३)। वनिष्ठः—याचनं,

(१) 'तितुत्रे'तीट् निषेधा'दनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति' इत्यनुनासिकलोपे वतिरिति भवति। अनुदात्तोपदेशा यमिरमिनमिहनिगमिमन्यतयः।

(२) 'वा ल्यपी'त्यनुदात्तोपदेशादीनां विधीयमानोऽयमनुनासिकलोपविकल्पो व्यवस्थितविभाषाविज्ञानात् नान्तेषु नित्यः। अन्यत्र विकल्प इतीह नित्यः।

(३) 'न क्तिचि दीर्घश्चे'ति दीर्घानुनासिकलोपयोर्निषेधः। 'अनुदात्तोपदेशवनती'ति शतिपा निर्देशात् वंवान्त इत्यादावनुनासिकलोपो न भवति। वनोतीतिनिवृत्त्यर्थन्तु शतिपा निर्देशो न भवति, तनोत्यादित्वेन तस्यानुनासिकलोपस्येष्टत्वात्।

मांसविशेषश्च। 'ऋतन्यञ्जिवनिचत्या' दिनेष्ठच्। वनम्—अच्। वनानां समूहः—वन्या। 'पाशादिभ्यो' य इति समूहे यः, स्वभावात् स्त्रीलिङ्गम्। वन्यम्—दिगादित्वाद्भवार्थे यत्। वानेयम्—ढक् शैषिकः। इन्—वनिः, वनो 'कृदिकारादक्तिन' इति वा ङीष्।

२८९। वन, षन, सम्भक्तौ। ( To honor, to help )

वनेरर्थभेदात् पुनः पाठ इति मैत्रेयः। वन्, सन्, सेट्, सक, प। वनति इत्यादि पूर्ववत्। सन्—सनति। ससान, सेनतुः, सेनुः। सेनिथ। असानीत्। सनिता। आशीः—सायात्, सन्यात्। सिसनिषति, सिषासति। सासायते। संसन्यते। संसनीति, संसन्ति; संसातः। सायते, सन्यते। असानि। ण्यत्—सान्यम्। सातिः। सातः। सातवान्। [ सनितः। सनितवान्। सनित्वा। ] सनितुम्। सानुः—'दृसनि' इत्यादिना ञुण्। वनु, षनु इति द्वयं तनादौ।

२९०। अम, गत्यादिषु ( To go etc )

कनी दीप्तिगतीत्यत्र गतेः परयोः शब्दसम्भक्त्योरादिशब्देन ग्रहः। अम्, सेट्, सक, प। अमति। आम, आमतुः। आमीत्। अमिता इत्यादि। अमिमिषति। आमयति। अम्यम्। अमितः, आन्तः। अमितवान्, आन्तवान्। क्विप्—आन्। औ—आमौ। अमतम्—'अमिनक्षी'त्यादिना अतन्। अमितः—'अमे'रित्यादिना इतः। आम्रः 'अमितम्योर्दीर्घश्चे'ति रप्रत्यये दीर्घः। अन्त्रम्—'अत्यमिचमिशमिभ्यः क्तन्' इति क्तन्।

२९१। द्रम, हम्म, मीम्ट, गतौ। ( To go ).

द्रम्, हम्म्, मीम् (ऋ) सक, सेट्, प। द्रमति। दद्राम। द्रमिता इत्यादि। लुङि वृद्धिनिषेधात् अद्रमीत्। सन्—दिद्र

मिषति । दन्द्रम्यते । दन्द्रमीति, दन्द्रन्ति ; दन्द्रान्त इत्यादि । उत्तमे 'म्वोश्चे'ति नत्वे णत्वम्—इन्द्रण्मीत्यादि । द्रमयति । अदिद्रमत् । अद्रमि, अद्रामि । द्रमन्द्रमम्, द्रामन्द्रामम् । स्यादिषु चिण्वदिट्पक्षे दीर्घविकल्पे णिलोपे द्रमिष्यते, द्रामिष्यते इत्यादि । शुद्धे पुनरिटि णेर्गुणायादेशयोर्द्रमयिष्यत-इत्यादि । अण्यन्तात् चणि 'णोपान्त्योपदेशे'ति वृद्धिनिषेधात् अद्रमीत्येवेति । एवं णिति कृति च द्रमः, द्रमकः इत्यादि । दन्द्रमणः—'जुचङ्क्रम्ये'त्यादिना तच्छीलादौ युच् । द्रमिडः—'अमन्ताड्ड' इति डः ।

हम्म्—हम्मति । जहम्म । अहम्मीत् । हम्मिता इत्यादि । जिहम्मिषति । जंहम्म्यते । जंहम्मीति, जंहन्ति । जंहन्त इत्यादावनुपधात्वान्नोपधादीर्घः । लङि हलङ्यादिसंयोगान्त-लोपयोर्'म्रो नो धातो'रिति नत्वे अजाहन् । हम्मयति । अजहम्मत् । हम्मित्वा । हम्मितः । हम्मतिः—ज्ञानं, गत्यर्थो बुद्ध्यर्थः, न हम्मतिः अहम्मतिः—अज्ञानम् । यद्वा अहमिति मतिः । अहंशब्दो मान्तोऽहङ्कारवचनोऽव्ययम् ।

मीम्—मीमति । मिमीम, मिमीमतुः । मीमिता । अमीमीत् । मिमीमिषति । मेमीम्यते । मेमीमीति । मेमीन्त इत्यादि । लङि—अमेमीन् । मीमयति । अमिमीमत् । मीमित्वा । मीमितः । अयं शब्दे चेति क्वचित् पठ्यते ।

२८२ । चमु, छमु, जमु, झमु, अदने । ( To eat )

सर्वे उदनुबन्धाः, सेटः, सकर्मकाः, परस्मैपदिनश्च । चमति । चचाम, चेमतुः । चेमिथ । चमिता । चमिष्यति । अचमिष्यत् । अचमीत् । चम्यात् । चामयति । अचीचमत् । चिचमिषति । चंचम्यते । चंचमीति, चंचन्ति । चम्यते ।

आङ्पूर्वत्वे 'ष्ठिवुक्लमुचमां शिती'ति दीर्घः। आचामति। आचामतु। आचामेत्। आचामि। आचमयति। लुङि वृद्धिनिषेधात्—अचमि। चमः। चमकः इत्यादि। अत्रापि अनाचमीति वचनात् आङ्पूर्वस्य—आचामि, आचामः इति वृद्धिरेव। चिचमिषति। चञ्चम्यते। चञ्चमीति, चञ्चन्ति; चञ्चान्त इत्यादि। अत्रापि प्रकृतिवदाङः पूर्वत्वे चिणि ञिति णिति कृति वृद्धिः। अन्यत्र तदभावश्च—चामयति। 'न कम्यमिचमा'मिति मित्त्वनिषेधः। चम्यतेऽत्रेति—चमसः, 'अत्यमिचमी'त्यसन्। चमूः—'कृषिचमितनिरसिसर्जिभ्य ऊ'रित्युप्रत्ययः।

छम् (उ)—छमति। चच्छाम। छमिता इत्यादि। चिच्छमिषति। चंछम्यते। चंछमीति; चंछन्ति, चंछान्त इत्यादि। छमयति, अमन्तत्वान्मित्त्वम्। चिण्णमुल्परे णौ 'चिण्णमुलोर्दीर्घोऽन्यतरस्या'मिति वा दीर्घः—अच्छमि, अच्छामि; छमंछमम्, छामंछाममिति। णिचोऽभावे चिणि ञिति णिति च कृति 'नोदात्तोपदेशस्ये'ति वृद्धिनिषेधात् अच्छमि इत्यादिरेव भवति। जम्—जमति। जजाम, जेमतुः। जमिता। झम्—झमति। जझाम। झमिता इत्यादि पूर्ववत्। अत्र मैत्रेयः—जिमिं केचिदिच्छन्ति—जेमनमिति।

२९३। क्रमु, पादविक्षेपे। ( To step, to walk )

क्रम् ( उ ) सेट्, सक, प। क्रामति। क्रामतु, क्रामतात्; क्रामताम्, क्रामन्तु। क्राम, क्रामतात्; क्रामतम्। अक्रामत्। क्रामेत्। लिट्—चक्राम, चक्रमतुः, चक्रमुः। चक्रमिथ, चक्रमथुः, चक्रम। चक्राम, चक्रम; चक्रमिव,—म। क्रमिता। क्रमिष्यति। आशीः—क्रम्यात्। लुङ्—अक्रमीत्, अक्रमिष्टाम्,

अक्रमिषुः । अक्रमीः, अक्रमिष्टम्—। अक्रमिषम्, अक्रमिष्व,—। अक्रमिष्यत् । 'वा भ्राशे'त्यादिना शप् ( अन् ) विषये पक्षे श्यनो ( यन् ) विधानात्—क्राम्यति । क्राम्यतु । अक्राम्यत् । क्राम्येत् । सन्—चिक्रमिषति । चंक्रम्यते । चंक्रमीति, चंक्रन्ति । णिच्—क्रमयति,—ते । अचिक्रमत्,—त । क्राम्यते । अक्रमि * । केचिदत्र वेत्यनुवर्त्तयन्ति, सा च व्यवस्थितविभाषेत्युक्त्वा संक्रामयतीति उदाहरन्ति । अविगीतस्तु संक्रमयतीति । अत्रैव 'रसातले संक्रमित' इत्यादि प्रयोगोऽनुकूलः । 'जरामन्यस्मिन् संक्रामय ।' इति महाभारतम् ।

अनुपसर्गाद्वेति पक्षे आत्मनेपदम्—क्रमते, (१) क्रमेते, क्रमन्ते । आथे—क्रमेथे । ए—क्रमे । वहे—क्रमावहे । अक्रमत । क्रमेत । चक्रमे । चक्रमिषे । क्रान्ता । क्रंस्यते । क्रंसीष्ट । लुङ्—अक्रंस्त, अक्रंसाताम्, अक्रंसत । लृङ्—अक्रंस्यत । चिक्रंस्यते । अत्रापि शप्विषये श्यन्—क्रमते इत्यादि । सन्—चिक्रंसते । 'वृत्तिसर्गतायनेषु क्रम' इति वृत्त्यादिषु नित्यमात्मनेपदमुदाहार्य्यम् । वृत्तिरप्रतिबन्धः, सर्ग उत्साहः, तायनं स्फीतता । इदन्तु वृत्त्यादिविषयमात्मनेपदमुपसर्गाणां मध्ये परोपाभ्यां योग एव भवति, अन्योपसर्गयोगे तु परस्मैपदमेव, तेन संक्रामतीति परस्मैपदम् । यदायमाङ्पूर्वो ज्योतिरुद्गमनार्थस्तदात्मनेपदी—आक्रमते भानुरित्यादि । ज्योतिरुद्गमनाभावात् आक्रामति धूमो हर्म्यतलादित्यत्र न भवति ।

---

* "हरेयदक्रामि पदैककेन ख"मिति नैषधीयप्रयोगश्चिन्तनीयः । धातुपारायणमतेः तु चुरादित्वविवक्षया सिद्धमिति दुर्गादासः ।

(१) "वारिपूर्णां मही क्रत्वा पश्चात् संक्रते गुरुः" इत्यादौ समशब्दस्योपसर्गप्रतिरूपकत्वेन अनुपसर्गत्वात् 'वागे'रित्यात्मनेपदम् । वृत्युत्साहतायनेषु उपसर्गान्तरपूर्वादप्यात्मनेपदमिति शरणदेव इति दुर्गादासः ।

उद्गमने वर्त्तमानोऽकर्म्मक इति कैयटोक्तम्, पदमञ्जर्य्यान्तु आक्रामति धूमो हर्म्यतलमिति। वृत्तिमुपादाय उद्गमने क्रमिरकर्म्मकः, तस्मादाक्रामति धूमो हर्म्यतलादिति पठितव्यमित्युक्तम्। "नभः समाक्रामति चन्द्रमा" इत्यत्र नोद्गमनं विवक्षितम्। विक्रमते—सुष्ठु पदानि विक्षिपतीत्यर्थः, "वेः पादाभ्या"मिति आत्मनेपदम्। 'जले विक्रममाणाः' भट्टिः ८।२४। 'साधु विक्रमते वाजी'। प्रक्रमते, उपक्रमते भोक्तुं—'प्रोपाभ्या'मिति आरम्भे तङ्। अन्यत्र प्रक्रामति, उपक्रामतीति आगच्छति उपगच्छतीत्यर्थः।

(ङ) क्रमित्वा, क्रान्त्वा, क्रन्त्वा। क्रान्तिः। घञ्—क्रान्तः। क्रमः। क्रामन्, स्त्रियां क्रामन्ती। क्रास्यन्, स्त्रियां क्रास्यन्ती। क्रममाणः। क्रस्यमाणः। प्रक्रंस्यमानः। क्रम्यः। क्रमणीयः। तृन्—क्रन्ता। कर्त्तर्य्येव क्रति क्रमेरिट्प्रतिषेधः। प्रक्रमितव्यः। अ—चिक्रंसा। उ—चिक्रंसुः। आत्मनेपदिनस्तु—चिक्रमिषा, चिक्रमिषुः। क्रमितुम्। क्रममधीते—क्रमकः। 'क्रमादिभ्यो वुन्' [ वुण् ] इति तदधीते तद्वेदेति विषये वुन् [ वुण् ]। चङ्क्रमणः। 'जुचङ्क्रम्ये'ति युच्। न क्रामतीति नक्रः—डः। "नभ्राणनपान्नवेदानासत्यानमुचिनकुलनखनपुंसकनक्षत्रनक्रनाकेषु प्रकृत्ये"ति निपातान्नञो नलोपाभावः। क्रिमिः—'क्रमिगमिनमिस्तामच इच्चे'तीन्प्रत्यये अकारस्येकारः। क्रिमिणः—'लोमादि पामादि-पिच्छादिभ्यः शनेलच्' इति पामादिपाठात्मत्वर्थीयो नः। उपक्रमणिका।

प्र—आरम्भः—प्रक्रमते। परा—पराक्रमः। अप—अपक्रमः, अपसरणम्। सम्—संक्रमणम्, प्रवेशः, प्राप्तिः। अनु—अनुक्रमणम्, अनुसरणम्। अति—अतिक्रमः, लङ्घनम्। आ—आक्रमणम्। उत्—उत्क्रमः, उद्गमनम्। व्यति—व्यति

क्रमः । व्युत्—व्युत्क्रमः । उप—उपक्रमः, आरम्भः । निः—निष्क्रमः, निर्गमनम् । परि—परिक्रमः । वि—विक्रमः ।

## आत्मनेपदिनः ।

२८४ । अय, वय, पय, मय, चय, तय, णय, गतौ । (To go)

सर्वे सेटः, सकर्मकाः, आत्मनेपदिनश्च । इत आरभ्य रेवत्यन्ता उदात्ता अनुदात्तेतः । अय्—अयते । अयताम् । आयत । अयेत । अयाञ्चक्रे—२ । अयिता । अयिषीष्ट । अयिषीध्वम्, अयिषीढ्वम् । अयिष्यते । लुङ्—आयिष्ट, आयिषाताम्, आयिषत । ध्वम्—आयिध्वम्, आयिढ्वम् । आयिष्यत । अयियिषते । आययति । आयियत् । माभवानयियत् । अय्यते । आय्यत । आयि । आयः, अयः—घञचौ । चलनार्थत्वे यान्तत्वात् नास्य युजस्ति, तेन सामान्यस्तृन्—अयिता । प्लायते । पलायते । 'उपसर्गस्यायतौ' इति उपसर्गस्थस्य रेफस्यायतिपरत्वाल्लत्वम् । निरयते, निलयते । दुरयते, दुलयते, इति निर्दुरो वा लत्वम् । प्रत्ययते इति अतिव्यवहिते नेष्टम् ।

वय्—वयते । ववये । ववयिषे । वयिता । अवयिष्ट इत्यादि पूर्ववत् । विवयिषते । वावय्यते । वावयीति, वावति ; वावतः, वावयति । वावयीषि, वावषि ; वावथः, वावथ । वावयीमि, वावामि, वावावः, वावामः । लोट् हि—वाव । आनिप्—वावयानि । लङि तिप्सिपोः—अवावत्, अवावः ।

पय्—पयते । पेये । अपयिष्ट । पयिता । मय्—मयते । मेये । अमयिष्ट । मयिता । चय्—चयते । चेये । अचयिष्ट । चयिता । तय्—तयते । तेये । तयिता । अतयिष्ट । नय्—नयते । नेये । अनयिष्ट । नयिता इत्यादि वयिवत् । नयतेर्णोपदेशत्वात् प्रणयते इति णत्वं भवति । अत्र षयीति मूर्द्धन्यो-

आदिरपि क्वचित् पठ्यते । वयादीनामपि अयिवत् युज् निषेधात् ताच्छील्यादौ तृनेव । णय रक्षणे चेति मैत्रेयः । तय णयेत्येके । अयादीनां क्विप्, अत्, वत् इत्यादि भवति । दुर्गस्तु णयस्थाने रयं पठति ।

२९५ । दय, दानगतिरक्षणहिंसादानेषु ।
( To fill piety, to give, to move,
to protect, to injure, to take ).

अत्र रक्षणमिति दुर्गो न पठति । सर्पिषो दयते, सर्पिः दयते । 'अधीगर्थदयेशां कर्मणी'ति कर्मणि शेषे षष्ठी । अशेषे तु द्वितीयैव ।

दय्, सक, सेट्, आ । दयते । दयाञ्चक्रे—३ । अदयिष्ट । दयिता । दाययति—ते । अदीदयत्—त । दिदयिषते । दादय्यते । दादयीति, दादति । दय्यते । अदायि । दयित्वा । दयालुः—'स्पृहिगृही'त्यादिना आलुच् । भिदादित्वात् अङ्—दया ।

२९६ । रय, गतौ । ( To go )

रय, सेट्, सक, आ । रयते । रेये, रेयिषे । अरयिष्ट इत्यादि । वयिवत् । अच्—रयः । घञ्—रायः ।

२९७ । ऊयी, तन्तुसन्ताने । ( To weave )

ऊय् (ई) सेट्, सक, आ । ऊयते । औयत । ऊयाञ्चक्रे । औयिष्ट । ऊयिता । औयिष्यत । ऊययति । माभवानुयियत् । द्विर्वचनात् पूर्वमुपधाया ह्रस्वत्वमित्युक्तम् । ऊयियिषते । ऊयित्वा ( ई ) ऊतः, ऊतवान् । ऊतिः—बाहुलकात् क्तिन् । 'ऊतियूती'ति निपातनमस्वतः क्तिनि उदात्तार्थमिति वृत्तावुक्तम् ।

२९८। पूयी, विशरणे दुर्गन्धे च।

( To be dissolved, To putrefy )

पूय् ( ई ) सेट्, अक, आ। पूयते। पुपूये। अपूयिष्ट। पूयिता इत्यादि। पुपूयिषते। पोपूय्यते। पोपूयीति, पोपोति। पोपूतः इत्यादि वयतिवत्। पूययति। अपूपुयत्। पूयित्वा। ( ई ) पूतः। पूतवान्। पूतिः। 'गन्धस्येदुत्पूती'त्यादिनिर्देशात् क्तिन्। पूयः—पचाद्यच्।

२९९। क्नूयी, शब्दे उन्दे च। ( To sound, to be wet )

दुर्ग उन्दे चेति न पठति। क्नूय् ( ई ) सेट्, अक, आ। क्नूयते। चुक्नूये। अक्नूयिष्ट। क्नूयिता इत्यादि पूयतिवत्। क्नोपयति। अचुक्नुपत्। ( ई ) क्नूतः। क्नूतवान्। चेलक्नोपं वृष्टो देवः। 'चेले क्नोपे'रिति ण्यन्तादस्मात् कर्मणि चेल उपपदे वर्षप्रमाणे गम्यमाने णमुल्। यावता वर्षेण चेलं क्नूयते तावद्वृष्ट इत्यर्थः। चेल इत्यर्थग्रहणात् वस्त्रक्नोपमित्याद्यपि भवति।

२००। क्ष्मायी, शब्दे विधुनने। ( To sound, to tremble )

दुर्गमते शब्द इत्यधिकम्। क्ष्माय् (ई) सेट्, सक, आ। क्ष्मायते। चक्ष्माये। क्ष्मायिता। अक्ष्मायिष्ट। चिक्ष्मायिषते। चाक्ष्माय्यते। चाक्ष्मायीति, चाक्ष्माति। तसादौ अभ्यासे व्यञ्जनादौ ईत्वमभ्यस्तस्य। चाक्ष्मीत इत्यादि। हि—चाक्ष्मीहि। तुह्योस्तातङि—चाक्ष्मीतात्। लङ्—अचाक्ष्मायीत्, अचाक्ष्मीताम्, अचाक्ष्मायुः इत्यादि। क्ष्मापयति। अचिक्ष्मपत्। अस्यापि सानुबन्धकस्य निर्देशात् यङ्लुकि णौ चाक्ष्माययतीति। ( ई ) निष्ठा—क्ष्मातः। क्ष्मातवान्।

२०१। स्फायी ओ प्यायी वृद्धौ। ( To grow )

स्फाय् ( ई ) प्याय् ( ई, ओ ) अक, सेट्, आ। स्फायते। पस्फाये। अस्फायिष्ट। स्फायिता इत्यादि ह्मायिवत्। णिच्— स्फावयति। लुङ्—अपिस्फवत्। ई—स्फीतः। स्फीतवान्— 'स्फायः स्फीर्निष्ठाया'मिति स्फीभावः। वत्वस्फीभावौ प्रकृति· ग्रहणन्यायेन यङ्लुक्यपि भवतः—पास्फावयति। स्फायत— इति स्फाः—क्विप्। स्फाश्च तदण्डञ्च—स्फाण्डम्। एवं स्फान्त्वम्, वृद्धाण्डमुच्यते। स्फारः 'स्फायितञ्ची'त्यादिना रक्।

प्याय्—प्यायते। पिप्ये। पिप्यिषे, पिप्याथे, पिप्यिध्वे। पिप्यिवह्रे। प्यायिता इत्यादि पूर्ववत्। लुङि कर्त्तरि तशब्दे वा चिण्—अप्यायि, अप्यायिष्ट ; अप्यायिषाताम्, अप्यायिषत। यङ्—पेपीयते। यङ्लुक्—पाप्याति, पाप्यात इत्यादि पूर्ववत्। पीनः, पीनवान्—पिप्याते, पिप्यिरे। स्वाङ्गे निष्ठायां पीभावः। उपसृष्टे तु नैव—आप्यानः, प्रप्यानश्चन्द्रमा इति। स्वाङ्गा· दन्यत्र—प्यानः स्वेदः, प्याना बुद्धिः। आङ्पूर्वादन्धूधसोर्भव· त्येव—आपीनोऽन्धुः, आपीनमूध इति।

२०२। तायृ, सन्तानपालनयोः। (To spread, to protect)

ताय् ( ऋ ) सक, सेट्, आ। सन्तानः प्रबन्धः। तायते। तताये। तायिता इत्यादि पूर्ववत्। लुङ्—अतायि, अतायिष्ट ; अतायिषाताम्, अतायिषत। ताययति। (ऋ) अततायत्। तायितः। तायितवान्।

२०३। ग्मल, चलनसंवरणयोः। ( To shake, to cover )

ग्मल्, सेट्, सक, आ। ग्मलते। ग्मलताम्। अग्मलत। ग्मलेत। ग्मेले। ग्मलिता। ग्मलिष्यते। ग्मलिषीष्ट। माग्मल्यते।

शाशलीति, शाशल्ति। अशाशल्। शालयति। अशीशलत्। शलित्वा। शलितः। शलभः—'कृटृशलिभ्योऽभच्'। शल्कम्—'इणिकापाश'ेति कन्। शलाका—'शलिपतिपटिभ्यो नि'दित्याकः। शालूकः—'शलिमण्डिभ्यामूकण्'ित्यूकण्। शल्लं कुण्डलादिवत् कलप्रत्ययः। शल्ली—पिप्पल्यादित्वात् ङीष्, जातिलक्षणो वा। आलुच्—शलालु, गन्धद्रव्यविशेषः। शलालु पण्यं व्यवहार्यमस्य शलालुकः। 'शलालुनोऽन्यतरस्या'मिति प्रथमान्तादस्य पण्यमित्यर्थे ष्ठन्। स्त्रियां—शलालुकी। अन्यतरस्यां ग्रहणात् 'प्राग्वहतेष्ठ'गिति ठकि 'किति चे'त्यादिवृद्धौ शालालुकः। उभयोरपि ठशब्दयोरकः, परत्वात् 'इसुसुक्तान्तात् कः' इति कादेशः। अतएव शलालुन इति निर्देशादालुप्रत्ययः। शालेति शालतावुक्तम्। अयं गत्यर्थो ज्वलादौ परस्मैपदी।

२०४। वल, वल्ल, संवरणे च। ( To cover )

वल्, वल्ल्, सेट्, सक,प। वलते। ववले। वलिता। वलिष्यते। अवलिष्यत। अवलिष्ट। वालयति,—ते। अवीवलत्, —त। विवलिषति,—ते। वावल्यते। वावलीति, वावल्ति। वल्यते। अवालि। णौ घटादित्वात् वलयति इति। वालः। 'हलश्च'ेति करणे घञ्—वारः, 'वालमूले'त्यादिना पक्षे रः। वलिः, वली—इनन्तात् 'कृदिकारादक्तिन' इति वा ङीष्। वलिनः—पामादित्वान्मत्वर्थे नः। वलिभः, 'तुन्दिवलिवटेर्भः' अयमपि मत्वर्थीयः। वलिः—'वलेर्दनश्चाद्विरण्' इति इन्प्रत्यये वलादेशः। वलभी—बाहुलकादभचि पिप्पल्यादिदर्शनात ङीष्। वलयः—'वलिमलितनिभ्यः कयन्नि'ति कयन्। 'वल्गुः—'वलेर्गुक् चे'ति उक्प्रत्ययो गुगागमश्च। वलाकः—'वलाकादय-

स्रे'त्याकनन्तो निपातितः। वलाकाया अपत्यं—वालाकिः, 'बाह्वादिभ्यश्च'तीञ्प्रत्ययः। वलाका अस्य सन्तीति वलाकी, 'व्रीह्यादिभ्यश्च'ेति मत्वर्थे इनिः। वलीकं लिप्तम्, 'अलीकादयश्च'तीकन्। वल्मीके बाहुलकान्मुडागमः।

वल्ल्—वल्लते। ववल्ले। अवल्लिष्ट। वल्लिता इत्यादि। यङ्लुकि तिप्सिपोर्हल्ङ्यादिलोपे संयोगान्तलोपे च—अवावल्। वल्लभः 'रासिवल्लिभ्यां चे'त्यभच्। वल्लरी, बाहुलकादरप्रत्यये पिप्पल्यादिदर्शनात् ङीष्। वल्लूरं शुष्कमांसम्। 'खर्जपिञ्जादिभ्य ऊरोलचा'विति ऊरः।

३०५। मल, मल्ल, धारणे। ( To hold )

मल्, मल्ल्, सेट्, सक, आ। मलते। मेले। मलिता। अमलिष्ट। मल्लते इत्यादि पूर्व्ववत्। माला—'अकर्त्तरि च कारके' इति कर्म्मणि घञ्। 'लस्ये'त्यत्र भाष्यकैयटयोर्माङोऽयं लप्रत्यय उक्तः। माली—व्रीह्यादित्वादिनिः। मालभारी—'इष्टकेषीकामालानां चिततूलभारिष्वि'ति यथासंख्यान्मालाया भारिण्युत्तरपदे ह्रस्वः। माल्यम्—ण्यत्। 'ऋहलोर्ण्य'त्। मलयः—वलिमलोति कयन्। मल्यते शरीरं धार्य्यते इति मलम्,—अच्। मृजेर्वा व्युत्पादयिष्यते। मलिनः मलीमसः—'ज्योत्स्नातमिस्रे'त्यादिना इनचीमसजन्तौ मत्वर्थे निपातितौ। केन मल्यत इति कमलम्—घञर्थे कविधानमिति कः। 'कर्त्तृकरणे कृते'ति समासः। कमेर्वा कलप्रत्यये व्युत्पादनीयः। आमलकी—'क्वुन् शिल्पिसंज्ञयोरपूर्वस्यापि' इति क्वुनि गौरादित्वात् ङीष्। मल्लः—अच्। मल्लिका—'संज्ञाया'मिति स्त्रियां ण्वुल्। मल्लकः—क्वुन्। मलं मल्लते धारयति इति—मलमल्लं, कौपीनम्।

२०५ (क)। भल, भल्ल, परिभाषणहिंसादानेषु ।
( To speak, to injure, to give )

भल्, भल्ल्, सेट्, सक । भलते । भल्लते इत्यादि । भालम् 'अकर्त्तरि च कारके' इति घञ् । भां दीप्तिं लातीति वा भालः । भल्लूकः श्वापदः । 'उलूकादयश्च'ेति ऊकनन्तो निपातितः । भल्लते हिंस्यते अनेन—भल्लः, 'पुंसि संज्ञाया'मिति घः । भल्ली—'जातेरस्त्री'ति ङीष् ।

२०६ । कल, शब्दसंख्यानयोः । (To sound, to count)

कल्, सेट्, अक, सक, आ । कलते । कलेत । कलताम् । अकलत । अकलिष्ट । चकले इत्यादि । कालः—'अकर्त्तरि च कारके' इति घञ् । काले भवं काल्यम्—यत् । कालः प्राप्तोऽस्य—काल्य उत्सवः । 'कालाद्य'दिति प्रथमान्तादस्य प्राप्तमित्यर्थे यत् । अनित्यो वर्णः कालेन रक्तो वा—कालकः, स्वार्थे कन् । काली—वर्णे ङीष् । अन्यत्र—काला, कालिका । संज्ञायां कनि ह्रस्वः । कलिलम्—'सलिकली'ति इलच् । कलभः, 'ऋगटस्सलिकलो'त्यभच् । कलिः—इनितीन्प्रत्ययः । कलिना दृष्टं साम—कालेयम् । कलिका—संज्ञायां कन् । कलिं गृह्णाति—कलयति, णिच् । कलयाञ्चक्रे—२ । अचकलत् । अयं क्षेपे चुरादिः । गतिसंख्यानयोः कथादिः ।

२०७ । कल्ल, अव्यक्ते शब्दे । (To sound indistinctly)

कल्ल्, सेट्, अक, आ । कल्लते इत्यादि । कल्लोलः—किशोरादित्वादोरप्रत्ययः,कपिलिकादित्वाल्ललम् । अशब्द इति स्वामी । अशब्दस्तूष्णीम्भाव इति ।

२०८ । तेवृ, देवृ, देवने । ( To play )

तेव्, देव्, (ऋट) सेट्, अक, आ । तेवते । तेवताम् ।

अतेवत। तेवेत। तेविता। तेविष्यते। तेविषीष्ट। तितेवे। अतेविष्ट। अतेविष्यत इत्यादि। तितेविषते। तेतेव्यते। तेवयति। (ऋट) अतितेवत्। (१) देव्—देवते इत्यादि पूर्ववत्। वुन्[वुण्]—आदेवकः। देवरः—'अर्त्तिकमिभूमिवाशिभ्यश्च'-त्वरः। देवलः—कपिलिकादित्वाद्वा लत्वम्। यद्वा—देवाल्लाँति आदत्त इति—देवलः, लातेः कः। अनयोः क्विप्—द्यूः, द्यूः। दिवोति प्रीणनार्थोऽयं परस्मैपदी। दिवु इति क्रीड़ार्थो दिवादिः, परिपूजनार्थश्चुरादिः।

२०९। षेवृ, गेवृ, ग्लेवृ, पेवृ, म्लेवृ, सेवने। (To serve)

सेव्, गेव्, ग्लेव्, पेव्, म्लेव्, (ऋट) सेट्, सक, आ। सेवते। सिषेवे। असेविष्ट। सेविष्यते। सेविता। असेविष्यत। सिसेविषते। सेषेव्यते। सेवयति,—ते। (ऋट) असिषेवत्,—त। सेव्यते। असेवि। परिषेवते। पर्य्यषेवत। (२) एवं विषेवते, निषेवते इत्यादि विनिभ्यामप्युदाहार्य्यम्। सेवित्वा। सेवितः। क्विप्—स्यूः। अ—सेवा। गेवते। ग्लेवते। पेवते। म्लेवते इत्यादि।

---

(१) वकारान्तानामूड्भाविनां भाषायां यङ्लुक् नास्ति। 'च्छ्वोः शूड़ित्य'त्र काङ्ङ्ग्रहणानुवृत्त्यनुवृत्ती प्रस्तुत्य तत्र लेतावानेव विशेषः। अनुवर्त्तमाने क्ङिद्ग्रहणे—छ्वः षत्वं वक्तव्यमिति भाष्ये उक्तत्वात्।

(२) परिनिविभ्यः सेवसित इत्यादिना षत्वं 'सात् पदाद्यो'रिति निषेधापवादः। 'प्राक्सितादड्व्यवायेऽपी'ति वचनात् पर्य्यषेवतेत्यादावपि भवति। परिषिषेविषत इत्यषत्वोति नियमः 'स्थादिष्वभ्यासेन चाभ्यासस्ये'त्यनेन बाध्यते।

अत्र मैत्रेयादयो दन्त्यादिमपि वदन्ति। तथाच 'परिनिविभ्यः सेवे'त्यत्र न्यासेऽपि षोपदेशस्य 'सात् पदाद्यो'रिति निषेधे प्राप्तेऽपरस्य त्वप्राप्ते चेति तदिदं षोपदेशत्वंचणपयुर्ंदासे सेकस्तवर्ज्जमिति स्यायतिवदनुपादानाद्भाष्यकारस्यानभिमतत्वमिव प्रतीयते। अतएव 'परिनिविभ्य' इत्यत्र हरदत्तः—सेवतिर्भ्वादिष्वनुदात्तेदित्याह, न तु सेवितीति।

३१० । रेव्ट, प्लवगतौ । * ( To leap )

रेव् (ऋ) सेट्, अक, आ। प्लवगतिः प्लुतगतिः। रेवते इत्यादि। रेवा—अपि टाप्। रेवणः—अनुदात्तेत्त्वात् चलनार्थत्वाद्वा युच्। आयादय उदात्ता अनुदात्तेतः।

## परस्मैपदिनः।

३११ । मव्य, बन्धने। (To bind)

मव्य मव बन्धने इति दुर्गः पठति। एतदादयो वन्यन्ता उदात्तेतः।

मव्य्, सेट्, सक, प। मव्यति। मव्यतु। अमव्यीत्। मव्येत्। ममव्य। मव्यिता। मव्यिष्यति। मव्यात्। मामव्यते। (१) मिमव्यिषति। मामव्यीति, मामति; (ईडभावे व्योर्लोपः) मामौतः, मामव्यति। मामव्योषि, मामसि; मामौथः, मामौथ —यलोपः ऊठि वृद्धिः। मामव्योमि, मामौमि। अनुनासिकत्वाद्रूटि वृद्धिः। मामौवः। यथा तु भाष्यं तथास्य न यङ्लुगस्ति, तच्च तेवतावुक्तमुपपादितञ्चेति। क्विप्—मौः।

३१२ । सूर्क्ष्य, ईर्क्ष्य, ईर्ष्य, ईर्ष्यार्थाः। (To envy)

त्रय एव सेटः, अकर्मकाः, परस्मैपदिनश्च। सूर्क्ष्य्—

* अत्र मैत्रेयः—प्लव इति धात्वन्तरमाह, तच्चिन्त्यं यदि हि स्यात् आप्लवशब्दस्य साक्षात् घञि सिद्धौ तदर्थं 'विभाषाङि रुप्लुवो'रिति प्लुवः, पक्षे घञ्विधानमनर्थकं स्यात्। तथा प्लुङेर्णौ ह्रस्वादादेशयोश्चङि णौ कृतस्य स्थानिवत्त्वात् प्लुशब्दस्य द्विरुक्तावपुप्लुवदिति नित्ये प्राप्ते पक्षे अपिप्लवदिति सिद्ध्यर्थं 'स्रवतिशृणोतिप्रवतिप्लवतिच्यवतीनां वे"त्युकारस्येत्त्वविधानमनर्थकं स्यादिति। सति ह्यस्मिन्ननेनैवापिप्लवदिति भविष्यति। अतएव क्षिलांपरितुष्य मैत्रेयोऽपि प्लव इत्येक इत्याह।

(१) अत्र हलादौ यदा 'हलो यमा'मिति धातुयकारस्य लोपः, तदार्द्धधातुकमाश्रित्याल्लोपः 'यस्य हल' इति यङोऽपि लोपः। मामवितेत्यादि। यदा 'हलो यम'मिति न भवति, तदा पूर्ववद्यङो लोपे मामव्यितेत्यादि।

सूर्च्य॑ति। सूर्च्य॑तु। असूर्च्य॑त्। सूर्च्ये॑त्। सुषर्च्य॑। सूर्च्यि॑ता। सूर्च्यि॑ष्यति। सूर्च्यात्। असूर्च्यीत्। असूर्च्यि॑ष्यत्। सुसूर्च्यि॑षति। 'स्तौतिण्योरेवे'ति नियमान्न षत्वम्। सोषूर्च्य॑ते। 'हलो यमा'मिति पक्षे यलोपः। अन्यदा तु यकारद्वयम्। सोषूर्च्यीति। सोषूर्ष्टि, बहूनां समवाये द्वयोरपि संयोगसंज्ञाया आश्रितत्वात् 'स्कोः'रिति कलोपः। लङि तिप्सिपोरित्यादिना कलोपे असोषूर्ट्। सर्वत्र यकारस्य वलि लोपः। सूर्च्य॑यति। असुसूर्च्य॑त्। सूर्च॑ आदरे इत्यन्ये।

ईर्क्ष॑—ईर्क्ष॑ति। ऐर्क्ष॑त्। ईर्क्षे॑त्। ईर्क्ष्यात्। ईर्क्षाञ्चकार। ईर्क्षि॑ता। ईर्क्षि॑ष्यति। ऐर्क्षीत्। ऐर्क्षि॑ष्यत्। ईर्चि॑क्षिषति। ईर्क्ष॑यति। ऐर्चि॑क्षत्। मा भवानीर्चि॑क्षत्।

ईर्ष्य॑—ईर्ष्य॑ति। ईर्ष्याञ्चकार। ईर्ष्यि॑ता इत्यादि। सनि 'ईर्ष्य॑तेस्तृतीयस्य द्वे भवत इति वक्तव्य'मित्यत्र वृत्तौ कस्य तृतीयस्य ? केचिदाहुर्व्यञ्जनस्य। अपरे पुनराहुस्तृतीयस्यैकाच इति। तत्र तृतीयस्य व्यञ्जनस्येति पक्षे यकारादेर्द्वितीयस्यैकाचो द्विर्वचनम्। ईर्ष्यि॑यिषति। पक्षान्तरे तु तृतीयस्यैकाचः सन एव द्विर्वचनम्। ईर्ष्यि॑षिषतीति भवति। ईर्ष्य॑यति। ऐर्षि॑ष्यत्। अ—ईर्ष्या। एषामीर्ष्यार्थत्वात् 'क्रुधद्रुहे'ति कोपविषयस्य सम्प्रदानत्वाच्चतुर्थी। देवदत्ताय सूर्च्य॑तीत्यादि। क्विप्—सूर्ट्। 'रात् सस्ये'ति नियमान्न संयोगान्तलोपः। एवमीर्क्ष॑तेरपि। ईर्ष्यतेरपीदमेव रूपम्।

२१३। हय, गतौ। (To go)

भक्तिशब्दयोरपीति केचित्। हय, सेट्, सक, प। हयति। जहाय। जहयिथ। हयिता। अहयीत्। हय्यात्। जिहयिषति। जाहाय्यते। जाहयीति, जाहति ; जाहतः, जाहयति।

जाहर्षि । जाह्वामि । ह्वाययति । अजीह्वयत् । ह्वयित्वा । क्विप्—ह्वत् । अच्—ह्वयः, ह्वयी—वड़वा गौरादित्वात् ङीष् ।

३१४ । शुच्य, अभिषवे । ( To perform ablution… )

अवयवानां शिथिलीकरणं सुरायाः सन्धानं वाभिषवस्तथा सोमसमभिषुणोत्यृजीषमभिनुणोतीति, सुराप्रकरणे च 'सन्धानं स्यादभिषव' इति । अभिषवः स्नानमिति चन्द्रः ।

शुच्य्, सेट्, अक, प । शुच्यति । शुशुच्य । शुच्यिता । शुशुच्यिषति । शोशुच्यते । (१) शोशुच्योति, शोशोक्ति, शोशुक्तः, शोशुच्यति । शोशुच्योषि, शोशोच्यि । शोशुच्योमि, शोशोच्मि ; शोशुच्वः । शोशोक्तु । शोशुग्धि । शुच्ययति । अशुशुच्यत् । शुच्यित्वा । शुच्यितः । शुक्तिः । चुच्य इत्यपि पठन्तीति मैत्रेयः । चुच्यतीत्यादि ।

३१५ । हर्य, गतिकान्त्योः । ( To go, to shine )

हर्य्, सेट्, अक, प । हर्यति । जहर्य । हर्यिता । अहर्यीत् । जिहर्यिषति । जाहर्य्यते । पूर्ववदार्द्धधातुके यमो यमि लोपे यलोपाल्लोपाभ्यां जाहर्त्ता, अन्यदा जाहर्य्यिता इत्यादि । जाहर्य्यीति, जाहर्त्ति ; जाहर्त्तः, जाहर्यति । जाहर्षि । 'अरोऽचि' अचोरहाभ्यां अरोऽचि न द्वित्वमिति यकारस्य द्वित्वाभावः । जाहर्मि । लोटि—जाहर्त्तु । जाहर्ढि । जाहर्य्याणि । अजाहर्यीत् । ईड़भावे—अजाहः, अजाहर्त्ताम्, अजाहर्युः । अजाहर्य्यम् । हर्ययति । अजहर्य्यत् । हर्य्यित्वा । अं—हर्य्या,

(१) 'हलो यमामि'ति यलोपपक्षेऽतोलोपे 'यस्य हल' इति चार्द्धधातुके यशब्दलोपे 'न धातुलोप' इति चाल्लोपस्यासिद्धत्वात् स्थानिवद्भावाद्वा गुणाभावे शोशुचिता । यमो लोपाभावे तु शोशुच्यिता ।

स्त्रियामाकारः। क्विपि—इः। इय्यंतः, यन्नः। 'इष्यियजियच्छ-निमिमिहय्यें ध्योऽतजि'त्यच्।

२१६। अल, भूषणपर्य्याप्तिवारणेषु।

( To adron, to be able, to prevent )

अलञ् इति दुर्गो आनुबन्धं पठति, तन्मते उभयपदी। अल्, सेट्, प। अलति। आल। अलिता। आलीत्। मा भवानालीत्। सिचि वृद्धिः। अलिलिषति। आलयति। आलिलत्। माभवानलिलत्। अलित्वा। अलितः। अलकम्—कुन्। टाप्—अलका। क्षिपकादित्वादित्वं न भवति। इन्—अलिः। 'इञ् वपादिभ्य' इति इञ्—आलिः, कृदिकारत्वात् पक्षे ङीष्—आली। अलीकम्—'अलीकादयश्चे'ति कन्। अत्र मैत्रेयोऽकारमनुनासिकस्वरितमिच्छतीत्याह। तत्रालत इत्यादि। पर्य्याप्तावयमकर्म्मकः।

२१७। ञि फला, विशरणे। ( To split )

फल्, (ञि, आ) सेट् अक, प,। फलति। पफाल, फेलतुः, फेलुः। फेलिथ। फलिष्यति। फलिता। फल्यात् इत्यादि। लुङ्—अफालीत्, अफालिष्टाम्, अफालिषुः। पिफलिषति। पम्फुल्यते, पम्फुलीति, पम्फुल्ति। पम्फुल्मि। फालयति। अपीफलत्। फल्यते। अफालि। फलम्—अच्। फलित्वा। ( ञि आ ) फुल्लः, अस्याकर्मकत्वात् कर्त्तृभावाधिकरणेषु क्तः, 'अनुपसर्गात् फुल्लक्षीवकृशोल्लाघा' इति निपातः। "विभाषा भावादिकर्मणो'रिति इड्विकल्पनात् फलितमित्यपि भवति। अनुपसर्गादिति वचनादुपसृष्टस्योत्वे लत्वाभावात् प्रफुल्तम्। समुत्पूर्वत्वे तु 'उत्फुल्लसंफुल्लयोरुपसंख्यान'मिति लत्वम्। संफुल्लः, उत्फुल्लः। क्तवतु—'फुल्लवान्। 'फलिपाटी'त्यादिनो प्रत्यये पुगागमे फल्गुः। क्विप्—फल्।

३१८ । मील, श्मील, क्ष्मील, निमेषणे ।

( To close the eyes, to twinkle )

सर्वे सेटः, अकर्मकाः, परस्मैपदिनश्च । मील्—मीलति । मिमील । मिमीलिथ । मीलिता । अमीलीत् । मीलिष्यति । अमीलिष्यत् । मील्यात् । मिमीलिषति । मेमील्यते । मेमीलीति । मेमील्ति । मीलयति,—ते । अमीमिलत्,—त, अमिमीलत्,—त । मीलितः । मीलित्वा । श्मील्—श्मीलति । क्ष्मील्—क्ष्मीलति इत्यादि मीलतिवत् । मिल श्लेषणे ह्रस्वोपधो रुधादौ ।

३१९ । पील, प्रतिष्टम्भे । ( To check )

पील्, सेट्, अक, प । प्रतिष्टम्भो रोधनम् । पीलति । पिपील । पीलिता । अपीलीत् । क—टाप्—पीला । पीला नाम काचित् । तस्या अपत्यं—पैलः, पैलेयः । पीलुः—'मृगय्वादिभ्यश्चे'ति उप्रत्ययः । पीलोः पाकः—पीलुकुणः, 'तस्य पाके'त्यादिना कुणप् ।

३२० । णील, वर्णे । ( To be as a dark colour )

नील्, सेट्, अक, प । नीलति । प्रणीलति । निनील । नीलिता । अनीलीत् । क—नीलः । नीली ओषधिर्वड़वा च—ङीष् । अन्यत्र नीला शाटी । नील्या रक्तं वस्त्रम् । नीलं—'नील्या अन् वक्तव्य' इत्यन् । ह्रस्वोपधस्तुदादौ ।

३२१ । शील, समाधौ । (To contemplate)

शील्, सेट्, अक, प । शीलति इत्यादि । शीलम्—इगुपधलक्षणः कः, घञ् च । शीले समाधाने भवा वृत्तिः—शैली, अणि ङीष् । अयं चुरादौ । ह्रस्वोपधस्तुदादौ ।

३२२ । कील, बन्धने । ( To bind )

कील्, सेट्, सक, प । कीलति । चिकील । कीलिता ।

अकोलीत्। कोल्यात्। कोलयति। अचिकोलत्। चिकोलिषति। चेकोल्यते। चेकोलीति,चेकोल्ति। कोल्यते। अकोलि। क:, घञ् वा—कोल:। संज्ञायां कन्—कोलकम्। क्त:, इतच् वा—कोलित:।

२२३। कूल, आवरणे। (To cover)

कूल्, सेट्, सक, प। कूलति। अकूलीत्। चुकूल। कूलिता। क:—कूलम्।

२२४। शूल, रुजायां संघाते च। (To be ill, to collect)

शूल्, सेट्, अक, प। शूलति इत्यादि। शूलम्। शूले संस्कृतं—शूल्यं यत्। शूले पचति—शूलाकरोति। शूलाकृत्य—गतित्वात् समासे क्त्वो ल्यप्। अय:शूलेनान्विच्छति—आय:शूलिक:, क्र राकार उच्यते।

२२५। तूल, निष्कर्षे। ( To ascertain weight )

निष्कर्षो निष्कोषणं, तच्चान्तर्गतस्य वहिर्नि:सारणम्। तूल्, सेट्, सक, प। तूलति। अतूलीत्। तुतूल। तूलिता। क:—तूलम्। तूलेनानुकुष्णाति—अनुतूलयति। तूलेरव कुष्णाति—अवतूलयति। दुर्गवोपदेवादिमते चुरादौ चायम्।

२२६। पूल, संघाते। (To collect)

पूल्, सेट्, अक, प। पूलति। पूलिता। अपूलीत्। पूल:। पञ्चानां पूलानां समाहार:—पञ्चपूली।

२२७। मूल, प्रतिष्ठायाम्। (To take root, to be firm)

मूल्, सेट् सक, प। मूलति। मुमूल। मूलिता। अमूलीत्। मूलम्। मूले जातो मूलक:—पूर्वाह्णेत्यादिना वुन, नक्षत्राणोऽपवाद:। उत्पाटनीयं मूलमस्य इति मूल्यो मुद्ग:

मूल्यमस्येति यत् । न विद्यते मूलमस्याः सा अमूला 'मूलान्नञ' इति टाप् । शतमूली—ङीष् । अयं रोहणार्थसुरादिः ।

३२८ । फल, निष्पत्तौ ।

( To result, to be successful, to bear fruit )

फल, सेट्, सक, प । फलति इत्यादि ञिफलावत् । फलितमिति निष्ठायामिड़ेव । फलतीति फलम् । संफला—'पाककर्णे'ति ङीषं बाधित्वा 'संभस्त्रे'त्यादिना टाप् । भस्त्रफलादयोऽप्येवम् । अल्पं फलं—फलिका । ततोऽन्यत्—फलम् । फलञ्च तत्फलिका च—फलाफलिका, 'कृतापकृतादीनामुपसंख्यान'मिति कर्म्मधारयः । 'अन्येषामपि दृश्यत' इति दीर्घः पूर्वपदस्य । एकमेव फलमवस्थाभेदादल्पत्वमहत्त्वाभ्यां युज्यते । त्रिफला—टाप् । फलिनः—'फलबर्हे'ति मत्वर्थे इनच् । फलकं सञ्ज्ञायां कन् । निष्पाद्यते कृषिरनेन—फालः घञ् ।

३२९ । चल्ल, भावकरणे । ( To expand )

भावकरणमभिप्रायाविष्कारः । हावकरण इति दुर्गादयः, तच्च विलासः । चुल्ल, सेट्, अक, प । चुल्लति । चुचुल्ल । अचुल्लीत् 'चुल्लन्ति चारुनयनाश्च सह प्रियेण' इति कवि—४७ । चुल्लिः । चुल्ली—इनन्ताद्वा ङीष् ।

३३० । फुल्ल, विकसने । ( To blow )

फुल्ल, सेट्, अक,प । फुल्लति । अच्—फुल्लः । फुल्लित्वा । फुल्लितः ।

३३१ । चिल्ल, शैथिल्ये भावकरणे च ।

(To become loose, to manifest one's meaning)

चिल्ल, सेट्, अक, प । चिल्लति । चिल्लः । तिल गताविति दुर्गमैत्रेयौ, तिल्लेत्यन्ये । तेलति इत्यादि । क—तिलः । तिल

स्नेहने इति तौदादिकाद्वा। तिलानां भवनं क्षेत्रं—तिल्यं, तैलीनम्। 'विभाषा तिले'ति यत्खञौ। तिलेभ्यो हितं—तिल्यम्। 'खलयवमाषतिलवृषब्रह्मणश्चे'ति चतुर्थ्यन्ताद्विधा तार्थे यत्। निष्फलस्तिलः—तिलपेजः, तिलपिञ्जः। 'तिलान्निष्फलात् पिञ्जपेजा'विति पिञ्जपेजौ। तिलकम्—संज्ञायां कन्। तिल स्नेहन इति तुदादौ चुरादौ च।

२२२। वेल्ट, चेल्ट, केलृ, खेलृ, क्ष्वेलृ, वेल्ल, चलने। (To go)

दुर्गादयस्त्वन्यथा पठन्ति। सर्वे सेटः, अकर्मकाः, परस्मैपदिनश्च। वेल् (ऋट) वेलति इत्यादि। वेला—'गुरोश्चे'त्यकारः। चेल् (ऋट)—चेलति। चेलः। पचादौ चेलडिति पाठात् अच्, टित्वं स्त्रियां ङीषर्थं, चिल वसन इत्यस्माद्वा चेलम्। कुत्सिता ब्राह्मणी—ब्राह्मणिचेली इत्यादि। केल् (ऋट)—केलति। केलिः—इन् टाप्, पक्षे ङीष्—केली। अ-आ—केला। केलयति। कण्ड्वादित्वाद् यक्। खेल् (ऋट)—खेलति। खेला—अयमपि कण्ड्वादिः। क्ष्वेल् (ऋट)—क्ष्वेलति इत्यादि। वेल्ल—वेल्लति। वेल्लः विषम्, संज्ञायां घञ्। वेल्लयति। वेलादीनां पञ्चानामृदित्वात् ह्रस्वाभावादविवेलदित्यादि भवति।

२२३। पेलृ, ग्रेलृ, फेलृ, गतौ। (To go)

सर्वे ऋदनुबन्धाः, सेटः, सकर्मकाः, परस्मैपदिनश्च। पेलति। पिपेल। अपिपेलत्। अ—पेला, भुक्तमुज्झितम्। ग्रेलति। अजिग्रेलत्। फेलति। पिफेल। अफेलीत्। अत

(१) चेलादयो वृत्तिविषये कुत्सनवचना इति। लक्ष्मीचेली, यवागूचेली इत्यादौ च ङ्यन्तनदीत्वेऽपि 'कृन्नद्याः प्रतिषेध' इत्युक्तत्वान्नायं विधिर्भवति। श्रीचेलीत्यादौ तु नदीग्रहणान्नास्य प्रसङ्गः। नापि पूर्वसूत्रस्य ङ्यन्तानेकाच्त्वाभावात् विदुषीचेलीत्यादौ 'उगितश्च' उगितः परा या नदी तस्या ह्रस्वविकल्पः। विद्वच्छ्रेयसोः पुंवद्भावोऽत्र पक्षे वक्तव्य इति वृत्तावुक्तत्वात् विद्वच्चेलीत्यपि भवति।

क्वचित् खेलृ, षेलृ, सेलृ इत्यपि त्रयः पठ्यन्ते। तत्र खेलति-र्मैत्रेयाद्यनुसारेणाग्रे पठिष्यते। सेलतेस्तु दन्त्यादेः पाठः, वोपदेवपर्य्युदासवाक्येऽनुपादानादनार्षः। मूर्द्धन्यादिस्तु सेलुः स्लेष्मान्तक इत्यादि दर्शनाद्‌ग्राह्यः।

२३४। स्खल, चलने। ( To move, to ship )

स्खल, सेट्, अक, प। स्खलति। चस्खाल। चस्खलतुः। स्खलिता। अस्खालीत्। स्खलिष्यति। घटादित्वात् स्खलयति। अचिस्खलत्। सन्—चिस्खलिषति। चास्खल्यते इत्यादि। स्खल्यते। अस्खलि, अस्खालि। स्खलित्वा। स्खलनं। स्खलितः। वोपदेवमते सञ्चयार्थे च।

२३५। खल, सञ्चये। (To gather )

खल, सेट्, सक, प। खलति। चखाल, चखलतुः। अखालीत्। खलिष्यति। खलति पापानि सञ्चिनोतीति खलः। खल्यते सञ्चीयते धान्यादिकमिति खलम्—घः। खलानां समूहः—खल्या, यत्। खलिनी—इन्, ई। खलाय हितं—खल्या, 'खलयवे'ति यत्। यस्मिन्, खले यवा भवन्ति स कालः खलेयवः। एवं खलेवुसम्—अव्ययीभावः। खेलन्ति सञ्चलन्ति केशा अस्मादिति—खलतिः, अतिः।

२३६। गल, अदने। ( To eat )

गल, सेट्, सक, प। गलति। जगाल, जगलतुः। गलिता। अगालीत्। गलः—घः। गिलतेर्वा लत्वे रूपं।

२३७। षल, गतौ। ( To go )

षल, सेट्, सक, प। सलति। सलयति। असीसलत्। सालः—घञ्। सलिलम् 'सलिकलौ'त्यादिना इलच्।

२३८। दल, विशरणे। ( To break, to split )

दल्, सेट्, सक, प। दलति। ददाल, देलतुः, देलुः। देलिथ। अदालीत्, अदालिष्टाम्, अदालिषुः। दलिता। दिदलिषति। दादल्यते इत्यादि। घटादित्वात्—दलयति। भोजेन दालयति,—ते इत्युक्तम्। कर्मणि—दल्यते। अदालि, अदलि। दलितः। दलित्वा। दालः—घञ्। दाड़िमम् 'भावप्रत्ययान्तादिमज्वक्तव्य' इति इमच्—जालिमम्,—डलयोरभेदः। कुं दलतीति—कुद्दालः, पृषोदरादिः।

२३९। श्वल, श्वल्ल, आशुगमने। ( To run )

श्वल्,श्वल्ल्, सेट्, सक, प। श्वलति। शश्वाल। अश्वालीत्। शिश्वलिषति। शाश्वल्यते। श्वालयति। अशिश्वलत्। श्वल्ल्—श्वल्लति। अश्वल्लीत्। श्वल्लिता।

२४०। खोलृ, खोरृ, गतिप्रतिघाते। ( To limp)

खोल्, खोर् ( ऋट ), सेट्, अक, प। खोलति। चुखोल। खोलयति। अचुखोलत्। अच्—खोड़ः, खोञ्जः, डलयोरभेदः। एवं खोरति इत्यादि।

२४१। धोर्ऋ, गतिचातुर्य्ये। ( To run well )

धोर् (ऋट) सेट, अक, प। धोरति। धोरिता। अधोरीत्। धोरयति। अदुधोरत्। धौरितकोऽश्वानां गतिविशेषः। निष्ठान्तात् संज्ञायां कन्।

२४२। त्सर, छद्मगतौ। (To proceed with fraud )

त्सर, सेट्, सक, प। त्सरति। तत्सार, तत्सरतुः। त्सरिता। अत्सारीत्। तित्सरिषति। तात्सर्य्यते। तात्सरीति, तात्सर्त्ति। तात्सर्षि। अतात्सः। त्सरुः—'श्रृमृशी'त्यादिना उः। त्सरौ कुशलः—त्सरुकः। आकर्षादित्वात् कन्।

३४३। क्मर, ह्वर्च्छने। ( To be crooked )

क्मर्, सेट्, अक, प। क्मरति। चक्मार। क्मरिता। अक्मारीदित्यादि।

३४४। अभ्र, वभ्र, मभ्र, चर, गत्यर्थाः। ( To go )

सर्वे सेटः, सकर्मकाः परस्मैपदिनश्च। चरतिर्भक्षणार्थोऽपि। अभ्र्—अभ्रति। आनभ्र। आनभ्रिथ। अभ्रिता। आभ्रीत्, आभ्रिष्टाम्। मा भवानभ्रीत्। अबिभ्रिषति। अभ्रयति। आबिभ्रत्। अभ्र्यते। आभ्रि। अभ्रम्—अच्। इन्—ई—अभ्री, काष्ठकुद्दालः। कन्—अभ्रकम्।

वभ्र्—वभ्रति। ववभ्र। वभ्रिता। अवभ्रीत्। विवभ्रिषति। वभ्र्यते। अवभ्रि। वावभ्र्यते। वावभ्र्ति। भकाररेफतकाराः संयुज्यन्ते। लङ् तिप्सिपोः—अवावभ्, अवावब्। मभ्र्—मभ्रति इत्यादि।

चर्—चरति। ( लिट् ) चचार, चेरतुः, चेरुः। चेरिथ। चरिता। चरिष्यति। अचरिष्यत्। चर्य्यात् इत्यादि। (लुङ्) अचारीत्, अचारिष्टाम्, अचारिषुः। अचारीः। अचारिषम्। (सन्) चिचरिषति। ( यङ् ) चञ्चूर्य्यते, चंचूर्य्यते। चञ्चूरीति, चंचुरीति। चञ्चूर्त्ति—चंचूर्त्ति। लङ्—अचञ्चूः। लङि—तिप्सिपोर्हल्ङ्यादिलोपे रेफस्य विसर्जनीयः। चर्य्यते। अचारि। यदायमुत्पूर्वः सकर्मकस्तदा 'उदश्चरः सकर्मका'दिति आत्मनेपदम्; गुरुवचनमुच्चरन्ते उत्क्रम्य गच्छन्तीत्यर्थः। तथा समुपसृष्टात् 'समस्तृतीयायुक्ता'दिति आत्मनेपदम्। अश्वेन सञ्चरत इति। व्यवहितेऽपि भवति—अश्वेन समुदाचरत इति। यत्—चर्य्यम्। सोपसर्गस्य तु उपचार्य्यम्—ण्यत्। आचर्य्यः, देशः। गुरौ तु आचार्य्यः—ण्यत्। आचार्य्यस्य स्त्री—आचार्य्यानी, 'इन्द्रवरुणे'त्यादिना ङीषानुकौ। 'आचार्य्यादणत्वञ्चे'ति

षत्वाभावः। चरतीति चरः—अच्। स्त्रियां—चरी। चरस्य गोत्रापत्यं चारायणः। चराचरः—अचि पचे द्विर्वचनम्। (निपातः)। कल्याणाचारः, कल्याणाचारा। कुरुषु चरतीति कुरुचरः—टः। स्त्रियां—कुरुचरी। भिक्षाचरः, सेनाचरः, आदायचरः—भिक्षादिषूपपदेषु टः। चरिष्णुः, इष्णुच्। अतिचारी, अपचारी—ताच्छीलिको घिनुण्। ब्रह्म वेदस्तदर्थं व्रतं चरतीति ब्रह्मचारी—णिनिः, समानो ब्रह्मचारी—सब्रह्मचारी 'चरणे ब्रह्मचारिणी'ति समानस्य सभावः। चरणशब्दः शाखाध्यायिषु रूढ़ः। सब्रह्मचारिण इमे साब्रह्मचाराः। चरित्रम्—इत्रन्, करणे। प्रज्ञादिपाठात् स्वार्थेऽणि—चारित्रम्। गोचरः विषयः, सञ्चरः मार्गः। 'गोचरसञ्चरे'त्यधिकरणे निपात्यते। चरितं तदिति चर्म। चर्माण्यस्याः सन्ति—चर्मण्वती नदी। 'आसन्दी वे'त्यादिना निपात्यते। चर्मी—इन्। चर्मिणोऽपत्यं—चार्मिकायणिः। 'वाकिनादीनां कुक् चे'ति फिञ् कुकचागमः। सर्वचर्मणावृतः—सर्वचर्मीणः, सार्वचर्मीणः खखञौ। चर्मणः कोशः—चार्मः। 'चर्मणः कोश उपसंख्यान'मिति टिलोपः। अन्यत्रानितिप्रकृतिभावात् चार्मणं चक्षुः, अण्। चारु 'दृशनिजनिचरी'ति, ञुण्प्रत्ययः। चरन्त्यस्मात्—चरुः, 'भृमृशीङ्चरी'त्युप्रत्ययः। चरकः—वुक्। चरकेण प्रोक्तम्—चरकम् 'तेन प्रोक्त'मिति अण्, 'कठचरकाल्लुगि'ति लुक्। चरको नाम वैशम्पायनः। चरकाय हितं—चारकीणम्। 'माणवकचरकाभ्यां खञि'ति, खञ्। चरसंश्रयन इति चुरादौ।

२४५। ष्ठिवु, निरसने। ( To spit out )

ष्ठिव् (उ) सेट्, सक, प। सुब्धातुष्ठिवुष्वष्कतीनां प्रतिषेध इति प्रतिषेधः सत्वस्य। ष्ठीवति। ष्ठीवतु। टिष्ठेव, तिष्ठेव, (कौ०८६)। तिष्ठिवतुः, टिष्ठितुः। ष्ठेविता। ष्ठेविष्यति।

आशीः—ष्ठीव्यात्। अष्ठेवीत्। तेष्ठिविषति, तुष्ठ्यूषति ; टेष्ठिविषति, टुष्ठ्यूषति। टेष्ठीव्यते, तेष्ठीव्यते। (१) ष्ठेवयति। अतिष्ठिवत्, अटिष्ठिवत्। (उ) ष्ठेवित्वा, ष्ठ्यूत्वा। निष्ठीव्य। ष्ठ्यूतः। ष्ठ्यूतिः। ष्ठीवनम्, ष्ठेवनम्—पृषोदरादित्वात् पक्षे दीर्घः। अयं दिवादावपि।

३४६। जि, जये। ( To conquer )

अत्र मैत्रेय उत्तरधातुसाहचर्य्यानुरोधेनाजन्तोऽप्यत्र निर्दिश्यत इति। इह जय उत्कर्षप्राप्तिरित्यकर्म्मकोऽयम्। यस्त्वन्येऽभिभवार्थः स सकर्म्मकः। यदाह देवः—

जयिर्जयाभिभवयोराद्यर्थेऽस्यावकर्म्मकः।
उत्कर्षप्राप्तिराद्योऽर्थो द्वितीयेऽर्थे सकर्म्मकः।

जि, अनिट्, प। जयति। जयतु (२)। जयेत्। अजयत्। जिगाय,जिग्यतुः। जिग्युः। जिगयिथ,जिगेथ,जिग्यथुः,जिग्य। जिगाय, जिगय ; जिग्यिव,—म। जेता। जेष्यति। अजेष्यत्। जीयात्। अजैषीत्, अजैष्टाम्, अजैषुः। जिगीषति। जेजीयते। जेजयीति, जेजेति ; जेजितः, जेज्यति। जापयति। अजीजपत्। कर्मणि—जीयते। जायिषीष्ट, अजायि। वि—परा—विजयते, पराजयते—'विपराभ्यां जेरि'ति तङ् (आत्मनेपदम्)। यङ्लुगन्तादपि—विजेजिते, पराजेजिते।

---

(१) ऊड्भाविनां वकारान्तानां यङ्लुग्नास्तीति तेनतावुक्तम्। द्वितीयस्थकारष्ठकारो वेति वृत्तिः। ठकारपक्षे सर्वत्राभ्यासे टकार उदाहार्य्यः।

(२) 'जेस्तुवन्तोस्तिवन्तौ'इति। अनभिधानादस्मात् तुवन्तोः प्रयोगाभावः। किन्तु तुपः स्थाने तातङ् दृश्यते। "यथा भावलयः कोऽपि जयतादवागगोचर" इति हलायुध इति दुर्गादासः। 'जयतु' इति माधवीयायां वृत्तौ दृश्यते। केचित् "जयतेर्नास्ति पञ्चम्या उत्तमः पुरुषः क्वचित्। वचेरन्त्यन्तुअन्तूङ्स्तु प्रयोगो नाभिधीयते॥" इति उद्घोषयन्ति।

अस्याकर्म्मकत्वात् सर्वे क्तो न सन्तीति तन्त्रेणाभिभवार्थे प्रदर्शयिष्यन्ते।

२४७। जीव, प्राणधारणे। ( To live )

जीव बल प्राणधारणे इति दुर्गः पठति। प्राणलक्षणस्य कर्मणो धात्वर्थेनोपसंग्रहादकर्मकोऽयम्।

जीव्, सेट्, अक, प। जीवति। जिजीव। जीविता। जीविष्यति। अजीवीत्। जीव्यात्। जीव्यते। अजीवि। जिजीविषति। जीवयति। अजीजिवत्, अजिजीवत्। यावज्जीवम्—'यावति विन्दजीवो'रित्यादिना यावदुपपदे णमुल्। जीविका—ण्वुल्। जीवनस्य मूतः जीमूतः—पृषोदरादित्वाज्जीभावः। जीवातुः—आतुः। जैवातृकः—'जीवेरातृकन् वृद्धिश्चे'ति आतृकनि वृद्धिः। जीवन्तः—झच्। स्त्रियां ङीष्—जीवन्ती। जीवन्तस्य गोत्रापत्यं जैवन्तायनः—गोत्रापत्ये वा फक्। तदभावे इञ्—जैवन्तिः।

२४८। पीव, मीव, तीव, णीव, स्थौल्ये। (To be fat)

सर्वे सेटः, अकर्मकाः, परस्मैपदिनश्च। पीव्—पीवति। पिपीव। पेविता। पिपीविषति। पेपीव्यते। पीवयति। अपीपिवत्। मीव्—मीवति। तीव्—तीवति, पीववत्। प्रणीवति। पीवरः—स्थूलः। मीवरः—मानी। तीवरः—निषादः। नीवरः—वणिक्। 'छित्वरे'त्यादिना वरचि वलि लोपे निपात्यन्ते। टित्वात् स्त्रियां ङीप्—पीवरी इत्यादि। उणादिवृत्तौ तु पा पाने, तॄ देवने, मार्ग मार्गणे, णीञ् प्रापणे इत्येतेभ्य एते व्युत्पादिताः।

२४९। चीव, निरसने। ( To spit out )

चीव्, (उ) सेट्, सक, प। चीवति। चिचीव। अचीवीत्। चेचीव्यते इत्यादि। (उ) चीवित्वा, च्यूत्वा। क्त—च्यूतः। चेवु निरसन इति चन्द्रः। चेवति इत्यादि।

३५० । उर्वी, तुर्वी, थुर्वी, दुर्वी, धुर्वी, हिंसायाम् । ( To kill )

सर्वे ईदनुबन्धाः, सेटः, सकर्मकाः, परस्मैपदिनश्च । उर्व्—ऊर्वति । ऊर्वतु । और्वत् । ऊर्वेत् । ऊर्वाञ्चकार । ऊर्विता । ऊर्विष्यति । ऊर्व्यात् । और्वीत् । और्विष्यत् । ऊर्विविषति । ऊर्वयति । और्विवत् । मा भवानूर्वित् । ऊर्णः । ऊर्णवान् । क्विप्—ऊः, उरौ, उरः । ऊर्भ्याम् ।

तुर्व्—तूर्वति । तुतूर्व । तूर्विता । अतूर्वीत् । तुतूर्विषति । तोतूर्य्यते । तोतूर्वीति, तोतोर्त्ति ; तोतूर्त्तः, तोतूर्वति इत्यादि । तोतोर्त्तु । तोतूर्त्तात् । तोतूर्ह्हि । तोतूर्त्तम् । लुङ्—अतोतोः । अतोतूर्वुः । तूर्वयति । अतुतूर्वत् । तूर्वित्वा । तूर्णः । तूर्णवान् । क्विप्—तूः,तुरौ, तुरः । थुर्व्—थूर्वति । दुर्व्—दूर्वति इत्यादि ।

धुर्व्—धूर्वति इत्यादि । क्विप्—धूः, धुरौ, धुरः इत्यादि । धूर्पतिः, धूःपतिः । (१) धुर्य्यः, धौरेयः । धुरं वहति—धुरो 'यड्ढकाॅ'विति यड् ढक् च । सर्वधुरं वहति—सर्वधुरीणः—'खः सर्व-धुरा'दिति खः । एवं दक्षिणधुरीणः, उत्तरधुरीणः । धुरीण इत्यपि दृश्यते । तथाच अमरः—"धुरीणस्तु धुरन्धरः" । सुधूः. अधूः किंधूः, अक्षधूः । एकधुरं वहतीति—एकधुरीणः एकधुरः ।—'एकधुराल्लुक् चे'ति लुक्, खश्च पक्षे । तन्—धूर्त्तः हस्ती । अक्षेषु धूर्त्तः ।

२५१ । गुर्वी, उद्यमने । (To make an effort)

गुर्व् (ई) सेट, अक, प । गूर्वति । जुगूर्व । गूर्विता इत्यादि । गूर्णः । गूर्वित्वा । गूः, गुरौ गुरः ।

---

(१) 'इणः ष' इति पञ्चमपदादिकवर्गपवर्गपरविसर्जनीयविधिस्मितोऽत्र न भवति । 'अहरादीनां पत्यादिषु उपसंख्यान'मिति विसर्जनीयापवादः, पक्षे—रेफः, रेफाभावे विसर्जनीयः पक्षे उपध्मानीयश्च ।

३५२। मुर्वी, बन्धने। ( To bind )

मूर्व्, सेट्, सक, प। मूर्वति। मुमूर्व इत्यादि। मौर्वी —ङीष्।

३५३। पुर्व, पर्व, मर्व, पूरणे। ( To fill )

सर्वे सेटः, सकर्मकाः, परस्मैपदिनश्च। पुर्व—पूर्वति। पुपूर्व। अपूर्वीत्। पुपूर्विषति। पूर्वयति। अपुपूर्वत्। पूर्विला। पूर्वितः। पूः,पुरौ,पुरः। अच् पूर्वः। पूर्वस्मिन्नहनि—पूर्वेद्युः। पुरः। पुरतः। पुरस्तात्। पूर्वतः। पूर्वत्र। पौरस्त्यम्। पुरस्कृत्य। पूर्वं कृतमनेन पूर्वी—इन्। कृतपूर्वी कटम्। पूर्वपुरुषः। पूर्वः कायस्य—पूर्वकायः। पूर्वापरम्। पूर्वापरे। पूर्वापरौ। पूर्वं पूर्वं पुष्यति, पूर्वं पूर्वं परयोरर्थातिशयविवचायां द्वे भवत इति द्वित्वम्।

पर्व्—पर्वति। पपर्व। अपर्वीत्। पर्विता। पिपर्विषति। पापर्व्यते। पापर्त्ति। क्विपि स्यादौ—पः, परौ, परः। पर्वतः—'भृमृ' इत्यादिना अतच्। पर्वते भवो मनुष्यः—पर्वतीयः, शैषिकः छः। भवादावमनुष्ये 'विभाषाऽमनुष्ये' इत्यत्राणि पार्वतमित्यपि भवति। "तस्य जन्यं रघोर्घोरं पार्वतीयैर्गणैरभूत्" इति प्रयोग'स्तस्येदमि'त्यत्र अणि द्रष्टव्यः। पर्वतोऽभिजनोऽस्याः पार्वती—ङीप्। कनिन्—पर्वन्। पर्वणि दत्तं—पार्वणम्। पूर्व निकेतने इति चुरादौ। मर्व—मर्वति इत्यादि।

३५४। चर्व, अदने। ( To eat )

चर्व्, सेट्, सक, प। चर्वति। चचर्व। चर्विता। अचर्वीत्। चिचर्विषति। चाचर्व्यते इत्यादि। चर्वयति देवदत्तं 'निगरणचलने'ति नित्यं परस्मैपदम्, गतिबुद्धीति प्रयोज्यस्य कर्मत्वम्। चर्वणम्। चर्व्यम्। चर्वितः। चर्वित्वा।—चर्व्यं।

३५५ । भर्व्व, हिंसायाम् । (To injure)

भर्व्, सेट्, सक, प । भर्वति इत्यादि । अयमीदित्स्वपि क्वचित् पठ्यते ।

३५६ । कर्व, खर्व, गर्व, दर्पे । (To be proud)

कर्व्, खर्व्, गर्व्, सेट्, अक, प । कर्वति । खर्वति । चखर्व । अखर्वीत् । गर्वति । जगर्व । गर्विता । अगर्वीत् । गर्वयति,—ते । अजगर्वत्,—त । गर्व्यते । अगर्वि । जिगर्विषति । जागर्व्यते इत्यादि । कर्वतीतीदित्स्वपि पठ्यते ।

३५७ । अर्व, शर्व, षर्व, हिंसायाम् । (To kill)

अर्व्, शर्व्, षर्व्, सेट्, सक, प । अर्व—अर्वति । आनर्व । अर्विता । अर्विविषति । शर्व्—शर्वति इत्यादि अर्ववत् । शर्वः—शृणोतेरौणादिको वप्रत्ययः । शर्वस्य स्त्री शर्वाणी—'इन्द्रवरुणे'त्यादिना ङीषानुकौ । सर्व्—सर्वति इत्यादि पूर्ववत् । सिसर्विषतीत्यत्र 'स्तौतिण्योरेव' इत्यषत्वम्, ण्यन्तात् सनि—सिषर्विषति । अच्—सर्व्वः । सर्वस्मिन् काले—सर्वदा । सदा—पक्षे सभावः । सर्वस्मै हितं—सार्वम्, सर्वीयम् ।

३५८ । इवि, व्याप्तौ । (To pervade)

इन्व् ( इ ) सेट्, अक, प । इन्वति । इन्वाञ्चकार । इन्विता । इन्विष्यति । ऐन्वीत् । इन्विविषति । इन्व्यते । ऐन्विवत् । इन्वन्तीति इन्वकाः—तारकाविशेषः ।

३५९ । पिवि, मिवि, णिवि, सेवने । (To serve)

अयं पाठो मैत्रेयस्य च, अन्ये तृतीयं मूर्द्धन्योष्मादिं पठन्ति । केचित् सेचन इति । सर्वे इदनुबन्धाः, सेटः, सकर्म्मकाः, परस्मैपदिनश्च । पिन्व्—पिन्वति । पिपिन्व । पिन्विता ।

पिपिन्विषति। पेपिन्व्यते। पिन्वयति। अपिपिन्वत्। मिन्व्—मिन्वति। निन्व—निन्वति इत्यादि पूर्ववत्।

३६०। हिवि, दिवि, धिवि, जिवि, प्रीणनार्थाः।

( To please )

अत्र केचिदाद्यमिकारादिं पठित्वा, पुनःपाठोऽर्थभेदादिति धातूनामनेकार्थत्वे तु न प्रयोजनमस्तीति आहुः। तस्मान्नैते योक्ता एव हिवीति पाठो ज्यायान्। सर्वे इदनुबन्धाः, सेटः, सकर्मकाः परस्मैपदिनश्च।

हिन्व्—हिन्वति। जिहिन्व। हिन्विता। दिन्व्—दिन्वति इत्यादि। धिन्व्—धिनोति, धिनुतः, धिन्वन्ति। धिनोषि, धिनुवः, धिन्वः। धिनोतु, धिनु। धिनवानि। अधिनोत्, अधिनुताम्। अधिनोः, अधिनवम्। अधिन्व। अधिनुव। धिनुयात्। धिन्वयति इत्यादि। जिन्व—जिन्वति। जिजिन्व। अजिन्वीत् इत्यादि देवने गतम्।

३६१। रिवि, रवि धवि, गत्यर्थाः। (To go)

रिन्व्, रन्व्, धन्व्, (इ) सेट्, सक, प। रिण्वति, रण्वति इत्यादि। धन्व्—धन्वति इत्यादि। धन्विः—उणादि वृत्तावयं सौत्रो धातुरुच्यते। धन्वा—कनिन्। बहुव्रीहौ स्त्रियां—सुधन्वा, सुधन्वानौ। नान्तः शब्दः। डापि तु—सुधन्वा, सुधन्वे। आकारान्तः शब्दः।

३६२। क्रवि, हिंसाकरणयोश्च।

(To kill, to accomplish, to go)

चकाराद्गतौ। दुर्गस्तु कवि चिरि जिरि दासद्रु[दृ]जिघ्रां सायामिति स्वादौ पठति।

क्रन्व्, (इ) सेट्, सक, प। क्रणोति इत्यादि। अयं स्वादौ च।

२६३ । मव, बन्धने । ( To tie )

मव्य मव बन्धने इति दुर्गः पठति । मव्, सेट्, सक, प । मवति । ममाव । मेवतुः । मविता । अमवीत्, अमावीत् । मिमविषति । मामव्यते । मामवीति, मामोति, मामूतः, मामवति । मामोषि । मामोमि, मामावः, मामूमः । मामोतु । मामीतात् । मामीहि । मामवानि । लङ्—अमामोत्, अमामोः । णिच्—मावयति । अमीमवत् । क्विप्—मूः, मुवौ, मुवः ।

२६४ । अव, रक्षणगतिकान्तिप्रीतितृप्त्यवगमप्रवेश-श्रवणसामर्थ्ययाचनक्रियेच्छादीप्त्यवाप्त्यालिङ्गन-हिंसादानभागवृद्धिषु ।
( To protect, to move, to be lovely, to please, to satisfy, to know, to enter, to hear, to own, to beg, to act, to desire, to shine, to obtain, to embrace, to kill, to take, to be, to grow )

अव रक्ष पालने इति दुर्गः पठति । अव्, सेट्, प । अवति । आव, आवतुः । अविता । अविष्यति । आविष्यत् । आवीत् । अव्यात् । मा भवानवीत् । अविविषति । आवयति । मा भवानविवत् । अव्यते । आवि । ऊतिः—'ऊतियूती'त्यादिना निपात्यते । अविषः 'अविमह्योष्टिषच्' इति टिषच् । स्त्रियाम् —अविषी । ऊनः—'इण्सिञ्जिदीङुष्यविभ्यो नगि'ति नक् । ओम्—'अवतेष्टिलोपश्चे'ति मन् । ओतुः—'सितनी'त्यादिना तुन् । क्ष्णोतुः—'ओत्वोष्ठयोः समासे वा' इति पररूपम् । अविः—इन् । अविरेव—अविकः—'अवेः क' इति स्वार्थे कः । अवनिः—'अर्तिसृधृधम्यस्यश्यवितृभ्योऽनि'रित्यनिः । पक्षे ङीष्

—अवनी। अवी:—'अवितॄस्तृतन्त्रिभ्य ईः' इति ईप्रत्ययः। अव्यादय उदात्तेतो (१) जयतिवर्जम्।

२६५। धावु, गतिशुद्ध्योः। ( To run, to cleanse )

धाव् ( उ ) सेट्, अक, उ। धावति,—ते। दधाव,—वे। दधाविथ,—षे। धाविता। धाविष्यति,—ते। धाव्यात्, धाविषीष्ट। लुङ्—अधावीत्, अधाविष्ट। धावयति,—ते। अदीधवत्,—त। सन्—दिधाविषति, दिधाविषते। दाधाव्यते। धाव्यते। अधावि। (उ) धावित्वा, धौत्वा। धौतः, धावितः। धौतवान्। (२) धावनम्। धावकः। धावनः। अनु—अनुधावनम्। अप—पलायनम्। निर्—मार्जनम्।

## आत्मनेपदिनः।

२६६। क्षुच्च, खिच्च, सन्दीपनक्लेशनजीवनेषु।

( To kindle, to be weary, to live )

क्षुच्च्, खिच्च्, सेट्, अक, आ। क्षुच्चते। क्षुच्चताम्। अक्षुच्चत। क्षुच्चेत। दुक्षुच्चे। क्षुच्चिष्यते। क्षुच्चिषीष्ट। अक्षुच्चिष्ट। दुक्षुच्चिषते। दोक्षुच्च्यते, दोक्षुच्चीति, दोक्षुच्ष्टि। दोक्षोच्चि। दोक्षोष्टु। दोक्षोड्ढि

(१) अयमुदात्तः स्वरितेत्। 'स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले' इति क्रियाफलस्य प्रधानस्य कर्तृगामित्वविवक्षायां तङ् ( आत्मनेपदम् )। यदा क्रियाफलस्य कर्तृगामित्वमुपपदेन प्रतीयते, तदा 'विभाषोपपदेन प्रतीयमाने' इति परस्मैपदं भवति।

(२) अत्र मैत्रेयः कथं धावितो धावितवानिति उपक्रम्य क्वचित्तिदितोनामीदित्वं 'यस्य विभाषे' त्यस्यानित्यत्वे ज्ञापकमाह। नित्यत्वे ह्येतेषां 'से ऽसिचि कृतचृतछृदतृदनृत' इति सकारादाविटो विकल्पनात् निष्ठायामनिट्त्वस्य सिद्धत्वात् किं तदर्थेनेदित्त्वेन।

दोधुक्षाणि । धुक्षयति । अदुधुक्षत् । धुक्षः । धिक्ष— धिक्षति इत्यादि पूर्ववत् ।

२६७ । वृक्ष, वरणे । ( To cover )

वृक्ष, सेट्, सक, आ । वृक्षते । (१) ववृक्षे । वृक्षिता । अवृक्षिष्ट इत्यादि । विवृक्षिषते । वरीवृक्ष्यते । वर्वृष्टि, वरिवृष्टि इत्यादि । वृक्षयति । अववृक्षत् । वृक्षः ।

२६८ । शिक्ष, विद्योपादाने । ( To learn )

शिक्ष्, सेट्, सक, आ । शिक्षते । (२)शिक्षताम् । अशिक्षत । शिक्षेत । शिक्षिता । शिक्षिष्यते । शिक्ष्यात् । अशिक्षिष्ट । शिशिक्षे । शिशिक्षिषते । शिक्षयति,—ते । अशिशिक्षत्,—त । शेशिक्ष्यते । शेशिक्षीति, शेशिष्टि । शिक्ष्यते । अशिक्ष्यत । अशिक्षि । शिक्षितः । शिक्षित्वा । प्रशिक्ष्य । शिक्षितुम् । शिशिक्षिषा । शिशिक्षिषुः । शिक्षा । शेक्ष्यः । शिक्षकः । शिक्षयिता । शिक्षयित्री ।

२६९ । भिक्ष, भिक्षायाम् अलाभे लाभे च ।

(To beg for, to ask for without obtaining, to obtain)

भिक्ष याच्ञायामिति दुर्गः पठति । भिक्ष्, सेट्, सक, आ । भिक्षते । बिभिक्षे । अभिक्षिष्ट । भिक्षिषीष्ट । भिक्षयति,—ते । अबिभिक्षत्,—त । बिभिक्षिषते । बेभिक्ष्यते । बेभिक्षीति । बेभिष्टि । भिक्ष्यते । अभिक्षि । भिक्षितः । भिक्षित्वा । संभिक्ष्य । (३) इत्यादि शिक्षिवत् । ताच्छील्ये उः—भिक्षुः । षाकन्—

---

(१—२) अत्र तरङ्गिणीकारादयः शिक्षेर्जिज्ञासायामिति वचनं नियमार्थमिति व्याचक्षाणा जिज्ञासाया अन्यत्र परस्मैपदमाहुः । तदयुक्तं, शक्तेः सनन्तस्य विध्यर्थसम्भवात्, न च विधिसम्भवे नियमो युज्यते, एवमेव समर्थितं न्यासकैयटपदमञ्जर्यादिषु ।

(३) अयं द्विकर्मकः, अप्रधाने दुहादीनामिति वचनात् क्त-कृत्य-खलर्था अप्रधाने भवन्ति—पौरवो गां भिक्षते । भिक्षितव्यः, भिक्षितः, सुभिक्ष इत्यादि

भिक्षाकः। स्त्रियां भिक्षाकी। शानच्—भिक्षमाणः। अ-भिक्षा। समूहे अण्—भैक्षम्।

२७०। क्लेश, अव्यक्तायां वाचि।
( To speak inarticulately )

क्लेश बाधने इति दुर्गः पठति। अत्र स्वामी—क्लेश व्यक्तायां वाचि चेति पठन्निमावपि पूर्वधातोरर्थाविवाह। चन्द्र-दुर्गमैत्रेयसम्मताकारादयस्तु धात्वन्तरमेवाहुः। उभयपदीति वोपदेवः। क्लेश, सेट्, अक, आ। क्लेशते। चिक्लेशे। क्लेशिता। अक्लेशिष्ट। चिक्लेशिषते। क्लेश्यते इत्यादि। अयं क्र्यादावपि। क्लेशितः। क्लेशः।

२७१। दक्ष, वृद्धौ शीघ्रार्थे च। (To grow, to go in speed)

दक्ष, सेट्, अक, आ। दक्षते। ददक्षे। दक्षिता। अद-क्षिष्ट। दक्षयति। अददक्षत्। कर्म्मणि—दक्ष्यते। लुङ्—अदक्षि, अदाक्षि। दक्षिणः—इनन्। स्त्रियां टाप्—दक्षिणा। दक्षिणामर्हतीति—दक्षिणीयः, दक्षिण्यः।—अर्हार्थे छयतौ। ग्रामस्य दक्षिणतो वसति, दक्षिणत आगतः, दक्षि-णतो रमणीयम्—सप्तमीपञ्चमीप्रथमान्तात् स्वार्थेऽतसुच्। तद्युक्तात् षष्ठी। दक्षिणा ग्रामस्य—आत्। दक्षिणेन ग्रामम्—ग्रामस्येति वा एनप्। एनप्विषये आच्—दक्षिणा ग्रामात्। दक्षिणा भवः—दाक्षिणात्यः (१)—'दक्षिणापश्चात्-पुरसस्त्यगि'ति शैषिकस्त्यक्। दक्षः। दक्षा। दक्षस्यापत्यं—दाक्षायणः। ङीष्—दाक्षायणी।

---

षष्ठी तु द्वितीयावदुभयत्र भवति। भिक्षिता गौः पौरवस्येति। अप्रधाने तूभयथा गौर्भिक्षापुत्र इति भाष्य उक्तत्वात् पौरवमिति द्वितीयापि भवति। भिक्षितव्यो राजा देवदत्तेनेत्यत्रानभिहिते कर्म्मणि कर्त्तरि च 'कर्त्तृकर्म्मणो'रिति षष्ठ्या उभयप्राप्तौ इति प्रतिषेध इत्युक्तत्वात् न भवति।

(१) दक्षिणाशब्दः पश्चात्पुरीभ्यां साहचर्याद्दिग्वाचकोऽव्ययं गृह्यते। अत एव सर्वनामत्वाभावात् सर्वनाम्नो वृत्तिमात्रे पुंवद्भाव इति पुंवद्भावो न भवति।

३७२। दीक्ष, मौण्ड्येज्योपनयननियमव्रतादेशेषु।
( To be shaved, to perform a religious sacrifice, to invest with a sacred thread, to practise self restraint, to teach religious observances )

दीक्ष्, सेट्, आ। दीक्षते। दिदीक्षे। दीक्षिता। अदीक्षिष्ट। दिदीक्षिषते। दीक्षयति,—ते। अदिदीक्षत्,—त। दीक्षा। दीक्षितः। दीक्षणीयः। दिदीक्षिषुः। दिदीक्षिषा।

३७३। ईक्ष, दर्शने। ( To see )

ईक्ष्, सेट्, सक, आ। ईक्षते। ईक्षताम्। ऐक्षत। ईक्षेत। (१)ईक्षाञ्चक्रे,—बभूव इत्यादि। ईक्षिता। ईक्षिष्यते। ईक्षिषीष्ट। ऐक्षिष्ट, ऐक्षिषाताम्, ऐक्षिषत। ऐक्षिष्ठाः, ऐक्षिषाथाम्,ऐक्षिध्व [ड्ढ]म्। ऐक्षिषि, ऐक्षिष्वहि। ईचिक्षिषते। ईक्षयति,-ते। ऐचिक्षत्,-त। सुखं प्रतीक्षते—सुखप्रतीक्षा। 'ईक्षिक्षमिभ्यां चेति वक्तव्य'मिति कर्म्मण्युपपदे णप्रत्ययः। ईक्षमाणः। ईक्षितः। ईक्षित्वा। प्रेक्ष्य। ईक्षणम्। अप—अपेक्षा। अव—अवेक्षणम्। उप—उपेक्षा। निर्—निरीक्षणम्। परि—परीक्षा। प्र—प्रेक्षणम्। उत् प्र—उत्प्रेक्षणम्, उत्प्रेक्षा। सम्—समीक्षणम्। अनु पश्चात् ईक्षणम्—अन्वीक्षा, सा प्रयोजनमस्याः, आन्वीक्षिकी, प्रयोजने ठञ्। ( इकण् )।

३७४। ईष, गतिहिंसादर्शनेषु। (To go, to kill, to see)

ईष्, सेट्, सक, आ। ईषते। ऐषत। ईषाञ्चक्रे। ईषिता।

(१) देवदत्ताय ईक्षते, नैमित्तिकः पृष्टः सन् शुभाशुभं पर्य्यालोचयतीत्यर्थः। 'राधीक्षोर्यस्य विप्रश्नः'। अनयोस्तत्कारकं सम्प्रदानं यस्य विप्रश्नः, यद्विषयं पृच्छ्यत इत्यर्थः। स्वसम्बन्धिनः शुभाशुभस्य विप्रश्नयोगित्वात् कारकमपि तथोच्यते। तदिह धातुरर्थात् शुभाशुभपर्य्यालोचनवृत्तिः। अन्यत्र देवदत्तमिति द्वितीयैव।

ऐषिष्ट, ऐषिषाताम्, ऐषिषत इत्यादि। ईषा। मनस ईषा मनीषा, पृषोदरादिः। समीष्टः आचार्य्यः। ईष्व इति वक्त्रस्य निपातनमस्येति मैत्रेयः। उणादिवृत्तौ तु इषु इच्छायामिति तौदादिकस्य निपातनमुच्यते, इषु इति ह्रस्वादिः। तन्मते उञ्छार्थः। परस्मैपदिषु इषु गताविति दिवादिः, अयमिच्छार्थस्तुदादौ, आभीक्ष्ण्यार्थः क्र्यादौ।

३७५। भाष, व्यक्तायां वाचि। ( To speak )

भाष्, सेट्, सक, आ। भाषते। बभाषे। भाषिता। भाषिष्यते। भाषिषीष्ट। अभाषिष्ट, अभाषिषाताम्, अभाषिषत। कर्मणि—भाष्यते। अभाषि। बिभाषिषते। बाभाष्यते। बाभाषीति, बाभाष्टि। भाषयति,—ते। अबभाषत्—त, अबीभषत्-त। भाषकः। भाषा। भाषित्वा। प्रभाष्य। भाष्यम्। भाषितम्। भाषणम्। अप—अपभाषणम्—निन्दा। अभि—अभिभाषणम्। सम्—सम्भाषणम्। आ—आभाषणम्—आलापः। परि—परिभाषा—सङ्केतः। परिभाषणम्—"यः सनिन्द उपालम्भस्तत्र स्यात् परिभाषणम्" इत्यमरः। वि—विभाषा—विकल्पः।

३७६। वर्ष, स्नेहने। (To melt, to be unctuous)

दन्त्योष्ठ्यादिः। वर्ष्, सेट्, सक, आ। वर्षते। ववर्षे। वर्षिता। विवर्षिषते। वावर्ष्यते। वावर्ष्टि। अवावर्ट् इत्यादि। वृषु सेचन इत्यग्रे परस्मैपदी। शक्त्यार्थश्चुरादौ।

३७७। गेषृ, अन्विच्छायाम्। (To seek)

ग्लेषृ इति च मैत्रेयः। अन्विच्छा अन्वेषणम्। गेष् (ऋ) सेट्, सक, आ। गेषते। जिगेषे। गेषिता। जिगेषिषते। जेगिष्यते। जेगेष्टि। जेगेष्टः। गेषयति (ऋ) अजिगेषत् इत्यादि।

३७८। एषृ, प्रयत्ने। (To strive)

एष् (ऋ) सेट्, अक, आ। एषते। एषाञ्चक्रे। एषिता। एषिष्यते। एषिषीष्ट। ऐषिष्ट। एषयति। ऐषिषत्। मा भवानेषिषत्। अन्वेषते। अभ्येषते। प्रेषते इत्यादि।

३७९। रेषृ, णेषृ, एषृ, प्रेषृ, गतौ। ( To go)

सर्वे ऋदनुबन्धाः, सेटः, सकर्मकाः, आत्मनेपदिनश्च। रेषते। नेषते, प्रणेषते। एषते। प्रेषते। एषृधातोरर्थभेदात् पुनःपाठः।

३८०। रेषृ ह्वेषृ, अव्यक्ते शब्दे।

(To utter any inarticulate sound)

रेष्, ह्वेष्, (ऋ) सेट्, अक, आ। रेषते। अयं वृकविषयः। ह्वेषते इत्यादि। अयमश्वविषयः ह्रेषृ इति सरेफश्चाप्त द्रष्टव्यः। यदाह केशवस्वामी—

"कौञ्चे कर्दति, पर्दते गुदरवे, रेषेति वार्क्के, इसे वुक्केति, खरवे भषेति, हयजे ह्रेषेति ह्वेषेति च।" इति

तथाच अमरः—"ह्वेषा ह्रेषा च निःस्वने।"

३८१। कासृ, शब्दकुत्सायाम्। (To cowgh)

कास् (ऋ) सेट्, अक, आ। कासते। कासताम्। अकासत। कासेत। कासाञ्चक्रे,—२। कासिता। कासिष्यते। कासिषीष्ट। अकासिष्ट। चिकासिषते। चाकास्यते। चाकासीति, चाकास्ति। लोट्हि—चाका[धि]द्धि। लङ्—अचकात्। कासयति। (ऋ) अचकासत्। कास्यते। अकासि। कासः—घञ्। कासारः—औणादिको बाहुलकादारः। ऊ—कासूः शक्तिः। कासूतरी—ष्टरच्, षित्वात् ङीष्। कसतीति ज्वरादौ गत्यर्थः। कस इति गतिशातनयोरादादिकस्य तत्र

धान्ये निदित्यादिना ऊः कसूरित्याह। अन्ये तु तालव्यान्तं पठन्तः कशूरिति।

३८२। भासृ, दीप्तौ। (To shine)

भास दीप्ताविति दुर्गः। भास् (ऋ) सेट्, अक, आ। भासते। बभासे। अभासिष्ट। भासिता इत्यादि कासिवत्। णिच्—भासयति। अबीभसत्, अबभासत्। 'भ्राजभासे'त्युपधा-ह्रस्वविकल्पः। एवञ्चास्य ऋदित्वं तङ्मात्रफलकम्। वरच्—भास्वरः। क्विप्—भाः, भासौ, भासः। घुरच्—भासुरः।

३८३। णासृ, रासृ, शब्दे। ( To sound)

नास्, रास् (ऋ) सेट्, अक, आ। नासते, प्रणासते। रासते इत्यादि कासिवत्। अः—नासा। कन्—नासिका। नासायां भवं तस्यै हितं—नास्यम्, 'शरीरावयवाद्यत्' इति यत्। नासिकाशब्दात्तु यति 'नस् नासिकाया यत्तस्क्षुद्रेष्वि'ति नस्-भावे नस्यमिति। एवं नस्तः, नःक्षुद्रः इति। नासिक्यो वर्णः, नासिक्यं नगरमिति यति 'वर्णनगरयोर्ने'ति नस्भावप्रतिषेधः। व्याघ्रीव नासा यस्य व्याघ्रीणसः—अजविशेषः। 'अज् नासि-कायाः संज्ञायां नसं चास्थूला' दिति नासिकान्ताद्बहुव्रीहेः संज्ञायामच् नसादेशश्च। खुरणसः, खरणसः—'खुरखराभ्यां नस् वक्तव्य' इति नस्भावः। प्रगता नासिका यस्य प्रणसः—'उपसर्गाच्च' इति नस्भावः। विगता नासिका अस्य विग्रः—'वेर्ग्रो वक्तव्य' इति ग्रादेशो नासिकायाः। (१) तुङ्गनासिका—'नासिकोदरे'त्यादिना नासिकाद्यन्ताद्बहुव्रीहेर्वा ङीष्।

(१) "यदाहं नाथ नाथास्यं विनसा हतवान्स्वसा" इति भट्टिप्रयोगे विशेष-विहितेन ग्रादेशेन भाव्यमिति महान्तो न सहन्ते।

रास् (ऋ)—रासः क्रीड़ाविशेषः । रासभः—अभच् । रास्ना—नप्रत्यये निपातितः ।

३८४ । णस, कौटिल्ये । (To be curved)

नस्, सेट्, अक, आ । नसते, प्रणसते । नेसे । नसिता इत्यादि ।

३८५ । भ्यस, भये । ( To fear)

भ्यस्, सेट्, अक, प । भ्यसते । बभ्यसे । भ्यसिता । भ्यसिष्यते । बाभ्यस्यते । बाभ्यस्ति । लोट् हि—बाभ्यधि । भ्यासयति । अबिभ्यसत् इत्यादि ।

३८६ । आङः शसि, इच्छायाम् । * (To desire)

आङ्ग्रहणम् आङ्पूर्वस्यैव प्रयोगो नान्यपूर्वस्य, नवा केवलस्य इत्यवधारणार्थम् । आद्यस्तालव्यः अन्त्यो दन्त्यः । दौर्गस्तु नोपधमनिदितं पठति स्वामी च । माधवीया लिपिरियं मनोरमाविरुद्धेति ।

शन्स् (इ) सेट्, सक, आ । आशंसते । आशशंसे । आशंसिता । आशंसिष्यते । आशंसिष्ट, आशंसिषाताम्, आशंसिषत । आशंसिषीष्ट । आशिशंसिषते । आशाशंस्यते । आशाशंसीति, आशाशंस्ति । ( हि ) आशाशन्धि । लङ्—आशाशन् । आशंसयति,—ते । आशशंसत,—त । आशाशंस्यते । आशंसि । आशंसितः । उ—आशंसुः । आशंस्यम् ।

* माधवीयधातुवृत्तौ—"आङः शास इच्छायामिति गोविन्दभट्टः पठति, तन्मते आशासते इत्यादि । दुर्गस्तु नोपधमनिदितं पठति स्वामी च" इति [ मनोरमायान्तु दुर्गसम्मतः पाठः ;—आङःशसि इच्छायामिति, तदेतच्चिन्त्यम् । ] अयमाङ्पूर्व एव प्रयोक्तव्यः, तथाच काश्यपः—अयमाङःपर एव प्रयोक्तव्य इति; सम्मतायां न च केवलो नाप्युपसर्गान्तरपूर्व इति । आङ्रहितोऽपि दृश्यते—"यः शंसते सतां वृत्ति"मिति कवि—२२ ।

आशंस्य—ल्यप्। अ—आशंसा। शनृसु स्तुतावित्यग्रे परस्मै-
पदिषु। आङः शासु (ङ) इच्छायाम्। शासु अनुशिष्टाविति
द्वयमादौ।

३८७। ग्रसु, ग्लसु, अदने। (To eat)

ग्रस, ग्लस (ङ) सेट, सक, प। ग्रसते। जग्रसे। ग्रसिता।
अग्रसिष्ट इत्यादि। ग्रासयति। पिण्डं देवदत्तः—निगरणार्थ-
त्वान्नित्यं परस्मैपदम्, प्रयोज्यस्य कर्मत्वञ्च। अजिग्रसत्।
जिग्रसिषते। जाग्रस्यते। जाग्रस्ति। जिग्रसिषा। जिग्रसिषुः।
ग्रसिष्णुः—इष्णुच्। कर्मणि—ग्रस्यते। अग्रासि। ग्लस—
ग्लसति इत्यादि।

३८८। ईह, चेष्टायाम्। (To endeavour)

ईह, सेट, अक, प। ईहते। ईहताम्। ऐहत। ईहेत।
ईहाञ्चक्रे—३। ईहिता। ईहिष्यते। ईहिषीष्ट। ऐहिष्ट, ऐहि-
षाताम्, ऐहिषत। ऐहिष्ठाः, ऐहिषाथाम्, ऐहिढ्वम्, ऐहि-
ध्वम्। ऐहिषि, ऐहिष्वहि—ष्महि। ईजिहिषते। ईहयति,—
ते। ऐजिहत्,—त। मा भवानीजिहत्। ईहितुम्। ईहितम्।
ईहा। समीहा। ऐहो, पर्य्येहो, शार्ङ्गरवादिपाठात् आङ्-
पूर्वाच्चेनन्तात् ङीन्।

३८९। बहि, महि, वृद्धौ। ( To grow )

बनृह, मनृह (ङ) सेट, अक, आ। बंहते। बबंहे।
बंहिता। अबंहिष्ट। बंहिषीष्ट। बिबंहिषते। बाबंह्यते।
बाबण्ढि, बाबन्ढः, बाबंहति। बाभङ्क्षि। बाबंह्मि। बाबंह्वः।
बंहयति। अबबंहत्। मनृह—मंहति इत्यादि। अयं
भाषार्थश्चुरादाविति स्वामी। मह पूजायामिति इहैवाग्रे
परस्मैपदिषु। महीयते इत्यादि महीङिति कण्ड्वादिपाठात्।

३९०। अहि, गतौ। (To go)

अनुह् (इ) सेट्, सक-आ। अंहते। आनंहे। अंहिता। आंहिष्ट। अञ्जिहिषति। अंहयति। आञ्जिहत्। अंहः—असुन्। चुरादौ भाषार्थः।

३९१। गर्ह, गल्ह, कुत्सायाम्। (To censure)

गर्ह, गल्ह, सेट्, अक, आ। गर्हते। जगर्हे। गर्हिता। गर्हिष्यते। अगर्हिष्यत। अगर्हिष्ट। जिगर्हिषते। जागर्ह्यते। जागर्हीतीत्यादि वर्हिवत्, लङ्—अजघर्ट्। गल्ह—गल्हते इत्यादि। यङ्लुकि लङ्—अजागल्।

३९२। वर्ह, वल्ह, प्राधान्ये। (To be chief)

ओष्ठ्यादौ। वर्ह्, वल्ह्, सेट्, अक, आ। वर्हते इत्यादि। वल्ह्—वल्हते इत्यादि। वर्हं, वर्हिणः—अच्, इनः। वर्ही—मत्वर्थीय इनिः। इमौ भाषार्थौ चुरादौ। वर्ह हिंसाया-मिति तत्रैव, बृह वृद्धाविति अत्रैवाग्रे परस्मैपदिषु। बृह उद्यमने चुरादौ।

३९३। वर्ह, वल्ह, परिभाषणहिंसादानेषु। (To speak, to injure, to give)

दन्त्योष्ठ्यादौ। वर्ह, वल्ह्, सेट्, सक, आ। वर्ह्—वर्हते। वल्ह्—वल्हते। ववल्हे। वल्हिता इत्यादि। वर्हते छादयतीत्यनेन वर्हः—घञ्। (१)

३९४। (क) प्लिह, गतौ। (To go)

प्लिह्, सेट्, सक, आ। प्लेहते। पिप्लिहे। प्लेहिता।

(१) अत्र धनपालमैत्रेयौ परिभाषणादावौष्ठ्यादित्वं वाहतुः। छादयत्यनेनेति वर्हः, घञिति वदन् शाकटायनोऽप्यत्रैवानुकूलः।

अप्लेहिष्ट। पिप्लिहिषते, पिप्लेहिषते। प्लिहित्वा, प्लेहित्वा। प्लीहा—कनिन्नन्तो निपातितः।

३८४। वेह्न, जेह्न, बाह्न, प्रयत्ने। ( To strive )

आद्यो दन्त्योष्ठ्यादिः। अन्त्यः केवलौष्ठ्यादिः। उभावपि केवलौष्ठ्यादी इत्येके। दन्त्योष्ठ्यादी इत्यन्ये। वेह्, जेह्, बाह्, (ऋ) सेट्, अक, आ। वेहते, जेहते, बाहते इत्यादि। अविवेहत्। वेहत्—गर्भोपघातिनी गौः—अत्प्रत्ययो निपातितः। गोवेहत्—'पोटायुवतिस्तोके' त्यादिना कर्मधारयः। बाहा—अजन्तत्वात् टाप्। बाढ़ 'क्षुब्धे' त्यादिना निष्ठायामिड्भावे भृशार्थे निपातितम्। अन्यत्र—बाहितम्। जेहतिर्गत्यर्थोऽपि।

३८५। द्राह्न, निद्राक्षये। ( To wake )

द्राह् (ऋ) सेट्, अक, आ। द्राहते। दद्राहे। द्राहिता। अद्राहिष्ट। दिद्राहिषते इत्यादि। निक्षेप इति केचित्। यङ्—दाद्राह्यते। यङ्लुक्—दाद्राग्धि, दाद्राहीति, दाद्राग्धः। दाद्राह्मि। लङ्—अदाध्राक्।

३८६। काशृ, दीप्तौ। ( To shine )

काश्, (ऋ) सेट्, अक, आ। काशते। काशताम्। अकाशत। काशेत। चकाशे, चकाशाते, चकाशिरे। काशिता। काशिष्यते। काशिषीष्ट। अकाशिष्ट, अकाशिषाताम्, अकाशिषत। अकाशिष्यत। चिकाशिषते। चाकाश्यते। चाकाशीति, चाकाष्टि। चाकाश्मि। चाकाश्मि। लङ्—अचाकाट्। काशयति,—ते। अचकाशत्,—त। काश्यते। अकाशि। काशः—घञ्। नीकाशः 'इकः काशे' इति दीर्घः। इन्—काशिः, काशी—वा ङीष्। काशिषु भवा—काशिका, ञिठः। काशिकी—ठञ्

ङीप्। काष्ठम्—क्थन्। आकारोपधप्रकरणादयमिह पठितः। अयं दिवादौ च। काशृ गतिशासनयोरित्यदादौ। दुर्गादय इमं दन्त्यान्तं केचिदन्तोदितम् पठन्ति।

३९७। ऊह, वितर्के। (To conjecture)

वितर्कः सम्भावनम्। ऊह्, सेट्, सक, आ। ऊहते। ऊहताम्। ऊहेत। औहत। ऊहाञ्चक्रे। ऊहिता। ऊहिष्यते। ऊहिषीष्ट। औहिष्ट, औहिषाताम्, औहिषत। ऊजिहिषते। ऊहयति,—ते। औजिहत्,—त। मा भवानुजिहत्,—त। समूहति, समूहते—'उपसर्गादस्यत्यूह्योर्वा वचन'-मिति सोपसर्गादस्मात् विकल्पेनात्मनेपदम्। समुह्यादित्यत्र 'क्लिदाशिषो'ति क्लित्त्वे 'उपसर्गाद्ध्रस्व ऊहते' रिति यकारादौ कङितिह्रस्वः। एवं यक्यपि समुह्यत इति। (१) ऊह्यते। औहि। ऊहितः। ऊहित्वा। समुह्य। ऊहमानः। समूहन्, समूहमानः। समुह्यमानः।

३९८। गाहृ, विलोड़ने। (To bathe, to penetrate)

गाह् (ऊ), वेट्, सक, आ। गाहते। लिट्—जगाहे, जगाहाते, जगाहिरे। (से) जघाक्षे, जगाहिषे। (ध्वे) जगाहिढ्वे, जघाढ्वे, जगाहिध्वे। लुट्,—गाढ़ा, गाहिता। लृट्—घाक्ष्यते, गाहिष्यते। आशीः—गाहिषीष्ट, घाक्षीष्ट। लुङ्—अगाढ़, अगाहिष्ट, अघाक्षाताम्, अगाहिषाताम्, अघाक्षत,

(१) यद्यप्युपसर्गादस्यत्यूह्योरिति वार्त्तिकमकर्म्मकाधिकारे पठितं तथापि वृत्तिकैयटादौ सकर्म्मकसाधारणमुक्तम्। "अनुक्तमप्यूहति पण्डितो जनः" इति प्रयोग आङ्पूर्वस्येति सुधाकरः। एवञ्च सति—औहतीति गुणः पठितव्यः। औह्यत इत्यत्रान्तादिवद्भावेनोपसर्गात् परत्वेन 'उपसर्गाद्ध्रस्व ऊहते'रिति ह्रस्वो न भवति, उभयतश्चाश्रये नान्तादिवद्भाव इति वचनात्। यद्वाऽणः इति वर्त्तते, स च सामर्थ्यात् पूर्वेण णकारेणेति ह्रस्वाप्रसङ्गः। एवञ्च समौह्यत इत्यादावप्यादिवद्भौ ह्रस्वो न भवति।

अगाहिषत। अगाढ़ाः, अगाहिष्ठाः, अगाहिषाथाम्, अघाक्षाथाम्, अगाहिढ्वम्, अघाढ्वम्, अगाहिध्वम्। अगाहिषि, अघाक्षि, अगाहिष्वहि, अघाक्ष्वहि; अगाहिष्महि, अघाक्ष्महि। अगाहिष्यत, अघाक्ष्यत। सन्—जिघाक्षते, जिगाहिषते। जागाह्यते। जागाहीति, जागाढ़ि। गाहयति,—ते। अजीगहत्,—त। गाह्यते। अगाहि। गाढ्वा, गाहित्वा। अवगाह्य। गाहितुम्, गाढुम्। गाढ़ः। अच्—गाहः स्त्रियां ङीष्—गाही। गह्वरम्—'छित्वरे'त्यादिना क्वरचि निपात्यते। उणादिवृत्तौ तु गाधतेर्निपातनमुक्तम्। गहनं करोतीति—गहनायते। अचि ह्रस्वः—गहः। गहे भवं—गहीयम्।

३९९। गृह्, ग्रहणे। (To seize)

गृह् (ऊ) वेट्, सक, आ। गर्हते। अगर्हत। गर्हेत। गर्हताम्। जगृहे। जगृहिषे, जघृक्षे। जगृहिध्वे, जगृहिढ्वे, जघृढ्वे। गर्हिता, गर्ढा। गर्हिष्यते, घर्क्ष्यते। गर्हिषीष्ट, घृक्षीष्ट। लुङ्—अगर्हिष्ट, अघृक्षत; अगर्हिषाताम्, अघृक्षाताम्; अगर्हिषत, अघृक्षत। अगर्हिष्ठाः, अघृक्षथाः; अगर्हिषाथाम्, अघृक्षाथाम्, अगर्हिढ्वम्, अगर्हिध्वम्, अघृक्षध्वम्; अगर्हिषि, अघृक्षि। अगर्हिष्वहि, अघृक्षावहि। जिगर्हिषते, जिघृक्षते। जरीगृह्यते, जर्गर्होति, जरीगर्ढि, जरिगर्ढि, जर्गर्ढि, जरीगृहीति, जरिगृहीति। गृह्यते। अगर्हि। गृढ़ः। गर्हितुम्, गर्ढुम्। गर्हित्वा, गृढ्वा। गृहम्। (१) इगुपधलक्षणः कः।

(१) अत्र मैत्रेयः—'गेहे क' इति गृह्णातेः कविधानं तस्यापि गृहमिति यथा स्यादिति। अयं क्वचित् कोषे ग्रिह इति इदुपधः पठ्यते, तदनार्षं। यदाह देवः—"ऋन्तस्य ग्रहणे गृहग्रंहयते, तत्राऽनदन्तादृगृहेर्भू वादेरपि गर्हते, श्निपरतो गृह्णाति अगृह्णीत" इति। अत्र पुरुषकारे गृह इत्यनेनैव पूर्वस्मादकारान्तत्वमात्रविशेषः।

३९९। (क) घुषि, कान्तिकरणे। (To shine)

घुन्ष्, सेट्, सक, आ। घुंषते। जघुंषे। अघुंषिष्ट।

## परस्मैपदिनः।

४००। घुषिर, विशब्दने। (To sound, to declare)

उदात्तधातुसाम्यादिह पठितः। घुषाद्यन्ता उदात्ता अनुदात्तेतः। घुषिर् अविशब्दनार्थः। इतोऽर्हत्यन्ता उदात्ता उदात्तेतः। विशब्दनं प्रतिज्ञानं तच्च शब्देन स्वाभिप्रायप्रकाशनमिति न्यासे। अस्मादन्यस्मिन्नर्थे यथाप्रयोगमयं धातुर्वर्त्तेत इति पुरुषकारे। सर्वत्र चीरस्वामिधनपालभागवृत्तिकारा घुषिं शब्दार्थं पेठुः। चन्द्रदुर्गौ त्वर्थशब्दमपहाय शब्द इत्येव पेठतुः। घुष शब्द इति पठन् शाकटायनोऽप्यत्रैवानुकूलः। तेन हि य इति स्थाने अनेति न क्रियते। यदि शब्द इत्यर्थः स्यात्, तर्हि 'घुषिरविशब्दन' इति इट्प्रतिषेधेति लघु घुषिरविशब्द इत्येव वाच्यं स्यादिति घुषिरविशब्दार्थ इति मैत्रेयादिपाठो ज्यायान्।

घुष् (इर्) सेट्, अक, प। घोषति। जुघोष। घोषिता। घोषिष्यति। अघोषिष्यत्। अघुषत्, अघोषीत्; अघुषताम्, अघोषिष्टाम्। घुष्यात्। जुघुषिषति, जुघोषिषति। घुषित्वा, घोषित्वा। घुष्टः, घोषितः, घुषितः। जोघुष्यते। जोघुषीति, जोघोष्टि। लोट्हि—जोघुड्ढि। लङ्—अजोघोट्। णिच्—घोषयति-ते। अजूघुषत्—त। घुष्यते। अघोषि। क्त—घुष्टा—रज्जुः। संघुष्टा रज्जुः संपूर्वत्वे तु 'रुषमत्वरसंघुषास्वना' मिति

गृहीत्वा विशिष्टमिति दर्शयित्वा गृहपाठशङ्का निरवकाशतां नीता। ग्लह इति स्वामिकाश्यपसम्मताकारादयः पठन्ति तदपि ग्राह्यम्। तथाच—'अक्षेषु ग्लह' इत्यत्र वृत्तिः—ग्लहिः प्रकृत्यन्तरमिति। ग्लहत इत्यादि पूर्ववत्। ग्लहोऽक्षस्य। 'अक्षेषु ग्लह' इत्यप्। अक्षादन्यत्र ग्लाह इति घञ्। एवान्तु निपातनं ग्रहेरेतदिति तेषामनर्थे ग्रह इति प्रत्युदाहार्य्यम्, लत्वाभावो विशेषः।

इटो विकल्पनात् संघुषिता रज्जुः इत्युभयं भवति। इति चुरादौ चायम्।

४०१। अक्ष, व्याप्तौ। (To pervade)

अक्ष् (ऊ) वेट्, सक, प। अक्षति, अक्ष्णोति; अक्षतः, अक्ष्णुतः; अक्षन्ति, अक्ष्णुवन्ति। अक्षसि, अक्ष्णोषि। अक्षामि, अक्ष्णोमि। अक्षतु, अक्ष्णोतु। अक्ष, अक्ष्णुहि। अक्षाणि, अक्ष्णवाणि। आक्षत्, आक्ष्णोत्। अक्षेत्, अक्ष्णुयात्; अक्षेः, अक्ष्णुयाः; अक्षेयम्, अक्ष्णुयाम्। लिट्—आनक्ष, आनक्षतुः, आनक्षुः। (ऊ) आनष्ठ, आनक्षिथ; आनक्षथुः, आनक्ष। आनक्ष, आनक्षिव, आनक्ष्व; आनक्षिम, आनक्ष्म। लुट्—अष्टा, अक्षिता। ऌट्—अक्ष्यति, अक्षिष्यति। ऌङ्—आक्ष्यत्, आक्षिष्यत्। लुङ्—आक्षीत्, आक्षिष्टाम्, आष्टाम्; आक्षिषुः, आक्षुः। आक्षीः, आक्षिष्टम्, आष्टम्; आक्षिष्ट, आष्ट। आक्षिषम्, आक्षम्; आक्षिष्व, आक्ष्व; आक्षिष्म, आक्ष्म। माभवानक्षीत्, (अनिट् पक्षे) माभवानाक्षीत्; माभवानक्षिष्टाम्, माभवानाक्षिष्टाम्; माभवानक्षुः, माभवानाक्षुः इत्यादि। आशीः—अक्ष्यात्।

कर्म्मणि—अक्ष्यते। आक्ष्यत। लुङ्—आक्षि, आक्षिषाताम्, आक्षाताम्; आक्षिषत, आक्षत। माभवानक्षि, माभवानक्षिषाताम्, माभवानक्षाताम् इत्यादि।

णिच्—अक्षयति-ते। आचिक्षत्,—त। सन्—अचिक्षिषति, अचिक्षति।

क्त्—अक्षित्वा, अष्ट्वा। अक्षितुम्, अष्टुम्। अक्षितव्यः, अष्टव्यः। क्त—अष्टः। क्तिन्—अष्टिः। अक्षि—इन्। (३या) अक्ष्णा, (७मी) अक्षणि, अक्ष्णि। विशालमक्षि यस्य स—

(१) अस्य कर्त्तृवाचिसार्वधातुकपरत्वे श्नु-(नु) भवति वा।

विशालाक्षः, 'बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्' इति षच्। स्त्रियां—विशालाक्षी। स्वाङ्गादिति वचनात्—स्थूलाक्षा वेणुयष्टिरित्यत्र 'अक्ष्णो दर्शना'दित्यचि टाप् (१)

४०२। तक्षू, त्वक्षू, तनूकरणे। ( To pave )

तक्ष्, त्वक्ष् (ऊ) सेट्, सक, प। तक्षति। तक्ष्णोति। (२) ततक्ष। त्वक्षति इत्यादि अक्षूवत्। अक्षा—कनिन्। तक्ष्णोऽपत्यं—ताक्ष्णः, अण्। ग्रामस्य तक्षा—ग्रामतक्षः। कुट्यां भवः—कौटः, स चासौ तक्षा—कौटतक्षः, टच् समासान्तः। पञ्चानां तक्ष्णां समाहारः—पञ्चतक्षः, स्त्रियां पञ्चतक्षी। द्वितक्षी—'द्विगो'रिति ङीप्। तक्ष त्वचन इत्यग्रेऽनूदित्।

४०३। उक्ष, सेचने। ( To sprinkle )

उक्ष्, सेट्, सक, प। उक्षति। उक्षाञ्चकार (३)। उक्षिता इत्यादि पूर्ववत्। उक्षा—कनिनन्तो निपातितः। उक्ष्णां समूहः—औक्षकम्—वुञ्। उक्ष्ण इदम्—औक्षम्, निपातः। अपत्ये तु—औक्ष्णः। जातोक्षः, महोक्षः, वृद्धोक्षः—'अचतुरे'त्यादिना निपातितः।

---

(१) इह च दर्शनं चक्षुरिति गवाक्षं कवराक्षमित्यत्राचक्षुर्वचनस्याक्षिशब्दस्याजभवति। यद्वात्र समुदायो दर्शनसाधनं न तु तदवयवोऽक्षिशब्द इति तस्य दर्शनयोगाभावाददर्शनादिति निषेधस्य नैव प्रसङ्गः। कवराक्षमिति सच्छिद्रमश्वानां मुखविधानमुच्यते। कथं स्थूलाक्षिरिक्षुरिति, यदि दृश्यते अनित्यः समासान्त इति। अयं समासान्तः स्वतिपूर्वस्यापि भवति। न पूजनादित्यत्र 'बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णो'रनिषेध इत्युक्तत्वात्।

(२) 'तनूकरणे तक्ष' इति पक्षे श्नुविषये श्नौ ( नु विकरणे ) तक्ष्णोति इत्यादि अक्ष्णोतिवत्। अन्यत्र संतक्षतीत्याद्येकमेव। अत्र सन्तक्ष्णमर्थः।

(३) 'उक्षां प्रचक्रुर्नगरस्य मार्गान्' इति भट्टिप्रयोगमुपादाय सुधाकरादयः—उक्ष्यन्ते इत्युक्षाः, कर्मणि घञ्। उक्षान् प्रचक्रुरिति पाठान्तरञ्चाहुः।

४०४। रक्ष, पालने। (To protect)

अव, रक्ष् पालने इति दुर्गः। रक्ष, सेट्, सक, प। रक्षति। ररक्ष, ररक्षतुः। ररक्षिथ। रक्षिता। आशीः—रक्ष्यात्। अरक्षीत्, अरक्षिष्टाम्, अरक्षिषुः। रक्षिष्यति। रक्षयति-ते। अररक्षत्—त। कर्म्मणि—रक्ष्यते। अरक्षि। यङ्—रारक्ष्यते। यङ्लुक्—रारक्षीति, रारष्टि। सन्—रिरक्षिषति। अ—रक्षा। रक्षणम्। रक्षित्वा। रक्षितः। रक्षकः। निरक्षतीति निरक्षी—णिनिः। रक्षः—असुन्। राक्षसः—अण्।

४०५। णिक्ष, चुम्बने। (To kiss)

णिक्ष्, सेट्, सक, प। निक्षति। निनिक्ष। निक्षिता इत्यादि। प्रणिक्षणम्, प्रनिक्षणम्—णत्वविकल्पः।

४०६। तृक्ष, स्तृक्ष, णक्ष, गतौ। (To go)

तृक्ष, स्तृक्ष, नक्ष, सेट्, सक, प। तृक्षति। ततृक्ष। तृक्षिता। तितृक्षिषति। तरीतृक्ष्यते। तरीतृष्टि। तृक्षयति। अततृक्षत्। तृक्षः—अच्, तस्यापत्यं,—तार्क्ष्यः। स्तृक्ष्—स्तृक्षति। तस्तृक्ष इत्यादि पूर्ववत्। नक्ष्—नक्षति, प्रणक्षति। ननक्ष इत्यादि। नक्षत्रम्—अत्र-प्रत्ययः।

४०७। वक्ष, रोषे। (To be angry)

सङ्घात इत्येके। वक्ष्, सेट्, अक, प। वक्षति। ववक्ष। वक्षिता इत्यादि। वक्षः—असुन्।

४०८। म्रक्ष, सङ्घाते। (To accumulate)

म्रक्ष्, सेट्, अक, प। (१) म्रक्षति। मम्रक्ष। मम्रक्षिथ। म्रक्षिता। अम्रक्षीत्। म्रक्षिष्यति। म्रक्ष्यात्। मिम्रक्षि-

(१) मक्ष इत्यप्येक इति मैत्रेयः, तन्मते—मक्षति। ममक्ष। मक्षिता इत्यादि। मक्षिका—क्वुन्, टाप्।

षति। मरीमृच्छ्यते। मरीमृष्टि इत्यादि। मृचयति,—ते। अममृचत्,—त। मृच्यते। अमर्चि।

४०९। तच; त्वचने। ( To pare )

त्वचनं संवरणमिति दुर्गकाश्यपमैत्रेयाः, त्वचो ग्रहणमिति स्वामी। तच्, सेट्, सक, प। तचति (१)। ततच। तचिता। ऊदित् गतः।

४१०। षर्च, आदरे। (२) ( To regard )

सूर्च, सेट्, सक, प। सूर्चति। सुषूर्च। सुषूर्चिथ। सूर्चिता। असूर्चीत्। सूर्च्यात्। सुसूर्चिषति। सूर्चयति,—ते। असुसूर्च्चत्,—त। सूर्चित्वा। सूर्चितः।

४११। काचि, वाचि, माचि, काङ्क्षायाम्। ( To wish )

काङ्क्, वाङ्क्, माङ्क् ( इ ) सेट्, सक, प। काङ्क्षति। काङ्क्षेत्। अकाङ्क्षत्। चकाङ्क्ष। चकाङ्क्षिथ। काङ्क्षिता। अकाङ्क्षीत्, अकाङ्क्षिष्टाम्, अकाङ्क्षिषुः। काङ्क्षिष्यति। चिकाङ्क्षिषति। चाकाङ्क्ष्यते। चाकाङ्क्षीति। चाकांष्टि। काङ्क्षयति,—ते। अचकाङ्क्षत्,—त। काङ्क्षित्वा। काङ्क्षितः। काङ्क्षितुम्। आकाङ्क्षा। "न काङ्क्षे विजयं कृष्ण।" गीता। आत्मनेपदमार्षम्। वाङ्क्षति, माङ्क्षति इत्यादि पूर्ववत्।

---

(१) अत्रैव, "पच परिग्रहणे" इत्यप्येक इति। पचति। पचः—घञ्। पचस्य मूलं—पचतिः। पक्षात्तिरिति तिः। पक्षे भवं—पक्ष्यं, यत्। पक्षः—असुन्।

(२) अनादर इति क्वचित् पठ्यते, तदसत्, "सोमेन यक्ष्यमाणो नभूनसूर्चचक्षत्रमिति दर्शनात्, "सोमेन यक्ष्यमाणो वसन्ते ब्राह्मणोऽग्नीनादधीत।" "उत्तरयोः फल्गुन्योरग्निमादधीते"त्यादिना चोदितनक्षत्राणि नाद्रियेत इति तत्रार्थः। तथा "अवहेलनमसूर्चण"मिति कोषश्च दृश्यते। सूर्चणमादरः, ततोऽन्यदसूर्चणमनादरः।

४१२। ध्राक्षि, ध्राक्षि, ध्वाक्षि, घोरवाशिते च।

( To utter a discordant sound, to wish )

चकारेण पूर्वोक्तोऽर्थः परामृश्यते। ध्राङ्क्ष्, ध्राङ्क्ष्, ध्वाङ्क्ष्, (इ) सेट्,प। ध्राङ्क्षति। ध्राङ्क्षति। ध्वाङ्क्षति। ध्वाङ्क्षति इत्यादि। अ—ध्राक्षा, ध्राक्षा। ततो मतुप्—ध्राक्षामत्, ध्राक्षामत्—यवादिपाठादनुनासिकलोपः। मतुपो मकारस्य वत्वनिषेधश्च।—अच्, ध्वाङ्क्षः। तीर्थे ध्वाङ्क्ष इव—तीर्थध्वाङ्क्षः।

४१३। चूष, पाने। ( To drink )

चूष्, सेट्, सक, प। चूषति। चुचूष। चूषिता। अचूषीत्। चुचूषिषति। चोचूष्यते। चोचूष्टि। चोचूषितो। चूषयति। अचूचुषत्। चूष्यम्—ष्यत्। चूषित्वा। चूषितः।

४१४। तूष, तुष्टौ। ( To be satisfied )

तूष्, सेट्, अक, प। तूषति। तुतूष। तूषिता इत्यादि पूर्ववत्।

४१५। पूष, वृद्धौ। ( To grow )

पूष्, सेट्, अक, प। पूषति। पुपूष। अपूषीत्। पूषिता इत्यादि पूर्ववत्। अच्—ङीष्। पूषी, दीपस्थापनार्थं कुड्य-कल्पितो विलविशेषः, कुलोङ्गीति भाषा। पूषा—कनिन्नन्तो निपातितः। औ—पूषणौ। ङि—पूष्णि, पूषणि। अण्—पौष्णः। पुष पुष्टाविति इहैवाग्रे, दिवादौ, क्र्यादौ च। धारणे चुरादौ।

४१६। मूष, स्तेये। ( To steal )

मूष्, सेट्, सक, प। मूषति इत्यादि पूषवत्। मूषकः—क्वुन्। मूषिका—टाप्। अ—मूषा, तया चरति—मूषिकः—ठञ्। ह्रस्वोपधः क्र्यादौ। लूष, रूष, भूषायामिति सुधाकरः। लूषति। रूषति। रूषिता इत्यादि।

४१७ । शूष, प्रसवे । ( To bring forth )

तालव्योष्मादिरिति पारायणिका इति स्वामी । दृश्यते च तैत्तिरीयके—"अच्छशूषा" इति । केचित् दन्त्यादिं पठन्ति, तदनार्षं षोपदेशलक्षणविरोधात् । शूष, सेट्, सक, प । शूषति इत्यादि पूर्ववत् ।

४१८ । यूष, हिंसायाम् । ( To kill )

यूष, सेट्, सक, प । यूषति इत्यादि । घञ्—यूषः—मांस रसविशेषः ।

४१९ । जूष च । ( To kill )

चकारेण पूर्व्वोक्तोऽर्थः परामृश्यते । जूष, सेट्, सक, प । जूषति इत्यादि । जुषी प्रीतिसेवनयोरिति चुरादौ । जुष परि-भाषण इति युजादौ ह्रस्वोपधौ ।

४२० । भूष, अलङ्कारे ।

भूष, सेट्, सक, प । भूषति (१) । बुभूष । भूषिता । अभू-षीत् इत्यादि पूर्ववत् । चुरादौ चायम् ।

४२१ । ऊष, रुजायाम् । ( To be diseased )

ऊष, सेट्, अक, प । ऊषति । ऊषाञ्चकार । ऊषिता । ऊषिषिषति । ऊषयति । माभवानुषिषत् । ऊषः—घञ् । ऊषरः—रः । उष दाहे इत्यग्रे ।

---

(१) भूषते कन्या स्वयमेव, अभूषिष्ट कन्या स्वयमेव, 'भूषाकर्म्म'ेति यक्चिणोर्निषेधः, भूषाफलं शोभनाख्यं कर्म्मणि दृश्यत इति कर्म्मस्थ-क्रियत्वं कैयट इत्युक्तम् । अङ्गाः सूनाः । परिभूषन्त्वश्वमित्यत्र भट्टभास्करः । सूना मांसविकर्त्तनसाधनान्यश्वादीनि, अश्वं परिभूषन्तु परितो भवन्त्विति । भवतेर्लोटि सिपि रूपमुक्त्वा भूषयतेर्वा शप् । छन्दसि टिलोप इत्यादि ।

४२२। ईष, उञ्छे। ( To glean )

उञ्छी उञ्छे इति दुर्गः पठति। ईष्, सेट्, अक, प। ईषति इत्यादि जषवत्। ईषत इति गतौ गतः।

४२३। कष, खष, शिष, जष, झष, शष, वष, मष, रुष, रिष, हिंसार्थाः।

( To rub with a touch-stone, to injure, to kill )

तृतीयषष्ठौ तालव्योष्मादौ। सप्तमो दन्त्योष्ठादिः। सर्वे सकर्मकाः परस्मैपदिनश्च।

कष्, सेट्—कषति। चकाष। कषिता। कषिष्यति। अकषिष्यत्। कष्यात्। अकषीत्, अकाषीत्। काषयति-ते। अचीकषत्—त। चिकषिषति। चाकष्यते। चाकषीति, चाकष्टि। कष्यते। अकाषि। सर्वङ्कषम्—'सर्वकूलाभ्रकरीषेषु कष' इति खश्, 'अरुर्द्विषदजन्तास्ये'ति उत्तरपदे मुम्। एवं कूलङ्कषम्। टाप्—सर्वङ्कषा। कूलङ्कषा—नदी। विकाषी—तच्छीलादिषु घिणुन्। आकषः, निकषः—अधिकरणे घः। आकषेण चरति—आकषिकः। स्त्रियाम्—आकषिकी। आकषे कुशलः—आकषकः, कन्। निमूलकाषं कषति, समूलकाषं कषति—णमुल्। पादौ कषितुं शीलमस्य पत्काषी—णिनिः। तत्र कष्टं व्याकरणम्—कृच्छ्रसाध्यमित्यर्थः। कष्टानि वनानि—दुष्प्रवेशानीत्यर्थः। 'कृच्छ्रगहनयोः कष' इति निष्ठायामनिट्त्वम्। अन्यत्र कषितो देवदत्तः। कष्टाय कर्मणे क्रामति—कष्टायते, चतुर्थ्यन्तात् क्यङ्। कष्टं चिकीर्षति—कष्टायते, द्वितीयान्तात् क्यङ्। कक्षः—सप्रत्ययः। कक्षायते—'सत्र कक्षे'त्यादिना क्यङ्।

खष्, सेट्—खषति इत्यादि। खष्यः—बलात्कारः, 'खष्य शष्ये'त्यादिना यप्रत्ययान्तो निपात्यते।

शिषु, अनिट्, ( वोपदेवप्रभृतीनां मते सेट् )—शेषति। शेषतु। अशेषत्। शेषेत्। शिशेष; शिशेषिथ। शेष्टा ( शेषिता )। शेक्ष्यति ( शेषिष्यति )। आशीः—शिष्यात्। अशिक्षत् ( अशेषीत् )। शिशिक्षति, ( शिशिषिषति, शिशेषिषति )। (१) शेशिष्यते। शेशेष्टि इत्यादि। शेषयति। अशीशिषत। शिष्ट्वा। शिष्टः। शिष्टवान्। शिष्यं—यप्रत्ययान्तो निपातितः।

जषु ( सेट् )—जषति। जजाष, जेषतुः। जषिता इत्यादि कषिवत्। एवं झषु—झषति इत्यादि। शषु—शषति इत्यादि। शष्यं पूर्ववत् पः। शष आदानसंवरणयोरिति स्वरितेदग्रे। वषु (सेट्)—वषति। ववाष, ववषतुः। वषिता इत्यादि। मषु—मषतीत्यादि।

रुष (तादौ वेट्)—रोषति। रुरोष। रुरोषिथ। रोषिता, रोष्टा। रोषिष्यति। अरोषीत्। रुष्यात्। रोषयति,—ते। अरूरुषत्,—त। रुरुषिषति, रुरोषिषति। रोरुष्यते। रोरुषीति, रोरोष्टि। रुष्यते। अरोषि। रोषित्वा, रुषित्वा, रुष्ट्वा। वर्त्तमानेऽपि क्तः—रुष्टः, रुषितः। रोषितमनेन इत्यादि। रोषितुं, रोष्टुम्। रुष रोष इति दिवादौ चुरादौ च।

रिष—रेषति इत्यादि रोषतिवत्। क्त—रिष्टः। रेषत इति शब्दे गतः। अत्र दण्डके सुषिरपि धातुकोषे पठ्यते। स्तेयार्थोऽयं पूर्ववच्चेष पठित इतीह पाठे नाभिनिवेष्टव्यम्। हिंसार्थत्वं यदि दृश्यते, तदा धातूनामनेकार्थत्वात् भविष्यति।

(१) शिषिं पुषिमित्यनिट्कारिकाप्रामाण्याच्छिषिमात्रस्यानिट्त्वे न क्से सति अशिक्षदिति युक्तम्। तथा मैत्रेयोऽपि शेष्टेत्यनिटमुदाजहार। एवञ्च लिटि सेट्त्वं क्रादिनियमात् सिद्धम्। एवञ्चास्य सेटो मध्ये पाठो यथा शिषिमात्रस्यानिट्त्वेन 'शलइगुपधे'ति षान्तसाम्यात् षान्तपरस्मैपदिसाम्याच्च द्रष्टव्यः।

४२४। भष, भर्त्सने। (To bark)

इह भर्त्सनं खरवो यतस्तत्रैवायं प्रसिद्धः। भष्, सेट्, अक, प। भषति। बभाष। भषिता। अभषीत्, अभाषीत् इत्यादि। भषकः—वुन्।

४२५। उष, दाहे। (To burn)

उष्, सेट्, सक, प। ओषति। ओषतु। औषत्। ओषेत्। ओषाञ्चकार—२, उवोष। ऊषतुः; उवोषिथ। ओषिता। ओषिष्यति। ओष्यात्, औषीत्। ओषिषिषति। ओषयति। औषिषत्। माभवानुषिषत्। क्त—उषितः। प्रत्युष्टमिति आश्वस्तादिवत् अभिधानादनिट्। ऊष्मा—मनिन्, बाहुलका दीर्घः, ऊष् रुजायामित्यस्माद्वा। उष्णः—नक्। उष्णिका—यवागूः, कन् निपातितः। उष्णं करोति—उष्णकोऽलसः, कन्। उष्णं न सहते—उष्णालुः, आलुच्। ओष्ठः—ठन्। विम्बोष्ठी, विम्बोष्ठाः 'नासिकोदरौष्ठे'ति वा ङीष्, 'ओत्वोष्ठयोः समासे वे'ति पररूपं वृद्धेरपवादः। अन्यथा वृद्धौ विम्बौष्ठी, विम्बौष्ठा। पार्य्यौष्ठ्यम्—अव्ययीभावे भवार्थे ष्यञ्। उष्ट्रः—ष्ट्रन्। उष्ट्राणां समूहः—औष्ट्रकम्—वुञ्।

४२६। जिषु, विषु, मिषु, सेचने। (To sprinkle)

सर्वे उदनुबन्धाः, सकर्म्मकाः परस्मैपदिनश्च। जिष्, सेट्—जेषति। जिजेष। जेषिता। अजेषीत्। जिजिषिषति, जेजिषिषति। जेजिष्यते। जेजिषीति, जेजेष्टि। जेषयति। अजीजिषत्। (उ) जिषित्वा, जेषित्वा, जिष्ट्वा। जिष्टम्।

विष् (अनिट्)—वेषति। विवेष, विविषतुः। विवेषिथ। (१) विविषिव। वेष्टा। वेक्ष्यति। अविक्षत्। विविक्षति।

(१) "श्लिषिं पिषिं शुष्यतिपुष्यती त्विषिं श्लिषिं विषिं तुष्यतिदुष्यती द्विषिम्" इत्यनिट्कारिकापाठादस्यानिट्त्वेऽपि क्रादिनियमादलेट्।

(उ) विषित्वा, वेषित्वा, विष्ट्वा। विष्टम्। वैवेष संवादी—वेष्यो नटः, यत्। विष्लृ व्याप्तौ जुहोत्यादौ। विष विप्रयोगे इति च क्र्यादौ। मिष् (सेट्) मेषतीत्यादि जेषतिवत्। अच्—मेषः। स्त्रियां—मेषी। अयं स्पर्द्धायां तुदादौ।

४२७। पुष, पुष्टौ। (To nourish)

पुष, सेट्, सक, प। पोषति। पुपोष; पुपोषिथ। पोषिता। पोषिष्यति। अपोषिष्यत्। अपोषीत्(१)। पोषयति,—ते। अपूपुषत्,—त। पुपोषिषति, पुपुषिषति। पोपुष्यते। पोपुषीति, पोपोष्टि। पुष्यते। अपोषि। स्वपोषं (२) पोषति—णमुल्। पोषित्वा, पुषित्वा। पोषितः, पुषितः। पुष्टम्, पोषितम्। पोषयतीति—पोषयित्नुः, इत्नुच्। अयं दिवादिः क्र्यादिश्च। धारणार्थश्चुरादिः।

४२८। श्रिषु, श्लिषु, प्रुषु, प्लुषु, दाहे। (To burn)

सर्वे उदनुबन्धाः, सेटः, सकर्मकाः, परस्मैपदिनश्च। श्रिष्—श्रेषति। शिश्रेष। श्रेषिता। श्लिष्—श्लेषति इत्यादि पूर्ववत्। शिश्लेषिथ। शिश्लेषिता। श्लेषयतीति——श्लेषः, णः। मन्—श्लेष्मा, श्लेष्मलः—मत्वर्थे लच्। श्लेष्मणः—पामादिपाठात् णः, अयमपि मत्वर्थे। श्लेष्मणः शमनं कोपनं वा—श्लेष्मिकम्। श्लिष्टः—'श्लिषेरच्चोपधायाः' इति क्तप्रत्यये इकारस्याकारः। आचारश्लिष्टः। आलिङ्गने दिवादिः। श्लेषणे चुरादिः।

प्रुष्—प्रोषति। प्लुष्—प्लोषति। प्रुषिप्लुषी द्वौ स्नेहने क्र्यादौ।

(१) "श्लिषिं पिषिं शुष्यतिपुष्यती" इति श्यना निर्देशादयं सेट्, तथा पुषादीत्यङ्विधावपि दैवादिकस्य ग्रहणम्। सेट्कत्वात् क्सोऽपि न भवति।

(२) अत्र स्वशब्दः पित्निर्दिश्यते, तेन पित्पर्य्यायवचनस्य तद्विशेषार्थस्य च ग्रहणमित्युक्तत्वात् स्वशब्दे तत्पर्य्यायवाचिनि विशेषवाचिनि चोपपदे प्रत्यय इति गोपोषं धनपोषमिति दैवादिकस्य भवति।

४१९। पृषु, वृषु, मृषु, सेचने। मृषु, सहने च।
( To sprinkle, to hurt, to be weary, to bear )

इतरौ हिंसासंक्लेशनयोश्च। अत्र काश्यपः—पृषु, वृषु, वृषु, हिंसासंक्लेशणदानेष्वित्यादि पपाठ। सर्वे उदनुबन्धाः, सेटः, सकर्मकाः, परस्मैपदिनश्च। पृष्—पर्षति। पर्षतु। अपर्षत्। पपर्ष। पर्षिता। पर्षिष्यति। आशीः—पृष्यात्। अपर्षीत्, अपर्षिष्टाम्, अपर्षिषुः। पिपर्षिषति। परीपृष्यते। पर्पृषीति, पर्पर्ष्टि। पर्पर्च्छि। लोट्‌हि—पर्पृड्ढि। आनि—पर्पृषाणि। लङ्—अपर्पृषीत्,अपर्पर्ट् एवं रीक्‌रिकौ च। पर्षयति। अपपर्षत् अपीपृषत्। पर्षित्वा, पृष्ट्वा। पृष्टं, पृषितम्। पृषतम्—शतृवत् अत्—पृषन्। स्त्रियां—पृषती। पार्ष्णिः—इष्णुज्‌निपातः। लचि दीर्घः—पार्ष्णीलः। मतुप्—पार्ष्णिमान्।

वृष्—वर्षति। ववर्ष इत्यादि। वर्षतीति वर्षः—अच्। वर्षणम्—ल्युट्। क्ति—वृष्टिः। वृषभः—अभच्। वृषः—कः। वृषाय हितं—वृष्यम्, यत्। वृषमात्मन इच्छति—वृषस्यति, क्यच्, असुक्, मैथुनमिच्छतीत्यर्थः। अन्यत्र वृषीयति—क्यच्। वृष्णिः—निः। वृषणः—क्युन्। वर्षत इति सेचने गतः।

मृष्— मर्षति। ममर्ष इत्यादि। मृषित्वा, मर्षित्वा मृष्ट्वा। मृष्टम्।

४२०। घृषु, संघर्षे। ( To grind )

घृष् (उ) सेट्, अक, प। घर्षति। जघर्ष। घर्षिता। अघर्षीत्। घृष्यात्। घर्षयति,—ते। अजघर्षत्,—त; अजीघृषत्,—त। जिघर्षिषति। जरीघृष्यते। जर्घर्षीति इत्यादि। घृष्यते—अघर्षि। घर्षित्वा, घृष्ट्वा। संघर्षः—घञ्। घर्षणम्। घृष्टम्।

४२१। हृषु, अलीके। ( To lie )

हृष् ( उ ) सेट्, अक, प। हर्षति। जहर्ष, जहृषतुः,

जहृषुः । जहर्षिथ । अहर्षीत् । हर्षिता इत्यादि । हृष्टानि लोमानि, हर्षितानि लोमानि, हृष्टं लोमभिर्हर्षितं लोमभिः । (१) हर्षुलः—उलच् । हर्षयित्नुः—इत्नुच् ।

४३२ । तुस, ह्रस, ह्लस, रस, शब्दे । ( To sound )

तुस्, ह्रस्, ह्लस्, रस्, सेट्, अक, प । तुस्—तोसति । तुतोस । तोसिता । अतोसीत् । तुतुसिषति, तुतोसिषति । तोतुस्यते । तोतोस्ति । लोट् हि तोतुद्धि ।

लङ्—अतोतोत् । लङ् सिप्—अतोतोः,—त् । तोसयति । अतूतुसत् । तोसित्वा, तुसित्वा ।

ह्रस—ह्रसति । जह्रास । ह्रसिता इत्यादि । जिह्रसिषति । जाह्रस्यते । जाह्रस्ति इत्यादि तुसिवत् । ह्रासयति । अजिह्रसत् । ह्रस्वः—वः । ह्रसिष्ठः । ह्रसीयान् । ह्रस्वं करोति—ह्रसयति । अजह्रसत् । ह्लस्—ह्लसतीत्यादि ह्रसिवत् । रस्—रसति । ररास । रसिता । अरसिष्यत् । अरसीत्, अरासीत् । रस्यात् । रासयति,—ते । अरीरसत्,—त । रिरसिसति । रारस्यते । रारसीति, रारस्ति । रस्यते । अरासि । रासः,—घञ् ।

४३३ । लस, श्लेषणक्रीड़नयोः । (To embrace, to play)

लस् सेट्, अक, प । लसति इत्यादि रसिवत् । विलासी ।

---

(१) अत्र उदित्त्वान्नित्यमनिटत्वे प्राप्ते 'हृषेर्लोमस्वि'ति लोमविषयालोकवाचित्वात् पक्षे इड़ागमः । यस्तु दिवादौ हृष तेष्टाविति पठ्यते, तस्य तु सेट्कृत्वान्निष्ठायामनेन पक्षे इट् निषिध्यते, इतीयमुभयत्र —विभाषा । अत्र लोमान्यङ्गजानि केशाश्चेति वृत्तावुक्तम् लोमभ्योऽन्यत्र हृष्टमित्येव भवति, दैवादिकस्य तु हृषितमिति । हृष्टो देवदत्तः विस्मित इत्यर्थः । हृष्टा दन्ताः, हृषिता दन्ताः—प्रतिहता इत्यर्थः, 'विस्मितप्रतिघातयोश्चे'ति वक्तव्यमिति इड्विकल्पः ।

न लसः—अलसः। अलसस्य भावः—आलस्यम्। अलसोऽप्यालस्यः, स्वार्थे ष्यञ्। लस शिल्पयोग इति चुरादौ।

४३४। घस्लृ, अदने। ( To eat )

अयं न सार्व्वत्रिकः। 'लिट्यन्यतरस्यामि'ति अदेर्घस्लादेशविकल्पविधानवैयर्थ्यप्रसङ्गात्। द्वैरूप्यं हि साध्यं, ततश्च यत्र लिङ्गं वचनं वास्ति, तत्रैवास्य प्रयोगः। अत्रैव पाठः अपि परस्मैपदे लिङ्गम्। लृदित्करणादङ्। घसिश्च सान्तेष्विति इड्निषेधो वलाद्यार्द्धधातुके, यत्र प्रत्यये प्रतिपदोपादानं 'सृघस्यदः क्मरजि'त्यादौ तद्वचनम्।

घस् ( लृ ) अनिट्, सक, प। घसति। जघास। अघसत्। घसतु। घसेत्। घस्ता। घत्स्यति। अघत्स्यत्। अघसत्। जिघत्सति। घस्तः। घस्त्वा। घस्तुम्। वलादिनिमित्तः प्रयोगः। घस्मरः—क्मरच् [ मरक् ] ताच्छील्यादौ। घञ्—घासः, भक्ष्यतृणादिः। घास्तिः—'जनिघसिभ्या'मिण।

४३५। जर्ज, चर्च, झर्झ, परिभाषणहिंसातर्जनेषु।

( To say, to blame, to kill, to reprove )

जर्ज्, चर्च्, झर्झ्, सेट्, सक, प। जर्जति। चर्चति। झर्झति इत्यादि। चर्चा—अङ्, टाप्। झर्झरः—अरः। निर्झरः। निर्झरिणी। चर्चझर्झयोस्तुदादौ पठिष्यमाणयोरिह पाठः स्वरार्थ इति देवमैत्रेयपुरुषकारेषु। उभयान्तेषु पाठोऽर्थानुरोधादिति च मैत्रेयः। चर्च अध्ययन इति चुरादौ।

४३६। पिसृ, पेसृ, गतौ। ( To go )

पिस्, पेस्, ( ऋ ) अनिट्, सक, प। पेसति। पिपेस, पिपेसतुः, पिपिसतुः। अपेसीत्। पेसयति। ( ऋ ) अपिपेसत्। पिपेसते। पेपिस्यत इत्यादि। पेस्वरः—वरच्। इह क्वचित्

विस, वेस, पिस्, पेस् इत्यपि पठ्यते। आद्यौ दन्त्योष्ठ्यादी दन्त्यान्तौ, इतरावोष्ठ्यादी तालव्योष्मान्तौ, चत्वार एते मैत्रेयादिषु न दृश्यन्ते। पिस चुरादौ च।

४३७। हसे, हसने। ( To laugh )

हस् (ए) सेट्, अक, प। हसति। जहास, जहसतुः, जहसुः। हसिता। हसिष्यति (ए) अहसीत्, अहसिष्टाम्, अहसिषुः। अहसिषम्। हस्यात्। अहसिष्यत्। जिहसिषति। जाहस्यते। जाहसीति, जाहस्ति। हासयति,—ते। अजीहसत्, —त। भावे—हस्यते। अहासि। व्यतिहसति। हसः—अप्। हासः—घञ्। प्रहासः। हस्तः—तन्। हस्तोऽस्यास्तीति—हस्ती, इन्प्रत्ययः। ङीष्—हस्तिनी। हस्तिनां समूहः—हास्तिकम्—ठक्। हस्तिनीनां समूहः—हास्तिकम्, अत्रापि पूर्ववत् ठक्। पुंवद्भावश्च। हस्तिप्रमाणमस्य—हास्तिनः, पुरुषः, अण्। एवं हस्तिद्वयसं, हस्तिदघ्नम्, हस्तिमात्रम्—प्रमाणे दघ्नच्, द्वयसच्, मात्रचो भवन्ति। हस्तेन दीयते कार्यं वा—हस्त्यम्—यत्। हस्ते नक्षत्रे जातः—हस्तः। रक्-हस्रं मुखम्। उप—उपहासः। परि—परिहासः। प्रहसनम्—ल्युट्।

४३८। णिश, समाधौ। ( To think )

तालव्योष्मान्तः। निश्, सेट्, अक, प। नेशति। प्रणेशति। निनेश। अनेशीत्। निनिशिषति। निनेशिषति। निशित्वा, नेशित्वा। नेनिश्यते। नेनेष्टि। नेशयति। अनीनिशत्। अत्र मैत्रेयो निशाशब्दमस्मादाह। तस्याभिप्रायः—क्विपि "आपच्चैव हलन्तानां यथा वाचा निशा दिशा" इति टाप्। अन्ये तु 'नितरां शेरते अस्या'मिति डप्रत्यये व्युत्पादयन्ति। निशायां भवं—नैशिकम्, पक्षे ठञ्। नैशम्—अण्।

४३९। मिश, मश, शब्दे रोषकृते च।
(To make noise, to be angry)

इमौ तालव्योष्मान्तौ। मिश्, मश्, सेट्, अक, प। मेशति। मशति इत्यादि। मशकः—क्वुन्।

४४०। शव, गतौ। (To go)

दन्त्योष्ठ्यान्तः। शव्, सेट्, सक, प। शवति इत्यादि। क्विप्—शौः।

४४१। शश, प्लुतगतौ। (To jump)

तालव्योष्माद्यन्तः। शश्, सेट्, प। शशति इत्यादि। शशः। शशकः। शशनः। अत्र कश गताविति क्वचित् पठ्यते।

४४२। शसु, हिंसायाम्। (To injure, to kill)

दन्त्योष्मान्तः। शस् (उ) सेट्, सक, प। शसति। शशास। शशसतुः। शसिता। शसिष्यति। अशसीत्, अशासीत्। शस्यात्। शासयति,-ते। अशीशसत्,-त। शिशसिषति। शाशस्यते। शाशसीति, शाशस्ति। शस्यते। अशासि। शस्यतेऽनेनेति शस्त्रम्—ष्ट्रन्। स्त्रियां—शस्त्री। शस्यम्—यत्। (उ) शसित्वा, शस्त्वा। शस्तो मङ्गलः, अविनीत इत्यर्थः। 'धृषिशसी वैयात्ये' इति निष्ठायामनिट्। अन्यत्र विशसित इति। विशसितुर्धर्म्यं—वैशस्त्रम्, अञ्, इड्लोपः। आशंसते इतीच्छायां गतः।

४४३। शन्स, स्तुतौ। (To praise)

अयं दुर्गत्यामपीति दुर्ग इति माधवः। द्वावपि तालव्योष्मादी। शन्स, सेट्, सक, प। शंसति। शशंस। शंसिता। अशंसीत्। आशीः—शस्यात्। शिशंसिषति। शाशस्यते। शाशंसीति, शाशंस्ति। शाशस्तः। लोट्हि—शाशधि। शंसयति,—

ते । अशशंसत्,-त । शस्यते । अशंसि । शस्य—क्यप । शंस्यम्—ण्यत् । (उ) शंसित्वा, शस्त्वा । शंसितुम् । शस्तम् । नृन् शंसतीति—नृशंसः,—अण् । नरा एनं शंसन्ति, नरा अस्मिन्नासीनाः शंसन्तीति वा—नराशंसः—घञ्, दीर्घश्च । अग्निर्देशविशेषो वा । ब्राह्मणात् शंसतीति ब्राह्मणाच्छंसी—णिनिः, ऋत्विग्विशेषः । द्वितीयार्थे पञ्चमी, अलुक् च रूढ़ितः । श्रेष्ठः । ज्येष्ठः । श्रेयान् । ज्यायान्—'प्रशस्यस्य श्रः' 'ज्य चे'त्यतिशायनिकयोरजाद्योः अज्यावादेशौ भवतः । श्रेयसोऽपत्यं श्रायसः । प्रशस्यमाचष्टे—श्रापयति, ज्यापयति ।

४४४ । चह, परिकल्कने । (To cheat)

परिकल्कनं शाठ्यम् । चह्, सेट्, अक, प । चहति । चचाह । चेहतुः । चहिता । अचहीत् । चिचहिषति । चाचह्यते । चाचाढ़ि इत्यादि ।

४४५ । मह, पूजायाम् ( To worship )

मह्, सेट्, सक, प । महति इत्यादि चहिवत् । मही—ङीष् । महिषः—टिषच् । टित्वात् स्त्रियां ङीष्—महिषी । महिषा अस्मिन् सन्ति—महिष्वान् देशः । माहिष्यः—जातिविशेषः । महिष्या धर्मं माहिषम् । 'वर्त्तमाने पृषन्मह'दित्यादिना अत् निपातः—महान्, महान्तौ, महान्तः । स्त्रियां ङीष्—महती । महांश्चासौ पुरुषश्चेति महापुरुषः । जातीयर्—महाजातीयः । अमहान् महान् सम्पद्यते महद्भूतः । महत्या घासः—महाघासः । महतो भावः—महिमा ।

४४६ । रह, त्यागे । (To abandon)

रह्, सेट्, सक, प । रहति इत्यादि महतिवत् । रहः—असुन् । औ—रहसी । रहसि भवं—रहस्यम् । अनुरहसम्, अवरहसम् ।

राहुः—उण्। वि—विरहः। विरहीकरोति। अयं कथादौ मित्प्रकरणे च चुरादौ।

४४७। रहि, गतौ। (To go)

रंह्, सेट्, सक, प। रंहति। ररंह। रंहिता। अरंहीत् इत्यादि। इदित्त्वेन रारंह्यते नलोपो न भवति। रंहः—असुन्।

४४८। दृह, दृहि, बृह, बृहि, वृद्धौ। (To grow)

दृह्, दृन्ह (इ) बृह्, बृन्ह् (इ) सेट्, अक, प। दृह—दर्हति। ददर्ह। दर्हिता इत्यादि। दरीदृह्यते। दर्दृहीति, दर्दर्ग्धि। लङ्—अदर्धर्क्। दर्हयति। अददर्हत्। अदीदृहत्। दर्हित्वा। दर्हितम्। दृन्ह—दृंहति। ददृंह। दृंहिता।—दिदृंहिषति। दरीदृंह्यते। दरीदृंहीति। दरीदृङ्ग्धि। दर्दृङ्गधः। लङ्—अदर्दृन्। दृंहित्वा। दृंहितम्। दृढः—'दृढः स्थूलबलयो'रिति क्तेऽनिटि निपातः। अन्यत्र—दृंहितः। द्रढिमा। द्रढीयान्। द्रढिष्ठः। दृढमाचष्टे—द्रढयति। परिवृढस्यापत्यं—पारिवृढः। ङीष्—पारिवृढी। बर्ह—बर्हति। बबर्ह। बर्हिता अबर्हीत्। बर्हिष्यति। बृन्ह—बृंहति। बृंहिता। बृंहिष्यति। अबृंहीत्। बबर्ह, बबृंह। बर्हयति। बृंहयति, बर्हकः। बर्हणम्। बृंहणम् इत्यादि पूर्ववत्। बृंहेरिट्वर्जिते स्वरे वा पञ्चमलोप इति दुर्गः। परिवृढः—'प्रभौ परिवृढ' इति इड़भावादि निपात्यते। प्रभोरन्यत्र परिबृंहित इति।

४४९। बृहि, शब्दने। (To sound)

बृन्ह् (इ) सेट्, अक, प। बृंहति। बबृंह। अबृंहीत्। बिबृंहिषति। बरीबृंह्यते। बरीबृण्ढि इत्यादि। बृंहितं

करिगर्जितम्। बृहिर् इति चन्द्रगुप्तौ। तन्मते—अबृहत्। अबर्हीत्। क्षीरस्वामी—वृह, वृहि इति भाषार्थौ। वर्हते इति प्राधान्ये गतम्।

४५०। तुहिर्, दुहिर्, उहिर्, अर्दने। To hurt)

तुह्, दुह्, उह्, (इर्) सेट्, सक, प। तोहति। तुतोह। तोहिता। अतुहत्। अतोहीत्। तुतुहिषति, तुतोहिषति। तोतुह्यते। तोतोढ़ि, तोतूढ़ इत्यादि। तोहयति। अतूतुहत्। तुहित्वा, तोहित्वा। तुहितम्। दुह्—दोहति इत्यादि। तोहतिवत्। उह्—ओहति। उवोह, ऊहतुः, ऊहुः। ओहिता। औहीत्। माभवानुहीत्।

४५१। अर्ह, पूजायाम्। (To worship)

अर्ह, सेट्, सक, प। अर्हति। आनर्ह, आनर्हतुः, आनर्हुः। आनर्हिथ। आनर्हिव। अर्हिता। ऌट्—अर्हिष्यति। लुङ्—आर्हीत्, आर्हिष्टाम्, आर्हिषुः। अर्जिहिषति। अर्हयति। आर्जिहत्। मा भवानर्जिहत्। अर्हितः। अर्हित्वा। अर्हितुम्। सुखार्हः,—अच्। अर्हन्—शतृ। अर्हतो भावः—आर्हन्त्यम्—ष्यङ्, नुम्। घञ्—अर्घः,—संज्ञायामर्घमेघनिदाघा इति न्यङ्क्वादित्वात् कुत्वम्। अर्घार्थमुदकम्—अर्घ्यम्, तादर्थ्ये यत्। घुषिराद्य उदात्ता उदात्तेतः।

## आत्मनेपदिनः।

४५२। द्युत, दीप्तौ। (To shine)

एतदादयः क्लृपूपर्य्यन्ता उदात्ता अनुदात्तेतः। द्युत्, सेट्, अक, आ। द्योतते। द्योतताम्। अद्योतत। दिद्युते। द्योतिता।

द्योतिष्यते। आशीः—द्योतिषीष्ट। लुङ्—अद्युतत्, अद्युतताम्, अद्युतन्। अद्योतिष्ट, अद्योतिषाताम्, अद्योतिषत। (१) विद्युतिषते, दिद्योतिषते। देद्युत्यते। देद्युतीति, देद्योत्ति। द्योतयति। अदिद्युतत्। द्युतित्वा, द्योतित्वा। द्युतितमनेन, द्योतितमनेन। द्युतिः। द्योतः। उद्—उद्योतः,—औज्ज्वल्यम्। वि—विद्योतः,—शोभा, घञ्। विद्युत्—क्विप्। विद्युत्जगदितिवत्। ज्योतिः—'द्युतेरिसन् आदेश्च जः' इसन्, आदेश्च जः।

४५३। श्विता, वर्णे। (To be white)

श्विता (आ), सेट्, अक, आ। श्वेतते। शिश्विते; शिश्वितिषे। श्वेतिता। श्वेतिष्यते। अश्वितत्, अश्वेतिष्ट। श्वित्तम्। श्वेतितम्, श्वितितम् अनेन। श्वित्रन्—रक्।

४५४। ञि मिदा, स्नेहने। (To love, to melt)

मिद् (ञि, आ) सेट्, सक, आ। मेदते। मिमिदे। मेदिता। अमिदत्, अमेदिष्ट। मेदयति,—ते। अमीमिदत्,—त। मिमिदिषते, मिमेदिषते। मेमिद्यते। मेमिदीति, मेमेत्ति। मिद्यते। अमेदि। मिदित्वा, मेदित्वा। (ञ) मिन्नः, प्रमिन्नः, प्रमेदितः। मेदितं, मिन्नम्। मेदुरः—घुरच्। मित्वम्—त्वन्। अयं दिवादिश्चुरादिश्च। मिद मेधाहिंसयोरिति क्र्यादौ। ञि मिदा स्नेहने मोचने च। स्नेहनमोचनयोरिति च क्वचित् पठ्यते।

(१) "अद्यतनां द्युतादीनां वृतादेः स्यसनोस्तथा। यजादेरादिशब्देन श्वस्त्यामुभयं कृपेः॥"

४५५। ञि ष्विदा, गात्रप्रस्रवणे (१)। ( To sweat )

स्विद् ( ञि. आ ) सेट्, सक, आ। स्वेदते। सिष्विदे। स्वेदिता। अस्विदत्। अस्वेदिष्ट। स्वेदिष्यते। सिस्विदिषते। सिस्वेदिषते। सेष्विद्यते। सेष्वेत्ति। स्वेदयति,—ते।—असिस्विदत्,—त। सिस्वेदयिषति। स्विन्नः, स्वेदितः, मिदिवत्। स्विद्यतीति स्नेहनसेकयोर्दिवादौ। स्विद्यतीति गात्रप्रक्षरणे।

४५६। रुच, दीप्तावभिप्रीतौ च *।

( To shine, to like )

द्युत, शुभ, रुच, दीप्ताविति दुर्गः पठति। रुच्, सेट्, अक, आ। रोचते। रुरुचे, रुरुचाते, रुरुचिरे। रोचिता। रोचिष्यते। अरुचत्। अरुचिष्ट। रोचिषीष्ट। रोचयते। अरूरुचत। रुरुचिषते, रुरोचिषते। रोरुच्यते, रोरुचीति, रोरोक्ति। रुच्यते। अरोचि। [रोचयति। अरूरुचत्।] रुचित्वा, रोचित्वा। संरुच्य। रोचनः—ल्युः। रोचिष्णुः—इष्णुच्। रुच्यः—क्यप्, निं। रोकः—घञ्। रोचिः—इस्। रुक्मम्—मन्। रोचकः—ण्वुल्। रुचिः—इः। रुचितः, रोचित इत्यादि। क्विप्—रुक्। देवदत्ताय रोचते मोदकः। "रुच्यर्थाना—"मिति चतुर्थी।

४५७। घुट, परिवर्त्तने। ( To return )

घुट, सेट्, सक, आ। घोटते। जुघुटे। घोटिता। अघुटत्। अघोटिष्ट। घुटित्वा, घोटित्वा। जोघुट्यते। जोघोट्टि। घोटयति। अजूघुटत्। घुटितः। घोटः—अच्। घोटकः—कन्। घुटिका—ण्वुल्। अयं चुरादौ च।

(१) ञि ष्विदा मोचने च इति दुर्गः पठति, चकारात् स्नेहार्थोऽपि। अत्र क्षीरस्वामी—ञि क्ष्विदेति चकारं पठित्वा ञि क्ष्विदेति नन्दीत्याह। तन्मते—क्ष्वेदते। चिक्ष्विदे। अक्ष्विदत्, अक्ष्वेदिष्ट।

* रुचेर्यङ्लुङ्निषेधः। भृशं रोचते इत्यर्थे यङ्लुगिष्यत इति वृत्तिन्यासादौ।

४५८। रुट, लुट, लुठ, प्रतीघाते। ( To oppose )

आदौ प्रथमान्तौ, अन्त्यो द्वितीयान्तः (१)। रुट, लुट, लुठ्, सेट्, अक, आ। रोटते। लोटते। लोठते इत्यादि। लोठतीति लोड़ने गतम्। रुण्ठति लुण्ठतीति स्तेये। रोठति, लोठतीत्युपघाते। लुण्ठतीत्यालस्यप्रतीघातयोः। रुण्ठतीति द्वयं गत्यर्थे।

४५९। शुभ, दीप्तौ। ( To shine )

शुभ, सेट्, अक, आ। शोभते। शुशुभे। शोभिता। शोभिष्यते। अशुभत्, अशोभिष्ट। शुशुभिषते, शुशोभिषते। शोभयति,—ते। अशूशुभत्,—त। शोशुभ्यते। शोशुभीति, शोशोब्धि। शुभ्यते। अशोभि। शुभित्वा, शोभित्वा। हिंसा-भवनयोः—शोभति, शुभति। शोभनम्। शोभा। शुभम्। शुभ्रम्। शुभितः, शोभित इत्यादि द्युतवत्।

४६०। क्षुभ, सञ्चलने। ( To be agitated, to go )

सञ्चलनं प्रकृतिविपर्य्यासो गमनञ्च। क्षुभ्, सेट्, अक, आ। क्षोभते। चुक्षुभे, चुक्षुभाते, चुक्षुभिरे। चुक्षुभिषे। चुक्षुभिषते, चुक्षोभिषते। क्षोभिता। क्षोभिष्यते। लुङ्—अक्षुभत्, अक्षुभताम्, अक्षुभन्। अक्षोभिष्ट, अक्षोभिषाताम्, अक्षोभिषत। चोक्षुभ्यते। चोक्षुभीति, चोक्षोब्धि। क्षोभयति,—ते। अचुक्षुभत्,—त। क्षुभ्यते। अक्षोभि। क्षुब्धः, मन्थः। मन्थार्थे—निष्ठाया

(१) अयं पाठो दैवमैत्रेयादीनाम्। हरियोगिनस्तु द्वावेव। धातोः कर्म्मणि इत्यत्र कैयटे द्वितीयान्तौ पठितौ। क्षीरस्वामी त्वेवं पठित्वा आह—रुठ, लुठेत्येके। तथा लुठ, दीप्तावित्यप्यसावाह, लुट इति तु शाकटायनः। सुधाकरस्तु भूवादिसूत्रे लुठतिर्द्वितीयान्तोऽपि लुठितो लोठमान इत्यादिप्रयोगदर्शनादित्याह।

मनिट्, अन्यत्र—क्षुभितः । क्षोभितः । क्षोभितम्, क्षुभितमित्यादि । क्षुभित्वा, क्षोभित्वा । प्रक्षुभ्य । क्षोभितुम् । अयं दिवादिः, क्र्यादिश्च ।

४६१ । णभ, तुभ, हिंसायाम् । ( To kill )

नभ् तुभ्, सेट्, सक, आ । नभ्—नभते । प्रणभते । नेभे । नभिता । अनभत् । अनभिष्ट इत्यादि । नभः—असुन् ॥ तुभ्—तोभते । तुतुभे । तोभिता । अतुभत् । अतोभिष्ट । इमौ दिवादौ, क्र्यादौ च ।

४६२ । स्रन्सु, ध्वन्सु, भ्रन्सु [ भ्रन्शु ] अवस्रंसने ; ध्वन्सु, गतौ च । (To drop, to perish ; to go)

सर्वे उदनुबन्धाः सेटः, अकर्मकाः, आत्मनेपदिनश्च । स्रन्स्—स्रंसते । सस्रंसे । सस्रंसिषे । स्रंसिता । स्रंसिष्यते । अस्रसत्, अस्रंसिष्ट । स्रंसयति,—ते । असस्रंसत्,—त । सिस्रंसिषते । सनीस्रस्यते । सनीस्रंसीति, सनीस्रंस्ति । स्रस्यते । अस्रंसि (उ) स्रंसित्वा, स्रस्त्वा । विस्रस्य । स्रस्तम् । उखायाः स्रंसते—उखास्रत्, क्विप् ॥ ध्वन्स्—ध्वंसते—दध्वंसे । अध्वसत्, अध्वंसिष्ट । दनीध्वस्यते । दनीध्वंसीति, दनीध्वंस्ति । ध्वंसयति,—ते । अदध्वंसत्,—त । दिध्वंसिषते । (उ) ध्वंसित्वा, ध्वस्त्वा । विध्वस्य । ध्वंसः । ध्वस्तः, विध्वस्तः, अपध्वस्तः ॥ भ्रन्स्—भ्रंसते । बभ्रंसे । अभ्रसत्, अभ्रंसिष्ट । स्रंसते इति प्रमादे गतः । बनीभ्रस्यते इत्यादि सर्वं स्रन्सिवत् । *

* मैत्रस्वामिबोधन्याससम्मताकारादयः 'भ्रन्शु' इति तालव्योष्मान्तं पठन्तो नीग्विधावपि तथा वदन्ति, भ्रंशतः इत्यादि—अत्र क्वचित् भ्रशिरपि पठ्यते । भ्रशु, भ्रंशु अधःपतन इति दिवादौ देवमैत्रेयादिमते ।

४६३। स्रन्भु, विश्वासे। ( To entrust )

प्रायेणायं विपूर्वः। स्रन्भ् (ङ) सेट्, सक, आ। विस्रम्भते ( स्रम्भते )। सस्रम्भे। सस्रम्भिषे। स्रम्भिता। अस्रभत्। अस्रम्भिष्ट। सिस्रम्भिषते। सास्रभ्यते। सास्रम्भीति, सास्रम्भि। स्रम्भयति। असस्रम्भत्। (ङ) स्रम्भित्वा, स्रब्ध्वा। विस्रम्भी—षिनुण्। स्रब्धः। स्रम्भणम्। स्रम्भः। विस्रम्भः। तालव्यादिः काश्यपादिमते प्रमादे गतः।

४६४। वृतु, वर्त्तने। ( To be, to happen )

वृत्, (ङ) सेट्, अक, आ। लट्—वर्त्तते, वर्त्तेते, वर्त्तन्ते। वर्त्तसे, वर्त्तेथे, वर्त्तध्वे। वर्त्ते, वर्त्तावहे, वर्त्तामहे।

लोट्—वर्त्तताम्, वर्त्तेताम्, वर्त्तन्ताम्। वर्त्तस्व, वर्त्तेथाम्, वर्त्तध्वम्। वर्त्तै, वर्त्तावहै, वर्त्तामहै।

विधिलिङ्—वर्त्तेत, वर्त्तेयाताम्, वर्त्तेरन्। वर्त्तेथाः, वर्त्तेयाथाम्, वर्त्तेध्वम्। वर्त्तेय, वर्त्तेवहि, वर्त्तेमहि।

लङ्—अवर्त्तत, अवर्त्तेताम्, अवर्त्तन्त। अवर्त्तथाः, अवर्त्तेथाम्, अवर्त्तध्वम्। अवर्त्ते, अवर्त्तावहि, अवर्त्तामहि।

लृट्—वर्त्तिष्यते, ( १ ) वर्त्स्यति इत्यादि। वर्त्तिष्येते, वर्त्तिष्यन्ते। वर्त्तिष्यसे, वर्त्तिष्येथे, वर्त्तिष्यध्वे। वर्त्तिष्ये, वर्त्तिष्यावहे, वर्त्तिष्यामहे।

लिट्—ववृते, ववृताते, ववृतिरे। ववृतिषे, ववृताथे, ववृतिध्वे। ववृते, ववृतिवहे, ववृतिमहे।

लुट्—वर्त्तिता, वर्त्तितारौ, वर्त्तितारः। वर्त्तितासे, वर्त्तितासाथे, वर्त्तिताध्वे। वर्त्तिताहे, वर्त्तितास्वहे, वर्त्तितास्महे।

लृङ्—अवर्त्तिष्यत, अवर्त्स्यत् इत्यादि; अवर्त्तिष्येताम्,

( १ ) वृतु—वृध-शृध-स्यन्द-कृपीणां लुङि स्यसनोश्च वा परस्मैपदम्।

अवर्त्तिष्यन्त। अवर्त्तिष्यथाः, अवर्त्तिष्येथाम्, अवर्त्तिष्यध्वम्। अवर्त्तिष्ये, अवर्त्तिष्यावहि, अवर्त्तिष्यामहि।

आशीः—वर्त्तिषीष्ट, वर्त्तिषीयास्ताम्, वर्त्तिषीरन्। वर्त्तिषीष्ठाः, वर्त्तिषीयास्थाम्, वर्त्तिषीध्वम्। वर्त्तिषीय, वर्त्तिषीवहि, वर्त्तिषीमहि।

लुङ्—अवृतत्, अवर्त्तिष्ट ; अवृतताम्, अवर्त्तिषाताम्, अवृतन्, अवर्त्तिषत। अवृतः, अवर्त्तिष्ठाः ; अवृततम्, अवर्त्तिषाथाम् ; अवृतत, अवर्त्तिध्वम्। अवृतम्, अवर्त्तिषि ; अवृताव, अवर्त्तिष्वहि ; अवृताम, अवर्त्तिष्महि।

सन्—विवर्त्तिषते, विवृत्सति। यङ्—वरीवृत्यते। यङ्-लुक्—वर्वृतीति, वरिवृतीति, वरीवृतीति, वर्वर्त्ति, वरिवर्त्ति, वरीवर्त्ति। णिच्—वर्त्तयति,—ते। अवीवृतत्,—त। अववर्त्तत्,—त। भावे (१)—वृत्यते। अवर्त्ति। सन्नन्त्—विवर्त्तिषितुम्, विवृत्षितुम्। विवर्त्तिषुः, विवृत्सुः। विवृत्सा, विवर्त्तिषा। वृत्—वर्त्स्यन्। वर्त्तिष्यमाणः। वर्त्तिष्णुः इष्णुच्। हस्तवर्त्तं वर्त्तयति, णमुल्। एवं पाणिवर्त्तमित्याद्यपि। वृत्तः। वृत्तं तदिति—वर्त्म, 'उणादयो बहुलम्, भूतेऽपि दृश्यन्त'इति मनिन्। वर्त्मनिः—रथमार्गः, 'अदेर्मुट्' 'वृतेश्च'ति मुड़ागमोऽनिप्रत्ययश्च। अनि—वर्त्तनिः, पक्षे ङीष्—वर्त्तनी। वर्त्तमानः—शानच्। वृत्यम्—क्यप्। वर्त्तितव्यम्। (उ) वर्त्तित्वा, वृत्त्वा। अनुवृत्य। वृत्तिः। णिच् क्तः—वर्त्तितः। वर्त्तनम्। वर्त्तितुम्। अति—अतिवर्त्तनम्,—अतिक्रमः, उल्लङ्घनम्। अनु—अनुवर्त्तनम्,

(१) अयं यदान्तर्भावितण्यर्थस्तदा सकर्मकः, यथा "तेन निर्वृत्त"-मिति निर्वर्त्तितमित्यर्थः।

अनुगमनम्, सेवा, सहगमनम्, अनुरोधः। अप—अपवर्त्तनम्, —संक्षिप्तीकरणम्, व्यवकलनम्। प्रतिनिवृत्तिः। व्यप—निवृत्तिः। अभि—अभिमुखागमनम्, आगमनम्। आ—आवर्त्तनम्, आगमनम्। आवृत्तिः। आ, णिच्—आवर्त्तनम्, दुग्धादिपाकः। आवृत्तिः, पाठः। पुस्तकावृत्तिः। वि—आ—व्यावृत्तिः। उद्—उद्वर्त्तनम्—अतिरेकः, विलेपनम्। अपा, उपा, नि—निवृत्तिः। निर्—निर्वृत्तिः—निष्पत्तिः, समाप्तिः। प्र—प्रवर्त्तनम्। विवर्त्तनम्, घूर्णनम्, भ्रमणम्। परिवर्त्तनम्। संवृतः। प्रवृत्तः। उद्वृत्तः। अयं भाषार्थश्चुरादौ।

४६५। वृधु, वृद्धौ। ( To increase )

वृध् (उ) सेट्, अक, आ। वर्द्धते। वर्द्धताम्। अवर्द्धत। वर्द्धेत। ववृधे, ववृधाते, ववृधिरे; ववृधिषे। वर्द्धिता। वर्द्धिष्यते, वर्त्स्यति। अवर्द्धिष्यत, अवर्त्स्यत्। आशीः—वर्धिषीष्ट। लुङ्—अवृधत्, अवर्द्धिष्ट। विवृत्सति, विवर्द्धिषते। यङ्—वरीवृध्यते। यङ्-लुक्—वरीवर्द्धि, वरीवृधीति, वर्वर्द्धि। वर्द्धयति,—ते। अवीवृधत्,—त, अववर्द्धत्,—त, इत्यादि। वृतधातुप्रयोगानुसारेण विस्तरो ज्ञातव्यः।

कृत्—वर्द्धिष्णुः—इष्णुच्। वर्द्धनः—ल्युः। वृद्धः—क्तः। अतिशयेन वृद्धो वर्षिष्टः। वर्षीयान्—वृद्धस्य वर्षादेशः। ज्येष्ठः, ज्यायान्—ज्यादेशः। वृद्धमाचष्टे—वर्षयति, ज्यापयति। क्तिन्—वृद्धिः। वार्द्धुषिकः—ढक्। वृद्धेर्वर्द्धुषभावः। (उ) वर्द्धित्वा, वृद्ध्वा। णिच्—वर्द्धितः। संवर्द्धय। वर्द्धनम्। वर्द्धितुम्। सम् णिच—संवर्द्धना—आदरः। प्रतिपालनम्। भाषार्थश्चुरादौ।

४६६ । शृधु, शब्दकुत्सायाम् ।
(To break wind downwards)

शृध् (उ) सेट्, अक, आ । शर्द्धते इत्यादि पूर्ववत् । अयं प्रहसने चुरादिः ।

४६७ । स्यन्दू, प्रस्रवणे । (To ooze)

स्यन्द् (ऊ) वेट्, सक, आ । स्यन्दते । स्यन्दताम् । अस्यन्दत । स्यन्देत । लिट्—सस्यन्दे,—न्दाते,—न्दिरे ।—न्दिषे, —न्त्से ;—न्दाथे,—न्दिध्वे,—न्ध्वे ।—न्दे,—न्दिवहे,—न्द्वहे ; —न्दिमहे,—न्द्महे । ऊदनुबन्धत्वादार्द्धधातुके (असार्वधातुके) इड्विकल्पः । (लुट्) स्यन्दिता, स्यन्ता । (ऌट्) स्यन्दिष्यते, स्यन्त्स्यते (१) । स्यन्त्स्यति । असन्त्स्यत् । सिस्यन्त्सति । स्यन्दिषीष्ट, स्यन्त्सीष्ट । (लुङ्) अस्यन्दिष्ट,-षाताम्,—षत ।—ष्ठाः,—षाथाम्,—ध्वम् ।—षि,—ष्वहि,—ष्महि । इड्भावे अस्यन्त, अस्यन्त्साताम्—सत ।—अस्यन्थाः, अस्यन्त्साताम् । अस्यन्द्ध्वम् । (२) (लुङ्-प) अस्यदत्, अस्यदताम्, अस्यदन् । अस्यदः, अस्यदतम्, अस्यदत । अस्यदम्, अस्यदाव-म । (ॡङ्) अस्यन्दिष्यत, अस्यन्त्स्यत । (ॡङ् प) अस्यन्त्स्यत् इत्यादि । सन्—सिष्यन्दिषते, सिस्यन्त्सते, सिस्यन्त्सति । यङ्—सास्यद्यते । सास्यन्दीति, सास्यन्ति । सद्यते । अस्यन्दि । अनुस्यन्दते फलम् । अनुष्यन्दत इति वा—'अनुविपर्य्यभिनिभ्य—' इति वा षत्वम् । एवं पर्य्यादिभ्य उदाहार्य्यम् । अप्राणि-

(१) "वृद्भ्यः स्यसनो"रिति यदा परस्मैपदं तदा स्यन्देरूदित्त्वप्राप्तमन्तरङ्गमपीड्विकल्पः 'न वृद्भ्य' इति निषेधश्चतुर्ग्रहणसामर्थ्याद्बाधते इति ।

(२) "द्युद्भ्यो लुङी"ति यदा परस्मैपदं तदा 'पुषादिद्युताद्ऌ'ति अङ्, (अथ) अनुनासिकलोपः । कलापमते "अनात्मनेपदस्थात् वृतादेरिट् न स्ये सनी"ति परस्मैपदविषये स्ये सनि च इट्प्रतिषेधः ।

ष्वित्यस्य पर्य्युदासत्वात् प्राण्यप्राणिसमुदायोऽपि प्राणिव्यतिरिक्त इति मत्स्योदके अनुष्यन्देते इत्यत्रापि वा मूर्द्धन्यो भवति। स्यन्दित्वा, स्यन्त्वा। निष्यद्य, निस्यद्य। स्यन्दितुम्, स्यन्तुम्। निष्ठा—स्यन्नः, स्यन्नवान्। घञ्—स्यदः। जवादन्यत्र—स्यन्दः। युच्—स्यन्दनः। सिन्धुः—'स्यन्देः संप्रसारणं धश्चे'त्युप्रत्ययः, सम्प्रसारणं धश्चान्तादेशः। सिन्धौ जातः सिन्धुकः—कन्। सैन्धवः—अण्। सिन्धुरभिजनो यस्य सैन्धवः। 'सिन्धुतक्षशिलादिभ्यामणञावि'त्यण्। सिन्धौ भवादिरपि—सैन्धवः। यदा त्वयं भवादिर्मनुष्यः, तत्स्थो वा, तदा वुञ्—सैन्धवको मनुष्यः, सैन्धवकं हसितमिति। लवणसिन्धौ भवं—लावणसैन्धवम्, अण्, उभयपदवृद्धिः।

४६८। क्लृपू, सामर्थ्ये। (To be able)

क्लृप् (ऊ) वेट्, अक, आ। कल्पते। अकल्पत। चक्लृपे। चक्लृपिषे, चक्लृप्से। चक्लृपिध्वे। चक्लृब्ध्वे इत्यादि स्यन्दिवत्। (१) कल्पतासि। (पूर्ववदिदमूदिल्लक्षणं विकल्पं बाधते) कल्पिताहे, कल्प्ताहे। अत्र चात्मनेपदेन समानपदस्थस्येति स्थितमिति सन्नन्तात् क्लृति परस्मैपदे लुङि च निषेधो भवति। चिक्लृप्सिता, चिक्लृप्से इत्यादि। 'हलन्ताच्चे'ति सनः कित्त्वान्न गुणः। तथा यदा लिङ्सिचोरात्मनेपदे इड़भावस्तदा 'लिङ्सिचावात्मनेपदेष्वि'ति कित्त्वान्न गुणः। कल्पिष्यते, कल्प्स्यते। अकल्प्स्यत्, अकल्प्स्यत। क्लृप्सीष्ट। अक्लृप्त। अक्लृप्साताम् इत्यादि। इट्पक्षे—कल्पिषीष्ट। अकल्पिष्टेत्यादि। 'कृपो रो लः' इति रेफस्य लत्वम्। तत्र वर्णा-

(१) विशेषस्तु 'लुटि च क्लृपः' इति लुटि स्यसनोरित्यत्र परस्मैपदं, तदा 'तासि च क्लृपः' इति तासौ सकारादावनिकटत्वञ्च।

लकस्य रेफस्य वर्णात्मको लकारः, यस्त्ववर्णात्मक ऋकारस्तस्या-वर्णात्मक ऌकारस्तत्र स्थान्यादेशयोर्वर्णैकदेशयोर्निर्देष्टुमशक्य-त्वात् ऋकारस्य ऌकारः सम्पद्यते। चलीक्लृप्यते। चल्क्-लृप्मि, चलिकल्प्मि, चलीकल्प्मि इत्यादौ रिग्रीगुकावपि कृपो भक्तत्वेन तद्रेफत्वाल्लत्वं भवति। तथाह्युक्तं—'अदसोऽद्रेः पृथङ्-मुत्वं केचिदिच्छन्ति लत्ववत्' इति। द्युतादीनां यङ्लुगन्तानां लुङ्यङ्नास्ति, 'पुषादिद्युता'दीति गणनिर्देशात्, तेन अदो-द्योतीदित्येव भवति। सिजपेक्षोऽत्र गुणो नाजादिपिदपेक्षः। तथा वृतादीनां यङ्लुगन्तानां 'न वृद्भ्य' इति इण्निषेधोऽपि गणनिर्देशान्न भवति। वरीवर्त्तिष्यतीत्याद्येव। कृपेस्तु गण-निर्देशाभावात् 'तासि च कॢपः' इति इण्निषेधो भवत्येव। चल्क्लृप्तासीत्यादि। द्युतादय उदात्ता अनुदात्तेतः।

वृत्—वृत् सम्पूर्णो द्युतादिर्वृतादिश्चेत्यर्थः। वृतु वर्त्तन-इत्यस्माद्धातोर्भूतेऽपि क्विप्, गणप्रयुक्तकार्य्यभाजो द्युतादीन् वृतादींश्च परिसमाप्यान्यानपि गणप्रयुक्तकार्य्यभाज आह।—

———

## घटादयः।

४६८। घट, चेष्टायाम्। (To strive after)

एतदादयस्तकारान्ता उदात्ता अनुदात्तेतः षितश्च। तत्-फलं घटेत्यादौ 'षिद्भिदादिभ्योऽङ्' इत्यङ्। घटादयः फणान्ता मितः, तत्फलं तत्र तत्र दर्शयिष्यते।

घट्, सेट्, अक, आ। घटते। जघटे। जघटिषे। अघ-टीत्, अघाटीत्। घटिता। जिघटिषते। जाघट्यते। जाघट्टि। घटयति। अजीघटत्। णिजन्तात् कर्म्मणि अघाटि, अघटि।

णमुल्—घाटमघाटम्, घटम्घटम्। घटिष्यते, घाटिष्यते, घटयिष्यते। अघाटिष्यत, अघटिष्यत, अघटयिष्यत। अघाटिषाताम्, अघटिषाताम्, अघटयिषाताम्। घाटिषीष्ट, घटिषीष्ट। घाटिता, घटिता। घटयिष्यत इत्यादि। कर्म्मकर्त्तर्य्यप्येवम्। लुङ्येकवचने तु अजीघटत स्वयमेवेति भवति। 'घटादयो मित' इति गणनिर्देशेन विधीयमानत्वान्मित्त्वस्य यङ्लुक्यभावात् न ह्रस्वः, नापि दीर्घविकल्प इति। जघाटयति, अजघाटि। अच्—घटः, स्त्रिनां घटी—ङीष्। घटना—ण्यन्तात् स्त्रियां युः। क्वुन्—घटिका। घाटयतीति घट संघात इति चौरादिकस्य, तस्य हि मित्त्वं निषिध्यते (१)।

४७०। व्यथ, भयसञ्चलनयोः। (To fear, to be disquieted)

व्यथ्, सेट्, अक, आ। व्यथते। विव्यथे। व्यथिता। व्यथिष्यते। अव्यथिष्ट, अव्यथिषाताम्, अव्यथिषत। व्यथिषीष्ट। विव्यथिषते। वाव्यथ्यते। वाव्यथीति, वाव्यत्ति। व्यथयति। अविव्यथत्,—त। घटिवच्चिसुलोरुदाहार्य्यम्। न व्यथ्यत इत्यव्यथ्यः—'राजसूये'त्यादिना निपातितः। भावे—व्यथ्यते। अव्यथि, अव्याथि। इन्—अव्यथी। षित्वादङ्—व्यथा। विथुरः—कुरच्, सम्प्रसारणम्। विधुरः—उरच्, सम्प्रसारणम्, थकारस्य धकारः। व्यथ दुःख भयचलनयोरिति दुर्गः। भयचलनयोरिति प्रकाशस्य। तवर्गचतुर्थान्तोऽयं दिवादौ।

४७१। प्रथ, प्रख्याने। (To become famous)

प्रथ्, सेट्, सक, आ। प्रथते। पप्रथे। अप्रथिष्ट, अप्रथि-

(१) नान्ये मितो हेताविति ज्ञपादिपञ्चकव्यतिरिक्ता अहेतौ स्वार्थे णिचि मितो न भवन्तीत्यर्थः। अतएव स्वार्थे णिचि मित्त्वनिषेधाच्चेष्टायां मित्त्वार्थं तस्यायमनुवादो न भवति।

षाताम्, अप्रथिषत । प्रथिता । पिप्रथिषते । पाप्रथ्यते, पाप्रथीति, पाप्रत्ति इत्यादि । प्रथयति,—ते । (त्वरादि) अपप्रथत्,—त । भावे—प्रथ्यते । अप्रथि, अप्राथि इत्यादि घटिवत् । पृथिवी—प्रथेः षिवन् षित्वात् ङीष् । पृथिव्या निमित्तं संयोग उत्पातो वा पार्थिवः—'सर्वभूमिपृथिवीभ्यामणञा'विति अण् । पृथिव्या ईश्वरः, पृथिव्यां विदित इति वा पार्थिवः, 'तस्येश्वरः' 'तेन विदित इति चे'त्यण्, 'पृथिव्या ञाञा'विति प्राग्दीव्यतीयेष्वर्थेषु ञाञोः—पार्थिवम् । अनयोः स्त्रियां विशेषः—पार्थिवा, पार्थिवी । पृथुः 'प्रथिम्रदिभ्रस्जां सम्प्रसारणं सलोपश्चे'ति कुप्रत्ययः, सम्प्रसारणञ्च । सलोपवचनं भ्रज्जत्यर्थम् । पृथोर्भावः—प्रथिमा, इमनिच् । इमनिज्भावे 'इगन्ताच्च लघुपूर्वा'दित्यणि पार्थिवम् । अत्र लघोः पूर्वत्वमिगपेक्षम्, तच्चेह द्वयोरक्षरानन्तर्य्येणावस्थानासम्भवादेकहला व्यवधानमाश्रीयते । वोतो गुणवचनादिति ङीषि—पृथ्वी । अयं कथादावपि । अत्र केचित् पृथेति ऋकारोपधमपि पठन्ति । यदाह वर्द्धमानः—पृथिकन्दिचन्दिष्टच्छादीनां घटादौ पाठः चिण्णमुलोर्वृद्ध्यर्थ इति । अत्र स्वामी—प्रथेः संप्रसारणविधानमार्षं मन्यते । पुरुषकारोऽपि यदप्रथयत् तत् पृथिव्याः पृथिवीत्वमिति श्रौतस्य निर्वचनस्यार्षपक्ष एवाञ्जस्यमिति, अन्यथा यदपर्थयदित्येव ब्रूयात् । पुनश्चोक्तम्—तथापि पृथेर्घटादिपाठे तत्फलं घटादयः षित इति षित्वादङि सति पृथेति रूपं द्रष्टव्यमिति । व्यथादिस्थान्तः, पृथ प्रक्षेप इति चुरादौ ।

४७२ । प्रस, विस्तारे । (To extend)

प्रस्, सेट्, सक, आ । प्रसते । पप्रसे । अप्रसिष्ट । पिप्रसिषते । पाप्रस्यते । पाप्रस्ति । अपाप्रसीत्, अपाप्रत् । अपाप्रः । प्रसयति । अपिप्रसत् । अप्रपि, अप्रासि । प्रसा ।

४७३। म्रद, मर्दने। (To crush)

म्रद्, सेट्, सक, आ। म्रदते। मम्रदे। म्रदिता। अम्रदिष्ट। मिम्रदिषते। माम्रद्यते। माम्रदीति, माम्रत्ति। म्रदयति। अमिम्रदत्। मृदुः—'प्रथिम्रदी'त्यादिना कुप्रत्ययः, —सम्प्रसारणञ्च। मृदोरपत्यं मार्द्रेयम् 'शुभ्रादिभ्यश्चे'ति ढक्। मृद्वी—ङीष्। मृद्विका—कन्। म्रदिमा—पृथ्वादिभ्य इमनिचि 'र ऋत' इति रः। तदभावे मार्द्दवम्। स्वादुमृदुन इदं सौवादुम्रदवम्—'द्वारादीनाञ्चे'ति वृद्धिप्रतिषेधः, एजागमश्च। मृ चोद इति ऋकारोपधः क्र्यादौ।

४७४। स्खद, स्खदने। (To destroy)

स्खदनं विद्रावणमिति स्वामी। स्खद्, सेट्, सक, आ। स्खदते। स्खदिता। स्खदयति। अचिस्खदत्। अस्खदि, अस्खादि। 'स्खदिरवपरिभ्याञ्चे'ति मित्त्वसंज्ञानिषेधस्य वच्यमाणलक्षणात् अवस्खदयति। परिस्खदयतीत्यत्र मित्त्वं न भवति। अपावपरिभ्य इति बोधिन्यासे पठ्यते, तन्मते अपस्खादयतीत्यत्रापि मित्त्वं न भवति।

४७५। चजि, गतिदानयोः। (To move, to give)

चज इति कौशिकः। चञ्ज् (इ) सेट्, सक आ। चञ्जते। चचञ्जे। चञ्जिता। चिचञ्जिषते। चाचञ्ज्यते। चाचङ्क्ति। चञ्जयति। अचचञ्जत्। अचञ्जि, अचाञ्जि। चञ्जं चञ्जम्। चाञ्जंचाञ्जम्। मित्यसामर्थ्यादनुपधत्वेऽपि 'चिण्णमुलो'रिति दीर्घविकल्पो भवतीति मैत्रेयसुधाकरादयः। चञ्जेति गुरुमत्त्वादङि सिद्ध्यति। एवमन्येषामपि संयोगान्तानां दचादीनां मित्त्वसामर्थ्यात् दीर्घविकल्पः।

४७६। दक्ष, गतिशासनयोः। ( To go, to punish ).

दक्ष, सेट्, सक, आ। दक्षते। ददक्षे। दक्षिता दक्षयति। अदक्षत्। अदाक्षि, अदक्षि इत्यादि। अच्—दक्षः।

४७७। क्रप, कृपायां गतौ ( To be affected, to go ).

क्रप्, सेट्, सक, आ। क्रपते। चक्रपे। क्रपिता। चिक्रपिषते। चाक्रप्यते। चाक्रप्ति। क्रपयति। अचिक्रपत्। अक्रपि, अक्रापि। कृपा—अङ्। कृपाणः—'त्यजियुधिक्रपेः किच्चे'त्यानर्, बाहुलकात्। कृपणः—क्युन्। कृपीटः—कीटन्। कर्पूरः—ऊरः। सर्वत्र सम्प्रसारणनिपातः।

४७८। कदि, क्रदि, क्लदि, वैक्लव्ये। ( To grieve ).

कन्द्, क्रन्द्, क्लन्द् (इ) सेट्, अक, आ। अत्र क्षीरस्वाम्येवं पठित्वाह—वैक्लव्य इति चन्द्रः। कद क्रद क्लद इति नन्दी अनिदितमाह। मैत्रेयस्तु कदिक्रदी द्वाविदितौ पठित्वा क्रदक्लदेति द्वावनिदितावाह। तत्रेदितोरन्त्यः सरेफः आद्यो नीरेफः, अनिदितोस्त्वाद्यः सरेफः, अपरो लकारवान्। वर्द्धमानोऽपि मैत्रेयवल्लकारवन्तमिदितं चापठत्।

कन्द्—कन्दते। चकन्दे। कन्दिता। चिकन्दिषते। चाकन्द्यते। चाकन्ति। कन्दयति। अचकन्दत्। अकन्दि, अकान्दि। कन्दंकन्दम् कान्दंकान्दम् इत्यादि क्षजिवत्। क्रन्द्—क्रन्दते। क्लन्द्—क्लन्दते इत्यादि। अनिदित्पाठे कदयति, अकादीत् इत्यादि। एवं क्रदते, क्लदते इत्यादि। कन्दनम्। कन्दलः—अलः। कदली—गौरादित्वात् ङीष्।

४७९। ञि त्वरा, सम्भ्रमे। ( To hurry ).

त्वर् ( ञि, आ ) सेट्, अक, आ। त्वरते। तत्वरे।

त्वरिता। अत्वरिष्ट, अत्वरिषाताम्, अत्वरिषत। तित्वरिषते, तात्वर्य्यते। तात्वरीति, तातूर्त्ति। तातूर्त्तः। तात्वरीषि, तातूर्ण्। तातूर्थः। तात्वरीमि, तातूर्मि। लोट्हि—तातूर्हि। त्वरयति, --ते। अतत्वरत्,--त। 'अत् स्मृदृत्वरे'त्यभ्यासस्यात्वम्,'इत्वापवादः।—अत्वरि, अत्वारि। णमुल्—त्वरंत्वरम्. त्वारं-त्वारम्। तूर्णः, त्वरितः। (ष) अङ्—त्वरा। त्वरया सह वर्त्तमानं सत्वरम्। त्वरमाणः। तूः, तुरौ, तुरः। 'ज्वरत्वरे'-त्यूट्। घटादयः षित उदात्ता अनुदात्तेतः।

## परस्मैपदिनः।

### ४८०। ज्वर, रोगे। ( To be hot with fever or passion ).

एतदादयः फणान्ता उदात्ता उदात्तेतः। ज्वर्, सेट्, अक, प। ज्वरति। ज्वरतु। अज्वरत्। ज्वरेत्। ज्वर्य्यात्। जज्वार। ज्वरिता। ज्वरिष्यति। अज्वरिष्यत्। अज्वारीत्। जिज्वरिष्यति। जाज्वर्य्यते। जाजूर्त्ति, जाजूर्त्तः। ज्वरयति। अजिज्वरत्। अज्वरि, अज्वारि। ज्वरितः। जूः, जुरौ जुरः। संज्वारी—घिनुण्। 'रुजार्थानां'मित्यत्र अज्वरेरिति वचनात् कर्मणि षष्ठी न भवति—चौरं ज्वरयति रोगः। ज्वरः। विज्वरः। संज्वरः।

### ४८१। गड्, सेचने। ( To sprinkle ).

गड्, सेट्, सक, प। गड़ति। जगाड़। गड़िता। जिगड़िषति। जागड्यते। जागड्डि। गड़यति। अजीगड़त्। अगाडि इत्यादि। गडुः अस्यास्तीति—गडुलः, 'सिध्मादिभ्यश्चे'ति लच्, अत एव पाठात् बाहुलकाद्वा उप्रत्यये गड़ इति।

गड्डली—ङीष् । कण्ठे गडुरस्य गड्डकण्ठः । गण्डतीति वदनैकदेशे गतः ।

४८२ । हेड, वेष्टने । ( To surround ).

हेड् . सेट्, सक, प । हेडति । जिहेड । हेडिता । जिहेडिषति । हिड्यति । अजीहिडत् । अनादरार्थस्य—हेडयति । अहिडि, अहीडि इत्यादि ।

४८३ । वट, भट, परिभाषणे । ( To speak )

वटयति । भटयति । अवटि, अवाटि । अभटि, अभाटि । इमावल्लार्थे घटादी ।

४८४ । नट, नृत्तौ । ( To dance )

पूर्वत्र नृतिर्नाट्यमित्युक्तत्वात् इह नृत्तिशब्देन ततोऽन्योऽर्थो नृत्तनृत्यलक्षणः चलनादिलक्षणश्चोच्यते । अत्र मैत्रेयः—गताविप्येके । नतावपीत्येके, स्वामी च नताविति पठित्वा नटयति शाखामित्युदाहृत्य नृत्तौ नाटयतीति उदाहरत् ।

नट् . सेट् . अक, प । नटति । ननाट । नटिता । नटिष्यति । अनटिष्यत् । अनटीत्, अनाटीत् । नट्यात् । नटयति—ते । अनीनटत्—त । निनटिषति । नानट्यते । नानटीति नानट्टि । नट्यते । अनटि, अनाटि इत्यादि । अयं णोपदेश इति प्रागुक्तम् । अयमपि च घटादिः ।

४८५ । ष्टक, प्रतिघाते । ( To resist ).

स्तक्, सेट्, अक, प । स्तकति । तस्ताक । स्तकिता । अस्तकीत्, अस्ताकीत् । तिस्तकिषति । तास्तक्यते । तास्तक्ति । स्तकयति । अतिष्टकत् । स्तक्यते । अस्तकि, अस्ताकि इत्यादि । अत्र दन्त्यादिरपि क्वचित् पठ्यते तत् षोपदेशलक्षणविरुद्धम् ।

४८६। चक, तृप्तौ। (१) To be satisfied ).

उभयपदीति वोपदेवादयः। चक्, सेट्, अक, उ। चकति, चकते। चचाक, चेके। चकिता। अचकीत्, अचाकीत्, अचकिष्ट। चकयति। अचीचकत्। अचकि, अचाकि। क — चकितम्। चकोरः।

४८७। कखे, हसने। ( To laugh ).

कख (प) सेट्, अक, प। कखति। चकाख। चकखतुः। कखिता। (प) अकखीत्। चिकखिषति। चाकख्यते। चाकक्ति। कखयति। अचीकखत्। अकखि, अकाखि इत्यादि।

४८८। रगे, शङ्कायाम्। ( To doubt ).

४८९। लगे, सङ्गे। ( To come in contact ).

रगे शङ्कायां, लगे सङ्गे च इति दुर्गः पठति। रग्, लग् (प) सेट्, प। रगति, लगति इत्यादि कखिवत्। लग्नः— 'क्षुब्धस्वान्ते'ति अनिट्त्वं निष्ठायां निपात्यते। अन्यत्र—लगितम्। रङ्गतिलङ्गती गत्यर्थेषु गतौ।

४९०। ह्नगे, ह्लगे, षगे, ष्ठगे, संवरणे।

( To cover, to hide ).

ह्नग्, ह्लग्, सग्, स्थग् (प) सेट्, सक, प। क्वचित् कोषे स्थगे इति दन्त्यादिरपि पठ्यते, तत् षोपदेशलक्षणविरुद्धम्। ह्नग्—ह्नगति। जह्नाग। (प) अह्नगीत्। जिगह्निषति।

(१) आत्मनेपदिषु पठितस्य परस्मैपदिष्वनुवादात् परस्मैपदम् हेडतिवत्। अत्र स्वामी—अयं तृप्तिप्रतिघातयोः पूर्वं पठितः, तृप्तिमात्र इत्यर्थपाठं व्यत्यास्थत्। शाकटायनस्तूभयत्वोभयार्थत्वमाह। धनपालस्तु पुनर्यथा स्वामी पठित्वा पूर्वं पठितस्यायमनुवाद इति आत्मनेपदमुदाजहार। तन्मते—परस्मैपदिष्वनुवादो व्यर्थः स्यात्।

जाह्लग्यते। जाह्लक्ति। ह्लगयति। अजिह्लगत्। अह्लागि, अह्लगि। एवं ह्लगति इत्यादि।

सग्—सगति। ससाग, सेगतुः, सेगुः। (ए) असगीत्। सिसगिषति। सासग्यते। सासक्ति। सगयति। असीषगत्। असगि, असागि।

स्थग्—स्थगति। तस्थाग। स्थगिता। (ए) अस्थगीत्। तिस्थगिषति। तास्थग्यते। तास्थक्ति। स्थगयति। अतिष्ठगत्। स्थग्यते। अस्थगि, अस्थागि। क्तः—स्थगितः।

४६१। कगे, नोच्यते। (To act). *

अत्र मैत्रेयः--अस्यायमर्थ इति नोच्यते, क्रियासामान्यमर्थ इत्यर्थः। इह शास्त्रे कगे नोच्यते इत्येके। स्वामी तु अस्यायमर्थ इति नोच्यते अनेकार्थत्वात्। कग् (ए) सेट्, प। कगति। चकाग। अकगीत्। कगयति इत्यादि।

४६२। अक, अग, कुटिलायां गतौ।

(To move tortuously)

अक्, अग्, सेट्, अक, प। अकति। आक। अकिता। मा भवानकीत्। अक्यात्। अचिकिषति। अकयति। मा भवानचिकत्। मा भवानकि, मा भवानाकि। अङ्क्ते इति लक्षणार्थे गतः। अग्—अगति इत्यादि। अङ्क्ते इति गतौ गतम्।

४६३। कण, रण, गतौ। (To go).

कण्, रण्, सेट्, सक, प। कणति। चकाण। कणिता। अकणत् अकाणीत्। कणयति,—ते। अचीकणत्,—त। अचकणत् —त इत्यादि। अकाणि, अकणि इत्यादि। रण्—रणति इत्यादि पूर्ववत्। कणति-रणती शब्दार्थौ। गतावेतयोः—काणयति, राणयति।

---

* These Dhatoos have no defenite meaning (491—517).

४६४। चण, शण, श्रण, दाने च। ( To go, to give ).

चण्, शण्, श्रण्, सक, प। चणति। चचाण, चेणतुः। चणिता। अचणीत् अचाणीत्। चिचणिषति। चञ्चण्यते। चञ्चण्टि, चञ्चाण्टः,। चणयति। अचाणीत्। अचणि, अचाणि। शणति, श्रणति इत्यादि। शण गतावित्यन्ये। अन्त्यौ तालव्यादी।

४६५। श्रथ, क्नथ, क्रथ, हिंसार्थाः। ( To kill ).

श्रथ्, क्नथ्, क्रथ्, सेट्, सक, प। श्रथति। शश्राथ। श्रथिता। शिश्रथिषति। शाश्रथ्यते। शाश्रत्ति। श्रथयति। अशिश्रथत्। अश्रथि, अश्राथि। अयं घटादिः। क्नथ्—क्नथति, क्रथ्—क्रथति इत्यादि। क्रथेस्तु 'जासिनिप्रहणनाटक्राथे'ति निर्देशान्मित्त्वेऽपि वृद्धिरिति, तेन क्राथयति चोरस्येति भवति। मित्त्वफलन्तु अक्रथि अक्राथि इत्यादौ चिण्णमुलोरिति दीर्घविकल्पः।

८६६। चन, च। ( To injure ).

दन्त्यान्तोऽयम्। चकारेण पूर्वोक्तोऽर्थः हिंसा परामृश्यते। चन्, सेट्, सक, प। चनति। चचान, चेनतुः। अचनीत्, अचानीत्। चनयति। अचनि, अचानि इत्यादि।

४६७। वनु च नोपलभ्यते [ नोच्यते ]। ( To act ).

वन् (उ) सेट्, प। क्रियासामान्ये वनति इत्यादि। इदञ्च मित्त्वं 'ग्लास्नावनुवमाञ्च'त्यनुपसृष्टानां विकल्पस्य वक्ष्यमाणत्वात् सोपसर्गार्थम्, तेन प्रवनयति, प्रावीवनत्। प्रावनि, प्रावानि इत्यादि। गोविन्दभट्टस्तु पञ्चमद्वयानुबन्धः, तनादिवनधातोर्ग्रहणार्थ इति वनयति। अनेकार्थत्वात् सम्भक्तिशब्दयोर्न मानुबन्धः—वनयति, इत्याह।

४६८। ज्वल, दीप्तौ। ( To shine ).

ज्वलदीप्ताविति पठिष्यते, तस्य मित्त्वार्थोऽयमनुवादः।

इदमपि मित्त्वं सोपसर्गविषयं 'ज्वलह्वलह्मलनमामनुपसर्गाद्वे'ति अनुपसृष्टानां विकल्पस्य वक्ष्यमाणत्वात्—प्रज्वलयति । प्राज्वालि, प्राज्वलीत्यादि ।

४९९ । ह्वल्, ह्मल, चलने । ( To go, to be afflicted ).

ह्वल्, ह्मल्, सेट्, सक, प । ह्वलति । जह्वाल । ह्वलिता । अह्वालीत् । जिह्वलिषति । जाह्वल्यते । जाह्वलीति, जाह्वल्ति । ह्वलयति,—ते, ह्वालयति—ते । उपसर्गयोगे—विह्वलयति,—ते । इमौ च सोपसर्गावेव नित्यं मित्त्वं प्रयोजयतः, ज्वलतिवदनुपसृष्टयोर्विकल्पस्य वक्ष्यमाणत्वात्—व्यह्वलि, व्यह्वालि । एवं ह्मलति इत्यादि ।

किवँह्वलयतीत्यत्र 'यवलपरे यवला वा' इति यवलपरहकारपरे मकारस्य पक्षे यवलविधानात् सानुनासिको वकार उदाहार्य्यः । किम्ह्मलयति । किंह्मलयतीत्यत्र 'हे मपरे वे'ति मकारपरे हकारे परे मकारस्य पक्षे मकारविधानान्मकारोऽप्युपदेशार्थः ।

५०० । स्मृ, आध्याने । ( To think upon, to recollat).

स्मृ, [ ध्यै ] चिन्तायामित्यस्याध्याने मित्त्वार्थोऽयमनुवादः, आध्यानमुत्कण्ठापूर्वकं स्मरणम् । स्मरणमिति चतुर्भुजः । आ समन्तात् ध्यानमिति कातन्त्रटीकाकारः । स्मरयति मातुः, मातरं वा । "मुहुरनुस्मरयन्तमनुक्षणं त्रिपुरदाहमुमापतिसेविनः ।" इति किराते । अन्यत्र मित्त्वाभावात् न ह्रस्वः । "अस्मारयदुपगीतिं स्वर्गकुरङ्गीदृशां गीति"रिति गङ्गादासः ।

५०१ । दृ, भये । ( To fear ).

अत्र देवधनपालपूर्णचन्द्राः अमुं धात्वन्तरमाहुः । मैत्रेयत्रिलोचनादयस्तु दॄ विदारण इति क्रैयादिकस्येह पाठो मित्त्वार्थः । न पुनः प्रकृत्यन्तरमिदम् । दृणन्तं प्रयुङ्क्ते—दर-

यति दारुणो नृपतिः प्रजाः। भयादन्यत्र दारयति दारु वर्द्ध-किना गृही। "दरन्ति दिगीशाश्चे"ति हलायुधे प्रकृत्यन्तरं दृश्यते। आभरणकारस्त्वमुं हलान्तं धात्वन्तरं पठति।

५०२। नॄ, नये। ( To lead ).

अयमपि क्र्यादिपठितो मित्त्वार्थं इह पठ्यते। नृणन्तं प्रयुङ्क्ते—नरयति। अन्यत्र नारयति। मैत्रेयस्तु नामुमिहेच्छति।

५०३। श्रा, पाके। ( To cook ).

श्रातिश्रायत्योरदादिभ्वादिपठितयोरिह मित्त्वार्थः पाठः। अत्र सर्वत्र पाको विक्लित्तिरिति। श्रपयति यवागूं सूपकारेण गृही। श्रा, अनिट्, सक, प। श्रपयति। अश्रपि, अश्रापि। पाकादन्यत्र—श्रापयति स्वेदयतीत्यर्थः। धातूनामनेकार्थत्वात् स्वेदे इति।

५०४। मारण-तोषण-निशामनेषु, ज्ञा।
( To kill, to please, to see ).

ज्ञा, अनिट्, सक, प। पशु जानातिर्मिद् भवति। रिपुं संज्ञपयति—मारयतीत्यर्थः। विष्णुं विज्ञपयति—सन्तोषयतीत्यर्थः। प्रज्ञपयति—रूपं दर्शयतीत्यर्थः। कौमाराणां मतेनात्र सोपसर्गाः प्रदर्शिताः। अन्यत्र—ज्ञापयति बोधयतीत्यर्थः। नेह निशामनं ज्ञापनमात्रं, किन्तु चक्षुःसाधनं ज्ञानम्। शम, लक्ष आलोचन इत्यस्य हीदं रूपम् आलोचनं चक्षुर्विज्ञाने प्रसिद्धम्।

अत्र चन्द्रः—'मारणतोषणनिशामनेष्वि'ति वर्द्धमानश्चैवं पठित्वा निशानं तीक्ष्णीकरणमिति चाभिधाय निशामन इति केचित् निशामनं दर्शनमिति। स्वामिशाकटायनौ वर्द्धमान-वदेव, अत्र प्रज्ञपयति शरमित्युदाहरणं, तीक्ष्णीकरोतीत्यर्थः। अत्र मित्त्वं बोधिन्यासकारो न सहते। यदाह प्राचीनास्तु निशानं

नेच्छन्तीति। एवं काश्यपसम्मताकारादयोऽपि, इति मैत्रेयाद्यङ्गीकृतो निशामनपाठ एव ज्यायान्।

५०५। कम्पने चलिः। ( To move ).

चल्, सेट्, अक, प। चल कम्पन इति ज्वलादौ, तस्य मित्त्वार्थमनुवादः। चलयति शाखाम्. कम्पयतीत्यर्थः। अन्यत्र शीलं चलयति—अन्यथा करोतीत्यर्थः। सूत्रं चालयति. क्षिपतीत्यर्थः इति सुधाकरः। 'चालयन् सकलां पृथ्वीम्' इति उद्धाटनाथ।

५०६। छदिरूर्जने। ( To be strong ).

ऊर्जनं प्राणनम् बलनं वा, ऊर्ज बलप्राणनयोरिति हि धातुः। छेद अपवारण इति चौरादिकस्य स्वार्थे णिजभावे मित्त्वार्थेऽयमनुवादः। धातूनामनेकार्थत्वादूर्ज्जने वृत्तिः। छद्, अनिट्, सक, प। छदन्तं प्रयुङ्क्ते—छदयति, बलवन्तं प्राणवन्तं करोतीत्यर्थः। अन्यत्र छादयति—अपवारयन्तं प्रयुङ्क्त इत्यर्थः। यदा च छादयतीति स्वार्थे ण्यन्तस्तदा बलीभवति प्राणीभवति—अपवारयतीत्यर्थः।

५०७। जिह्वोन्मथने लडिः। ( To use the tongue ).

लड़ विलास इति पठितस्य लड़धातोर्मित्त्वार्थोऽयमनुवादः। जिह्वोन्मन्थने इति दुर्गः पठति। उन्मन्थनम् उत्क्षेपणम्। लड्, सेट्, सक, प। लड़यति जिह्वां सर्पः। अन्यत्र डलयोरैकत्वे—'लालयेत् पञ्च वर्षाणि" पालयेदित्यर्थः इति मनोरमा। उन्मथनं ज्ञापनम्, अत्र मैत्रेयस्य जिह्वाया उन्मथते इति मतम्। यदाह—लड़यति जिह्वामिति। अयमेव पक्षो गुप्तस्याऽपि। पुरुषकारे तु जिह्वया उन्मथने लड़यति जिह्वयेत्युक्त

भवति। अपरे तु जिह्वा चोन्मथनमिति समाहारद्वन्द्वं व्याचक्षते, जिह्वाशब्देन तद्विषयो व्यापार उच्यते।

५०८। मदी, हर्षग्लेपनयोः। (To be glad, to be poor).

दैवादिकस्य मित्त्वार्थोऽयमनुवादः। मद्, अनिट्, प। मदयति—हर्षयति ग्लेपयति चेत्यर्थः। ग्लेपनं दैन्यम्। अन्यत्र—मादयति, चित्तविकारमुत्पादयतीत्यर्थः। निमादयति—अक्षरव्यञ्जनानि स्पष्टमुच्चारयतीत्यर्थः। तथा च प्रातिशाख्यम्—उपलब्धिर्निमाद इति, अक्षरव्यञ्जनानामिति शेषः।

५०९। ध्वन, शब्दे। ( To sound ).

मित्त्वार्थमयमनूद्यते। ध्वन्, सेट्, अक, प। ध्वनयति घण्टाम्। अन्यत्र—ध्वानयति, अस्पष्टाक्षरमुच्चारयतीत्यर्थः। तथाच प्रातिशाख्यम्—अक्षरव्यञ्जनानामुपलब्धिर्ध्वनिरिति। अत्र भोजः—दलिवलिस्खलिरणिध्वनित्रपिक्षपयश्चेति पपाठ। तत्र ध्वनिर्णद्धमानानुसारेण पठित उदाहृतश्च। तथा रणिरपि। दल विदारणे, वल संवरणे, स्खल सञ्चलने, त्रपूष् लज्जायामिति गताः। तेषां णौ—दलयति, वलयति, स्खलयति, त्रपयति, क्षपयति। क्षे क्षय इति वक्ष्यमाणस्य कृतार्थस्य पुकि निर्देशः। स्वन अवतंसने—स्वनयति, अन्यत्र—स्वानयति। अयं शब्दार्थः पठिष्यते।

"घटादयो मितः" [मानुबन्धाः], मित्संज्ञका इत्यर्थः।

५१०। जनी-जॄष्-क्नसु-रञ्जोऽमन्ताश्च।

चशब्दान्मित इत्यपकृष्यते। जन (ई) प्रादुर्भावे, जॄष् वयोहानौ, क्नसु (उ) ह्वरणदीप्त्योः, एते दिवादयः। रञ्ज् रागे, अयं भ्वादिश्च। अम् शब्दोऽन्ते येषां ते अमन्ताः, यथासम्भवं सर्वेषु विकरणेषु ते वर्त्तन्ते, ते च मितः। जनयति, जरयति। जॄषिति

षित् (षानुबन्धः) निर्देशात् जृणातेरमित्त्वात् जारयतीति । बोधि-न्यासादौ मैत्रेयी जृणातेः स्थाने झृ इत्येक इति चतुर्थादिश्च वक्ष्यति । वनसयति । रजयति—मृगान् रमयतीत्यर्थः । 'रञ्जेर्णौ मृगरमण उपसंख्यान'मिति नलोपः । मृगादन्यत्र नलोपो न भवति—रञ्जयति पक्षिणः । तथा रमणादन्यत्र न नलोपः । रञ्जयति मृगान् तृणादिदानेन । नलोपाभावे मित्त्व-फलमरञ्जि ; अराञ्जि इत्यादौ 'चिण्णमुलो'रिति दीर्घः । अमन्ताः खल्वपि क्रमयति गमयतीत्यादि ।

५११ । ज्वलह्वलह्मलनमोऽनुपसर्गा वा ।

ज्वलादयो वा मितो भवन्ति । उपसर्गात् परेषामेषां नायं विकल्प इत्यर्थः । क्वचित्तु पठ्यते ज्वलादीनां पूर्वपाठात् प्राप्तिः, नमेस्त्वमन्तात् । ज्वलयति, ज्वालयति ; ह्वलयति, ह्वालयति ; ह्मलयति, ह्मालयति ; नमयति, नामयतीति । उपसृष्टे तु नित्ये मित्त्वे प्रज्वलयतीत्यादि । उन्नामयतीति प्रयोगे घञन्तात् "तत्करोती'ति णौ. एवमन्येषामपीदृशां निर्वाहः । 'मितां ह्रस्व' इति वृत्तौ 'वा चित्तविराग' इत्यतो वेत्यनुवृत्तेर्व्यवस्थित-विभाषाविज्ञानाच्च संक्रामयतीत्यादिसिद्धिरिति । यत्तु सुधा-करोक्तं घञन्तादुत्क्रामशब्दात् 'तत्करोतीति णिचि उत्-क्रामयतीति, तदयुक्तं 'नोदात्तोपदेशस्ये'ति वृद्धिनिषेधात् उत्-क्रामशब्दस्यैवाभावात् ।

५१२ । ग्लास्नावनुवमश्च ।

अनुपसर्गा वेति वर्त्तते, पूर्ववद्व्याख्यानमत्रापि । ग्लै हर्ष-क्षये । अत्र स्न'ति ष्णौ शौचवेष्टनयोरिति वक्ष्यमाणस्य ष्णा शौच इत्यादादिकस्य च, श्रा पाक इत्यत्रोकन्यायेन, वनु च नोच्यत इति इह पठितो वनतिः, अनन्तरस्य विधिरिति

न्यायादनूद्यते, न तु तानादिको वनोतिः। टु वम उद्गिरणे अमन्तः, तदयं वन्वमोः प्राप्ते ग्लास्नोरप्राप्ते इत्युभयत्र विभाषेयम्। ग्लपयति, ग्लापयति; स्नपयति, स्नापयति; वनयति, वानयति; वमयति वामयति। ग्लास्नोरुपसृष्टयोर्मित्त्वाभावात् प्रग्लापयति, प्रस्नापयतीत्येव। वनुवमोस्तु नियमितत्वात् प्रवनयति, प्रवमयतीत्येव।

५१३। न कम्यमिचमः।

कमु (ङ) कान्तौ, अम गत्यादौ, चमु (ङ) अदने एषाममन्तत्वात् मित्त्वे प्राप्ते निषिध्यते। कामयते। आमयति। आचामयति।

५१४। शमो दर्शने।

शम उपशमने दिवादिः, अयञ्च दर्शने न मित्, अमन्तोऽपि—निशामयति रूपम्। "अत्युत्कृष्टमिदं तीर्थं भारद्वाज निशामये"ति। शम लक्षः, आलोचन इति चौरादिकः। अस्मात् कारिते णावर्थो न सङ्गच्छते। दर्शनादन्यत्र—निशमयति वचः। अत्र स्वामी नेत्यनपेक्ष्य अदर्शन इति पदम्, दर्शनादन्यत्र मिदिति संव्याचष्टे, एवमन्यत्र न फलभेदः।

५१५। यमोऽपरिवेषणे।

यम उपरम इत्यग्रे, अयं परिवेषनादन्यत्र भोजनादन्यत्रामन्तोऽपि न मित्। आयामयति—द्राघयति, व्यापारयति वेत्यर्थः। परिवेषणे तु—यमयति ब्राह्मणान्। नियमयतीति प्रयोगोऽयं 'तत्करोती'ति णौ द्रष्टव्यः।

५१६। स्खदिरवपरिभ्याञ्च।

न मिदिति शेषः। अवस्खादयति, परिस्खादयति।

५१७। फण, गतौ। ( To go )

नेति निवृत्तम् असम्भवादिति मैत्रेयः। निषेधात् पूर्वमपाठः फणादिकार्य्यानुरोधादिति च। फण्, सेट्, सक, प। फणति पफाण, फेणतुः, फेणुः। फेणिथ, पफणिथ। फेणथुः, फेण। पफाण,पफण ; पफणिव, फेणिव ; पफणिम, फेणिम। फणिता इत्यादि। अफणिष्यत्। फण्यात्। अफणीत्, अफाणीत्। पिफणिषति। पम्फण्यते। पम्फणीति। पम्फणिट, पम्फाण्टः। फणयति,—ते। अपीफणत्,—त। अन्यत्र—फाणयति सक्तून्—स्नेहयतीत्यर्थः—इति स्वामिसम्मताकारौ।

फाण्टः—क्षुब्धे त्यादिना अनायासेऽनिट्त्वं निपात्यते। अत्रा-नायासशब्देनाल्पप्रयाससाध्यः कषायविशेष उच्यते। तथाहि—औषधस्य पञ्च कल्पनाः ;—रसः, कल्कः, शृतः, शीतः, क्वाथः। शीतो नाम चुसमौषधमुदके प्रक्षिप्य रात्रावधिवासितं यदुदकं प्रातः पीयते सः, तदेवोष्णोदके प्रक्षिप्य सद्योऽभिषिच्य पूत्वा पीयते स फाण्ट इति तद्विदः।

वृत् समाप्तो घटादिर्वर्त्तत इत्यर्थः। अस्मात् पूर्वं वृदित्येके इति मैत्रेयः। ज्वरादय उदात्ता उदात्तेतः।

५१८। राजृ, दीप्तौ। ( To shine )

उदात्तः स्वरितेत्। राज् ( ऋ ) सेट्, अक, उ। राजति। राजतु। अराजत्, राजेत् इत्यादि। राजते। अराजत, राज-ताम्, राजेत। रराज, रेजतुः, रराजतुः, रेजुः, रराजुः। रेजिथ, रराजिथ। रेजिषे, रराजिषे। रराजे, रेजे। राजिता। राज्यात्, राजिषीष्ट। राजिष्यति,—ते। अराजत्, अरा-जत। अराजीत्, अराजिष्टाम्, अराजिषुः। अराजिष्ट,—षाताम्—षत। अराजिष्यत्, अराजिष्यत। रिराजिषति,

—ते। राराज्यते। राराजीति, राराष्टि। राजयति,—ते। अरराजत्,—त। भावे—राज्यते। अराजि।

सम्यक् राजते—इति सम्राट्—क्विप्। सम्राजोऽपत्यं—साम्राज्यः, ण्यः। क्षत्रियादन्यत्र साम्राजः—अण्। राजते इति—राट्, क्विप्। राष्ट्रम्—ष्ट्रन्। स्त्रियां—राष्ट्री, स्वामिनी इत्यर्थः। राष्ट्रियः—छः। राजा—कनिन्। दन्तानां राजा—राजदन्तः। राज्ञोऽपत्यम्—राजन्यः क्षत्रियः—यत्। राज्ञां समूहः—राजकम्—वुञ्। राजन्यकम्—'प्रकृत्या के राजन्यमनुष्ययुवान' इति प्रकृतिभावान्न यलोपः। राजकीयम्—'राज्ञः क च'ेति छप्रत्ययः शैषिकः, कश्चान्तादेशः। राज्ञः कर्म भावो वा—राज्यम्। समासे तु ष्यञ्—आधिराज्यम्। अधिको राजा—अधिराजः। शोभनो राजा—सुराजः। कुत्सितो राजा—किंराजः। महांश्चासौ राजा चेति महाराजः—टच् समासान्तः। महाराजो देवता अस्य महाराजिकः—ठञ्,—गणदेवताभेदः। महाराजो भक्तिर्भजनीयोऽस्य—महाराजकः, ठञ्। शोभनो राजा यस्यास्ति—राजन्वान्,—मतुप्, मस्य वः। राजितः। राजनम्। णिच्—नीराजना। वि—विराजः,—दीप्तिः। राजितः। राजित्वा। विराज्य। राजितुम्।

## आत्मनेपदिनः।

५१९। टु भ्राजृ, टु भ्राशृ टु भ्लाशृ, दीप्तौ। (१) (To shine)

भ्राज्, भ्राश्, भ्लाश् ( टु, ऋ ) सेट्, अक, आ। भ्राज्—भ्राजते। भ्राजताम्। भ्राजेत। अभ्राजत। बभ्राजे, भ्रेजे। भ्राजिता। भ्राजिष्यत। भ्राजिषीष्ट। अभ्राजिष्ट, अभ्राजिषाताम्, अभ्राजिषत। बिभ्राजिषते। बाभ्राज्यते। बाभ्राष्टि। अबाभ्राट्। भ्राजयति। अबिभ्रजत्, अबभ्राजत्। भ्राजथुः—

अथुच्—न भ्राजते इति—नभ्राट्। भ्राष्ट्रम्—ष्ट्रन्। भ्राष्ट्रमिन्धः—कर्मण्यण्। भ्राजिष्णुः—इष्णुच्। विभ्राट्—क्विप्।

भ्राश्—भ्राशते, भ्राश्यते इत्यादि। भ्राशताम्, भ्राश्यताम्। अभ्राशत, अभ्राश्यत। भ्राशेत, भ्राश्येत। अभ्राशिष्यत। आशीः—भ्राशिषीष्ट। भ्राशिता। लुङ्—अभ्राशिष्ट, अभ्राशिषाताम्, अभ्राशिषत। बिभ्राशिषते। बाभ्राश्यते। बभ्राशीति, बाभ्राष्टि। भ्राशयति। (ङ) अबभ्राशत्। भ्लाश्—भ्लाशते, भ्लाश्यते इत्यादि पूर्ववत्। भ्लाशथुः—अथुच्।

## परस्मैपदिनः।

५२०। स्यमु, स्वन, ध्वन, शब्दे। ( To sound )

स्यमादयः ज्वलान्ता उदात्ता उदात्तेतः। स्यम् (उ) स्वन्, ध्वन्, सेट्, अक, प। स्यम्—स्यमति। सस्याम, सस्यमतुः, स्येमतुः। सस्यमिथ, स्येमिथ। स्यमिता। स्यमिष्यति। अस्यमीत्। सिस्यमिषति। सेसिम्यते। संस्यमीति, संस्यन्ति संस्यान्तः। संस्यन्मि। संस्यान्हि। असंस्यन्। सिस्यमिषति। स्यमयति, असिस्यमत्। (उ) स्यमित्वा, स्यान्त्वा। स्यान्तम्। स्यमितुम्। स्यमन्तको मणिः—अन्तच्, कन्। अयं चुरादौ वितर्कार्थः।

स्वन्—स्वनति, विष्वणति, अवष्वणति। सष्वान। विषष्वाण, अवषष्वाण। सस्वनतुः, स्वेनतुः। (पा-६,४,१२५)। स्वनिता। अस्वनत्, व्यष्वणत्। अस्वणीत्, अस्वानीत्। सिस्वनिषति। विषिष्वणिषति। अवषिष्वणिषति। संस्वन्यते। संस्वन्ति, संस्वान्तः। स्वनयति, शब्दादन्यत्र—स्वानयति। असिस्वनत्। विष्वणनम्

(१) भ्राजतेः पठितस्यापीह पाठः फणादित्वेन किति लिट्येत्वाभ्यासलोपविकल्पार्थः। अनेनैव सिद्धे तस्य पाठो ज्वलादित्वनिवृत्त्यर्थं इति तत्रैवोक्तम्।

अवष्वणनम्—सशब्दभोजनम्। स्वानः, स्वन,—घञ्, अप्। निस्वानः—घञ्। निस्वनः—अप्, अन्योपसर्गात् घञेव—प्रस्वानः। स्वान्तम्—'क्षुब्धस्वान्ते'त्यादिना निष्ठायामनिट्त्वं निपात्यते मनोऽभिधानञ्चेत्, अन्यत्र—स्वनितो मृदङ्गः। आस्वान्तः, आस्वनितः। केचिद्भूषणार्थे घटादित्वं मन्यन्ते।

ध्वन्—ध्वनति। दध्वान, दध्वनतुः। ध्वनिता। ध्वनिष्यति। अध्वनीत्, अध्वानीत्। दिध्वनिषति। दन्ध्वन्यते। दन्ध्वन्ति। ध्वनयति, ध्वानयति। अदिध्वनत्। ध्वनितः। ध्वननम्। ध्वानः। ध्वनिः। ध्वान्तम्, ध्वनितम्।

५२१। षम, ष्टम, वैक्लव्ये। ( To be confused )

सम्, स्तम्, सेट्, अक, प। सम्—समति। ससाम, सेमतुः। सेमिथ। समिता। सिसमिषति। संसम्यते। संसमीति, संसन्ति। संसान्तः। समयति। असीषमत्। स्तम्—स्तमति। तस्ताम, तस्तमतुः। स्तमिता। तिस्तमिषति। तंस्तम्यते। तंस्तन्ति। स्तमयति। अतिष्टमत्। अत्र स्वाम्यादयः—केचिदेतदन्ता घटादय इति। बोधिन्यासे तु ध्वन्यन्ता इति।

५२२। ज्वल, दीप्तौ। ( To shine )

ज्वल्, सेट्, अक, प। ज्वलति। ज्वलतु। अज्वलत्। जज्वाल जज्वलतुः जज्वलुः। ज्वलिता। ज्वलिष्यति। अज्वालीत्, अज्वालिष्टाम्, अज्वालिषुः। जिज्वलिषति। जाज्वल्यते। जाज्वलीति, जाज्वल्ति। ज्वलयति,—ते। ज्वालयति,—ते। उपसर्गात्तु—प्रज्वलयति। अजिज्वलत्,—त। ज्वल्यते। अज्वालि, अज्वलि। ज्वालः—घञ्—ज्वालः—णः। ज्वलितम्। ज्वलनम्। अच्—ज्वलः। उत्—उज्ज्वलम्। उज्ज्वलस्य भावः—औज्ज्वल्यम्। ज्वलित्वा। प्रज्वल्य।

५२३। चल, कम्पने। ( To shake )

चल्, सेट्, अक, प। चलति। चचाल, चेलतुः, चेलुः। चलिता। अचलिष्यत्। अचालीत्, अचालिष्टाम्, अचालिषुः। अयं कम्पनार्थे घटादिः—चलयति, अन्यत्र—चालयति। अचीचलत्। चिचलिषति। चाचल्यते, चाचलीति, चाचल्ति। चल्यते। अचालि। चलः—अच्। चालः—णः। चलाचलः—'चरिचलि'-त्यादिना अचि द्विर्वचनम्, अभ्यासस्याागागमश्च। चाचलिः—'सहिवहिचलिपतिभ्यो' यङन्तेभ्यः किकिनाविति तयोरन्यतरः। चलनः—युच्। चलितः। चलित्वा। चलनम्। चालकः। चलन्। चालना। चल विलसन इति तुदादौ। चल गताविति चुरादौ।

५२४। जल, घातने। ( To sharpen )

घातनं तैक्ष्ण्यमिति स्वामी। जल् सेट्, अक, प। जलति इत्यादि चलवत्। जलः। जालः। लडयोरैकत्वमिति जडः। जाडारः—आरक्। जाड्यम्—'वर्णदृढादिभ्यः ष्यञ्'इति ष्यञ्। जडिमा—'दृढादित्वाद्भावकर्मणोः ष्यञिमनिचौ' इति इमनिच्। जल अपवारणे इति चुरादौ।

५२५। टल, ट्वल, वैक्लव्ये। ( To be confused )

टल, ट्वल्, सेट्, अक, प। टलति इत्यादि चलतिवत्। टलः—अच्। न टलतीति—अटलः। ट्वल्—ट्वलति। टट्वाल, टट्वलतुः। ट्वलिता। अट्वालीत्। ट्वालः। ट्वलः।

५२६। ष्ठल, स्थाने। ( To be firm )

स्थानं प्रतिष्ठा। स्थल्, सेट्, अक, प। स्थलति। तस्थाल। स्थलिता। अस्थालीत्। तिस्थलिषति। तास्थल्यते। तास्थलति। स्थालयति। अतिष्ठलत्। स्थालः। स्थलम्। स्थलम्। स्थली—

जनपदेत्यादिना कृत्रिमायां भूमौ ङीष्, अन्यत्र स्थला। स्थाली गौरादित्वात् ङीष्। विष्ठलम्। कपिष्ठलम्—'कपिष्ठलो गोत्र' इति मूर्धन्यो निपात्यते। अन्यत्र कपीनां स्थलं—कपिस्थलम्।

५२७। हल, विलेखने। (To plough)

विलेखनं कर्षणम्। हल्, सेट्, सक, प। हलति। जहाल। हलिता। अहलिष्यत्। अहालीत्। हलयति,—ते। अजीहलत्,—त। जिहलिषति। जाहल्यते इत्यादि। हल:। हाल:। हलि:—इन्। हलिं गृह्णाति—हलयति। अजहलत्—'मुण्डमिश्रे'त्यादिना णिच्। हलानां समूह:—हल्या, 'पाशादिभ्यो य' इति समूहे य:। हलस्येदं—हालिकम्, इदमर्थे ठक्। हलं वहति—हालिक:, वलीवर्द:,—ठक्। हलस्य कर्ष:, कर्षणं, कृष्यमाणं वा—'मतजनहलात् करणजल्पकर्षेष्वि'ति षष्ठ्यन्तत्वात् कर्मेऽर्थे यत्। द्विहल्या भू:। न विद्यते हलिर्यस्य असौ अहल:। एवं दुःसुपूर्वादपि।

५२८। णल, गन्धे। (To smell)

वन्धन इति काश्यप:। नल्, सेट्, अक, प। नलति, प्रणलति। अणालीत् इत्यादि। नल:। नाल:। नाली, प्रणाली—गौरादित्वात् ङीष्। डलयोरेकत्वस्मरणात् नड:। नडानां समूह:—नड्या, य:। नडा अस्मिन् देशे सन्तीति—नड्वल:। नड्वान्—मतुप्। नली—इन्। नलिनी—गौरादिषु दर्शनात् जातेरस्त्रीविषयादिति वा ङीष्। यद्वा नलशब्दात् 'पुष्करादिभ्यो देश' इति मत्वर्थीये इनौ ङीपि द्रष्टव्य:। नलं गन्धं ददातीति—नलदम्।

५२९। पल, गतौ। (To go)

पल्, सेट्, अक, प। पलति। पपाल। पेलतु:। पेलिता।

अपालीत् । अपलिष्यत् इत्यादि । पलम्—उन्मानविशेषः । पललं—मांसम् । पलालम्—आलच् । अच्छत् पलालम्—पलाली, पिप्पल्यादित्वात् ङीष् । पलाली अस्यास्तीति—पलालिनः, मत्वर्थे नः ह्रस्वश्च । पल रक्षण इति चुरादौ ।

५३० । वल, प्राणने धान्यावरोधे च ।

( To breathe, to hord grain )

प्राणनं जीवनम्, धान्यमवरुध्यते यत्र कुसूलादौ तद्धातूनामनेकार्थत्वाद्धान्यावरोधनव्यापार इत्यर्थः । बल्, सेट्, अक, प । बलति । बबाल । बलिता । अबालीत् इत्यादि । बलयति (घटादिः) अबीबलत् । बालः । बलम् । बाला—इजादित्वात् 'वयसि प्रथमे' इति ङीषं बाधित्वा टाप् । बलवान्—मतुप् । बलूलः—वातदन्तेत्यादिना लच्प्रत्ययः ऊङ् चागमः । बलः पुरुषः - अर्शआदिभ्योऽजिति मत्वर्थे अच् । बाहुबली, ऊरुबली—'बलाद्बाह्वूरुपूर्वपदा'दिति मत्वर्थे इन् । तथा सर्वबली । बलिः—इन् [इ] । बल्यर्थास्तण्डुलाः—बालेयाः, ढञ् । कुबेराय बलिः—कुबेरबलिः । अयं चुरादिर्मित् ।

५३१ । पुल, महत्त्वे । ( To be great or large )

पुल्, सेट्, अक, प । पोलति । पुपोल । पोलिता । पुपुलिषति, पुपोलिषति । पुलः—इगुपधलक्षणः कः । पुलकः—क्वुन् । पुलिनम्—इनः, गुणाभावः । पुलाकः—बलाकादयश्चेत्याकनन्तो निपातितः । अयं चुरादावपि । तुदादावपीति क्षीरस्वामी ।

५३२ । कुल, संस्थाने बन्धुषु च ।

( To accumulate, to be of kin )

संस्थानं संघात इति स्वामी । क्वचित्तु सन्तान इति

पठ्यते। सन्तानो विजातीयैरनवच्छिन्नः प्रवाहः। बन्धुशब्देन तद्व्यापारः सम्बन्धोऽभिधीयते। कुल्, सेट्, अक, प। कोलति इत्यादि पोलतिवत्। कुलस्यापत्यं—कुलीनः, खः। कुल्यः—यत्। कौलेयः ढञ्। ब्राह्मणकुलीनः। माहाकुलीनः। माहाकुलः—अञ्। माहाकुलीनः—खञ्। 'दुष्कुलात् ढगिति ढक्—दुष्कुलेयः। खः—दुष्कुलीनः। कौलेयकः श्वा ढकञ्। अमुष्य कुलस्य भावः—आमुष्यकुलिका—मनोज्ञादिपाठात् वुञ्। 'आमुष्यायणे'त्यादिना षष्ठ्या अलुक्। स्वभावात् स्त्रीलिङ्गः। वुञ्—कौलकम्। निष्कुलाकरोति पशुम्—डाच्। नास्ति कुलमस्य—नकुलः। कुलकम्—श्लोकसंघातः, संज्ञायां वुन्। कुलशब्दात् कन् वा।

५२२। शल, हुल, पतॢ गतौ। ( To go, to fall )

पल, शल, पतॢ पथे च गताविति दुर्गः पठति। हुल, हिंसासंवरणयोश्चेति कश्चित्। अत्र मैत्रेयः—चकारोऽन्वाचये गतावस्य तावत्प्रयोगः। क्वचित्तु हिंसासंवरणयोश्चेति। क्वचित् पठ्यते—शल, स्खल, स्थल, पतॢ गतौ, हुल हिंसासंवरणयोश्चेति।

शल्, हुल्, पत् ( ॢ ) सेट्, अक, प। शल्—शलति। शशाल। शलिता। शालः। शाला। शल इति चलनसंवरणयोर्गतम्। हुल्—होलति इत्यादि।

पत्—पतति, प्रणिपतति। पततु। पतेत्। अपतत्। अपतिष्यत्। लिट्—पपात, पेततुः, पेतुः। पेतिथ। पतिता। पतिष्यति। अपतिष्यत्। पत्यात्। (८)लुङ्—अपप्तत्, अपप्तताम्, अपप्तन्। प्रण्यपप्तत्। भावे—पत्यते। अपाति। सन्—पिपतिषति, पित्सति। पनीपत्यते। पनीपतीति, पनीपत्ति। पातयति—ते। अपीपतत्,—त।

पतित्वा। उत्पत्य । पतितुम् । पिपतिषुः, पित्सुः । पिपतिषा, पित्सा। णिच्—पातयितुम् । पतनम् । णिच्—पातनम् । पातकः । अनु—अनुपातः । अभि—अभिपतनम् । आ—आपतनम्,—उपस्थितिः। उत्—उत्पतनम्,—उड्डयनम् । उत्पातः । नि—निपातः । णिच्—निपातनम् । सम्पातः । प्रपातः—धारा, जलप्रपातः । निपतनम्—अधःपतनम् । प्रनि—प्रणिपातः ।

पतापतः—चरिचलीत्यादिना अक्, द्विर्वचनम् । उत्पतिष्णुः—इष्णुच् । पतनः—युच् । पातुकः—उकञ् । पतत्यनेनेति पत्रम्—करणे ष्ट्रन् । सर्वपत्रं व्याप्नोतीति सर्वपत्रीणः—सारथिः । 'तत्सर्वादे'रित्यादिना खः । सपत्राकरोति—मृगशरीरे शरं प्रवेशयतीत्यर्थः । निष्पत्राकरोति—सपत्रं शरमपरभागे निष्क्रामयतीत्यर्थः । 'सपत्रनिष्पत्रादतिव्यथने' इति डाच् सर्वत्र । गेहं गेहम् अनुप्रपत्य आस्ते—गेहं गेहम् अनुप्रपातमास्ते । आपततीति—आपत्यः, 'अघ्न्ये'ति यत्-। पतितः—क्तः । पापतिः—सस्विवहीत्यादिना यङन्तेभ्यः किकिनोरन्यतरः । सन्निपातः—घञ् । तस्य शमनं कोपनं वा सान्निपातिकम्—ठक् । पतङ्गः—'पतेरङ्ग' पक्षिणी'त्यङ्गच् । पतत्रम्—पतेरत्रन्निति अत्रन् । पतत्रिः—'पतेरत्र् चे'ति त्रिन् प्रत्ययः अकाच् । पातालम्—'पतिचण्डालाभ्यामालचन्' इति आलच् वृद्धिश्च । पताका—पिनाकादित्वात् आकप्रत्ययान्तः । पताकी—इनिः । पन्थाः—'पतेस्थ च'ेतीनप्रत्ययः तकारस्य थकारः । पन्थानौ, पन्थानः । विपथम् । कापथम्—'कापथ्यक्षयो'रिति कुशब्दस्य कादेशः । त्रयाणां पन्थाः—त्रिपथम् । विपथा, अपथा नगरी । उत्पथः—देशः । पथोऽनपेतं—पथ्यम् । पथि साधु—पाथेयम् । पन्थानं गच्छतीति—पथिकः । पथिकी । पन्थानं नित्यं गच्छतीति—

पान्थ: शतपथमधीते वेद वा—शतपथिकः। ङीष्—शतपथिकी। पन्थानं पन्थानं प्रति—प्रतिपथम्। पथोऽभिमुखम्—प्रतिपथम्। प्रतिपथमेति—प्रतिपथिकः, प्रातिपथिकः। सर्वपथं व्याप्नोति—सर्वपथीनः पथिकः। उत्तरपथेनाहृतं गच्छतीति वा—औत्तरपथिकः। स्थलपथेनाहृतं—स्थालपथिकः, इत्यादि। देवपथ इव—देवपथः, कन् लुक् च। अयं कथादावपि।

५३४। क्वथे, निष्पाके। ( To boil )

क्वथ्, (ए) सेट्, अक, प। क्वथति। चक्वाथ। क्वथिता। (ए) अक्वथीत् इत्यादि। क्वाथः—सरसनिर्य्यासः।

४३५। पथे, गतौ। ( To move, to go )

पथ् ( ए ) सेट्, अक, प। पथति। पपाथ, पेथतुः। ( ए ) अपथीत्। पथिता। पथः। पाथः। पथि गताविति चुरादौ।

५३६। मथे, विलोड़ने। ( To churn )

मथ् ( ए ) सेट्, सक, प। मथति। ममाथ, मेथतुः। (ए) अमथीत्। मथिता। मथः। दण्डमाथं धावति—दाण्डमाथिकः। माथः। मन्थाः—दण्ड इव रज्जुरित्यर्थः।

५३७। टु वम, उद्‌गिरणे। ( To vomit )

उद्‌गिरणम् अन्तर्गतस्य मुखान्निःसारणम्। वम् (टु) सेट्, सक, प। वमति। ववाम। ववमतुः। ववमिथ। वम्यात्। अवमिष्यत्। ( ववमतुः, वेमतुः—वोप ) 'वेमुश्च केचित्'—चण्डी। वमिता। वमिष्यति। अवमीत्, अवमिष्टाम्, अवमिषुः। विवमिषति। वंवम्यते, वँव्वम्यते, वंवमीति, वँव्वमीति, वंवन्ति, वँव्वन्ति।

* भागवृत्तौ त्वनयोर्विकल्पेन वेमतुरित्युदाहृतं, तद्भाष्यादिषु चिरन्तनेषु ग्रन्थेषु क्वापि न दृष्टम्।

वंवान्तः । वंवांहि । अवंवन् । वमयति,—ते ; वामयति,—ते । अवीवमत्,—त । वम्यते । अवामि ।

वमः—अच् । वामः—घञ् । वान्तः । वान्तिः । वान्तवान् । (टु) वमथुः—अथुच् । (ङ) वमित्वा, वान्त्वा । भावारम्भयोः—वान्तम्, वमितम् । वमनम् । वमितव्यम् । उद्—उद्वमनम् । विवमिषा । विवमिषुः ।

५३८ । भ्रमु, चलने । ( To roam about )

भ्रम् (उ) सेट्, सक, प । भ्रमति, भ्राम्यति, भ्राम्यति इत्यादि । बभ्राम, बभ्रमतुः, भ्रेमतुः ; बभ्रमुः, भ्रेमुः । बभ्रमिथ, भ्रेमिथ । भ्रमिता । भ्रमिष्यति । लुङ्—अभ्रमीत्, अभ्रमिष्टाम्, अभ्रमिषुः । आशीः—भ्रम्यात् । अभ्रमिष्यत् । बिभ्रमिषति । बम्भ्रम्यते, बम्भ्रमीति । बंभ्रन्ति । बम्भ्रान्तः । बम्भ्रांहि । अबम्भ्रन् । भ्रमयति । ( केषाञ्चिन्मते भ्रामयति ) । अबिभ्रमत् । भावे—भ्रम्यते । अभ्रमि । भ्रेमे । बभ्रमे ।

भ्रमः—घञ् । (उ) भ्रमित्वा, भ्रान्त्वा । संभ्रम्य । भ्रमितुम् । भ्रान्तः । भ्रमणः । भ्रमी—घिनुण् । भ्रमरः—'आर्त्तिचमि—' इति अरः । भ्रमलः—अक्षिरोगः । 'भ्रमेरचो—' कल उच्च । भ्रूः—'भ्रमेर्डूरि'ति डूः । भ्रुवौ, भ्रुवः । भ्रूर्नाम काचित्, तस्या अपत्यं—भ्रौवेयः । लेखाभ्रेयः—ढक् । अक्षिणी च भ्रुवौ च—अक्षिभ्रुवम् । भ्रूकुलम् । भ्रूभङ्गः, भ्रूकुंसः, भ्रुकुंसः, भ्रकुंसः । भ्रूकुटिः, भ्रुकुटि, भ्रकुटिः । परि—परिभ्रमणम् । उद्—उद्भ्रमणम् ।

५३९ । क्षर, सञ्चलने । ( To flow )

क्षर्, सेट्, अक, प । क्षरति । चक्षार, चक्षरतुः, चक्षरुः । चक्षरिथ । क्षरिता । अक्षरिष्यत् । क्षरिष्यति । अक्षारीत्, अक्षारिष्टाम्, अक्षारिषुः । क्षर्यात् । चिक्षरिषति । चाक्षर्यते ।

चाचरीति, चाचर्त्ति । चाचर्ह्टि । चर्य्यते । अचारि । अचाच: । चारयति,—ते । अचिचरत्,—त । चरित्वा । चरितुम् । चरित: । चर:—अच् । चार:—घञ् । चरेज: ७ अलुक् । प्र—प्रचरणम्, प्रच्युति: । अत्र चल सञ्चलन इति क्वचित् पठ्यते, तदपि चरिवत् ।

## आत्मनेपदिन: ।

५५४० । षह, मर्षणे । ( To forbear )

उदात्तोऽनुदात्तेत् । सह्, सेट्, सक, आ । सहते, परिषहते, विषहते, निषहते । सहताम् । सहेत । असहत, पर्य्यषहत, पर्य्यसहत । सेहे । सहिता, सोढ़ा । परिसोढ़ा । सहिष्यते, सहिष्ये । सहिषीष्ट । असहिष्ट, असहिषाताम्, असहिषत । सिसहिषते । सिसाहयिषति । साहह्यते । सासहीति, सासोढ़ि, परिषासोढ़ि । साषोढ़: । सासह्यि । साहयति,—ते । असीषहत्,—त । सह्यते । असाहि । पर्य्यसो[ षी ]सहत् ।

सह्यम्—यत् । साहयतीति—साहय:, 'अनुपसर्गाल्लिम्पे'—त्यादिना शप्रत्यय: । साह: । सह: । सर्वंसहा, वसुमती—'संज्ञायां भृतृवृजी'त्यादिना खच, 'अरुर्द्विषदि'ति मुम् । सर्वं सहतीति—सर्वंसह:—खच् । सहिष्णु:—इष्णुच् । सहन:—युच् । सासहि:—सहिवहीत्यादिना यङन्तेभ्य: किकिनोऽन्यतर: । सहित्रम्—करणे इत्र: । षट्—'सहे: षष् लुक् चे'ति सहे: षषादेश:, कनिनश्च लुक् । षषां पूरण:—षष्ठ: । षाष्ठ:—अञ् । षट् दन्ता अस्य षोड़न् । षोढ़ा—संज्ञायां विधावर्थे धाप्रत्यय: । सहित्वा, सोढ़्वा । सोढ़: । सोढ़ि: । सोढ़म् । सोढ़व्यम्, सहितव्यम् । सहनीय: । तुराषाट् । उत्—उत्साह: । परिसोढ़ा । परिसोढ़म् । साह्वान्, निपात: ।

५४१। रम, [रमु] क्रीड़ायाम्। (To amuse oneself, to play)

अनुदात्तोऽनुदात्तेत्। रम्, अनिट्, अक, आ। रमते। रमताम्। रमेत। अरमत। रेमे। रेमिषे। रेमिध्वे। रन्ता। रंस्यते। रंसीष्ट। अरंस्त, अरंसाताम्, अरंसत। रिरंसते। रंरम्यते। रंरन्ति, रंरतः। रंरंसि। रंरण्मि, रंरण्मः। रंरहि। अरंरन्। रमयति,—ते। अरीरमत्,—त। रम्यते। अरामि।

उपसर्गयोगात्—विरमति, आरमति, परिरमति—'व्याङ्परिभ्यो रम' इति परस्मैपदम्। सकर्मकत्वे—उपरमति, 'उपाच्चे'ति। अन्यत्र—उपरमति,—ते, 'विभाषाकर्मका'दिति। विरराम, विरेमतुः, विरेमुः। विरेमिथ, विररन्थ। लुङ्—व्यरंसीत्, व्यरंसिष्टाम्, व्यरंसिषुः।

रमः—अच्। रामः—णः, घञ् वा। रमणः—नन्द्यादित्वात् ल्युन्तात्युः। स्तम्बेरमः—'स्तम्बकर्णयोरमिजपो'रिति स्तम्ब—उपपदे अच्। 'हस्तिसूचकयोरि'ति वचनात् हस्तिविषयश्चायम्। तत्पुरुषे कृतीति अलुक्। रन्तिः। रत्नम्—'रमेस्तश्च'ेति नप्रत्ययस्तकारश्चान्तादेशः। सुरतः—कामः 'सौ रमि क्तः' इति क्तः। सूरतः—कृपावान् 'रमेः' पूर्वपदस्य च दीर्घः' इति क्ते दीर्घः। रथः—'हनिकुषी'त्यादिना थन्। रथ्या, वथकव्या—समूहार्थे यत्कव्यौ, स्वभावात् स्त्रीलिङ्गता। रथस्येदं रथ्यं—यत्। आश्वरथम्। रथं वहति—रथ्यः, वहतीत्यर्थे यत्। रथाय हिता—रथ्या।

रन्त्वा, (उ) (रमित्वा, रन्त्वा]। रतः। रतिः।—रत्य,—रम्य। रन्तुम्, रमणीयम्। अभि—अभिरामः। आ—आरामः। वि—विरामः,—घञ्। उप—उपरमः,—अप्। अति—रमतिः, स्वर्गः।

## परस्मैपदिन:।

### ५४२। षद्लृ, विशरणगत्यवसादनेषु।

( To breake, to go, to be weary )

अयं भ्वादिक्र्यादी चानुदात्ता उदात्तेत:। सद्, अनिट्, प। सीदति, प्रसीदति, निषीदति। सीदतु। सीदेत्। असदत्। ससाद, सेदतु:। सेदिथ, ससत्थ। सेदिव, सेदिम। सत्ता। सत्स्यति। असत्स्यत्। असीदत, न्यषीदत्। आशी:—सद्यात्। असदत्। सिषत्सति, निषिषत्सति। सासद्यते। सासदीति, सासत्ति। असास:। असासत्। सादयति,—ते। असीषदत्,—त। सद्यते। असादि।

सेदिवान्—क्वसु:। परिषत्—क्विप्। पर्षत्—पृषोदरादि:। परिषदा कृतं पारिषदकम्—'कुलालादिभ्यो वुञ्' इति वुञ्। परिषद इदं पारिषदम्—'पत्ताध्वर्य्युपरिषदश्चे'ति ञ:। परिषद्वल:—'रज:कृष्यासुतिपरिषदो वलच्' इति वलच्। परिषदं समवैति तत्र साधुर्वा—पारिषद्य:—'परिषदो ण्य'इति योगाभ्यां समवैति तत्र साधुरिति विषये ण्य:। दिविषत्—क्विप्। 'तत्पुरुषे कृति बहुल'मिति अलुक्, बहुलग्रहणात् लुकि—द्युषत् 'दिव उदि'ति पदत्वे उत्वम्। सद:। साद:। निषीदत्यस्मिन् पापमिति—निषाद:, अधिकरणे घञ्। निषादस्यापत्यं—नैषादकि:। सद्रु:—'दाधेट्सिशदसदो रु:' इति ताच्छील्यादौ रु:। निषद्या—क्यप्। सद:—असुन्। सत्रम् त्रप्रत्यय:। पापं चिकीर्षति—सत्रायते—,'सत्रकक्षे'त्यादिना कष्टचिकीर्षायां क्यङ्। कष्टं पापं सत्रादयो वृत्तिविषये पापार्था इत्युक्तम्। निषद्वर:—कामकर्दमौ, 'नौ सदे'ति वरच्। सादि:—'वीपिवदी'त्यादिना इञ् प्रत्यय:। सद्म मनिन्। सूकरसद्मन इमे—सौकरसद्मा:। 'नान्तस्य' टिलोप:। तुदादौ चुरादौ चायम्।

सत्त्वा । प्रसद्य । सन्नः । सत्तिः । सदनम् । सत्तुम् । अव —अवसादः । वि—विषादः । प्र—प्रसादः । आ—आसत्तिः । णिच्—आसादितः । उप—उपसादः । नि—निषण्णः ।

५४३ । शद्लृ, शातने । ( To perish gradually )

अत्र मैत्रेयः—शदलृ, विशातने । विशीर्णतायां वर्त्तते, शातनं विषयभावेन निर्दिश्यते प्रसिद्धत्वादिति । शद् (लृ) अनिट्, अक, प । शीयते । शीयताम् । अशीयत । शीयेत । ( शपि आत्मने ) शशाद, शेदतुः । शशत्थ, शेदिथ । शेदिव । शत्ता । आशीः— शद्यात् । शत्स्यति । अशदत् । अशत्स्यति । शाशद्यते । शाशदीति, शाशत्ति । शातयति,—ते । अशीशतत्,—त । शात्यते । अशादि । शन्नः । शत्त्वा, आशद्य । शत्तुम् । गतौ तु —शादयति गोपालक इति तत्वं न भवति ।

घञ्—शादः । शाद्वलम्—'नड्शादाड्ड्वलजि'ति वलच् । शद्रुः, सद्रुवत् । शत्रुः—'रुशदिभ्यां त्रुन्नि'ति त्रुन् ।

५४४ । क्रुश, आह्वाने रोदने च । ( To call out, to cry)

सदादयस्त्रयोऽनुदात्ता उदात्तेतः । क्रुश्, अनिट्, प । क्रोशति । चुक्रोश, चुक्रुशतुः चुक्रुशुः । चुक्रोशिथ । चुक्रुशिव, चुक्रुशिम । क्रोष्टा । क्रोक्ष्यति । क्रोशेत् । क्रुश्यात् । अक्रुक्षत्, अक्रुक्षताम् । चुक्रुक्षति । चोक्रुश्यते । चोक्रुशीति, चोक्रोष्टि । चोक्रुड्ढि । लङ्—अचोक्रोट् । क्रोशयति,—ते । अचुक्रुशत्, —त । क्रुश्यते । अक्रोशि । क्रुष्टः । क्रुष्ट्वा । क्रोष्टुम् । आक्रोशकः—'देविक्रुशोश्चोपसर्ग' इति तच्छीलादौ वुञ् । हे क्रोष्टो—'सितनिगमी'त्यादिना तुन् । क्रोष्टा, क्रोष्टारौ, क्रोष्टून्, क्रोष्ट्रा, क्रोष्टुना इत्यादि । स्त्रियां—क्रोष्ट्री,—'स्त्रियाञ्चे'ति तृज्वद्भावः । क्रोशः । क्रुशः । आक्रोशः । उत्क्रोशः । आक्रुष्टः—वर्त्तमाने क्तः ।

५४५। कुच, सम्पर्चनकौटिल्यप्रतिष्टम्भविलेखनेषु।

( To connect, to be crooked, to oppose, to mark with lines )

एतदादयः कसन्ता उदात्ता अनुदात्तेतः। कुच्, सेट्, प। कोचति। चुकोच। कोचिता। अकोचीत्। ण:—कोचः।

५४६। बुध, अवगमने। ( To inform )

बुध्, सेट्, सक, प। बोधति। बुबोध। बोधिता ( बोद्धा—वोप)। अबोधीत्। बुध्यात्। बुबुधिषति,बुबोधिषति। बोबुध्यते। बोबुधीति, बोबोद्धि। हि—बोबुद्धि। बोबुधानि। लङ्—अबोभोत्। बोधयति। अबूबुधत्। बुध्यते। अबोधि। बोधित्वा, बुधित्वा, संबुध्य। बुधितमनेन, बोधितमनेन।

५४७। रुह, बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च।

( To grow from seed, to be produced, to be born )

अनुदात्ता उदात्तेतः। रुह जन्मनि प्रादुर्भाव इति दुर्गः पठति। रुह्, अनिट्, अक, प। रोहति। रोहतु। अरोहत्। रोहेत्। रुरोह, रुरुहतुः। रुरोहिथ। रुरुहिव। रोढ़ा। रोच्यति। अरोच्यत्। आशीः—रुह्यात्। अरुचत्, अरुचताम्, अरुचन्। रुरुचति। रोरुह्यते। रोरुहीति, रोरोढ़ि। रोरुढ़ः। रोरोचि। हि—रोरुढ़ि। लङ्—अरोरोट्, अरोरूढ़ाम्। रोहयति। अरूरुहत्। रोपयति। अरूरुपत्। रुह्यते। अरोहि।

आरूढ़ो वृचम्, आरूढ़ो वृक्षः—'गत्यर्थाकर्मके'त्यादिना कर्त्तृकर्मणोः क्तः। रोहितिः—'हस्रुहिपुविभ्य' इति इतिप्रत्ययः। रोहितः, लोहितः—'रुहेरितश्च लो वेति इतः' पक्षे रेफस्य लत्वम्। अलोहितो लोहितो भवति—लोहिता-

यति, लोहितायति—'लोहितादिडाज्भ्यः क्यष्' च्व्यर्थविषया-ऽच्व्यन्तात् भवत्यर्थे क्यष्, 'वा क्यष्' इति पक्षे तङ्। लोहित एव लोहितको मणिः। लोहितकं सुखं कोपेन। स्त्रियां—लोहिनिका, लोहितिका। लोहितेन रक्तः—लोहितकः, पटः। लोहितिका, पटी। रोहिषो मृगभेदः। स्त्रियां—रोहिषी। रूढ़ा। आरुह्य। रूढिः। रोहणम्। रोहः। रोढ़व्यम्। रोहणीयम्। रोह्यम्। अधि—अधिरोहणम्। आ—आरोहणम्। णिच्—आरोपणम्। आरोपितः। आरोपः। अव—अवरोहणम्। प्र—प्ररोहणम्,—उत्पत्तिः।

५४८। कस, गतौ। ( To go )

कस, सेट्, सक, प। कसति। चकास, चकसतुः, चकसुः। कसिता। कसिष्यति। अकासीत् अकसीत्। चिकसिषति। चनीकस्यते। चनीकसीति, चनीकस्ति। चनीकधि। अचनीकत्। कासयति। अचीकसत्। कस्वरः—वलच्। शब्दकुत्सायां कसत इति गतम्। कुञ्जादय उदात्ता उदात्तेतः। गुहिस्त्वनुदात्तः। कासः—घञ्। वि—विकासः। विकसितम्। णिच्—निष्कासितः।

वृत्। ज्वलादयो वृत्ता इत्यर्थः।

## उभयपदिनः।

५४९। हिक्क्, अव्यक्तशब्दे।

( To make any indistinct sound )

एतदादयो गूहत्यन्ता उदात्ता स्वरितेतः। हिक्क्, सेट्, अक, उ। हिक्कति,—ते। हिक्कतु—ताम्। हिक्केत्, हिक्केत। अहिक्कत्, अहिक्कत। जिहिक्क—क्के। हिक्किता। आशीः—

हिक्क्यात्, हिक्किषीष्ट । हिक्किष्यति,—ते । अहिक्कीत्, अहिक्किष्ट । जिहिक्किषति,—ते । जेहिक्क्यते । जेहिक्ति । हिक्कयति,—ते । अजिहिक्कत् । हिक्क्यते । अहिक्कि । अ—हिक्का ।

५५० । अनुचु, गतौ याचने च । (To go, to beg)

अनुच्, सेट्, सक, उ । अञ्चति,—ते इत्यादि अञ्चु गतिपूजनयोरित्यत्रैवोदाहृतम् । आनञ्च, आनञ्चे । अञ्चिचिषति । अञ्चिचिषते । पूर्वत्र गताविति पाठः क्रियाफलस्य कर्त्तृगामित्वे परस्मैपदार्थः ।

५५१ । टु याचृ, याच्ञायाम् । ( To beg )

याच् ( टु, ऋट ) सेट्, सक, उ । लट्—याचति,—ते । लोट्—याचतु,—ताम् । लङ्—अयाचत्, अयाचत । विधि—याचेत्, याचेत । लिट्—ययाच, ययाचतुः, ययाचुः । ययाचिथ, ययाचथुः, ययाच,—ययाचिव, ययाचिम । ययाचे, ययाचाते, ययाचिरे । ययाचिषे, ययाचाथे, ययाचिध्वे । ययाचे, ययाचिवहे,—महे । लुङ्—अयाचीत्, अयाचिष्टाम्, अयाचिषुः । अयाचिष्ट, अयाचिषाताम्, अयाचिषत । याचिता । याच्यात्, याचिषीष्ट । यियाचिषति,—ते । यायाच्यते । यायाचीति, यायाक्ति । याचयति—ते । ( ऋट ) अययाचत्,—त । याच्यते । अयाचि । दुहिवत् द्विकर्मकव्यवस्था ।

( टु ) याचथुः—अथुच् । याचितम् । याचितेन निर्वृत्तं याचितकम्—कन् । याच्ञा—नङ् । याच्यम्—'यजयाचे'ति सूत्रेण कुत्वनिषेधः । याचित्वा । संयाच्य । याचनम् (याचितुम्—वोप) याचमानः । याचन् । न याचत इति—अयाची, णिनिः । "ययाच चापमुदायुधं"मिति माघयमकम् ।

५५२ । रेटृ, परिभाषणे । ( To speak )

रेट्, ( ऋट ) सेट्, सक, उ । रेटति,—ते । रिरेट,—टे ।

रेटिता। रिरेटिषति,—ते। रेरेट्यते। रेरेट्टि। रेटयति,—ते। (ऋट) अरिरेटत्। रेटित्वा। रेटितः। अनेनैव कर्करेटुकरेटू व्युत्पादितावमरटीकायाम्।

५५३। चते, चदे, याचने च। ( To speak, to beg )

चकारात् परिभाषणे च। चत्, चद् (ए) सेट् सक, उ। चत्—चतति,—ते। चतामि, चते। चचात, चेततुः। चेते. चेचाते। चतिता। चतिष्यति,—ते। अचतिष्यत्,—त। चत्यात्, चतिषीष्ट। अचतीत्, अचतिष्ट। चिचतिषति,—ते। चाचत्यते। चाचतीति, चाचत्ति। चातयति,—ते। अचीचतत्,—त। चतित्वा। चतितः। चत्यम्। चतुरः—मन्दिवाशी'-त्यादिना उरच्। न चतुरः अविद्यमाना वा चतुरा यस्य—अचतुरः, तस्य भावः—आचातुर्य्यम्—ष्यञ्। चत्वारः—उरन् [वार्]। चतुर्णां पूरणः—चतुर्थः, तुर्य्यः, तुरीयः, चतुष्टयः,चतुष्टये, चतुष्टया (बहु)। चतुष्टयी। चतुःकरोति, चतुष्करोति। चतुष्कपालम्। चतुष्पात्। अविद्यमानानि विशिष्टानि शोभमानानि चत्वारि यस्य सः—अचतुरः,विचतुरः, सुचतुरः—'अचतुरे'त्यादिना बहुव्रीहौ अचि निपात्यते। त्रिचतुराः, उपचतुराः। चात्वालः—वालञ्। चत्वरम्—'छित्वरचत्वरे'ति ष्वरचि निपात्यते। चद्—चदते इत्यादि चततिवत्।

५५४। प्रोथृ, पर्य्याप्तौ ( To be full )

पर्य्याप्तिः सामर्थ्यं परिपूर्णतेति गोविन्दभट्टः। प्रोथ्, (ऋट्) सेट्, अक, उ। प्रोथति-ते। पुप्रोथ,थे। पुप्रोथिथ, पुप्रोथिषे। प्रोथिता। प्रोथिष्यति,—ते। अप्रोथीत्, अप्रोथिष्ट। अप्रोथिष्यत्,—त। पुप्रोथिषति,—ते। पोप्रोथ्यते। पोप्रोथीति, पोप्रोत्ति। प्रोथयति,—ते। (ऋट) अपुप्रोथत्,-त। प्रोथः—घञ्। भट्टभास्करमते हिंसार्थोऽप्ययम्।

५५५ । मिदृ, मेदृ, मेधाहिंसनयोः ।

( To understand, to kill )

अयं पाठो दिवादीनाम् । मिदृ, मेदृ, सेट्, उ । मिदृ—मेदति,-ते । मिमेद, मिमिदे । मेदिता । मेदिष्यति,-ते । अमेदीत्, अमेदिष्ट । मिमिदिषति,-ते, मिमेदिषति,-ते । मेमिद्यते । मेमेत्ति, मेमिदीति । मेदयति,—ते । (ऋ) अमिमेदत्, त । मिदित्वा, मेदित्वा । मिन्नः । मेदितः । मेदृ—मेदति,-ते इत्यादि । मिमेदतुरित्यादौ तु क्ङितीरिकारश्रवणं विशेषः । मेदत इति भ्वादौ स्नेहने गतः ।

५५६ । मेधृ, सङ्गमे च । (To know, to kill, to meet)

मेधृ, सेट् अक, उ । मेधति,—ते । मिमेध—धे । मेधिता । मेधिष्यति,—ते । गृहं मेधते—गृहमेधी । गृहमेधी देवतास्य—गार्हमेध्यम्, गृहमेधीयम् । 'ब्यावे'त्यादिना यत्, छश्च ।

५५७ । णिदृ, णेदृ, कुत्सासन्निकर्षयोः ।

( To ridicule, to reach )

निदृ, नेदृ ( ऋ ) सेट्, अक, उ । नेदति इत्यादि मिदृ मेदृवत् । प्रणिदति निन्दतीति कुत्सायां गतम् ।

५५८ । शृधु, मृधु, उन्दने । ( To moisten )

शृध्, मृध् ( उ ) सेट्, सक, उ । शर्धति,—ते । शशर्ध, शशृधतुः, । शशृधे । शर्धिता । शिशर्धिषति,—ते । शरीशृध्यते । शरीशर्द्धि, शरीशृधीति । हि—शरीशृद्धि । लङ्—अशरीशर्त् । सि—अशरीशः । शर्धयति । अशशर्धत्, अशीशृधत् । (उ) शर्धित्वा, शृद्ध्वा । शृद्धः । एवं मर्धति—ते इत्यादि ।

५५९ । बुधिर्, बोधने । ( To know, to think )

बुध् ( इर् ) सेट्, सक, उ । बोधति,—ते । बुबोध, बुबुधे ।

बोधिता । ( इर् ) अबुधत्, अबोधीत्; अबोधिष्ट इत्यादि । बोधतीति ज्वलादिः परस्मैपदी अवगमने गतः ।

५६० । उ बुन्दिर्, निशामने । ( To see )

बुन्द् ( उ, इर् ) सेट्, सक, उ । बुन्दति,—ते । बुबुन्द,—न्दे । बुन्दिता । (इर्) अबुन्दत्,अबुन्दीत्,अबुन्दिष्ट । बुबुन्दिषति,—ते । बोबुन्द्यते । बोबुन्दीति, बोबुन्त्ति । हि—बोबुन्द्धि । बुन्दयति,—ते । अबुबुन्दत्—त । बुद्यते । अबुन्दि । बुन्दिता, बुन्त्वा । बुन्नम्—नलोपे 'रदाभ्यामिति निष्ठानत्वम् । बुद्बुदः— 'घञर्थे कविधानम् आदीनां के द्वे भवत'इति द्विर्वचनम् । [बुन्धिर,बोध]

५६१ । वेणृ, गतिज्ञानचिन्तानिशामनवादित्रग्रहणेषु ।

(To go, to know, to consider, to see, to play on an instrument, to take )

वादित्रग्रहणं नाम वादित्रस्य वाद्यभाण्डस्य वादनार्थं ग्रहणमिति चौरस्वामी । वेण् ( ऋृ ) सेट्, उ । वेणति,—ते । विवेण, विवेणे । वेणिता । अवेणीत्, अवेणिष्ट । विवेणिषति,—ते । वेवेण्यते । वेवेण्टि, वेवेणीति । वेणयति ( ऋृ ) अविवेणत् । वेणिः—इन् । वेणी—ङीष् । 'कृदिकारा'दिति ङीष् वा ।

५६२ । खनु, अवदारणे । ( To dig )

खन् ( उ ) सेट्, सक, उ । खनति,—ते । खनतु,—ताम् । अखनत्—त । खनेत्, खनेत । चखान, चख्ने ; चख्नतुः, चख्नाते ; चखनुः, । चख्निरे । खनिता । खनिष्यति,—ते । आशीः—खन्यात्, खायात्, खनिषीष्ट । अखनीत्, अखानीत्, अखनिष्ट । कर्मणि—खायते, खन्यते । अखानि । चिखनिषति,—ते, । चाखायते,चङ्खन्यते । चङ्खनीति, चङ्खन्ति । णिच्—खानयति,—ते । अचीखनत्—त ।

( उ ) क्त्वा—खनित्वा, खात्वा। निखाय, निखन्य। खातः। खातवान्। खातिः। खेयम्—'ई च खन' इति क्यपि ईकारान्तादेशे चाद्गुणः। खनकः, खनकौ,—'शिल्पिनि ष्वुन्' इति ष्वुन्। परितः ; खाता—परिखा 'अन्येष्वपि दृश्यते' इति कर्मणि डः। खायते अत्र, अनेनेति वा—खनः, करणाधिकरणयोर्घः। खनित्रम्—करणे इत्रः। आखानः—घञ्। आखः—डः। आखरः—'डरो वक्तव्य' इति डरः। आखनिकः—'इको वक्तव्य' इति इकः। आखनिकवकः—इकवकः। आखादयः खनित्रवचनाः। परिखा भवेदस्मिन्, अस्य वा—परिखेयं, स्थलम्। आखनतीति—आखुः। मुखम्—'डित् खनी मुट् चोदात्त' इत्यच् प्रत्यये डित्त्वाट्टिलोपः, धातोर्मुडागमश्च। मुखे भवं—मुख्यम्, दिगादित्वात् यः। मुखमिव मुख्या—'शाखादिभ्यो य' इति भवार्थे यः। मुखतोभवं—मुखतीयम्। परिमुखं भवं पारिमुख्यम्, परिमुखं वर्त्तते—पारिमुखिकः, सेवकः। मुखस्य सादृश्यं—यथामुखं, प्रतिबिम्बम्। समं मुखं—सम्मुखं, समस्यान्तलोपः। यथामुखं दर्शनः—यथामुखीनः, आदर्शादिः। सम्मुखस्य दर्शनः—सम्मुखीनः। सुमुखा—'नखमुखात् संज्ञाया' मिति स्वाङ्गलक्षणस्य ङीषो निषेधात् टाप्। असंज्ञायान्तु सुमुखी, सुमुखा इत्युभयं भवति।

५६३। चीव्. आदानसंवरणयोः। ( To take, to wear )

चीव् (ऋ) सेट्, सक, उ। चीवति—ते। चिचीव, चिचीवे। चीविता। चिचीविषति,—ते। चेचीव्यते। चीवयति। (ऋ) अचिचीवत्। चीवरम्—'छित्वरे' त्यादिना वरचि वलोपः। सञ्चीवरयते, भिक्षुः—चीवरमर्जयति परिधत्त इत्यर्थः। अयं चुरादौ च।

५६४ । चायृ, पूजानिशामनयोः ।

( To worship, to discern )

चाय् (ऋ) सेट्, उ । चायति,-ते । चचाय, चचाये । चायिता । अचायीत्, अचायिष्ट । चिचायिषति,-ते । चेकीयते । चेकयीति, चेकेति, चेकीतः । चाययति । (ऋ) अचचायत् । चायित्वा । अपचितः—निष्ठायामनिट्त्वम् चिभावश्च पक्षे निपात्यते । अपचायितम् । अपचितिः—क्तौ नित्यं चिभावः । चनः, अन्नम्—असुन् ।

५५६ । व्यय, गतौ । ( To go )

व्यय्, सेट्, सक, उ । व्ययति,-ते । वव्याय, वव्यये । व्ययिता । अव्ययीत्, अव्ययिष्ट । व्ययिष्यति,-ते । व्याययति,-ते । अविव्ययत्-त । विव्ययिषति,-ते । वाव्यय्यते । वाव्ययीति, वाव्यति । व्ययति इति वित्तत्यागे नित्यमात्मनेपदी । व्ययः—अच् । अप—अपव्ययः । मितव्ययी—णिनिः । अमितव्ययी । अयं चुरादावदन्तः ।

५६६ । दाशृ, दाने । ( To give )

दाश् ( ऋ ), सेट्, सक, उ । दाशति,-ते । ददाश,ददाशे । दाशिता । अदाशीत्, अदाशिष्ट । अदाशिष्यत्,-त । दिदाशिषति,—ते । दादाश्यते । दादाष्टि,दादाशीति । दाशयति,—ते । अददाशत् । दाशतेऽस्मै इति—दाशः सम्प्रदाने अच्-निपात्यते । पुरोदाश्यत इति पुरोडाशः, ( निपातः ) तत्सहचरितग्रन्थोऽपि पुरोडाशः । पुरोडाशस्य संस्कारको मन्त्रस्य मन्त्रः—पौरोडाशः । पुरोडाशस्य पौरोडाशस्य च व्याख्यानं तत्र भवं वा—पुरोडाशिकं, पौरोडाशिकम् ।

५६७ । भेषृ, भये । ( To fear )

भेष् (ऋ) सेट्, अक, उ । भेषति,—ते । बिभेष । बिभेषे ।

अभेषीत्। अभेषिष्ट। भेषिष्यति,—ते। भेष्यात्। भेषिषीष्ट। भेषिता। बिभेषिषति,—ते। वेभेष्यते। वेभेष्टि। वेभेषीति। भेषयति। (ऋ) अबिभेषत्।

५६८। भ्रेषृ, भ्लेषृ, गतौ। ( To go, )

भ्रेष्, भ्लेष् (ऋ) सेट्, सक, उ। भ्रेषति,-ते। बिभ्रेष, बिभ्रेषे। भ्रेषिता इत्यादि भेषवत्। भ्लेषिता इत्यादि भ्रेषवत्।

५६९। अस, गतिदीप्त्यादानेषु। (To go, to shine, to take )

अस्, सेट्, उ। असति,-ते। आस, आसे। आसीत्, आसिष्ट। असिता। असिसिषति,—ते। आसयति। आसिसत्। अष इत्येक इति चीरस्वामिमैत्रेयौ। शाकटायनस्तूभावपि।

५७०। स्पश, बाधनस्पर्शनयोः। (To distroy, to touch)

स्पर्शनं ग्रन्थनमितिस्वामी। स्पश्, सेट्, सक, उ। स्पशति, —ते। पस्पाश, पस्पशे। स्पशिता। अस्पाशीत्, अस्पशीत्। अस्पशिष्ट। पिस्पशिषति,—ते। पास्पश्यते। पास्पष्टि, पास्पशीति। यङ्लुगन्तादचि टाप्—पस्पशा। स्पाशयति। अपस्पशत्। (१) ग्रहणश्लेषयोरयं चुरादौ।

५७१। लष, कान्तौ। (To wish)

कान्तिरिच्छा। प्रायेणायमभिपूर्वकः। लष्, सेट्, अक, उ। लषति,—ते, लष्यति,-ते इत्यादि। लषतु-ताम्। लष्यतु-

---

(१) अत्र स्वामी—पष इत्येक इति, तेन पाषण्डः पाषाण इत्याह। दुर्गशाकटायनयोरप्ययमेव पाठः। पशुशब्दस्तु पशेर्व्युत्पादयिष्यते। पशेर्यङ्लुकि 'जपजभे'त्यादिना अभ्यासस्य नुकि पंपश्यते पंपशीति। पंपश्यति इति काष्ठादेः, दुःखायते इत्यर्थः। 'पस'इति दन्त्यान्तः सौत्रो धातुः। तस्य पसतीत्यादि।

ताम् । ललाष, लेषे । लेषिथ, लेषिषे । लषिता । लषिष्यति,-ते । अलषीत्, अलाषीत्, अलषिष्ट । अलषिष्यत्,-त । लष्यात् । लषिषीष्ट । लिलषिषति,-ते । लालष्यते । लालषीति, लालष्टि । लाषयति,-ते । अलीलषत्,-त । लष्यते । अलाषि । लषितः । लषित्वा, अभिलष्य । लषितुम् । लषणः—युच् । लाषुकः—'लषपते'त्यादिना उकञ् । विलाषी, अपलाषी—'अपे च लष' इति घिनुण् । अभि—अभिलाषः ।

५७२ । चष, भक्षणे । ( To eat )

चष्, सेट्, सक, उ । चषति,—ते, इत्यादि लषिवत् । चषकः —क्वुन् । चाषः—घञ् ।

५७३ । छष, हिंसायाम् । ( To kill )

छष्, सेट्, सक, उ । छषति,—ते, इत्यादि पूर्ववत् । चच्छाष, चच्छषतुरित्यादौ अभ्यासस्य जश्त्वम् 'जश्त्वचर्त्व-सेत्वतुकोः सिद्धं वक्तव्य'मित्यत्र यथासंख्यानाश्रयणात् एत्वाभ्यासलोपयोरपि चर्त्वस्य सिद्धत्वादादेशादित्वान्नैत्वाभ्यासलोपौ ।

५७४ । झष, आदानसंवरणयोः । ( To take, to cover )

झष्, सेट्, सक, उ । झषति,—ते इत्यादि लषिवत् । झषः—सोनः । अयं हिंसार्थः परस्मैपदिषु गतः ।

५७५ । भ्रक्ष, अदने । ( To eat )

भ्रक्ष्, सेट्, सक, उ । भ्लक्ष इति चीरस्वामी । भक्ष इति मैत्रेयः । भ्रक्षति,—ते इत्यादि । भ्लक्ष्—भ्लक्षति,—ते । बभ्लक्ष,—क्षे । भ्लक्षिता । बिभ्लक्षिषति,—ते । बाभ्लक्ष्यते । बाभ्लष्टि । हि—बाभ्लड्ढि । लङ्—अबाभ्लट् । भ्लक्षयति । अबभ्लक्षत् । योऽत्र भ्लक्ष इति केषाञ्चित् पाठः ।

५७६ । दाशृ, दाने । ( To give )

दास्, सेट्, सक, उ । दासति—ते । ददास, ददासे । दासिता इत्यादि दाशतिवत् । दासः ।

५७७ । माहृ, माने । ( To measure )

माह् ( ऋ ) सेट्, सक, उ । माहति,—ते । ममाह, ममाहे । माहिता । अमाहीत्, अमाहिष्ट । मिमाहिषति,-ते । मामाह्यते । मामाढ़ि । माहयति । अममाहत् इत्यादि ।

५७८ । गुहू, संवरणे । ( To cover, to hide )

अत्र संवरणं गोपनम्, आच्छादनम्, अपह्नवः । गुह् ( ऊ ) वेट्, सक, उ । गूहति,—ते । गूहतु,—ताम् । गूहेत्,—त । अगूहत्,—त । गूहिता, गोढ़ा ; गूहितासे, गोढ़ासे । जुगूह, जुगुहतुः । जुगूहिथ, जुगोढ़ । जुगुहे । जुगुहिषे, जुघुक्षे । गूहिष्यति,—ते ; घोक्ष्यति,—ते । आशीः—गुह्यात्, गूहिषीष्ट, घुक्षीष्ट । लुङ्—अगूहीत्, अघुक्षत् ; अगूहिष्टाम्, अघुक्षताम् । अगूहिषुः, अघुक्षन् । अगूहिष्ट, अगूहिषाताम्, अगूहिषत । अगूढ़, अघुक्षत ; अगूक्षाताम्, अघुक्षन्त । अगूहिष्वहि, अगुह्वहि, अघुक्षावहि । कर्म्मणि—गुह्यते । अगूहि । जुघुक्षति, —ते । जोगुह्यते । जोगुहीति, जोगोढ़ि । गूहयति । [ अजुगूहत् ऊदिति तपरकरणात् णौ चङि उपधाह्रस्वस्य बाधेति केचित्] अजूगुहत् ।

गूहित्वा, गुहित्वा, गूढ़्वा । गूहितुम्, गोढ़ुम् । गूढ़ः । गूहनम् । गूहनीयम् । गूहमानः । गुह्यं—क्यप् । पचे—गोह्यम्, ण्यत् । काकेभ्यो गुह्यन्त इति—काकगुहास्तिलाः । गुहते अत्र,अनया इति वा—गुहा,'गिर्य्योषध्यो'रित्यङ् । अन्यत्र—गूढ़िः । उप—उपगूहनम्,—आलिङ्गनम् । "तरङ्गहस्तैरुपगूहतीव ।" रघु १४।६३ । नि—निगूहनम्—गोपनम् ।

## अथाजन्ता उभयपदिनः।

५७९। श्रिञ्, सेवायाम्। ( To serve )

उदात्तः। श्रि (ञ) सेट्, सक, उ। श्रयति,—ते। श्रयतु,—ताम्। श्रयेत्,—त। अश्रयत्—त। शिश्राय, शिश्रियतुः, शिश्रियुः। शिश्रयिथ, शिश्रियथुः, शिश्रिय। शिश्राय, शिश्रय; शिश्रियिव,—म। शिश्रिये इत्यादि। श्रयिता। श्रयिष्यति,—ते। श्रीयात्,श्रयिषीष्ट। लुङ्—अशिश्रियत्,—त। कर्म्मणि—श्रीयते। अश्रायि। सन्नादिषु चिण्वदिड् वा। सन्—शिश्रयिषति,—ते; शिश्रीषति,—ते। यङ्—शेश्रीयते। शेश्रयीति, शेश्रेति। णिच्—श्राययति। अशिश्रयत्। आ—आश्रित्य। श्रित्वा। श्रयितुम्। श्रितः। काष्टश्रितः।

श्रायः—घञ्। उत्—उच्छ्रायः। विश्रयी—ताच्छीलिक इनिः। श्रेणिः—'वहिश्रिश्रुयुद्रुग्लाहात्वरिभ्यो नित्' इति निः। श्रेणीकृताः—च्विः। क्विप्——श्रीः, श्रियौ, श्रियः। श्मश्रुः—'श्मनि श्रयतेड्डुन्' इति डुन्। श्मश्रुणः—पामादित्वान्नः। श्रितवान्। श्रयणम्। श्रयः। श्रयिता। श्रयितव्यम्। श्रयणीयम्। प्र—प्रश्रयः। सम् आ—समाश्रयः। आ—आश्रयः। अधि—अधिश्रयणम्।

५८०। भृञ्, भरणे। ( To fill, to support )

एतदादयो नयत्यन्ता अनुदात्ता उभयपदिनः। भृ (ञ) अनिट्, सक, उ। भरति,—ते। भरतु,—ताम्। भर,—स्व। अभरत्,—त। भरेत्,—त। लिट्—बभार। बभ्रे। बभ्रतुः। बभ्राते। बभ्रुः। बभ्रिरे। बभर्थ। बभृषे। बभार, बभर। बभ्रे। बभृव। बभृवहे। भर्त्ता। आशीः—भ्रियात्, भृषीष्ट।

लुङ्—अभार्षीत्, अभृत ; अभार्ष्टाम्, अभृषाताम् ; अभार्षुः, अभृषत। भरिष्यति,—ते। कर्म्मणि—भ्रियते। अभारि। सन् —बुभूर्षति,—ते ; बिभरिषति,—ते। बेभ्रीयते। बर्भरीति, बर्भर्त्ति। एवं रिकरीपोरपि। हि—बर्भृहि। लङ्—अबर्भः। सन्—बर्भरिषति। भारयति,—ते। अबीभरत्,—त। ण्यन्तादण्यन्ताच्च कर्म्मणि स्यसिजादिषु चिण्वत् इड्वत्—इड्वा— अभारयिष्यत, अभारिष्यत, अभरिष्यत इत्यादि। भृत्वा। भर्त्तुम्। भृतः।

तृन् [तृच्]—भर्त्ता, भर्त्तारौ, भर्त्तारः। ङीष्—भर्त्री। भर्त्तुर्भावकर्म्मणी—भातृम्। ग्रामभर्त्ता। जारं भरतीति—जारभरः, पचादिपाठादच्। भर्त्तव्यः, भरणीयः। क्यप्—भृत्यः। सम्भृत्यः। सम्भार्य्यः—समपूर्वात् विभाषेत्युक्तत्वात् क्यप्ण्यतौ। संज्ञायां ण्यदेव—भार्य्या,पाणिगृहीती। भृत्या—भरणविशेषः, स्त्रियां भावे क्यप्। क्तिन्—भृतिः। आत्मानं भरतीति—आत्मम्भरिः, एवम् उदरम्भरिः,—कुक्षिम्भरिः—इन्प्रत्ययान्तो निपातितः [ खिः ] विश्वम्भरः, विश्वम्भरा—संज्ञायां खच्। भारः—घञ्। वंशभारं वहति—वांशभारिकः। अपो भरतीति—अब्भ्रम्, मूलविभुजादित्वात् कः। अब्भ्रं करोति—अब्भ्रायते 'शब्दवैरे'त्यादिना क्यङ्। 'भृमृशी—'त्युः—भरुः,—भर्त्ता। बभ्रुः, 'कुर्भ्रश्चे'ति कुप्रत्यये द्वित्वम्। भरतः—'दृशियजी'ति अतच्। डुनुबन्धोऽयं जुहोत्यादौ। ऋकारान्तः क्र्यादौ।

५८१। हृञ्, हरणे। *To carry, to take, to steal, to destroy)

हृ ( ञ ) अनिट्, सक, उ। हरति,—ते। हरतु,—ताम्।

(१) हरणं—स्थानान्तरप्रापणं, स्वीकारः, स्तैन्यं, नाशनञ्च। यथा—भारं हरति ग्रामम्, अंशं हरति, सुवर्णं हरति चौरः, पापं हरतीति। विहारादावर्थान्तराभिधानं

अहरत्,—त । हरेत्,—त । जहार, जह्रतुः, जह्रुः । जहर्थ, जह्रथुः, जह्र । जहार, जहर ; जह्रिव,—म । जह्रे इत्यादि । हर्त्ता । हरिष्यति,—ते । आशीः—ह्रियात्, हृषीष्ट । हृषीढ्वम् । लुङ्—अहार्षीत्, अहार्ष्टाम्, अहार्षुः । अहृत, अहृषाताम्, अहृषत । कर्म्मणि—ह्रियते । अहारि । जिहीर्षति,—ते । जेह्रीयते । जर्हरीति, जरिहर्त्ति, जरीहर्त्ति, जर्हर्त्ति । हारयति । अजीहरत् । हार्य्यते । अहारि, अहारिषाताम्, अहारयिषाताम् इत्यादि ।

संहरन्ते राजान इत्यत्र हरतेर्हिंसार्थत्वे ऽपि 'न गतिहिंसे'ति निषेधस्य व्यवहारप्रतिषेध इति तङ् । पैतृकमश्वा अनुहरन्ते—गत्यनुकरणे आत्मनेपदम् । शतस्य व्यवहरति—कर्म्मणि षष्ठी । विक्षेपार्थे—शलाकां व्यवहरति ।

प्रतिहर्त्ता । तस्य भावकर्म्मणो—प्रातिहर्त्रम् । अवहारः—ग्रहः, ग्राहः—णः । अंशहरः—हरतेरनुद्यमने अच् । उद्यमने तु—भारहारः, कवचहरः । पुष्पाहरः—'आङि ताच्छील्य—' इति अच् । इन्—दृतिहरिः पशुः, नाथहरिः पशुः । हारा—कारावन्धने भिदादिपाठादङ् गुणो दीर्घत्वञ्च निपातनात् । संह्रियन्तेऽनेनात्मेति वा—संहारः । आह्रियन्तेऽस्मादूस इत्याहारः—घञ् । हरिः—इन् । प्रहिः कूपः, प्रहरतेः कूप इति प्रोपसृष्टादस्मादिकारप्रत्ययः, तत्र डिदित्यनुवृत्तेः टिलोपः ।

नुपसर्गपूर्वात् । तत्र यदा प्रापणार्थस्तदा 'अकथितञ्चे'ति द्विकर्मकोऽयम् ; तत्रास्त्वादयः प्रधानकर्मणि भवन्ति । ह्रियते भारो ग्रामम्, हर्त्तव्यः, हृतः, सुहर इति । कृद्योगलक्षणा षष्ठी द्वितीयावदुभयत्र भवति—हर्त्ता हारस्य ग्रामस्येति ; हर्त्ता हारस्य ग्राममिति । हर्त्तव्यो भारो ग्रामं देवदत्तेनेत्यत्र कर्तृकर्मणोः कृती'ति प्राप्ता षष्ठी 'कृत्यानां कर्त्तरि वे''ति उभयप्राप्तौ कृत्ये षष्ठी न भवति । स्पष्टञ्चैतत् कैयटादौ । हारयति भारं देवदत्तं यज्ञदत्तः, यज्ञदत्तेनेति वा । कर्मणि हार्य्यते भारं देवदत्तो यज्ञदत्तेन । हार्य्यते भारो देवदत्तेन यज्ञदत्तेनेति वा ।

हृदयम्—'वृहृञोर्युक्दुकौ चे'ति क्यप् दुगागमः। हृदयस्य प्रियं—हृद्यम्, यत्। हृदयस्य बन्धनो हृद्यो मन्त्रः। हृदये भवं—हार्दम्। हृदयं लिखतीति—हृल्लेखः। हृदयस्य लेखः—हृदयलेखः। घञन्ते लेखे न हृदादेशः। हृद्यम्, सौहृद-य्यम्—ष्यञ्। हृदयस्य लासः—हृल्लासः। हृद्रोगः, हृद्रय-रोगः। हृच्छोकः, हृदयशोकः। सुहृत्,दुर्हृत्—'सुहृद्दुर्हृदौ मित्रामित्रयो'रिति बहुव्रीहौ हृदयस्य हृदादेशः। मित्रा-मित्राभ्यामन्यत्र सुहृदयः, दुर्हृदयः। सुहृदो भावकर्मणी—सौहार्दम्। हृदयस्य भावकर्मणी—हार्दम्। हृदयमस्यास्तीति—हृदयालुः—आलुच्। हृदयी,हृदयिकः—इनिठनौ। हरिणः—इनच्। ङीष्—हरिणी। हरेणुः—एणुः, गन्धद्रव्यविशेषः। हरितः—तन्। हरिणी ब्राह्मणी—'वर्णादनुदात्तात्तोपधात्'इति ङीष्, तस्य नत्वम्। ङीबभावे टाप्—हरिता ब्राह्मणी। हरित्—'हृसृरुहियुषिभ्य इति'रिति इतिप्रत्ययः।

हृत्वा। आहृत्य। हृतः। हृतिः। हरणम्। हारः। हरः। हर्तुम्। हर्त्ता। हारी। हारकः। हरः। हर्त्तव्यम्। हरणीयम्। हार्य्यम्। वि—अति—व्यतिहारः, विपर्य्ययः। अनु-अनुहरणम्, अनुकरणम्। अप—अपहरणम्। अभि-अव—अभ्यवहारः,भोजनम्। वि-अव—व्यवहारः। आ—आहरणम्, आनयनम्। उद्-आ—उदाहरणम्। प्रति-उद्—आ—प्रत्युदाहरणम्। वि-आ—व्याहारः, उक्तिः। सम्-आ—समाहारः, संग्रहः। उद्—उद्धारः। उप—उपहारः। निर्—निर्हरणम्। परि—परिहारः, त्यागः। प्र—प्रहारः। वि—विहारः। सम्—संहारः। उप-सम्—उपसंहारः, समापनम्।

५८२। धृञ्, धारणे। ( To hold )

धृ ( ञ ) अनिट्, सक, उ। धरति,—ते। धरतु,-ताम्।

धरेत्—त । अधरत्,-त । दधार, दध्रे । धर्त्ता । धरिष्यति,-ते । अधरिष्यत्,—त । आशीः—ध्रियात्, धृषीष्ट । लुङ्—अधार्षीत्, अधृत ; अधार्ष्टाम्, अधृषाताम् ; अधार्षुः, अधृषत । कर्मणि —ध्रियते । अधारि । दिधीर्षति,-ते । देध्रीयते । दर्धर्त्ति । धारयति,—ते । अदीधरत्—त, इत्यादि हृवत् ।

वसु धारयतीति वसुन्धरा—संज्ञायां खचि कृस्वत्वे मुमागमः, स्त्रियामाप् । धारा—अङ् । वसोर्धारा—वसुधारा । धर्म्मः —मन् । धर्म्मं चरति—धार्म्मिकः, ठक् । तत्र 'अधर्माच्चेति वक्तव्यं' सिद्धत्वात् अधार्म्मिकः । धर्म्मेण प्राप्यं,धर्म्मादनपेतं वा—धर्म्यम्, यत् । कल्याणो धर्म्मोऽस्येति—कल्याणधर्म्मा । 'धर्म्मादनिच् केवला'दिति—अनिच् । ब्राह्मणस्य धर्म्मः—ब्राह्मणधर्म्मः—सोऽस्यास्तीति—ब्राह्मणधर्म्मी ।

धृत्वा । विधृत्य । धृतः । धृतिः । धरणम् । धर्त्तुम् । धर्त्तव्यम् । धारकः । णिच्—धारयित्वा । अवधार्य्य । धारितः । अवधारणम् । धारणम् । उद्—उद्धारः । निर्—निर्द्धारणम् । दिधीर्षा । दिधीर्षुः ।

५८३ । णीञ्, प्रापणे । ( To lead )

इह प्रापणं गमनाङ्गं भवति । नी ( ञ् ) अनिट्, सक, उ । नयति-ते ; प्रणयति, अन्तर्णयति । नयन्ति-न्ते । नयतु,-ताम् । नय,-स्व । अनयत,-त । नयेत्,-त । निनाय, निन्यतुः, निन्युः । निनयिथ, निनेथ ; निन्यथुः, निन्य । निनाय, निनय ; निन्यिव । निन्ये । निन्यिषे । निन्यिध्वे, निनिय्ढ्वे । निन्यिवहे । नेता, नेतासे । नेष्यति,-ते । अनेष्यत्,त । आशीः—नीयात्, नेषीष्ट ।

लुङ्—अनैषीत्, अनैष्टाम्, अनैषुः ; अनेष्ट, अनेषाताम् ; अनेषत । कर्मणि—नीयते । अनायि, अनायिषाताम्, अने-

षाताम्; अनायिषत, अनेषत इत्यादि। नायिता, नेता। नायिष्यते, नेष्यते। अनायिष्यत, अनेष्यत। नायिषीष्ट, नेषीष्ट इत्यादि। निनीषति,-ते। नेनीयते। नेनयीति, नेनेति। नेनीतः। नाययति।—( अजां ग्रामं यज्ञदत्तेन देवदत्तः )। अनीनयत्। कर्मणि—नाय्यते इत्यादि।

नयते शास्त्रे अर्थान्, युक्तिभिः स्थिरीकृत्य शिष्येभ्यः प्रतिपादयतीत्यर्थः। कर्मकारानुपनयते—भृतिदानेन आत्मनः समीपे प्रापयतीतरर्थः। ऋणं विनयते—निर्य्यातयतीतरर्थः। शतं विनयते—धर्मादौ विनियुङ्क्ते इतरर्थः। मन्युं विनयते—'कर्त्तृस्थे चाशरीरे कर्मणि' इति तङ्, कर्त्तृग्रहणात् देवदत्तस्य मन्युं विनयतीतरत्र न भवति। तथा शरीरग्रहणात् गड़ुं विनयतीतरत्र न भवति।

क्यप्—विनीयः कल्कः—कल्कश्च पिष्टौषधे पक्वान्नतैलादीनाञ्जीषे पाके वर्त्तते। ण्यत्—आनाय्यः, गार्हपत्यादाहवनीयादानीतो दक्षिणोऽग्निः। अन्यत्र आनेय इत्यादि। सान्नाय्यं हविः, निं। नयतीति—नायः, णः। ग्रामं नयतीति—ग्रामणीः। नायः—'श्रिनीभुवोऽनुपसर्गे' इति घञ्। उपसृष्टात्तु निर्णयः, दुर्णयः। अवनायः, उन्नायः—घञ्। उन्नयः—अप्। परिणायः—समन्तादक्षादिना यद्द्यूतम्, अस्मिन्नर्थे—घञ्। आनायः जालं—घञ्। नीमिः—मिः। नेमः—मन्। नीथः—थन्, यज्ञः। नेष्टा—'नयतेः षुक्चेति तृनि धातोः षुगागमः। हरत्यादयश्चत्वारोऽनुदात्ता उभयपदिनः।

नीत्वा। प्रणीय, आनीय, अपनीय, समानीय, परिणीय, निर्णीय। नीतः। नीतिः। दुर्णीतिः। नयनम्। नयः। नेतुम्। विनेता। नायकः। नेत्रम्। प्र—प्रणयः। अनु—अनुनयः। वि—विनयः। अप—अपनयनम्,—अपसारणम्। अभि—अभिविनयः।

नयः। आ—आनयनम्। प्रति-आ—प्रत्यानयनम्। उत्—उन्नयनम्,—उत्क्षेपणम्। उन्नतिः—वृद्धिः। सम्-उत्—समुन्नयनम्। उप—उपनयनम्। उपनेता। उपनेत्री। निर्णयः। परिणयः। प्रणयनम्—रचना।

## अजन्ताः परस्मैपदिनः।

५८४। धेट्, पाने। ( To drink )

धेट् पा पाने इति दुर्गः पठति। एतदादयो जयत्यन्ता अनुदात्ता उदात्तेतः। धे [ धा ] ( ट ) अनिट्, सक, प। धयति। धयतु। धय। अधयत्। धयेत्। दधौ, दधतुः, दधुः। दधाथ, दधिथ ; दधथुः, दध। दधौ, दधिव, दधिम। धाता। धास्यति। आशीः—धेयात्। अधास्यत्। लुङ्—अधात्, अधासीत् अदधत् ; अधाताम्, अधासिष्टाम्, अदधताम्। अधुः, अदधन्, अधासुः। कर्मणि—धीयते, अधायि। अधायिषाताम्, अधिषाताम्, अधायिषत, अधिषत इत्यादि। कर्मव्यतीहारे—व्यतिधयते। व्यतिदधे। व्यत्यदधत, व्यत्यधित। व्यत्यदधेताम्, व्यत्यधिषाताम्; व्यत्यधित, व्यत्यधिषत। धित्सति। देधीयते। दाधेति, दाधाति ; दाधः, दाधति। दाधेषि, दाधासि। दा॰मि, दाधामि। दाध्वः। धेहि। अदाधात्, अदाधाम्, अदाधुः। आशीः—दाधेयात्। विधिलिङ्—दाध्यात्। धापयते, ( वत्सान् धापयति ( पयः। अदीधपत।

धयः, उद्धयः—उपसृष्टादनुपसृष्टाच्च कर्त्तरि शः। स्तनन्धयः, नासिकन्धयः—'नासिकास्तनयो'रित्यादिना मुमागमः। शुनिन्धयी, स्तनन्धयी—ङीष्। नाडिन्धयः, मुष्टिन्धयः—खश्। धयन्ति तामिति धात्री—स्तनपायिका 'धः कर्म्मणि ष्ट्रन्' इति ष्ट्रन्। धीत्वा, प्रधाय। सन्धिः। धीयत इति—धाना, नः। धेनुः

—'धेट इच्चे'ति नुप्रत्ययः। धेनूनां समूहः—धैनुकम्, ठक्। धेनुष्या—यत्। धेनुर्भविष्यतीति—धेनुम्भव्या।

५८५। ग्लै, म्लै, हर्षक्षये। ( To fade )

ग्लै ( ग्ला ) म्लै ( म्ला ) अनिट्, अक, प। ग्लायति। ग्लायतु। ग्लायेत्। अग्लायत्। जग्लौ, जग्लतुः, जग्लुः। जग्लाथ, जग्लिथ ; जग्लथुः, जग्ल। जग्लौ, जग्लिव, जग्लिम। ग्लाता। ग्लास्यति। आशीः—ग्लायात्, ग्लेयात्। लुङ्—अग्लासीत्, अग्लासिष्टाम्, अग्लासिषुः। जिग्लासति। जाग्लायते। जाग्लेति, जाग्लाति। जाग्लीतः। जाग्लीहि। ग्लापयति, ग्लपयति, प्रग्लापयति। अजिग्लपत्। ग्लायते। अग्लायि। सुग्लायतीति—सुग्लः। ग्लानः। ग्लास्नुः। ग्लानिः। डौः—ग्लौः चन्द्रः। म्ला—म्लायति। मम्लौ। अम्लासीत् इत्यादि सर्वत्र ग्लायतिवत्। म्लानः। म्लात्वा। म्लातुम्। म्लानिः।

५८६। द्यै, न्यक्करणे। ( To despise )

न्यङ्गविधान इति क्षीरस्वामी। न्यङ्गं कुत्सिताङ्गम्। द्यै ( द्या ) अनिट्, सक, प। द्यायति। दद्यौ। द्याता। अद्यासीत् इत्यादि ग्लायतिवत्।

५८७। द्रै, स्वप्ने। ( To sleep )

द्रै (द्रा) अनिट्, अक, प। द्रायति। दद्रौ। द्राता। अद्रासीत् इत्यादि पूर्ववत्। निद्रालुः—आलुः। निद्रा—अङ्। अनिद्रो निद्रावान् भवति—निद्रायते। निद्रातीति—निद्रः। निद्राणः।

५८८। ध्रै, तृप्तौ। ( To be pleased )

ध्रै ( ध्रा ) अनिट्, सक, प। ध्रायति। दध्रौ। ध्राता। अध्रासीत् इत्यादि पूर्ववत्।

५८९। ध्यै, चिन्तायाम्। ( To think of )

क्स, ध्यै चिन्तायामिति दुर्गः पठति। ध्यै ( ध्या ) अनिट्-

सक, प । ध्यायति । दध्यौ, दध्यतुः, दध्युः । दध्यिथ, दध्याथ । ध्याता । ध्यास्यति । ध्येयात्, ध्यायात् । अध्यासीत्, अध्यासिष्टाम्, अध्यासिषुः । दिध्यासति । दाध्यायते । दाध्याति, दाध्येति । ध्यापयति-ते । अदिध्यपत्-त । ध्यायते । अध्यायि ।

ध्यात्वा । सन्ध्याय । सुष्ठु ध्यायतीति—सुधीः, क्विप् । ध्यातः । धीवा—'ध्याप्योः सम्प्रसारणञ्च'ेति क्वनिपि सम्प्रसारणम् । धीवरी—ङीष् । ध्यानम् । ध्येयः । अभिध्यानम्—चिन्ता । निध्यानम्—स्मरणम् । "निर्वर्णनन्तु निध्यान"-मित्यमरः ।

५८० । रै, शब्दे । ( To sound )

रै ( रा ) अनिट्, अक, प । रायति । ररौ, ररतुः । राता । अरासीत् इत्यादि पूर्ववत् । काति रायतीति—कीरः, कः । रा दान इत्यदादौ ।

५८१ । स्त्यै, ष्ट्यै, शब्दसंघातयोः ।

( To sound, to be collected into a heap )

एको दन्त्यादिः, परो मूर्द्धन्यादिः । स्त्यै, ष्ट्यै, अनिट्, अक, प । स्त्यै—स्त्यायति । ष्ट्यै—स्त्यायति (१) इत्यादि ग्लैवत् ।

प्रस्तीतः, प्रस्तीतवान् ; प्रस्तीमः, प्रस्तीमवान् । प्रसंस्तीतः, प्रसंस्तीतवान् । स्त्यानः, संस्त्यानः । स्त्यायति संहन्यतेऽस्यां गर्भ इति—स्त्री, 'संस्त्याने स्त्यायतेड्ंट्'इति ड्रटि डित्त्वाट्टि-लोपे वलि लोपे च टित्त्वात् ङीष् । स्त्रियाः सम्बन्धि—स्त्रैणम्, नञ् । स्त्रीत्वम्, स्त्रीता । परस्त्री । परस्त्रिया अपत्यं—पारस्त्रैणेयः, 'परस्त्री परशु'श्चेति शिवादिपाठादपत्येऽणि परशुभावश्च । पार-

( १ ) षोपदेशस्यापि 'धात्वादेः षः सः' इदमेव रूपम्, षोपदेशफलन्तु तिष्ट्यासति । अतिष्ट्यपदित्यादावादेशसकारत्वात् षत्वम् ।

स्त्रैणेयम् ढक्। कुस्त्रिया भावः,कर्म वा—कौस्त्रम्,एवं दौःस्त्रम् युवादित्वादण्। स्त्रीतरा, स्त्रितरा। स्तूपः उच्छ्रायः, 'स्त्यः सम्प्रसारणमुच्चे'ति पप्रत्ययः,उकारो दीर्घश्च। उच्चेत्येव वक्तव्ये दीर्घविधानं ऋस्वस्यापि श्रवणार्थम्, तेन स्तुप इत्यपि भवति।

५८२। खै, खदने। ( To make firm, to hurt )

खदनं स्थैर्यं,हिंसा च। खै,अनिट्, सक, प। खायति। चखौ, चखतुः। खाता। अखासीत् इत्यादि।

५८३। क्षै जै, षै, क्षये। ( To waste )

क्षै, जै, सै, अनिट्, अक, प। क्षै—क्षायति। चक्षौ। चक्षिथ, चक्षाथ। क्षाता। अक्षास्यत्। अक्षासीत्। क्षायात्, क्षेयात्। क्षपयति(मित्)। अचिक्षपत्। चिक्षासति। चाक्षायते। चाक्षेति, चाक्षाति। क्षायते। अक्षायि। क्षात्वा। क्षातुम् इत्यादि। निष्ठा—क्षामः, क्षामवान्। जै—जायति। जजौ। जाता इत्यादि। सै—सायति। ससौ। साता इत्यादि। आशीः—सायात्। लृट्—सास्यति। लुङ्—असासीत्। सिषासति। सापयति। असीषपत् इत्यादि।

५८४। कै, गै, शब्दे। ( To sing, to sound )

कै गै रै शब्दे इति दुर्गः पठति। इह शब्दः शब्दविशेषः। कै, गै, रै, अनिट्, अक,प। कै—कायति। चकौ, चकतुः। काता। कास्यति। कायात्। अकासीत्। कापयति इत्यादि। काकः—कन्। गै—गायति। जगौ, जगतुः, जगुः। जगिथ, जगाथ। गाता। गास्यति। आशीः—गेयात्। लुङ्—अगासीत्, अगासिष्टाम, अगासिषुः। कर्मणि—गीयते। गीयताम्। अगायि, अगासाताम्, अगायिषाताम्; अगासत, अगायिषत इत्यादि। गासीष्ट, गायिषीष्ट। गास्यते, गायि-

ष्यते। जिगासति। जेगीयते। जागेति, जागाति। गापयति, —ते। अजीगपत्,—त।

गाथकः—थकन्। गायनः—ल्युट्। स्त्रियां—गायनी। गायकः—ण्वुल्। गाता—तृच्। उद्गाता। भावकर्मणोः—औद्गात्रम्। साम गायतीति—सामगः, टक्। स्त्रियां—सामगी। गीत्वा। प्रगाय। गीतम्। गानम्। गीतिः—क्तिन्। गाथा—थन्, गद्यविशेषः। अवगथः—प्रातःसवनं सोमो वा, अवपूर्वात् थनि निपातितः। उद्गीथः—उदुपसृष्टात् क्थन्, ईत्वम्। उत्—उच्चैर्गानम्। अनु—शब्दः। अव—अवगीतिः, निन्दा। उप—शब्दः। परि—कीर्त्तनम्। प्र—शब्दः। नि —पाठः।

५८५। श्रै, श्रै, पाके। ( To cook)

इह पाको विक्लित्तिः। तथाच 'शृतं पाके' इत्यत्र वृत्त्यादावुक्तम्। श्रै, श्रै, अनिट्, सक, प। श्रै—श्रायति। शश्रौ। शश्रिथ, शश्राथ। श्राता। अश्रात्, अश्रासीत्। श्रायात् इत्यादि। शिश्रासति। शाश्रायते। शाश्रेति, शाश्राति। श्रै—श्रायति। शश्रौ। श्राता इत्यादि गायतिवत्। णिच्—श्रपयति, पाके घटादिः। अन्यत्र—श्रापयति। शृतं—चीरं। श्राणा यवागूः, श्रपिता यवागूः। श्राणा अस्मै नियमेन दीयते—श्राणिकः, टिठन्। स्त्रियां—श्राणिकी, टित्त्वात् ङीष्। श्रातीत्यादादिकस्य। श्रापयतीति चौरादिकस्य।

५८६। पै श्रो वै, शोषणे। ( To dry )

पै, वै ( श्रो ) अनिट्, सक, प। पायति। पायतु। अपायत्। पायेत्। पपौ। पाता। पास्यति। आशीः-पायात्। अपासीत्, अपासिष्टाम्, अपासिषुः। भावे—पायते। अपायि। पाता, पायिता। पिपासति। पापायते। पापाति, पापेति।

पापीतः, पापति। लङ्—अपापात्, अपापेत्; अपापीताम्, अपापुः। आशीः—पापायात्। णिच्—पाययति। अपीपयत्। (ओ) क्त—पानम्। वै—वायति। ववौ इत्यादि पायतिवत्। णिच्—वापयति, * अवीवपत्। (ओ) क्त—वानम्। पा इति पानार्थं ह्वाग्रे। रक्षणार्थश्च रादौ।

५८७। ष्टै, वेष्टने। (To cover)

स्तै, अनिट्, सक, प। स्तायति। तस्तौ। तस्थिथ; तस्ताथ। स्ताता। अस्तासीत्। स्तेयात्, स्तायात्। तिष्टासति। स्तापयति,-ते। अतिष्टपत् इत्यादि। (१)

५८८। दैप, शोधने। (To purify)

दै (प), अनिट्, सक, प। दायति। ददौ। दाता। दास्यति। दायात्। अदासीत्। दिदासति। दादायते। दादाति, दादेति। दापयति। अदीदपत्। अव—अवदानम्। अवदातः—शुक्लीभावः। दाण दाने, देङ् रक्षण—इतीहैवाग्रे। दाप् लवण इत्यदादौ। डु दाञ् दान इति जुहोत्यादौ। दो अवखण्डने, दीङ् क्षये इति दिवादौ।

५८९। पा, पाने। (To drink)

पा, अनिट्, सक, प। पिबति। पिबतु। (हि) पिब।

---

* वो विधुनने धुगिति भत वा गतिगन्धनयोरिति भ्वादादिकस्यैव ग्रहणं तस्यैव विधुनने वृत्तिसम्भवादिति व्याख्यातारः।

(१) अयश्च पाठो नैव यस्य। भट्टभास्करोऽप्येवं वागृषः, यदाह—'स्तायूनां पतये नमः' इत्यत्र स्तेना यस्कादीनपहरन्ति इति सायणः, ष्टै वेष्टन इत्यस्मादौणादिकः उक्प्रत्यय इति। स्त्यादयस्तु ष्ट्यै वेष्टन इति पठन्ति। तथाच निरुक्तम्—उष्णीषं स्त्यायतेर्व्याप्तिकर्मणः, उष्णीषं शिरोवेष्टनम्। स्त्यायतेः शोभार्थस्य उभयत्रापि सम्भवादिति। अतएव व्याख्यातं ष्टै शोभन इत्यपि भ्वादौ द्रष्टव्यः। तथाच—"पाञ्चाल्याः पञ्चपत्न्याः स्तायन्ति जघनं घनम्' इति भारतम्। क्रियानिष्पत्ती च स्तायति, स्तायत्याश्रवत इति वातीति।

अपिबत्। पिबेत्। लिट्—पपौ,पपतुः, पपुः। पपिथ, पपाथ, पपथुः, पप। पपौ, पपिव,पपिम। पाता। पास्यति। पेयात्। अपास्यत्। लुङ्—अपात्, अपाताम्, अपुः। कर्मणि—पीयते। अपायि, अपायिषाताम्, अपासाताम्, अपायिषत अपासत। पिपासति। पेपीयते। पापेति, पापाति। पापीतः पापति। अपापात्, अपापुः। पापायात्। आशीः—पापेयात्। पाययति,-ते। अपीप्यत्,-त। 'न पादमी'ति निषेधे परस्मैपदं न भवति। यङ्लुकि णिचि—अपापत्।

उत्पिबः—'पाघ्राध्माधेट्दृशः शः' इति शः, पिबादेशः। सुरां पिबतीति सुरापः,शीधुपः—टक्। स्त्रियां—सुरापी। क्लीबभावे—क्षीरपा, ब्राह्मणीति। द्वाभ्यां पिबतीति—द्विपः, कः। एवं कच्छपः। प्रपिबन्त्यस्यामिति—प्रपा कः। पीतिः—क्तिन्। पीत्वा। प्रपाय। पीयतेऽनेनेति—पानं। क्षीरपानं, क्षीरपाणमिति वा। क्षीरं पानं येषां ते—क्षीरपाणाः, उशीनराः। पायुः—उण्। सोमपीथः—क्थन्, सोमपानम्। पेरुः—रुः, इत्वान्तादेशः, आदित्यः। पापम्—पः। पाथः—असुन्, थुडागमश्च। पयः—असुन्, ईत्, गुणः। पय इवाचरति—पयायते, पयस्यते। पयसो विकारः—पयस्यः, यत्। पाकः—कन्, अर्भकः। पात्रम्—ष्ट्रन्। स्त्रियां—पात्री। पञ्चानां पात्राणां समाहारः—पञ्चपात्रम्। उप्यतेऽस्मिन्निति—वापः। पात्रस्य वापः क्षेत्रं—पात्रिकम्, ठन्। स्त्रियां पात्रिकी। पात्रं परिमाणविशेषः भाजनञ्च, पात्रं सम्भवति अवहरति पचति वा ठन्—पात्रिकी, ख—पात्रीणा स्थाली—द्वे पात्रे सम्भवति अवहरति पचति वा—द्विपात्रिकी, द्विपात्रीणा। द्विपात्री स्थाली इत्यपि। पात्रमर्हतीति—पात्रियः—घः, पात्र्यः—यत्। सर्वपात्रं व्याप्नोतीति—सर्वपात्रीणः—खः, सूपः। पात्रेसमितः

पात्रे बहुलः। अयस्पात्रम्, अयस्पात्री। पेयम्। पानीयम्। पातुम्। पातव्यम्। पाता—तृच्। पायः। पायकः।

६०० । घ्रा, गन्धोपादाने। (To smell)।

घ्रा, अनिट्, सक, प। जिघ्रति। जिघ्रतु। जिघ्रेत्। अजिघ्रत्। जघ्रौ, जघ्रतुः, जघ्रुः। जघ्रिथ, जघ्राथ। जघ्रिव। घ्राता। घ्रास्यति। आशीः—घ्रेयात्, घ्रायात्। अघ्रास्यत्। लुङ्—अघ्रात्, अघ्रासीत्; अघ्राताम्, अघ्रासिष्टाम्; अघ्रुः, अघ्रासिषुः। कर्मणि—घ्रायते। अघ्रायि, अघ्रासाताम्, अघ्रायिषाताम्। जिघ्रासति। जेघ्रीयते। जाघ्रेति, जाघ्राति जाघ्रीतः। घ्रापयति,-ते। अजिघ्रपत्,-त; अजिघ्रिपत्,-त। (यङ्लुङ्णिच्) अजघ्रापत्।

आजिघ्रतीति—आजिघ्रः—शः। व्याजिघ्रतीति—व्याघ्रः, कः। स्त्रियां व्याघ्री। व्याघ्रस्य विकारश्चर्म—वैयाघ्रम्, अञ्। वैयाघ्रेण परिवृतो रथः—वैयाघ्रः। घ्राणं, घ्रातम्—क्तः, वा निष्ठानत्वम्। आ आघ्राणम्। घ्रात्वा। आघ्राय।

६०१ । ध्मा, शब्दाग्निसंयोगयोः। ( To sound, to blow fire )

इहाग्निसंयोगो मुखवायुनाऽग्निसंयोगः। ध्मा, अनिट्, प। धमति। धमतु। अधमत्। धमेत्। दध्मौ, दध्मतुः, दध्मुः। दध्मिथ, दध्माथ। ध्माता। ध्मास्यति। आशीः—ध्मायात्, ध्मेयात्। अध्मासीत्, अध्मासिष्टाम्, अध्मासिषुः। कर्मणि—ध्मायते, अध्मायि। दिध्मासति। देध्मीयते। दाध्मेति, दाध्माति। ध्मापयति। अदिध्मपत्।

उद्धमः—शः। नासिकन्धमः—खश्। एवं नाडिन्धमः। पाण्यो ध्मायन्ते येषु—पाणिन्धमाः, पन्थानः। ध्मात्वा। ध्मातम्।

६०२ । ष्ठा, गतिनिवृत्तौ। ( To stay )।

स्था, अक, अनिट्, प। तिष्ठति, तिष्ठतः, तिष्ठन्ति।

तिष्ठतु, तिष्ठताम्, तिष्ठन्तु । ( हि ) तिष्ठ । तिष्ठेत्, तिष्ठेताम्, तिष्ठेयुः । तिष्ठेः, तिष्ठेतम्,-त । -यम्,-व,-म । अतिष्ठत्, अतिष्ठताम्, अतिष्ठन् । लिट्—तस्थौ,तस्थतुः, तस्थुः । तस्थाथ, तस्थिथ ; तस्थथुः, तस्थ । तस्थौ, तस्थिव, तस्थिम । अधि—अधितष्ठौ इत्यादि । लुङ्—अस्थात्,अस्थाताम्, अस्थुः । अस्थाः,-तम्,-त । अस्थाम्, अस्थाव,-म । अधि—अध्यष्ठात् इत्यादि । आशीः—स्थेयात्, स्थेयास्ताम्, स्थेयासुः । अधि—अधिष्ठेयात् इत्यादि । लृट्—स्थास्यति । अधि—अधिष्ठास्यति । लृङ्—अस्थास्यत् । अधि—अध्यष्ठास्यत् । लुट्—स्थाता । अधि—अधिष्ठाता ।

भावे—स्थीयते । स्थीयताम् । स्थीयेत । अस्थीयत । अस्थायि । तस्थे । स्थाता, स्थायिता । स्थास्यते स्थायिष्यते । स्थासीष्ट, स्थायिषीष्ट । अस्थास्यत, अस्थायिष्यत ।

सन्—तिष्ठासति । तिष्ठासाञ्चकार—३ । अतिष्ठासीत् । णिच्—स्थापयति । स्थापयेत्, स्थापयेताम्, स्थापयेयुः । स्थापयतु,-ताम्,-न्तु । (हि) स्थापय । अस्थापयत् । ( लुङ् ) अतिष्ठिपत्, अतिष्ठिपताम्, अतिष्ठिपन् । स्थापयामास,—ञ्चकार, —बभूव । कर्म्मणि—स्थाप्यते । स्थाप्यताम् । स्थाप्येत । अस्थाप्यत । स्थापयाञ्चक्रे,-३ । स्थापयिष्यते, स्थापिष्यते, अस्थापयिष्यत, अस्थापिष्यत । स्थापयिता, स्थापिता । अस्थापि, अस्थापयिषाताम्, अस्थापिषाताम्, अस्थापयिषत, अस्थापिषत । स्थापयिषीष्ट, स्थापिषीष्ट ।

सम्-अव-वि-प्र-पूर्ब्बकस्थाधातुरात्मनेपदी ।—सन्तिष्ठते,-ष्ठेते, सन्तिष्ठन्ते । सन्तिष्ठताम् । सन्तिष्ठेत । समतिष्ठत । लुङ् —समस्थित, समस्थिषाताम्,-षत ।—थाः, षाताम्, ढ्वम् ।—षि,-ष्वहि,-ष्महि । एवं प्र-वि-अव-पूर्वकस्यापि । लिट्—सन्तस्थे,

सन्तस्थाते, सन्तस्थिरे।—थे। सन्तस्थाथे, सन्तस्थिध्वे।—
सन्तस्थे, सन्तस्थिवहे,-महे।

प्रतिज्ञानिर्णयप्रकाशनार्थेषु स्थाधातुरात्मनेपदी।

नित्यं शब्दमातिष्ठते, प्रतिजानीते इत्यर्थः। अर्द्धस्वभावादयमाङ्पूर्वः। तिष्ठते कन्या छात्रेभ्यः, स्थानेन स्वाभिप्रायं प्रकाशयतीत्यर्थः। 'श्लाघह्नुङि'त्यादिना ज्ञीप्स्यमानस्य सम्प्रदानत्वात् चतुर्थी। धर्म्मार्थ्यच्चे तिष्ठते,तत्र निर्णयमपेक्षमाणस्तिष्ठतीत्यर्थः। उत्पूर्वः स्था अनूर्द्ध्वचेष्टायाम् आत्मनेपदी।—कुटुम्बमुत्तिष्ठते। ऊर्द्ध्वचेष्टायाम्—आसनादुत्तिष्ठति। मन्त्रकरणक उपपूर्वः स्था आत्मनेपदी।—ऐन्द्र्या गार्हपत्यमुपतिष्ठते, ऐन्द्र्या ऋचा गार्हपत्यमभिधत्त इत्यर्थः। उपात् देवपूजासङ्गतिकरणमित्रकरणपथिषु स्था आत्मनेपदी। 'आज्ञां प्रलिप्सुर्विनयादुपास्थु'रिति भट्टिश्लोके देवपूजार्थाभावात् नात्मनेपदम्। आदित्यमुपतिष्ठते। गङ्गा यमुनामुपतिष्ठते। राजकीयानुपतिष्ठते। अयं पन्थाः कलिकातामुपतिष्ठते। लिप्सार्थ उपपूर्वकः स्था विकल्पेनात्मनेपदी।—अर्थी राजानमुपतिष्ठते उपतिष्ठति वा। अकर्म्मक उपपूर्वकः स्था आत्मनेपदी।—यावद्भुक्तमुपतिष्ठते। वीप्सायामव्ययीभावः। भोजने भोजने सन्निधत्ते इत्यर्थः।

यङ्—तेष्ठीयते। तेष्ठीयाञ्चक्रे, २। अतेष्ठीयिष्ट। यङ्लुक्—तास्थाति, तास्थेति; तास्थीतः, तास्थति।

तिष्ठतीति—स्थायी, णिनिः। समे तिष्ठतीति—समस्थः, कः। आखूनामुत्थानम्—आखूत्थम्—भावे कः। 'उदः स्थास्तम्भो'रिति,सकारस्य तकारः। शं सुखं तिष्ठतीति शंस्थः—कः। क्विप्—संस्थाः। स्थास्नुः—स्नुः। स्थायुकः—उकञ्। स्थावरः—वरच्। स्थित्वा आस्थाय। स्थितम्। स्थितः। उपपूर्वोऽयं सकर्म्मकः, कर्त्तृ कर्म्मणोः क्तः—उपस्थितो गुरुं शिष्यः, गुरुः

ग्निष्ठे वा। प्रतिष्ठतेऽस्मिन्निति—प्रस्थः, घञर्थे कः। माहकिप्रस्थो नाम उदीच्यग्रामः, तत्र भवः—माहकिप्रस्थः। एवम् इन्द्रप्रस्थः। इन्द्रप्रस्थे भवः—ऐन्द्रप्रस्थः, अण्। मालाप्रस्थे भवः—मालाप्रस्थकः, वुञ्। प्रतिष्ठतेऽग्रे गच्छतीति—प्रष्ठः, कः; अत्रार्थे षत्वम्। अग्रगामिनोऽन्यत्र—प्रस्थः। स्थितिः, प्रस्थितिः, उपास्थितिः—क्तिन्। आस्था—अङ्। आस्था शीलमस्य—आस्थः, अण्। स्त्रियाम्—आस्थी। तिष्ठन्त्यस्मिन्निति—स्थानीयम्, अनीयः। भीरूणां स्थानं—भीरुष्ठानम्, समासे षत्वम्। गोस्थाने जातः—गोस्थानः, अण्, लुक्। स्थिरम्—किरच्। स्थेष्ठः—इष्ठः। स्थेयान्—ईयसुः। स्थिरं करोति—स्थापयति। गविष्ठिरः, युधिष्ठिरः—'गवियुधिभ्यां स्थिरः' इति षत्वम्, 'हलदन्तात् सप्तम्या' इति अलुक्। अम्बे तिष्ठतीति—अम्बष्ठः, कः। गावस्तिष्ठन्त्यस्मिन्निति गोष्ठं, कः। भूतपूर्वं गोष्ठं, गोष्ठीनं खञ्। ङीष्—गोष्ठी। सव्ये तिष्ठतीति—सव्येष्ठः, सारथिः। स्त्रियाम्—सव्येष्ठा। एवं परमेष्ठः, दिविष्ठः, अपष्ठः। कुष्ठः—निपातः। परमे तिष्ठतीति—परमेष्ठी—इन्। सुष्ठु, दुष्ठु, अपष्ठु—'अपदुःसुषु स्थ' इति कुप्रत्ययः सौष्ठवम्, दौष्ठवम्—भावे अण्। स्थाणुः—णुः। स्थविरः—निपातः। अस्य भावकर्म्मणी—स्थाविरम्, अण्। दधित्थः, कपित्थः—कः, पृषोदरादित्वात् सकारस्य तकारः। स्थाम—बलम् मनिन्। अश्वस्येव स्थामास्य अश्वत्थामा, पृषोदरादिः। अश्वत्थाम्नोऽपत्यम्—अश्वत्थामः, अः। स्थालम्—लः। स्थाली—ङीष्। स्थातुम्। स्थाता। स्थातव्यम्। स्थेयम्। तस्थिवान्।

प्र—प्रस्थानम्, अव—अवस्थानम्, सम्—संस्थानम्। अधि—अधिष्ठानम्। अव—अवस्थितिः। वि अव—व्यवस्था। उत्—उत्थानम्। उत्तिष्ठमानः। णिच्—उत्थापितः। तिष्ठन्।

तिष्ठन्तौ। स्थापना। स्थापयन्। तिष्ठासुः। सन्तिष्ठमानः। वितिष्ठमानः। स्थाता, स्थातारौ।

६०३। म्ना, अभ्यासे। ( To study )

म्ना, अनिट्, सक, प। मनति। मनतु। मनेत्। अमनत्। मम्नौ, मम्नतुः। मम्निथ, मम्नाथ। म्नाता। म्नास्यति। आशीः—म्नायात्, म्नेयात्। अम्नासीत्, अम्नासिष्टाम्, अम्नासिषुः। मिम्नासति। माम्नायते। माम्नाति, माम्नेति। म्नापयति,—ते। अमिम्नपत्—त। म्नात्वा। आम्नाय।

आम्नायः—घञ्, आवृत्तिः। आम्नातः। आम्नातम्। आम्नातौ। नीचभावमभ्यस्यतीति निम्नम्—कः। दिने आम्नायत इति—द्युम्नम्। सुतराम् आम्नायत इति—सुम्नं, सुखम्—घञर्थे कः।

६०४। दाण, दाने। ( To give ).

दा ( ण ) अनिट्, सक, प। यच्छति, प्रणियच्छति। यच्छतु। यच्छे। यच्छेत्। अयच्छत्, प्रण्ययच्छत्। ददौ। ददिथ, ददाथ। ददिव। दाता। दास्यति। अदास्यत्। आशीः—देयात्। अदात्, प्रण्यदात्। कर्मणि—दीयते। ददे। दाता, दायिता। दास्यते, दायिष्यते। दासीष्ट, दायिषीष्ट। अदायि। दित्सति। देदीयते। दादेति, दादाति। दात्तः। देहि। दापयति,-ते। अदीदपत्,-त। दास्या मालां संप्रयच्छते—'दाणश्च सा चेच्चतुर्थ्यर्थे' इति समुपसृष्टात्तृतीयायुक्तादस्मात्तङ् ( १ )। सम्प्रादित, सम्प्रादिषाताम्,—षत।

गां प्रयच्छतीति गोप्रदः—कः। गोप्रदायः—अण्। गोदः—कः। दारः—रः। दानीयः ब्राह्मणः—अनीयः। देयम्—

( १ ) दाण इति सानुबन्धकनिर्देशादयच्छ्तुकि नायं तङ्विधिरिति—दास्या मालां सम्प्रददातीति भवति।

अत्। दत्त्वा। दत्तः। दत्तवान्। प्रत्तम्—'खरि चे'ति दकारस्य तकारः। नीत्तम्, सूत्तम्—'दस्ति'दा इत्यस्य यस्त-कारस्तादादावुत्तरपदे इगन्तस्योपसर्गस्य दीर्घं इति दीर्घः। "अवदत्तं विदत्तञ्च प्रदत्तं चादिकर्मणि। सुदत्तमनुदत्तञ्च निदत्तमिति चेष्यते॥" इति वचनादवदत्तादौ तो न भवति। प्रदाय—ल्यप्। दानुः—नुः। देष्णुः—इष्णुः, दानशीलः। मरुद्भिर्दत्तः—मरुत्तः।

६०५। ह्वृ कौटिल्ये। (To be crooked)

ह्वृ, अनिट्, अक, प। ह्वरति। ह्वरतु। अह्वरत्। ह्वरेत्। जह्वार, जह्वरतुः। जह्वर्थ। जह्वरिव। ह्वर्त्ता। ह्वरिष्यति। आशीः—ह्वर्य्यात्। अह्वार्षीत् अह्वार्ष्टाम्। जुह्वर्षति। जाह्वर्य्यते। जह्वरीति, जह्वर्त्ति। जह्वृतः। जह्वृहि। जह्वराणि। अजह्वः। ह्वारयति। अजिह्वरत्. ह्वृत्वा। अपह्वृत्य।

६०६। स्वृ, शब्दोपतापयोः। (To sound, to pain)

स्वृ, वेट्, अक, प। स्वरति। स्वरतु। स्वरेत्। अस्वरत् सस्वार, सस्वरतुः, सस्वरुः। सस्वरिथ, सस्वर्थ। सस्वरिव, सस्वरिम। स्वरिता; स्वर्त्ता। स्वरिष्यति। आशीः—स्वर्य्यात्। अस्वारीत्, अस्वार्षीत्; अस्वारिष्टाम्, अस्वार्ष्टाम्; अस्वारिषुः, अस्वार्षुः। सिस्वरिषति, सुस्वूर्षति। सास्वर्य्यते। सस्वरीति, सस्वर्त्ति, सस्वृतः। सस्वरिता। स्वारयति। असिस्वरत स्वर्य्यते। अस्वारि।

सम्—आत्मनेपदी।—संस्वरते। संसस्वरे। संसस्वरिषे। संस्वरिता, संस्वर्त्ता। संस्वरिष्यते। संस्वरताम्। संस्वरेत्। संस्वरिषीष्ट, संस्वृषीष्ट। समस्वरिष्ट, समस्वृत। स्वृत्वा। स्वरितुम्, स्वर्त्तुम्। स्वृतः। स्वरः—अः।

६०७। स्मृ, चिन्तायाम्। ( To remember )

स्मृ, अनिट्, सक, प। स्मरति। मातरं स्मरति ; मातुः स्मरति। स्मरतु। स्मरेत्। अस्मरत्। सस्मार, सस्मरतुः, सस्मरुः। सस्मर्थ, सस्मरिथ। स्मर्त्ता। स्मरिष्यति। आशीः—स्मर्य्यात्। अस्मार्षीत्, अस्मार्ष्टाम्, अस्मार्षुः। कर्मणि—स्मर्य्यते। अस्मारि। स्मृषीष्ट, स्मरिषीष्ट। सुस्मूर्षते। सास्मर्य्यते। सर्स्मरीति, सर्स्मर्त्ति। स्मारयति। आध्याने—स्मरयति। असस्मरत्। स्मर्य्यते। अस्मारि, अस्मरि।

स्मृत्वा। स्मृतः, स्मृतम्। स्मृतिः। स्मरणम्। स्मर्त्तुम्। स्मर्त्ता। स्मारकः। वि—विस्मरणम्।

६०८। सृ, गतौ। ( To go, to move )

सृ, अनिट्, सक, प। सरति (१)। सरतु। सरेत्। असरत्। ससार, सस्रतुः, सस्रुः। ससर्थ, सस्रथुः, सस्र। ससर, ससार ; सस्रिव, सस्रिम। सर्त्ता। सरिष्यति। आशीः—स्रियात्। असार्षीत्, असार्ष्टाम्, असार्षुः। सिसीर्षति। सेस्रीयते। सरीसरीति, सर्सर्त्ति, ससृतः। सारयति। असीसरत्। कर्मणि—स्रियते। अस्रियत। असारि, असृषाताम्, असारिषाताम्। णिच् कर्मणि—सार्य्यते। असारि, असारिषाताम् इत्यादि।

उपसर्य्या—'उपसर्य्या काल्या प्रजने' इति निपात्यते। अन्यत्र उपसार्य्या—ण्यत्। सूर्य्यः—'राजसूयसूर्य्ये'ति क्यपि निपात्यते। साधु सरतीति—सरकः, वुन्। पुरः सरतीति—पुरःसरः, अग्रसरः, अग्रेसरः, पूर्व्वसरः—टः। पूर्व्वदेशं सरतीति—पूर्व्वसारः, अण्। उदासारी, प्रत्यासारी—णिनिः। परिसारी—घिनुण्। सरणः—युच्। सृमरः—क्मरच्। सृत्वरः—क्वरप्।

(१) यदायं सरतिर्वेगितगमने वर्त्तते, तदा पाघ्रादीनां धावादेशे धावति, धावतु, धावेत्, अधावत् इत्यादयः प्रयोगाः सार्व्वधातुके स्मृतः।

सृत्वरी—ङीप् । सस्त्रिः—क्रिन् । सारः—घञ् कर्त्तरि, कालान्तरस्थायी । अन्यत्र भावादौ—सारः सारम् । अतिसारः, अतीसारः,—व्याधिः । विसारः—मत्स्यः । सारः,—बलम्—घञ् । अतीसारोऽस्यास्तीति—अतीसारकी, इन् । प्रसारः आसारः—घञ् । 'दृष्टोरुदन्तसुपलप्रसरं निषेवे' इति माघे बाहुलकादप् । एवं निसरः इत्यपीत्यात्रेयः । उपसरो गवां—स्त्रीगवीषु पुंगवानां गर्भाधानाय प्रथममुपसरणमुच्यते । 'प्रजने सर्त्ते'रित्यप् । परिसरः, अपसरः,—घः । परितः सरणं परिसर्य्या । वैसारिणो मत्स्यः, विसारिणः अण् । सृणिका—इकन्, नुट् च । सार्थः—थण् । सर्वः—वन् । सरयूः—'सर्त्तेरयू'रिति अयूः । सरय्वां भवं—सारवम्, निपातः । सरणिः—अनिः । सरित्—इत् । सृणिः—निः । सरः—असुन् । सरसी—ङीप् । सारङ्गः—अङ्गः, वृद्धिश्च । अद्भ्यः सृता इति अप्सराः, असुनि निपात्यते, बहुलं विभाषया विवक्षितम् । अप्सरा इव आचरति—अप्सरायते, क्यङ् । सारथिः—अथिन्, णिच्च ।

सृत्वा । अपसृत्य । सृतः । सृतिः । सरणम् । सर्त्तुम् । सर्त्तव्यम् । प्र—प्रसारः । अप—अपसरणम् । अति—अतिसारः, अतीसारः—रोगः । अभि—अभिसारः, घञ् । णिच् ल्युट्—अभिसारणम् । उद्-णिच्, ल्युट्, उत्सारणम्, दूरीकरणम् । निर्—निःसरणम् ।—णिच्—निःसारणम्, निष्क्रामणम् ।

९०८ । ऋ, गतिप्रापणयोः । ( To go, to get )

ऋ, अनिट्, सक, प । ऋच्छति । प्रार्च्छतीत्यादि । ऋच्छतु । ऋच्छेत् । आर्च्छत् । लिट्—आर, आरतुः, आरुः । आरिथ, आरथुः, आर । आर, आरिव, आरिम । लुट्—अर्त्ता । लृट्—अरिष्यति । आशीः—अर्य्यात् । लुङ्—आर्षीत्,

आर्ष्टाम्, आर्षुः। लृङ्—आरिष्यत। सन्—अरिरिषति। यङ्—अरार्य्यते। यङ्लुक्—अरर्त्ति, अरियर्त्ति, अररीति, अरियरीति। अरृतः, अरियृतः। अरति, अरियृति। अरर्षि, अरियर्षि; अरर्मि, अरियर्मि; अरृवः, अर्य्यृवः; अरृमः, अर्य्यृमः। (लङ्) आरियः, आरृताम्, आरियृताम्, आररुः, आरियरुः। अरृयात्, अरियृयात्। अरर्त्तु, अरियर्त्तु। अरृहि, अरियृहि। अरराव, अरियराव। आशीः—आरियात्, अरियृयात्। अरराञ्चकार, अरियरांचकार,-६। अररिता, अरियरिता। अररिष्यति, अरियरिष्यति। लुङ्—आरारीत्। आरियारीत्। णिच्—अर्पयति। आर्पिपत्। [ पक्षे गुणापवादऋकारस्य ऋदिति कृते पिशब्दस्य द्विर्वचने माभवान् ऋपिपदिति माधवः। ] मा भवानर्पिपत्। अर्पयाम्बास,-३। यङ्लुक् णिच्—अरारयति, अरियारयति। कर्मणि—अर्य्यते। आर्य्यत। आरि। अरिष्यते, आरिष्यन्त। स्यन्तादस्यन्ताच्च कर्मणि स्यसिजादिषु चिण्वत् (इड्वत्)इड्वा। णिच् कर्मणि—अर्प्यते। आर्प्यत। आर्पि, आर्पिषाताम्, आर्पयिषाताम्, आर्पिषत, आर्पयिषत।

अर्य्यः—यत्, निपातः। अर्य्या—स्त्री। आर्य्यः—ण्यत्। स्त्रियाम् आर्य्या, आर्य्याणी—ङीष्, आनुक्च। आरी—ङीष्। अरित्रम्—इत्रः। आरा—षड्, वृद्धिश्च, प्रतोदः। ता—ऋतम्। ऋणम्—निष्ठानत्वं निपात्यते ऋणेऽर्थे। अधमर्णः। उत्तमर्णः। प्रगतं प्रवृद्धं वा ऋणं—प्रार्णम्। एवम् ऋणार्णमित्यादयः ज्ञातव्याः। अरुः—उस्। अर्शः—अर्त्तेर्गुणः, शुड् चेत्यसुन्प्रत्ययः, शुडागमश्च। अर्शोऽस्यास्तीति—अर्शसः, अर्शआदिभ्यः अच्। असुप्रत्यये—अररः, असुरविशेषः। भन्—अर्भः, बालः। अर्भकः—स्वार्थे कन्। अर्थः—थन्। ऊर्मिः—अर्त्तेरु

चे'ति सिन्प्रत्ययः उश्चान्तादेशः। अर्वा—वनिप्। अर्वन्तौ। अर्वती—ङीप्। निर्ऋथः—थन्, साम। अरणिः—अनिः। अरुणः—उनन्। ऋतुः—तुन्। ऋतुः प्राप्तोऽस्य—आर्त्तवम्, अण्, पुष्पम्। ऋतुर्देवतास्य—ऋतव्यम्, यत्। अररम्—'अर्त्तिकमी'त्यादिना अरः, कवाटम्। इनः, कित्, इस्व—इरिणम्, ऊषरम्। अर्णः—अर्त्तेर्नुड़ित्यसुन्प्रत्ययः, नुड़ागमश्च। अर्णवः—अर्णसो लोपश्चेति मत्वर्थीये वप्रत्यये सलोपः। क्तिः—ऋतिः। आ + ऋतिः = आर्त्तिः। आ + ऋतः = आर्त्तः। शीतार्त्तः, हिमार्त्तः, परमर्त्तः इत्यादि।

६१०। गृ, घृ, सेचने। ( To sprinkle )

गृ, घृ, अनिट्, सक, प। गृ—गरति। गरतु। गरेत्। अगरत्। जगार, जगतुः। जगर्थ। जग्रिव। गर्त्ता। गरिष्यति। आशीः—ग्रियात्। अगार्षीत्, अगार्ष्टाम्, अगार्षुः। जिगीर्षति। जेग्रीयते। जागरीति, जर्गर्त्ति। गारयति। अजीगरत्। गर्त्तः—तन्। घरतीति गरतिवत्। घृणा। घृतम्। घर्मः—मन्। गॄ इति दीर्घान्तस्तुदादौ निगरणार्थः, क्र्यादौ शब्दार्थः, ज्ञानार्थश्चुरादौ। घृ क्षरणदीप्त्योरिति जुहोत्यादौ। प्रस्रवणार्थश्चुरादौ।

६११। ध्वृ, हूर्च्छने। ( To bend )

हूर्च्छनं कौटिल्यं भ्रात्यमेव, तदपध्वरतीत्यादौ हिंसायामपि दृश्यते। ध्वृ, अनिट्,अक, प। ध्वरति। दध्वार, दध्वरतुः। ध्वर्त्ता इत्यादि स्मरतिवत्।

६१२। स्रु, गतौ। ( To go, to flow )

स्रु, अनिट्, सक, प। स्रवति। स्रवतु। स्रवेत्। अस्रवत्। सुस्राव, सुस्रुवतुः। सुस्रोथ। सुस्रुव। स्रोता। स्रोष्यति। आशीः—स्रूयात्। (लुङ्) असुस्रुवत्। सुस्रूषति।

सोस्रूयते। सोस्रवीति, सोस्रोति। सोस्रुतः। स्रावयति। नित्यं परस्मैपदम्। असुस्रुवत्,-त, असिस्रवत्,-त। सुस्रावयिषति, सिस्रावयिषति। कर्म्मणि स्रुवत्।

आस्रावः, संस्रावः—णः। प्रस्रावः—घञ्। प्रस्रावी—घिनुण्। स्रवत्यस्मादुष्टतमिति स्रुक्—क्विप्। स्रुवः—कच्। स्रोतः—असुन्, तुडागमश्च। स्रुत्वा। स्रुतः। स्रुतिः। स्रवणम्। स्रोतुम्।

६१३। षु, प्रसवैश्वर्य्ययोः। ( To permit, to possess power )

प्रसवोऽभ्यनुज्ञा इति पुरुषकारे। सु, अनिट्, प। सवति। सवतु। असवत्। सवेत्। सुषाव, सुषुवतुः। सुषोथ, सुषविथ। सुषुविव, सुषुविम। सोता। सोष्यति। असौषीत्, [असावीत्] * असौष्टाम्, असौषुः। सुसूषति। सोषूयते। सोषोति। कर्मणि—सूयते। असावि। असोषाताम्। कर्मकर्त्तरि 'अचः कर्मकर्त्तरी'ति त-शब्देऽपि पक्षे सिचो विधानात् असोष्ट इत्यपि भवति। स्वादिषु कर्मकर्त्तरि चिण्वत् पक्षे साविष्यत इत्याद्यपि द्रष्टव्यम्। सव्यं—यत्। सुत्वा—ङ्वनिप्। सुतम्। सुतिः।

६१४। श्रु, श्रवणे। ( To hear )

श्रु, अनिट्, सक, प। शृणोति, शृणुतः, शृण्वन्ति। शृणोषि। शृणोमि। शृणुवः, शृण्वः; शृणुमः, शृण्मः। शृणोतु, शृणुताम्, शृण्वन्तु। शृणु। शृणवानि। शृणवाव,-वाम। शृणु-

* 'स्तु सु धूञ्भ्य' इत्यादौ वर्द्धमानः—साहचर्य्यनिरनुबन्धकपरिभाषयोरनित्यतामाश्रित्य लुग्विकरणत्वात् सौतिमपहाय सवतिसुनत्योर्द्वयोरपि ग्रहणमिति द्वयोरपीटमाह, तन्मते असावीदिति भाव्यम्। अन्येषां मते तत्र पूर्वापराभ्याम् अनुबन्धाभ्यां साहचर्य्यात् षुञ अभिषव इत्यस्यैव ग्रहणात् अन्यस्यो नेड़िति।

यात्। अशृणोत्, अशृणुताम्, अशृण्वन्। अश्रौषत्। श्रूयात्। शुश्राव, शुश्रुवुः, शुश्रुवतुः,। शुश्रोथ, शुश्रुवथुः,शुश्रुव, शुश्राव ; शुश्रव,शुश्रुम,शुश्रुव। श्रोता। श्रोष्यति। अश्रौषीत्,अश्रौष्टाम्, अश्रौषुः। अश्रौषीः। अश्रौषम्। कर्मणि—श्रूयते। अश्रावि, अश्रोषाताम्,अश्राविषाताम् ;अश्रोषत,अश्रौविषत। शुश्रूषते(१) शिश्रावयिषति,-ते। शुश्रावयिषति,-ते। शोश्रूयते। शोश्रवीति। शोश्रोति। श्रावयति। अशुश्रवत्, अशिश्रवत्। कर्मणि ण्यन्तात् अण्यन्ताच्च स्यसिजादिषु चिण्वदिड्वा प्रयोक्तव्यः। 'नित्यात्वतां स्वरान्ताना'मित्यादि यथाप्राप्ति सर्वत्र रूपं ला उदाहर्त्तव्यम्।

सम्मुपसर्गयोगे—संशृणुते, संशृण्वाते, संशृण्वते। संशृण्वे, संशृणुवहे, संशृण्महे। संशृणुताम्। समशृणुत। संशृण्वीत। आशीः—संश्रोषीष्ट। संशुश्रुवे। संश्रोता। संश्रोष्यते। समश्रोष्ट।

कर्मकर्त्तरि—स्नुवतिवत्। शुश्रुवान्—क्वसुः। देवदत्ताय गां प्रति शृणोति,आशृणोति—'प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्त्ता' इति सम्प्रदानम्।

विश्रावी—घिनिः। विश्रावः—घञ्। श्रूयते अनया इति श्रुतिः—क्तिन्। अस्त्रियाम्—श्रूयते अनेन इति—श्रवणं,

(१) प्रतिशुश्रूषति, आशुश्रूषति इत्यत्र'प्रत्याङ्भ्यां श्रुव' इति सन्निमित्तस्य तङो निषेध इति प्रत्याङोरुपसर्गयोर्ग्रहणात् देवदत्तं प्रतिशुश्रूषते। भाष्यादौ शुश्रूषत-इत्यत्र तङेव भवति। अत्र हि प्रत्याङौ कर्मप्रवचनीयौ 'लक्षणेत्थम्भूताख्यानभागवीप्सासु प्रतिपर्य्यनवः। 'आङ् मर्य्यादावचन' इत्येकसंज्ञाधिकारात् कर्मप्रवचनीयसंज्ञया उपसर्गसंज्ञा बाध्यते। लक्षणं चिह्नं,कश्चित्प्रकारंप्राप्त इत्थम्भूतस्तस्याख्यानमित्थम्भूताख्यानं, भागः स्वीक्रियमाणोऽंशः, उक्ता वीप्सा, विना तेनेति मर्य्यादा, सह तेनेत्यभिविधिः, वचनग्रहणादभिविधिरपि गृह्यते, तत्र प्रतिशुश्रूषत इत्यस्य देवदत्तः शुश्रूषया लक्षणमित्यर्थः। देवदत्तसकाशात् शुश्रूषत इति यावत्,भाष्यादौ शुश्रूषत इत्यस्य विना भाष्येण, सह वा तेन शुश्रूषत इत्यर्थः।

श्रोत्रम्। यदा नक्षत्रवचनस्तदा श्रवणेन युक्ता रात्रिरिति विग्रह्य 'नक्षत्रेण युक्तः कालः' इति विहितस्याणो लुपि—श्रवणा रात्रिः। श्रावणः। श्रावणिकः। श्रवः—असुन्। विश्रवसोऽपत्यम्—वैश्रवणः, रावणः। अपत्येऽणि विश्रवणरवणादेशौ। श्रोणिः—णित्।

श्रोत्रम्—ष्ट्रन्। श्रुत्वा। प्रतिश्रुत्य। श्रोतुम्। श्रोतव्यम्। वि—विश्रुतिः, विख्यातिः।

६१५। ध्रु, स्थैर्ये। (To be firm)

ध्रु, अनिट्, अक, प। ध्रवति। दुध्राव, दुध्रुवतुः। दुध्रोथ, दुध्रविथ। ध्रोता। ध्रोष्यति। लुङ्—अध्रौषीत्, दुध्रूषति। ध्रुवः—कः। अयं तुदादौ गत्यर्थ एव।

६१६। दु, द्रु, गतौ। (To go)

दु, द्रु, अनिट्, सक, प। दु—दवति। दुदाव, दुदुवतुः। दुदोथ, दुदविथ। दुदुविव। दोता। दोष्यति। आशीः—दूयात्। लुङ्—अदौषीत्, अदौष्टाम्, अदौषुः। दुदूषति। दोदूयते। दोदवीति, दोदोति। दावयति। अदूदवत्। दवः—अच्। सन्दावः—घञ्। नः—क्तः। दूनः—'दुतनिभ्यां दीर्घश्चे'ति तन्, दीर्घश्च। भावकर्मणोः—दूत्यम्, यः।

द्रु—द्रवति। दुद्राव। दुद्रुवतुः। दुद्रोथ। दुद्रुव। * द्रोता।

* क्रयादिपाठादनिट्त्वम्। ननु स्तु द्रु स्रुश्रुवां निषेधस्य थलोऽन्यत्र चरितार्थत्वात् थलि भारद्वाजनियमात् विकल्पः स्यात्। नचैवं शक्यते वक्तुं स्वादिव्यतिरिक्तानां ग्रहणं नियमार्थमिति स्वाङ्गानान्तु भारद्वाजनियमप्राप्तस्यैव इटो निषेधार्थमिति। एवं हि क्रयादिनियमात् थलोऽन्यत्र नित्यमिट् स्यात्। एवं तर्हि स्वादीनां ग्रहणं यः क्रयादिनियमात् इट्प्राप्तौ यश्चापि भारद्वाजनियमात् तयोर्द्वयोर्निषेधार्थं भविष्यति। न च नियमात् इट्प्राप्तौ यश्चापि भारद्वाजनियमात् तयोर्द्वयोर्निषेधार्थं भविष्यति। न च मन्तव्यं येन नाप्राप्तिन्यायेन क्रयादिनियमप्राप्तस्यैवेटो निषेधो युक्त इति। पुरस्तात् प्रतिषेधकाण्डारम्भादुभयोर्निषेध इति वृत्तावुक्तत्वात्। अथवा सर्वेषां नियमार्थत्वेऽपि न दोषः। अनेन नियमेन यः क्रयादिव्यतिरिक्तानां नित्यमिट्प्राप्तः सोऽचस्तास्वदिति.

द्राव्यति । द्रूयात् । अदुद्रुवत् । दुद्रूषति । दोद्रूयते । दोद्रवीति, दोद्रोति । द्रावयति । अदुद्रुवत्, अदिद्रवत् । 'बुधयुधे'त्यादिना नित्यं परस्मैपदम् । दिद्रावयिषति,दुद्रावयिषति । द्रूयते । अद्रावि । सन्द्रावः, उद्द्रावः, प्रद्रावः—घञ् । हरिद्रुः, मितद्रुः, शतद्रुः, 'द्रुप्रकरणे मितद्र्वादिभ्य उपसंख्यान'मिति । द्रुः । हरिद्रुणा प्रोक्तं छन्दः—हारिद्रविणः । द्रविणम्—द्रुनन् । द्रोणः—परिमाणादिः, । नः । स्त्रियाम्—द्रोणी । द्रोणस्य गोत्रापत्यम्—द्रौणायनः, द्रौणिः—'द्रोणपर्वतजीवन्तादन्यतरस्या'मिति फक्, तदभावे 'अत इञ्' इति इञ् । द्रोणं पचतीति—द्रौणः, द्रौणिकः । द्रुतः । द्रुतिः द्रवः । द्रावः । उप—उपद्रवः ।

६१७ । जि ज्रि, अभिभवे । ( To conquer, to overcome )

अभिभवो न्यूनीकरणम्, न्यूनीभवनञ्च । जि, ज्रि,अनिट्, प । जयति । जयतु, जयतात् । जयेत् । अजयत् । जिगाय, जिग्यतुः । जिगयिथ, जिगेथ । जिग्यथुः, जिग्य । जिगाय, जिगय ; जिग्यिव,-म । जेता । जेष्यति । अजेष्यत् । आशीः—जीयात् । लुङ्—अजैषीत्, अजैष्टाम्, अजैषुः । कर्मणि—जीयते । जेता, जायिता । जेष्यते, जायिष्यते । जेषीष्ट, जायिषीष्ट । अजायि, अजायिषाताम्, अजेषाताम् ; अजायिषत,अजेषत । जिगीषति,-ते । जेजीयते । जेजयीति, जेजेति । जापयति,-ते । अजीजपत्,-त ।

विपूर्वः परापूर्वश्चात्मनेपदी—विजयते,पराजयते ।विजिग्ये । पराजिग्ये । व्यजेष्ट, पराजेष्ट । विजिगीषते, विजिगीषमाणः इत्यादि ।

निषिध्यते । यत्र चायं निषेधः तत्रैव भारद्वाजनियम इत्यर्थादस्य नियमस्य क्रादयष्टकव्यतिरिक्तविषयत्वलाभात् । माधवीया ।

जित्वा। विजित्य। जितः। निर्जितः। जेतुम्। परा—पराजयः। वि—विजयः। विजितिः। धनञ्जयः—खच्। शत्रुजित्, प्रजित्—क्विप्। जिष्णुः—ग्स्नुक्। जयी—इनि। जित्वरः—क्वरप्। जैत्रम्—त्रण्।

ज्रि—ज्रयति। ज्रयतु। अज्रयत्। ज्रयेत्। जिज्राय, जिज्रियतुः। जिज्रयिथ, जिज्रेथ। जिज्रियिव। ज्रेता। ज्रेष्यति। आशीः—ज्रीयात्। अज्रैषीत्,अज्रैष्टाम्, अज्रैषुः। जिज्रीषति। जेज्रीयते। ज्राययति। अजिज्रयत्।

जु इति सौत्रो धातुः—जवति इत्यादि। अयं गत्यर्थः, वेगार्थ इत्यपरे। जवनम्—युच्। प्रजवी, इनि। जूः—क्विप्, दीर्घः। जवः—अप्। जूतिः—क्तिनि दीर्घः। जावयति। अजीजवत्। जिजविषति। जिजावयिषति।

## आत्मनेपदिनः।

### ६१८। ष्मिङ्, ईषद्धसने। ( To smile )

एतदादयः स्वरत्यन्ता अनुदात्ता आत्मनेपदिनः। स्मि (ङ) अनिट्, अक, आ। स्मयते। स्मयताम्, अस्मयत। स्मयेत। सिष्मिये। सिष्मियिढ्वे, सिष्मियिध्वे। सिष्मिये, सिष्मियिवहे, -महे। स्मेता। स्मेष्यते। स्मेषीष्ट। लुङ्—अस्मेष्ट,अस्मेषाताम्, अस्मेषत। सिस्मयिषते। सेष्मीयते। सेस्मयीति, सेस्मेति। स्मीयते। अस्मायि। मुण्डो विस्मापयते। व्यसिस्मपत। हेतुमद्व्यत—विस्माययति रूपेण। व्यसिस्मयत्।

स्मेरम्, सुखम्—रः। स्मित्वा। स्मितम्। स्मितः। स्मितिः। स्मयनम्। स्मयः। स्मेतुम्। स्मायी। स्मेता। स्मयमानः। वि—विस्मयः। अयमनादरे चुरादिः।

६१९। गुङ्, अव्यक्ते शब्दे। ( To sound indistinctly )

गु ( ङ ), अनिट्, अक, आ। गवते। जुगुवे। जुगुविषे। जुगुविवहे। गोता। गोष्यते। गोषीष्ट। अगोष्ट। अगोष्यत। जुगूषते। जुगूयते। जोगोति। गावयति। अजूगवत्। गुत्वा। गुतः। गोत्रम्—त्रप्रत्ययः। ब्राह्मणगोत्रा "कुत्सितानि कुत्सनै"रिति समासः। वृत्तिविषये गोत्रशब्दः कुत्सनवचनः। 'घरूपे'ति ह्रस्वः। गवाक्षः—पिनाकादिपाठात् आक्षः, क्रसुकार्थः। गवल्ल—माहिषं शृङ्गम्, बाहुलकात् अलः।

६२०। गाङ्, गतौ। (To go)

गा ( ङ ), अनिट्, सक, आ। गाते। गासे। गाथे। गाध्वे। गे। गाताम्। गास्व। गे, गावहै। गेत, गेयाताम्। गेथाः। गेय। अगात, अगाताम्, अगात। अगाथाः। अगे। अगावहि। जगे, जगाते, जगिरे। जगिषे, जगाथे, जगिध्वे। जगे, जगिवहे। गाता। गास्यते। आशीः—गासीष्ट। लुङ्—अगास्त, अगासाताम्, अगासत। अगास्थाः। अगासि। जिगासते। जेगीयते। गापयति। अजीगपत्। कर्मणि—गायते। अगायत। अगायि, अगायिषाताम्, अगासाताम्। गाता, गायिता। गास्यते, गायिष्यते। गायतीति शब्दे गतम्।

६२१। कुङ्, घुङ्, उङ्, ङुङ्, शब्दे। (To sound )

कु, घु, उ, ङु ( ङ ) अनिट्, अक, आ। कु—कवते। चुकुवे। कोता। लुङ्—अकोष्ट, अकोषाताम्, अकोषत। कोकूयते। घु—घवते। जुघुवे इत्यादि गवतिवत्।

उ—अवते। अवसे। अवताम्। आवत। अवेत। ऊवे। ऊविवहे। ओता। ओष्यते। आशीः—ओषीष्ट। औष्ट। माभवानोष्ट। ऊषिषते। आवयति। माभवानविवत्। ङु—ङवते। ञुङुवे इत्यादि गवतिवत्।

९२२। च्युङ्, ज्युङ्, प्रुङ्, प्लुङ्, गतौ।
( To go, to jump, to swim )

च्यु, ज्यु, प्रु, प्लु (ङ्) अनिट्,सक,आ। च्यवते। अच्यवत। च्यवेत। च्यवताम्। चुच्युवे। चच्युविषे। चुच्युविध्वे,-ढ्वे। च्योता। च्योष्यते। च्योषीष्ट। अच्योष्ट,-षाताम्,-षत। चुच्यूषते। चोच्यूयते। चोच्योति, चोच्यवीति। च्यावयति। अचुच्यवत्, अचिच्यवत्। चि (चु) च्यावयिषति। च्यवनम्—युच्, च्यवनो मुनिः। च्योत्नम्—त्नण्। ज्यु—ज्यवते इत्यादि च्यवतिवत्। प्रु-प्रवते। पुप्रुवे। प्रोता। अप्रोष्ट। प्रावयति। अपुप्रवत्, अपिप्रवत्। पु(पि) प्रावयिषति। प्लु—प्लवते। पुप्लुवे। प्लोता। प्लोष्यते। अप्लोष्यत। अप्लोष्ट,-षाताम्,-षत। प्लोषीष्ट। पुप्लूषते। पोप्लूयते। पोप्लोवीति, पोप्लोति। प्लावयति,-ते। अपुप्लवत्,-त। अपिप्लवत्,-त। पुप्लूषते। पुप्लावयिषति, पिप्लावयिषति। प्लावनम्। प्लूयते। अप्लावि। प्लुतः। प्लुत्वा। उत्प्लुत्य। प्लोतुम्। अव—अधःपतनम्। आ—अवगाहनम्। उत्—उल्लम्फः। उप—उत्पीड़नम्। परि—व्याप्तिः। विप्लवः।

९२३। रुङ्, गतिरेषणयोः। ( To go, to kill )

रु (ङ्) अनिट्, सक, आ। रवते। रुरुवे इत्यादि गवतिवत्, रावयति। अरीरवत्।

९२४। धृङ्, अवध्वंसने। ( To destroy )

- धृ (ङ्) अनिट्, सक,आ। धरते। दध्रे। अधृत। धृङ्वत्।

९२५। मेङ्, प्रति(णि)दाने। ( To return, to barter )

प्रति(णि) दानं विनिमयः। प्रत्यर्पणमित्यपरे। मे (ङ्) अनिट्, सक, आ। मयते। अपमयते, प्रणिमयते। मयताम्। मयेत। अमयत। ममे। ममिषे। माता। मातासे। मास्यते। मासीष्ट। अमास्त, प्रण्यमास्त। मित्सते। मेमी-

यते। मामाति। मामीतः। मापयति। अमीमपत्। मितम्। अपमित्य, अपमाय। अपमित्य निवृत्तम्—आपमित्यकम्, कक्। अण्—धान्यमायः।

६२६। देङ्, रक्षणे। ( To protect )

दे (ङ्) अनिट्, सक, आ। दयते। दयताम्। अदयत। दयेत। दिग्ये, दिग्याते, दिग्यिरे। दिग्यिषे। दिग्ये, दिग्यिवहे। दाता। दास्यते। दासीष्ट। लुङ्—अदित, अदिषाताम्, अदिषत। अदिथाः। दित्सते। देदीयते। दादेति, दादाति। दापयति। अदीदपत्। कर्मणि—दीयते। दाता, दायिता। दास्यते, दायिष्यते। अदायि, अदासाताम्, अदायिषाताम्, अदासत, अदायिषत। दासीष्ट, दायिषीष्ट। दत्तः। प्रदाय।

६२७। श्यैङ्, गतौ। ( To go )

श्यै (ङ्) अनिट्, सक आ। श्यायते। अश्यायत। श्यायेत। शश्ये, शश्याते, शश्यिरे। शश्यिषे। श्याता। श्यास्यते। श्यासीष्ट। अश्यास्त। शिश्यासते। शाश्यायते। शाश्येति, शाश्याति। श्यापयति। अशिश्यपत्।

अवश्यायः, प्रतिश्यायः—णः। शीतं मेदः, शीतो वायुः। श्यानः। श्यात्वा। श्यातुम्। प्रतिशीनम्। अभिशीनः, अभिश्यानः ; अवशीनः, अवश्यानः।

६२८। प्यैङ्, वृद्धौ। ( To grow )

प्यै (ङ्) अनिट्, अक, आ। प्यायते। पप्ये इत्यादि।

६२९। त्रैङ्, पालने। ( To protect )

त्रै (ङ्) अनिट्, सक, आ *। त्रायते। त्रायताम्। अत्रा-

* 'वाहि मानघदुःखित'मित्यादौ वायते इति क्विप्---वाः, तत आद्विलोपे रूपमिति दुर्घटवृत्तिः वातेवाचरतीत्यर्थः इति मनोरमा। अदादौ 'वा' धातुः, वोपः।

यत। त्रायेत। तत्रे, तत्राते। तत्रिषे। त्राता। त्रास्यते। त्रासीष्ट। अत्रास्यत। लुङ्—अत्रास्त, अत्रासाताम्, अत्रासत। त्रापयति। अतित्रपत्। तित्रासते। तात्रायते। तात्रेति, तात्राति। त्रायते। अत्रायि। त्रातः, त्राणः।

६३०। पूङ्, पवने। ( To purify )

एतदादयो डीङन्ता उदात्ता आत्मनेपदिनः। पू (ङ्) सेट्, सक, आ। पवते। पवताम्। अपवत। पवेत। पुपुवे। पुपुविषे। पविता। पविष्यते। पविषीष्ट। अपविष्ट। पिपविषते। पोपूयते। पोपवीति, पोपोति। पावयति। अपीपवत्। कर्मणि—पूयते। अपूयत। अपावि। अपाविषाताम्, अपविषातामित्यादि।

पूत्वा, पवित्वा; पूतवान्, पवितवान्; पूतम्, पवितम्। यङ्लुक्—पोपवित्वा, पोपुवितवान्, पोपुवितम्। पवमानः—शानच्। छन्—पोत्रम्, हलस्य सूकरस्य वा मुखम्। पवित्रः अस्त्रादिः, कर्त्तरि इत्रः। पवित्रं—दर्भः, करणे इत्रः। पूञ् क्र्यादौ, दिवादौ, चुरादौ च।

६३१। मूङ्, बन्धने। ( To bind )

मू (ङ्) सेट्, सक, आ। मवते इत्यादि पवतिवत्। मुमुवे। मूत्वा। मूतः।

६३२। डीङ्, विहायसा गतौ। ( To fly )

विहायसां गताविति च क्वचित् पठ्यते। डी, (ङ) सेट्, अक, आ। डयते। डयताम्। अडयत। डयेत। डिड्ये। डिड्यिषे। डयिता। डयिष्यते। डयिषीष्ट। अडयिष्ट। डिडयिषते। डेडीयते। डेडयीति, डेडेति। डाययति। अडीडयत्। डीयते। अडायि। डयित्वा। उड्डीय। क्तः—डीनः। उदगोयीचन्द्रमते भ्वादिगणीयस्य डयितः, डयितवान् इति। उद

—उड्डयनम् । उदडीयत । उड्डीनः । संडीनः । अव—अधोगतिः ।

## परस्मैपदी ।

६३२ । तॄ, प्लवनतरणयोः । ( To swim, to crose over)

उदात्तोऽयं परस्मैभाषः । तॄ, सेट्, सक, प । तरति । तरतु । अतरत् । तरेत् । ततार, तेरतुः, तेरुः । तेरिथ, तेरथुः, तेर । ततार, ततर ; तेरिव, तेरिम । तरिता, तरीता । तरिष्यति, तरीष्यति । अतरिष्यत्, अतरीष्यत् । आशीः—तीर्य्यात् । लुङ्—अतारीत्, अतारिष्टाम्, अतारिषुः । अतारीः, अतारिष्टम्, अतारिष्ट । अतारिषम्,-ष्व,-ष्म । तितीर्षति, तितरिषति, तितरीषति । तेतीर्य्यते । तातरीति, तातर्त्ति, तातीर्त्तः, तातिरति । तातर्षि ; तातीर्थः । तातर्त्तु, तातीर्त्तात् ; तातीर्त्ताम्, तातिरतु । तातीर्ह्हि । तातराणि । अतातः, अतातीर्त्ताम्, अतातरुः । तातीर्य्यात्, तातीर्य्याताम् । आशीः—तातीर्य्यात्, तातीर्य्यास्ताम् । णिच्—तारयति । अतीतरत् ।

व्यतिपूर्वक आत्मनेपदी । व्यतितरते । व्यतितरताम् । व्यत्यतरत । व्यतितरेत ।—तेरे ।—तरीता, तरिता ।—तरिष्यते,—तरीष्यते । व्यतितरिषीष्ट, व्यतितीर्षीष्ट । ( लुङ् ) व्यत्यतीर्ष्ट, व्यत्यतरिष्ट, व्यत्यतरीष्ट ।—तीर्षाताम्,—तरिषाताम्,—तरीषाताम् ।—षत, अन्ते नलोपो विशेषः ।

कर्मणि—तीर्य्यते । तेरे । अतीर्य्यत । तारिता, तरिता, तरीता । तारिष्यते, तरिष्यते, तरीष्यते । तारिषीष्ट, तरिषीष्ट, तरीषीष्ट, तीर्षीष्ट । अतारि, अतारिषाताम्, अतरिषाताम्, अतरीषाताम्, अतीर्षाताम् ।—षत । अतारिध्वम्, अतारिढ्वम्, अतरिध्वम्, (ढ्वम्) अतरिढ्वम्, अतरीध्वम्, अतरीढ्वम् ; अतीर्ढ्वम् ।

अयञ्च दीर्घविकल्पः प्रकृतस्येटो भवति। चिण्व[इव्व]दिटो न भवतीति।

रथन्तरम् साम—खच्। अवतारः—घञ्। तीर्त्वा। अवतीर्य्य। तरितुम्, तरीतुम्, तर्त्तुम्। तीर्णः, तीर्णवान्, तार्य्यम्। तरितव्यम्, तरीतव्यम्, तर्त्तव्यम्। तीर्णिः—क्तिन्। तरुणा—उनन्। ङीष्—तरुणी, तलुनी—सुरा। तरुः—उः। तालुः—उन् (ण्)प्रत्यये रेफस्य लत्वम्। तीर्थम्—थक्। तर्षः—उत्साहः, सः। तूर्य्यः—अभिलासः, निं। तरणिः—अनिः। तरः—अप्। आ—आतरः। वि—वितरः। अति—अतितरः, अतिक्रमः। अव—अवतरणम्। उद्—उत्तरणम्। निर्—निस्तारः। वि—विस्तारः। प्र—णिच्-प्रतारणा। वितरणम्। सम्—सन्तरणम्। सन्-उ—तितीर्षुः ३। अ—तितरीषा—३।

## आत्मनेपदिनः।

६३४। गुप, गोपने ( To hide, to despise ) तिज, निशाने। ( To whet ) मान, पूजायाम्। ( To worship, to investigate ) बध बन्धने * ( To bind, to loathe ) गुप्, तिज्, मान्, बध्, सेट्, सक, आ। गुप्—जुगुप्सते।

---

* गुप गोपनकुत्सनयोरिति मैत्रेय.। एते च गुपादयः 'गुप्तिज्किद्भ्यः सन्' 'मानबधे'त्यादिना नित्यसनन्ताः। तथाच भाष्यं—नैतेभ्यः प्राक् सन आत्मनेपदं, नापि परस्मैपदम् पश्याम इति। अयञ्च सन् गुपेर्निन्दायां, तिजेः क्षमायाम् मानेर्जिज्ञासायां वन्धेश्च वैरूप्य इति वृत्तावुक्तम्। अत्रापठितेष्वर्थेषु न च सनस्ति, न चैषां केवलानां पठितेष्वर्थेषु प्रयोगः पूर्वोक्तभाष्यवार्त्तिकविरोधात्। किञ्च भाष्येऽनुबन्धकरणसामर्थ्यादवयवेऽकृतं लिङ्ग' समुदायस्य विशेषकं भवतीति सनन्तादात्मनेपदसमर्थनञ्च विरुद्ध्येत, तथा निन्दादेरन्यत्र केवलानां गुपादीनां प्रयोगे तत्रैवानुबन्धाश्रवणस्यात्मनेपदार्थत्वेन चरितार्थत्वात् कथं सामर्थ्यं कथं वानुबन्धत्वमेवञ्च गोपते,

जुगुप्सताम् । जुगुप्सत । जुगुप्सेत । जुगुप्साञ्चक्रे,—क्राते, —क्रिरे, इ । जुगुप्सिता । जुगुप्सिष्यते । जुगुप्सीष्ट । अजुगुप्सिष्ट, अजुगुप्सिषाताम्, अजुगुप्सिषत । जुगुप्सिषते । जुगुप्सयति । अजुजुगुप्सत् । जुगुप्सा । जुगुप्सुः । जुगुप्सितः ।

तिज्—तितिक्षते । तितिक्षताम् । तितिक्षेत । अतितिक्षत । तितिक्षाञ्चक्रे—३ । तितिक्षिता । अतितिक्षिष्ट इत्यादि । तितिक्षा । तितिक्षुः ।

मान्—मीमांसते । मीमांसताम् । अमीमांसत । मीमांसेत । मीमांसाञ्चक्रे,-३ । मीमांसिता । अमीमांसिष्ट । मीमांसुः । मीमांसा । मीमांसितः । मीमांसकः ।

बध्—बीभत्सते । बीभत्सताम् । अबीभत्सत । बीभत्सेत । बीभत्साञ्चक्रे—३ । बीभत्सिता । बीभत्सिष्यते । अबीभत्सिष्ट । बीभत्सिषीष्ट । बीभत्सयति,-ते । अबीभत्सत्,-त । बीभत्सिषते । बीभत्स्यते । अबीभत्सि । बीभत्सः । बीभत्सा ।

६२५ । रभ, राभस्ये । ( To begin )

राभस्यमुपक्रमः । एतदादयो हदेत्यन्ता अनुदात्ता अनुदात्तेतः । रभ, अनिट्, सक, आ । रभते । रभताम् । अरभत, अरभताम्, अरभत । रभेत । रेभे, रेभाते, रेभिरे । रेभिषे ।

तेजते इति स्वाम्युक्तः केवलानां तिङः प्रयोगः प्रत्युक्तः । अत्र नन्दिमैत्रेयौ—नह्य-तेभ्य इत्यादिना भाष्येण तिङामभावः प्रतीयत इति निन्दादेरन्यत्र कृतमुदाहरणम् । हरदत्तस्तु तन्नानुमन्यते, यदाह---पूर्ववत्सन' इत्यत्र कथं तर्हि जुगुप्सादेः समुदायस्यानुदात्तेत्त्वमत आह---अवयव इति अवयवे ह्यचरितार्थं लिङ्गं सामर्थ्यादवयविनो विशेषकं भवति । यद्येवं गोपयति, तेजयतीत्यादावपि प्रसङ्गः । अतमुच्यते---गुप गोपन-इत्यस्य सन्विधौ ग्रहणं, तस्माच्च नित्यः सनेव भवति, अन्यथा निष्ठाया अन्यत्र यथा णिज्भवति, तथा लडादिरपि स्यात् । एवं तिजिप्रभृतयोऽपि क्षमाद्यर्थे यत्र सन्निष्यते तत्रानुदात्तेतो नित्यसन्नन्ताश्च । क्षमादिभ्योऽन्यत्र यत्र णिज् दृश्यते, तत्राननुबन्धका एव चुरादौ पठितव्या इति ।

रेभाथे, रेभिध्वे। रेभे। रेभिवहे। रेभिमहे। रब्धा। रप्स्यते। रप्सीष्ट। अरब्ध, अरप्साताम्, अरप्सत। रिप्सते। रारभ्यते। रारम्भीति, रारब्धि। रारब्धः। रारभति। रारम्भाणि। रारम्भासः। अरारप्। रम्भयति। अररम्भत्। कर्म्मणि—रभ्यते। अरम्भि। प्रायेणायमाङ् पूर्वकमेव प्रयुज्यते।

रम्भा—टाप्। रभसः—असच्। राभस्यम्—निपातः। रब्ध्वा। आरभ्य। रब्धः। रब्धः रब्धुम्। रब्धव्यम्। आ—आरम्भः। आरम्भणम्। परि—परीरम्भः, परिरम्भः—आलिङ्गनम्। सम्—संरम्भः—कोपः।

६३६। डु लभ ष, प्राप्तौ। ( To obtain )

लभ् (डु, ष) अनिट्, सक, आ। लभते इत्यादि सर्वं रमतिवत्। आलभ्या गौः। उपलभ्या विद्या—यत्, उपात् प्रशंसार्थे मः। प्रलम्भः—उपसर्गात् खचि नुम्। लाभः,—घञ्। सुलभः, दुर्लभः; सुलाभः, दुर्लाभः। ईषत्प्रलम्भः। सुप्रलम्भः ईषल्लाभः। अलाभि, अलम्भि। लाभंलाभं, लम्भंलम्भं—णमुल्। प्रालम्भि। (डु)लाभेन निर्वृत्तम्—लब्धिमम्। (ष)अङ्—लभा। लब्धिः—क्तिन्। क्त्वा—लब्ध्वा। णिच्—लम्भयित्वा, लम्भितः, लम्भनम्। आलम्भः—स्पर्शः। उप,आ—उपालम्भः,—भर्त्सनम्। विप्र-सम, आ—समालम्भः—अनुलेपनम्। उप—उपलब्धिः। विप्रलम्भः—प्रतारणा।

६३७। ष्वनृज, परिष्वङ्गे। ( To embrace )

स्वनृज्, अनिट्, अक, आ। स्वजते, प्रतिष्वजते, परिष्वजते, निष्वजते, विष्वजते। स्वजताम्। अस्वजत। पर्य्यस्वजत, पर्य्यष्वजत इत्यादि। स्वजेत। सस्वजे, सस्वञ्जे। सस्वजिषे, सस्वञ्जिषे प्रतिसस्वजे। सङ्क्ता। स्वङ्क्ष्यते। स्वङ्क्षीष्ट। अस्वङ्क्त, अस्वङ्क्षाताम्, अस्वङ्क्षत। प्रत्यष्वङ्क्त इत्यादि।

सिस्वङ्क्ते । सास्वज्यते । सास्वङ्क्ति, सास्वञ्जीति । सास्वक्तः । सास्वजति । सास्वग्धि । असास्वन् । स्वञ्जयति । असस्वञ्जत् । स्वज्यते । अस्वञ्जि । स्वक्तः । स्वङ्क्त्वा । परिष्वज्य । स्वङ्क्तुम् ।

६३८ । हद, पुरीषोत्सर्गे । ( To discharge faces )

हद्, अनिट्, सक, आ । हदते । हदताम् । अहदत । हदेत । जहदे । जहदिषे । हत्ता । हत्स्यते । हत्सीष्ट । अहत्त, अहत्साताम्, अहत्सत । जिहत्सते । जाहद्यते । जाहदीति, जाहत्ति । हादयति । अजीहदत् । हन्नः ।

## परस्मैपदिनः ।

६३८ (क) । ञि क्ष्विदा अव्यक्तशब्दे ।

( To sound indistinctly )

अयमुदात्त उदात्तेत् । क्ष्विद्, (ञि, आ) सेट्, अक, प । क्ष्वेदति । क्ष्वेदतु । अक्ष्वेदत् । क्ष्वेदेत् । चिक्ष्वेद । चिक्ष्वेदिथ । चिक्ष्विदिव । क्ष्वेदिता । क्ष्वेदिष्यति । क्ष्विद्यात् । अक्ष्वेदीत्, अक्ष्वेदिष्टाम्, अक्ष्वेदिषुः । चिक्ष्विदिषति, चिक्ष्वेदिषति । चेक्ष्विद्यते । चेक्ष्विदीति । चेक्ष्वेत्ति । क्ष्वेदयति । अचिक्ष्विदत् । क्ष्विदित्वा, क्ष्वेदित्वा । क्ष्विण्णः । क्ष्विण्णमनेन, क्ष्वेदितमनेन । प्रक्ष्विण्णः, प्रक्ष्वेदितः । ञि क्ष्विदा स्नेहनमोचनयोरिति दिवादौ ।

६४० । स्कन्दिर्, गतिशोषणयोः । ( To go, to suck out )

इतो मिहन्ता उदात्तेतोऽनुदात्तेतः । स्कन्द्,(इर्)अनिट्, सक, प । स्कन्दति, परिष्कन्दति, परिस्कन्दति । स्कन्दतु । अस्कन्दत्, स्कन्देत् । चस्कन्द, चस्कन्दतुः, चस्कन्दुः । चस्कन्दिथ, चस्कन्थ । चस्कन्दिव । स्कन्ता । स्कन्त्स्यति । अस्कन्त्स्यत् । आशीः—स्कद्यात् । (इर्)अस्कदत्, अस्कान्त्सीत्;

अस्कदताम्, अस्कान्ताम् ; अस्कदन्, अस्कान्त्सुः। स्कद्यात्। कर्मणि—स्कद्यते। अस्कन्दि। चिस्कन्त्सति। चनीस्कद्यते। चनीस्कन्दीति, चनीस्कन्ति। चनीस्कन्तः; चनीस्कदति। स्कन्दयति। अचस्कन्दत्।

गेहावस्कन्दम्, गेहं गेहमवस्कन्दम्, गेहमवस्कन्दमवस्कन्द-मास्ते—णमुल्। क्रियाभेदे क्त्वापीति—गेहमवस्कन्द्येत्याद्यपि। तृन्—विष्कन्ता, विस्कन्ता। विस्कन्नः। तृन्—परिष्कन्ता, परिस्कन्ता क्ति—परिष्कन्नः परिस्कन्नः। परिस्कन्दः, 'परि-स्कन्दः प्राच्यभरतेष्वि'त्यषत्वम्। स्कन्त्वा। प्रस्कन्द्य। उत्कन्दो नाम रोगः—'उदः स्थास्तम्भो'रिति पूर्वसवर्णः।

अव—अवस्कन्दः—अवरोधः। आ—आस्कन्दः—,अश्व-गतिविशेषः। अभि—पीड़नम्। परि—परिभ्रमणम्। प्र—पतनम्। वि—परिभ्रमणम्।

९४१। यभ, विपरीतमैथुने। ( To cohabit )

यभ मैथुन इति दुर्गः पठति। यभ, अनिट्, अक, प। यभति। यभतु। अयभत्। यभेत्। ययाभ, येभतुः, येभुः। येभिथ। ययब्ध। येभिव। यब्धा। यप्स्यति। आशीः—यभ्यात्। अयाप्सीत्, अयाब्धाम्: अयाप्सुः। यियप्सति। यायभ्यते। यायब्धि। याभयति। अयीयभत्। यब्ध्वा। यभ्यम्—यत्। जप जभ इति शाकटायनः। जभ्यात इति शान्तविनामि मतः।

९४२। णम्, प्रह्वत्वे शब्दे च।
( To bow to,to bend. to sound )

नम्, अनिट्, अक, प। नमति, प्रणमति। नमतु। अनमत्। नमेत्। ननाम, नेमतुः, नेमुः,प्रणेमुः। नेमिथ, ननन्थ। नन्ता। नंस्यति। अनंस्यत्। आशीः—नम्यात्। अनंसीत्। अनंसिष्टाम्,

अनंसिषुः। कर्म्मणि—नम्यते। अनामि कर्म्मकर्त्तरि—नमते, अनंस्त दण्डः स्वयमेव। निनंसति। नंनम्यते। नंनमीति, नंनन्ति, नंनन्तः। नंनमति। नंनन्वः, नन्नमः। अनंनन्, अनन्नताम्। नमयति, नामयति। अनीनमत्। प्रण-मयति।

नम्रः—रः। नेमिः—मिक्। प्रणत्य, प्रणम्य। नून् नम-यति—न्यूनमो नाम कश्चित्। नमः—असुन्। नमस्यति पूजयतीत्यर्थः—'नमसः पूजायामिति—'नमोवरिवश्चित्रङः क्यजि'ति क्यच्। नमस्कृत्वा, नमस्कृत्य। नमो देवेभ्यः। नम्रा—त्वचि मकारस्य पकारो निपात्यते। नाकुः—वल्मीकः। नाका-देशश्च। नतः। नतिः। नमनम्। अव—अवनतिः। उत्—उन्नतिः। उप—उपस्थितिः। प्र—प्रणतिः। परि—परि-णामः विपरि—विपरिणामः।

५४३। गम्लृ, सृप्लृ, गतौ। ( To go)

गम्, सृप् (लृ) अनिट्,सक,प। गम्—गच्छति। गच्छसि। गच्छामि। गच्छतु। गच्छ। गच्छानि। अगच्छत्, अगच्छः, अगच्छम्। गच्छेत्, गच्छेताम्,गच्छेयुः। गच्छेः, गच्छेतम्,-त। गच्छेयम्,-व,-म। जगाम, जग्मतु जग्मुः। जगमिथ, जगन्थ,—जग्मथुः, जग्म। जगाम, जगम ; जग्मिव, जग्मिम। लुट्—गन्ता। लृट्—गमिष्यति। आशीः—गम्यात्। लृङ्—अगमिष्यत्, अगमिष्यताम्, अगमिष्यन्। लुङ्—अगमत्, अगमताम्, अगमन्। अगमः, अगमतम्, अगमत। अगमम्, अगमाव, अगमाम। कर्म्मणि—गम्यते, अगामि। जिग-मिषति। जिगमिषाञ्चकार-२। अजिगमिषीत्। जङ्गम्यते। जङ्गमीति, जङ्गन्ति ; जङ्गतः, जङ्गमति। जङ्गमीमि, जगन्मि, जंगन्वः। (हि) जंगहि [ जंग ] अजङ्गन्। गत्यर्थात् कौटिल्य

एव यङ् गमयति । अजीगमत् । गमयाञ्चकार । देवदत्तं यज्ञदत्तः ग्रामं ग्रामाय वा । *

सम्पूर्वोऽकर्मक आत्मनेपदी । संगच्छते । सङ्गच्छताम् । समगच्छत । सङ्गच्छेत । संजग्मे, संजग्माते, संजग्मिरे । संजग्मिषे । सङ्गन्ता । सङ्गंस्यते । आशीः—सङ्गंसीष्ट, सङ्गसीष्ट । लुङ्—समगत, समगंस्त ; समगसाताम्, समगंसाताम् ; समगसत, समगंसत । समगथाः, समगंस्थाः ; समगसाथाम्, समगंसाथाम् ; समगध्वम् ( ढ्वम् ) समगंध्वम् (ढ्वम्) । समगसि, समगंसि ; समगस्वहि, समगंस्वहि ; समगस्महि, समगंस्महि । "हनः सिच्यात्मन" इत्यादिना सिजाशिषोः परयोः मलोपो विभाषया ।

सुतङ्गमो नाम कश्चित्, संज्ञायां खच् । सुतङ्गमेन निवृत्तः सौतङ्गमिः । अन्तगः—कर्मोपपदे डः । एवं सर्वत्रगः, पन्नगः । उरसा गच्छतीति—उरगः । सुखेन गच्छतीति—सुगः । एवं दुर्गः । सुगमः, दुर्गमः—कर्मणि खल् । भावे खलि क्लीबं । निर्गच्छन्त्यत्रेति—निर्गो देशः, डः । अन्यत्र निर्गमनम्—ल्युट । ग्रामगः—डः । सितं गच्छतीति—सितङ्गमः, हस्ती । विहायसा गच्छतीति—विहङ्गमः—खच् । विहङ्गः—डः । विहगः—डः गामुकः—उकञ् । गत्वरः—क्वरप् ।

---

* 'ण्यन्ते कर्त्तुश्च कर्मणः' इत्यभिधानात् कर्मविहिताः प्रत्ययाः प्रयोज्ये भवन्तीति प्रयोज्यात् प्रथमा---ग्रामं देवदत्तः यज्ञदत्तेन इत्यादि । एवं गमयितव्यः ग्रामं देवदत्तो यज्ञदत्तेन इत्यादि । अत्र कृद्योगलक्षणा षष्ठी 'शत्यर्थकर्मणी'त्यत्र द्वितीयाग्रहणात् बाध्यते । यद्वा 'क्तत्याना'मित्यत्र योगविभागेन उभयप्राप्तौ कृत्ये षष्ठी नेत्युक्तत्वात् कर्त्तृवत् कर्मण्यपि षष्ठ्या नैव प्रसङ्गः । ग्रामं गन्ता, गमयिता इत्यादौ पुनर्द्वितीयाग्रहणादेव षष्ठ्या बाधः । अचामध्वनीति पर्युदासात् द्वितीयाषष्ठ्यावेव भवतः । आगमयते माणवकः---कालं हरति, न त्वरते इत्यर्थः । आगमयतेः क्षमायामात्मनेपदम् । क्षमा उपेक्षा कालहरणमिति ।

स्त्रियां—गत्वरी। जग्मिः—किक्। जगत्—क्विप्। स्त्रियां ङीष्—जगती। जगत्या अपत्यं—जागतम्। जगत्येव—जागतं, छन्दः। अध्वगत्, कलिङ्गगत्—क्विप्। अग्रे गच्छतीति—अग्रेगाः, विट्, अग्रेगूः, क्विः,जश्च। गमी—इन्। आगामी—णिन्। ग्रामगमी—इन्। ग्रामगामी—णिन्। गमः—निगमः, आगमः—अप्।

गत्वा। आगत्य आगम्य। गतम्। गतः। ग्रामगतः। तृन् [च्] गन्ता। स्त्रियां—गन्त्री। क्लीवे—गन्तृ। गात्रम्, गातम्—ष्ट्रन्। सुगात्री, सुगातां। गौः—डोः। गवां समूहः—गव्या, यः, गोत्रा—त्रः। गोत्रोऽस्यास्तीति—गौत्रिकः। गोमी—इन्। गोर्विकारोऽवयवो वा—गव्यम्। गोर्निमित्तं संयोग उत्पातो वा—गव्यः, यत्। गोः पुरीषं—गोमयम्, मयट्। दाराश्च गावश्च—दारगवम्। अनुगवम्—शकटम्। आगवीनः—खप्रत्ययेन निपातः। अनुगवीनः—गोपालकः। तिष्ठन्ति गावो यस्मिन् काले दोहनाय—तिष्ठद्गु। वहन्ति आगच्छन्ति गावः—यस्मिन् वहद्गु। एवं अयद्गु। परमगवः, परमगवी। पञ्चानां गवां समाहारः—पञ्चगवम्। चित्रा गौर्यस्य—चित्रगुः। गङ्गा—गन्। गङ्गाया अपत्यं—गाङ्गेयः।

गतिः। गन्तुम्। गच्छन्, गच्छन्ती, गच्छत्। गन्तुः—तुन्। गन्तव्यः। गमनीयः। गम्यः। प्र—प्रस्थानम्। आ—आगमनम्। अप—अपसरणम्। सम्—सङ्गतिः। अनु—अनुसरणम्। अव—बोधः। निर्—निर्गमः। अभि—प्राप्तिः। वि—त्यागः। सु—सुगमः। उद्—ऊर्ध्वगमनम्। अति—अतिक्रमः।

सृप्, अनिट्—सर्पति। सर्पतु। असर्पत्। सर्पेत्। ससर्प, ससृपतुः, ससृपुः। ससर्पिथ। ससृपिव। सर्प्ता, स्रप्ता, सर्प-

स्यति, स्राप्स्यति । सृप्यात् । लुङ्—असृपत्, असार्प्सीत्, अस्राप्सीत्; असृपताम्, असार्प्ताम्, अस्राप्ताम्; असृपन् असार्प्सुः, अस्राप्सुः । सिसृप्सति । सरीसृप्यते । सरीसृपीति, सरीसृप्ति, सरिसृप्ति । सर्पयति । अससर्पत्, असीसृपत् । कर्मणि—सृप्यते । असर्पि ।

सरीसृपः—यङ्लुगन्तात् अच् । सर्पः—अच् । सृप्तः । सृप्ता, सर्प्ता, तृन् । पीठेन सृप्तुं शीलमस्य—पीठसर्पी, णिनिः । सर्पिः—इस् । प्रियसर्पिष्कः—नित्यं कप् । सृप्रः—रक् । सृप्त्वा, प्रसृप्य । सृप्तः । अनु—अनुसर्पणम् । विसर्पः—रोगः । उप—उपसर्पणम्—समीपगमनम् । उद्—विस्तारः ।

६४४ । यम, उपरमे । ( To check, to stop )

उपरमो निवृत्तिः । अत्र मैत्रेयः—उदित्त्वमस्य केचिदिच्छन्ति । यम्, अनिट्, अक, प । यच्छति । यच्छतु । अयच्छत् । यच्छेत् । लिट्—ययाम, येमतुः, येमुः । ययन्थ, येमिथ । ययाम, ययम ; येमिव, येमिम । यन्ता । यंस्यति । आशीः—यम्यात् । लुङ्—अयंसीत्, अयंसिष्टाम्, अयंसिषुः । अयंसीः, अयंसिष्टम्, अयंसिष्ट । अयंसिषम्, अयंसिष्व, अयंसिष्म । यियंसति । यंयम्यते, यंयन्ति, यंयमीति । यंयन्तः । भावे—यम्यते । अयमि, अयामि । यमयति ।—ब्राह्मणान् भोजयति वेष्टते वा इत्यर्थः । अयीयमत् । भोजने अमन्तत्वात् मित्त्वम् ( कौ ८६ ) अस्य च 'यमोऽपरिवेषणे' इति परिवेषणादन्यत्र मित्त्वनिषेधात् आयामयते, आयामयति इत्यादि । ( १ ) आयच्छते, दीर्घो भवति, इति वार्थः । आयच्छते स्वरू-

( १ ) कौमुदीमते अन्नादुपसर्पणे वेष्टने च मित्त्वम्—कौ ८६ । यमयति चन्द्रं परिवेष्टते—कौ १७४ । 'न पादम्यत्याङ्यमाङ्यसपरिमुहरुचिनृतिवदवसः' 'आङो यमहनः' इत्यकर्मका'दिति कर्त्रभिप्रायप्राप्तस्य परस्मैपदस्य निषेध इति यथायोगमात्मनेपदपरस्मैपदे भवतः ।

पाणि—द्राघयति, व्यापारयति वेत्यर्थः । अकर्मकात् स्वाङ्ग-कर्मकाच्चाङ्पूर्वादस्मादात्मनेपदम् । (१) संयच्छते व्रीहीन्, उद्यच्छते भारम्, आयच्छते वस्त्रम् "समुदाङ्भ्यो यमो ग्रन्थे" इति समादिभ्यो यमेरात्मनेपदम् । (२) यदायं यमिर्गन्धने वर्त्तते,गन्धनं सूचनं परेण प्रच्छाद्यमानस्य आविष्करणं, तदा-'यमो गन्धने' इत्यात्मनेपदम् । (लुङ्) उदायत, उदायसाता-मित्यादि । उद्वाहार्थत्वे तु (३) उपयच्छते कन्यां परिणयती-त्यर्थः । उपायत, उपायंस्त कन्या मित्यादि,विभाषया सलोपः ।

यम्यम्—यत् । उपसर्गात्तु प्रयाम्यम्—ण्यत् । त्वया नियम्या इति प्रयोगः नियमशब्दात् करोतीति णौ यति द्रष्टव्यः । धातोर्णौ 'यमोऽपरिवेषणे' इति मित्त्वनिषेधात् वृद्धया भाव्यम् । वाचंयमः—खच् । संयमः—अच् । संयामः—घञ् । एवं समुपनिविभ्योऽप्युदाहार्य्यम् । संयत्—सम्पदादित्वात् 'अन्ये-भ्योऽपि दृश्यते' इति वा क्विप् । यच्छतीति,—यमः; अच् ।

(१) यदा तु कर्त्र भिप्रायत्वमुपपदेन प्रतीयते, तदा 'विभाषोपपदेन प्रतीयमाने' इति स्वान् व्रीहीन् संयच्छतीत्यपि । इहाङो ग्रहणमस्वाङ्गकर्म्मकार्थम् । स्वाङ्गकर्म्मका-दाङो यमहन' इत्येवसिद्धम् । अयस्थ इति वचनात् उद्यच्छति चिकित्सां वैद्य इति, अत्र परस्मैपदमेव, चिकित्सामधिगन्तुमुद्यमं करोतीत्यर्थः ।

(२) 'उपाद्यमः स्वीकरणे' इति आत्मनेपदम् । अत्र भाष्यम्,इह कस्मान्न भवति स्वं शकटं तमुपयच्छति, अयं यदा स्वं करोति, तदा भवितव्यमेव । अत्र वृत्तिकारशिव-स्वामिभ्यामिदं भाष्योक्तमस्वस्य स्वत्वेन करणं प्रसिद्धिवशात् पाणिग्रहणविषय उपसंहृ-तम् । कैयटे तु निष्पादनलक्षणोऽत्र करोत्यर्थो गृह्यत इति सामान्येनापि वार्त्तिक-कारेण पाणिग्रहणविशिष्टं स्वकरणम् शिवस्वामिनयादित्याहुचतुः, प्रसिद्धत्वादुपायंस्त नतीरित्यादि प्रयोगस्तु साधर्म्यादित्युक्तम् । भट्टिकाव्ये "शस्त्राण्युपायंसत जित्वराणी"ति सामान्येन युज्यते ।

(३) 'हनेः सिच्यात्मने दृष्टः सूचनार्थे यमेरपि । विवाहे तु विभाषैव सिजात्मनेपदे-युक्ता । कातन्त्रम् ।

याम्यम्—प्राग्दीव्यतीयेष्वर्थेषु 'यमेश्चेति वक्तव्य'मिति ण्यः। यमुना—'अर्जियमिशीङ्भ्यश्चे'ति उनन् प्रत्ययः। यन्त्रम्—'ष्ट्रन्'त्यादिना त्रः।

६४५। तप, सन्तापे। ( To heat )

तप्, अनिट्, सक, प। तपति। तपतु। अतपत्। तपेत्। तताप, तेपतुः, तेपुः। तेपिथ, ततप्थ; तेपथुः, तेप। तताप, ततप; तेपिव, तेपिम। तप्ता। तप्स्यति। आशीः—तप्यात्। लुङ्—अताप्सीत्, अताप्ताम्, अताप्सुः। तितप्सति। तातप्यते तातप्ति। तापयति। अतीतपत्। चौरं सन्तापयति। उत्तपते। वितपते—अकर्मकात् स्वाङ्गकर्मकाच्च आत्मनेपदम्। अकर्मकत्वं भासनार्थत्वेन। यदाऽयमस्वाङ्गकर्मकस्तदा,उत्तपति सुवर्णम्। तप्यते तपस्तापसः, (लुङ्) अतप्त तपस्तापसः—तपः कर्मकस्य तपेरात्मनेपदम्, अत्र तपेरर्जनमर्थ इति। अत्रानुतापग्रहणस्य कर्मकर्त्रर्थत्वादनुतापे—अन्ववतप्त पापेन कर्मणा। अनुतापादन्यत्र उदतापि सुवर्णं सुवर्णकारेणेति। अयमैश्वर्ये दिवादौ, दाहे चुरादौ।

तप्यम्—यत्। ललाटन्तपः—आदित्यः। शत्रुन्तपः, द्विषन्तपः। तपः—असुन्। तपश्चरति—तपस्यति, क्यङ्। क्यङन्तात् अ—तपस्या। तपः शीलमस्य—तापसः, 'छत्रादिभ्यो ण' इति णः। स्त्रियाम्—तापसी। तपस्वी—मत्वर्थे विनिः। तापः—घञ्। सन्तापाय प्रभवति—सान्तापिकः। रोगः, ठञ्। निष्टपति। निष्टप्तम्—अपौनःपुन्ये षत्वम्।

६४६। त्यज, हानौ। ( To forsake )

हानिस्त्यागः। त्यज्, अनिट्,सक, प। त्यजति। त्यजतु। अत्यजत्। त्यजेत्। तत्याज, तत्यजतुः। तत्यजिथ। तत्यक्थ। तत्यजिव। त्यक्ता। त्यक्ष्यति। अत्यक्ष्यत्। आशीः—त्यज्यात्।

लुङ्—अत्याक्षीत्, अत्याक्ताम्, अत्याक्षुः । तित्यक्षति । तात्यज्यते । तात्यजीति, तात्यक्ति । त्याजयति । अतित्यजत् । कर्मणि—त्यज्यते । अत्याजि । त्यक्तः । त्यक्त्वा । सन्त्यज्य । त्यक्तुम् । त्यागी—घिनुण् । ण्यत्—त्याज्यम् । ण्यति कुत्वाभावः । त्यद्—'त्यजियजितनिभ्योडिदित्' इत्यद्रिप्रत्यये डित्त्वाट्टिलोपः । स्यः, त्यौ त्ये इत्यादौ सर्वनामकार्य्यम् । तस्येदं—त्यदीयम् । त्यस्यापत्यं—त्यादायनिः ।-स्यश्च देवदत्तश्च—त्यौ । स च स्यश्च—तौ । स्त्रियां—स्या इति भवति । सुधाकरादिमतेऽयं ण्यन्तो द्विकर्मक इति । दृश्यते प्रयोगश्च—'त्याजितैः फलमुत्खातैः' 'पूषोषणा त्याजितमात्रभाव' इत्यादि । 'अकथितञ्चे'त्यत्र गौः पयस्त्यजति,गवा पयस्त्याजयतीति प्रयुञ्जानयोः कैयटहरदत्तयोः प्रयोज्यस्य कर्म्मत्वमनभिमतम् ।

६४७ । षन्ज्, सङ्गे । ( To cling to )

सन्ज, अनिट्, अक, प । सजति । सजतु । असजत् । सजेत् । ससञ्ज । ससञ्जतुः । सङ्क्थ, ससञ्जिथ । ससञ्जिव । सङ्क्ता । सङ्क्ष्यति । आशीः—सज्यात् । लुङ्—असाङ्क्षीत्, असाङ्क्ताम्, असाङ्क्षुः । सिसङ्क्षति । अभिषजति 'उपसर्गादि'ति षत्वम् । अभ्यषजदित्यादौ तु 'प्राक् सितादड्व्यवायेऽपी'ति षत्वम् । अभिषिषङ्क्षतीत्यत्र 'स्तौतिण्योरेवे'ति नियमं बाधित्वा 'स्थादिष्वभ्यासेन चे'त्यादिना परस्य षत्वम् । पूर्वस्य तु—'उपसर्गादित्यनेनैव सिद्धम् ।अङ्गुलौ सङ्गोऽस्याः—अङ्गुलिषङ्गा, यवागूः । 'समासेऽङ्गुले'रिति षत्वम् । प्रासङ्गं वहति—प्रासङ्ग्यः—द्वितीयान्ताद्वहत्यर्थे यत् । प्रासङ्गो युगाद्यासङ्गः—निषङ्गः—घञ् । सक्थि—'असिसञ्जिभ्यः क्थिनि'ति क्थिन् । स्त्री—सक्थिनी । तृतीयादौ सक्थ्नेत्यादि । प्रियसक्थ इत्यादिषु समासान्तविधयोऽनुसन्धेयाः ।

६४८। दृशिर्, प्रेक्षणे। ( To see )

दृश्, अनिट्, सक, प। पश्यति, पश्यतः, पश्यन्ति। पश्यतु, पश्यताम्, पश्यन्तु। पश्येत्, पश्येताम्, पश्येयुः। अपश्यत्, अपश्यताम्, अपश्यन्। ददर्श, ददृशतुः, ददृशुः। ददर्शिथ, दद्रष्ठ, ददृशथुः, ददृश। ददर्श, ददृशिव, ददृशिम। द्रष्टा। द्रक्ष्यति। आशीः—दृश्यात्। लुङ्—अदर्शत्, अदर्शताम्, अदर्शन्। अदर्शः, अदर्शतम्, अदर्शत। अदर्शम्, अदर्शाव, अदर्शाम। अद्राक्षीत्, अद्राष्टाम्, अद्राक्षुः। अद्राक्षीः, अद्राष्टम्, अद्राष्ट। अद्राक्षम् अद्राक्ष्व, अद्राक्ष्म। दिदृक्षते, ज्ञाश्रुस्मृदृशां सन इति सनन्तादात्मनेपदम्। दरीदृश्यते। दर्द्रष्टि। दर्द्रष्टः। लोट् हि—दर्दृड्ढि। आनि दर्दशानि। लङ्—अदर्द्रक्। दर्शयति। अदीदृशत्, अददर्शत्। यदा ण्यन्तादात्मनेपदं तदा प्रयोज्यस्य कर्मत्वं विकल्पेन भवति। पश्यन्ति भृत्या राजानं, दर्शयते भृत्यान् वा, भृत्यैरिति वा। संपूर्वादकर्मकात् आत्मनेपदम्। संपश्यते। संपश्यताम्। समपश्यत। संपश्येत। संददृशे। संद्रक्ष्यते। संदृक्षीष्ट। ( लुङ् ) समदृष्ट, समदृक्षाताम्, समदृक्षत। कर्मणि—दृश्यते। अदर्शि। स्यादिषु पक्षे चिण्वदिटि—दर्शिष्यते, द्रक्ष्यते। अदर्शिषाताम् अदृक्षाताम्। दर्शिषीष्ट, दृक्षीष्ट। दर्शिता, द्रष्टा इत्यादि।

दृश्यम्—क्यप्। उत्पश्यः—'पाघ्रा' इत्यादिना उपसृष्टात् कर्त्तरि शे पश्यादेशः। दर्शनं—पश्यः—अत्र 'पश्यार्थै'रिति निपातनात् भावे शः। असूर्य्यम्पश्या, राजदाराः—खश्। उग्रंपश्यः—क्रियाविशेषणे उपपदे खशि निपात्यते। तादृशः—तादृक्—अन्यसमानत्यदादिषु 'कर्मसूपपदेषु चक्षुर्विज्ञानादन्यत्रार्थे वर्त्तमानात् दृशेः कञ् प्रत्ययः, क्विन् च। दृग्दृशदृक्षवतुषु सर्वनाम्नोऽन्त्यस्याकारः। तादृशी—ङीष्। तादृक्षः 'क्सश्च-

वक्तव्य' इति क्सश्च। एवं सदृक्, सदृशः, सदृक्षः, दृग दृश-दृक्षेषु समानस्य सः। सदृशी—ङीप्। परलोकदृश्वा—'दृशेः क्वनि'बिति भूते क्वनिप्। स्त्रियां 'वनोर चे'ति—परलोकदृश्वरी। सुदर्शनः—युच्। कन्यादर्शं वरयति—यां यां कन्यां पश्यति, तां तां वरयतीत्यर्थः, णमुल्। पशुः—'अजिदृशी'त्यु-प्रत्ययः, पशादेशश्च। दर्शनः—'भृदृशी'त्यादिना अनच्। दृक् —क्विप्। दृष्टिः—क्तिन्।

दृष्ट्वा। प्रदृश्य। दृष्टः। द्रष्टुम्। द्रष्टा। द्रष्टव्यम्। दर्शनीयम्। दृश्यम्। पारदृश्वा—क्वनिप्, पारदृश्वरी, स्त्री। प्र—प्रदर्शनम्। उद्—उद्दर्शनम्,—ऊर्द्ध्वं दर्शनम्। नि—निदर्शनम्। परि—परिदर्शनम्। सम्—सन्दर्शनम्।

६४८। दन्श, दंशने [ दशने ] ( To bite )

दंशनं दंष्ट्राव्यापारः। दन्श्, अनिट्, सक, प। दशति। दशतु। अदशत्। दशेत्। ददंश, ददंशतुः (ददशतुः—वोप) ददंशिथ, ददंष्ठ। ददंशिव। दंष्टा। दङ्क्ष्यति। अदङ्क्ष्यत्। आशीः—दश्यात्। लुङ्—अदाङ्क्षीत्, अदांष्टाम्, अदाङ्क्षुः। कर्मणि—दश्यते। अदंशि। दिदङ्क्षति। दन्दश्यते। दन्दंशीति, दन्दशीति, दन्दंष्टि, दन्दष्टि। दन्दष्टः। दंशयति। अददंशत्। दंष्टः। दष्टा। उपदश्य। दंष्टुम्। दन्दशूकः —'यजजपदशां यङ' इति यङन्तादूकप्रत्यये सिद्धिः। दंष्ट्रा— ष्ट्रन्। दंष्ट्री—'व्रीह्यादिभ्यश्चे'ति मत्वर्थीय इनिः। मूलकोपदंशं भुङ्क्ते, मूलकेन उपदंशमिति वा—णमुल्, समासविकल्पः। क्त्वापि भवति—मूलकेनोपदश्य भुङ्क्ते।

६५०। कृष, विलेखने। ( To plough, to draw )

विलेखनमिहाकर्षणम्, तथाच पुरुषकारे—कर्षतिश्चाकर्षणे प्रसिद्ध इति। द्विकर्मकोऽयम्। कृष, अनिट, सक, प। कर्षति।

कर्षतु। अकर्षत्। कर्षेत्। चकर्ष, चकृषतुः, चकृषुः। चकर्षिथ। क्रष्टा, कर्ष्टा। क्रक्ष्यति,कर्क्ष्यति। आशीः—कृष्यात्। लुङ्—अकृक्षत्, अकार्क्षीत्,अक्राक्षीत्; अकृक्षताम्, अकार्ष्टाम्, अक्राष्टाम्; अकृक्षन्, अकार्क्षुः, अक्राक्षुः। चिकृक्षति। चरीकृष्यते। चरीकर्ष्टि, चरीकृष्टि, चरीकृषीति, चरीकृष्टः इत्यादि। लोट् हि—चरीकृड्ढि। लङ्—अचरीकर्ट्, अचरीक्रट्। कर्षयति शाखां ग्रामं देवदत्तं यज्ञदत्तः। अचीकृषत्, अचकर्षत्। अत्र कृषेः—प्रापणार्थत्वेऽपि अस्तिफलतया गतेः प्रतीतिरिति गत्यर्थत्वात् गतिबुद्धीति प्रयोज्यस्य कर्मत्वम्। अत्र ग्रहणमुपसर्जनीभूतयापि गत्या तदर्थत्वे लिङ्गम्। अन्यथा ण्यन्तस्य गमनार्थ इति, किं णिग्रहणेन? अतएव नीवह्योः प्रतिषेधः कृतः, कर्मणि लादयो नयत्यादिवदुन्नेयाः।

कृष्टः। कृष्ट्वा। संकृष्य। कर्ष्टुम्, क्रष्टुम्। कृष्यम्—क्यप्। कर्षतीति—कर्षः, कः। पाण्युपकर्षं पयः पिबति, पाणिना उपकृष्य पाणावुपकृष्य वा पयः पिबतीत्यर्थः, णमुल्। समासविकल्पनात् पाणावुपकर्षं पाणिनोपकर्षमित्यपि भवति। कर्ष्ट्रा, क्रष्ट्रा—तृन्। अयं तुदादावपि।

६५१। दह, भस्मीकरणे। ( To burn )

दह्, अनिट्, सक, प। दहति। दहतु। अदहत्। दहेत्। ददाह, देहतुः, देहुः। देहिथ, ददग्ध। ददाह, ददह; देहिव—म। दग्धा। धक्ष्यति। आशीः—दह्यात्। लुङ्—अधाक्षीत्,अदाग्धाम्, अधाक्षुः। लृङ्—अधक्ष्यत्। कर्मणि—दह्यते। अदाहि। दिधक्षति। दंदह्यते। दंदहीति, दन्दग्धि इत्यादि। दाहयति। अदीदहत्। परिदाही—घिनुण्। घञ्—निदाघः, अवदाघः, परिदाघः। मघ-मेघ-निदाघा-वदाघा

इति न्यङ्क्वादिपाठात् कुत्वम् । दहनः—युच् । दग्ध्वा । दग्धः । दाहः—घञ् । दाह्यः । दग्धव्यः ।

९५२ । मिह, सेचने । ( To sprinkle )

मिह्, अनिट्, सक, प । मेहति । मेहतु । अमेहत् । मेहेत । मिमेह । मिमेहिथ । मिमिहिव । मेढा । मेक्ष्यति । अमेक्ष्यत् । मिह्यात् । लुङ्—अमिक्षत् । मिमिक्षति । मेमिह्यते । मेमिहीति, मेमेढ़ि । मेमीढ़ः । मेहयति । अमीमिहत् । मीढ़ः । मीढ्वा । मेढ़ुम् । मेढ्रम—ष्ट्रन् । मेघः—अच, कुत्वम् । मीढ्वान्—'साह्वा'नित्यादिना क्वसौ निपात्यते । मिहिरः—किरच् । स्कन्दादय एतदन्ता अनुदात्ता उदात्तेतः ।

९५३ । कित, निवासे रोगापनयने च ।

( To dwell, to cure )

अयमुदात्तेत् । गुपिवदयमपि नित्यसन्नन्तः । कित्, सेट्, सक, प । चिकित्सति । चिकित्सतु । अचिकित्सत् । चिकित्सेत् । चिकित्साञ्चकार,—३ । चिकित्सिता । चिकित्सिष्यति । अचिकित्सिष्यत् । चिकित्स्यात् । लुङ्—अचिकित्सीत्, अचिकित्सिष्टाम्, अचिकित्सिषुः । चिकित्सिषति । चिकित्सयति । चिकित्सकः । चिकित्सितः । चिकित्सुः । चिकित्सा । विचिकित्सा—संशयः । केतयतीति चौरादिकस्य ।

## उभयपदिनः ।

९५४ । दान, खण्डने । [ अवखण्डने ] ( To cut off )

९५५ । शान, तेजने । ( To sharpen )

इमावपि नित्यसन्नन्तौ स्वरितेतौ । दान्, शान्, सेट्, सक, उ । दीदांसति,-ते । दीदांसतु,-ताम् । अदीदांसत्,-त ।

दीदांसेत्,-त। दीदांसिता। दिदांसिष्यति,-ते। अदीदांसिष्यत्,-त। आशीः—दीदांस्यात्,-सिषीष्ट। दीदांसाञ्चकार,-चक्रे,—मास,—बभूव। अदीदांसीत्, अदीदांसिष्ट,—ष्टाम्,—षाताम्,—षिषुः,—षत। दीदांसिषति—ते। दीदांसयति। अदीदांसत्। दीदांस्यते। अदीदांसि। शीशांसति,—ते। इत्यादि पूर्ववत्। दानयति, शानयति इत्यादि चौरादिकस्य। दानेरार्जवे शानेर्निशाने सन् स्यादिति वृत्तिः।

९५९। डु पचष् पाके। ( To cook )

पच् (डु, ष) अनिट्, सक, उ। लट्—पचति, पचतः, पचन्ति। पचसि, पचथः, पचथ। पचामि, पचावः, पचामः॥ पचते, पचेते, पचन्ते। पचसे, पचेथे, पचध्वे। पचे, पचावहे, पचामहे॥

लोट्—पचतु, पचताम्, पचन्तु। पच, पचतम्, पचत। पचानि, पचाव, पचाम॥ पचताम्, पचेताम्, पचन्ताम्। पचस्व, पचेथाम्, पचध्वम्। पचै, पचावहै, पचामहै॥

विधिलिङ्—पचेत्, पचेताम्, पचेयुः। पचेः, पचेतम्, पचेत। पचेयम्, पचेव, पचेम॥ पचेत, पचेयाताम्, पचेरन्। पचेथाः, पचेयाथाम्, पचेध्वम्। पचेय, पचेवहि, पचेमहि॥

लङ्—अपचत्, अपचताम्, अपचन्। अपचः, अपचतम्, अपचत। अपचम्, अपचाव, अपचाम॥ अपचत, अपचेताम्, अपचन्त। अपचथाः, अपचेथाम्, अपचध्वम्। अपचे, अपचावहि, अपचामहि॥

लिट्—पपाच, पेचतुः, पेचुः। पेचिथ, पपक्थ, पेचथुः, पेच। पपच, पपाच; पेचिव, पेचिम॥ पेचे, पेचाते, पेचिरे। पेचिषे, पेचाथे, पेचिध्वे। पेचे, पेचिवहे, पेचिमहे॥

लुट्—पक्ता, पक्तारौ, पक्तारः। पक्तासि, पक्तास्थः, पक्तास्थ।

पक्तास्मि, पक्तास्वः, पक्तास्मः ॥ पक्ता, पक्तारौ, पक्तारः । पक्तासे, पक्तासाथे, पक्ताध्वे । पक्ताहे पक्तास्वहे, पक्तास्महे ॥

आशीः—पच्यात्, पच्यास्ताम्, पच्यासुः । पच्याः, पच्यास्तम्, पच्यास्त । पच्यासम्, पच्यास्व, पच्यास्म ॥ पक्षीष्ट, पक्षीयास्ताम्, पक्षीरन् । पक्षीष्ठाः, पक्षीयास्ताम्, पक्षीध्वम् । पक्षीय, पक्षीवहि, पक्षीमहि ॥

लृट्—पक्ष्यति, पक्ष्यतः, पक्ष्यन्ति इत्यादि । पक्ष्यते, पक्ष्येते, पक्ष्यन्ते इत्यादि ।

लृङ्—अपक्ष्यत्, अपक्ष्यताम्,अपक्ष्यन् इत्यादि ॥ अपक्ष्यत, अपक्ष्येताम्, अपक्ष्यन्त इत्यादि ॥

लुङ्—अपाक्षीत्, अपाक्ताम्, अपाक्षुः । अपाक्षीः, अपाक्तम्, अपाक्त । अपाक्षम्, अपाक्ष्व, अपाक्ष्म ॥ अपक्त, अपक्षाताम्, अपक्षत । अपक्थाः, अपक्षाथाम्, अपग्ध्वम् । अपक्षि, अपक्ष्वहि, अपक्ष्महि ॥

सन्—पिपक्षति, पिपक्षते । यङ्—पापच्यते । पापचीति, पापक्ति । पापक्तः । णिच्—पाचयति । अपीपचत् । पक्वः । पक्त्वा, विपच्य । पक्तुम् ।

कृष्टे स्वयमेव पच्यन्ते इति—कृष्टपच्याः व्रीहयः—राजसूयादौ क्यपि निपात्यते। कर्म्मकर्त्तरि निपातनमिति वृत्तिः । पचः—अच् । श्वानं पचतीति—श्वपचः, पचादिपाठसामर्थ्यात् कर्मोपपदादप्यच् । श्वपाकः, मांसपाकः, पिण्डपाकः, कपोतपाकः—अत्र न्यङ्क्वादिपाठात् कर्म्मण्यणि कुत्वम् । दूरेपाकः, फलेपाकः—न्यङ्क्वादिपाठादचि वृद्धिकुत्वे । 'तत्पुरुषे कृती'त्यलुक् । ण्यङ्क्वादिपाठादेव च मौ कर्म्मकर्त्तरीति वृत्तौ । क्षणेपाक इति केचित् पठन्ति । दूरेपाका फलेपाकेति टाबन्तावन्ये । उकारान्तावपरे । दूरेपाकुः, फलेपाकुरिति उप्रत्ययो निपातना-

दिति वृत्तौ । प्रस्थम्पचः, नखम्पचः—'परिमाणे पच' इति 'मितनखे' चेति परिमाणवाचिनि कर्मण्युपपदे मितनखयोश्च खच् । उत्पचिष्णुः—'अलंकृञि'त्यादिनेष्णुच् । पचेलिमाः, शालयः—केलिमर् । (डु) पक्त्रिमम्—'ड्वितः क्त्रि'रिति क्त्रिप्रत्यये 'क्त्रेर्मप्नित्य'मिति मप् । [त्रिमक्] । पाकेन निर्वृत्तं—पाकिमम्, 'भावप्रत्ययान्तादिमप् वक्तव्य' इति इमप् । पक्तिः—क्तिन् । षित्वादङ्—पचा । पक्वः, पक्ववान्, 'पचो व' इति निष्ठातकारस्य वकारः । पचनम्—ल्युट् । पाकः—घञ् । मांसस्य पाकः—मांस्पाकः, मांसपाकः । एवं मांसस्य पचनम् मांस्पचनम्, मांसपचनम्—'मांसस्य पचि युड्घञो'रिति पक्षेऽन्तलोपः । पचनः—युच् । पाचकः—वुञ् । परिपाकः ।विपाकः । प्रपक्वानि, युवादित्वात् णत्वप्रतिषेधः । व्यक्तीकरणे गतम् * ।

६५७ । षच, समवाये । ( To be associated with )

सच् सेट्, अक, उ । सचति । सचतु । असचत् । सचेत् । सचिता । सचिष्यति । ससाच । सेचतुः । सेचिथ । सेचिव । आशीः—सच्यात् । असचीत्, असाचीत् । सिसचिषति । सासच्यते । सासचीति, सासक्ति । साचयति । असीसचत् । सिषाचयिषति । सचते इत्यादि सेचनार्थवत् ।

---

* अयं द्विकर्म्मक इत्युक्तं तेन तण्डुलानोदनं पचतीति भवति । अत्र कैयटकारः,—अत्र विक्लेदनोपसर्जननिवर्त्तनार्थो धातुरिति तण्डुलानां विक्लेदनापेक्षं कर्म्मत्वम् । ओदनस्य तु प्रधानभूतनिवर्त्तनापेक्षमिति तण्डुलानोदनं पचतीति प्रयोगः प्रकृतिविकाराभावविवक्षायां तण्डुलैरोदनं पचतीति साधकतमत्वविवक्षायाम । उदुम्बरः फलं पच्यते, दुहिपच्योर्बहुलं सकर्म्मकयोरिति कर्त्तुः कर्म्मवद्भावः । अत्र कैयटे । हचस्य कर्म्मत्वविवक्षायामन्यतमप्राप्ते वचनम् । अन्ये त्वाहुः—पचिरत्र द्विकर्म्मकः, पाकमात्रवचने फलपाकासम्भवात् वृक्षोऽकथितं कर्म्म; तस्यैव च यदा कर्त्तृत्वविवक्षा, तदायं कर्म्मवद्भावः, एवंविधविषये कर्म्मवद्भाव दृश्यते, न पुनरोदनं पचतीत्यादाविति ।

६५८। भज, सेवायाम्। ( To serve, to worship )

भज, श्रिञ् सेवायामिति दुर्गः पठति। भज्, अनिट्, सक, उ। लट्—भजति, भजतः, भजन्ति ॥ भजते, भजेते, भजन्ते इत्यादि ॥ लोट्—भजतु, भजताम्, भजन्तु ॥ भजताम्, भजेताम्, भजन्ताम् ॥ विधिलिङ्—भजेत्, भजेताम्, भजेयुः ॥ भजेत इत्यादि सर्वत्र पचवत्। लङ्—अभजत्। अभजत। लुट्—भक्ता ॥ भक्तासे। आशीः—भज्यात् ॥ भक्षीष्ट। ऌङ्—अभक्ष्यत्,-त। लिट्—बभाज, भेजतुः, भेजुः। भेजिथ, बभक्थ ; भेजथुः, भेज। बभज, बभाज ; भेजिव, भेजिम ॥ भेजे, भेजाते, भेजिरे। भेजिषे, भेजाथे, भेजिध्वे। भेजे, भेजिवहे, भेजिमहे। ऌट्—भक्ष्यति,-ते। लुङ्—अभाक्षीत्, अभाक्ताम्, अभाक्षुः ॥ अभक्त, अभक्षाताम्, अभक्षत इत्यादि। कर्मणि—भज्यते। अभाजि। सन्—बिभक्षति,-ते। यङ्—बाभज्यते। यङ्लुक्—बाभजीति, बाभक्ति। णिच्—भाजयति। अबीभजत्।

भक्तव्यः। भजनीयः। विभज्यः—'द्विवचनविभज्योपपदे' इति निपातनाद्यत्। जन्मभाक्—ण्विः। भागी—घिनुण्। भगः—घः। सुभगस्य भावकर्मणी—सौभाग्यम्—ब्राह्मणादिपाठात् ष्यञ्। एवं दौर्भाग्यम्। सुभगाया अपत्यम्—सौभागिनेयः, एवं दौर्भागिनेयः। भागः—घञ्। भागोऽस्मिन् वृद्धिरायो लाभः शुल्क उपदा वा दीयते भाग्यम् शतम्, भागिकं शतम्—'भागाद् यच्चे'ति यत्। भाग एव—भागधेयम्, स्वार्थे धेयः। भ्राता—तृन्, भ्रादेशो निपात्यते। भ्रातुरपत्यं—भ्रातृव्यः, भ्रात्रीयः। सौभ्रात्रम्, दौर्भ्रात्रम्—युवादिपाठात् भावकर्मणोरण्। भ्राता च स्वसा च—भ्रातरौ, 'भ्रातृपुत्रौ स्वसृदुहितृभ्या'मिति भ्रातुः शेषः। भक्तिः—क्तिन्। कल्याणी भक्ति-

रस्य कल्याणीभक्तिः। भन्जो आमर्दने इति रुधादौ, भज विश्राणने, भाज पृथक्कर्मणीति इयं चुरादौ। अत्रैव भजेति भाषार्थो दण्डके।

६५८। रन्ज्, रागे। ( TO dye, to be attached to )

रन्ज्, अनिट्, सक, उ। रजति,-ते। रजतु-ताम्। अरजत्, ताम्। रजेत्,-त। लिट्—ररञ्ज, ररञ्जतुः, ररञ्जुः। ररङ्क्थ, ररञ्जिथ इत्यादि। ररञ्जे। ररञ्जिषे इत्यादि। रङ्क्ता। रङ्क्तासे। रङ्क्ष्यति,-ते। आशीः—रज्यात्। रङ्क्षीष्ट। अरङ्क्ष्यत्,-त। लुङ्—अराङ्क्षीत्,अराङ्क्ताम्,अराङ्क्षुः॥ अरङ्क्त, अरङ्क्षाताम्, अरङ्क्षत। कर्मणि—रज्यते। अरञ्जि। कर्मकर्त्तरि—रज्यति। रिरङ्क्षति,-ते। रारज्यते। रारञ्जीति, रारङ्क्ति। रारक्तः। रञ्जयति। अररञ्जत्। रजयति मृगान्। अरीरजत् *।

रजकः—'शिल्पिनि ष्वुन्'। रजकरजनरजःसूपसंख्यानमिति नलोपः। †

---

* 'रञ्जेर्णौ मृगरमणे' इति नलोपः, मृगादन्यत्र—रञ्जयति पक्षिणः। तथा रमणादन्यत्रापि रञ्जयति मृगान् तृणादिदानेन वशयतीत्यर्थः। कर्मकर्त्तरि 'कुषिरञ्जोः प्राचां श्यन् परस्मैपदञ्चे'ति पक्षे श्यन्परस्मैपदयोः—रज्यति वस्त्रं स्वयमेव। एवं रज्यतु। अरज्यत्। रज्येत् इत्यादि। अन्यदा यगात्मनेपदयोः रज्यते इत्यादि। श्यनो ङित्त्वादयकः कित्त्वाच्च नलोपः। श्यन्विधौ रज्यन्तीत्यत्र 'श्नप्श्यनोर्नित्य'मिति नित्यनुमर्थः, एते च श्यन्परस्मैपदे प्राचां ग्रहणस्य व्यवस्थितविभाषात्वादयम्विषये। अत्र लिङाशीर्विषयः, स हि सार्वधातुकप्रतियोगी, तेन रङ्क्षीष्ट वस्त्रं स्वयमेव। ररंसे, रङ्क्तासे। रङ्क्ष्यते। अरञ्जि, अरङ्क्षातामित्यत्र श्यन् परस्मैपदं न भवति।

† रजकस्य वस्त्रं ददातीति भाष्ये प्रयोगादिति। न्यासे त्वक्ङित्यपि रञ्जेर्णित्त्वविधानाल्लिङ्गान्नलोप इति तरङ्गिणीपदमञ्जर्योः इदं प्रौढ़िवादमात्रम्, यतो णित्वं रञ्जेर्णाविति नलोपे रजयति मृगानित्यत्र ह्रस्वार्थं स्यात्, तथा नलोपाभावे—अरञ्जि अराञ्जि, रञ्जं, रञ्जं, राञ्जं राञ्जमित्यत्र 'चिण्णमुलो'रिति दीर्घविकल्पार्थं स्यात्।

रजनी रजकी—ङीष्। रजनम्—क्यु न्। रजनी—ङीष्। रागी—घिनुण्। रञ्जनं, रज्यतेऽनेनेति वा—रागः घञ्। रज्यन्ति प्रेक्षकाणां मनांसि यत्र इति—रङ्गः, घञ्। विरागः। विरागमर्हतीति—वैरागिकः, 'तदर्हतीति' ठक्। रजः—असुन्। विरजीकरोति—च्विः। सरजसम्—'अव्ययीभावे चाकाले' इति सहस्य सः, 'अचतुरे'त्यादिना अच्। रजस्वला—वलच्। रजतम्—अतच्। रजतस्य विकारः—राजतम्।

रङ्क्त्वा, रक्त्वा। अतिरज्य। रक्तः। रक्तिः। रञ्जनम्। अनु—अनुरागः। उप—उपरागः। रक्तस्य भावः—रक्तिमा, इमनिच्।

९९०। शप, आक्रोशे। ( To curse, to swear )

इहाक्रोशो विरुद्धानुध्यानम्। शप्, अनिट्, सक, उ। शपति-ते। शपतु-ताम्। अशपत्-त। शशाप, शेपतुः, शेपुः। शेपिथ, शशप्थ; शशपथुः इत्यादि॥ शेपे, शेपाते, शेपिरे इत्यादि। शप्ता। शप्तासे इत्यादि। शप्स्यति,-ते। अशप्स्यत्,-त। आशीः—शप्यात्, शप्सीष्ट। लुङ्—अशाप्सीत्, अशाप्ताम्, अशाप्सुः॥ अशप्त, अशप्सातां, अशप्सत इत्यादि। शिशप्सति,-ते। शाशप्यते। शाशपीति, शाशप्ति। शापयति। अशीशपत्। शप्यते। अशापि। शपथार्थः शपधातुरात्मनेपदी। देवदत्ताय शपते—देवदत्तं शपथेन किञ्चित् ज्ञापयतीत्यर्थः। शरीरस्पर्शाभावात् "सख्यः शपामी"त्यादि सिद्धम्।

शबलः—'शपेर्वश्च'ेति कलप्रत्यये बकारश्चान्तादेशः। शब्दः—'शाशपिभ्यां ददना'विति दन्,शब्दवैरेति निपातनाद्बत्वम्। शब्दं करोति—शब्दायते; क्यङ्। शाब्दिकः—ठक्। शापः—घञ्। शप्त्वा, अभिशप्य। शप्तिः। शप्तः। शप्तव्यः। अभि—अभिशापः। अयं दिवादावपि।

६६१ । त्विष दीप्तौ । ( To shine )

त्विष, अनिट्, अक, उ । त्वेषति । त्वेषतु । अत्वेषत् । त्वेषेत् । तित्वेष, तित्विषतुः । तित्वेषिथ । तित्विषिव । त्वेष्टा । त्वेक्ष्यति । आशीः—त्विष्यात् । अत्विक्षत्, अत्विक्षाताम्, अत्विक्षन् ॥ त्वेषते । त्वेषताम् । अत्वेषत । त्वेषेत । तित्विषे । त्वेष्टासे । त्वेक्ष्यते । त्विक्षीष्ट । अत्विक्षत, अत्विक्षाताम्, अत्विक्षन्त । तित्विक्षति,-ते । तेत्विष्यते । तेत्विषीति, तेत्विष्टि । तेत्विष्टः । त्वेषयति । अतित्विषत् । त्वष्टा—तृन्, अत् । त्वष्ट्रिदम्—त्वाष्ट्रम् । त्विट्—क्विप् । अवपूर्वोऽयं दाननिरसनयोरिति मैत्रेयादयः ।

६६२ । यज, देवपूजासङ्गतिकरणदानेषु ।

( To worship, to associate with, to sacrifice, to give. )

यज्, अनिट्, सक, उ । यजति । यजतु । यजेत् । अयजत् । इयाज, ईजतुः । इयजिथ, इयष्ठ । ईजिव । यष्टा । यक्ष्यति । अयक्ष्यत् । आशीः—इज्यात् । अयाक्षीत्, अयाष्टाम्, अयाक्षुः ॥ यजते । यजताम् । अयजत । यजेत । ईजे । ईजिषे । यष्टासे । यक्ष्यते । यक्षीष्ट । अयष्ट, अयक्षाताम्, अयक्षत । यियक्षति,-ते । यायज्यते । यायजीति, यायष्टि । याजयति । अयीयजत् । कर्मणि—इज्यते । ऐज्यत ।

याज्यं—ण्यत् । 'यजयाचे'ति कुत्वनिषेधः । यागः—घञ्, कुत्वं । सोमेन इष्टवान्—सोमयाजी, करणे णिनिः । यज्वा—'सुयजो'रिति ङ्वनिप् । यजमानः—शानच् । यजमानस्य कर्म—याजमानं युवादित्वादण् । यायजूकः 'यजजपदशां यङ' इति यङन्तादूकः । इष्टिः—क्तिन् । इज्या—भावे क्यप् । यज्ञः—नङ्प्रत्ययः, कुत्वनिषेधः । यज्ञविद्यामधीते, वेद वा—याज्ञिकः । याज्ञिकानां धर्म आम्नायो वा याज्ञिकम् । यज्ञ-

मर्हतीति यज्ञियः 'यज्ञर्त्विग्भ्याम् घखञा'विति द्वितीयान्ता-दर्हतीत्यर्थे घः। ऋत्विक्—ऋतु' ऋतौ वा यजति, ऋतु-प्रयुक्तो वा यजतीति क्विन् निपातितः। नवयज्ञोऽस्मिन् वर्त्तते नावयज्ञिकः, एवं पाकयज्ञिकः—ठक्। इष्टमनेन—इष्टी, इनिः। यजुः—उस्। ऋग्यजुषम्—'अचतुर'त्यादिना द्वन्द्वेऽजन्तो निपात्यते। यद्—'यजियतमिनिभ्यो डि'दित्यदिप्रत्यये डित्त्वाट्टिलोपः। यस्मिन् काले—यदा, दाप्रत्ययः। यर्हि—अनद्यतने र्हिल्। यत् परिमाणमस्य—यावान्, परिमाणे मतुप्। स्त्रियां ङीप्—यावती। यावतिथः—डट्, इथुक्। यतरः—डतरः। यतमः—डतमः। यका, नित्यम्। यथा—प्रकारवचने थाल्। यथातथम्। अयथातथ्यम्। अयाथायथ्यम्। आयथापुर्य्यम्,अयाथापुर्य्यम्। इष्ट्वा। समिज्य। यष्टुम्। इष्टः। इष्टवान्। यजनम्। यजन्। याजकः। यष्टा। यियक्षुः।

९९३। डु वप, बीजसन्ताने। ( To sow, to propagate, to cut )

वप् ( टु ) अनिट्, सक, उ। वपति, प्रणिवपति। वपतु। प्रवपाणि। वपेत्। अवपत्। प्रण्यवपत्। उवाप, ऊपतुः। उवप्थ, उवपिथ। ऊपिव। वप्ता। अवाप्सीत्। वपते इत्यादि यजिवत्। वाप्यम्—ण्यत्। वापी—इनिः। (डु) उप्त्रिमम्—क्त्रिः, मप्। वापिः—इञ्। वापी—ङीष्। वप्रः—'ऋधिवपिभ्याञ्च र'न्निति रन्। बीजसन्तानं क्षेत्रे बीजवपनम्। अयं गर्भाधानेऽपि दृश्यते,यथा,—"मा वः क्षेत्रे परबीजान्यवाप्सुः।" छेदनेऽपि—केशान् वपतीति। उप्त्वा। प्रोप्य। उप्तः। उप्तिः। कर्मणि—उप्यते। औप्यत। अवापि।

९९३। वह, प्रापणे। ( To carry, to flow as a stream )

वह् अनिट्, सक, उ। वहति। वहतु। वहेत्। अव-

ह्त्। उवाह, ऊहतुः, ऊहुः। उवहिथ, उवोढ। ऊहिव। वोढा। वक्ष्यति। अवक्ष्यत्। आशीः—उह्यात्। अवाक्षीत्, अवोढाम्, अवाक्षुः॥ वहते। वहताम्। वहेत। अवहत। ऊहे, ऊहिषे। वोढा। वक्ष्यते। वक्षीष्ट। अवोढ, अवक्षाताम्, अवक्षत। अवोढाः, अवोढ्वम्। अवक्षि। प्रवहति—'प्राद्वह' इति नित्यं परस्मैपदम्। परिवहतीति केचित् परिपूर्वाच्च। प्रणिवहति। प्रवक्ष्यामि। कर्मणि—उह्यते। औह्यत। सन्—विवक्षति,-ते। यङ्—वावह्यते। वावोढि, वावहीति, वावोढः। णिच्—वाहयति। अवीवहत्। अयं द्विकर्मकः।

वहत्यनेनेति—वह्यं,'वह्यं करण'मिति यति निपात्यते। अन्यत्र ण्यत्—वाह्यः। कूलमुद्वहः—उत्पूर्वाद्वहेः खः। वहः—'गोचरे'त्यादिना करणे घः। पुरुषवाहं वहति—णमुल्। वह्निः—निः। ऊढः। ऊढिः। कल्पनाया अपोढः कल्पनापोढः। प्रौढः। प्रौढिः—'प्रादूहोढ़'त्यनेन वृद्धिः। प्रवाहणः—ल्युडन्तात् ल्युः। प्रवाहणस्यापत्यं—प्रावाहणेयः। प्रवाहणेयः—'शुभ्रादिभ्यश्चे'ति ढकि 'प्रवाहणस्य च' इति पूर्वपदस्य वा वृद्धिः। प्रवाहणेयस्यापत्यं—प्रावाहणेयिः। इक्षुवाहणम्। आहितादन्यत्र—दाक्षिवाहनम्। वधूः—'वहेर्धश्चे'ति ऊकार-प्रत्ययो धश्चान्तादेशः। वध्वा भावकर्मणी—वाधवम्, युवादित्वात् अण्। अनड्वान्—क्विन्। अनडुही, अनड्वाही—ङीष्। प्रियोऽनड्वान् यस्य—प्रियानडुत्कः, एकत्वे नित्यं कप्। धेनुश्च अनड्वांश्च—धेन्वनडुहम्। ऊढ्वा। प्रोह्य। वहनम्। वोढुम्। वोढा। वाही। वाहकः। वाट्। प्रष्ठवाट्। प्रष्ठौहः। वार्वाट्। वारुहः। वोढव्यः। सम् णिच्—संवाहनम्। अति—वाहनम्। उद्—उद्वाहः। वि—विवाहः। निर्—निर्वाहः। प्र—प्रवाहः।

## परस्मैपदी ।

६६५ । वस, निवासे । ( To dwell )

अनुदात्त उदात्तेत् । वस्, अनिट्, अक, प । वसति, वसतः, वसन्ति । वसतु, वसताम्, वसन्तु । वस । वसानि । वसेत् । अवसत् । ग्राममुपवसति, ग्राममनुवसति, ग्रामे वसतीत्यर्थः—अधिकरणस्य कर्मता । ग्रामे उपवसतीति भोजननिवृत्त्यर्थे अधिकरणमेव । उवास, ऊषतुः । उवसिथ, उवस्थ । ऊषिव । वस्ता । वत्स्यति । आशीः—उष्यात् । अवात्सीत्, अवात्ताम्, अवात्सुः । * अवात्सम् । विवत्सति । वावस्यते । वावस्ति वावसीति । अवावत्, अवावः । वासयति, वासयते । अवीवसत्—त । भावे—उष्यते । अवासि ।

उषित्वा । उषितः । उषितवान् । ऊषिवान्—क्वसुः । वास्तव्यः—तव्यः कर्त्तरि, णिद्वद्भावात् वृद्धिः । अमा सह वसतः सूर्य्याचन्द्रमसावस्यामिति अमावास्या, अमावस्या । अमावस्यायां जात —अमावस्यकम्, अमावस्यम्, 'अमावस्याया वा' 'अचे'ति सप्तम्यन्ताज्जातार्थे वुनकारौ च, वाग्रहणात् 'सन्धिवेले'त्यादिना अणि आमावस्यमिति । एकदेशविकृतमिति न्यायेनात एते प्रत्ययाः अमावास्याशब्दादपि—अमावास्यकम्, अमावास्यम्; आमावास्यम् । अवासी—णिनिः । प्रवासी—घिनुण् । अनूषितो गुरुं शिष्यः, अनूषितो गुरुः शिष्येण । उषितः । उषितमनेन । उषितवान् । उषित्वा । उपवस्था प्राप्तास्य—औपवस्त्रम्, अणः ।

---

* क्व भवानुषितः ? अहमवात्सम् । 'वसेर्लुङ् रात्रिशेषे जागरणसन्तता'विति लुङ् । यदि कश्चित् केनचित् रात्रिशेषे तुर्ये यामे पृष्टो यामचयवासं प्रतिवक्ति, तदा लुङित्यर्थः । यामचयस्यानद्यतनत्वाल्लङि प्राप्ते वचनम् । भूतसामान्यविवक्षयैव लुङि सिद्धे वचनमिदं लङ्निवृत्त्यर्थम् । जागरणसन्ततावित्ति वचनात् सुप्त्वा प्रतिबुध्य प्रतिवचने नायं नियमः ।

प्रवासाय प्रभवति—प्रावासिकः। एवम् औपवासिकः। वत्सरः, संवत्सरः, परिवत्सरः—'वसेश्चे'ति सम्प्रतिपूर्वात् सरप्रत्ययः। चकारादनुवत्सरादयः। संवत्सरे जातं फलं पर्व वा सांवत्सरम्, ग्रैष्मिकः अण्। संवत्सरे देयमृणं—सांवत्सरिकम्, सांवत्सरकम्—ठञ्, वुञ्। द्विसंवत्सरीणः, द्विसांवत्सरिकः—खः, 'संख्यायाः संवत्सरसंख्यस्य चे'ति उत्तरपदवृद्धिः। अनुसंवत्सरं दीयते कार्यं वा—अनुसांवत्सरिकम्, ठञ्। आवसथः—'उपसर्गे वसे'रिति अथः। आवसथे वसति—आवसथिकः, ष्ठल्। स्त्रियाम्,—आवसथिकी। वसतिः—अतिः। वसतौ साधु—वासतेयम्, ठञ्। वस्नं, मूल्यम्—नः। वस्नं हरत्यावहति वा—वस्निकः, कन्। ठन्—वास्निकः। वसन्तः—अन्तच्। वसन्तसहचरितो ग्रन्थोऽपि वसन्तः। तमधीते, वेद वा—वासन्तिकः, ठक्। वसन्ते पुष्यन्ति वासन्त्यः कुन्दलताः 'सन्धिवेले'त्यादिना सप्तम्यन्तात् अण्। वसन्ते भवं—वासन्तम्, अण्। वासन्तकम्—वुञ्। वस्तिः—तिः। वस्तिरिव—वास्तेयम्, ठञ्। वस्तौ भवमपि—वास्तेयम्, भवार्थे ठञ्। वास्तु—तुण्। वस्त्रम्—ष्ट्रन्। वस्त्रैः समाच्छादयति—संवस्त्रयति, णिच्। वासिः—इञ्। वसुः—उः। वसुमत्तमः—वसिष्ठः। वसुमत्तरः—वसीयान्। वासिष्ठः, वासिष्ठौ, वासिष्ठाः—अण्। श्वोवसीयः, श्वोवसीयसम्—'श्वसो वसीयःश्रेयस' इति समासान्तोऽच्।

उषितः—क्तिन्। वसनम्—ल्युः। वासः—घञ्। वस्तुम्। वस्तव्यम्। अधि—अधिवासः। उप—उपवासः। नि—निवासः। निर्-णिच्—निर्वासनम्। प्र—प्रवासः। आ—आवासः। आच्छादनेऽयमदादिः, स्तम्भने दिवादिः, स्नेहनादौ कथादिश्चुरादिश्च। वस उपसेवायामाच्छादन इति च कथादिः।

## उभयपदी ।

६६६ । वेञ्, तन्तुसन्ताने । ( To weave )

वे ( ञ् ) अनिट्, सक, उ । वयति-ते । वयतु । वयेत् । अवयत् । उवाय, ववौ ; ऊयतुः ऊवतुः, ववतुः ; ऊयुः, ऊवुः ववुः । उवयिथ, ववाथ, वविथ ; ऊयथुः, ववथुः, ऊवथुः ; ऊय, ऊय, वव । उवय, उवाय ; ववौ, ऊयिव, ऊविव, वविव ; ऊयिम, वविम, ऊविम । वाता । वास्यति । आशीः—ऊयात् । अवासीत्, अवासिष्टाम् । सन्—विवासति-ते । वावायते । वावाति, वावेति । वावीतः । वावति । लोट्—वावीहि । वाययति । अवीवयत् । वयते । वयताम् । अवयत । वयेत । ऊये, ववे, ऊवे ; ऊयाते, ऊवाते, ववाते । ऊयिरे, ऊविरे, वविरे । ऊयिढ्वे, ऊयिध्वे, ऊविध्वे,—ढ्वे, वविध्वे,-ढ्वे । ऊयिवहे, वविवहे, ऊविवहे । वाता । वास्यते । आशीः—वासीष्ट । अवास्त, अवासाताम्, अवासत । कर्म्मणि—ऊयते । अवायि, अवायिषाताम्, अवासाताम् इत्यादि । विवासति,-ते । वावायते । वावाति, वावेति, वावीतः, वावति । ( हि ) वावीहि । वाययति । अवीवयत् ।

तन्तुवायः—इति कापवादः अण् । ऊतिः । उतः । नि-प्र-वाणिः । नवं वासः प्रोयतेऽस्यामिति प्रवाणी । निर्गता प्रवाण्यो यस्मादिति बहुव्रीहिः । उत्वा । प्रवाय । वानम् । वायः । वातुम् । वाता । वायकः । वातव्यम्, वानीयम् ।

६६७ । व्येञ्, संवरणे । ( To cover )

व्ये ( ञ ) अनिट्, सक, उ । व्ययति । व्ययतु । अव्ययत् । व्ययेत् । विव्याय, विव्यतुः, विव्युः । विव्ययिथ । व्याता । व्यास्यति । आशीः—वीयात् । अव्यासीत्, अव्यासिष्टाम्, अव्यासिषुः । व्ययते । व्ययताम् । अव्ययत । व्ययेत । विव्ये, विव्याते । विव्यिषे, विव्यिध्वे, विव्यिढ्वे । विव्यिवहे । व्याता ।

व्यास्यते। आशीः—व्यासीष्ट। अव्यास्त, अव्यासाताम्। कर्मणि वीयते। अव्यायि। सन्—विव्यासति-ते। यङ्—वेवीयते। यङ्-लुक्—वाव्येति,वाव्याति ;वाव्यीतः,वाव्यति। णिच्-व्याययति।

वीत्वा। संव्याय। वीतिः। वीतः। व्यानम्। व्यायः। व्यातुम्। नीविः—इः। नीवी—ङीष्।

९९८। ह्वेञ्, स्पर्द्धायां शब्दे च।

( To challenge, to call, to sound )

ह्वे (ञ) अनिट्, अक, [सक,शब्दार्थे] उ। ह्वयति। ह्वयतु। अह्वयत्। ह्वयेत्। जुहाव, जुहुवतुः, जुहुवुः। जुहुविथ, जुहोथ। ह्वाता। ह्वास्यति। हूयात्। लुङ्—अह्वत्, अह्वताम्, अह्वन्। ह्वयते। ह्वयताम्। अह्वयत। ह्वयेत। जुहुवे, जुहुवाते, जुहुविरे। जुहुविषे, जुहुवाथे, जुहुविध्वे, जुहुविढ्वे। ह्वाता। ह्वातासे। ह्वास्यते। ह्वासीष्ट। लुङ्—अह्वत, अह्वेताम्, अह्वन्त। अह्वास्त, अह्वासाताम्, अह्वासत। कर्मणि—हूयते। अह्वायि। वा चिण्वदिटि—अह्वायिषाताम्, अह्वासाताम् इत्यादि। एवं स्यादिषु—ह्वायिष्यते, ह्वास्यते। ह्वायिषीष्ट, ह्वासीष्ट। ह्वायिता, ह्वाता इत्यादि। कर्मकर्त्तरि—अह्वायि, अह्वत, अह्वास्त, अह्वायिष्ट इति चातूरूप्यम्। उपसर्गपूर्वात्तु—निह्वयते संह्वयते,उपह्वयते,विह्वयते, आह्वयते—'निसमुपविभ्यो ह्वः' 'स्पर्द्धायामाङ्' इति कर्त्रभिप्राये आत्मनेपदम्। सन्—जुहूषति,-ते। यङ्—जोहूयते। जोहोति, जोहूतः, जोहुवति। ह्वाययति। अजूहवत्, अजूहवताम्, अजूहवन्। जुहावयिषति। ह्वायकीयितुमिच्छति—जिह्वायकीयिषति।

आह्वानम्। आह्वः—डः। निहवः, अभिहवः, उपहवः, विहवः, आहवः—'ह्वः सम्प्रसारणञ्च न्यभ्युपविषु' 'आङि युद्धे'

इति 'भावेऽनुपसर्गस्ये'त्यप्प्रत्यये सम्प्रसारणम् । आह्वावः 'निपानमाह्वाव' इति सम्प्रसारणे वृद्धौ निपात्यते । आह्वा 'आतश्चोपसर्ग' इति स्त्रियामङ्याल्लोपः । आहूतिः, संहूतिः— क्तिन् । वेञादयस्त्रयोऽनुदात्ताः, उभयतोभाषाः ।

## परस्मैपदिनः ।

९९८ । वद, व्यक्तायां वाचि । ( To speak )

वद्..सेट्, सक, प । लट्—वदति, वदतः, वदन्ति । वदसि, वदथः वदथ । वदामि, वदाव, वदामः ।

लोट्—वदतु, वदताम्, वदन्तु । वद, वदतम्, वदत । वदानि, वदाव, वदाम ।

विधिलिङ्—वदेत्, वदेताम्, वदेयुः । वदेः, वदेतम्, वदेत । वदेयम्, वदेव, वदेम ।

लङ्—अवदत्, अवदताम्, अवदन् । अवदः, अवदतम्, अवदत । अवदम्, अवदाव, अवदाम ।

लिट्—उवाद, ऊदतुः, ऊदुः । उवदिथ, ऊदथुः, ऊद । उवद, उवाद ; ऊदिव, ऊदिम ।

लुट्—वदिता । लृट्—वदिष्यति । आशीः—उद्यात् । लृङ् अवदिष्यत्, अवदिष्यताम्, अवदिष्यन् ।

लुङ्—अवादीत्, अवादिष्टाम्, अवादिषुः । अवादीः, अवादिष्टम्, अवादिष्ट । अवादिषम्, अवादिष्व, अवादिष्म ।

सन्—विवदिषति । यङ्—वावद्यते । वावदीति, वावत्ति । णिच्—वादयति, वादयते । अवीवदत्, अवीवदत । अभिवादयते गुरुं यज्ञदत्तो देवदत्तं, देवदत्तेनेति वा । 'अभिवादिदृशोरात्मनेपदे उपसंख्यान'मिति पक्षे प्रयोजकस्य कर्मत्वम् । परस्मैपदे तु कर्तृत्वात्तृतीयेव । अभिवादयति गुरुं यज्ञदत्तो देवदत्तेन । वदते व्याकरणे, गेहे वदते, गेहे विवदन्ते, ज्ञान-

भार्य्यामुपवदते—'भासनोपसम्भाषाज्ञानयत्नविमत्युपमन्त्रेषु वद' इति आत्मनेपदम्। सम्प्रवदन्ते राजानः—'व्यक्तवाचां समुच्चारण' इत्यात्मनेपदम्। अव्यक्तवाचु पर्य्यायोच्चारणे परस्मैपदम्—सम्प्रवदन्ति कुक्कुटाः। अनुवदते कठः कलापकस्य—'अनोरकर्मक' इत्यात्मनेपदम्; अनुवदति वीणेत्यत्र व्यक्तवचनाभावात् पूर्वोक्तमनुवदतीत्यत्र च सकर्मकत्वात् नात्मनेपदम्। विवदन्ते मौहूर्त्तिकाः—'विभाषा विप्रलाप' इति वात्मनेपदम्। धनकामो न्यायमपवदते—'अपाद्वद' इति तङ्।

अवद्यं पापम्—अवद्यपण्येत्यादिना गर्ह्ये यति निपात्यते। ब्रह्मोद्यं। ब्रह्मणो वदनमित्यर्थः—क्यप्। ब्रह्मवद्यम्—यत्। अनुपसर्गात् उपसृष्टाच्च यति—वाद्यम्, प्रवाद्यमिति। मृषोद्यम्—राजसूयेत्यादिना भावकर्मणोः क्यपि निपात्यते। अवादी—णिनिः। वदः। वदावदः—अच् 'चलिपतिवदो'त्यादिना द्विर्वचनम्। प्रियंवदः, वशंवदः—'प्रियवशे वदः खजि'ति खच्। प्रवादी, परिवादी—घिनुण्। परिवादकः—ण्यन्ताद्वुञ्। भृशं वदति—वावदूकः—'यङन्ताद्वदेरूक' इति ऊकः। तस्यापत्यम्—वावदूक्यः—ण्यः। उदित्वा—क्त्वा। अच्छोद्य—यप्। वादिः—इञ्। वत्सः—सः। वत्सलः—मत्वर्थीयो लच्। वत्सतरः—ष्टरः, स्त्रियां—वत्सतरी। वत्सानां समूहः—वात्सकम्, वुञ्। वादित्रम्—ण्यन्तादित्रः। वदान्यः—आन्यः। निष्ठा—उदितः, उदितवान्।

अप—अपवादः,—निन्दा। परिवादः। णिच्—अभिवादनम्—पादग्रहणम्। प्र—प्रवादः, कथनम्। वि—विवादः। सम्—संवादः। वि—सम्—विसंवादः। अनु—अनुवादः।

६७१। टु ओ श्वि, गतिवृद्ध्योः ( To go, to grow )

अयं वदतिवत् परस्मैभाषावुदात्तो। श्वि (टु ओ) सेट्, प।

श्वयति। श्वयतु। अश्वयत्। श्वयेत्। शुशाव, शिश्वाय; शुशुवतुः, शिश्वियतुः, शुशुवुः, शिश्वियुः। शुशुविथ, शिश्वयिथ; शुशुवथुः, शिश्वियथुः; शुशुव. शिश्विय। शुशाव, शुशव; शिश्वाय; शिश्वय शुशुविव, शिश्वियिव; शुशुविम, शिश्वियिम। श्वयिता। श्वयिष्यति। आशीः—शूयात्। लुङ्—अश्वत्, अशिश्वियत्, अश्वयीत्; अशिश्वियताम्, अश्वताम्, अश्वयिष्टाम्; अशिश्वियन्, अश्वन्, अश्वयिषुः। अशिश्वियः, अश्वयोः, अश्वः इत्यादि। अशिश्वियम्, अश्वम्, अश्वयिषम्; अशिश्वियाव, अश्वाव, अश्वयिष्व-म इत्यादि। सन्—शिश्वयिषति। यङ् शेश्वीयते, शोशूयते। शेश्वयीति, शेश्वेति, शेश्वितः, शेश्वियति। लुङि 'प्रकृतिग्रहणादङ्चङौ इति अशिश्वियदित्यादि। सिच्पक्षे—अशिश्वायीत्। णिच्—श्वाययति। अशिश्वयत्, अशूशवत्। णिच्-सन्—शिश्वाययिषति, शुशावयिषति।

(ट) श्वयथुः अथुच्। शूनवान्, शूनः,—निष्ठा। उदकेन श्वयते इति—उदश्वित्, क्विप्, 'उदकस्योदः संज्ञायाम्' इति उदकस्योदादेशः। उदश्विति संस्कृतम्—औदश्वितकं, ठक्। औदश्वितम्—अण्। श्वा—'श्वन्नुक्षन्नि'ति निपात्यते। शौवं मांसं, शौवः सङ्कोचः, अत्र प्राग्दीव्यतीयेऽपि 'शुनः सङ्कोचे उपसंख्यान'मिति 'अन्नि'ति प्रकृतिभावं बाधित्वा टिलोपः। सङ्कोचादन्यत्र—शौवनम्। शुने हितं—शून्यम्,यत्,वा दीर्घः। स्त्रियां—शुनी। शुन इव शेषमस्य—शुनःशेप एवं शुनपुच्छः, शुनो लाङ्गूलः'शेषपुच्छलाङ्गूलेषु शुन उपसंख्यान'मिति अलुक्। शुनो दन्तः—श्वादन्तः, 'शुनो दन्तदंष्ट्रे'त्यादिना पूर्वपदस्य दीर्घः। एवं दंष्ट्रादिषु उदाहार्य्यम्। श्वादंष्ट्रस्यापत्यं—श्वादंष्ट्रिः, श्वभस्त्रस्यापत्यं श्वाभस्त्रिः। श्वगणेन चरति—श्वागणिकः—ठञ्। एवं श्वायूथिकः। श्वदंष्ट्रायां भवो मणिः—शौवादंष्ट्रः।

श्वापदे भवः—शौवापदः,श्वापदः। 'पदान्तस्यान्यतरस्या'मिति श्वादेः पदशब्दान्तस्य द्वारादिलक्षण एजागमो वृद्धिप्रतिषेधश्च पक्षे निषिध्यते। शुनः समीपम्—उपशुनम्। गोष्ठे श्वेव—गोष्ठश्वः,अचतुरादिषु निपातितः। श्वानमतिक्रान्तः—अतिश्वः 'अतेः शुन' इति टच्। श्वेव पाषाणः—पाषाणश्वः। मातरि सर्वस्य परिच्छेत्तरि आकाशे वर्द्धत इति—मातरिश्वा,वायुः। 'श्वन्नुक्षन्नि'त्यादिना मातरि पूर्वपदे श्वयतेः कनिनि इकार-लोपोऽलुक् च निपात्यते।

वृत्—यजादयो वृत्ता इत्यर्थः। भूवादिस्त्वयमिष्यत इति व्याख्यातारः, तेन चुलुम्पतीत्येवमादीनामाप्तप्रयोगसिद्धानां संग्रहः सिद्धो भवति।

भ्वादयः समाप्ताः।

---

अदादयः।

## परस्मैपदिनः।

१। अद, भक्षणे। To eat)

अद, अनिट्, सक, प। लट्—अत्ति, अत्तः, अदन्ति। अत्सि, अत्थः, अत्थ। अद्मि, अद्वः, अद्मः। लोट्—अत्तु, अत्तात्; अत्ताम्, अदन्तु। अद्धि, अत्तात्; अत्तम्, अत्त। अदानि, अदाव, अदाम। विधिलिङ्—अद्यात्, अद्याताम्, अद्युः। अद्याः, अद्यातम्, अद्यात। अद्याम्, अद्याव, अद्याम। लङ्—आदत्, आत्ताम्, आदन्। आदः, आत्तम्, आत्त। आदम्, आद्व, आद्म।

लुङ्—अघसत्, अघसताम्, अघसन्। अघसः, अघसतम्, अघसत। अघसम्, अघसाव, अघसाम।

लिट्—जघास, आद; जक्षतुः, आदतुः; जक्षुः, आदुः।

जघसिथ, आदिथ ; जक्षथुः, आदथुः ; जक्ष, आद। जघास, जघस, आद ; जक्षिव, आदिव, जक्षिम, आदिम।

लुट्—अत्ता, अत्तारौ, अत्तारः। अत्तासि, अत्तास्थः, अत्तास्थ। अत्तास्मि, अत्तास्वः, अत्तास्मः। आशीर्लिङ्—अद्यात्, अद्यास्ताम्, अद्यासुः। अद्याः, अद्यास्तम्, अद्यास्त। अद्यासम्, अद्यास्व, अद्यास्म। लृट्—अत्स्यति, अत्स्यतः, अत्स्यन्ति। अत्स्यसि, अत्स्यथः, अत्स्यथ। अत्स्यामि, अत्स्यावः, अत्स्यामः। लृङ्—आत्स्यत्, आत्स्यताम्, आत्स्यन्। आत्स्यः, आत्स्यतम्, आत्स्यत। आत्स्यम्, आत्स्याव, आत्स्याम।

सन् लट्—जिघत्सति। लङ्—अजिघत्सत्। लुङ्—अजीघत्सीत्। लिट्—जिघत्साञ्चकार,—मास,—म्बभूव। णिच् लट्—आदयतेऽन्नं देवदत्तः भिक्षुणा आदयतीति वा। लुङ्—आदिदत्। आदिदत। 'निगरणचलने'ति कर्त्रभिप्राये प्राप्तस्य परस्मैपदादेः प्रतिषेध इति निषेधः। आदिखाद्योः प्रतिषेध इति प्रयोज्यस्य कर्त्तुः कर्मत्वनिषेधः।

व्यतिहारे आत्मनेपदम्।

लट्—व्यत्यत्ते।—दाते।—दते। व्यत्यत्से,—दाथे,—द्ध्वे।—द्वे,—द्वहे,—द्महे। व्यत्यदन्ति वृका मेषानिति हिंसायां द्रष्टव्यं, तत्र हि न गतिहिंसा इति तङ् निषिध्यते। लोट्—व्यत्यत्ताम्। लङ्—व्यत्यात्त, व्यत्यादाताम्, व्यत्यादत। विधिलिङ्—व्यत्यदीत। लिट्—व्यतिजक्षे, व्यत्यादे ; व्यतिजक्षाते, व्यत्यादाते ; व्यतिजक्षिरे, व्यत्यादिरे। व्यतिजक्षिषे, व्यत्यादिषे इत्यादि। लुट्—व्यत्यत्ता। लृट्—व्यत्यत्स्यते। आशीर्लिङ्—व्यत्यत्सीष्ट। लुङ्—व्यत्यघस्त, व्यत्यघत्साताम्,—घत्सत।—घस्थाः इत्यादि। सन्—व्यतिजिघत्सते। व्यतिजिघत्समानः।

कर्मणि—लट्—अद्यते। लङ्—आद्यत। लुङ्—अघासि, अघत्सातास्, अघत्सत इत्यादि।

कृदादि—अदन्, अदती, अदत्। क्त—जग्धः। ल्यप्—प्रजग्ध्य। क्त्वा—जग्ध्वा। क्ति—जग्धिः। पुत्रो जग्धो यया—सा पुत्रजग्धी। राजदन्तादिषु परमिति निष्ठान्तस्य परनिपातः। 'अस्वाङ्गपूर्वपदाद्वे'ति ङीप्। हतजग्ध—परे इति पुत्रस्तकारस्य वा द्वित्वम्। अन्नं लब्धा आन्नः-'अन्नाख' इति द्वितीयान्ता-ल्लब्धेत्यर्थे णप्रत्ययः। सर्वप्रकारमन्नं भक्षयति—सर्वान्नीनः भिक्षुः, खः। काकादनी, गवादनी—ल्युटि गौरादित्वान्ङीष्। प्रात्तीति—प्रघसः—अच्। ग्रस्यमत्तीति ग्रसयात्, विट्। अन्ने तूपपदे कर्मण्यण्—अन्नादः। वासरूपेण अण्—ग्रस्यादः। क्विप्—क्रव्यात्। अण्—क्रव्यादः। णिनिः—पुत्रादिनी। अत्र पुत्रत्वकारस्य द्वित्वं 'नादिन्याक्रोशे पुत्रस्ये'ति निषिध्यते। तत्-परे चे'ति वचनात् पुत्रपुत्रादिनीत्यत्रापि द्वित्वं न भवति। मरक्—अद्मरः। घञ्—घासः। महत्तरा घासः—महाघासः। अप्—विघसः। नौ तूपपदे अप्। पक्षे—न्यादः, निघसः। अन्धः, अन्नम्। 'अदेर्धश्चे'त्यसुनि नुमागमो दकारस्य धकारः। त्रिन्—अत्त्री, अत्ता राक्षसादिरुच्यते। त्रिप्—अत्रिः, ऋषिः। अद्यते फलमूलादिकमसेत्यति—अद्रिः क्रिन्प्रत्ययः। अध्वा—क्वनिप्, दकारस्य च धकारः। अध्वानमलं गच्छतीति अध्वन्यः, अध्वनीनः। द्वितीयान्तादलंगामीत्यर्थे यत्खौ। विहीनोऽध्वा—व्यध्वः, एवं दुरध्वः—अच्समासान्तः। प्राध्वंशब्दो मान्ता-ऽव्ययमानुकूल्ये वर्त्तते।

२। हन, हिंसागत्योः। (To kill, to go)

हन्, अनिट्, सक, प। लट—हन्ति, हतः, घ्नन्ति। हंसि, हथः, हथ। हन्मि, हन्वः, हन्मः।

लोट्—हन्तु, हतात्; हताम्, घ्नन्तु । जहि, हतात्; हतं, हत । हनानि, हनाव, हनाम ।

विधिलिङ्—हन्यात्, हन्याताम्, हन्युः । हन्याः, हन्यातम्, हन्यात । हन्याम्, हन्याव, हन्याम ।

लङ्—अहन्, अहताम्, अघ्नन् । अहन्, अहतम्, अहत । अहनम्, अहन्व, अहन्म ।

लुङ्—अवधीत्, अवधिष्टाम्, अवधिषुः । अवधीः, अवधिष्टम्, अवधिष्ट । अवधिषम्, अवधिष्व, अवधिष्म ।

लिट्—जघान, जघ्नतुः, जघ्नुः । जघनिथ, जघन्थ; जघ्नथुः, जघ्न । जघान, जघन; जघ्निव, जघ्निम ।

लुट्—हन्ता, हन्तारौ, हन्तारः । हन्तासि,—स्थः,-स्थ । —स्मि,-स्वः,-स्मः ।

आशीः—वध्यात्, वध्यास्ताम्, वध्यासुः । वध्याः, वध्यास्तम्, वध्यास्त । वध्यासम्, वध्यास्व, वध्यास्म ।

लृट्—हनिष्यति, हनिष्यतः, हनिष्यन्ति । हनिष्यसि, हनिष्यथः, हनिष्यथ । हनिष्यामि, हनिष्यावः, हनिष्यामः ।

लृङ्—अहनिष्यत्, अहनिष्यताम्, अहनिष्यन् इत्यादि ।

आङ् हन्—आहते, आघ्नाते, आघ्नते । आहसे, आघ्नाथे, आहध्वे । आघ्ने, आहन्वहे, आहन्महे । लोट्—आहताम्, आघ्नाताम्, आघ्नताम् । आहस्व, आघ्नाथाम्, आहध्वम् । आहनै, आहनावहै,—महै । लङ्—आहत, आघ्नाताम्, आघ्नत । आहथाः, आघ्नाथाम्, आहध्वम् । आघ्नि, आहन्वहि । लिङ्—आघ्नीत, आघ्नीयाताम्, आघ्नीरन् । आघ्नीथाः । आघ्नीय । लिट्—आजघ्ने । आजघ्नाते, आजघ्निरे । आजघ्निषे, आजघ्नाथे, आजघ्निध्वे । आजघ्ने, आजघ्निवहे—महे । लुट्—आहन्ता । आहन्तासे । लृट्—आहनिष्यते । आशिषि—

आवधिषीष्ट, आवधिषीयास्ताम्,—षीरन्। —षीष्ठाः, षीयास्थाम्,—षीढ्वम्। लुङ्—आवधिष्ट, आहत, आवधिषाताम्, आहसाताम्; आवधिषत, आहसत। आवधिष्ठाः, आहथाः, आवधिषाथाम्, आहसाथाम्; आवधिढ्वम्, आहध्वम्। आवधिषि, आहसि, आवधिष्वहि, आहस्वहि।*

'आङो यमहन' इति लङ् प्रकृतिग्रहणन्यायेन यङ्लुगन्तादपि भवति—आजङ्घते। आजङ्घाञ्चक्रे इत्यादि अत्रापि आशीर्लिङ्लुङोर्वधादेशे प्रकृतिवदेव रूपम्। आवधिषीष्ट, आवधिष्टेति। लुङि वधादेशाभावे आजङ्घानिष्टेत्यादि।

सन्—जिघांसति, जिघांसतः, जिघांसन्ति इत्यादि। लिट्—जिघांसाञ्चकार इत्यादि। लुङ्—अजिघांसीदित्यादि। आ—आजिघांसते।

यङ्—जङ्घन्यते, जंघन्येते, जंघन्यन्ते। यङि हन्तेर्हिंसायां घ्नीभावो वक्तव्य इति—जेघ्नीयते, जेघ्नीयेते इत्यादि। जंघनाञ्चक्रे—आस,—म्बभूव इत्यादि। एवं जेघ्नीयाञ्चक्रे इत्यादि। लुङ्—अजंघनिष्ट, अजंघनिषाताम्, अजंघनिषत इत्यादि। एवम् अजेघ्नीयिष्ट अजेघ्नीयिषाताम्, अजेघ्नीयिषत इत्यादि।

यङ्लुक्—जङ्घनीति, जङ्घन्ति; जङ्घतः, जङ्घति। आशीर्लिङ्लुङोः प्रकृतिग्रहणन्यायेन वध्यादेशे—वध्यात्, अवधीत् इत्यादि।

---

* आङ्पूर्वकयोर्यमहनोः स्वाङ्गकर्मकयोरात्मनेपदमित्युक्तम्। कथं "आजघ्ने विषमविलोचनस्य वक्षः" इति किराते। अत्र केचिदाज इति पदं छित्त्वा घ्न इति भावे क्विपि चतुर्थ्येकवचनान्तमुक्त्वा घ्ने हनुमान् आजगाम इत्यर्थ इति समर्थयन्ते। तदयुक्तम् अजेर्व्य'घञपो''रिति लिड्यार्द्धधातुके वीभावेन भाव्यत्वात्। अन्ये तु विषमविलोचनस्य समीपमेत्य स्वं वक्ष आस्फालितवानित्यर्थ इति। मल्लो ह्युत्साहाविष्करणाय स्वं वक्ष आस्फालयतीति। भागवृत्तौ तु नैवायं साधुरिति 'आयोधे' इति पाठान्तरमुक्तम्, एवञ्च 'ओदाहध्वं रघूत्तम'मिति भट्टिप्रयोगोऽपि चिन्त्यः। तथा 'मदर्थेऽरीन् विजघ्निथे'ति च।

णिच्—घातयति। घातयेत्। घातयतु। अघातयत्। घातयामास,—२। लुङ्—अजीघतत्। यङ्लुगन्तात् णिच्—जङ्घानयति।

कर्मणि—हन्यते। हन्येत। हन्यताम्। अहन्यत। जघ्ने। हन्ता, घानिता। हनिष्यते, घानिष्यते। अहनिष्यत, अघानिष्यत। घानिषीष्ट, वधिषीष्ट।

लुङ्—अवधि, (१) अघानि। अवधिषाताम्, अहसाताम्, अघानिषाताम्; अवधिषत, अहसत, अघानिषत। अघानिष्ठाः, अवधिष्ठाः, अहथाः; अघानिषाथाम्, अवधिषाथाम्, अहसाथाम्; अघानिध्वम्, अवधिढ्वम्, अहध्वम्। अघानिषि, अवधिषि, अहसि। अघानिष्वहि, अवधिष्वहि, अहस्वहि। णिच् कर्मणि—घात्यते। अघात्यत। घात्येत। अघाति।

---

(१) ननु अवधीत्यत्र चिणि (इचि) वधभावो दृश्यत इति चिण्वद्भावे (इड्वद्भावे) स कस्मान्नातिदिश्यते? उच्यते—नात्र चिणि (इचि) हन्तिमात्रमति दिश्यते किन्त्वाङ्गं चिणि (इचि) दृष्टमिति वधादेशो न भवति। लिङ्लुङोः कर्त्तृवद्वधादेशतद्विकल्पौ, लिङि चिण्वद्भावपक्षे वधादेशो न भवति, यतश्चिण्वदिट् परत्वेन वधादेशं बाधते, कृते तु सकृद्गतिपरिभाषया न भवतीति।

(२) अत्र 'हन्तेरत्पूर्वस्य' इति विधीयमानं णत्वं प्रहण्यते प्रहण्यानीत्यादाविव नित्यप्राप्तं 'वमोर्वा' इति नकारमकारयोः परयोर्विकल्प्यते। प्राघानीत्यत्रात्पूर्वस्येति तपरकरणाण्णत्वस्य न प्रसङ्गः, प्राहन्नित्यत्र तु 'पदान्तस्य' इति निषेधः, प्रहन्तीत्यत्रानुस्वारे कर्त्तव्ये णत्वं पूर्वत्रासिद्धमिति न भवति, कृते तु परसवर्णे तस्यासिद्धत्वात् पुनर्णत्वं न भवति, 'अन्तःशब्दस्याङ्किविधिणत्वेषूपसर्गसंज्ञोपसंख्यानात् तत्पूर्वस्यापि—सर्वमिदं णत्वं द्रष्टव्यम् अन्तर्हण्मीत्यादि। एवञ्च 'न्तरदेशे' इति हन्तो नकारस्य णत्ववचनसन्देहे णत्वनिषेधार्थं भवति, अन्तर्हननो नाम वाहीकेषु ग्रामेषु देशविशेषः, अन्यत्रान्तर्हननमिति णत्वं भवति, मध्ये हननमित्यर्थः, सर्वमिदं णत्वं तिपा निर्देशाद्यङ्लुकि न भवति—प्रजिजङ्घन्तीत्यादि, आधिनिमहन्त्येति षष्ठी तु भवत्येव। घोरस्य प्रजिजङ्घनीत्यादि।

कर्मकर्तरि—आहते माणवकः स्वयमेव, आवधिष्ट माणवकः स्वयमेव।

चौरस्य निप्रहन्ति, चौरस्य निहन्ति, चौरस्य प्रहन्ति, चौरस्य प्रणिहन्ति, अत्र 'नेर्गदे'ति णत्वं, जासिनिप्रहणेति कर्मणि शेषे षष्ठी, तत्र निप्रग्रहणं संघातविगृहीतविपर्यस्तार्थमित्युक्तं, प्रहण्मि, प्रहन्मि। प्रहण्वः, प्रहन्वः। (२) अन्तर्हत्य मध्ये हत्वेत्यर्थः। (१) कणेहत्य पयः पिबति, मनोहत्य पयः पिबति। (२)

वध्यः—कर्मणि ण्यत्। ब्रह्महत्या—भावे क्यप्। असिहत्यायां भवमासिहात्यं। "हत्याशतं पानसहस्र" मित्यादावलुक्पदे क्यबार्षः। घनाघनः—अच् निपातः। शत्रुघ्नः—शत्रु वध्यादित्यर्थः, आशिषि डः। दार्वाहन्तीति—दार्वाघाटः, दार्वाघातो वा। चार्वाहन्तीति—चार्वाघाटः, चार्वाघातो वा, अण्प्रत्यये नकारस्य वा टकारः। वर्णान् संहन्तीति—वर्णसङ्घाटः वर्णसङ्घातो वा। क्वसु (क्वन्सु)—जघ्निवान्, जघन्वान्। 'विभाषागमहनविद—विशा'मितीड् विकल्पः। क्लेशापहः, तमोऽपहः—डः। "स्वर्गियं यदि जीवितापहे'ति प्रयोगस्तु 'क्विप् चे'ति क्विपि साध्यः अत्र

(१) 'अन्तरपरिग्रहे' इति गतित्वात् 'कुगतिप्रादयः' इति तत्पुरुषः। णत्वस्य व्यवस्थितविभाषात्वान्नान्तेषु विकल्पितोऽनुनासिकलोपोऽन्यत्र नित्य इत्युक्तम्। परिग्रहेऽगतित्वात् अन्तर्हत्वा मूषिकां श्येनो गत इति भवति, परिच्छिद्य इत्यर्थः। अत्र न्यासोद्योते अन्तःशब्दो धातोः परिग्रहे वृत्तिं करोतीति, एवञ्च अन्तरपि परिग्रहस्यैव द्योतक इत्युक्तं भवति।

(२) 'कणेमनसी श्रद्धाप्रतिघाते' इति कणेमनःशब्दयोर्गतित्वे समासादि पूर्ववत् अत्र कणेशब्दः सप्तमीप्रतिरूपको वर्तते, मनःशब्दोऽपि साहचर्यादविभक्तिक इव इति न्यासपदमञ्जर्यौ। 'इच्छानिवर्तनावधीकरणाङ्के निवृत्ती वर्तेते, सा च सन्निधानात् कणेमनःशब्दार्थयोस्तृष्णा च निर्वर्तनतयावधी इति सर्वांश प्रतिघातो विषयतया विशेषणं तदयमर्थः। अभिलाषनिवृत्तिपर्यन्तं पयः पिबति। अत्यन्तकणे हत्वा, मनो हत्वा।

त्वात्तद्वयो ङीप् न भवति बह्वादिषु ङीप्विकल्पार्थं हन्तिवि पाठात्। स्वरापह्वादिवद्'न्येष्वपि दृश्यत'इति ङो वा। कुमारघाती, शीर्षघाती,—णिनिः। अस्मादेव निर्देशात् प्रत्यय-सन्नियोगे शिरसः शीर्षभावः। जायाघ्नः ब्राह्मणः, जायाहनन-हेतुलक्षणयुक्त इत्यर्थः। एवं पतिघ्नी वृषली, टक्। जायाघ्नः तिलकालकः, पतिघ्नी पाणिरेखा, श्लेष्मघ्नं मधु, अमनुष्यकर्तृके टक्। मनुष्ये तु अणेव—भ्रातृघातः शूद्रः, कृतघ्नः ब्राह्मणः, गोघ्नः ब्राह्मण इत्यादिषु 'कृत्यल्युटो बहुल'मिति टक्। मूल-विभूजादित्वात् क इत्येके। चौरघातः हस्ती, अमनुष्यकर्तृकेऽपि बहुलवचनादण्। हस्तिघ्नः भटः, कपाटघ्नः चौरः—शक्तौ गम्य-मानायां टक्। अशक्तौ विषेण हस्तिनं हन्ति—हस्तिघातम्। पाणिघः ताड़घः, शिल्पिविशेषौ, टकि निपातितौ। शिल्पि-नोऽन्यत्र पाणिघातः। राजानं हन्तीति—राजघः, निपातः। पितृव्यं हतवान्—पितृव्यघाती, कुत्सिते कर्त्तरि भूते णिनिः। अकुत्सितं चौरघात इत्यणेव। ब्रह्माणं हतवान्—ब्रह्महा एवं भ्रूणहा, वृत्रहा—भूते क्विप्। अभ्याघाती—घिनुण्। घातुकः—उकञ्। विघ्नः—घञर्थे कः। वधः—अनुप-सृष्टाद्भावे अप्। घञपि—घातः। भावादन्यत्रोपसृष्टाद्भावे च घञेव, हन्यत इति—घातः। आहन्यते, आहननमिति वा—आघातः, अप्—अभ्रघनः, अभ्रस्य काठिन्यमित्यर्थः। अन्तर्घणो वाहीकदेशविशेषः, निपातितः। देशादन्यत्र अन्त-र्घातः। प्रघणः, प्रघाणः, अगारैकदेशादन्यत्र प्रघातः। उद्घनः—'उद्घनोऽत्याधान'मिति निपात्यते। उदुपरि यस्य निधा-यान्यं काष्ठं तक्ष्यते,—तदिहात्याधानम्, अपघनः पाणिः पादश्च'अपघनोऽङ्ग'मित्यपपूर्वस्य हनोऽपि घनादेशो निपात्यते। अयोऽन्यते येन, सः—अयोघनः। विहन्यते येन, सः—विघनः;

समीकरणसाधनम्। द्रुर्हन्यते येन, सः—द्रुघनः, 'करणेऽयो-विद्रुषु' त्वयोविद्रुषूपपदेषु हनोऽपि घनादेशः। अत्र वृत्तौ द्रुघण इति केचिदुदाहरन्ति, तत्र कथं णत्वम्नरोघ्नादिपाठात् पूर्वपदात् संज्ञाय'मिति वा। अन्यत्र अयोघात इत्यादि भवति। स्तम्बघ्नः, स्तम्बघनः, दान्तादिः। हनः कप्रत्ययः, चकारादप् घनादेशश्च। परिघः, पलिघः—अप् निपातः। प्रतिघ इति बाहुलकादित्यात्रेयः। उपघ्नः प्रत्यासन्नः निपातः। संघः प्राणिसमुदायः। उद्घः प्रशस्तः, 'संघोद्घौ गणप्रशंसयो'रिति। संघस्य पूरणः—सङ्घतिथः,'तस्य पूरण'इति डटि तिथुगागमः। निघः समारोहपरिणाहः, आरोह—उच्छ्रायः, परिणाहो विशालता। 'निघो निमित' मित्यपि निपात्यते, निमितं—समन्तान्मितम् आरोहपरिणाहाभ्यां तुल्यत्वेन ज्ञातमिति। व्युत्पत्तिः। पूर्ववद्धनोऽज्ञानार्थत्वम्। हेतिः—"ऊतियूती"-त्यादिना क्तिनि नलोप एत्वञ्च निपात्यते, हिनोतेर्वा गुण एत्वन्निपातनात्। समूलघातं हन्ति वधादित्वाद्यथाविध्यनु-प्रयोगः। पाणिघातं वेदिं हन्ति—पाणिना हन्तीत्यर्थः, 'करणे हन' इति णमुल्। हिंसायान्तु पाण्युपघातः। गौर्यस्मै दातु हन्यते, स गोघ्नोऽतिथिः। 'दासगोघ्नौ संप्रदाने' इत्यत्र उपधालोपो निपात्यते। केचित् टकि निपातयन्ति, तन्मते स्त्रियां गोघ्नीत्यात्रेयः। यङ्लुगन्तात् पचाद्यचि जङ्घा, विस्तीर्ण-जङ्घी वा ङीष्। वधमर्हति—वध्यः, यत्। पुत्रहतः।—'वा हतजग्धपरेष्वि'ति पुत्रतकारस्य वा द्वित्वं, कुमारिहता। 'कुत्सितानि कुत्सनै'रिति कर्मधारये 'घरूप्ये'त्यादिना ह्रस्वः। कुमार्या हतेत्यत्र तु वैयधिकरण्यान्न ह्रस्वः, तेन कुमारीहतेति भवति, स्त्रीहता, स्त्रिहता; ब्रह्मबन्धुहता, ब्रह्मबन्धूहता;—नद्याः शेषस्येति वा ह्रस्वः। लक्ष्मीहतेत्यत्र तु 'ङ्यापः

प्रतिषेध' इति प्रतिषेधान्न ह्रस्वः। विदुषीहता, विदुषिहता; श्रेयसीहता, श्रेयसिहता,—'उगितश्चेति वा ह्रस्वः। विद्वच्छ्रेयसोः पुंवद्भावश्च हत्तावुक्तः, विद्वद्धता श्रेयोहता। आत्रेये तु महच्छन्दस्य पुंवद्भाव उच्यते महद्धतेति। पादाभ्यां हन्यत इति पद्धतिः, 'हिमकाषिहतिषु चे'ति पादस्य पद्भावः। पद्धती—बह्वादित्वात् ङीष्। वार्त्तघ्नः, अण्। 'संपूर्व-हनधृतराज्ञामणी'त्यल्लोपः,'धातोः स्वरूपग्रहणे तत्प्रत्यये कार्य-विज्ञानाद्धनस्त' इति तत्त्वं न भवति, 'श्रीषहत्य'मित्यादिना तकारस्य तत्त्वं ध्यञि निपात्यते। हथः विपक्षः, "हनिकुषी-"त्यादिना क्थन्। हिमम्, 'हन्तेर्हि' चे'ति मकि हिभावः। हिमं न सहते—हिमेलुः, 'हिमाच्चेलुर्वक्तव्य' इति चेलुः। महद्धिमं—हिमानी, 'इन्द्रवरुणे'त्यादिना ङीषानुकौ। हेमन्तः —'हन्ते र्मुट् हिचे'ति झच् प्रत्यये मुडागमः। हेमन्ते भवम् —हैमन्तिकम्, 'हेमन्ताच्चेति' ग्रैष्मिकठञ्। हैमन'—'सर्व-त्राण् च तलोपश्चे'त्यणि तलोपः। अत्र चकारेण ऋतुत्वाणो-ऽप्यनुज्ञानाद्धैमन्तमित्यपि भवति, तलोपोऽत्र न भवति। उः —हनुः। परिहनौ भवं—पारिहनव्यम्। 'अव्ययीभावाच्चे'ति भवार्थे व्यः। हनुलः—मत्वर्थे लच्। हनूमान्—'शरादीना-ञ्चे'ति संज्ञायां मतौ दीर्घः। अत्र मतुपो वत्वं न भवति यवा-देराकृतिगणत्वात्। हंसः—'वृतृवदी'त्यादिना सः। आगत्य हन्तीति—अह्निः, 'आङि श्रिहनिभ्यां ह्रस्वश्चे'तीण् प्रत्ययः, स च डित् पूर्वपदस्य च ह्रस्वः, डित्त्वाट्टिलोपः, आङो ह्रस्वः। अह्नौ भवम्—आहेयं, 'दृतिकुक्षी'त्यादिना ठञ्। अहीवती—शरादित्वाद्दीर्घः, 'संज्ञाया'मिति वत्वम्। उपहत्नुः—"क्रोह-निभ्यां क्नु'रिति क्नुः। अनेहा, अनेहसी—"नञि हन एह चे'ति नञुपपदे असुन्, एहादेशश्च हनः। जघनम्—य-

निपातः। जघने भवं तस्मै हितं वा—जघन्यं, यत्। प्लीहा—"श्वन्नुक्ष"न्नित्यादिना कनिनन्तो निपातितः। स्त्री—प्लीहानी।
हत्वा। प्रहत्य, आहत्य इत्यादि। हननम्। हन्तुम्। इतःान्तव। ह। हतिः। हन्ता। घात्यः। हन्तव्यः। हननीयः। घातकः। आ—आघातः, प्रहारः, वादनम्। वि—विघातः। सम्—संघातः योगः। नि—निघ्नन, वादनम्। अभि—अभिघातः, वादनं, शब्दः।

## उभयपदिनः।

### २। द्विष, अप्रीतौ। ( To hate )

लिह्यन्ता अनुदात्ताः स्वरितेतः। द्विष्, सक, अनिट्, उ। लट्—द्वेष्टि, द्विष्टः, द्विषन्ति। द्वेक्षि, द्विष्ठः, द्विष्ठ। द्वेष्मि, द्विष्वः, द्विष्मः॥ द्विष्टे, द्विषाते, द्विषते। द्विक्षे। द्विड्ढ्वे—षे, ष्वहे, ष्महे। लोट्—द्वेष्टु, द्विष्टात्, द्विष्टाम्, द्विषन्तु। द्विड्ढि, द्विष्टम्, द्विष्ट। द्वेषाणि, द्वेषाव। द्विष्टाम्, द्विषाताम्, द्विषताम्। द्विक्ष्व, द्विषाथाम्, द्विड्ढ्वम्। द्वेषै, द्वेषावहै। लङ्—अद्वेट्—ड्, अद्विष्टाम्, अद्विषुः, अद्विषन्। अद्वेट्,—ड्, अद्विष्टम्, अद्विष्ट। अद्वेषम्, अद्विष्व, अद्विष्म। अद्विष्ट, अद्विषाताम्, अद्विषत। अद्विष्ठाः, अद्विषाथाम्, अद्विड्ढ्वम्। अद्विषि, अद्विष्वहि,—ष्महि। विधिलिङ्—द्विष्यात्, द्विष्याताम्, द्विष्युः। द्विष्याः,-तम्,-त। द्विष्याम्,-व,-म। द्विषीत, द्विषीयाताम्, द्विषीरन्। लिट्—दिद्वेष, दिद्विषतुः, दिद्विषुः। दिद्वेषिथ, दिद्विषथुः, दिद्विष। दिद्वेष, दिद्विषिव,—ष्म। दिद्विषे,-षाते,-षिरे।—षिषे, दिद्विषाथे,—षिध्वे। क्रादिनियमादिट्। लुट्—द्वेष्टा। द्वेष्टासे। लृट्—द्वेक्ष्यति। द्वेक्ष्यते। आशीः—द्विष्यात्, द्विष्यास्ताम्, द्विष्यासुः। द्विष्याः,—स्तं,-स्त।—सम्,-

ध्वः, ध्मः। द्विक्षीष्ट,-यास्ताम्,-रन्।—ष्ठाः,-यास्थाम्,-ध्वम्।—य,-वहि,-महि।

लुङ्—अद्विक्षत्, अद्विक्षताम्, अद्विक्षन्। अद्विक्षः,—तम्,—त। अद्विक्षम्, अद्विक्षाव,-म। अद्विक्षत, क्षेताम्,-क्षन्त।—क्षथाः, क्षेथाम्, क्षध्वम्।—क्षि,-क्षावहि,-क्षामहि। सन्—दिद्विक्षति, दिद्विक्षते। यङ्—देद्विष्यते। देद्विषीति। देद्वेष्टि। लङ्—अदेद्वेट्;(अन्)अदेद्विषुः अदेद्विषन्।लुङ्—अदेद्वेषीत्। यङ्‌सन्—देद्विषिषति। क्त्वा—देद्वेषित्वा, देद्विषित्वा। णिच्द्वेषयति। अदिद्विषत्। कर्मणि—द्विष्यते। अद्विष्यत। अद्वेषि।क्विप्—विप्रद्विट्,प्रद्विट्। ताच्छीलिके क्विपि—द्विट्, द्वेषी—णिनुण्। शत्रु'ग्लोर्वा—द्विषन्,षष्ठीविकल्पः। द्वेषः—घञ्। कर्त्तरि ल्युट्—द्वेषणः। क्त्वा—द्विष्ट्वा। निष्ठा—द्विष्टः। द्विष्टवान्।

४। दुह, प्रपूरणे। ( To milk, to yield )

दुह्, अनिट्, सक, उ। लट्—दोग्धि, दुग्धः, दुहन्ति। धोक्षि, दुग्धः, दुग्ध। दोह्मि, दुह्वः, दुह्मः। दुग्धे,दुहाते,दुहते। धुक्षे, दुहाथे, धुग्ध्वे। दुहे, दुह्वहे, दुह्महे। लोट्—दोग्धु, दुग्धात्; दुग्धाम्, दुहन्तु। दुग्धि, दुग्धम्, दुग्ध। दोहानि, दोहाव, दोहाम। दुग्धाम्, दुहाताम्, दुहताम्,। धुक्ष्व, दुहाथाम्, दुग्धम्। दोहै, दोहावहै,—महै।

लङ्—अधोक्, ( ग् ) अदुग्धाम्, अदुहन्। अधोक् ( ग् ) अदुग्धम्, अदुग्ध। अदोहम्, अदुह्व,—ह्म। अदुग्ध, अदुहाताम्, अदुहत। अदुग्धाः, अदुहाथाम्, अदुहि, अदुह्वहि, अदुह्महि।

विधिलिङ्—दुह्यात्, दुह्याताम्, दुह्युः। दुह्याः,दुह्यातम्,

दुह्यात। दुह्याम्, दुह्याव,—म। दुहीत,—याताम्,—रन्। —थाः,-याथाम्,-ध्वम्।—य,-वहि,-महि।

लिट्—दुदोह, दुदुहतुः, दुदुहुः। दुदोहिथ, दुदुहथुः, दुदुह। दुदोह, दुदुहिव,-म। दुदुहे,-हाते,—हिरे।—हिषे,-हाथे,-हिढ्वे, हिध्वे,-हिवहे,-महे। लुट्—दोग्धा, दोग्धारौ। दोग्धासे। लृट्—धोक्ष्यति। धोक्ष्यते। आशीः—दुह्यात्, दुह्यास्ताम्, दुह्यासुः। आत्मने—धुक्षीष्ट इत्यादि। (१)
लुङ्—अधुक्षत्, अधुक्षताम्, अधुक्षन्। अधुक्षः, अधुक्षतम्,—क्षत। अधुक्षम्, अधुक्षाव,-क्षाम। अधुक्षत, अदुग्ध; अधुक्षाताम्, अधुक्षन्त। अधुक्षथाः, अदुग्धाः; अधुक्षाथाम्, अधुक्षध्वम्, अधुग्ध्वम्। अधुक्षि, अधुक्षावहि, अदुह्वहि। अधुक्षामहि,-ह्महि। सन्—दुधुक्षति, दुधुक्षते। यङ्—दोदुह्यते। दोदुहीति, दोदोग्धीत्यादि द्विषिवत्। णिच्—दोहयति। अदूदुहत्। (१)
कर्मकर्त्तरि दुग्धे गौः पयः स्वयमेव। अदुग्ध। दुग्धाम्। दुहीतेति 'न दुहे'त्यादि निषेधात् यक् नास्ति। चिण् तु 'दुहश्चे'ति विकल्पात् पक्षे भवत्येव, अदोहीति अन्यथा कर्त्तृवत्। लुङि आत्मनेपदीयतवर्गादिविभक्तौ—अधुक्षत अदुग्धेति

(१) धुक्षीध्वमित्यत्र षः षीध्वमिति मूर्द्धन्यो न भवति। घत्वे षत्वस्य पूर्वत्रासिद्धत्वात् षीध्वमोऽभावात्, क्से तु घत्वादौ षीध्वमिणः परो न भवति।

(२] अयं द्विकर्मकः, गां दोग्धि पय इति। तत्र पुरुषप्रवृत्तेः पयोऽर्थत्वात्पयः—प्रधानं कर्म, अन्यदप्रधानम्। "तत्राप्रधाने दुहादीना"मिति वचनात् कर्मणि लादयोऽप्रधाने भवन्ति - दुह्यते गौः पयो देवदत्तेन, अदोहि गौः, दोग्धव्या सुदोहा दुग्धेति। तद्योगलक्षणा षष्ठी द्वितीयावदुभयोरपि कर्मणोर्भवति—दोग्धा गोः पयस इति। उभयथा गोणिकापुत्र इति भाष्ये उक्तत्वादप्रधाने द्वितीयापि भवति—दोग्धा गां पयस इति। दोग्धव्या गौः पयो देवदत्तेनेत्यत्राभिहिते कर्मणि कर्त्तरि च' कर्त्तृकर्मणो'रिति षष्ठी न भवति, उभयप्राप्तौ कर्मणि षष्ठीनिषेधस्योक्तत्वात्।

भवति। एवञ्च 'न दुहेति' चिण्निषेधो दुहिव्यतिरिक्तार्थो भवति। अस्ति च दुहेः सकर्म्मकस्यापि कर्म्मवद्भावो 'दुहि-पच्यो'र्बहुलं सकर्म्मकयो'रिति, 'न दुह' इति निषेधो 'दुहश्चे'ति चिण् विकल्पश्च प्रकृतिग्रहणन्यायेन यङ्लुगन्तेऽपि भवति। दोदुहे गौः पयः। अदोदोहि। अदोदोहिष्ट इत्यादि। यङ्-लुकः सेट्‌कत्वात् सिजेव।

दुह्यम्—क्यप्। दोह्यम्—ण्यत्। दोग्धव्यः। गोधुक्, मधुक्,—क्विप्। कामदुघा—'दुहः कब्घश्चे'ति कप्प्रत्ययो हस्य च घः। दोग्ध्री—घिणुन्। दुहिता—'नप्तृ—नेष्ट्रि'त्यादिना—तृचोऽटि गुणाभावो निपात्यते। 'ऋन्नेभ्य' इति स्वस्रादिपाठान्न ङीप् भवति। दुहितुरपत्यं—दौहित्रः, विदादित्वात् अञ् ( अण् )। स्त्रियां—दौहित्री। सूतपुत्री, सूतदुहिता—'सूतोग्र-भोजराज मिश्रेभ्यो दुहितुः पुत्रड्—वक्तव्य' इति पुत्रड़ादेशः, टित्त्वात् ङीप्। एवमुग्रपुत्रीत्याद्यपि भवति। दुग्ध्वा। दुग्धः। दुग्धवान्। दोहः। इरिदयमर्दनार्दः आदौ गत।

५। दिह, उपचये। ( To increase )

दिह्, अनिट्, सक, उ। देग्धि, दिग्धे, इत्यादि सर्वं पूर्व-वत्। प्रणिदेग्धि—'नेर्गदेति' णत्वम्, अत्र देग्धीति प्रतिपा निर्देशात् प्रणिदेदेग्धीत्यत्र णत्वं न भवति। देहः—कर्म्मणि घञ्। देहोऽस्यास्तीति—देही ( १ )। दिह्यते उपलिप्यते इति —देहनी, कर्म्मणि ल्युट्। सम्—सन्देहः।

[ १ ) यद्यपि 'एकाक्षरात् कृतो जातेः सप्तम्याश्च न तौ स्मृतौ' इतीनिठनौ कदम्भ-ङ्गिषिध्येते, तथापि तदस्यास्त्यस्मिन्नित्यत इतिकरणस्यानुवर्त्तनात् तस्य च विषय-नियमार्थत्वात्, कार्य्यत्यादिग्गदवे निर्भविष्यति। उक्तञ्च हर्षी—इतिकरणो विषयनियमार्थः सर्वत्र सम्बध्यत इति।

६। लिह, आस्वादने। ( To taste, to lick )

लिह्, अनिट्, सक, उ। लट्—लेढ़ि, लीढ़ः, लिहन्ति। लेक्षि, लीढ़ः, लीढ़। लेह्मि, लिह्वः, लिह्मः। लीढ़े, लिहाते, लिहते। लिक्षे, लिहाथे, लीढ्वे। लिहे, लिह्वहे, लिह्महे।

लोट्—लेढ़ु, लीढ़ात्; लीढ़ाम्, लिहन्तु। लीढ़ि। लेहानि। लीढ़ाम्, लिहाताम्, लिहताम्। लिक्ष्व, लिहाथाम्, लीढ्वम्। लेहै, लेहावहै।

विधिलिङ्—लिह्यात्। लिह्याः। लिह्याम्। लिहीत। लिहीथाः। लिहीय।

लङ्—अलेट् (ड्); अलीढ़ाम, अलिहन्। अलेट्, (ड्); अलीढ़म्, अलीढ़। अलेहम्, अलिह्व,—ह्म। अलीढ़, अलिहाताम्, अलिहत। अलीढ़ाः, अलीहाथाम्, अलीढ्वम्। अलिहि, अलिह्वहि।

लुङ्—अलिक्षत्, अलिक्षताम्,अलिक्षन्। अलिक्षः। अलिक्षतम्,—क्षत अलिक्षम्, अलिक्षाव म। अलिक्षत, अलीढ़; अलिक्षाताम्, अलिक्षन्त। अलिक्षथाः, अलीढ़ाः, अलिक्षध्वम्, अलीढ्वम्। अलिक्षि, अलिक्षावहि, अलिह्वहि; अलिक्षामहि, अलिह्महि।

सन्—लिलिक्षति, लिलिक्षते। यङ्—लेलिह्यते। यङ्लुक्—लेलिहिति, लेलेढ़ि। आनश् (शानच्)—लेलिहानः। णिच्—लेहयति। अलीलिहत्। ण—लेहः। वहंलिहः, अभ्रंलिहः,—खश्निपातः। लिहावाहुलकात् क्सः। यूकालिक्ष" 'क्षुद्रजन्तव' इति नित्यं समाहारद्वन्द्वे नपुंसकत्वम्। द्विषादयोऽनुदात्ताः स्वरितेतः।

## आत्मनेपदिनः।

७। चक्षिङ्, व्यक्तायां वाचि। ( To tell)

अनुदात्तोऽनुदात्तेत्। अयं दर्शनकर्म्मा च "यथा विश्वा-रूपाभिचष्टे शचीभिरिति।" प्रायेणायमाङ्‌पूर्वः।

चक्ष्, अनिट्, सक, आ। लट्—चष्टे, चक्षाते, चक्षते। चक्षे, चक्षाथे, चड्ढ्वे। चक्षे, चक्ष्वहे, चक्ष्महे।

लोट्—चष्टाम्, चक्षाताम्, चक्षताम्। चक्ष्व, चक्षाथाम्, चड्‌ढ्वम्। चक्षै, चक्षावहै,—महै।

लङ्—अचष्ट, अचक्षाताम्, अचक्षत। अचष्ठाः, अच-क्षाथाम्, अचड्‌ढ्वम्। अचक्षि, अचक्ष्वहि,—क्ष्महि।

लिङ्—चक्षीत, चक्षीयाताम्, चक्षीरन्। चक्षीथाः, चक्षी-याथाम्, चक्षीध्वम्। चक्षीय, चक्षीवहि,—महि।

लिट्—चचक्षे, चचक्षाते, चचक्षिरे। चचक्षिषे, चचक्षाथे, चचक्षिध्वे। चचक्षे, चचक्षिवहे,—महे। ( पक्षे ख्याञादेशः ) चख्ये, चख्याते, चख्यिरे। चख्यिषे, चख्याथे, चख्यिध्वे। चख्ये, चख्यिवहे,—महे। ख्याञो ञित्वात् पक्षे परस्मैपद-मपि भवति—चख्यौ, चख्यतुः, चख्युः। चख्यिथ, चख्याथ, चख्यथुः, चख्य। चख्यौ, चख्यिव,—म। क्शादिरप्ययमिष्यते इति वृत्तौ, तेन—चक्शे, चक्शाते इत्यादि एवं चक्शौ, चक्शतुरित्यादि।

लुट्—ख्याता। ख्यातासे, ख्याताहे। क्शाता, क्शा-तासे, क्शाताहे। ख्याता, ख्यातासि ख्यातास्मि। क्शाता, क्शातासि, क्शातास्मि।

लृट्—ख्यास्यते। ख्यास्यसे। ख्यास्ये। ख्यास्यसि। इत्यादि, क्शादिरपि पच्छदाहार्थः।

आशी:—ख्यासीष्ट, ख्यासीयास्ताम्, ख्यासीष्ठा:, ख्यासीध्वम् । ख्यासीय । ख्येयात्, ख्येयास्ताम्, ख्येयासुः । ख्येयाः, ख्येयास्तम् । ख्येयासम् । एत्वाभावे—ख्यायात्, ख्यायास्ताम् । ख्याया: । ख्यायासम् । क्शासीष्ट, क्शायात्, क्शेयादित्यादि चोदाहार्य्यम् ।

लुङ्—अख्यत, अख्येताम्, अख्यन्त । अख्यथा:, अख्यथाम्, अख्यध्वम् । अख्ये, अख्यावहि । अख्यत्, अख्यताम्, अख्यन् । अख्यः, अख्यतम् । अख्यम्, अख्याव । अङ्विधौ ख्यातीति कृतयत्वाया विकृतेर्निर्देशादकृतयत्वाया: प्रकृतेर्न अङ् इति यदा क्शादित्वं, तदा सिजेव—अक्शास्त, अक्शासाताम्, अक्शासत । अक्शास्था: । अक्शासि, अक्शास्वहि । अक्शासीत्, अक्शासिष्टाम्, अक्शासिषु: । अक्शासी: । अक्शासिषम्, अक्शासिष्व ।

लृङ्—अख्यास्यत, अक्शास्यत । अख्यास्यत्, अक्शास्यत् ।

कर्मणि—ख्यायते, क्शायते इत्यादि । इज्वदिटि ख्यायिष्यते, अख्यायिष्यत, ख्यायिषीष्ट, ख्यायिता इत्यादि । इड्भावे—ख्यास्यते, अख्यास्यत, अख्यासीष्ट, ख्याता इत्यादि । क्शादिरप्युदाहार्य्य: । एवं कर्मकर्त्तर्य्यपि । लुङि तपन्दे—कर्मणि नित्यश्चिण्, कर्मकर्त्तरि तु 'अचः कर्मकर्त्तरी'ति पाक्षिक: । तदभावे द्विवचनादौ च 'अस्यतिवक्तिख्यातिभ्य' इत्यङ्—अख्यायि, अख्यत, अख्येतामित्यादि । क्शादित्वे त्वङ् नास्तीत्युक्तं, तेन अक्शायिति चिणि, तदभावे सिचि चिण्वदिटो भावाभावाभ्याम् अक्शायिष्ट, अक्शास्त ; अक्शायिषाताम्, अक्शासातामित्यादि, तदेवं क्शादिपक्षे तपन्दे तैरूप्यम् ।

सन्नादौ—चिख्यासते, चिख्यासति । चिक्शासते, चिक्शासति । चाख्यायते, चाक्शायते । चाख्याति, चाख्येति ।

( लुङ् ) अचाख्यासीत्। यङ्लुकि ख्यादेशो नास्तीति केचित्। ख्यातीति तिपा निर्देशात् अङ् न स्यात्। ख्यापयति, क्शापयति। अचिख्यपत्, अचिक्शपत्। आख्येयम्, आक्शेयम्—यत्। ण्यत्—संचक्ष्यः, वर्जनीय इत्यर्थः। वर्जने ख्याञ्प्रतिषेध इति हलन्तलक्षणो ण्यत्। शोभनं प्रचष्टे—सुप्रख्यः, कः। उपसृष्टात् कर्म्मोपपदात्तु कर्म्मण्यणि—गोप्रख्यायः। गां सञ्चष्टे—गोसंख्यः, कः। स्त्रियमाचष्टे—स्त्र्याख्यः, कः। गोख्यः—कः। ख्यायः—णः। गोख्यायः व्रजति, गोसंख्यायः व्रजति, प्रियाख्यायो व्रजति—अण्। विचक्षणः—युच्। नृचक्षाः—राक्षसः, असुन्। चक्षुः—उस्। अचक्षुः चक्षुः करोति—चक्षूकरोति। 'अरुर्मन' इत्यादिना च्वौ सलोपे 'च्वौ चे'ति दीर्घः। ईषदाख्यानम्—युच्। आख्या—अङ्।

८। ईर, गतौ कम्पने च। (To go, to shake)

इतः पृचिपर्य्यन्ता उदात्ता अनुदात्तेतः। ईर्, सेट्, आ। ईर्त्ते, ईराते, ईरते। ईर्ष्वे, ईराथे। ईर्त्ताम्, ईराताम्, ईरताम्। ईर्ष्व, ईर्ध्वम्। ईरै। ईरीत। ऐर्त्त, ऐराताम्, ऐरत। ऐर्थाः। ऐरि, ऐर्वहि। ईरे, ईराञ्चक्रे—३। ईरिता। ईरिष्यते। ईरिषीष्ट। ईरिषीध्वम्, ईरिषीढ्वम्। लुङ्—ऐरिष्ट, ऐरिषाताम्, ऐरिषत। ऐरिष्ठाः। ऐरिषाथाम्, ऐरिध्वम्, ऐरिढ्वम्। ऐरिषि, ऐरिष्वहि। कर्मणि—ईर्य्यते। ऐर्य्यत। ऐरि। सन्—ईरिरिषते। णिच्—ईरयति। ( लुङ् ) ऐरिरत्। माभवानीरिरत्। समीरणः—युच्, ल्युर्वा। निम्नमीर्त्त इति नीरम्—कः। निशब्दोऽयं वृत्तिविषये निम्नवचनः। स्वेनाभिप्रायेणेरितुं शीलमस्येति—स्वैरी, ताच्छील्ये णिनिः। ईरणम्—ईरः, स्वेनाभिप्रायेणेरोऽस्मिन्निति—स्वैरं, स्वभावादयं क्रियाविशेषणं, नपुंसकलिङ्गश्च। ईर्म्मं—बाहुलकान्मः, दक्षिणमोर्मं यस्य

सः—दक्षिणेर्मा मृगः, व्याधेन दक्षिणे पार्श्वे व्रणित इत्यर्थः, ईर्मशब्दो व्रणे धर्म्मिणि वर्त्तते, 'दक्षिणेर्मा लुब्धयोग' इत्यनिजन्तो बहुव्रीहौ निपात्यते, अन्यत्र लुब्धयोगाद्दक्षिणेऽस्मं शकटमिति भवति। ईर क्षेपे इत्याद्युषीयः।

९। ईड़, स्तुतौ। (To praise)

ईड़्, सेट्, सक, आ। ईट्टे, ईड़ाते, ईड़ते। ईड़िषे, ईड़िध्वे। ईड़े, ईड्वहे। ईट्टाम्, ईड़ाताम्, ईड़ताम्। ईड़िष्व, ईड़िध्वम्। ईड़ै। ऐट्ट, ऐड़ाताम्, ऐड़त। ऐट्ठाः, ऐड़्ध्वम्। (१) ऐड़ि, ऐड़्वहि। ईड़ीत। ईड़ीथाः, ईड़ीध्वम्। ईड़ीय। ईड़िता। ईड़िताखे। ईड़िताहे। ईड़ाञ्चक्रे—३। ईड़िष्यते। ईड़िषीष्ट। ईड़िषीष्ठाः, ईड़िषीध्वम्। लुङ्—ऐड़िष्ट, ऐड़िषाताम्, ऐड़िषत। ऐड़िष्ठाः। ऐड़िषि। कर्म्मणि—ईड्यते. ऐड्यत, ऐड़ि, इत्यादि। ईडिडिषते। ईड़यति। माभवानीड़िड़त्। ईड़ित्वा। ईड़ितः। ईड़ा—अ। ईड्यः—ण्यत्। ईड़ेन्यः—एन्यः। अयं चुरादौ च।

१०। ईश, ऐश्वर्य्ये। (To possess power, to command)

ईश, सेट्, सक, आ। ईष्टे (२) ईशाते, ईशते। ईशिषे, ईशिध्वे। ईशाञ्चक्रे इत्यादि पूर्ववत्। लटः शानच्—ईशानः, ताच्छीलिकः आनश् वा। ईकः—शः। वाचामीशः, वागीशः। ईश्वरः—वरच्। ईश्वरा—टाप्। ईश्वरीति औणादिके वरटि टित्वात् ङीबित्यात्रेयादयः। न ईश्वरः, अनीश्वरः, न विद्यते

(१) विकृतिग्रहणाभावादत्र नेट् इति माधवीया धातुवृत्तिः। केचित् सनसाहचर्यात् नेड्डित्याहुः। केचिदिटमत्र मन्यन्ते।

(२) धनस्य ईष्टे इति 'अधीगर्थेत्यादिना कर्म्मणि शेषे षष्ठी। अशेषत्वविवक्षायां धनमीष्टे। धनेष्वीश्वरः, धनानामीश्वरः, 'स्वामीश्वरे'ति षष्ठीसप्तम्यौ शेषे।

वा ईश्वरो यस्य, सः अनीश्वरः । तस्य भावः—अनैश्वर्य्यम्, आनैश्वर्य्यं, ब्राह्मणादित्वात् ष्यञ्, "नञः शुचीश्वरक्षेत्रज्ञ" इत्यादिनोत्तरपदस्य नित्यं वृद्धिः, पूर्वपदस्य तु वा ।

११ । आस, उपवेशने । (To sit)

आस्, सेट्, अक, आ । आस्ते, (१) आसाते, आसते । आस्से, आद्ध्वे । आसे, आस्वहे । आस्ताम्, आसाताम्, आसताम् । आस्स्व, आद्ध्वम् । आसै । आसाञ्चक्रे,—२ । आसिता । आसितासे । आसिताहे । आसिष्यते । लङ्—आस्त, आसाताम्, आसत । आस्थाः, आसाथाम्, आद्ध्वम् । आसि, आस्वहि । लिङ्—आसीत, आसीयाताम्, आसीरन् । आशीः—आसिषीष्ट । आसिषीष्ठाः । आसिषीय । लुङ्—आसिष्ट, आसिषाताम्, आसिषत । आसिष्ठाः, आसिषाथाम्, आसिध्वम् [ ढ्वम् ] । आसिषि, आसिष्वहि । सन्—आसिसिषते । आसयति, आसिसत् । आभवानासिसत् । आसमध्यास्ते । 'अधिशीङ्स्थासां कर्म्मे'-त्याधारस्य कर्मत्वम् । मासमास्ते, मासमासनेन व्याप्नोतीत्यर्थः । आसादिना सकर्म्मकत्वादकर्मकग्रहणेन ग्रहणाच्च भावकर्म्मणो-रुभयोरपि भवन्ति । आस्यते मासं देवदत्तेन, आस्यते मासो देवदत्तेन, मासमासितव्यम्, आसितव्यो मासः । मासं स्वासं, स्वासो मास इति । शानच्—आसीनः । युच्—आसना । वासरूपविधिना क्यप्—आस्या । बाहुलकात् क्तिन्—आस्तिः । क्तः—आसितः । उप—उपासना, सेवा । उपास्ते । उपासितो गुरुं शिष्यः, उपासितो गुरुः शिष्येण, 'गत्यर्थाकर्मके'त्यादिना

(१) अत्र 'अनचि चे'ति द्वित्वपक्षे द्वौ सकारौ, अन्यदा लेकः द्वित्वस्याभिन्न-सिद्धत्वात् । आस्स्से इत्यादौ द्वित्वपक्षे त्रयः सकाराः, न च 'झरो झरी'ति लोपात् द्वावेवेति मन्तव्यं, तस्यापि विकल्पितत्वात् ।

कर्त्तृकर्मणोः क्तः। उपसर्गवशात् कालादिव्यतिरिक्तेनापि सकर्मकत्वम्। 'मामुपास्ते हरिः' भट्टिः—५।२४। "सन्ध्यामुपासते ये तु।" इति स्मृतिः। केलिः प्रयोजनमस्य—अण्, कैलः, आस्यते अस्मिन्—आसः, कैलश्चासावासश्चेति—कैलासः, लोहितशाल्यादिवत् समासो नित्यम्। अधि—उपवेशनम्। वासः। अधिष्ठानम्। पीठमध्यास्ते। "पर्णशालामध्यास्य—" रघु—१।९५। 'अध्यासयन्नासनमेकमिन्द्रः'। भट्टि—२-४६। अनु—पश्चादुपवेशनम्। उपासना। "नरेन्द्रकन्या स्थाणुमन्वास्त" कुमार ३।१७

१२। आङः शासु, इच्छायाम्। ( To pesir )

इष्टार्थाशंसनेऽप्ययं प्रयुज्यते। नित्यमाङ्पूर्वकोऽयम्। आङ्पूर्वशास्, ( उ ) सेट्, सक, आ। लट्—आशास्ते, आशासाते, आशासते। आशास्से, (—स्से) आशासाथे। आशाध्वे। आशासे। लिट्—आशशासे, आशशासाते, आशशासिरे। आशशासिषे, आशशसाथे, आशशासिध्वे। आशशासे, आशशासिवहे,—महे। लुट्—आशासिता। आशासिषीष्ट। लुङ्—आशासिष्ट, आशासिषाताम्, आशासिषत। आशासिषते। आशाशास्यते। आशाशासीति, आशाशास्ति। आशासयति। आशशासत्। आशास्यते। आशासि। ( उ ) आशासित्वा, आशास्त्वा। पञ्चमस्वरानुबन्धत्वात् न ल्यप् इति गोविन्दभट्टः। उदनुबन्धफलं छन्दस्येव इति धातुप्रदीपः। आशास्तः। आशासनम्। क्विप्—आशीः। क्वित्वम् 'आशिषि चे'त्यादिज्ञापकात्। आशिषा—क्षुधावाचावत् आप् इत्यात्रेयः। अन्या+आशीः=अन्यदाशीः, 'अषष्ठ्यतृतीयास्थस्ये'त्यादिना दुगागमः। * ण्यत्—आशास्यम्। आशासा—"गुरोश्च हल" इत्यकारः।

* आशिषं करोति आशिषयतीत्यत्र सोपसर्गात् संग्रामयतेरेवेति नियमात् शिष-

१३। वस, आच्छादने। ( To put on )

वस, सेट्, सक, आ। वस्ते, वसाते, वसते। वस्से, वस्-सृसे, वध्वे ( वद्वे )। वसे, वस्वहे, वस्महे। लिट्—ववसे। ववसिषे। ववसिवहे। अवसिष्ट। विवसिषते। वावस्यते। वावसीति, वावस्ति। वासयति वस्त्रं देवदत्तेन वासयते इति वा। वसित्वा। वसितम्। वसितः। वस्यते आच्छाद्यतेऽनेनेति—ल्युट्, वसनम्। वस्त्रम्—ष्ट्रन। वस्त्रेण समाच्छादयति—संवस्त्रयति, णिच्। वासः, वाससी 'वसेर्णिद्वे'त्यसुनि णित्वाद्वृद्धिः। कृत्तिर्वासोऽस्येति—कृत्तिवासाः। कृत्तिवास इति अकारान्तस्तु कृत्तिं वस्ते इति कर्मण्यणि। चर्मव इत्यादि प्रयोगाच्चर्म वस्ते इति क्विपि। क्विवन्ता धातुत्वं न जहति। वसा शरीरान्तर्गतं द्रव्यं, पचाद्यचि टाप्।

१४। कसि, गति, शासनयोः। [ शातनयोः ]

( To go, to punish )

कन्स्, ( इ ) सेट्, सक, आ। कंस्ते, कंसाते, कंसते। कंस्से, कन्ध्वे 'धिचे'ति सलोपः। कंस्ताम्, कंस्स्व, कन्ध्वम्। कंसै। अकंस्त, अकंसत। अकंस्थाः। अकंसि। कंसीत, कंसीथाः, कंसीय। चकंसे, चकंसिषे, चकंसिवहे। कंसिता। कंसिष्यते। कंसिषीष्ट। अकंसिष्ट, अकंसिषाताम्, अकंसिषत। अकंसिष्ठाः। अकंसिषि। चिकंसिषते। चाकंस्ति,

---

शब्दादेव णिजुत्पत्तौ प्रकृत्यैकाजिति प्रकृतिभागात् णाविष्ठवदिति टिलोपो न भवति। आवेयस्वामिकाश्यपा अमुमुद्दितं पठित्वा शास्त्रदितामित्यत्रास्यापि सामान्येन ग्रहणात् आशशासत् इत्युपधाह्रस्वो भवतीत्याहुः। आङ्योगः प्रायेण लक्ष्यत इति दुर्घटवृत्तिः। अतएव उत्तरचरिते "नमो वाकं प्रशास्महे" इति। ङकारोपादानम् अर्थविशेष एवोपसर्ग इति ज्ञापयतीति कश्चित्।

चाकंस्यते, चाकंसीति। अचाकन्। कंसयति। अचकंसत्। 'कश गतिशासनयो'रिति केचित् पठन्ति। कष्टे, कशाते। कक्षे, कड्ढ्वे। कशे, कश्वहे। कष्टाम्। कच्व। कशै। अकष्ट।—अकष्ठाः। कशीत, कशीथाः, कशीय। चकशे, चकशिषे, चकशिवहे। कशिता। कशिष्यते। कशिषीष्ट, अकशिष्ट, अकशिष्ठाः, अकशिषि। चिकशिषते। चाकश्यते। चाकशीति, चाकष्टि। काशयति, अचीकशत्। कशा— पचाद्यचि टाप्। कशामर्हतीति—कश्यम्, अश्वानां मध्यं दण्डादित्वाद् यत्। प्रतिष्कशः—वार्त्तापुरुषः, सहायः, पुरोयायीति वा। 'प्रतिष्कशश्च कशे'रिति कशेरचि सुट्, सस्य षत्वञ्च निपात्यते। प्रतिकशोऽश्व इत्यत्र न भवति।

१५। णिसि, चुम्बने। ( To kiss )

दन्त्यान्त 'इदित्। निन्स्, (इ), सक, आ, सेट्। निंस्ते, निंसाते, निंसते। निनिंसे। निंसिता। अनिंसिष्ट। कसिवत्। प्रनिंसनम्, प्रणिंसनम्। पा—८,४,३३। मैत्रेयादयः प्रणिंस्ते प्रनिंस्ते इत्युदाहृत्य 'वा निंसे'ति णत्वविकल्पमाहुः। अस्माभिस्तु तत् कृति पर इति निन्दतावुक्तम्। आभरणकारस्तु तालव्यान्तमिमं पठति।

१६। णिजि, शुद्धौ। ( To purify, to wash )

निनृज् ( इ ) सेट्, अक, आ। निङ्क्ते, निञ्जाते, निञ्जते। निङ्क्षे। निङ्क्ताम्। अनिङ्क्त। निञ्जीत। निनिञ्जे, निञ्जिषे। निञ्जिता। निञ्जिष्यते। निञ्जिषीष्ट। अनिञ्जिष्ट, निनिञ्जिषते। नेनिञ्ज्यते। नेनिञ्जीति, नेनिङ्क्ति। निञ्जयति। अनिनिञ्जत्। निञ्जित्वा, प्रणिञ्ज्य।

१७। शिजि, अव्यक्ते शब्दे। ( To tinkle, to whisper)

शिनृज, ( इ ) सेट्, अक, आ। शिङ्क्ते। शिशिञ्जे।

अशिञ्जिष्ट। शिञ्जिता। शिशिञ्जिषते इत्यादि पूर्ववत्। शिञ्जा—पचाद्यचि टाप्, 'गुरोश्च हल' इत्यकारो वा। शिञ्जिनी आवश्यकणिन्यन्तात् ङीप्। "तालैः शिञ्जद्वलयसुभगै"रिति परस्मैपदम्, आत्मनेपदानित्यत्वादिति चञ्चिङ्धातावुक्तम्। शिञ्जितम्। शिञ्जानः।

१८। पिजि, वर्णे। ( To tinge )।

सम्पर्चन इति शाकटायनः। उभयत्रेति सम्मता। अवयवे इति काश्यपः। पिन्ज, (इ) सेट्, अक, आ। पिङ्क्ते इत्यादि पूर्ववत्। पिञ्जः—घञ्। पिञ्जरः, पिङ्गलः—बाहुलकादरालौ। पुरुषपिङ्गलः, पिङ्गलपुरुषः 'कडाराः कर्मधारये' इति विशेषणस्य वा परनिपातः। कडारादिपाठादेव जकारस्य गकारः। पिङ्गली, पिङ्गलिका, गौरादिपाठात् ङीष्। पिङ्गलिमा—इमनिच्। पैङ्गल्यम्—ष्यञ्। पिञ्जूलः, शूलम्।

१९। वृजी, वर्जने। ( To avoid )

इदिदित्यात्रेयादयः। वृज्, (ई) सेट्, सक, आ। वृक्ते, वृजाते, वृजते। वृक्षे, वृजाथे, वृग्ध्वे इत्यादि। वृक्ताम्। वृक्ष्व। वर्जै, वर्जावहै। अवृक्त, अवृक्थाः, अवृजि। वृजीत, वृजीथाः। वृजीय। ववृजे, ववृजिषे, ववृजिवहे। वर्जिता। वर्जिष्यते। वर्जिषीष्ट, अवर्जिष्ट, अवर्जिष्ठाः, अवर्जिषि। विवर्जिषते। वरीवृज्यते। वर्वृजीति, वर्वर्क्ति। वर्जयति। अवीवृजत्, अववर्जत्। वृज्यते। अवर्जि। वर्जित्वा। (ई) वृक्तम्। वृज्यः। इन्, किच्च—वृजयः, जनपदाः। वृजिषु भवः—वृजिकः, कन्। वर्गः—घञि कुत्वम्। वर्ग्यः, कवर्गीयः—भवार्थे, यत् छश्च। वासुदेववर्गे भवः—वासुदेववर्ग्यः, वासुदेववर्गीणः—यत्खौ। वासुदेववर्गीयः—छः। वृजिनम्, पापम् इनच् कित्वाच्च गुणः। वृजनम्—

क्तुन्। इदितस्तु—वृङ्क्ते, वृञ्जाते, वृञ्जते। वृङ्क्षे। वृङ्क्ताम्। अवृङ्क्त। वृञ्जीत। ववृञ्जे। वृञ्जिता। वृञ्जिष्यते। वृञ्जिषीष्ट। अवृञ्जिष्ट। विवृञ्जिषते। वरीवृञ्ज्यते। वरीवृङ्क्ति। वृञ्जयति। अववृञ्जत् इत्यादि।

२०। पृची, सम्पर्च्चने। ( To come in contact )

ओष्ठ्यादिश्चान्त ईदित्। सम्पर्क्कः संयोजनम्। 'सम्पृङ्क्ते मधुना चूर्णम् भिषगि'ति चतुर्भुजः। पृच्, ( ई ) सेट्, सक, आ। पृङ्क्ते इत्यादि वृजीवत्। इदिदिति काश्यप-नन्दिधनपालादयः। इदित्तृतीयान्त इति कौशिकः। ईरादय उदात्ता अनुदात्तेतः।

२१। षूङ्, प्राणिगर्भविमोचने। ( To bring forthas a child, to produce )

सू, वेट्, सक, आ। सूते, सुवाते, सुवते। सूषे, सुवाथे, सूध्वे। सुवे, सूवहे। सूताम्, सुवाताम्, सुवताम्। सूष्व। सुवै। असूत, असुवाताम्, असुवत। असूथाः, असूध्वम्। असुवि, असूवहि। सुवीत, सुवीयाताम्। सुवीथाः। सुवीय। सुषुवे, सुषुवाते। सुषुविषे, सुषुविढ्वे, सुषुविध्वे। सुषुविवहे। सोता, सविता। सोष्यते, सविष्यते। सविषीष्ट। सविषीयास्ताम्, सविषीरन्। सविषीष्ठाः, सविषीढ्वम्, सविषीध्वम्। पक्षे—सविषीय, सोषीष्ट, सोषीयास्ताम्, सोषीरन्। सोषीष्ठाः, सोषीढ्वम्, सोषीय। लुङ्—असविष्ट, असविषाताम्, असविषत। असविष्ठाः, असविध्वम्, असविढ्वम्। असविषि, असविष्वहि। पक्षे—असोष्ट, असोषाताम्, असोषत। असोष्ठाः। असोढ्वम्। असोषि। सुसूषते। सोषूयते। सोषुवीति, सोषूति। सावयति। असूषवत्। कर्म्मणि—सूयते। असावि। चिण्वदिटि असा-

विषाताम्, असोषाताम्, असविषाताम् इत्यादि। स्यादिषु—साविष्यते, सविष्यते, सोष्यते। साविता, सविता, सोता इत्यादि। लुङ्लिङोर्ध्वमि पञ्च रूपाणि—असविध्वम् असाविध्वम्, असविढ्वम्, असाविढ्वम्, असोढ्वम्। कर्म्मकर्त्तर्य्यपि लुङि एकवचने 'अचः कर्म्मणि' इति चिण्सिचौ द्वौ भवतः, णिचश्च वा चिण्वदिट्, तदभावे शुद्धेड्विकल्पश्चेति चातूरूप्यम् —असावि, असविष्ट, असाविष्ट, असोष्ट।

गोषु गवां वा प्रसूतः। पुत्रसूः, प्रसूः। सूतः। सूतवान्। सूतका। सूतिका। सुषूतिः, निषूतिः, विषूतिः, दुःषूतिः। सूरिः—'षूङः क्रिरि'ति क्रिः। सूरः—'सु-सू-धा-गृधिभ्यः क्र'न्निति क्रन्। सूनुः—'सुवः कि'दिति नुप्रत्ययः। पुमान्—अस्माद्धातोर्डुमसुन् प्रत्ययः, सकारस्य पकारः। पौंस्नम्—'अपत्यादौ स्त्रीपुंसाभ्या'मिति स्नञ्। पुंस्त्वम्, पुंस्ता—त्वतलौ। पुंवत्—निपातनाद्वतिः। स्त्री च पुमांश्च—स्त्रीपुंसौ, द्वन्द्वेऽजन्तो निपातितः। न स्त्रीपुंसौ—नपुंसकं, नभ्राड़ित्यादौ निपातनान्नञः प्रकृतिभावः, स्त्रीपुंसशब्दस्य च पुंसकादेशः।

२२। शीङ्, स्वप्ने। ( To be down, to sleep)

शी, (ङ) सेट्, अक, आ। शेते, शयाते, शेरते। शेषे, शेध्वे। शये, शेवहे। शेताम्, शयाताम्, शेरताम्। शेष्व, शेध्वम्। शयै, शयावहै। अशेत, अशयाताम्, अशेरत। अशेथाः। अशयि, अशेवहि। शयीत, शयीथाः, शयीय। शिश्ये, शिश्यिरे। शिश्यिषे, शिश्यिढ्वे, शिश्यिध्वे। शिश्यिवहे। शयिता। शयिष्यते। अशयिष्यत। शयिषीष्ट, शयिषीष्ठाः, शयीषीढ्वम्, शयीषीध्वम्। शयिषीय। अशयिष्ट, अशयिषाताम्, अशयिषत। अशयिष्ठाः, अशयिढ्वम्, अशयिध्वम्। अशयिषि, अशयिष्वहि। शिशयिषते। शाशय्यते। शेशयीति, शेशेति; शेशीतः,

शेष्यति। व्यतिशेष्यते। शेशीयतं भवता, यङ्लुकि सानुबन्ध-निर्देशादयङ् न भवति। शाययति देवदत्तम् यज्ञदत्तः। अशी-शयत् *। भावे शय्यते। ग्रामोऽधिशय्यते। अधिशीङ्-स्थासामाधारस्य कर्म्मत्वम्। 'अचः कर्मकर्त्तरि' इति चिण्सिचौ, सिचः पक्षे चिण्वदिट् चेति त्रैरूप्यम्। अत्यशायि, अत्यशायिष्ट, अत्यशयिष्ट इति। विशयी देश इति ग्रह्यादिपाठात् णिनिः, छन्दोऽभावस्य। खेशयः, खशयः, अधिकरणे अच्। पार्श्वाभ्यां शेते इति—पार्श्वशयः। उरसा शेते—उरःशयः 'पार्श्वादिषू-पसंख्यान'मित्यच्। उत्तानः शेते—उत्तानशयः, एवमूर्द्ध्वंशयः 'उत्तानादिषु कर्त्तृष्वि'त्यच्। गिरिशः—'गिरौ डश्छन्दसो'ति डः। संज्ञाशब्दत्वाद्भाषायामप्ययं प्रयुज्यते। शेरतेऽस्मिन्नङ्गुलय इति—शयः हस्तः, 'पुंसि संज्ञाया'मिति घः। शय्या—क्यप्। शयनीयम्—बाहुलकादधिकरणे अनीयः। सुखशयनं पृच्छति—सौखशायनिकः। 'पृच्छतौ सुस्नातादिभ्य' इति ठक्। अतिशायनम्—ल्युट्, निपातनाद्दीर्घः। संशयमापन्नः—सांश-यिकोऽर्थः 'संशयमापन्न'इति ठक्। शयुः अजगरः, 'भृमृ-शी'त्युप्रत्ययः। शयानकः, स एव—आनकन्। शेवम्, सुखम् 'इण्शीभ्यां वन्'इति वन्प्रत्ययः। शीधुः, शीलम्, शैवालम्, शेवलम्—शीङो धुग्लग्वालग्वलजः। शिखा—'शीङो निद्रस्व-श्वे'ति खप्रत्ययः। शिखावलः, मयूरः—वलच्। शिखी—इनिः। शिनिः, क्षत्रियविशेषः। निप्रत्ययो ह्रस्वश्च। शयालुः—आलुच्। अति—अतिक्रमः, अतिशेते, अतिशयितः—कर्त्तृ-कर्म्मणोः क्तः। अधि—अधिष्ठानम्। शय्यामधिशेते। अनु—अनुशयः, द्वेषः। सम्—संशयः।

* अणावकर्म्मकादिति चित्तवत् कर्त्तृकत्वे नित्यं परस्मैपदम्। अन्यदा तूभयपदम्।

## परस्मैपादिनः ।

### २३ । यु, मिश्रणे । (To mix)

यु, सेट्, सक, प । यौति, युतः, युवन्ति । यौषि । यौमि । यौतु, युताम्, युवन्तु । युहि । यवानि, यवाव । अयौत्, अयुताम्, अयुवन् । अयौः । अयवम् । युयात्, युयाताम्, युयुः । युयाः, युयातम्, युयात । युयाम्, युयाव । लिट्— युयाव, युयुवतुः, युयुवुः । युयविथ, युयुवथुः, युयुव । युयाव, युयव । युयुविव, युयुविम । यविता । यविष्यति । यूयात्, यूयास्ताम् । अयावीत्, अयाविष्टाम् । अयावीः । अयाविषम् । यियविषति, युयूषति । योयूयते । योयवीति, योयोति । यावयति । अयीयवत् । यियावयिषति । कर्म्मणि —यूयते । यूयताम् । अयूयत । स्यादिषु चिण्वदिट् पक्षे— याविष्यते । अयाविषाताम् । याविषीष्ट । याविता । यविष्यते । अयविषाताम् । यविषीष्ट । यविता । लुङ्येकवचने- ’ऽचः कर्म्मकर्त्तरी’ति पक्षे सिच्, तस्य वा चिण्वदिट्—अयावि, अयाविष्ट, अयविष्ट इति त्रैरूप्यम् । याव्यम्—ण्यत् । यव्यमिति युनातेर्यति । योत्रम्—ष्ट्रन् । संयावः, उद्‌यावः—घञ्, अन्यत्र—प्रयवः, अप् । उद्‌यावो भक्ष्यविशेषः । अध्यायन्यायोद्‌यावेति संज्ञायां करणाधिकरणयोर्घञि निपात्यते । युनातेरुद्‌यव इति । यूतिः—क्तिनि दीर्घत्वं निपात्यते । ग्रहयुति-रित्येतत्तु युनातेः । यवः—घः । यवनः—ल्युः । दुष्टो यवः—यवानी । यवनानां लिपिः—यवनानी । ’यवनीमुखपद्मानां’मिति रघु प्रयोगः । पुंयोगलक्षण-ङीषि । यवानां भवनं क्षेत्रं—यव्यं । यवक्यं—’यवयवकषष्टिकाद्य’दिति यत् । यव एव—यवकः । यवस्य विकारः—यावः । स एव—यावकः ।

रञ्जनद्रव्ये यावकमिति संज्ञायां ख्वुलि। यवमान्—'मादुपधायाश्चे'ति वत्वमयवादिभ्य' इति निषेधान्न भवति। युत्वा, युतः। युतमित्यत्र "यस्य विभाषे"ति वा नेट्। यूपः—पप्रत्ययो दीर्घश्च। यूका—कनि दीर्घः। यवसम्—असः। यवासः—असप्रत्यये दीर्घः। युवा—कनिन्। यूनो भावकर्मणी—यौवनम्, अण्। यौवनिका—वुञ्। यविष्ठः, यवीयान्,—'स्थूलदूरे'त्यादिना इष्ठेयसुनोः साध्यः। पक्षे—कनिष्ठः, कनीयान्—'युवाल्पयो'रिति वा कनादेशः। युवानमाचष्टे—यवयति, पक्षे—कनयति, णाविष्ठवदिति। स्त्रियां 'यूनस्ति'रिति तिप्रत्यये युवतिः। 'सर्वतोऽक्तिन्नर्था'दिति पक्षे वा ङीषि युवती। युवतीति सर्वैर्नाद्रियते। युवतीनां समूहः—यौवनम्। युवखलतिः, इत्यादिषु विशेषणमाहुः।

२४। रु, शब्दे। ( To sound )

रु, सेट्, अक, प। रौति, यौतीत्यादिवत्। विशेषस्तु 'तुरुस्तुशम्यमः सार्वधातुके' इति हलादौ सार्वधातुके पक्षे ईड़ागमः—रवीति, रुवीत इत्यादि। रुरूषति। रोरूयते। रोरवीति, रोरोति। रोरुवीतः। रोरुतः, प्रकृतिग्रहणन्यायेन-'तुरुस्त्वि'तीड़् विकल्पः। रावयति। अरीरवत्। रवणः—युच्। संरावः—घञ्। प्राणाः उपरवा इति प्रयोगः पुंसि संज्ञायां घे द्रष्टव्यः। अनुपसृष्टादपि रवः। बाहुलकाद्घञपोत्यात्रेयः, राव इति। आरावः, आरवः—'विभाषाङि रुप्लुवो'-रिति पक्षे घञ्, तदभावेऽप्। रविः—'अच इ'रितीप्रत्ययः।

२५। तु, वृद्धिहिंसयोः। (To grow, to ingnre)

सौत्रिको धातुः। तु, सेट्, प। तौति, तवीति इत्यादि रौतिवत्। छान्दसोऽयमिति सर्वैर्नाद्रियते।

२६ । णु, स्तुतौ । ( To praise )

णु, सेट्, सक, प । नौति, नवीति इत्यादि यौतिवत् । नावयति । अनूनवत् । नुनूषति, नुनावयिषति । अभ्यासे इत्त्वाभावः । प्रणौति । प्रणुनाव, णत्वम् । आङ्पूर्वक आत्मनेपदी—आनुते शृगालः । आनुवाते, आनुवते । आनुषे । आनुवे, आनुवहे । आनुताम्, आनुष्व, आनवै । आनुत, आनुथाः, आनुवि । आनुवीत, आनुवीथाः, आनुवीय । आनुनुवे । आनुनुविषे, आनुनुविढ्वे, आनुनुविध्वे । आनुनुवे, आनुनुविवहे । आनविता । आनविष्यते । आनविषीष्ट, आनविष्ट, आनविष्ठाः, आनविषि । आनुनूषते । यङ्लुक्यपि अयमात्मनेपदी । आनोनुते । दीर्घान्तोऽयं तुदादौ ।

२७ । टु क्षु, शब्दे । ( To sound )

टु क्षु रु कु शब्द इति दुर्गः पठति । क्षु (टु) सेट्, अक, प । क्षौति । चुक्षाव । क्षविता इत्यादि यौतिवत् । विक्षावः 'वौ क्षुश्रुव' इति घञ् । (टु) क्षवथुः—अथुच् । क्षुमा, अतसी, —मनिन्, बाहुलकान्न गुणः । क्षुरम्—'ऋज्र' इत्यादिना रन् ।

२८ । क्ष्णु, तेजने । ( To sharpen)

क्ष्णु, सेट्, अक, प । क्ष्णौति । चुक्ष्णाव, चुक्ष्णुवतुः, चुक्ष्णुवुः । क्ष्णविता इत्यादि यौतिवत् । चोक्ष्णूयते । चोक्ष्णवीति । चोक्ष्णोति । संक्ष्णुते शस्त्रम् । संक्ष्णुताम् । समक्ष्णुत । संक्ष्णुवीत । संचुक्ष्णुवे । संक्ष्णविता । संक्ष्णविष्यते । संक्ष्णुविषीष्ट । समक्ष्णविष्ट । संचुक्ष्णूषते । 'समः क्ष्णुवः' इति संपूर्वक आत्मनेपदी ।

२९ । ष्णु, प्रस्नवणे । ( To distil )

स्नु, सेट्, सक, प । स्नौति । स्नौतु । अस्नौत् । स्नुयात् । स्नविष्यति । स्नूयात् । स्नविता । सुष्णाव, सुष्णुवतुः । सुष्ण-

विथ। सुष्णुविव। अस्नावीत्। सुस्नूषति। 'स्नौतिण्योरेवे'ति न षत्वम्। सोष्णूयते। सोष्णवीति, सोष्णोति। स्नावयति। असुष्णवत्। कर्म्मणि—स्नूयते। स्नूयताम्। अस्नूयत। स्नूयेत। सुष्णुवे। सुष्णुषे, सुष्णुढ्वे। सुष्णुवहे। स्नोता, स्नोतारे। स्नोष्यते। स्नोषीष्ट। अस्नावि। अस्नोषाताम्। प्रस्नवितेवाचरति—प्रस्नवितीयते। स्यादिषु पक्षे चिण्वदिटि स्नाविष्यते इत्याद्युदाहार्य्यम्। कर्मकर्त्तरि तु 'न दुहस्नुनमां यक्चिणा'विति यक्चिणौ न भवतः [ रुचादित्वादात्मनेपदम् ] प्रस्नुते गौः स्वयमेव। प्रास्नोष्ट गौः स्वयमेव इत्यादि। स्नुषा। 'स्नूव्रश्चिकृत्यृषिभ्यः क्स' इति क्सप्रत्ययः। युप्रभृतय उदात्ता उदात्तेतः।

## उभयपदी।

२०। ऊर्णुञ्, आच्छादने। (To cover)

उदात्त उभयतोभाषः। ऊर्णु, सेट्, सक, उ। आ, लट्,—ऊर्णुते, ऊर्णुवाते, ऊर्णुवते। ऊर्णुषे, ऊर्णुवे, ऊर्णुवहे। लिट्—ऊर्णुनुवे। ऊर्णुनुविषे, ऊर्णुनुविध्वे, ऊर्णुनुविढ्वे। ऊर्णुनुवे, ऊर्णुनुविवहे। लुट्—ऊर्णविता, ऊर्णुविता। लृट्—ऊर्णविष्यते, ऊर्णुविष्यते। 'विभाषोर्णो' रितीड़ादेः प्रत्ययस्य पक्षे ङित्त्वान्न गुणः।

लोट्—ऊर्णुताम्, ऊर्णुष्व, ऊर्णवै। लङ्—और्णुत, और्णुथाः, और्णुवि, और्णुवहि। लिङ्—ऊर्णुवीत, ऊर्णुवीयाताम्, ऊर्णुवीथाः, ऊर्णुवीय, ऊर्णुविवहि।

आशीः—ऊर्णुविषीष्ट, ऊर्णुविषीढ्वम्, ऊर्णुविषिध्वं ऊर्णुविषीय। ङित्त्वपक्षे उवङ्। अन्यदा तु गुणः—ऊर्णविषीष्ट इत्यादि। लुङ्—और्णविष्ट, और्णविष्ठाः, और्णविषि। ङित्त्वपक्षे उवङ् उदाहार्य्यः और्णुविष्ट इत्यादि

प—ऊर्णौति, ऊर्णोति ; ऊर्णुतः, ऊर्णुवन्ति । ऊर्णौषि, ऊर्णोषि, ऊर्णौमि, ऊर्णोमि । ऊर्णौतु, ऊर्णोतु, और्णोत्, और्णुताम्, और्णोः और्णवम् ऊर्णुयात् । ऊर्णुयाः, ऊर्णुयाम् । ऊर्णुनाव, ऊर्णुनुवतुः । ऊर्णुनविथ, ऊर्णुविथ, ऊर्णुनुविव, ऊर्णुनविव ऊर्णूयात् । ऊर्णुविता, ऊर्णविता ऊर्णुविष्यति, ऊर्णविष्यति । और्णावीत्, और्णवीत् ; और्णुवीत् ; और्णाविष्टाम् इत्यादि । ऊर्णुनूषति, ऊर्णुनविषति । ऊर्णुनुविषति । ऊर्णोनूयते, ऊर्णोनोति । लुङि—और्णोनावीत् और्णोनुवीत् । ऊर्णावयति । और्णुनवत् ।

ऊर्णुत्वा । ऊर्णुतः । ऊरुः—'ऊर्णोतेर्नुलोपश्च' इत्युप्रत्यये नुशब्दलोपः । उरुः 'महतिह्रस्वश्चे'ति ह्रस्वश्च धातोः । रम्भे इव ऊरू यस्याः सा—रम्भोरूः, 'ऊरूत्तरपदादौपम्य' इत्यूङ्प्रत्ययः । संहितोरूः, शफोरूः, वामोरूः, लक्षणोरूः 'संहित-शफ-लक्षण-वामादेश्च' इत्यूवन्ताद्बहुब्रीहेरूङ्प्रत्ययः । शफशब्दः संहितपर्य्यायः, 'सहितोरूः । हितेन सहितः—सहितः सहोरूः, सहशब्दः सहितवचनः । 'सहितसहाभ्याञ्चे'—त्यूङ् । अतिशयेनोरुः—वरिष्ठः । वरीयान् । उरोर्भावकर्म्मणि—वरिमा, पृथ्वादित्वादिमनिच्, 'प्रियस्थिरे'त्यादिना वरादेशः । उरुमाचष्टे—वारयति, 'णाविष्ठव'दिति वरादेशे वृद्धिः । ऊर्णा—'ऊर्णोतेर्डे' इति डः । ऊर्णायुः—'ऊर्णाया युस्'इति मत्वर्थीयो युस् । ऊर्णा नाभौ यस्य, स—ऊर्णनाभः । समासान्तोऽत्, ह्रस्वश्च । *

---

* ऊर्णुधातुरयं षष्ठस्वरादिर्दन्त्योपधः, मूर्द्धन्यस्तु रेफयोगात् । अतएव ऊर्णुनाव इत्यादौ निमित्ताभावान् मूलधातोर्णत्वाभावः । लिटि आम्प्रतिषेधश्च : 'ऊर्णोतेश्चोपसंख्यान'मिति भाष्यात् । यङ्लोपे ऊर्णोनौतीत्यादौ 'उतो वृद्धिर्लुकि हलौ'ति वृद्धिः । नाभ्यस्तस्ये ति निषेधोऽभ्यस्तस्य द्वानङ्गत्वात् न भवति । 'ऊर्णोतेर्विभाषे'ति वृद्धिविकल्पस्य

## परस्मैपदिनः ।

२१ । द्यु, अभिगमने । ( To assil )

अनुदात्तेत् । द्यु, अनिट्, सक, प । द्यौति । द्यौतु, द्युतात् । द्युहि, द्युतात् । द्यवानि । अद्यौत् अद्युताम् । अद्यौः । अद्यवम् । द्युयात्, द्युयाताम्, द्युयाः । द्युयाम् । दुद्याव, दुद्युवतुः । दुद्यविथ, दुद्योथ, दुद्युव । दुद्याव, दुद्यव, दुद्युविव—स्वादिनियमादिट् ।थलि भारद्वाजनियमाद्विकल्पः । द्योता । द्योष्यति । द्यूयात् । अद्यौषीत्,अद्यौष्टाम्, अद्यौषुः । अद्यौषीः । अद्यौषम् । दुद्यूषति । दोद्यूयते । दोद्योति, दोद्यवीति । द्यावयति । अदुद्यवत् । द्युत्वा । द्युतः । केचि-दस्य सेट्त्वमिच्छन्तीति धातुपारायणे ।

२२ । षु, प्रसवैश्वर्य्ययोः । ( To permit, to possess power )

अनुदात्त उदात्तेत् । सु, अनिट्, सक, प । सौति । प्रसौति । सुषाव । सोता इत्यादि द्युवत् । असौषीदित्यत्र

---

श्तिपा निर्देशात् नाशङ्कः । अतएव 'गुणोऽपृक्त' इति गुणयापृक्तः । ऊर्णोनुवन्तीत्यत्र । 'दभ्यस्ता'दित्यङ्भावो न भवति अभ्यस्तस्यानङ्गत्वात् । पारायणिकास्त्वङ्गस्येत्यनाश्रित्य अङ्भावमिच्छन्ति । अङ्गाधिकारः कथं बाध्यइति तच्चिन्त्यम् । लुङि ऊर्णोतेरिति श्तिपा निर्द्देशात् वृद्धिविकल्पो नेति नित्या सिचि वृद्धिर्भवति----और्णोनावीत् इत्यादि । 'विभाषोर्णो'रिति ङित्त्वपक्षे उवङ् और्णोनुवीत् इत्यादि । णिचि और्णुनुवदिति अत्र णौ कृतं स्थानिवदिति नुशब्दस्य द्विर्वचने उपधाह्रस्वत्वे 'दीर्घो लघो'रिति अभ्यासस्य दीर्घो न भवति चङ्परे णौ यदङ्ग' तस्य योऽभ्यास इति सूत्रार्थव्यवस्थापनात् अत्र त्वङ्गावयवस्याभ्यासो न त्वङ्गस्य । ऊर्णुत्वा इति 'श्रुकः कितीत्यनिट्त्वम् । अत्र यद्यप्येकाच इत्यनुवर्त्तते तथापि न दोषोऽस्य नुवद्भावात् । उक्तञ्च---वाच्य ऊर्णोर्णुवद्भावो यङ्प्रसिद्धिः प्रयोजनम् । आमश्च प्रतिषेधार्थमेकाचश्चेडुपग्रहात् ॥ इति माधवीया ।

'स्तुसुधूञ्भ्य' इतीड्विकल्पो न भवति, यतस्तत्रोभयतो ञितोः स्तुञ्धुञोः साहचर्य्यात् ञितः सुनोतेरेव ग्रहणं न पुनरस्याञितो लुग्विकरणस्यापि। सुषवी—प्रसवशीला, पचाद्यचि सुषामादित्वात् षत्वम्, गौरादित्वात् ङीष्।

३३ । कु, शब्दे । (To sound)

अयमनुदात्त उदात्तेत्। कु, अनिट्, अक, प। कौति। चुकाव, चुकविथ, चुकोथ। चुकुविव। कोता इत्यादि पूर्ववत्। चोकूयते। चोकोति, चोकवीति। नात्र 'न कवतेर्यङो'-त्यभ्यासस्य कुत्वनिषेधः। कविः—'अच इ'रितीप्रत्ययः। कवेः कर्म—काव्यं ब्राह्मणादित्वात् ष्यञ्।

## उभयपदिनः ।

४४ । ष्टुञ्, स्तुतौ । (To praise)

अनुदात्तः। स्तु, (ञ्) अनिट्, सक, उ। आत्मने—स्तुते, स्तुवाते, स्तुवते। स्तुषे, स्तुध्वे। स्तुवे, स्तुवहे। स्तुताम्, स्तुवाताम्। स्तुष्व, स्तुध्वम्। स्तवै। अस्तुत, अस्तुवाताम्। अस्तुवत। अस्तुथाः। अस्तुवि। स्तुवीत, स्तुवीयाताम्। स्तुवीथाः। स्तुवीय। तुष्टुवे, तुष्टुवाते, तुष्टुविरे। तुष्टुषे, तुष्टुढ्वे। तुष्टुवहे। स्तोता। स्तोष्यते। आशिषि—स्तोषीष्ट। लुङ्—अस्तोष्ट, अस्तोषाताम्, अस्तोषत। अस्तोष्ठाः, अस्तोढ्वम्। अस्तोषि। हलादौ सार्वधातुके शब्विषये यदा 'तुरु-स्तुशम्यम' इतीट्, तदा स्तुवीते, स्तुवीषे, स्तुवीध्वे स्तुवीवहे। स्तुवीताम्। स्तवीष्व, स्तवीध्वम्। अस्तुवीत, अस्तुवीथाः, अस्तुवीध्वम्। अस्तुवीवहीति।

परस्मै—स्तौति, स्तवीति ; स्तुतः, स्तुवीतः। स्तौषि, स्तवीषि। स्तौमि, स्तवीमि ; स्तुवः स्तुवीवः। स्तौतु, स्तवीतु स्तुतात् स्तुवीतात् ; स्तुताम्, स्तुवीताम् ; स्तुवन्तु। स्तुहि, स्तुवीहि

स्तवानि। अस्तौत्, अस्तवीत्; अस्तुताम्, अस्तुवीताम्; अस्तुवन्। अस्तौः, अस्तवीः। अस्तवम्, अस्तुव, अस्तुवीव। स्तुयात्, स्तुवीयात् स्तुयाताम्, स्तुवीयाताम्, स्तुयुः, स्तुवीयुः। स्तुयाः, स्तुवीयाः; स्तुयातम्, स्तुवीयातम्। स्तुयाम, स्तुवीयाम।

तुष्टाव, तुष्टुवतुः। तुष्टोथ। तुष्टुव। तुष्टाव, तुष्टव; तुष्टुविव। आशीः—स्तूयात् इत्यादि। लुङ्—अस्तावीत्, अस्ताविष्टाम्, अस्ताविषुः। अस्तावीः। अस्ताविषम्। स्तोष्यति। स्तोता। अभिष्टौति, अभ्यष्टौत्—'उपसर्गात् सुनोतीति प्राक्-सितादड्व्यवायेऽपि षत्वम्। पर्य्यस्तौत्,पर्य्यष्टौत्। 'सिवादीनां वाड्व्यवायेऽपि' इति परिनिविभ्यः परस्याड्व्यवाये वा षत्वम्। कर्मणि—स्तूयते। अस्तावि। तुष्टूषति, ते। तोष्टूयते। तोष्टवीति, तोष्टोति। स्तावयति। अग्निष्टुत्—'क्विप्चेति क्विप्। अग्निष्टोमः, ज्योतिष्टोमः, आयुष्टोमः—'अर्त्तिस्तु-त्यादिना मन्प्रत्ययान्तस्तोमशब्दः, एते यज्ञविशेषाः। अग्नेस्तुत्स्तोमसोमाः' 'ज्योतिरायुषः स्तोम' इति षत्वम्। परिस्तोम इत्यत्रो'पसर्गादि'त्यादिना षत्वं नास्त्यनभिधानात्। स्तुत्यः—क्यप्। ग्रावस्तुत् क्विप् आयुस्तूः—'क्विब्वची'त्यादिना क्विप्, दीर्घश्च। स्तोत्रम्—ष्ट्रन्। प्रस्तावः—'प्रे द्रुस्तुस्रुव' इति घञ्। यज्ञकर्मणि छन्दोगा यत्र देशे समेत्य स्तुवन्ति, स संस्तावः। 'यज्ञे समि स्तुव' इति घञ्। अन्यत्र—संस्तवः स्तवः। स्तूयतेऽनयेति—स्तुतिः, करणे क्तिन्। स्तवमर्हति—स्तव्यः संस्तवानः 'सम्यानच् स्तुव' इत्यानच्। अयं बहुलवचनात् केवलादपि भवति, निच्च भवति। 'मृड़ा जरित्रे रुद्र स्तवान' इति। स्तुत्वा। स्तुतः। स्तुतवान्। स्तवनम्। प्र—प्रारम्भः प्रस्तावः। प्रस्तावना। सम्—परिचयः—संस्तवः।

२५ । ब्रूञ्, व्यक्तायां वाचि । (To speak)

अनुदात्तः । ब्रू, (ञ्) अनिट्, सक, उ । ब्रूते, ब्रुवाते, ब्रुवते । ब्रूषे । ब्रुवे । ब्रूताम्, ब्रुवाताम्, ब्रुवताम् । ब्रूष्व, ब्रूध्वम् । ब्रवै, ब्रवावहै । अब्रूत, अब्रूथाः, अब्रुवि । ब्रुवीत, ब्रुवीयाताम्, ब्रुवीथाः ब्रुवीय, ब्रुवीवहि । ऊचे, ऊचाते, ऊचिरे । ऊचिध्वे । ऊचे, ऊचिवहे । वक्ता । वक्तासे । वक्ताहे । वक्ष्यते । वक्षीष्ट । वक्षीष्ठाः । वक्षीय । अवोचत अवोचेताम्, अवोचन्त । अवोचथाः । अवोचे, अवोचावहि । ब्रवीति ब्रूतः, ब्रुवन्ति । ब्रवीषि, ब्रूथः । पक्षे—आह, आहतुः, आहुः । आत्थ, आहथुः । ब्रुवस्त्यादिषु पञ्चसु निपाता वा । ब्रूथ । ब्रवीमि, ब्रूवः, ब्रवीतु ब्रूतात्; ब्रूताम्, ब्रुवन्तु । ब्रूहि, ब्रूतात् । ब्रवाणि । अब्रवीत्, अब्रूताम्, अब्रुवन् । अब्रवीः । अब्रवम्, अब्रूव । ब्रूयात् । ब्रूयाः । ब्रूयां, ब्रूयाव । उवाच, ऊचतुः, ऊचुः उवचिथ, उवक्थ, ऊचथुः । उवाच, उवच; ऊचिव । वक्ता । वक्ष्यति आशीः—उच्यात् उच्यास्तामित्यादि अवोचत्, अवोचताम्, अवोचः, अवोचम् । कर्म्मणि—उच्यते, अवाचीत्यादि । कर्म्मकर्त्तरि—ब्रूते कथा स्वयमेव । अवोचत कथा स्वयमेव । विवक्षति, विवक्षते । वावच्यते ।

अनूचानः—भूते कर्त्तरि लिटः कानचि निपात्यते । प्रवचनीयो ब्राह्मणः, प्रवचनीयोऽनुवाकः—'भव्यगेये'त्यादिना कर्त्तृकर्म्मणोरनीयः । गुणमुक्तवान्—गुणवचनः, कर्त्तरि ल्युट् । वाच्य—ण्यत्, 'वचोऽशब्दसंज्ञाया'मिति कुत्वनिषेधः । अन्यत्र—वाक्यम् । वाक्—क्विपि संप्रसारणं दीर्घत्वञ्च, वाचा—टाप् । वागस्यास्तीति—वाग्मी । 'वाचो ग्मिनि'रिति ग्मिनिः । कुत्सिता वागस्यास्तीति—वाचालः, वाचाटः । ब्रवः—अचि निपातः विदुषिब्रुवा, विदुषीब्रुवा । श्रेयसिब्रुवा, श्रेयसीब्रुवा—'उगित-

श्चेति रूपविकल्पः, अनयोः पुंवद्भावोऽपीष्यते—विद्वद्ब्रुवा, श्रेयोब्रुवा। उक्तिः। उक्त्वा। उक्तः। उक्तवान्। उक्तम्। पौनरुक्तम्। नैरुक्तम्—'अण् ऋगयनादिभ्य' इति भवव्याख्यानयोरण्। पौनरुक्तमधीते वेद वा पौनरुक्तिकः। अयं द्विकर्मकः, तत्र प्रधाने लादय उक्ताः, अप्राधान्यञ्च विवक्षाधीनमिति। मानवको धर्ममुच्यते, धर्मो मानवकमुच्यत इत्युभयोरपि कर्मणोः पर्य्यायेण लादयो भवन्ति. कृद्योगलक्षणा तु षष्ठी द्वितीयावद् युगपदुभयत्रापि भवति—मानवकस्य धर्मस्य वक्तेति, तत्र यस्याप्राधान्यविवक्षा, तत्र पक्षे द्वितीयापीष्यते—इह वक्तव्यो माणवको धर्मं देवदत्तेनेत्यादि। नचैकस्मिन् कर्मणि कृत्येनाभिहितेऽन्यस्मिन् कर्मणि कर्त्तरि च 'कर्त्तृकर्मणोः कृतो'ति षष्ठी भवति। उभयप्राप्तौ कृत्ये षष्ठ्याः प्रतिषेध इति। ब्रुवन्। ब्रुवती। ब्रुवाणः। वागेव—वाचिकं, स्वार्थे ठक्। वाचोयुक्तिः षष्ठ्या अलुक्। ब्राह्मणब्रुवा—'कुत्सितानि कुत्सनैरिति कर्मधारयः। अन्यत् सर्वं वचधातौ ज्ञातव्यम्।

## परस्मैपदिनः

### २२। इण, गतौ। (To go)

एतदादयो वचन्ताः परस्मैपदिनोऽनुदात्ताः इङात्मनेपदी। 'इणो गा' इत्यादौ विशेषणार्थो णकारः। इ, (ण) अनिट्, सक, प। एति, इतः, यन्ति। एषि। एमि, इवः। उप + एति = उपैति। एतु, इतात्; इताम्, यन्तु। इहि इतात् अयानि ऐत, ऐताम् आयन्। इयात्, इयाताम्, इयुः। इयाः। इयाम्, इयाव। इयाय, ईयतुः ईयुः। इययिथ, इयेथ, ईयथुः, ईय। इयाय, इयय, ईयिव। एता। एष्यति।—ईयात्, ईयास्ताम्। समियात्, समियास्ताम्—उपसृष्टत्वान्न दीर्घः। अगात्, अगा-

ताम्, अगु:। अगा:, अगातम्, अगात। अगाम्, अगाव। कर्मणि—ईयते, अगायीत्यादि। स्यादिषु वा चिण्वद्भावे—आयिष्यते, आयिषाताम्, आयिषत। अयिषीष्ट। आयिता। अन्यदा—एष्यते, अगासाताम्, अगासत, एषीष्ट, एता। जिगमिषति। जिगमिषिता। जिगमिषाञ्चकार—३। गमयति 'णौ गमिरबोधने' गमिरादेश:। उपेयिवान्—'उपेयिवाननाश्वाननूचानश्चे'ति लुङ्लङ्विषयस्य पाक्षिकस्य लिटो नित्यं क्वसुरिट् च निपात्यते। इत्य:, उपेत्य:—क्यप्। अत्येति इति—अत्याय:, ण:। अत्ययी—इनि:। इत्वर:—क्वरप्। न्याय:—घञ्। न्यायादनपेतं—न्याय्यम्। न्याये भवस्तस्य व्याख्यानं वा—नैयायम्। न्यायमधीते, वेद वा—नैयायिक:। आत्ययिक:, औपयिक:—स्वार्थे ठक्। प्रातरित्वा—क्वनिप्। स्त्रियां प्रातरित्वरी—'वनोरचे'ति ङीप्रेफौ। क्त—इत:। अति—अतिक्रम:, अतीत:; कान्तारातीत:—'द्वितीयाश्रितातीते'ति तत्पुरुष:। दु:खादपेत:—दु:खापेत:। 'अपेतापोढे'ति पञ्चमीतत्पुरुष:। एवम्—'इण्शीभ्यां वन्'इति वन्प्रत्यय:। चादित्वादसत्त्ववचनत्वान्निपातेऽव्ययम्। क्व व भोक्ष्यसे। 'एवशब्दोऽसम्भावने' न क्वापि भोक्ष्यस इत्यर्थ:, एवेऽनवधारणे अकारलोप:। समिथ:—अग्नि:, संग्रामश्च। 'समीण' इति थक्। आयु:—'एतेर्णिच्च'इत्युसिप्रत्यय: णित्त्वाद्वृद्धि:। स्त्री—आयुषी। पुरुषायुषम्, द्व्यायुषम्, त्र्यायुषम्—'अचतुरे'त्यादिना आद्यस्य षष्ठीतत्पुरुषे इतरयो: समाहारद्वन्द्वेऽच् निपात्यते, तेन समासान्तरे न भवति। पुरुषस्य आयुश्च—पुरुषायुषी द्वयोरायु:त्रयाणामायु:—द्व्यायु:, त्र्यायुरिति। आग:—'इण आगोऽपराधे" इत्यसुनि गादेश:। एतश:, चन्द्रादि:. एतशां ब्राह्मण:। 'इणस्तशन्तशसुनौ' इति तशन्तशसुनौ। इभ:—'इण: कित्' इति

भन्प्रत्ययः. कित्त्वान्न गुणः। इभमर्हति—इभ्यः, दण्डादित्वाद्यत्। एकः—'इण्भी'त्यादिना कन्, संख्यायामेकवचनान्तः, मुख्यादौ त्वभिधेयवचनः,अयं सर्वनामगणे पठितः। ऐक्यम्—ष्यञ्। एकतरः, एकतमः—डतरज्डतमचौ, इमौ सर्वनामसंज्ञौ। क्लीवे एकतमत्, एकतरमिति। एकाकी, एककः, एकः, असहाये कनाकिनिचौ, आकिनिचश्च पक्षे लुक्। सकृदङ्क्ते 'एकस्य सकृच्च' इति क्रियागणने सकृदादेशः। एकधा संख्यायाः प्रकारे स्वार्थे च धाप्रत्ययः। ऐकध्यं भुङ्क्ते, करोति वा। 'एकाद्धो ध्यमुञन्यतरस्याम्' इति ध्यमुञादेशः। एकशो ददाति—एकैकम्, एकैकस्मै वा ददातीत्यर्थः। 'सङ्ख्यैकवचनाच्च वीप्सायामि'ति शस्। एकैकशो ददाति—स्वार्थे शस् इष्टः। एकैकं भोजयति। एकैकामाहुतिं जुहोति। ऐकश्यम्—ष्यञ्। एतत्—'एतेस्तुट् चे'त्यदिप्रत्ययस्तुडागमश्च। पुंसि एषः। त्यदादिगणीयः। एतः—वर्णः, 'हसिमृग्रिण्वा'मिति तन्प्रत्ययः। स्त्रियाम्—एनी। इनः—'इणसी'त्यादिना नक्।

## आत्मनेपदिनः।

### ३७। इङ्, अध्ययने। ( To study )

नित्यमयमधिपूर्वः। इ, (ङ) अनिट्, सक, आ। लट्—अधीते, अधीयाते अधीयते। अधीषे। अधीये, अधीवहे। लोट्—अधीताम्; अधीयाताम्, अधीयताम्। अधीष्व, अधीयाथाम्, अधीध्वम्। अध्ययै,अध्ययावहै। लङ्—अध्यैत, अध्यैयाताम्, अध्यैयत। अध्यैथाः, अध्यैयाथाम्, अध्यैध्वम्। अध्यैवहि। अधीयीत, अधीयाताम्, अधीयीरन्। अधीयीथाः

अधीयीध्वम् । अधीयीय, अधीयीवहि । आशीः—अध्येषीष्ट, अध्येषीयास्ताम्, अध्येषीरन् । अध्येषीष्ठाः,—अध्येषीढ्वम् । अध्येषीय ।

लिट्—अधिजगे, अधिजगाते, अधिजगिरे । अधिजगिषे, अधिजगिध्वे । अधिजगे, अधिजगिवहे । लुट्—अध्येता । लृट्—अध्येष्यते ।

लुङ्—अध्यगीष्ट, अध्यगीषाताम्, अध्यगीषत । अध्यगीष्ठाः, अध्यगीषाथाम्, अध्यगीढ्वम् । अध्यगीषि, अध्यगीष्वहि । 'विभाषा लुङ्लृङो'रिति पक्षे गाङादेशे ईत्वम् । गाङभावे—अध्यैष्ट, अध्यैषाताम् अध्यैषत । अध्यैष्ठाः, अध्यैषाथाम्, अध्यैढ्वम् । अध्यैषि, अध्यैष्वहि ।

लृङ्—अध्यगीष्यत, अध्यगीष्येताम् अध्यगीष्यन्त । अध्यगीष्यथाः, अध्यगीष्यध्वम् । अध्यगीष्ये, अध्यगीष्यावहे । पूर्ववद् गाङ् विकल्पः । गाङभावे अध्यैष्यत इत्यादयः ।

कर्मणि—अधीयते, अधीयेते, अधीयन्ते इत्यादि । लुङ्—अध्यायि, अध्यगायि । अध्यैषाताम्, अध्यायिषाताम्, अध्यगीषत, अध्यगायिषत । लुट्—अध्येता, अध्यायिता । आशीः—अध्येषीष्ट, अध्यायिषीष्ट । लृट्—अध्येष्यते, अध्यायिष्यते । लृङ्—अध्यैष्यत, अध्यायिष्यत, अध्यगीष्यत, अध्यगायिष्यत इत्यादि ।

अधिजिगांसते । अध्यापयति । अध्यजीगपत्, पक्षे—अध्यापिपत् । कर्मणि—अध्याप्यते । अध्यापयत । अध्यापि, अध्यापिषाताम्, अध्यापयिषाताम् । पक्षे—अध्यगापि, अध्यगापयिषाताम् इत्यादि । एवं सन्परेऽपि—अधिजिगापयिषति, अध्यापिपयिषति । अध्यजिगापयिषीत् अध्यापिपयिषीत

इत्यादि। अधीत्य—यप्। अधीतमनेन। अधीती व्याकरणे —व्याकरणमधीतवान् इत्यर्थः। 'कर्त्तर्थे इनिः' 'क्तस्येन्-विषयस्य कर्म्मण्युपसङ्ख्यानम्' इति कर्म्मणि सप्तमी। रात्रि-रधीता, अहरधीतम् इत्यत्र 'कालाध्वनोः कर्म्मवद्भावार्थ'मिति काले कर्मणि निष्ठा इति कालाध्वनो'रित्यत्र भाष्यम्। अधी-यन् पारायणम्,अक्लेशेनाधीयान इत्यर्थः,अक्लेच्छ्रे कर्त्तरि शतृ-प्रत्ययः। स्त्रियामधीयती। अधीयानः—शानच्। अध्यायः—'इङश्च' इत्यकर्त्तरि च कारके भावे च घञ्। उपेत्याधीयते-ऽस्मादित्युपाध्यायः—अपादाने घञ्। उपाध्याया, उपाध्यायी। पुंयोगङीषि तु, 'उपाध्यायमातुलाभ्यां वा' इति पक्षे आनुगपि भवति—उपाध्यायी, उपाध्यायानीति। अधीयतेऽस्मिन्नित्यध्यायः। पुंसि संज्ञायां घं बाधित्वा 'अध्यायन्याये'ति घञ् निपात्यते। सौवाध्यायिकः—प्रयोजन'मिति ठक्। अध्ययनम्। अधीत-वान्। अधीयमानं शास्त्रम्। अध्याप्य। अध्यापितः। अध्या-पना। अध्यापिपयिषुः अध्यापिपयिषा।

## परस्मैपदिनः।

३८। इक, स्मरणे। ( To remember )

अयमप्यधिपूर्वः। इ, (क) अनिट्, सक, प। अध्येति, अधीतः, अधियन्ति। इत्यादि सर्वमिण्वत्। केचित् अधीय-न्तीति। स्मरणार्थत्वात् कर्मणि षष्ठी वा। "ससीतयोराघवयो-रधीयन्" इति भट्टिः। पितुरध्येति, पितरं वा।

३९। वी, गतिप्रजनकान्त्यसनखादनेषु।

( To go, to conctive, to desire to throw, to cat )

वी, अनिट्, सक, प। वेति, वीतः, वियन्ति। वेषि। वेमि, वीवः। वेतु, वीताम्, वियन्तु। वीहि। वयानि, वयाव।

अवेत्, अवीताम्, अवियन् [अव्ययन्]। अवेः। अवयम्, अवीव। वीयात्, वीयाताम्, वीयुः। विवाय, विव्यतुः, विव्युः। विवयिथ, विवेथ; विव्यथुः, विव्य। विवाय, विवय; विव्यिव। वेता। वेष्यति। वीयात्, वीयास्ताम्। अवैषीत्, अवैष्टाम्, अवैषुः। अवैषीः। अवैषम् अवैष्व। विवीषति। वेवीयते। वेवीति, वेवयीति; वेवीतः, वेव्यति। वाययति, अवीवयत्। वापयति, अवीवपत्; 'वेतेः प्रजने वा' इति आत्वं पकारागमश्च। वीत्वा। वीतः। वेत्रम्—'गुध्रूवी'त्यादिना त्रप्रत्ययः। वेत्रकीयम्—'नड़ादीनां कुक्‌च' इति कुगागमश्च। अत्र प्रश्लेषात् 'ई' इत्यपि धातुमाहुः—एति, ईतः, इयन्ति। ईयात्, ईयाताम्। ऐषीदित्यादि सिद्ध्यर्थम्।

४। या, प्रापणे। (To go)

प्रापणमिह गतिः। या, अनिट्, सक, प। याति, प्रणियाति। 'नेर्गदे'ति णत्वम्। यातः, याति। यासि। यामि। यातु, यातात्; याताम्, यान्तु। याहि, यातात्। यानि। ययौ, ययतुः, ययुः। ययाथ, ययिथ; थलि वेट्। यय। ययौ, ययिव। क्रादिनियमादिट्। अयात्, अयाताम्, अयुः, अयान्। अयाः। अयाम्। यायात्, यायाताम् इत्यादि। यायुरित्यस्यानभिधानादप्रयोग इति केचिदित्यात्रेयः। याता। यास्यति। आशीः—यायात्, यायास्ताम्, यायासुः। अयासीत्, अयासिष्टाम्, अयासिषुः। अयासीः, अयासिषम्, अयासिष्व। यियासति। कर्म्मणि—यायते। अयायि, अयायिषाताम्; अयासाताम्, अयायिषत, अयासत। याता, यायिता। यास्यते, यायिष्यते। यासीष्ट, यायिषीष्ट। 'नित्यं कौटिल्ये गतौ' इति यङ्—यायायते। यायेति, यायाति, यायीतः यायति। यापयति, अयीयपत्। यियासति। यायावरः,—वरच्। शुभं यातीति—

शुभंयाः, क्विप्; शुभंयिका, स्त्री। शुभंयुनक्ति—शुभंयुः। ययाति—क्तिनि बाहुलकाद्द्विर्वचनमित्यात्रेयः। यात्रा—त्रन्, स्वभावात् स्त्रीविषयः। ययुः—उप्रत्ययो द्वित्वञ्च। मृगयुः, व्याधः। देवयुः, धार्मिकः। केवलयुः, मानी। गृहयुः, गृहपतिः। मित्रयुः, मित्रवत्सलः, ऋषिश्च। मन्त्रयुः, मन्त्री। अध्वर्य्युः, ऋत्विग्विशेषः। 'मृगय्वादयश्च' इति कुप्रत्यये निपात्यन्ते, अध्वरशब्दस्यान्त्यलोपश्च। अध्वर्य्योर्भावकर्म्मणी—आध्वर्य्यम्। उद्गात्रादित्वादञ्। यातुः—रक्षःपर्य्यायः, तुनि पारायणे व्युत्पादितः। यामः—मन्। याता। प्रयाय। यायः। यातवान्। यानम्। यातिः। प्रयाणम्। यान्। स्त्रियां—याती, यान्ती। यियासुः।

४१। वा, गतिगन्धनयोः। ( To go, to below )

वा, अनिट्, प। वाति इत्यादि यातिवत्। वाजयति 'वो विधुनने जुक्' इति णौ जुक्, विधुननं कम्पनम्, अन्यत्र पुक्—वापयतीति। निर्वाणः—'निर्वाणोऽवाते' इति धात्वर्थस्य अवाताधिकरणत्वे निष्ठानत्वं निपात्यते। वाते तु निर्वातो वातः, निर्वातं वातेन इति नत्वं न भवति। वातानां समूहः—वात्या. 'पाशादिभ्यो य' इति यः। वातुलः—वातात् समूहे च इत्युलच्। 'वातातिसाराभ्यां कुक् च' इति मत्वर्थे इनिः, कुगागमश्च—वातकी, वातरोगी। वातस्य शमनं, कोपनं वा—वातिकं ठक्। वायुः—उण्। वायुर्देवतास्य—वायव्यम्, यत्।

४२। भा, दीप्तौ। ( To shine )

भा, अनिट्, अक। भाति, भातः, भान्ति। भातु। भायात्। अभात्, अभाताम्, अभान्, अभुः लुङ्—अभासीत्, अभासिष्टाम्, अभासिषुः। बभौ, बभतुः, बभुः। बभाथ, बभिथ। बभिव। भाता। भास्यति। अभास्यत्। बिभासति। भापयति। अबीभपत्। बाभायते। बाभाति, बाभेति। भातः।

भातिः। भानम्। इत्यादि यातिवत्। व्यतिभासे, व्यतिभे। भाः—'सम्पदादि' इत्यादिना क्विप्। प्रति—प्रतिभा। प्रतिभाति। प्रतिभा, प्रभा इत्यादौ 'आतश्चोपसर्गे' इत्यङ् स्त्रियां भावे। प्रतिभैव—प्रातिभम्, स्वार्थे अण्। निभःतुल्यः, 'उपसर्गे त्वातो डः।' प्रभानम्, प्रभापनम्; 'न भाभूपूकमिगमी'त्यादिना 'ण्यन्तानाञ्च भादीनामुपसंख्यान'मित्यनेन च णत्वनिषेधः। प्रभाणि प्रभावयाणि इत्यत्र 'आनि लोट्' इति णत्वं भवत्येव। भानुः 'दाभाभ्यां नु'रिति नुः। प्रभातम्। भात्वा। प्रभाय। प्रभाता रजनी। भं, नक्षत्रं—कः।

## ४२। ष्णा, शौचे। ( To bathe )

स्ना, अनिट् अक, प। स्नाति। स्नातु। स्नाहि। स्नानि। अस्नात्, अस्नाताम्,अस्नुः,अस्नान्। स्नायात्, स्नायाताम्। सस्नौ सस्नतुः। सस्नाथ, सस्निथ। सस्निव। स्नाता। स्नास्यति। अस्नास्यत्। आशिषि—स्नायात्, स्नेयात्। अस्नासीत्, अस्नासिष्टाम्, अस्नासिषुः। सिस्नासति। सास्नायते। सास्नेति,सास्नाति। स्नापयति। स्नपयति, प्रस्नापयति। असिस्नपत्। स्नात्वा। प्रस्नाय। स्नानम्। स्नातः। स्नानीयम्। स्नातिः। सुस्नातः। प्रतिष्णातं 'सूत्रे प्रतिष्णातम्' इति सूत्रे षत्वम्। सूत्रादन्यत्र—प्रतिस्नातः। निष्णातः, नदीष्णः—'सुपि स्थः' इत्यत्र सुपीति योगविभागात् कः, 'निनदीभ्यां स्नातेः कौशले' इति षत्वम्। कौशलादन्यत्र—निस्नातः, नदीस्नातः। सुस्नातं पृच्छति—सौस्नातिकः, ठक्। प्रस्नः—'घञर्थे कविधानम्' इति कः। स्नानीयं—चूर्णम्, करणेऽनीयः। स्नातकः—स्नातः, कण्—आप्लुतव्रती, समाप्तवेदाध्ययने स्नानशीले। स्नातं स्नानं शीलमस्येति विकारसङ्घे ति कः—स्नातकः। स्नायी, णिन्—स्नानशीलः। स्नायुः—उण्, वायुवाहिनी नाड़ी।

४४ । श्रा, पाके । ( To cook )

श्रा, अनिट, सक, प । पाको विक्लित्तिः । श्राति इत्यादि लातिवत् । पाके घटादिपाठात् श्रपयति । अन्यत्र श्रापयति स्वेदयतीत्यर्थः । शृतं क्षीरं,हविर्वा, ण्यन्तस्य केवलस्य वा 'शृतं पाके' इति निपात्यते । क्षीरहविषोरन्यत्र—श्राणा यवागूः, श्रपिता यवागूरिति ।

४५ । द्रा, कुत्सायां गतौ । ( To run, to ship )

कुत्सितगतिः पलायनं, स्वापश्चेति स्वामी । तत्र प्रायो निपूर्वोऽयं स्वापवचनः । द्रा, अनिट्, अक,प । द्राति, निद्राति, प्रणिद्राति इत्यादि यातिवत् । निद्रालुः,तन्द्रालुः । 'स्पृहिगृहिपतिदयिनिद्रातन्द्रे'ति निपूर्वात् तत्पूर्वाच्चालुच् । अस्मादेव निर्देशात् तदो दकारस्य च नकारः । निद्रः—कः । निद्रा—अङ् । तन्द्रा—'घञर्थे कविधान'मिति कप्रत्यये—टाप् । तन्द्रिः 'अच इ'रितीप्रत्ययः । बाहुलकात् किश्वादाल्लोपः । तन्द्री—'कृदिकारादक्तिन्' इति वा ङीष् । निद्रा—द्राणः, द्राणवान् । निद्रितः—तारकादित्वादितच् । द्रायतीति—स्वप्ने ।

४६ । प्सा, भक्षणे । ( To eat )

प्सा, अनिट्, सक, प । प्साति, प्रणिप्साति इत्यादि स्नातिवत् । लिट्—पप्सौ । द्रवेण प्सानीयोऽप्सः—घञर्थे कः,पृषोदरादित्वाद् द्राटेशः । विश्वप्सा'श्वन्नुक्षन्' इत्यादिना कनिन् ।

४७ । पा, रक्षणे । ( To protect )

पा, अनिट्, सक, प । पाति, पातः, पान्ति । इत्यादि यातिवत् । लुङ्—अपासीत् इत्यादि ईत्वे सिचो लुकि च लक्षि करणत्वाभ्यासस्य ग्रहः । पायते, अपायि । पालयति । 'पातेर्लुग् वक्तव्य' इति णिचि लुगागमः । अपीपलत । गोपालकः—'नित्यं क्रीड़ाजीविकयो'रिति अकेन समासः । गोपालकस्य स्त्री—गोप

लिका' गोपालिकादीनां प्रतिषेध' इति पुंयोगलक्षणस्य ङीषो-ऽभावः। न पातीति—नपात् नप्तेत्यर्थः 'नभ्राण्नपाद्' इति निपातनाद् नञः प्रकृतिभावः, क्विपि तुक् च—तनूनपात्, अग्निः। इन्धनं विना तनूं न पातीति व्युत्पत्तिः। अपोनप्त्रियम्, अपान्नप्त्रियम् अपोनप्त्रीयम्, अपान्नप्त्रीयम् 'अपोनप्त्रपान्नप्तृभ्यां घः' 'छच' इत्यपोनपादपान्नपाच्छब्दाभ्यां घछौ। 'साऽस्य देवते'त्यस्मिन् विषये प्रत्ययसन्नियोगेन 'अपोनप्तृ'पां नप्तृभावश्च। उभे अपि देवतानामनी। पतिः—पातेर्डतिः *।

४८। रा, दाने। ( To give )

रा, अनिट्, सक, प। रातीत्यादि यातिवत्। रातिर्मित्रं संज्ञायां क्तिच्। राः, ( औ ) रायौ—'रातेर्डैः' इति डैः। रायमतिक्रान्तम्—अतिरि, कुलम्। पुंसि—अतिराः। राका—'कृदाधारार्चिकलिभ्यः कन्' इति कन्। रात्रिः—'राशदिभ्यां त्रिप्' इति त्रिप्। रात्री—कृदिकारत्वात् ङीष्, रात्रावटति—

* बृहस्पतिः—'तद्बृहतोः करपत्योश्चौरदेवतयोः सुट् तलोपश्च' इति सुट् तलोपौ। वाचस्पतिः, दिवस्पतिः। एतावपि पारस्करप्रभृतौ एवं वनस्पतिः। बृहस्पतेरपत्यादि—बार्हस्पत्यम्। वनस्पतीनां समूहः—वानस्पत्यम्। गृहपतिना संयुक्तोऽग्निर्गार्हपत्यः—ञ्यः। [illegible] वा—गार्हपत्यम्। स्वपतौ साधुः—स्वापतेयम्, ढञ्। कौमुदगन्धायाः [illegible]—कौमुदगन्धीपतिः, सम्प्रसारणं, दीर्घश्च। दुहितुः पतिः दुहितृपतिः—विद्यायोनि[illegible]: पूर्वपदस्य षष्ठ्या विभाषया अलुक्। अहर्पतिः, अहःपतिः अहःपतिः। जाया च पतिश्च—जायापती, जम्पती, दम्पती। सपत्न्या अपत्यम्—सापत्नः। [illegible]भावः, कर्म वा—सा[illegible]। सपत्नीव—सपत्नः, इवार्थे नकारः। पतिमान्, पतिवत्नी—[illegible]नुगागमः वत्वञ्च। अन्यत्र पतिमान् पतिमती। पिता इति निपातः [illegible] पिता च—पितरौ। मातापितरौ। मातरपितरौ। पितरौ देवतास्य-[illegible]:—व्यत्, पितृभ्राता। पितामहः—पितृपिता, मातामहः—मा[illegible] पितुरागतम् पित्र्यम् पैतृकम्, यत्, ठञ् च।

रात्रिमटः, 'रात्रेः कृति विभाषा' इति वा मुमागमः। रात्रिन्दिवम्—'अचतुरे'त्यादिना अचि आन्तत्वं निपात्यते *।

४९। ला, आदाने। ( To take )

ला, अनिट्, सक प। लातीत्यादि यातिवत्। णिच्—विलालयति, विलापयति घृतम्,—द्रवीकरणे पक्षे लुगागमः, अन्यत्र पुगेव। कृपां लाति आदत्त इति कृपालुः—मितद्र्वादित्वात् डुरिति आलेयः। व्यालः—कः। बहून् अर्थान् लातीति बहुलम्—कः। बाहुलकम्—मनोज्ञादित्वाद्भावकर्मणोर्वुञ्। अतिशयेन बहुलं—बंहिष्ठः, बंहीयान्। बहुलस्य भावकर्मणो—बंहिमा। बहुलमाचष्टे—बंहयति। रातिलाती द्वावपि दानार्थाविति चान्द्राः। दुर्गोऽपि रा ला दान इति।

५०। दाप्, लवने। ( To cut )

लवनमिह छेदनम्। दा, (प) अनिट्, सक, प। पकारो धातुसंज्ञायाम् अदाप् इति निषेधार्थः। दाति। अदात्—दुः। अदुः, अदान्। ददौ। अदासीत्। व्यत्यदास्त। कर्मणि—दायते। दिदासति। निष्ठा—दातः, दातवान् इत्यादि याधातुवत्। दानम्—करणे ल्युट्। रक्षणे—दयते, शोधने—दायतीति अपि गतम्।

५१। ख्या, प्रकथने। ( To relate )

ख्या, अनिट्, सक, प। ख्याति। ख्यायात्। अख्यात्।

---

* अहोरात्रः, अहोरात्रौ द्वन्द्वौ। सर्वरात्रः पूर्वकालैकेति समासः। रात्रेः पूर्वभागः—पूर्वरात्रः। एवं पुण्यरात्र इत्यादि विशेषणसमासः। अतिरात्रः, प्रादिसमासः द्विरात्रः, द्विगुः। "रात्राह्नाहाः पुंसी"ति कृतसमासान्तस्य रात्रिशब्दस्य पुंस्त्वम्। 'संख्यादिः प्राक् संख्यकात्' इत्यनरोक्तेः असंख्यापूर्वकस्यैव इदं पुंस्त्वम्। वृत्तिकार-शब्दस्कन्दप्रभृतयस्तु पुंस्त्वमेवाहुः। द्वैरात्रिकः—ठञ्। द्विरात्रीणः—खः।

षयं सार्वधातुकमात्रविषयः। * लिडादौ तु चक्षिङः ख्याञादेशे तस्यैव प्रयोगः। (ख्याञ्) चख्यौ, चख्ये। ख्याता। ख्यास्यति—ते। ख्यायात्, ख्येयात्; ख्यासीष्ट। अख्यत्, अख्यत इत्यादि। अत्रापि क्सादित्वं चक्षिङः ख्याञादेशवत् द्रष्टव्यम्। कर्मणि—ख्यायते। अख्यायि। चिख्यासति। चाख्यायते, चाख्याति, चाख्येति। तिपा निर्देशात् यङ्लुकि अङभावात् सिचि अचाख्यासीत् इति भवति। ख्यापयति। अचिख्यपत्।

ख्यातः। ख्यातिः। ख्येयः। ख्यातव्यः। अभिख्या—शोभा। ख्यापनम्। आ—कथनं, वर्णनम्। प्रत्या—निराकरणम्, उपेक्षा। व्या—व्याख्या, विवरणम्। वि—ख्यातिः। सम्—संख्या, गणना। समानः ख्यायते इति इन्प्रत्यये सखिशब्दः साध्यः। रूपं—सखा, सखायौ। स्त्रियां—सखी। परमसखः—कर्मधारये समासान्तविधिः। सुसखा, अतिसखा, किंसखा एषु समासान्ताभावः। सख्युर्भावकर्मणि—सख्यम्।§

५२। प्रा, पूरणे। (To fill)

प्रा, अनिट्, सक, प। प्राति। पप्रौ। प्राता। प्रेयात्, प्रायात्। अप्रासीत् इत्यादि पूर्ववत्। णिच्—प्रापयति। अपिप्रपत्। प्राणः, प्राणवान्। [प्रातः।] प्रायः—णः। ¶

* इदमसार्वधातुकविषयमिति आत्रेयादयः। अन्ये तु सामान्येन मन्यन्ते।

§ लिङ्गविशिष्टात् प्रत्ययेऽपीदमेव रूपम्। यतः पूर्ववत् पुंवद्भावेन भाव्यम्। सम्पूर्णस्य सख्युः प्रयोगो नेति सखि ख्य इत्यत्र न्यासादावुक्तम्।

¶ प्रायिता, प्राता, इत्यादि स्वरान्तानां इडनिटां सर्वेषामेव धातूनां कर्मणि भावे च स्यसिच्सीयुट्तासिषु वा चिण्वदिटा प्रयोगाः साधनीयाः। अस्माभिः पूर्वत्र परत्र च सर्वत्र न प्रदर्शिताः, न च प्रदर्शयिष्यन्ते।

५३। मा, माने। (To measure)

मा, अनिट्, अक, प। माति इत्यादि। यातिवत्। मापयति (क) अमीमपत्। मित्सति। मितम्। प्रणिमाति, प्रनिमाति वा णत्वम् (ख) मातीति—मायः कः। माया—स्त्रियां टाप्। मायावी—मत्वर्थे विनिः। मायी—मायिकः। व्रीह्यादित्वादिनिठनौ। प्रमातीति प्रमः—कः। प्रमा—स्त्रियामङ्। प्रमितिः, परिमितिः, अनुमितिः उपमितिः निर्मितिः क्तिन् बाहुल्यात्।

५४। वच, परिभाषणे। (To tell)

वच्, सक, अनिट्, प। लट्—वक्ति, वक्तः (ग)। वक्षि, वक्थः, वक्थ। वच्मि, वच्वः, वच्मः। लोट्—वक्तु, वक्तात्;

---

(क) माननिशाम्यम् [भ्वां.] यः सवायनकर्मकः। उक्तञ्च—'ज्ञापकस्य' इत्यत्र रन्तुधरदत्तन्यासकारादिभिः अकर्मकत्वादस्याणत्वम् इति। तेन हि धातोऽनुपसर्गे क इति सूत्रं बाधित्वा कर्मण्युपपदेऽण् विधीयते। तुरगमुपमाति अधिमातुमाति गृहं निर्माति भवान् प्रमाति तण्डुलान् परिमाति इत्यर्थकत्वमुपसर्गवशेनार्थान्तरकत्वात्। न चैवं सकर्मकात्वात् कथं ज्ञापकस्य इत्यत्र अण् स्यादिति वाच्यं यतस्तत्र धातोऽनुपसर्गे क इत्यस्यापवादप्रसङ्गात् शाश्वतः कर्मण्यण् सिद्धः।

(ख) सर्वस्यैव मायतेर्यु लक्षेङ्माङ्ग्रहणम् गामादाग्रहणेष्वविशेष इति वचनात्। नैर्गदादिसूत्रे तु नास्य ग्रहणम् तथाच तत्र हरिः मा इति माङ्माङोर्ग्रहणम् इति। उक्तञ्च तत् सर्वं सिद्धान्तकौमुदीटीकान्यासकारधरदत्तादिभिरपि। तेन प्रणिमातिप्रनिमातीत्यत्र 'शेषे विभाषा कखादावषान्त उपदेशे' इति णत्वविकल्पो भवति। चान्द्रास्तु णत्वविधावपि दधात्यां ग्रहणमिच्छन्तीति वर्द्धमानः। स्वामिकाश्यपौ तु मायतेर्यु लुग्विकरणस्य ग्रहणं णत्ववर्जमिति। उभयमिदं पृथगादिसहायग्रन्थविरोधादुपेक्ष्यम्।

(ग) वचन्तीत्यस्याप्रयोगोऽनभिधानादिति स्वामिसम्मताकारः। तथाच भोज—"न वचन्ति प्रयुञ्जते" इति। आर्यस्तु एकवचनान्तत्वादस्य अन्यत्रानभिधानमित्यर्थं इत्याह। भिमातस्यानभिधानमिति केचित् "अयदेवास्ति परश्या उत्तमः पुरुषः क्वचित्। वचे रन्त्यमथन्तं च प्रयोगो नाभिधीयते॥" इति केचिदुदघोषयन्ति।

वक्तात्, वचन्तु । वग्धि, वक्तम्, वक्त । वचानि, वचाव, वचाम । विधिलिङ्—वच्यात्, वच्याताम्, वच्युः । वच्याः, वच्याताम्, वच्यात । वच्यां, वच्याव, वच्याम । लङ्—अवक्, अवग्; अवक्ताम्, अवचन् । अवक्(ग्) अवक्तम्, अवक्त । अवचम्, अवच्व, अवच्म । लिट्—उवाच, ऊचतुः, ऊचुः । उवक्थ, उवचिथ; ऊचथुः, ऊच । उवाच, उवच; ऊचिव । लुट्—वक्ता । लृट्—वक्ष्यति । लुङ्—अवोचत्, अवोचताम्, अवोचन् । आशीः—उच्यात, उच्यास्ताम्, उच्यासुः ।

सनादि—विवक्षति । वाचयति । अवीवचत् । वावच्यते । वावक्ति ।

कृदादि—उक्त्वा । उक्तः । उक्तवान् । उक्तिः । अनुवाकः । वाक् । वचनम् । वक्तव्यम् । वचनीयम्—निन्दा । वाच्यम् । वक्तव्यम् । उक्थम्—थक् । औक्थिक्यः—ढक् । वक्त्रम्—त्रः । अवशिष्टं ब्रूञादेशवत् । इत प्रभृतयोऽनुदात्ताः, परस्मैपदिनः, इकृत्वात्मनेपदी ।

५५ । विद्, ज्ञाने । ( To know, to cearn )

इत आरभ्य रुदिपर्य्यन्ता उदात्ता उदात्तेतः । विद्, सेट्, सक, प । लट्—वेत्ति, वित्तः, विदन्ति । वेत्सि, वित्थः, वित्थ । वेद्मि, विद्वः, विद्मः । लटः परस्मैपदानां पक्षे णलादेशः । यथा—वेद, विदतुः, विदुः । वेत्थ, विदथुः, विद । वेद, विद्व, विद्म ।

लोट्—वेत्तु, वित्तात्; वित्ताम्, विदन्तु । विद्धि, वित्तात्; वित्तम्, वित्त । वेदानि, वेदाव, वेदाम । पक्षे—विदाङ्करोतु, विदाङ्कुरुताम्, विदाङ्कुर्वन्तु । विदाङ्कुरुतम्—त । विदाङ्करवाणि, विदाङ्करवाव,—व ।

लङ्—अवेत्, अविताम्, अविदुः, अविदन्। अवेत्, अवेः; अवित्तम्,—अवेदम्, अविद्व, अविद्म।

लिङ्—विद्यात्, विद्याताम्, विद्युः। विद्याः, विद्यातम्। विद्याम्। आशिषि—विद्यात्, विद्यास्तामित्यादि।

लिट्—विवेद, विविदतुः, विविदुः। विवेदिथ, विविदथुः, विविद। विवेद, विविदिव, विविदिम। एवं विदाञ्चकार, विदाम्बभूव, विदामास इत्यादि सर्वत्र लिटि असभुवोरनुप्रयोगेण रूपाणि ज्ञेयानि।

लुङ्—अवेदीत्, अवेदिष्टाम्, अवेदिषुः। अवेदीः, अवेदिष्टम्। अवेदिषम्, अवेदिष्व। लृट्—वेत्स्यति। लृङ्—अवेत्स्यत्। सम्पूर्वकोऽकर्म्मक आत्मनेपदी। लट्—संवित्ते, संविदाते, संविदते, संविद्रते। संवित्से। संविदे, संविद्महे। लोट्—संवित्ताम्, संविदाताम्, संविदताम्, संविद्रताम्। संवित्स्व। संवेदै। लिङ्—संविदीत, संविदीयाताम्। लङ्—समवित्त, समविदाताम्, समविदत, समविद्रत। समवित्थाः, समविदि। लिट्—संविविदे, संविविदिषे, संविविदे, संविविदिमहे। एवं संविदाचक्रे इत्यादि। लुट्—संवेदिता, संवेदितासे। लृट्—संवेदिष्यते। आशिषि—संवेदिषीष्ट, संवेदिषीयास्ताम्। लुङ्—समवेदिष्ट, समवेदिषाताम्, समवेदिषत। सनादि—विविदिषति, विवेदिषति। संविविदिषते, संविवेदिषते। वेविद्यते, वेवेत्ति, वेविदीति। संवेवित्ते; संवेविदाते, संवेविदते—प्रकृतिग्रहणेन रुट् तु न भवति, वेत्तेरिति तिपा निर्द्देशात्। णिच्—वेदयति, अवीविदत्। कर्म्मणि—विद्यते। अवेदि इत्यादि।

विदित्वा। विदन्। विद्वान्। विदश्च वेदनः—प्रश्नाद्यण्। विद्वांसोऽस्यां सन्तीति—विदुषती परिषत् वक्तांसमावष्टे। इति णौ णाविष्ठवदिति टिलोपे विदयतीति दीर्घः। तद

युक्तम्, इष्टवद्भावादेव भत्वे नित्यत्वात् पूर्वं सम्प्रसारणे पश्चाट्टि-लोपे विदयतीति भाष्यम् । टिलोपस्तु शब्दान्तरप्राप्तत्वा ऽनित्यः । विदितः । विदितवान् । वेदयतीति—वेदयः, शः । शास्त्रवित्, प्रवित्,—क्विप् । विदुरः—कुरच् । वेदनशीलः—विन्दुः, उप्रत्यये नुमि निपात्यते । वेद—घञ् । वैदिकः—शैषिकष्ठञ् । वेदमाचष्टे—वेदापयति । आयुर्वेदमधीते;वेद वा—आयुर्वैदिकः—उक्थादित्वात् ठक् । सर्वे वेदाः सर्ववेदाः, तानधीते वेद वा—स सर्ववेदः,प्राग् दीव्यतीयस्याणः 'सर्वादेर्द्विगोश्च ल' इत्यु,कथादिपाठाट्ठक् । सर्ववेद एव सार्ववैद्यः,—स्वार्थे ष्यञ् । चतुरो वेदानधीते, वेद वा चतुर्वेदः—तद्धितार्थे द्विगौ प्राग् दीव्यतीयस्याणो 'द्विगोर्लु गि'ति" लुक् । चतुर्वेद एव चातुर्वैद्यः—ष्यञि उभयपदवृद्धिः । वित्तिः—क्तिन् । अपा क्यप् । चतस्रो विद्या—चातुर्वैद्यम् अनुशतिकादित्वात् उभयपदवृद्धिः । विद्यामधीते, वेद वा—वैद्यः, प्राग् दीव्यतीयोऽण् । चातुर्वैद्यः । अङ्गविद्यः । त्रैविद्यः । वायसविद्यामधीते, वेद वा—वायसविद्यिकः, कथादिपाठात् ठक् । चतुर्विद्यः, विदा—भिदाद्यङ् । वेदना—युच् । ब्राह्मणवेदं भोजयति—यं यं ब्राह्मणं वेद तं तं भोजयतीत्यर्थः, 'कर्मणि दृशिविदो-रिति णमुल् । न वेत्तीति—नवेदाः विदेरसुन, नञः प्रकृतिभावः । वेदितुम् । वेदनीयः ।वेद्यः । वेदितव्यः । वेदिता सर्वशास्त्राणाम् । आ-णिच्—आवेदनं ज्ञापनम् । नि-णिच्—निवेदनम् । "वेत्तिरूपं विद ज्ञाने, विन्ते विद विचारणे । विद्यते विद सत्तायां लाभे विन्दति विन्दते ।"

५६ । अस्, भुवि । ( To be )

अस्, वेट्, अक, प । लोट्—अस्ति, स्तः, सन्ति । असि, स्थः, स्थ । अस्मि, स्वः, स्मः । लिङ्—स्यात्, स्याताम्, स्युः ।

स्याः, स्यातम्, स्यात। स्याम्, स्याव, स्याम। लोट्—अस्तु, स्तात्; स्ताम्, सन्तु। एधि, स्तात्; स्तम्, स्त। असानि, असाव, असाम। लङ्—आसीत्, आस्ताम्, आसन्। आसीः, आस्तम्, आस्त। आसम्, आस्व, आस्म। आर्द्धधातुके (असार्व-धातुके) सर्वत्र भूवत्। लिट्—बभूव। भविता। भविष्यति। लुङ्—अभूत्। बुभूषति। भावयति। बोभूयते। व्यतिपूर्वक आत्मनेपदी।—व्यतिस्ते, व्यतिषाते, व्यतिषते। व्यतिसे, व्यति-षाथे, व्यतिध्वे[ध्वे]। व्यतिहे, व्यतिस्वहे। व्यतिस्म इत्यतो-ऽन्यत्र 'उपसर्गप्रादुर्भ्यामि' इति षत्वं द्रष्टव्यम्। प्रादुष्षन्ति, विषन्ति; विष्यात्, प्रादुष्यात् इत्यादिषु षत्वं ज्ञातव्यम्। अस्ति क्षीरं यस्याः, सा—अस्तिक्षीरा ब्राह्मणी। नास्ति बाधको येषां, ते—नास्तिबाधकाः, 'सुबधिकारे अस्तिक्षीरादिवचनम्' इति बहुव्रीहिः। नास्तिबाधका इत्यत्र उत्तरपदपरत्वाभावात् 'नलोपो नञः' इति न भवति। परलोकोऽस्तीति मतिर्यस्य; सः—आस्तिकः, परलोको नास्तीति मतिर्यस्य,सः—नास्तिकः ठक्। वचनसामर्थ्यात्तिङन्ताद्वाऽस्याऽयं प्रत्ययो भवति। निपातौ वास्तिनास्ती। अतएवास्तिमानित्याद्यपि भवति। *

५७। मृज, शुद्धौ। ( To cleanse )

मृज् (उ) वेट्, सक, प। लट्—मार्ष्टि, मृष्टः, मृजन्ति, मार्जन्ति। मार्क्षि। मार्ज्मि,मृज्वः। लिङ्—मृज्यात्, मृज्या-ताम्। मृज्याः। मृज्याम्। लोट्—मार्ष्टु, मृष्टात्; मृष्टाम्,

* विदामास विदामासतुः इत्यादि। भूभावोऽत्रप्रयोगे नेष्यते। अन्यत्र भूभावे बभूव इत्यादि। चन्द्रेऽनुप्रयोगादन्यत्रापि क्वचिद् भूभावो नेष्यत इति। 'प्रादुरास बहुध-भपाध्वविः' इत्यादि समाहितम्। धातुप्रदीपे तु असते रास इत्युक्तम्। विसारे तु आसीति बभूवार्थे आसेति उवाचार्थे विभक्तिप्रतिरूपकत्वेन समाहितम्।

मृजन्तु, मार्जन्तु । मृड्ढि । मार्ज्जानि, मार्ज्जाव, मार्ज्जाम । लङ्—अमार्ट्, अमृष्टाम्, अमृजन्, अमार्जन् । अमार्ट्, अमृष्टम्, अमृष्ट । अमार्जम्, अमृज्व । लुङ्—अमार्ज्जीत्, अमार्जिष्टाम्, अमार्जिषुः । अमार्जीः, अमार्जिष्टम्, अमार्जिष्ट । अमार्जिषम्, अमार्जिष्व । अनिट्पक्षे—अमार्क्षीत्, अमार्ष्टाम्, अमार्क्षुः । अमार्क्षीः, अमार्ष्टम् । अमार्क्षम्, अमार्क्ष्व । लिट्—ममार्ज, ममार्जतुः, ममृजतुः ; ममार्जुः, ममृजुः । ममार्जिथ, ममार्ष्ठ ; ममार्जथुः, ममृजथुः । ममार्ज, ममार्जिव, ममृजिव, ममृज्व । मार्जिता मार्ष्टा । लृट्—मार्जिष्यति, मार्क्ष्यति । आशिषि—मृज्यात्, मृज्यास्ताम् । कर्म्मणि—मृज्यते । अमार्जि । व्यतियोगे—व्यतिमृष्टे, व्यतिमृजाते, व्यतिमार्जाते ; व्यतिमृजते, व्यतिमार्जते । व्यत्यमार्ष्ट, व्यत्यमार्जिष्ट । सनादौ—मिमृक्षति, मिमार्जिषति । मरीमृज्यते । मरीमार्जीति, मरीमार्ष्टि । मार्जयति । अमीमृजत्, अममार्जत् ।

क्त्—मार्जित्वा, मृष्ट्वा । मृष्टः । सिक्तसम्मृष्टं, राजदन्तादित्वात् पूर्व्वकालस्य परनिपातः । मृष्टवान् । मृज्यः—क्यप्, पक्षे ण्यत्—मार्ग्यः । तुन्दपरिमृजः—कः, अलसः । अन्यत्र—तुन्दपरिमार्गः [तुन्दपरिमार्जः, कातन्त्रे] कर्म्मण्यण् । मृजा—भिदाद्यङ्, गणपाठात् वृद्ध्यभावः । मार्जनम् । अपामार्गः—घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः । मार्जारः—'कञ्जिमृजिभ्यां चित्' इति आरः । मार्जालीयः—सोमपात्रप्रक्षालनप्रदेशः । मार्जितुं, मार्ष्टुम् । प्रमृज्य । कंसपरिमृट् ।

५८ । रुदिर्, अश्रुविमोचने । ( To cry )

रुद्,(इर्) सेट्, अक, प । लट्—रोदिति, रुदितः, रुदन्ति । रोदिषि, रुदिथः । रोदिमि, रुदिवः । लिङ्—रुद्यात्, रुद्याताम्, रुद्युः । रुद्याः । रुद्याम् । लोट्—रोदितु, रुदितात् ;

रुदिताम्, रुदन्तु। रुदिहि, रुदितात्। रोदानि। लङ्—अरोदीत्, अरोदत्; अरुदिताम्, अरुदन्। अरोदीः, अरोदः; अरुदितम्। अरोदम्, अरुदिव। मारोदत्,मारोदीत्। लुङ्—अरुदत्, अरुदताम्, अरुदन्। अरुदः, अरुदतम्। अरुदम्, अरुदाव। पक्षे अङभावे सिच्—अरोदीत्, अरोदिष्टाम्, अरोदिषुः। अरोदीः, अरोदिष्टम्। अरोदिषम्, अरोदिष्व। मारोदीत्, मारुदत्। लिट्—रुरोद, रुरुदतुः, रुरुदुः। रुरोदिथ, रुरुदथुः, रुरुद। रुरोद, रुरुदिव। लुट्—रोदिता, रोदितारौ, रोदितारः। आशीः—रुद्यात्, रुद्यास्ताम्। लृट्—रोदिष्यति लृङ्—अरोदिष्यत्। सनादौ—रुरुदिषति। रोरुद्यते, रोरुदीति; रोरोत्ति। रोरुत्तः रुदादित्वात् इड़ागमो गणनिर्देशान्न भवति, तथा लङि अरोरोत्, अरोरविति ईड़ड़ागमावपि गणनिर्देशान्न भवतः। अरोरुदीत्, अरोरुदीरिति 'यङो वा' इति पाक्षिकी ईटि द्रष्टव्यौ। रोरुदिषति। रोरुदित्वा। रोदयति। अरुरुदत्।

रुदित्वा।—रुद्य। रुदितः। रोदनम्। रुदन्। रुदती स्त्री *। रोदसी—असुन्, पुष्पवदादिवत् नित्यं द्विवचनान्तः। रोदयतीति रुद्रः—रक्। रुद्राणी—'इन्द्रवरुणे'ति पुंयोगे ङीषानुकौ। शतं रुद्रा देवता अस्य—शतरुद्रियम्, शतरुद्रीयम्। 'शतरुद्राद्घश्च' इति घच्छौ। विदादय उदात्ता उदात्तेतः।

५८। ञि ष्वप्, शये। ( To sleep )

स्वप्, अनिट्, अक, प। स्वपिति, स्वपितः, स्वपन्ति।

---

* "धरित्रि पुष्पाञ्जलिरेष तुभ्यं सुता मदीया यदि यान्ति यान्तु। इतीव रम्भा नमिताम्रमौलिना भृशं रुदन्ती मकरन्दबिन्दुना॥" इत्यत्र रुदनं रुत् क्विप्, ताम् अन्तति सम्बध्नाति इति कर्म्मण्यणि स्त्रियामीप्।

स्वपिषि। स्वपिमि, स्वपिवः। स्वप्यात्, स्वप्याताम्। स्वपितु। स्वपिहि। स्वपानि। अस्वपीत्, अस्वपत्; अस्वपिताम्। अस्वपीः, अस्वपः। अस्वपम्, अस्वपिव। लुङ्—अस्वाप्सीत्, अस्वाप्ताम्, अस्वाप्सुः। अस्वाप्सीः। अस्वाप्सम्, अस्वाप्स्व। लिट्—सुष्वाप, सुषुपतुः, * सुषुपुः। सुष्वपथ, सुष्वपिथ, सुषुपथुः, सुषुप। सुष्वाप, सुष्वप, सुषुपिव। स्वप्ता। सुप्यात्, सुप्यास्ताम्। स्वप्स्यति। अस्वप्स्यत्। भावे—सुप्यते। असुप्यत। अस्वापि। यङ्—सोषुप्यते। असोषुपिष्ट। सन्—सुषुप्सति। लुङ्—असुषुप्सीत्। विषुषुप्सति। विषोषुप्यते। सास्वपीति। 'सुविनिर्दुर्भ्यः' इति षत्वम्। णिच्—स्वापयति। असूषुपत्। सुस्वापयिषति, सुषुष्वापयिषति। नजिङ्—स्वप्नक्, (औ) स्वप्नजौ। सुप्तो देवदत्तः। सुप्तं देवदत्तस्य। कर्त्तृभावयोर्वर्त्तमाने क्तः। अनभिहिते कर्त्तरि षष्ठी। स्वप्नः—नन्। स्वापः। स्वप्तुम्। स्वपनम्। स्वप्तव्यम्। स्वपन्, स्त्री—स्वपती। स्वपनीयम्। सुप्तिः सुषुप्तिः। स्वापकः—ण्वुल्। स्वापकमिच्छति स्वापकीयति। अस्मात् क्विबन्तात् सनि सुस्वापकीषति।

६०। श्वस, प्राणने। ( To breathe )

प्राणनं—जीवनं, श्वासः। इतः प्रभृति ग्रासयन्ता उदात्ता उदात्तेतः। श्वस्, सेट्, अक, प। लट्—श्वसिति, श्वसितः, श्वसन्ति। श्वसिषि। श्वसिथः। श्वसिमि। रुदादित्वात् सार्व्वधातुके इडागमः। श्वसितु, श्वसितात्; श्वसिताम्। श्वसिहि, श्वसितात्; श्वसितम्। श्वसानि। अश्वसीत्,

---

* अभ्यासात् परस्य आदिष्टसकारत्वात् षत्वम्। विसुष्वापेत्यादौ भक्तिद्वचनेऽभ्यासस्य सम्प्रसारणे पूर्वत्रासिद्धम् इति षत्वस्यासिद्धत्वात् पूर्वं हलादिशेषे पश्चात् सुपिरूपस्याभावात् 'सुविनिर्दुर्भ्यः' इति न षत्वम्। किति तु परत्वात् सम्प्रसारणे षत्वे च पश्चात् द्विर्वचनमिति विषुषुपतुः निःषुषुपतुः, दुःषुषुपतुरित्यादि भवति।

अश्वसत्। अश्वसिताम्, अश्वसीः। अश्वसः। अश्वसम्, अश्वसिव। विधिलिङ्—श्वस्यात्, श्वस्याताम्, श्वस्युः। श्वस्याः, श्वस्यातम्। *आशीः—श्वस्यात्, श्वस्यास्ताम्, श्वस्यासुः। लुङ्—अश्वसीत्, अश्वसिष्टाम्, अश्वसिषुः। अश्वसीः, अश्वसिष्टम्। अश्वसिषम्, अश्वसिष्व। लिट्—शश्वास, शश्वसतुः, शश्वसुः। शश्वसिथ, शश्वसथुः, शश्वस। शश्वास, शश्वस, शश्वसिव। शिश्वसिषति। शाश्वस्यते। शाश्वस्ति इत्यादि रुदिवत्। भावे—श्वस्यते। अश्वासि। शश्वसे। णिच्—श्वासयति। अशिश्वसत्।

श्वसनः—ल्युः। श्वासः—कर्त्तरि णः। क्त—श्वस्तः †। घञ्—श्वासः। श्वसितुम्। उत्—उच्छ्वासः, अन्तर्मुखश्वासः। 'उच्छ्वश्वास दीना' भट्टि—१४।५५। वि—विश्वासः। सम् आ—समाश्वासः, सान्त्वना। 'व्रजाश्वसिहि मा रुदः।' भट्टि—४।३८। नि—निश्वासः, निर्—निश्वासः, बहिर्मुखश्वासः। 'दीर्घं निश्वस्य'—शकुन्तला। श्वसन्। श्वसती स्त्री।

### ६१। अन्, च। ( To breathe )

अस्यासि प्राणनमर्थः। प्रायेणायं प्रपूर्व्वः। अन्, सेट्, अक, प। लट्—अनिति, अनितः, अनन्ति। अनिषि, अनिथः। अनिमि। लोट्—अनितु, अनितात्; अनिताम्, अनन्तु।

---

* श्वसेत्, श्वसेताम्, श्वसेयुः। श्वसेः, श्वसेतम्। श्वसेयम् इत्यादि। अत्र गणकार्य्यस्यानित्यत्वज्ञापनात् शपो लुक् न भवति। अनित्यत्वञ्च क्षमूषो घटादिपाठात् 'घटादयः षितः' इत्येव षित्वे सिद्धे पुनः षित्करणात् ज्ञायते—एवञ्च 'न विश्वसेदविश्वस्ते' 'आश्वसेयुर्निशाचराः' "प्रत्ययादाश्वसन्त्यः" इत्यादयः प्रयोगा उपपद्यन्ते।

† श्वस्त आश्वस्त इत्यादौ निष्ठायामिटं नेच्छन्ति काशकृत्स्ना इति स्वामिकाश्यपौ। "त्वादितश्च" इत्यत्र वृत्तिकारस्य चकारस्यानुक्तसमुच्चयार्थत्वात् अनिट्त्वमिति। आत्रेयमैत्रेयौ तु—आश्वसित इतीटं चाहतुः।

विधिलिङ्—अन्यात्,अन्याताम्,अन्युः ।लिङ्—आनीत्,आनत्; आनताम्, आनन् । आनीः, आनः; आनितम् । आनम्, आनिव । लुङ्—आनीत् आनिष्टाम्, आनिषुः । आनीः, आनिष्टम् । आनिषम्, आनिष्व । लिट्—आन, आनतुः, आनुः । आनिथ । आन, आनिव । आशीः—अन्यात्, अन्यास्ताम्, अन्यासुः । लुट्—आनिता । लृट्—अनिष्यति । लृङ्—आनिष्यत् ।

सनादिषु—अनिनिषति । आनयति । आनिनत् । प्र—प्राणः, करणे घञ् । क्विप्—प्रा, प्राणौ, प्राणः । प्राणम् इत्यादि । क्वौ पद॰ंज्ञायां नलोपः । * प्राणितः । अनुप्राणनम् । प्राण्य । प्राणितव्यम् । प्राण्यम् । प्राणन्,प्राणती स्त्री । अनित्वा ।

६२ । जक्ष, भक्षहसनयोः । ( To eat, to laugh )

जक्ष, सेट्, प । जक्षिति, जक्षितः, जक्षति । जक्षिषि, जक्षिथः । जक्षिमि, जक्षिव । जक्ष्यात्, † जक्ष्याताम्, जक्ष्युः । जक्षितु, जक्षिताम्, जक्षतु । जक्षिहि, जक्षाणि । अजक्षीत्, अजक्षत्; अजक्षिताम्,अजक्षुः । लुङ्—अजक्षीत्,अजक्षिष्टाम्, अजक्षिषुः । अजक्षीः, अजक्षिषम् । अजक्षिष्व । जक्षिता । जक्ष्यात्, जक्ष्यास्ताम् । जक्षिष्यति । जिजक्षिषति । जाजक्ष्यते, जाजक्षीति, जाजष्टि । जक्षयति, अजजक्षत् । शतृ—जक्षत्,

* प्राणिति इत्यादौ 'अनिते'रिति णत्वम् । अत्र केचित् 'अन्त' इति वक्ष्यमाणमत्राप्याकृष्य सम्बध्य समीपवचनत्वमाश्रित्य उपसर्गस्थनिमित्तसमीपभूतस्य अनितिनकारस्य णत्वमिति सूत्रार्थं वर्णयन्तो 'येन नाव्यवधानम्' इति न्यायेन प्राणितीत्यादावेव णत्वमिच्छन्ति, न तु पर्य्यनिति इत्यनेकवर्णव्यवधाने । प्राणयति, प्राणिणत् प्राणिणिषतीत्यादौ 'उभौ साभ्यासस्य' इत्युभयत्र णत्वम् । क्विपि हे प्राण् इत्यत्र 'पदान्तस्य' इति णत्वनिषेधं बाधित्वा 'अन्त' इति णत्वम् ।

† अत्रापि चान्द्राः श्नपो लुकमनिच्छन्तो जक्षेदित्याहुः ।

जक्षती, जक्षतः । जक्षति, जक्षन्ति ; कुलानि । जक्षती स्त्री ।
रुदादयः पञ्च । *

६३ । जागृ, निद्राक्षये । ( To be awake )

निद्राक्षयो जागरणम् । जागृ, सेट्, अक, प । लट्—जागर्त्ति, जागृतः, जाग्रति । जागर्षि, जागृथः । जागर्मि, जागृवः । लिङ्—जागृयात्, जागृयाताम्, जागृयुः । जागृयाः । जागृयाम्, जागृयाव । लोट्—जागर्त्तु, जागरितात् ; जागृताम्, जाग्रतु । जागृहि, जागरितात् ; जागराणि, जागराव, जागराम । लङ्—अजागः, अजागृताम्, अजागरुः । अजागः, अजागरम्, अजागृव । अजागरीत्, अजागरिष्टाम्, अजागरिषुः । अजागरीः । अजागरिषम् । लिट्—जजागार, जजागरतुः, जजागरुः । जजागरिथ, जजागरथुः, जजागर । जजागार, जजागर ; जजागरिव । पक्षे—जागराञ्चकार इत्यादि । जागरिता । जागर्य्यात्, जागर्य्यास्ताम् इत्यादि । जागरिष्यति । जिजागरिषति । जागरयति । अजजागरत् । [अजीजागरत् । ] भावे—जागर्य्यते । अजागारि । जागरुकः—उकः । जागरितः । जागरितवान् । जागरित्वा । जागरः—घञ् । जागर्य्या, जागरा, 'जागर्त्तेरकारो वा' इति भावे । पक्षे शप्रत्यये यकि गुणः । जागृविः—क्विन् । जाग्रत्, जाग्रती, जाग्रतः । जाग्रति, कुलानि ।

६४ । दरिद्रा, दुर्गतौ । ( To be poor )

दरिद्रा, सेट्, अक, प । दरिद्राति, दरिद्रितः, दरिद्रति । दरिद्रासि, दरिद्रिथः, दरिद्रिथ । दरिद्रामि, दरिद्रिवः ।

---

* "रुदितिः स्वपितिश्चैव श्वसितिः प्राणितिस्तथा ।
जक्षितिश्चैव विज्ञेयो रुदादिः पञ्चको गणः ॥"

दरिद्रियात्, दरिद्रियाताम्, दरिद्रियुः। दरिद्रातु,दरिद्रितात्; दरिद्रिताम्, दरिद्रतु। दरिद्रिहि, दरिद्रितात्। दरिद्राणि। अदरिद्रात्, अदरिद्रिताम्, अदरिद्रुः। लुङ्—अदरिद्रीत्, अदरिद्रिष्टाम्, अदरिद्रिषुः। अदरिद्रीः। अदरिद्रिषम्, अदरिद्रिष्व। पक्षे—अदरिद्रासीत्,अदरिद्रासिष्टाम्,अदरिद्रासिषुः। अदरिद्रासीः। अदरिद्रासिष्टम्।—सिषम्,—सिष्व। दरिद्राञ्चकार—३। ददरिद्रौ। [ददरिद्र, वोप] ददरिद्रतुः इत्यादि। दरिद्रिता। दरिद्र्यात्,दरिद्र्यास्ताम्,दरिद्र्यासुः। अदरिद्रिष्यत्। दरिद्रिष्यति। दिदरिद्रासति। दिदरिद्रिषति *। दरिद्रयति। अददरिद्रत्। भावे—दरिद्र्यते, अदरिद्रायि,अदरिद्रि। दरिद्रः घञ्। दरिद्रायकः—ण्वुल्। दरिद्र्यं—यः। दरिद्राणं—ल्युट्। दरिद्रितः—क्तः। दरिद्रित्वा—क्त्वा। दरिद्रातीति—दरिद्रः, पचाद्यच्। दर्द्रुः। 'दरिद्रायालोपश्च' इतीकाराकारयोर्लोपः, ऊप्रत्ययश्च। दर्द्रुणः—पामादित्वान्नप्रत्ययो णत्वञ्च।

६५। चकासृ, दीप्तौ। ( To shine )

चकास्, सेट्, अक, प। चकास्ति, चकास्तः, चकासति। चकास्मि, चकास्वः। चकास्यात्, चकास्याताम्। चकास्तु, चकास्ताम्, चकासतु। चकाधि। चकाद्धि—कातन्त्रे। अचकात्, [द्] अचकास्ताम्, अचकासुः। अचकात्,अचकाः। अचकासम्, अचकास्व। अचकासीत्, अचकासिष्टाम्, अचकासिषुः। अचकासीः। अचकासिषम्। चकासिता। चकास्यात्,चकास्यास्ताम्। चकासाञ्चकार इत्यादि। चकासिष्यति। चिचकासिषति। चकासयति। ( ऋट ) अचीचकासत्। [अचचकासत,—वोप ]

* "न दरिद्रायके लोपो दरिद्राणे च नेष्यते।
दिदरिद्रासतीत्येके दिदरिद्रिषतीति वा॥"

६६। शासु, अनुशिष्टौ। ( To govern )

शास्, ( उ ) सेट्, सक, प। शास्ति, शिष्टः, शासति। शिष्यात्, शिष्याताम्, शिष्युः। शास्तु, शिष्टात्; शिष्टाम्, शासतु। शाधि, शिष्टात्; शिष्टम्, शिष्ट। शासानि, शासाव। अशात्, अशिष्टाम्, अशासुः। अशाः,अशात्; अशिष्टम्। अशासम्, अशिष्व। लुङ्—अशिषत्, अशिषताम्, अशिषन् इत्यादि। लिट्—शशास,शशासतुः। लुट्—शासिता। आशीः—शिष्यात्, शिष्यास्ताम्। शासिष्यति। अशासिष्यत्। शिशासिषति। शेशिष्यते, शाशासीति, शाशास्ति, शाशिष्टः। शासयति। अशशासत्। शिष्यः—क्यप्। दुःशासनः,—खलर्थे युच्। आशीः—आशास्ते: क्विप्। ( उ ) शिष्ट्वा, शासित्वा। निष्ठा—शिष्टः, शिष्टवान्। क्तिन्—शिष्टिः। शास्तिस्तु क्यन्तात् क्तिन्। तृन्—शास्ता, बुद्धः। प्रशास्ता, ऋत्विग्विशेषः। प्रशास्तुर्भावकर्मणी—प्राशास्त्रम्। उद्गात्रादित्वादञ्।

## आत्मनेपदिनौ।

६७। दीधीङ्, दीप्तिदेवनयोः। ( To shine, to appear)

दीधी, ( ङ ) सेट्, अक, आ। लट्—दीधीते, दीध्याते, दीध्यते। दीधीषे,दीधीध्वे। दीध्ये, दिधीवहे। लिङ्—दीधीत, दीधीयाताम्। लोट्—दीधीताम्, दीध्याताम्, दिध्यताम्। दीधीष्व। दीध्यै, दीध्यावहै। लङ्—अदीधीत, अदीध्याताम्, अधीध्यत। अदीधीथाः, अदीधीध्वम्। अदीधि। लुङ्—अदीधिष्ट, अदीधिषाताम्, अदीधिषत। अदीधिष्ठाः, अदीधिढ्वम्। अदीधिषि,अदीधिष्वहि। लोट्—दीध्याञ्चक्रे,—२। दीधिता। दीधिषीष्ट। दीधिष्यते। दिदीधिषते। दीधयति। अदीदिधत्। दीधितिः—संज्ञायां क्तिन्। आदीध्यनम्। आदीध्यकः। आदीध्य।

६८ । वेवीङ्, वेतिना तुल्ये । ( To go, to pervade, to conceive, to wish, to love, to throw, to eat )

वी गतीत्यादिना तुल्यार्थे वर्त्तते । वेवी, (ङ) सेट्, सक, आ । वेवीते, वेव्याते, वेव्यते । सर्वं दीधीवत् ।

## परस्मैपदिनौ ।

६९ । षस, स्वप्ने । ( To sleep )

सस्, सेट्, अक, प । सस्ति, सस्तः, ससन्ति । सस्सि । सस्मि । सस्यात्, सस्याताम् । सस्तु, सस्ताम्, ससन्तु । लङ्—असत्, अस्स्ताम् । अस्सः । असत्, असासीत्, अससीत् । ससास, सेसतुः, सेसुः । सेसिथ, सेसथुः सेस । ससास, ससस ; सेसिव । ससिता । सस्यात्, सस्याताम् । ससिष्यति । सिस-सिषति । सासस्यते, सासस्ति । सासयति । असीषसत् । सस्यम्—"माच्छाससिसूभ्यो यः" इति यः । सस्यकः, मणिः—कन् । सास्ना—गवां कण्ठकम्बलः,—रास्ना सास्ना स्थणा वीणा' इति निपात्यते ।*

७० । वश, कान्तौ । ( To desire )

कान्तिरिच्छा । वश्, सेट्, सक, प । वष्टिः, उष्टः, उशन्ति । वक्षि, उष्ठः । वश्मि, उश्वः । उश्यात्, उश्याताम् । वष्टु, उष्टात् ; उष्टाम्, उशन्तु । उड्ढि, उष्टात् । वशानि । अवट्, अवड् ; औष्टाम्, औशन् । अवट् [ड्] औष्टम्, औष्ट । अवशम्, औश्व । लुङ्—अवशीत्, अवाशीत् ; अवाशिष्टाम्, अवशिष्टाम् ; अवा-

* केचित् 'षस षस्ति स्वप्ने' इति पठन्ति, तन्मते—संस्ति, संस्त, संसन्ति । 'स्कोः'रिति सलोपोऽत्र न भवति—बहूनां समवाये द्वयोः संयोगसंज्ञाभावात् इत्याहुर्मैत्रेयी । छान्दसत्वाद्धास्माभिरयमर्थः प्रपञ्च्यते । तथाच हरदत्तः—षसपस्ती छान्दसौ एवं वशिरपि ।

शिषुः, अवशिषुः । लिट्—उवाश, ऊशतुः । उवशिथ । उवशिव । वशिता । आशीः—उश्यात्, उश्यास्ताम् । वशिष्यति । विवशिषति । वावश्यते, वावष्टि, वावष्टः । वाशयति । अवीवशत् ।

वशित्वा । वशा, करिण्यादिः—पचाद्यचि टाप् । गोवशा —'पोटायुवती'त्यादिना समासः, बन्ध्या गौरित्यर्थः । वशः—भावे अप् । वशं गतः—वश्यः, यत् । उशिक्—अग्न्यादिः, 'वशः किच्च' इतीजिप्रत्ययः । उशिगेव—औशिजः, प्रज्ञादित्वादण् । उशीरम्—'वशेः कित्' इतीरन्नौणादिकः । उशना—'वशेः कनसि'रिति कनसिः । ( औ ) उशनसौ । "सम्बोधने तूशनसस्त्रिरूपं सान्तं तथा नान्तमथाप्यदन्तम् ।" उशितः, उष्टिः ।

## आत्मनेपदी ।

७१ । ह्नुङ्, अपनयने । ( To take away )

अपनयनम् अपह्नवः, गोपनं ; चौर्य्यमिति वोपः । ह्नु (ङ्) अनिट्, सक, आ । ह्नुते, ह्नुवाते, ह्नुवते । ह्नुषे । ह्नुवे । लिङ्—ह्नुवीत, ह्नुवीयाताम् । लोट्—ह्नुताम्, ह्नुवाताम्, ह्नुवताम् । ह्नुष्व । ह्नवै । अह्नुत, अह्नुवाताम्, अह्नुवत । अह्नुथाः । अह्नुवि, अह्नुवहि । लुङ्—अह्नोष्ट, अह्नोषाताम्, अह्नोषत । अह्नोष्ठाः, अह्नोढ्वम् । अह्नोषि । लिट्—जुह्नुवे, जुह्नुवाते,जुह्नुविरे । जुह्नुविध्वे, जुह्नुविढ्वे । ह्नोता । ह्नोषीष्ट । ह्नोष्यते । जुह्नुषते । जोह्नूयते,जोह्नवीति, जोह्नोति । ह्नावयति । अजुह्नवत् । ह्नुत्वा—प्रह्नुत्य । अपह्नवः । अपह्नुतिः । नि—अपह्नवः, अपनयनम् । देवदत्ताय निह्नुते, सम्प्रदानम् । प्रायेण निपूर्वकः, अपपूर्वकश्चायं प्रयुज्यते ।

## परस्मैपदिनः ।

७२ । हु, दाने । ( To offer as an oblation )

हु, निट्, सक, प । लट्—जुहोति, जुहुतः, जुह्वति । जुहोषि । जुहोमि । लिङ्—जुहुयात्, जुहुयाताम्, जुहुयुः । लोट्—जुहोतु, जुहुतात् ; जुहुताम्, जुह्वतु । जुहुधि, जुहुतात् ; जुहुतम् । जुहवानि, जुहवाव, जुहवाम । लङ्—अजुहोत्, अजुहुताम्, अजुहवुः । अजुहोः । अजुहवम् । लुङ्—अहौषीत्, अहौष्टाम्, अहौषुः । अहौषीः, अहौष्टम् । अहौषम्, अहौष्व । लिट्—जुहाव, जुहुवतुः, जुहुवुः । जुहविथ, जुहोथ ; जुहुवथुः, जुहुव । जुहाव, जुहव, जुहुविव । एवं जहवाञ्चकार इत्यादि । लुट्—होता । आशीः—हूयात्, हूयास्ताम् । लट्—होष्यति । सनादि—जुहूषति । जोहूयते, जोहोति । हावयति । अजूहवत् । कर्म्मणि—हूयते । अहावि, अहोषाताम्, अहाविषाताम् । होता, हाविता । होष्यते, हाविष्यते । अहाविष्यत, अहोष्यत इत्यादि । ( णिच्—कर्मणि ) हाव्यते । अहाव्यत । अहावि, अहावयिषाताम्, अहाविषाताम् । हावयिता, हाविता । हावयिष्यते, हाविष्यते इत्यादि । शतृ—जुह्वत्, जुह्वती, जुह्वतः, पुरुषाः । जुह्वति, जुह्वन्ति ब्राह्मणकुलानि । जुह्वती, स्त्री । जौह्वतः कृष्णमृगः, 'जुह्वत् कृष्णमृग' इति प्रज्ञाद्यण् । होता, होतारौ,—तृन् । होतुर्भावकर्मणो—हौत्रम् । उद्गात्रादित्वादण् । क्षीरहोता—याजकादित्वात् समासः । हावम्—आवश्यके ण्यत् । जुहूः—'जुहोतेर्दीर्घश्च' इति क्विपि दीर्घो द्वित्वञ्च । होमः—मन् । होत्रम्—ष्ट्रन् । हविः, इसिः । हविषि हितम्—हविष्यम्, यत् । होत्रा, ऋत्विक्—स्त्रन्, स्वभावात् स्त्रीलिङ्गः । अयं प्रोण-

नार्थोऽपि। 'अग्निषु हूयमाने'ष्विति प्रयोगो दृश्यते। हूयमानेष्विति ह्वानार्थः। हुत्वा। हुतः। हुतवान्। हुतिः। हवः। हवनम्। होतव्यः। हवनीयः। आ—आहुतिः।

७२। ञि भी, भये। ( To be afraid of )

भी, ( ञि ) अनिट्, अक, प। लट्—बिभेति, बिभीतः, बिभितः; बिभ्यति। बिभेषि, बिभीथः, बिभिथः; बिभीथ, बिभिथ। बिभेमि, बिभीवः, बिभिवः; बिभीमः, बिभिमः। व्यतिबिभीते, इत्यादावात्मनेपदेऽप्ययमित्वविकल्प उदाहार्यः। लिङ्—बिभीयात्, बिभी[भि]याताम्, बिभी[भि]युः, बिभी[भि]याम्। लोट्—बिभेतु, बिभीतात्, बिभितात्; बिभीताम्, बिभिताम्; बिभ्यतु। बिभीहि, बिभिहि; बि[भी]भितात्; बि[भी]भितम्; बिभयानि। लङ्—अबिभेत्, अबि[भी]भिताम्, अबिभयुः। अबिभेः, अबिभीतम्, अबिभितम्। अबिभयम्, अबिभीव, अबिभिव। लुङ्—अभैषीत्, अभैष्टाम्, अभैषुः। अभैषीः। अभैषम्, अभैष्व। माभैषीत्। माभैषीः, माभैः इति केचित्। तथा च "माभैः शशाङ्क मम सीधुनि नास्ति राहुः" इत्यादि प्रयोगः। लुट्—भेता। आशीः—भीयात्, भीयास्ताम्। लृट्—भेष्यति। सनादि—बिभीषति। बेभीयते। बेभेत्ति, बेभीतः। भाययति, अबीभयत्। प्रयोजककाद्भये तु—भापयते। अबीभपत। भीषयते, अबीभिषत।

भीषणः—ल्युः। (ञि) भीतः—वर्त्तमाने क्तः। भीतवान्—क्तवतु। भयम्। अच्—भीः, * भियौ—क्विप्। भीत्वा।

---

* अज्विधौ 'भयादीनामुपसंख्यानं नपुंसके क्तादिनिवृत्त्यर्थम्' इति क्तलुटौ बाधित्वा अजेव भवति, पाराशर्ये तु वासरूपेण क्तो दर्शितः। तदसत्, क्त-ल्युट्-तुमुन्खलर्थेषु वासरूपविधेः प्रतिषेधात्।

भीतिः। वृकभयम् इति 'भयभीतभीतिभि'रिति पञ्चमीतत्पुरुषः। भीरुः, भीलुः—क्रुक्लुकनौ। भीरुकः— क्रुकन्। भीमः, भीष्मः—'भियः षुक् च' इति मक्रि पक्षे षुगागमः। भयानकः—आनकन्। भेकः—कन्। व्याघ्राद्बिभेतीति—अपादानम्। भेतव्यम्। बिभ्यत्, बिभ्यती। बिभ्यति, बिभ्यन्ति कुलानि। बिभ्यती स्त्री।

७३। (क) ह्री, लज्जायाम्। ( To blush )

ह्री, अनिट्, अक, प। जिह्रेति, जिह्रीतः, जिह्रियति। जिह्रेषि। जिह्रेमि, जिह्रीवः। जिह्रेतु। जिह्रियात्। अजिह्रेत्, अजिह्रीताम्, अजिह्रयुः। लिट्—जिह्रयाञ्चकार—२। जिह्राय। जिह्रयाञ्चक्रतुः—३। जिह्रियतुः। जिह्रयाञ्चक्रुः, जिह्रियुः। जिह्रयाञ्चकर्थ—३। जिह्रेथ, जिह्रयिथ इत्यादि भीवत्। ह्रेपयति। अजिह्रिपत्। जिह्रीषति। ह्रीत्वा। प्रह्रीय। वा निष्ठानत्वम्—ह्रीतः, ह्रीणः; ह्रीतवान्, ह्रीणवान्। ह्रेतुम्। ह्रेतव्यम्। ह्रीकः, ह्लीकः—कनि, रेफस्य वा लत्वम्। ह्रीः—क्विप्। ह्रीणीयते, कथतीत्यर्थः। ह्रीणीयङ इति कण्ड्वादिपाठात् स्वार्थे यक्। एतेऽनुदात्ताः परस्मैपदिनः।

७४। पॄ, पालनपूरणयोः। ( To protect, to nourish ).

पॄ, सेट्, सक, प। लट्—पिपर्त्ति, पिपूर्त्तः, पिपुरति। पिपर्षि, पिपूर्थः। पिपर्म्मि, पिपूर्वः। लिङ्—पिपूर्य्यात्, पिपूर्य्याताम्। पिपूर्य्याः। पिपूर्य्याम्। लोट्—पिपर्त्तु, पिपूर्त्तात्; पिपूर्त्ताम्, पिपुरतु। पिपूर्हि, पिपूर्त्तात्, पिपूर्त्तम्। पिपराणि, पिपराव। लङ्—अपिपः, अपिपूर्त्ताम्, अपिपरुः। अपिपः, अपिपूर्त्तम्। अपिपरम्, अपिपूर्व। लुङ्—अपारीत्, अपारिष्टाम्, अपारिषुः। अपारीः। अपारिषम्। अपारिष्व।

लिट्—पपार, पप्रतुः, * पप्रुः। पपरिथ, पप्रथुः, पप्र। पपार, पपर; पप्रिव। 'शॄदॄप्रां ह्रस्वो वा' इति वा ह्रस्वे यणादेशः। अन्यदा गुणे—पपरतुः, पपरुः। पपरिथ, पपर। पपरिव। परिता, परीता। पूर्य्यात्, पूर्य्यास्ताम्। परिष्यति, परीष्यति। सनादिषु—पुपूर्षति, पिपरिषति, पिपरीषति। पोपूर्य्यते, पापर्त्ति, पापरीति, पापूर्त्ति इत्यादि। पारयति। अपीपरत्।

शतृ—पिपुरत्, पिपुरती, पिपुरतः। पिपुरति, पिपुरन्ति कुलानि। पिपुरती स्त्री। निपूर्त्तः, निपूर्त्तवान्—निष्ठानत्वनिषेधः। पूर्त्त्वा—क्त्वा; च्—पूर्य्य। पूः, पुरौ, पुरः—क्विप्। पुरुषः—'पुरःकुषन्' इति कुषन्। पौरुषेयः—ढञ्। पुरुषः प्रमाणमस्य—पौरुषम्, पुरुषद्वयसम्, पुरुषदघ्नम्, पुरुषमात्रम्। द्वौ पुरुषौ प्रमाणमस्याः—द्विपुरुषी, पक्षे टाप्—द्विपुरुषा। राजपुरुषस्य भावकर्म्मणी—राजपौरुष्यम्—ष्यञ्। पुरुषान् गच्छति पुरुषेषु वसति वा—पुरुषता, तप्रत्ययः। पुरुः—कुप्रत्ययः। पुरुता—पूर्ववत् ता। पूर्णम्—'धापॄवशी'त्यादिना नप्रत्ययः। पुरीषः—'शॄपॄभ्यां किच्च' इति षन्। पर्व, ग्रन्थिः—वनिन्। परुः, परुषी,—उसिः। परुषः—उषच्।

अयं ह्रस्वान्त इति वर्द्धमान-कश्यपाभरण-पुरुषकाराः, तथात्रेयमैत्रेयौ च। पिपर्त्ति, पिपृतः, पिप्रति। पिपर्षि। पिपर्मि। पिपृयात्, पिपृयाताम्। पिपर्त्तु। पिपृहि। पिपराणि। लङ्—अपिपः, अपिपृताम्, अपिपरुः। अपिपः। अपिपरम्, अपिपृव। लुङ्—अपार्षीत्, अपार्ष्टाम्। पपार, पप्रतुः। पपर्थ। पिप्रिव। पर्त्ता। प्रियात्। परिष्यति इत्यादि।

---

* कलापमते प्रा-धातुना पप्रतुरित्यादि सिद्धम्। "शॄदॄप्रानर्थे प्राद्यापाय वर्त्तन्ते" इति वृत्तिः। पॄ-धातुना तु गुणे पपरतुरित्याद्येव।

## उभयपदिनः ।

७५ । डु भृञ्, धारणपोषणयोः । ( To bear, to support )

भृ, (डु ञ्) अनिट्, सक, उ। लट्—बिभर्त्ति, बिभृतः, बिभ्रति। बिभर्षि, बिभृथः। बिभर्मि, बिभृवः। लिङ्—बिभृयात्, बिभृयाताम्। लोट्—बिभर्त्तु, बिभृतात्; बिभृताम्, बिभ्रतु। बिभृहि, बिभृतात्। बिभराणि, बिभराव।

लङ्—अबिभः, अबिभृताम्, अबिभरुः। अबिभः, अबिभृतम्। अबिभरम्। अबिभृव। लुङ्—अभार्षीत्, अभार्ष्टाम्, अभार्षुः। अभार्षीः। अभार्षम्, अभार्ष्व। लिट्—बभार, बभ्रतुः, बभ्रुः। बभर्थ। बभृव। पक्षे—बिभराञ्चकार इत्यादि। भर्त्ता। भ्रियात्, भ्रियास्ताम्, भ्रियासुः। भरिष्यति। अभरिष्यत्।

बिभृते, बिभ्राते, बिभ्रते। बिभृषे, बिभृध्वे। बिभ्रे, बिभृवहे। बिभ्रीत, बिभ्रीयाताम्। बिभ्रीथाः। बिभ्रीय, बिभ्रीवहि। बिभृताम्, बिभ्राताम्, बिभ्रताम्। बिभृष्व। बिभरै, बिभरावहै। अबिभृत, अबिभ्राताम्, अबिभ्रत। अबिभृथाः। अबिभ्रि, अबिभृवहि। लुङ्—अभृत, अभृषाताम्, अभृषत। अभृथाः, अभृढ्वम्। अभृषि। भर्त्ता। भृषीष्ट, भृषीयास्ताम्। भरिष्यते। अभरिष्यत। बुभूर्षति, बुभूर्षते।

बिभ्रत्, बिभ्रतौ। बिभ्रति, बिभ्रन्ति कुलानि। बिभ्रती, स्त्री। बिभ्राणः। (डु) भृत्रिमम्—भ्रिमक्। द्राविड़ास्तु टुं तं पठित्वा भरथुरित्युदाहरन्ति। शेषं भरतिवत्।

## आत्मनेपदिनौ ।

७६ । माङ्, माने । ( To measure )

मा, (ङ) अनिट्, सक, आ। मिमीते, मिमाते, मिमते।

मिमीषे, मिमाथे, मिमीध्वे। मिमे, मिमीवहे। मिमीत, मिमीयाताम्, मिमीरन्। मिमीथाः। मिमीय। मिमीताम्, मिमाताम्, मिमताम्। मिमीष्व। मिमै, मिमावहै। लङ्— अमिमीत, अमिमाताम्, अमिमत। अमिमीथाः, अमिमाथाम्, अमिमीध्वम्। अमिमि, अमिमीवहि। लुङ्—अमास्त, अमासाताम्, अमासत। अमास्थाः, अमासाथाम्, अमाध्वम्। अमासि, अमास्वहि। लिट्—ममे, ममाते, ममिरे। ममिषे, ममाथे, ममिध्वे। ममे, ममिवहे। माता। आशीः— मासीष्ट, मासीयास्ताम्। मास्यते। अमास्यत। प्रणिमिमीते 'नेर्गदे'त्यादिना णत्वम्। सनादि—मित्सते। मेमीयते। मामाति, मामेति, मामीतः, मामति। मापयति। अमीमपत्।

मित्वा, मितः, मितवान्, मितिः—'द्यतिस्यती'त्वम्। प्रमाय। मेयं। मिमीत—इति मायः—णे युक्। माया— टाप्। मायी, मायिकः, मायावी—मातौ मत्वर्थं व्युत्पादितम्। धान्यमायः—कापवादः, कर्मण्यण्। प्रमः—'उपसर्गे त्वातो डः' इति डः। प्रमा—अङ्। प्रमितिः—क्तिन्। वातप्रमीः वातमृगः—'वातप्रमी'रिति वातोपपदात् प्रपूर्वादस्मादीकारप्रत्यये आलोपे च निपात्यते। मेरुः 'मापोरुरी च' इति रुप्रत्ययः, ईकारे चान्तादेशे गुणः।

७७। ओ हाङ्, गतौ। ( To go )।

हा, ( ओ, ङ ) अनिट्, सक, आ। जिहीते, जिहाते, जिहते। जिहीषे, जिहाथे। जिहे, जिहीवहे। जिहीतः, जिहीयाताम्। जिहीताम्, जिहाताम्, जिहताम्। लङ्— अजिहीत, अजिहाताम्, अजिहत। अजिहीथाः। अजिहि, अजिहीवहि। लुङ्—अहास्त, अहासाताम्, अहासत इत्यादि। लिट्—जहे, जहाते, जहिरे। हाता, हातारौ।

आशीः—हासीष्ट,हासीयास्ताम् । कर्म्मणि—हायते । अहायि । सनादौ—जिहासते । जाहायते । जाहेति । णिच्—हापयति । अजीहपत् । हायनः—ल्युट् । एकहायनी, त्रिहायणी, गौः । ङीब्णत्वे वयस्येव । अन्यत्र एकहायना चतुर्हायना शाला । हेयः । हातव्यः । शानच्—जिहानः । हाता—तृन् । हानिः—निः । हित्वा ।—प्रहाय । हातुम् । ( ओ ) निष्ठानत्वम् हानः, हानवान् । उद्—उदयः—उज्जिहीते ।

## परस्मैपदी ।

### ७८ । ओ हाक्, त्यागे । ( To abandon )

हा, ( क्, ओ ) अनिट्, सक, प । लट्—जहाति, जहितः, जहीतः ; जहति । जहासि, जहिथः, जहीथः ; जहिथ, जहीथ । जहामि, जहिवः, जहीवः, जहिमः, जहीमः । लिङ्—जह्यात, जह्यातम्, जह्युः । जह्याः जह्याम्, जह्याव । लोट्—जहातु, जहितात्, जहीतात् ; जहिताम्, जहीताम् ; जहतु । जहिहि, जहीहि, जहाहि । जहानि, जहाव । लङ्—अजहात्, अजहिताम्, अजहीताम् ; अजहुः । अजहाः । अजहाम्, अजहीव, अजहिव । लुङ्—अहासीत्, अहासिष्टाम्, अहासिषुः । अहासीः, अहासिष्टम् । अहासिषम् । लिट्—जहौ, जहतुः, जहुः । जहाथ, जहिथ ; जहथुः, जह । जहौ, जहिव । हाता । हेयात्, हेयास्ताम् । हास्यति । अहास्यत् । कर्म्मणि—हीयते । अहीयत । अहायि, अहायिषाताम्, अहासाताम्, अहायिषत, अहासत । हाता, हायिता । हास्यते, हायिष्यते इत्यादि । सनादौ—जिहासति जेहीयते । जाहीति, जाहेति ; जाहीतः । हापयति । अजीहपत् ।

हीयमानः। हित्वा। हाय। हीनः, हीनवान्। सार्थाद्धीनः। हातव्यः। हेयः। हातुम्। हायना व्रीहयः—ख्युट्। हानिः—स्त्रियां निः। जहति, जहन्ति कुलानि। जहत्, जहतौ, जहतः—शतृ। अर्द्धं जहा माषाः—खश्। पूर्वापहाणा, अपरापहाणा—पूर्वानपरांश्च जहातीत्यर्थः। अजादिपाठात् टाप्, कर्त्तरि ल्युट् णत्वञ्च। जहकः—'जहातेर्द्वे च' इति कुनि द्वित्वम्। अहः, अह्नी, अहनी; अहानि—'नञि जहाते'रिति कनिन्। * अह्नां समूहः क्रतुः—अहीनः, खः। अक्रतावाह्न इत्येव। द्वाभ्यामहोभ्यां निवृत्तः द्व्यहीनः, द्वैयह्निकः—खठञौ। अहर्पतिः—वा रेफः। अन्यदा विसर्जनीयोपध्मानीयौ। अह्नोरूपम्—अहोरूपम्। अहश्च रात्रिश्च—अहोरात्रम्। अहोरथन्तरम्।

## उभयपदिनौ।

### ७८। डु दाञ् दाने ( To give )।

दा ( डु, ञ ) अनिट्, सक, उ। लट्—ददाति, दत्तः, ददति। ददासि, दत्थः, दत्थ। ददामि, दद्वः। लिङ्—दद्यात्, दद्याताम्, दद्युः। दद्याः, दद्यातम्। दद्याम्, दद्याव। लोट्—ददातु, दत्तात्; दत्ताम्, ददतु। देहि, दत्तात्; दत्तम्। ददानि, ददाव। लङ्—अददात्, अदत्ताम्, अददुः। अददाः, अदत्तम्। अददाम्, अदद्व। लुङ्—अदात्, अदाताम्, अदुः। अदाः, अदातम्। अदाम्, अदाव। लिट्—ददौ, ददतुः, ददुः। ददाथ, ददिथ। दद, ददौ,

---

* द्वयोरह्नोर्भवः द्व्यह्नः। द्वे अह्नी जातस्य—द्व्यहजातः। अह्नो निर्गतः निरह्नः। अह्नः पूर्वभागः। पूर्वाह्नः। सङ्ख्याताह्नः। मध्याह्नः। एकाहः, पुण्याहम्। प्राह्णः, अह्नः प्रगतत्वम्। दीर्घाह्नी शरत् दीर्घाह्ना, दीर्घाह्नौ, दीर्घाहः।

ददिव । दाता । देयात्, देयास्ताम् । दास्यति । दित्सति, दित्सते । देदीयते, दादेति, दादाति, दात्तः । दापयति । अदीदपत् । कर्म्मणि—दीयते । अदीयत । अदायि, अदायिषाताम्, अदासाताम् इत्यादि स्यसिजादिषु कर्म्मणि वा चिण्वत् ।

दत्ते, ददाते, ददते । दत्से, दध्वे । ददे, दद्वहे । ददीत, ददीयाताम् । ददीथाः । ददीय । दत्ताम्, ददाताम्, ददताम् । दत्स्व, ददाथाम्, दद्ध्वम् । ददै, ददावहै । अदत्त, अददाताम्, अददत । अदत्थाः । अददि, अदद्वहि । लुङ्—अदित, अदिषाताम्, अदिषत । अदिथाः, अदिढ्वम् । अदिषि, अदिष्वहि । लिट्—ददे, ददाते, ददिरे । ददिषे । दधिध्वे । ददे, ददिवहे । दाता । दासीष्ट, दासीयास्ताम् । दास्यते । अदास्यत । अनात्मप्रसारणे आङ्पूर्वो दाञ् आत्मनेपदी—आदत्ते, आददाते, आददते । आदत्से इत्यादि स्वाङ्गकर्म्मणि स्वसुखं व्याददाति ।

दीयत इति—दायः, घञ् । दायमादत्त इति दायादः,—कः । दायादेनादीयमानं—दायाद्यम् ष्यञ् । आदिः—किः । आदौ भवम्—आदिमम्, 'आदेश्च' इत्युपसंख्याने मः । आद्यः—यत् । आदितः—'आद्यादिभ्य उपसङ्ख्यान'मिति सार्व्वविभक्तिकस्तसिः । दत्रिमम्—त्रिमक् । दत्तः, प्रदत्तः, प्रत्तः, निदत्तः, नीत्तः । परीत्तः । दत्तवान् । दत्तिः । दत्त्वा । प्रदाय । दानम् । देयम्, दातव्यम् । दानीयः । दाता । दात्री । प्रदः—डः । दानीयः, ब्राह्मणः—सम्प्रदाने अनीयः । ददः—शः । दायः—णः कर्त्तरि ।

८० । डु धाञ्, धारणपोषणयोः । ( To hold to maintain )

धा, (डु, ञ ) अनिट्, सक, उ । लट्—दधाति, धत्तः,

दधति। दधासि, धत्थ:। दधामि, दध्व:। लिङ्—दध्यात्। दध्या:। दध्याम्। लोट्—दधातु, धत्तात्; धत्ताम्, दधतु। धेहि। दधानि। लङ्—अदधात्, अधत्ताम्, अदधु:। अदधा:। अदधाम्, अदध्व। लुङ्—अधात्, अधाताम्, अधु:। अधा:। अधाम्, अधाव। लिट्—दधौ, दधतु:, दधु:। लुट्—धाता। आशी:—धेयात्। लृट्—धास्यति। लृङ्—अधास्यत्।

धत्ते, दधाते, दधते। धत्से, धद्ध्वे। दधे, दध्वहे। दधीत। धत्ताम्। धत्स्व, धद्ध्वम्। दधै, दधावहै। अधत्त। अधत्था:। अदधि, अदध्वहि।

लुङ्—अधित, अधिषाताम्, अधिषत। अधिथा:, अधिषाथाम्, अधिढ्वम्। अधिषि, अधिष्वहि। दधे, दधाते। दधिषे, दधे। धाता। धासीष्ट। धास्यते। अधास्यत। धित्सति, धित्सते। देधीयते, दाधेति, दाधाति। धात्त:। धापयति, धापयति। प्रणिदधाति,—'नेर्गदे'ति णत्वम्। कर्म्मणि—धीयते। अधीयत। अधायि इत्यादि दावत्।

धाय्या—ण्यति सामिधेन्यां निपात्यते। अन्यत्र यतीत्वे—धेयम्। प्रध:—उपसर्गे त्वातो ड:। दध:—श:। धाय:—ण:। हित्वा। हित:। हितवान्। हितिमम्। प्रधाय—ल्यप्। किं किं दधाति इति—किष्किन्धा, 'आतोऽनुपसर्गात् क:'। धीयते शिरसीति—धात्री, आमलकी, कर्म्मणि ष्ट्रन्। भूतानि धत्ते इति—भूतधात्री, औणादिक: कर्त्तरि ष्ट्रन्। उपधि:, अन्तर्धि: —कि:। उपधिरेव औपधेयम्—स्वार्थे ढञ्। विधि:—कि:, उदकं धीयते अस्मिन्निति—उदधि:—अधिकरणे कि:, उदादेश:। एवं शिरोधि:। अन्तर्द्धा, श्रद्धा—अङ्। श्रद्धालु:—आलुच्। धीवा—क्वनिप्। स्त्रियां धीवरी—'वनोर च' इति ङीप्-रफौ। बहवो धीवानोऽस्या:—बहुधीवरी, बहुधीवा, बहु-

धीवे । बहुधीवानी—'डावुभाभ्यामन्यतरस्याम्' इति ङीप्-फौ डाप् च । धीवरः—'छित्वरचत्वरे'त्यानिना ष्वरचि निपात्यते । धातुः—तुन् । धानाः—नः । धामा—मनिन् कर्कन्धूः—कूः । दिधीषुः—निपातनात् क्षुः, आकारस्येकारः—द्विर्वचनं युगागमश्च । निधनम्—"कृ-वृ" इत्यादिना क्युन् । केवलादपि बाहुलकात् क्युन्—धनम् । धनायति—धनं गृध्यतीत्यर्थः 'अशनाये'त्यादिना सिद्धिः । सर्वधनमस्यास्तीति सर्वधनी—न कर्मधारयादित्यादेरपवादः । दधिः—किः, द्वित्वम् ।

अपिदधाति, पिदधाति—'वष्टी'त्यादिना पाक्षेऽकारलोपः । धयतीति पाने गतम् । तत्र विशेषो द्रष्टव्यः । अन्तर्—अन्तर्धानम् । तिरस्—तिरोधानम् । "कृष्णमेघस्तिरोदधे ।" रघु १०।४८ । श्रत्—श्रद्धा । पुरस्—पुरस्करणम् । पुरोधाः—पुरोहितः । पुरोधाय—अग्रे कृत्वा इत्यर्थः । अव—अवधानम् । प्र—प्रणिधानम् । अभि—अभिधानम्—कथनम् । आ—आधानम्—अर्पणं स्थापनम् । धारणम्, ग्रहणम् । "सरित्सु खाभ्युद्यमादधानम् ।" भट्टि २।८ । गर्भाधानम् । व्यव—व्यवधानम् । समा—समाधानम् । उप—उपधानम् । नि—निधानम्—स्थापनम्, न्यासः । प्रणि—प्रणिधानम् । अव—अवधानम् । अपि—अपिधानम्, पिधानम् । प्रति-नि—प्रतिनिधिः । सन्नि—सन्निधानम् । वि—विधानम् । "विपूर्वो धाञ् करोत्यर्थे अभिपूर्वश्च भाषणे ।" प्रतिवि—प्रतिविधानम्—प्रतिकारः । सम्—सन्धानम् । अनु-सम्—अनुसन्धानम् । अभिसम्—अभिसन्धिः । निधिः । विधिः । आधिः । प्रधिः । सुषन्धिः, दुष्षन्धिः ।

८१ । णिजिर्, शौचपोषणयोः । ( To wash, to purify )

निज् (इर्) अनिट्, सक, उ । लट्—नेनेक्ति, नेनिक्तः नेनिजति । नेनेक्षि । नेनेज्मि, नेनिज्वः । लिङ्—नेनिज्यात्,

नेनिज्याताम्, नेनिज्युः। नेनिज्याः। नेनिज्याम्। लोट्—नेनेक्तु, नेनिक्तात्; नेनिक्ताम्, नेनिजतु। नेनिग्धि। नेनिजानि, नेनिजाव। लङ्—अनेनेक् (ग्), अनेनिक्ताम्, अनेनिजुः। अनेनेक् (ग्)। अनेनिजम्।

लुङ्—अनिजत्, अनिजताम्, अनिजन्। अनिजः। अनिजम्, अनिजाव। पक्षे—अनैक्षीत्; अनैक्ताम्, अनैक्षुः। अनैक्षीः, अनैक्तम्। अनैक्षम्, अनैक्ष्म। लिट्—निनेज, निनिजतुः, निनिजुः। निनेजिथ, निनिजथुः, निनिज। निनेज, निनिजिव। लुट्—नेक्ता, नेक्तारौ। आशीः—निज्यात्, निज्यास्ताम्, निज्यासुः। लृट्—नेक्ष्यति। लृङ्—अनेक्ष्यत्।

नेनिक्ते, नेनिजाते, नेनिजते। नेनिक्षे। नेनिजे, नेनिज्वहे। नेनिजीत, नेनिजीयाताम्। नेनिक्ताम्, नेनिक्ष्व। नेनिजै। अनेनिक्त, अनेनिक्थाः, अनेनिजि।

अनिक्त, अनिक्षाताम्, अनिक्षत। अनिक्थाः, अनिक्षाथाम्, अनिग्ध्वम्। अनिक्षि, अनिक्ष्वहि। निनिजे। निनिजिषे। निनिजिवहे। नेक्ता। निक्षीष्ट। नेक्ष्यते। अनेक्ष्यत। निनिक्षति, निनिक्षते। नेनिज्यते, नेनिजीति, नेनेक्ति। नेजयति। अनीनिजत्।

निक्त्वा। निक्तः, निक्तवान्। निजः—कः। निर्णेजकः—ण्वुल्। प्रणेनेक्ति—'उपसर्गादसमासेऽपि' इति णत्वम्। नेजनम्, अव—अवनेजनम्। निर्—निर्णेजनम्—शोधनम्। चेलनिर्णेजकः। 'अद्भिर्निर्णिक्तम्।' मनु ५।१२७।

८२। विजिर्, पृथग्भावे। ( To separate )।

विज्, (इर्) अनिट्, सक उ। वेवेक्ति इत्यादि निजिर्वत्। निजिविजो द्वौ रुधादौ च। (इर्) अविजत् इत्यादि। ओविजी इति तुदादौ च।

८३। विष्ऌ, व्याप्तौ। (To pervade)।

विष् (ऌ) अनिट्, सक, उ, (आ—वोप)। वेवेष्टि, वेविष्टः, वेविषति इत्यादि निजिर्वत्। लोट् हि—वेविड्ढि। लङ् दि—अवेवेट्। लुङ्दि—(ऌ) अविषत् (अविक्षत्—वोप) अविषताम्, अविषन् इत्यादि। अविक्षत, अविक्षाताम्, अविक्षन्त इत्यादि विशेषः। विष्यन्ते व्याप्यन्तेऽनेन प्रेक्षकाणां मनांसीति—वेषः, घञ्। वेषेण सम्पादी वेष्यो नटः, स्त्रियां वेष्या—वेश्या—सम्पादिनि यत्, सम्पत्तिः शोभातिशयः। परिवेषः—परिधिः, वेषवद्—घञ्। वेवेष्टीति—विषम्, कः। विषमर्हतीति—विष्यः—यत्। विष्णुः—'विषेः किच्च' इति णुप्रत्ययः।

प्र-णिच्—परिवेषणम्,—अन्नाद्युपसर्पणम्। वेष्टनम्। 'उपनीय मांसानि परिवेषयेत्।' मनु ३।२२८। अन्तस्थोयो वकारः।

## परस्मैपदिनः।

८४। घृ, क्षरणदीप्त्योः। (To sprinkle, to shine)।

घृ, अनिट्, अक, प। जघर्त्ति इत्यादि भृञ्वत्। छान्दसोऽयमिति केचित्। आघाराज्यभागं, घृतेनाभिघारयेदित्यादि। माधवीयधातुवृत्तौ तु जिघर्त्तीति प्रदर्शितम्।

८५। हृ, प्रसह्यकरणे। (To take forcibly)।

हृ, अनिट्, सक, प। जहर्त्ति इत्यादि। अयमपि छन्दोविषय इति। 'अयं स्रुवोऽभिजिहर्त्ति होमान्' इत्यादि। प्रसह्यकरणं—बलाद्धरणम्। "जहर्त्ति धनं दस्यु"रिति रमानाथप्रयोगः।

८६। ऋ, सृ, गतौ। (To go)

ऋ, अनिट्, सक, प। लट्—इयर्त्ति, इयृतः, इय्रति। इयर्षि, इयृथः। इयर्मि, इयृवः, इयृमः। लिङ्—इयृयात्, इयृ-

याताम्, इयृयुः। इयृयाः। इयृयाम्। लोट्—इयर्त्तु, इयृतात्; इयृताम, इय्रतु। इयृहि, इयृतात्। इयराणि, इयराव। इयृम। लङ्—ऐयः, ऐयृताम्, ऐयरुः। ऐयः, ऐयृतम्, ऐयृत। ऐयरम्, ऐयृव। लुङ्—आरत्, आरताम्, आरन्। आरः। आरताम्। आरम्, आराव। लिट्—आर, आरतुः, आरुः। आरिथ, आरथुः, आर। आरिव। लुट्—अर्त्ता। आशीः—अर्य्यात्, अर्य्यास्ताम्। लृट्—अरिष्यति। लृङ्—आरिष्यत्।

सम्पूर्वक आत्मनेपदी।—समियृते, समिय्राते, समिय्रते। समियृषे। समिय्रे। लिङ्—समिय्रीत, समिय्रीयाताम्, समीय्रीरन्। समिय्रीयाः। समीय्रीय। लोट्—समियृताम्, समिय्राताम्, समियृताम्। समियृष्व। समियरै। लङ्—समैयृत, समैय्राताम्, समैयृत। समैयृथाः। समैयि, समैयृवहि। लुङ्—समारत, * समारेताम्, समारन्त। समारथाः। समारि, समारावहि। लिट्—समारे, समारिषे, समारिवहे। लुट्—समर्त्ता। आशीः—समृषीष्ट, समृषीयास्ताम्। लृट्—समरिष्यते ऋधातुश्छान्दस—समर्त्तीत्यादि।

८७। भस, भर्त्सनदीप्त्योः। (To consure, to shine)

भस्, सेट्, भर्त्सनार्थे सक, दीप्त्यर्थे अक, प। 'कपिर्बभस्ति ते जनम्।' बभस्ति जनं निस्तेजसं, सर्वः। बब्धः। 'घसिभसोर्हलि च' इत्युपधालोपे 'झषस्तथोर्धोऽधः' 'झलां जश् झशि' इति जश्त्वम्। बप्सति। उपधालोपे

* सर्त्तिशास्तीत्यव परस्मैपदानुवृत्तिवत्तरार्थां कृत्वात्मनेपदेऽपि वृत्तावङ्कः। कलापनये तु पुषादिद्युतादीत्यव टीकाकारेण सम्पूर्वकस्य अर्त्तेरात्मनेपदे समाङ्, समारत इत्यादुभयविधमेव प्रत्यपादि। तथाच भट्टिः—'समारत समाभीष्टा' इति। 'समो गम्यृच्छी'त्यादिनाऽकर्म्मकात् सर्वत्र तङ्। यत्तच माघे आसवत, नासवधाताभिति सिद्धः प्रयोगः स भौवादिकस्य अङ्विधौ तस्य रूपं नेति तत्त्वबोधम्।

'खरि च' इति चर्त्वम् । 'न पदान्त' इत्यादिना जश्त्वचर्त्वयोपधा-लोपस्य न स्थानिवत्त्वम् । अन्यदपि यथादर्शनम् । भस्म—मनिन् । भस्त्रा—त्रन्, स्वभावात् स्त्रियां भस्त्रिका, भस्त्रका, अभस्त्रिका, अभस्त्रका, परमभस्त्रिका, परमभस्त्रका । 'भस्त्रैषा' इत्यादिना केवलस्य नञ्पूर्वस्य अन्यपूर्वस्य चास्य ककारात् पूर्वस्यात्स्थानिकस्याकारस्य वेत्वम् । भस्त्रया हरति—भस्त्रिकः, भस्त्रिकी—'भस्त्रादिभ्यः ष्ठन्' इति हरत्यर्थे ष्ठन्, षित्त्वात् स्त्रियां ङीप् । न बभस्ति इति नभः—क्विबित्यात्रेयः ।

८८ । कि, ज्ञाने । (To know )

कि, अनिट्, सक, प । चिकेति, चिकितः, चिक्यतीत्यादि । कि कित ज्ञाने इति दुर्गः पठति । एतन्मते चिकेत्ति, चिकित्त इत्याद्यपि रूपम् ।

८९ । तुर, त्वरणे । (To make haste)

तुर्, सेट्, अक, प । तुतोर्त्ति, तुतुर्त्तः, तुतुरतीत्यादि । तुरः—नाम्युपधात् कः । तुरितं, तोरितमिति निष्ठायाम् ।

९० । धिष, शब्दे । (To sound)

धिष्, सेट्, अक, प । दिधेष्टि, दिधिष्ट इत्यादि ।

९१ । धन, धान्ये । (To bear fruit)

धन्, सेट्, अक, प । दधन्ति, दधन्तः, दधनतीत्यादि ।

९२ । जन, जनने । (To be born)

जन्, सेट्, अक, प । जजन्ति, जजन्तः, जजनतीत्यादि । लिट्—जजान, जज्ञतुः, जज्ञुः इत्यादि । छान्दसोऽयमिति परः । ऋस्ववर्जं घृप्रभृतयश्छान्दसा इत्येके ।

८३। गा, स्तुतौ। ( To praise )

गा, अनिट्, सक, प। जिगाति, जिगीतः, जिगतीत्यादि। गायति, गाति इति द्वयं अपि। अयञ्च छान्दस इत्येके।

इत्यदादयः जुहोत्यादयश्च समाप्ताः।

---

## दिवादयः।

## परस्मैपदिनः।

१। दिवु, क्रीड़ा-विजिगीषा-व्यवहार-द्युति-स्तुति-मोद-मद-स्वप्न-कान्ति-गतिषु।

( To play, To desire, To overcome, To deal, To shine, To praise, To be glad, To be mad, To be sleepy, To love, To go. )

एतदादयो दीङ्-पर्य्यन्ता उदात्ता उदात्तेतः। क्रीड़ा—खेलनम्, विजिगीषा—विजयेच्छा, व्यवहारः—क्रयविक्रयलक्षणः, द्युतिः—शोभा, कान्तिः—इच्छा।

दिव्, ( उ ) सेट्, [प्रायेण सक], अक, प। लट्—दीव्यति, (अक्षान्, अक्षैर्वा ) दीव्यतः, दीव्यन्ति। दीव्यसि। दीव्यामि, दीव्यावः,—मः। लिङ्—दीव्येत्, दीव्येताम्, दीव्येयुः। दीव्येः। दीव्येयम्। लोट्—दीव्यतु, दीव्यतात्, दीव्यताम्, दीव्यन्तु। दीव्य, दीव्यतात्। दीव्यानि। लङ्—अदीव्यत्, अदीव्यताम्, अदीव्यन्। अदीव्यः। अदीव्यम्। लुङ्—अदेवीत्, अदेविष्टाम्, अदेविषुः। अदेवीः। अदेविषम्। अदेविष्व। लिट्—दिदेव, दिदिवतुः, दिदिवुः। दिदेविथ। दिदिविव। लुट्—देविता। आशीः—दीव्यात्, दीव्यास्ताम्। लृट्—देविष्यति। लृङ्—अदेविष्यत्। सनादौ—(द्यूत्) दिदे

विषति, दुद्यूषति । देदीव्यते । [देदेवीति, देदेति । देद्योति—वोपदेवः] माधवादिमते जड्भाविनां यङ्लुक् नास्तीति भ्वादौ प्रतिपादितम् । देवयति । अदीदिवत् ।

देवः—कं बाधित्वा अच् । ङीप्—देवी । अपत्यादौ दैव्यम्, दैवम्—यञञौ । देवस्येदं—देवकीयम् । देवता—स्वार्थे तल् । देवतैव दैवतम्—स्वार्थेऽण्, 'स्वार्थिकाः प्रकृतित एव लिङ्गवचनान्यतिवर्त्तन्ते' इति नपुंसकत्वम् । पितृदेवतायै इदम्—पितृदेवत्यम्—यत् । दैविकम्—ठञ् । देवेषु वसति, देवान् गच्छति वा—सेवत्रा, त्रा । देविका—देवीशब्दात् 'संज्ञायां कन्' इति कन्, 'केऽण' इति ह्रस्वः । देविकायां भवं—दाविकम् । देविकाकूले भवाः शालयः—दाविककूलाः । पूर्वदेविका नाम प्राचां ग्रामः तत्र भवः—पूर्वदाविकः,—'देविकाशिंशपे'त्यादिना देविकाया अचामादेरच आकारः । देवकी नाम क्षत्रियः—संज्ञायां ण्वुल् । तस्यापत्यं दैवकिः—अत इञि आदिवृद्धिः । दैवकी—'इतो मनुष्यजाते'रिति ङीष् । (ङ)—देवित्वा, द्यूत्वा । प्रदीव्य । आद्यूनः, परिद्यूनः—'दिवोऽविजिगीषाया'मिति निष्ठानत्वम् । "आद्यूनः स्यादौदरिको विजिगीषाविवर्ज्जितः ।" इत्यमरः । विजिगीषायान्तु द्यूतम्—'यस्य विभाषा' इत्यनिट्त्वम् । अक्षद्युतेन निर्वृत्तम्—आक्षद्यूतिकम् ठक् । किकीति दीव्यतीति किकीदिविः, किकिदीविः, चाषः दीर्घद्वितीयः, दीर्घतृतीयश्च क्विनि निपात्यते । अक्षद्यूः—क्विप् । औ—अक्षद्युवौ । द्यौः—'दिवेर्डिवि'रिति डिव् । दिव्यम्—यत् शैषिकः । द्यावाभूमी—'दिवो द्यावा' इत्युत्तरपदे द्यावादेशः । द्यावापृथिव्यौ, दिवस्पृथिव्यौ—'दिवसश्च पृथिव्याम्' इत्युत्तरपदे दिवस्भावो द्यावादेशश्च । द्यावापृथिव्यौ देवता अस्य—द्यावापृथिव्यम्, द्यावापृथिवीयम्—यच्छौ । दीव्यन्त्यस्मि-

न्निति दिवम्—घञर्थे कः। "मरुत्वता वृत्रवधे यथा दिवम्।"
त्रिदशा दीव्यन्त्यत्रे ति त्रिदिवः—निपातः। देवनम्। द्यूतिः।
देविता। देवनः। देवयिता। देवते इति देवने अपि गतम्।
शतस्य दीव्यति—कर्म्मणि षष्ठी, उपसर्गयोगे च विभाषया
शतस्य, शतं वा प्रतिदीव्यतीत्यादि। मनसादेवः, मनसादे वीति
कर्म्मण्यण्, खरणत्वात्तृतीया, 'मनसः संज्ञाया'मिति अलुक्।

२। षिवु, तन्तुसन्ताने। ( To sew )

सिव् (उ) सेट्, सक, प। परिषीव्यति, निषीव्यति, विषीव्यति—'परिनिविभ्यः'इति षत्वम्। सीव्यतः, सीव्यन्ति इत्यादि दीव्यतिवत्। लङ्—पर्य्यषीव्यत्, पर्य्यसीव्यत्—'सिवादीनां वाड्व्यवायेऽपि' इति वा षत्वम्। एवं निविभ्यामपि। लुङ्—पर्य्यषेवीत्, पर्य्यसेवीत्। लृङ्—पर्य्यषेविष्यत्, पर्य्यसेविष्यत्। सेवयति। असीषिवत्। पर्य्यसीषिवत्, अभ्यासे षत्वनिषेधः। परिषिषेव, निषिषेव इत्यादि। अत्र यस्रते अभ्यासे षत्वं नास्ति, सहधातुर्द्रष्टव्यः।

स्यूत्वा, सेवित्वा। स्यूतः। स्यूतिः। प्रसीव्यन्ति तमिति—प्रसेवकः, घञन्तात् संज्ञायां कन्। सूनः—"सिवेष्टेरूच" इति नप्रत्यये टेरूकारः, दीर्घोच्चारणान्न गुणः। सूत्रम्—ष्ट्रन्। टित्वात् स्त्रियां ङीष्—सूत्री।

३। स्रिवु, गतिशोषणयोः। ( To go To dry )

स्रिव् ( उ ) सेट्, सक, प। स्रीव्यति इत्यादि दीव्यतिवत्। सनादौ—सिस्रेविषति; सुस्रूषति। सेस्रीव्यते। [सेस्रोति, सेस्रूतः, सेस्रिवति। सेस्रोषि। सेस्रोमि, सेस्रूवः, सेस्रूमः।] (उ) स्रेवित्वा। स्रूत्वा। स्रूतः। स्रूतिः। स्रूः—क्विप्। स्त्री—स्रुवौ।

४। ष्ठिवु, निरसने। ( To spit out )

ष्ठिव् ( उ ) सेट्, सक, प। ष्ठीव्यति इत्यादि सीव्यतिवत्।

तिष्ठेवेत्यादौ अभ्यासे खयः शेषः । अत्र वक्तव्यं—ष्ठ्यादौ ष्ठेवतावुक्तं 'सुब्धातुष्ठीवुष्वष्कतीनाम्' इति वस्य सकारनिषेधः ।

५ । ष्णुसु, अदने । ( To eat )

ष्णुस् (उ) सेट्, सक, प । ष्णुस्यति, ष्णुस्यन्ति । ष्णुस्येत् । ष्णुस्यतु । अष्णुस्यत् । अष्णोसीत्, अष्णोसिष्टाम्, अष्णोसिषुः । अष्णोसीः, अष्णोसिषम् इत्यादि । सुष्णोस, सुष्णुसतुः । सुष्णोसिथ ; सुष्णुस । सुष्णोस, सुष्णुसिव । ष्णोसिता । आशीः—ष्णुस्यात् । ष्णोसिष्यति । अष्णोसिष्यत् । सनादौ—सुष्णुसिषति, सुष्णोसिषति । सोष्णुस्यते । सोष्णुसीति, सोष्णोस्ति, सोष्णुस्तः । ष्णोसयति । असुष्णुसत् । [ उ ] ष्णुसित्वा, ष्णोसित्वा । ष्णुसा—'इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः' कः, ततष्टाप्, सुषामादित्वात् षत्वम् ।

६ । क्नसु, ह्वरणदीप्त्योः । ( To be crooked ; To shine )

क्नस्, (उ) सेट्, अक, प । क्नस्यति । क्नस्येत् । क्नस्यतु । अक्नस्यत् । अक्नसीत्, अक्नासीत् ; अक्न(क्ना)सिष्टाम् । अक्न—(क्ना)सिषुः । चक्नास, चक्नसतुः । चक्नसिथ । क्नसिता । क्नस्यात् । क्नसिष्यति । अक्नसिष्यत् । चिक्नसिषति । चाक्नस्यते । चाक्नस्ति । क्नसयति । अचिक्नसत्—मित्त्वाद्ध्रस्वः । (उ) क्नसित्वा, क्नस्त्वा । चक्नसः—चवर्थे कः 'क्नसादीनां के द्वे भवतः' इति द्वित्वम् ।

७ । व्युष, दाहे । [ विभागे च ] ( To burn )

व्युष्, सेट्, सक, प । व्युष्यति । अव्योषीत् । वुव्योष । वुव्योषिथ । वुव्युषिव । व्योषिता । व्योषिष्यति । वुव्युषिषति, वुव्योषिषति । वोव्युष्यते । वोव्युषीति, वोव्योष्टि । व्योषयति । अवुव्युषत् । व्युषित्वा, व्योषित्वा । व्युषितः ।

८ । प्लुष च । ( To burn )

चकारेण पूर्व्वोक्तः । अर्थः परामृश्यते प्लुष्, सेट्, सक, प ।

प्लुष्यति। लुङ्—अप्लोषीत्। इत्यादि पूर्ववत्। अयं पुषादावपि पठ्यते। फलम्—अङोऽपि सिद्धिरिति स्वामी। तेन अप्लुषत्।

९। नृती गात्रविक्षेपे। ( To dance )

नृत् ( ई ) सेट्, अक, प। नृत्यति। नृत्येत्। नृत्यतु। अनृत्यत्। लुङ्—अनर्त्तीत्, अनर्त्तिष्टाम्, अनर्त्तिषुः। अनर्त्तीः। अनर्त्तिषम्। ननर्त्त। ननर्त्तिथ। नर्त्तिता। नृत्यात्। नर्त्तिष्यति, नर्त्स्यति। अनर्त्तिष्यत् अनर्त्स्यत्। निनर्त्तिषति, निनृत्सति। नरीनृत्यते। नर्नर्त्ति, नरिनर्त्ति, नर्नृतीति, नरीनर्त्ति, नरिनृतीति, नरीनृतीति। इत्यादि। नर्त्तयति, [ नर्त्तयते ] अनीनृतत्, अननर्त्तत्। * भावे—नृत्यते। अनर्त्ति। नृत्यम्—क्यप्। नर्त्तकः—वुष्। षित्वात् स्त्रियां ङीष्—नर्त्तकी। नर्त्तित्वा। प्रनृत्य। (ई)—नृत्तः। नृत्तवान्। नृतूः—'नृतिशृध्योः कूः' इति कूः। नर्त्तनम्।

१०। त्रसी, उद्वेगे। ( To fear )

त्रस्, ( ई ) सेट्, अक, प। त्रस्यति, त्रसति ; त्रस्यतः, त्रसतः ; त्रस्यन्ति, त्रसन्तीत्यादि। त्रस्येत्, त्रसेत्। त्रस्यतु, त्रसतु। अत्रस्यत्, अत्रसत्। अत्रासीत्, अत्रसीत्। तत्रास, तत्रसतुः, त्रेसतुः ; तत्रसुः, त्रेसुः। तत्रसिथ, त्रेसिथ,। त्रसिता। त्रस्यात्। त्रसिष्यति। अत्रसिष्यत्। तित्रसिषति। तात्रस्यते। तात्रस्ति, तात्रसति। त्रासयति। अतित्रसत्। त्रस्नुः—क्नुः। ( ई ) त्रस्तः। त्रस्तवान्। तरङ्गापत्रस्तः—'अपेतापोढे'ति पञ्चमीसमासः। त्रासः—घञ्। त्रसन्—शतः। त्रसित्वा।

११। कुथ, पूतीभावे। ( To become putried)

कुथ्, सेट्, अक, प। कुथ्यति। कुथ्येत्। कुथ्यतु। अकुथ्यत्,

* अस्य चलनार्थत्वात् अणावकर्म्मकत्वाच्च 'निगरणचलने'त्यादिना कर्त्रभिप्राये क्रियाफले यत् परस्मैपदं प्राप्तं तत् 'न पादि'त्यादिना निषिध्यते।

अकोथीत्। चुकोथ। चुकोथिथ। कोथिता। कुथ्यात्। कोथिष्यति। अकोथिष्यत्। चुकुथिषति, चुकोथिषति। चोकुथ्यते। चोकोत्ति। कोथयति। अचूकुथत्। कुथः—कः,—हस्तिपृष्ठास्तरणम्। कुथितमनेन। प्रकुथितः—'उदुपधात्' इति किश्वविकल्पोऽत्र न भवति। तत्र व्यवस्थितविकल्पत्वात् शब्विकरणानामेव ग्रह इति। कुथ्यतीति हिंसायां अपि गतम्।

१२। पुथ, हिंसायाम्। ( To kill

पुथ्, सेट्, सक, प। पुथ्यतीत्यादि कुथ्यतिवत्।

१३। गुध, परिवेष्टने। ( To cover )

गुध्, सेट्, सक, प। गुध्यति इत्यादि कुथ्यतिवत्। गुधित्वा सेटः क्त्वाप्रत्ययस्य किश्वम्। गोधा—भिदाद्यङ्। गोधिका—कन्। गोधाया अपत्यं—गौधेरः, ढ्रक्। गौधारः—आरक्। गौधेयः—ढक्। गोधूमः—'गुधेरूमः' इत्युमः।

१४। क्षिप, प्रेरणे। ( To throw )

क्षिप्, अनिट्, सक, प। क्षिप्यति। क्षिप्येत्। क्षिप्यतु। अक्षिप्यत्। लुङ्—अक्षैप्सीत्, अक्षैप्ताम्, अक्षैप्सुः। लिट्—चिक्षेप, चिक्षिपतुः। चिक्षेपिथ। क्षिप्यात्। क्षेप्स्यति। अक्षेप्स्यत्। चिक्षिप्सति। चेक्षिप्यते। चेक्षेप्ति। क्षेपयति। अचिक्षिपत्। क्षिप्त्वा। क्षिप्तः। क्षिपः—कः। क्षिपका—अज्ञातादौ कः 'क्षिपकादीनां चोपसंख्यान'मिति निषेधः। क्षिप्नुः—क्नुः। परिक्षेपी—घिनुण्। परिक्षेपकः—वुञ्। क्षिपा—भिदाद्यङ्। क्षिप्रम्।—रक्। क्षेपिष्ठः—इष्ठः। क्षेपीयान्—ईयसुनः। क्षेपयति 'स्थूलदूर' इत्यादिना 'णाविष्ठवत्' इति यणादेर्लोपः, पूर्वस्य च गुणः।

१५। पुष्प, विकसने। ( To blow )

पुष्प्, सेट्, अक, प। पुष्प्यति। पुष्प्येत्। पुष्प्यतु।

अपुष्यत् । अपुष्पीत् । पुपुष्प । पुष्पिता । पुष्प्यात् । पुष्पिष्यति । अपुष्पिष्यत् । पुपुष्पिषति । पोपुष्प्यते । पोपुष्प्ति । पुष्पयति । अपुपुष्पत् । पुष्पम्—अच् । पुष्पकं—संज्ञायां कन् । शणपुष्पी—'पाककर्णे'त्यादिना ङीष् । सत्पुष्पा, प्राक्पुष्पा, प्रत्यक्पुष्पा, काण्डपुष्पा ; प्रान्तपुष्पा, शतपुष्पा, एकपुष्पा—अजादिपाठात् टाप् । पुष्पिता । पुष्पितः—निष्ठा, तारकादित्वादितच् वा ।

१६ । तिम, ष्टिम, ष्टीम, आर्द्रीभावे । ( To be wet )

तिम्, स्तिम्, स्तीम्,—सेट्, अक, प । तिम्यति । तिम्येत् । तिम्यतु । अतिम्यत् । अतेमीत् । तितेम । तेमिता । तिम्यात् । तेमिष्यति । अतेमिष्यत् । तितेमिषति, तितिमिषति । तेतिम्यते । तेतेन्ति । तेमयति । अतीतिमत् । स्तिम्—स्तिम्यति इत्यादि । अभ्यासे खयः शिटः शेषः । (ष्टीम्) स्तीम्—स्तीम्यति इत्यादि । तिमिः—'इगुपधात् किच्' इतीन्प्रत्ययः । तिमिरम्—किरच् ।

१७ । व्रीड़, चोदने । ( To throw, [ To be ashamed ])

चोदनमिह लज्जेति स्वामी । व्रीड़्, सेट्, अक, प । व्रीड्यति । व्रीड्येत् । व्रीड्यतु । अव्रीड्यत् । अव्रीड़ीत् । विव्रीड़ । विव्रीड़िथ, विव्रीड़िव । व्रीड़िता । व्रीड्यात् । व्रीड़िष्यति । अव्रीड़िष्यत् । विव्रीड़िषति । वेव्रीड्यते । वेव्रीड्टि । व्रीड़यति । अविव्रीड़त् । व्रीड़िला । व्रीड़ितः । व्रीड़ः—घञ् । व्रीड़ा—'गुरोश्च' इत्यकारः ।

१८ । इष, गतौ । ( To go )

इष्, सेट्, सक, प । इष्यति । इष्येत् । इष्यतु । ऐष्यत् । ऐषीत् । इयेष, ईषतुः । इयेषिथ । ईषिव । एषिता । इष्यात् । एषिष्यति । ऐषिष्यत् । एषिषिषति । एषयति । ऐषिषत् ।

मा भवानिषिषत्—'ओणेर्ऋदित्करणाद्द्विर्वचनात् पूर्वं ह्रस्वः' इत्युक्तम्। एषित्वा। इषितः। प्रैषः, प्रैष्यः—घञ्ण्यतौ। अन्वेषणा, पर्य्येषणा—युच्। परीष्टिः—क्तिच्, अस्त्रविशेषः। एषणी—'एषणः करणे' इति गौरादिपाठात् ङीष्। इषीका—'इषेः किच्च' इतीकन्प्रत्ययः। इष्टका—तकन्।

१८। षुह, चक्यर्थे। ( To be satisfied )

'चक्यर्थस्तृप्त्यर्थः। अत्र षह षुह इति द्वौ धातू आत्रेयमैत्रेयदुर्गाः पेठुः। सुह्, सेट्, अक, प। सुह्यति। सुह्येत्। सुह्यतु। असुह्यत्। असोहीत्। सुषोह। सुषोहिथ। सोहिता। सुह्यात्। सोहिष्यति। असोहिष्यत्। सुसुहिषति; सुसोहिषति। सोषुह्यते। सोषुहीति, सोषोढ़ि। सोहयति। असूषुहत्। सुहित्वा, सोहित्वा। फलानां सुहितः—'पूरणगुणे'ति षष्ठीसमासनिषेधः। सौहित्यं तृप्तिः—भावे यण्। अत्र षहपाठे सह्यति सह्यत इत्यादि।

२०। जॄष, झॄष, वयोहानौ। ( To grow old )

जॄ, झॄ, (ष) सेट्, अकं, प। जीर्य्यति, जीर्य्यतः, जीर्य्यन्ति। जीर्य्येत्। जीर्य्यतु। अजीर्य्यत्। लुङ्—अजरत्, अजारीत्; अजरताम्, अजारिष्टाम्; अजरन्, अजारिषुः। लिट्—जजार, जजरतुः, जजरुः। जजरिथ, जजरथुः, जजर। जजार, जजर; जजरिव। पक्षे—जेरतुः, जेरुः। जेरिथ, जेरथुः। जेर। जेरिव। जरिता, जरीता। जीर्य्यात्। जरिष्यति, जरीष्यति। अजरिष्यत्,अजरीष्यत्। जिजीर्षति, जिजरिषति, जिजरीषति। जेजीर्य्यते। जाजरीति, जाजर्त्ति। जरयति। अजीजरत्।

जीर्य्यन्, जीर्य्यन्ती; जरन्, जरती—जीर्य्यतेरतृन्। जरद्गवः—'पूर्वकाले'ति समासः। अजर्य्यम्—सङ्गते यत्। असङ्गते—अजरिता, कम्बलः। जरा—षिद्भ्यादङ्। जरसौ, जरे।

जरयतीति जारः—'जारजारौ कर्त्तरि णिलुक् च' इति कर्त्तरि घञि णिलुक्। झॄ—झीर्य्यति इत्यादि जीर्य्यतिवत्। झरः, निर्झरः—अप्। झर्झरः—औणादिकः इत्यात्रेयः,—वाद्यविशेषः। झर्झरवादनं शिल्पमस्य—झार्झरः, झार्झरिकः—अण्ठकौ।

## आत्मनेपदिनः।

२१। षूङ्, प्राणिप्रसवे। ( To bring forth as a child )

सू, (ङ) वेट्, सक, आ। लट्—सूयते, सूयेते, सूयन्ते। सूयसे। सये, सूयावहे। लिङ्—सूयेत, सूयेयाताम्। सूयेथाः। सूयेय, सूयेवहि। लोट्—सूयताम्, सूयेताम्। सूयस्व। सूयै। लङ्—असूयत,असूयेताम्। असूयथाः। असूये,असूयावहि। लुङ्— असोष्ट, असोषाताम्, असोषत। असोष्ठाः। असोषि। असविष्टेत्यादि पूर्ववदिङ्विकल्पः। लिट्—सुषुवे। सुषुविषे। सुषुविवहे। सोता, सविता। सोषीष्ट, सविषीष्ट; सोषीयास्ताम्, सविषीयास्ताम्। सोष्यते, सविष्यते। असोष्यत, असविष्यत। सुसूषते। सोषूयते। सोषवीति, सोषोति। सूत्वा। सूनः, सूनवान्—'स्वादय ओदितः' इत्योदित्त्वात् 'ओदितश्च' इति निष्ठानत्वम्। अत्र प्राणिग्रहणमतन्त्रम्; तेन प्रसूनास्तरव इति भवति।

२२। दूङ्, परितापे ( To suffer pain )

परितापः—खेदः। दू (ङ) सेट्, अक, आ। दूयते इत्यादि सूयतेवत् इट्त्वस्य नित्यः। दुदुवे। दविता। दविष्यते। अदविष्ट। क्त—दूनः। क्ति—दूतिः। "न दूये सात्वतीसूनुर्यन्मह्यमपराध्यति।"

२३। दीङ्, क्षये। ( To perish )

दी, ( ङ ) अनिट्, अक, आ। दीयते, दीयेते। दीयेत।

दयेथाः । दीयेय । दीयताम्, दीयेताम् । दीयस्व । दीयै । अदीयत, अदीयेताम्, अदीयथाः । अदीये । लुङ्—अदास्त, अदासाताम्, अदासत । अदास्थाः । अदासि । लिट्—दिदीये, दिदीयाते, दिदीयिरे । दिदीयिषे, दिदीयिढ्वे, दिदीयिध्वे । दिदीये, दिदीयिवहे । दाता । दासीष्ट । दास्यते । अदास्यत । उपदिदीषते । कातन्त्रसंक्षिप्तसारादौ – उपदिदासते * । देदीयते । देदेति, देदीतः, देध्यति । दापयति । अदीदपत् । दीत्वा । दीनः । दीनवान् । उपदाय । दातुम् ।

२४ । डीङ्, विहायसा गतौ । ( To fly )

डी, ( ङ ) सेट्, अक, आ । डीयते, डीयेते, डीयन्ते । डीयेत । डीयताम् । अडीयत । अडयिष्ट, अडयिषाताम्, अडयिषत । डिड्ये । डयिता । डयिषीष्ट । डयिष्यते । अडयिष्यत । डिडयिषते । डेडीयते । डेडेति । डाययति । अडीडयत् । डयित्वा । डीनः, डीनवान् । श्वादिषु पाठसामर्थ्यादनिट्त्वम् ।

२५ । धीङ्, आदाने [ आधारे ] । ( To hold )

धी, ( ङ ) अनिट्, सक, आ । धीयते । धीयेत । धीयताम् । अधीयत । अधेष्ट । दिध्ये । दिध्यिषे । धेता । धेषीष्ट । धेष्यते । अधेष्यत । दिधीषते । धीत्वा धीनः, धीनवान् । न धीनः—अधीनः ।

२६ । मीङ्, हिंसायाम् । ( To lessen, to die )

मी, ( ङ ) अनिट्, सक, आ । मीयते इत्यादि धीङ्वत् ।

---

* स्वामी तु उपदिदासते उपदिदीषते इति विकल्पेनात्वमिच्छति । काश्यपस्तु आत्वपक्षे दिदासते इत्येक इत्युक्ता संयह इत्त्वव्यतिरिक्तस्य घुकार्यस्योक्तत्वात् । इत्त्वभावे उपदित्सत इत्यप्याह । इदमात्वं सूत्रवार्त्तिकभाष्येषु न दृश्यते ।

सनि—मिल्सते। माधवीयधातुवृत्तौ तु मिमीषत इति प्रदर्शितम्। * निष्ठा—मीनः। तुम्—मेतुम्।

२७। रीङ् स्रवणे। ( To ooze )

री, ( ङ ) अनिट्, सक, आ। रीयते। रीयेत। रीयताम्। अरीयत। अरेष्ट। रिर्य्ये। रिर्यिषे। रेता। रेषीष्ट। रेष्यते। अरेष्यत। रिरीषते। रेरीयते। रेरयीति। रेरेति। रेपयति। अरीरिपत्। रीणः, रीणवान्। रीत्वा। रीतिः—क्तिन्। रेतः—'स्रुरीभ्यां तुट् च' इत्यसुनि तुड़ागमः।

२८। लीङ् श्लेषणे। ( To adhere )

ली, ( ङ ) अनिट्, सक, आ। लीयते। लीयेत। लीयताम्। अलीयत। अलेष्ट, अलास्त। लिल्ये। लिल्यिषे। लाता, लेता। लासीष्ट, लेषीष्ट। लास्यते, लेष्यते। अलास्यत, अलेष्यत। लिलीषते। लेलीयते। लेलेति। विलालयति, घृतम्। विलापयति, विलीनयति, विलाययति—'चिण्भावकर्म्मणो' रिति चिण्वत्वे लुक्; पुकोरनात्वे लुकि तदभावे च ण्यन्ते—अलालि, अलापि, अलीनि, अलायि इति चातूरूप्यम्। कर्मकर्त्तरि—'णिश्रन्थिग्रन्थी'ति चिणो निषेधाच्चङि द्विर्वचनादावात्वपक्षे—अलीललत, अलीलपत; अन्यदा अलीलिनत, अलीलयत इति चातूरूप्यम्। एवं द्विवचनादावपि। जटाभिरालापयते, आलाययते इति वा—पूजामधिगच्छतीत्यर्थः। श्येनो वर्त्तिकामुल्लापयते—व्यक्करोतीत्यर्थः। 'लियः सम्माननशालिनीकरणयोश्च' इति चकारात् अकर्त्रभिप्रायेऽपि तङ्। लीत्वा। विलाय, विलीय—यप्। विलयः—अच्। ईषद्विलयः—खल्, 'मिमील्यां खलचोरात्वप्रतिषेध' इति। क्त—लीनः।

---

* अत्र माधवीया वृत्तिः—मिमीषते इत्यत्र 'सनि मीमे'ति न इस्भावः। तत्र मीनातिमिनोत्योर्द्वयोर्ग्रहणम्' इति हि वृत्तिकार इति।

२६ । मीङ्, हिंसायाम् । ( To perish, to die )

मी, ( ङ ) अनिट्, सक, आ । मीयते इत्यादि धीङ्वत् । सनि—मित्सते । माधवीयधातुवृत्तौ तु मिमीषत इति प्रदर्शितम् । *

२७ । रीङ्, स्रवणे । ( To ooze )

री, ( ङ् ) अनिट्, अक, आ । रीयते । रीयेत । रीयताम् । अरीयत । अरेष्ट । रिर्य्ये । रिर्यिषे । रेता । रेषीष्ट । रेष्यते । अरेष्यत । रिरीषते । रेरीयते । रेरेति । रेपयति । अरीरिपत् । रीणः, रीणवान् । रीतिः—क्तिन् । रेतः—'स्रुरीभ्यां तुट् च' इत्यसुनि तुड़ागमः ।

२८ । लीङ्, श्लेषणे । ( To adhere )

ली, ( ङ ) अनिट्, सक, आ । लीयते । लीयेत । लीयताम् । अलीयत । अलेष्ट, अलास्त । लिल्ये । लेल्यिषे । लाता, लेता । लासीष्ट, लेषीष्ट । लास्यते, लेष्यते । अलास्यत, अलेष्यत । लिलीषते । लेलीयते । लेलेति । विलालयति घृतम् । विलापयति, विलीनयति, विलाययति—'णिचभावकर्म्मणो'रिति चिण्वत्त्वे लुक्; पुकोरनात्वे लुकि तदभावे च वृद्धौ—अलालि, अलापि, अलीनि, अलायि इति चातूरूप्यम् । कर्म्मकर्त्तरि—'णिश्रन्थिग्रन्थी'ति चिणो निषेधाच्चङि द्विर्वचनादावात्वपक्षे—अलीललत, अलीलपत; अन्यदा अलीलनत, अलीलयत इति चातूरूप्यम् । एवं द्विवचनादावपि । जटाभिरालापयते, आलाययते इति वा—पूजामधिगच्छतीत्यर्थः । श्येनो वर्त्तिकामुल्लापयते—न्यक्करोतीत्यर्थः । 'लियः सम्मानन-

---

* अत्र माधवीया वृत्तिः—मिमीषते इत्यत्र 'सनि मीमे'ति न इस्भावः । तत्र मीनातिमिनोत्योर्द्वयोर्ग्रहणम् इति हि वृत्तिकार इति ।

शालिनीकरणयोश्च' इति चकारात् अकर्त्रभिप्रायेऽपि तङ्।
विलाय, विलीय—यप्। विलयः—अच्। ईषद्विलयः—खल्,
'निमिमील्यां खलचोरात्वप्रतिषेध' इति। क्त—लीनः।

२८। व्रीङ्, वृणोत्यर्थे। ( To choose )

दन्त्योष्ठ्यादिः। व्री, (ङ) अनिट्, सक, आ। व्रीयते।
विव्रिये। व्रेता इत्यादि रीवत्। 'षूङ् प्राणिप्रसवे' इत्यारभ्य
एतदन्ता ओदितः। तत्फलम्—निष्ठानत्वम्। व्रीणः, व्रीणवान्।

३०। पीङ्, पाने। ( To drink )

पी, (ङ) अनिट्, सक, आ। पीयते इत्यादि रीवत्।
पीत्वा। पीतः, पीतवान्। आपीय, निपीय। आपाय इति
पिबतेः।

३१। माङ्, माने। ( To measure )

मा, (ङ) अनिट्, सक, आ। मायते। मायेत। माय-
ताम्। अमायत। अमास्त, अमासाताम्, अमासत। ममे।
माता। मासीष्ट। मास्यते। अमास्यत। अन्यस्मिन् माति-
वत्। मातीति परस्मैपदी भ्वादौ गत्तः।

३२। ईङ्, गतौ। ( To go )

ई, (ङ) अनिट्, सक, आ। ईयते। ईयेत। ईयताम्।
ऐत। ऐष्ट। अयाञ्चक्रे। एता। एषीष्ट। एष्यते। ऐष्यत।
ईषिषते। अध्ययति। आयियत्। प्रेय, प्रतीय—ल्यप्। उपे-
यम्—'अचो यत्'।

३३। प्रीङ्, प्रीतौ। ( To please )

प्री, (ङ) अनिट्, अक, आ। प्रीयते इत्यादि व्रीवत्।
प्राययतीत्यत्र 'धूञ्प्रीणात्यो'रिति निर्देशान्न नकारागमः।
प्रियः—कः। प्रेष्ठः, प्रेयान्, प्रेमा—'प्रियस्थिर' इत्यादिना

प्रादेशः प्रियमाचष्टे—प्रापयति। अयं तपंथे क्र्यादौ चुरादौ च। ङानुबन्धात् आत्मनेपदम्।

## परस्मैपदिनः।

### ३४। शो, तनूकरणे। ( To whet )

शो, अनिट्, सक, प। श्यति, श्यतः, श्यन्ति। श्यसि। श्यामि, श्यावः। श्येत्, श्येताम्, श्येयुः। श्येः। श्येयम्। श्यतु, श्यतात्; श्यताम्, श्यन्तु। श्य, श्यतात्। श्यानि। अश्यत्। अश्यः। अश्यम्। लुङ्—अशात्, अशाताम्, अशुः। अशाः। अशाम्, अशाव। वा सिच्लोपः,—अशासीत्, अशासिष्टाम्, अशासिषुः। अशासीः। अशासिषम्, अशासिष्व। लिट्—शशौ, शशतुः, शशुः। शशाथ, शशिथ; शशथुः, शश। शशौ, शशिव। शाता। शायात्। शास्यति। अशास्यत्। शिशासति। शाशायते। शाशेति। शाययति। अशीशयत्। शित्वा, प्रशाय। निशातिः। निशितिः। निशातः। निशितः। व्रते नित्यसिच्व'—संशितो ब्राह्मणः। संशितं व्रतम्। शाकः—औणादिकः कन्। महच्छाकं नानाजातीयं,शाकसमाहारो वा। शाकी—गौरादित्वात् ङीष्। शाकिनः—मत्वर्थे नप्रत्यये ह्रस्वः। शादम्—'शाशपिभ्यां दन्' इति दन्। शाद्वलम्—वलच्। नि—निशानं, तेजनं "तमुद्यतनिशातासिं।" भट्टिः। ५।४६।

### ३५। छो, छेदने। ( To cut )

छो, अनिट्, सक, प। छ्यति। लिट्—चच्छौ, चच्छतुः। चच्छाथ, चच्छिथ। अच्छात्। अच्छासीत्। छाययति। अवच्छितम्, अवच्छातम्। अवच्छितिः। अवच्छातिः। सर्वत्र शोतिवत्। छाया—यः। इक्षूणां छाया—इक्षुच्छायम्। इक्षोश्छाया—इक्षुच्छायः, इक्षुच्छायः।

३५ क। षो, अन्तकर्म्मणि। ( To put an end to )

अन्तकर्म्म विनाशनम्। सो, अनिट्, सक, प। स्यति। ससौ। असात्, असासीत्; असाताम्, असासिष्टाम् इत्यादि शयतिवत्। आशी:—सेयात्। अभि—अभिष्यति। अभिष्यतु। अभिष्येत्। अभ्यष्यत्। अभ्यषात्, अभ्यषासीत्। अभिसिषासति, 'उपसर्गात् सुनोती'त्यादिना 'प्राक्सितात्' इत्यादिना च षत्वम्। अभिससावित्यत्र 'स्थादिष्वभ्यासे न' इति नियमात् अभ्यासस्य न षत्वम्। प्रणिष्यति, प्रण्यष्यत् इत्यादौ 'नेर्गदे' त्यादिना णत्वम्। कर्म्मणि—सीयते। असायि। क्त्—सित्वा। प्रसाय। सित:। सितवान्। अवसिति:। अव—अवसानम्, समाप्ति:। "अवसेया: कार्य्याणि धर्म्मेण पुरवासिनाम्।" भट्टि:—१८।२८। "आर्य्ये ! यदि नेपथ्यविधानमवसितम्" शकु—१म। अध्यव—अध्यवसाय:। पर्य्यव—पर्य्यवसानम्। परिणाम:। प्रत्यव—प्रत्यवसानम्, भोजनम्। अवस्यतीति—अवसाय:, ण:। साय:—घञ्। साये भव:—सायन्तन:,मान्तत्वञ्च सायशब्दस्य। साति:—'जतियूती'त्यादिना निपातनात् क्तौ इत्वाभाव:।

३६। दो, अवखण्डने। ( To cut )

दो, अनिट्, सक, प। द्यति इत्यादि शयतिवत्। लुङ्—अदात्। आशी:—देयात्। प्रणिद्यति—'नेर्गदे'त्यादिना णत्वम्। दित्सति। दापयति। कर्म्मणि—दीयते। अदायि। दाता, दायिता। दास्यते, दायिष्यते। दायिषीष्ट, दासीष्ट। क्त्—दित्वा, दित:,दितवान्। दिति:—'द्यतिस्यती'त्वम्। अवदाय—यप 'न ल्यपि' इतीत्वनिषेध:।

## आत्मनेपदिनः।

### ३७। जनी, प्रादुर्भावे। ( To be born )

प्रादुर्भावो ह्युत्पत्तिः *। जन् ( ई ) सेट्, अक, आ। लट्—जायते, † जायेते, जायन्ते। जायसे, जायेथे, जायध्वे। जाये, जायावहे, जायामहे। लोट्—जायताम्, जायेताम्। जायन्ताम्। जायस्व, जायेथाम्, जायध्वम्। जायै, जायावहै, जायामहै। लिङ्—जायेत, जायेयाताम्, जायेरन्। जायेथाः, जायेयाथाम्, जायेध्वम्। जायेय,जायेवहि, जायेमहि। लङ्—अजायत। अजायेताम्, अजायन्त। अजायथाः, अजायेथाम्, अजायध्वम्। अजाये, अजायावहि, अजायामहि।

लुङ्—अजनि, अजनिष्ट; अजनिषाताम्, अजनिषत। अजनिष्ठाः, अजनिषाथाम्, अजनिध्वम्[ढ्वम्]। अजनिषि, अजनिष्वहि, अजनिष्महि। लिट्—जज्ञे, जज्ञाते, जज्ञिरे। जज्ञिषे, जज्ञाथे, जज्ञिध्वे। जज्ञे, जज्ञिवहे,जज्ञिमहे। लुट्—जनिता। ऌट्—जनिष्यते, जनिष्येते, जनिष्यन्ते। आशीः—जनिषीष्ट। ऌङ्—अजनिष्यत।

भावे—जायते, जन्यते। जायताम्, जन्यताम्। जायेत, जन्येत। अजायत, अजन्यत, अजनि। सनादौ—जिजनिषते। जाजायते। जंजन्यते, जंजनीति, जंजन्ति। जनयति, अजीजनत्—'बुधजने'ति कर्त्रभिप्रायेऽपि। क्रियाफले परस्मैपदम्।

---

* प्रादुर्भाव उत्पत्तिरभिव्यक्तिर्वा, अनायमकर्म्मकः। यदा अन्तर्भावितणर्थं उत्पादनायामभिव्यञ्जनायां वा वर्त्तते, तदा सकर्म्मकः। दृश्यते च प्रयोगः—"अग्राह्यमेऽजनिष्ट गर्भम्।" तथा "अचः कर्त्तृयकि" इत्यत्र भाष्यमपि "जायते स्वयमेव" इति। अत्र ह्यन्तर्भावितणर्थत्वेन कर्म्मस्वभावकत्वात् कर्म्मकर्त्तृत्वम्।

† शृङ्गाच्छरो जायते—"जनिकर्त्तुः प्रकृति"रिति शृङ्गमपादानम्।

जनयामास इत्यादि। ण्यन्तात् कर्म्मणि—जन्यते, जन्येते, जन्यन्ते इत्यादि। लुङ्—अजानि, अजनि।

अनुपूर्वो जनधातुर्यदा आत्मजन्मपूर्वके प्रापणे वर्त्तते, तदा सकर्म्मकः—कन्या पुत्रमनुजायते, कन्यया पुत्रोऽनुजायते, अनुजन्यते वा। अन्तर्भावितण्यर्थादस्मात् कर्म्मकर्त्तरि कर्म्मवद्भावात् नित्यश्चिण्—अजनि स्वयमेवेति।

क्तत्—जन्यः घटः, जन्यं घटेन—कर्त्तृभावयोर्यत्। जायत इति—जनः, पदाद्यच्। जननं—जनः, घञ्। जनानां समूहः—जनता, 'ग्रामजनबन्धुसहायेभ्यस्तल्' इति तल्। जनस्य जल्पो जन्यः—'सतजने'ति जल्पार्थे यत्। जनेषु साधुः, जनं जनं प्रति वा—प्रतिजनं, सप्तम्यर्थे वीप्सायां वा अव्ययीभावः। प्रातिजनीनः—खञ्। विश्वजनाय हितम्—विश्वजनीनम्, 'आत्मविश्वजने'ति खः। पञ्चजनीनम्—'पञ्चजनादुपसंख्यान'मिति खः। सार्वजनिकः, सर्वजनीनः—ठञ्खौ। त्रय एते कर्मधारयादेविष्यन्ते, षष्ठीतत्पुरुषे बहुव्रीहौ च 'तस्मै हितम्' इति छो भवति—विश्वजनीयः, सर्वजनीय इति। महाजनाय हितम्—महाजनिकम् 'महाजनान्नित्यं' ठञ् वक्तव्य' इति ठञ्। अयं तत्पुरुषादेविष्यते, बहुव्रीहौ तु महाजनीय इति। पञ्चजनेषु भवं—पाञ्चजन्यम्। प्रावृषिजः—डः। एवं शरदिजः—सप्तम्या अलुक्। वर्षेजः, वर्षजः, चारेजः, चारजः; शरेजः, शरजः, वरेजः, वरजः—सप्तम्या लुग्वा। बुद्धेर्जातः बुद्धिजः 'पञ्चम्यामजातौ' इति डः। प्रजा—'उपसर्गे च संज्ञायाम्' इति डः। अप्रजाः, दुष्प्रजाः, सुप्रजाः—नञ्सुदुर्भ्यो बहुव्रीहौ नित्यमसिच्। स्त्रियमनुजातः—स्त्र्यनुजः। न जायते—अजः। द्विर्जायते—द्विजः। अभिजाः—केशाः। ब्राह्मणजः—धर्म्मः इत्यादिष्व'न्यष्वपी'ति डः। बीजम्—पूर्ववत् डः, दीर्घश्च।

बीजाकरोतीत्यादि—डाच् । जनुः—उस् । जन्म—मनिन् । जन्तुः—तुः । जानुः ञुण् । पुंसानुजः, जनुषान्धः—तृतीयाया अलुक् । प्रगता जानुर्यस्य—प्रज्ञुः, सङ्गता जानुर्यस्य—संज्ञुः—'प्रसंभ्यां जानुनोर्ज्ञु'रिति ज्ञुः, समासान्तो बहुव्रीहौ । ऊर्द्ध्वज्ञुः ऊर्द्ध्वजानुः—ऊर्द्ध्वाद्विभाषा' इति ज्ञुविकल्पः । जाया—'जनेर्यक्' इति यक् । युवजानिः—'जायाया निङ्' इति बहुव्रीहौ निङादेशोऽन्त्यस्य समासान्तः । प्रजनिष्णुः—इष्णुच् । अनुजातः कन्याम्, अनुजाता कन्या—'गत्यर्थे'ति कर्त्तृकर्म्मणोः क्तः । जग्धिः—क्तिः । जनिः—'जनिघसिभ्यामिण्' इतीण् । कृदिकारादित्वात् ङीपि—जनी । तां वहन्तीति—जन्याः, जामातुर्वयस्याः संज्ञायां यत् । जनित्वा । जातः । जातिः । जननम् । जनिता, जनित्री । जनकः । णिच्—जनयिता, (औ) जनयितारौ । जनयित्री । जनयितव्यः । जनितः । जिजनयिषति । जिजनयिषुः । जिजनयिषा ।

२८ । दीपी, दीप्तौ । (To shine)

दीप, (ई) सेट्, अक, आ । दीप्यते । दीप्येत । दीप्यताम् । अदीप्यत । अदीपि, अदीपिष्ट ; अदीपिषाताम्, अदीपिषत । दिदीपे । दीपिता । दीपिषीष्ट । दीपिष्यते । अदीपिष्यत । दिदीपिषते । देदीप्यते । देदीप्ति । दीपयति । अदीदिपत्, अदिदीपत् । दीपः—कः । दीपिता—तृन् । दीप्रः—रः । दीप्तिः—क्तिन् । (ई) दीप्तः, दीप्तवान् । ईदित्त्वादनिट्त्वम् । दीपनम् । दीपकः । दीपिका । प्रदीपः । उद्—उद्दीपनम्, प्रकाशनम् । उद्दीपना । सम्—सन्दीपनम् । प्र—प्रदीपः ।

२९ । पूरी, आप्यायने । (To fill)

आप्यायनं—प्रीणनम् । पूरणं—वर्द्धनम् । पूर्, (ई) सेट्, सक, आ । पूर्य्यते इत्यादि दीपिवत् । पुपूरे, पुपूराते । पुप-

रिषे। पूरिता। अपरि, अपूरिष्ट। अपूपुरत्—'णौ चङि नित्यं ह्रस्वः। पूरः—कः। जङ्घ पूरं पूर्य्यते—'जङ्घे श्रुषिपूरोः' इति णमुल्, कषादित्वादयथाविध्यनुप्रयोगः। जङ्घः सन् पूर्य्यत इत्यर्थः। पूरयित्वा। प्रपूर्य्य। पूर्णः, पूर्णवान्। पूर्त्तिः क्तिन्। पूर्णिः—औणादिकः। पूरितव्यः। पूर्य्यः। परणीयः; पर्णिं मिमीत इति—पूर्णिमा, मूलविभुजादित्वात् कः। चर्म्मपूरं स्तृणोति,उदरपूरं भुङ्क्ते—'चर्म्मोदरयोः पूरे'रिति णमुल्। गोष्पदपूरं, गोष्पदप्रं वा वृष्टो देवः—'वर्षप्रमाणे ऊलोपश्चान्तरस्याम्' इति पूरतेर्णमुल्,ऊकारलोपश्च विकल्पेन। पूर्णः—'वा दान्तशान्तपूर्णे'ति क्ते णिलुगिड़भावौ पक्षे निपात्येते। अन्यदा—'निष्ठायां सेटि' इति णिलोपे पूरितः। पूरयतीति—पूरणः, कर्त्तरि ल्युट्। पूरः—बहुवचनात्प्रत्ययः।

४०। तूरी, गति-त्वरण-हिंसनयोः।
(To go quickly, to make haste, to kill)

तूर् (ई) सेट्, सक, आ। तूर्य्यते। तूर्य्येत। तूर्य्यताम्। अतूर्य्यत। अतूरिष्ट, अतूरिषाताम्, अतूरिषत। तुतूरे। तूरिता। तूरिषीष्ट। तूरिष्यते। अतूरिष्यत। तुतूरिषते। तोतूर्य्यते। तोतूर्त्ति। तूरयति। अतूतुरत। (ई)निष्ठा—तूर्णः। भावे—तूर्णम्। "सत्वरं चपलं तूर्णमविलम्बितमाशु च" इत्यमरः। तूर्णवान्। तूर्त्तिः। तूर्णिः—औणादिकः। तूर्य्यम्—ण्यत्।

४१। धूरी, गूरी, हिंसागत्योः (To kill, to go)

४२। जूरी, ज्वूरी, हिंसावयोहान्योः। (To kill, to grow old)

४३। शूरी, हिंसास्तम्भनयोः। (To kill, to hurt)

४४। चूरी, दाहे। (To burn)

सर्वे ईदनुबन्धाः, सेटः, सकर्म्मकाः; वयोहान्यर्थे घूरी जूरी द्वावकर्म्मकौ। धूर्—धूर्य्यते। गूर्—गूर्य्यते। जूर्—

जूर्य्यते। शूर्—शूर्य्यते। चूर् चूर्य्यते। अन्यत् सर्वं तूरीवत्। जन्यादय ईदित्त्वान्निष्ठायामनिटः।

४५। तप, ऐश्वर्य्ये वा। ( To rule )

अयं धातुरैश्वर्य्ये वा तङ्श्यनौ उत्पादयतीत्यर्थः। अन्यत्र नणाद्यविकरणः परस्मैपदी च—तपतीति। * तप्, अनिट्, अक, आ। तप्यते। तप्येत। तप्यताम्। लङ्—अतप्यत। लुङ्—अतप्त, अतप्साताम्, अतप्सत। अतप्थाः, अतप्साथाम्, अतब्ध्वम्। अतप्सि, अतप्स्वहि, अतप्स्महि। लिट्—तेपे, तेपाते, तेपिरे। तेपिषे, तेपाथे, तेपिध्वे। तेपे, तेपिवहे। तप्ता। तप्सीष्ट। तप्स्यते। अतप्स्यत। तितप्सते। तातप्यते। तातप्ति। तापयति। अतीतपत्। अत्र एत इति केचित् पठन्ति। तथाच निरुक्ते "इरज्यति पत्यते क्षयति राजतीति चत्वार ऐश्वर्य्यकर्माणि" इति। परिशुद्धेऽपि "द्युतद्यामा नियुतः पत्यमान" इति। माधवोऽपि स्वीकरोतीदमिति। तप्त्वा।—तप्य। तप्तः। तप्तवान्। तपनः—युच्। तपतीति सन्तापे भ्वादौ।

२६। वृतु, [ वा वृतु ] वरणे। (To choose )

वृत् ( उ ) सेट्, सक, आ। वृत्यते। वृत्येत। वृत्यताम्। अवृत्यत। अवर्त्तिष्ट। ववृते। वर्त्तिता। वर्त्तिषीष्ट। वर्त्तिष्यते। अवर्त्तिष्यत। विवर्त्तिषते। वरीवृत्यते। वर्वृतीति, वरी (रि) वृतीति, वर्वर्त्ति। वर्त्तयति। अवीवृतत्, अववर्त्तत्। ( उ ) वृत्त्वा, वर्त्तित्वा। वृत्तः। वृत्यम्—क्यप्। इणुज् विधौ वृधुना साहचर्य्यात् वर्त्तनार्थस्य भौवादिकस्य ग्रहणम्।

---

* केचिदिह वाग्रहणं वक्ष्यमाणस्य वृतु वरणे इत्यस्य आद्यांशमिच्छन्ति—वा वृतु वरणे इति। तथाच भट्टिः—"ततो वावृत्यमाना सा रामशालां न्यविक्षत" इति 'तपिं तिपिं'मिति अनिट्कारिका, न्यासे तु तप सन्तापे तप ऐश्वर्य्ये वा इत्येवं पठतोऽस्यापि वाशब्दः तप्यतेः शेषोऽभिमतः।

४७। क्लिश, उपतापे। ( To be afflicted )

क्लिश्, सेट्, सक,आ। क्लिश्यते। क्लिश्येत। क्लिश्यताम्। अक्लिश्यत। अक्लेशिष्ट। चिक्लिशे। क्लेशिता। क्लेशिषीष्ट। क्लेशिष्यते। अक्लेशिष्यत। चिक्लिशिषते, चिक्लेशिषते। चेक्लिश्यते। चेक्लिष्टि२। क्लेशयति। अचिक्लिशत्। क्लिष्ट्वा,क्लिशित्वा। क्लिष्टः, क्लिशितः। क्लेश। क्लिशू विबाधने इति क्र्यादौ।

४८। काशृ, दीप्तौ। ( To shine )

काश्, (ऋ) सेट्,अक, आ। काश्यते। काश्येत। काश्यताम्। अकाश्यत इत्यादि। शेषं भौवादिकवत्।

४९। वाशृ, शब्दे। ( To sound )

वाश, ( ऋ ) सेट्, अक, आ। वाश्यते। वाश्येत। वाश्यताम्। अवाश्यत। अवाशिष्ट। ववाशे। वाशिता। वाशिषीष्ट। वाशिष्यते। अवाशिष्यत। विवाशिषते। वावाश्यते। वावाष्टि। वाशयति। अववाशत्। वाश्रः—पुरुषः, स्त्र्-वाशिरा—किरच्। जन्यादयः उदात्ता अनुदात्तेतः। तपिरेकोऽनिट्।

## उभयपदिनः।

५०। मृष, तितिक्षायाम्। (To forgive )

मृष, सेट्, सक, उ। आत्मने—मृष्यते। मृष्येत। मृष्यताम्। अमृष्यत। लुङ्—अमर्षिष्ट, अमर्षिषाताम्,अमर्षिषत। मम्रुषे। मम्रृषिषे। मम्रृषिवहे। मर्षिता। मर्षिषीष्ट। मर्षिष्यते। अमर्षिष्यत। परस्मै—मृष्यति। मृष्येत्। मृष्यतु। अमृष्यत्। लुङ्—अमृषत्, अमृषताम्, अमृषन्। ममर्ष। ममर्षिथ। मर्षिता। मृष्यात्। मर्षिष्यति। अमर्षिष्यत्। परिमृष्यति—'परेर्मृष' इति क्रियाफलस्य कर्त्तृगामित्वेऽपि परस्मैपदम्।

मिमर्षिषते,मिमर्षिषति। मरीमृष्यते। मरीमृषति,मर्मृषीति, मर्मर्ष्टि, मरीमर्ष्टि। मर्षयति। अममर्षत, अमीमर्षत्। मर्षित्वा। प्रमृष्य। मर्षितः। मर्षितवान्। तितिक्षाया अन्यत्र —अपमृषितं वाक्यमाह, अविस्पष्टमित्यर्थः। दुर्मर्षणः—युच्।

५१। ई शुचिर्, पूतीभावे। ( To wet )

शुच् ( ई, इर् ) सेट्, अक, उ। शुच्यते। शुच्येत। शुच्यताम्। अशुच्यत। अशोचिष्ट। शुशुचे। शोचिता। शोचिषीष्ट। शोचिष्यते। अशोचिष्यत। शुच्यति इत्यादि पूर्ववत्। लुङ्-दि (इर्)—अशोचीत्, अशुचत्। सनादौ—शुशुचिषते ; शोशुचिषते, शुशुचिषति, शुशोचिषति। शोशुच्यते। शोशोक्ति। शोचयति। अशूशुचत्। शुचित्वा। शुक्तम्—रसान्तरं गतमित्यर्थः। शुक्तिः। शुक्तिका—संज्ञायां कन्।

५२। णह, बन्धने। ( To tie )

नह्, अनिट्, सक, उ। आत्मने—प्रणह्यते 'उपसर्गात्—' इत्यादिना णत्वम्। पिनह्यते, अपिनह्यते—'वष्टि भागुरि'-रित्यादिना अलोपः। नह्येत। नह्यताम्। अनह्यत। लुङ्—अनद्ध, अनत्सातास्, अनत्सत। अनद्धाः। अनत्सि। नेहे। नद्धा। नत्सीष्ट। नत्स्यते। अनत्स्यत। परस्मै—नह्यति। नह्येत्। नह्यतु। अनह्यत्। लुङ्—अनात्सीत्, अनाद्धाम्, अनात्सुः। लिट्—ननाह, नेहतुः, नेहुः। नेहिथ, ननद्ध। ननाह, ननह ; नेहिव। नद्धा। नह्यात्। नत्स्यति। अनत्स्यत्। सनादौ—निनत्सते,निनत्सति। नानह्यते। नानद्धि। नाहयति। अनीनहत्।

क्त—नद्धी, ष्ट्रन्, ङीष्। उप-नह्यते: क्विप्—उपानत्, पादुका, शिल्पविशेषश्च। उपानहः—मुञ्चः 'ऋषभोपानहोर्ञ्यः' इति ञ्यः। नाभिः—'नहेर्भ च' इतीञ्‌प्रत्ययः, हस्य च भः।

नाभौ भवं, नाभये हितं वा—नाभ्यं, यत्। रथावयववाचि-नाभिशब्दात् यति नभादेशे नभ्यः—अक्षः,नभ्यम् अञ्जनमिति। पद्मनाभः—समासान्तोऽच्। नद्धा। नद्धः। नद्धवान्। नद्धव्यः। नाहः। अपिनद्धः, पिनद्धः।

५२। रन्ज्, रागे। (To dye)

रन्ज्, अनिट्, अक, उ। रज्यते,रज्यति। ररञ्ज इत्यादि शेषं भौवादिकवत्।

५३। शप, आक्रोशे। (To curse)

शप्, अनिट्, सक, उ। शप्यते, शप्यतीत्यादि। शेषं भौवादिकवत्।

## आत्मनेपदिनः।

५५। पद, गतौ। (To go)

पद्, अनिट्,सक, आ। पद्यते। पद्येत। पद्यताम्। अपद्यत। अपादि, अपत्साताम्, अपत्सत। अपत्थाः। अपत्सि। अपत्स्वहि। पेदे,पेदाते, पेदिरे। पेदिषे, पेदिध्वे। पेदिवहे। पत्ता। पत्सीष्ट। पत्स्यते। अपत्स्यत। पित्सते। पनीपद्यते। पनीपत्ति। पादयति। अपीपदत्।

पदनः—युच्। पादुकः—उकञ्। पाद्यत इति—पादः, घञ्। पादाभ्यां चरतीति पदिकः—ष्ठन्। पदिकी—षित्वात् स्त्रियामीष्। पाद्यम्—पादार्थमुदकम्, यत्। पादाय हितं, तत्र भवं वा—पद्यं, यत्, पद्भावश्च। द्वाभ्यां पादाभ्यां क्रीतं—द्विपाद्यं 'पण्पादे'ति यत्। व्याघ्रस्येव पादावस्य—व्याघ्रपात्, पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्य' इति अन्त्यलोपः समासान्तः। व्याघ्रपदोऽपत्यम्—वैयाघ्रपद्यः, गर्गादित्वाद्यञ्। पदाजिः पदातिः, पदगः, पदोपहतः—'पादस्य पदाज्यातिगोपहतेषु

इति पदादेशः। पद्धिमम्, पत्काषो, पद्गतिः—'हिम-काषि-हतिषु च' इति पद्भावः। चकारान्निष्के च—पन्निष्कः। पाद-घोषः, पद्घोषः; पादमिश्रः, पन्मिश्रः; पादशब्दः, पच्छब्दः—'वा घोषमिश्रशब्देषु' इति वा पद्भावः। सम्पत्—सम्पदादित्वात् क्विप्। क्तिन्नपि—सम्पत्तिः पद्गः—करणादौ घः। पदान्य-धीते वेद वा—पदकः 'क्रमादिभ्यो वुन्'। पूर्वपदिकः—इकन्। अनुपदं धावति—आनुपदिकः, ठक्। पूर्वपदं गृह्णातीति—पौर्वपदिकः ठक्। पादस्याग्रं—प्रपदम्। आप्रप-दात् इत्यव्ययीभावः—आप्रपदं, तत्प्राप्नोति—आप्रपदीनः, खः। अनुपदीना—उपानत्, बद्धेत्यर्थे खः। सप्तभिः पदैरवाप्यते—साप्तपदीनम्, सख्यम्, निपातः। पादूः—'णिक्सिपद्यते'रित्यू-कारप्रत्यये णित्वाद्वृद्धिः। पादुका—संज्ञायां कनि ह्रस्वः। पद्मम् 'अर्त्तिस्तु' इत्यादिना मन्। पद्मिनी—'पुष्करादिभ्यो देशे' इति मत्वर्थीय इनिः। पद्मवती—पद्मा, 'अर्श-आदिभ्योऽच्' इति मत्वर्थेऽच्, टाप्। संज्ञायां पद्मावती। पूर्वे प्रष्ठपदे, पूर्वाः प्रोष्ठ-पदाः—नक्षत्रद्वित्वे वा बहुवचनम्। गेहानुप्रपादमास्ते, गेहं गेहमनुप्रपादमास्ते, गेहमनुप्रपादमनुप्रपादमास्ते। आभीक्ष्ण्ये क्त्वापि—गेहमनुप्रपद्य अनुप्रपद्य आस्ते। णिनिः—सम्पादी। सम्पाद्यम्—भावकर्मणोः ष्यञ्। अनुपदमन्वेष्टा—अनुपदी, गवाम्, इनि निपातः। एनीपदः, अजपदः, प्रोष्ठपदः—बहु-व्रीहौ अच् पद्भावश्च निपात्यते।

पत्त्वा। पत्तिः। पदनम्। पन्नः। आपन्नः। पन्नवान्। पत्तव्यः। पाद्यम्। पत्ता, पत्तारौ। णिच्—सम्पादनम्। णिच् क्त—सम्पादितः। ण्वुल्—सम्पादकः। पादना। पादितः। पादयितव्यम्। आ—आगमनम्, प्राप्तिः, आपद्, आपत्तिः—तर्कः। व्या—मृत्युः। उद्—उत्पत्तिः। व्युद्—व्युत्पत्तिः। उप—

उपयोगः, साधनम्, सङ्गतिः, सम्भावनम्। अभ्युप—अनुग्रहः। निर्—निष्पत्तिः। प्र—गतिः, प्राप्तिः, ज्ञानम्। प्रति—स्वीकारः प्राप्तिः, ज्ञानम्,सिद्धिः। प्रतिं—प्रतिपादनम्—ज्ञापनं,विश्वासः, सुख्यातिः। विपत्तिः—मरणम्। विप्रति—विप्रतिपत्तिः।

५६। खिद, दैन्ये। ( To be distressed )

खिद्, अनिट्,अक, आ। खिद्यते। खिद्येत। खिद्यताम्। अखिद्यत। अखित्त, अखित्साताम्, सत। चिखिदे। खेत्ता। खित्सीष्ट। खेत्स्यति। अखेत्स्यत। चिखित्सते। चेखिद्यते, चेखिदीति, चेखेत्ति। खेदयति।अचीखिदत्। खित्त्वा।खिन्नः, खिन्नवान्। खेदः। खेत्तव्यम्। खेद्यम्। खेदनीयम्।खिदिरम् 'इषिमदी'त्यादिना किरच्। अयं कथादौ च। परिघाते तुदादिः।

५७। विद, सत्तायाम्। ( To be )

विद्, अनिट्, सक, आ। विद्यते इत्यादि खिदिवत्। अदादौ विशेषो द्रष्टव्यः।

५८। बुध, अवगमने। ( To make known )

बुध्, अनिट्, सक,आ। बुध्यते। बुध्येत। बुध्यताम्। अबुध्यत। लुङ्—अबोधि, अबुद्ध ; अभुत्साताम्,अभुत्सत। अबुद्धाः अभुद्ध्वम्। अभुत्सि। बुबुधे। बुबुधिषे। बोद्धा। भुत्सीष्ट। भोत्स्यते। अभोत्स्यत। बुभुत्सते। बोधयति—'बुधयुधे'ति फलवति कर्त्तर्य्यपि परस्मैपदम्। अत्र बुधादीनां चतुर्णाम् अणावकर्म्मकात् इत्येव सिद्धे वचनमिदमचित्तवत्कर्त्तृकार्थमिति वृत्तौ। अबूबुधत्। बोबुध्यते। बोबोद्धि, बोबुधीति। क्त्—बुद्धा। बुद्धः। बुबुधानः—बोद्धुमिच्छुरित्यर्थः, आनच्, इत्वम्। बुधानः—आचार्य्यादिः 'युजिबुधिदृशः किच्च'इत्यानच्, कित्त्वादगुणत्वम्। भ्वादौ चायम्।

५८। युध, संप्रहारे। ( To fight )

युध्, अनिट्, अक, आ। युध्यते इत्यादि युधिवत्। लुङ्—अयुद्ध, अयुत्सातास्, अयुत्सत इत्यादि। सनादौ—युयुत्सते। योधयति। अयूयुधत्। योयुध्यते। योयुद्धि २। राजयुध्वा—राजानं योधितवान् इत्यर्थः, क्वनिप्—इहान्तर्भावितण्यर्थत्वेन सकर्म्मकत्वम्। सहयुध्वा—'सहे च' इति क्वनिप्। राजयुध्वा ब्राह्मणी, सहयुध्वा ब्राह्मणी—वनो न हश, इति ङीप्रेफयोर्निषेधः। योधः—अच्। यौधः—स्वार्थे अण्। अतएव पाठादिगुपधलक्षणं कं बाधित्वा अच्।आदाय युध्यते अनेन--आयुधम् 'घञर्थे कविधानम्' इति कः। आयुधेन जीवति—आयुधीयः, आयुधिकः—'आयुधाच्छ च' इति जीवत्यर्थे ठक्छौ। युद्वा। युद्धम्। योधनम्। योद्धा। स्त्री—योद्धारी। योद्धव्यम्। युयुधानः—बाहुलकादानचि द्वित्वम्; युध्मः—आहवः, योद्धा च 'इषियुधी'त्यादिना मक्। दुर्य्योधनः, सुयोधनः—खलर्थे युच्। युत्—क्विप्। युधमिच्छति—युध्यति, क्यच्। नियुद्धम्। बाहुयुद्धम्। युयुत्सुः—उः। युयुत्सा—अ। योधकः—ण्वुल्।

६०। अनो रुध, कामे। ( To desire )

अनुपूर्व्वकस्य रुधधातोः कामार्थे दिवादित्वमात्मनेपदित्वञ्च। रुध्, अनिट्, सक, आ। अनुरुध्यते इत्यादि पूर्व्ववत्। विरोधः, अनुरोधः—घञ्। रुध्यमानः—शानच्। आवरणे रुधादौ।

६१। अण, प्राणने। ( To breathe )

प्राणनमिह जीवनम्। अण्, सेट्, अक, आ। अण्यते। अण्येत। अण्यताम्। आण्यत। आणिष्ट। आणे। आणिता। अणिषीष्ट। अणिष्यते। आणिष्यत। अणिणिषते। आणयति। आणिणत्। माभवानणिणत्। दन्त्यान्तोऽयमिति दुर्गादयः।

## ६२। मन, ज्ञाने। * ( To think ).

मन्, अनिट्, सक, आ। मन्यते। मन्येत। मन्यताम्। अमन्यत। लुङ्—अमंस्त, अमंसाताम्, अमंसत। अमंस्थाः, अमंसाथाम्,अमंध्वम्। अमंसि। अमंस्वहि। लिट्-मेने,मेनाते, मेनिरे। मेनिषे, मेनिध्वे। मेने, मेनिवहे। मन्ता। मंसीष्ट। मंस्यते। अमंस्यत। मिमंसते। मानयति। अमीमनत्। मम्मन्यते। मम्मनीति। एहि मन्ये ओदनं भोच्यसे इति नहि भोच्यसे भुक्तः सोऽतिथिभिः, अत्र 'प्रहासे च मन्योपपदे मन्यतेरुत्तम एकवच्च' इति प्रहासे परिहासे गम्यमाने मन्योपपदे धातावुत्तमविषये मध्यमः,मन्यतेश्च मध्यमविषये उत्तमः। 'एकवच्च' इति वचनाद्द्विवह्वोरप्येकवचनमेव। दर्शनीयमानी भार्य्यायाः—'मन' इति कर्म्मण्युपपदे मन्यतेर्णिनिः। भार्य्याया इति कर्म्मणि षष्ठी। तत्सापेक्षस्यापि दर्शनीयशब्दस्य गमकत्वात् समासः। पण्डितमात्मानं मन्यते देवदत्तः—पण्डितमानी पण्डितम्मन्यः—णिनिः खश्च। मन्या—क्यप्,गलशिरा। अन्यत्र क्तिन्—मतिः। वैमत्यम्, विमतिमा ; साम्मत्यम्,साम्मतिमा—विमतेः। ष्यञिमनिचौ। दैमतं, साम्मतम्—अण्। त्वतलौ तु सर्वत्रैवेष्येते। राज्ञो मतः--वर्त्तमाने क्तः,कर्त्तरि षष्ठी। मत्यम् —यत्। मनः—असुन्। मन एव मानसं—प्रज्ञाद्यण्। असुमनाः सुमना भवति—सुमनायते इत्यादौ भृशादित्वात् क्यङ् सलोपौ। तत्र हि 'सुदुरभिभ्यः' परो मनःशब्दः पठ्यते। वैमनस्यम्,

---

* न त्वां तृणाय मन्ये, न त्वां तृणं मन्ये—'मन्यकर्म्मण्यनादरे विभाषाप्राणिषु' इति कर्म्मणि वा चतुर्थी। इह चानुवाद्ये कर्म्मणि व्यवस्थितविभाषाविज्ञानात् चतुर्थी न भवति। अप्राणिष्वित्यपास्य नौकाकान्नशुकशृगालवर्ज्जेष्विति वार्त्तिकं पठितम्, तेन त्वां नावं मन्ये, शृगालं मन्ये इत्यादौ चतुर्थी न। न त्वामन्नं मन्ये यावन्न भुक्तं श्राद्धम्।—इत्यत्राप्राणित्वेऽपि द्वितीयैव भवति। प्राणित्वेऽपि तथा न त्वां श्वानं मन्ये,न त्वां शुने मन्ये—इत्यत्रोभयं भवति।

विमनसिमा; साम्मनस्यम् सम्मनसिमा—ष्यञिमनिचौ। त्वतलौ चोदाहार्य्यौ। विमनीकरोति—'अरुर्मनश्चक्षु'रित्यादिना च्विः, सलोपश्च। मनसादेवो नाम कश्चित् 'मनसः संज्ञायाम्' इत्युत्तरपदे तृतीयाया अलुक्। मधुः—उः, धश्चान्तादेशः। मधुरः—मत्वर्थे रः। इह मधुशब्दो रसनाग्राह्ये माधुर्य्याख्यरसे वर्त्तते,—तेन मधु मधुरमित्यपि भवति। मनुः—उः। मनोः स्त्री—मनायी, मनावी, मनुः। मनोरन्तरं—मन्वन्तरम्। मनुष्यः, मानुषः—'मनोर्जातावञ्यतौ षुक् च' इति अञ्यतौ षुच् कचागमः। मानुषी—गौरादित्वात् ङीष्। मानुष्यकं—समूहे वुञ्। अपत्ये त्वणि मानवा इति। मनुष्या अप्यपत्यत्वारोपेण मानवा इत्युच्यन्ते। यदा तु मानवस्य कुत्सादि विवक्ष्यते तदा "अपत्ये कुत्सिते मूढे मनोरौत्सर्गिकः स्मृतः। नकारस्य च मूर्द्धन्यस्तेन सिध्यति माणवः" इति नकारस्य णत्वम्। माणव एव—माणवकः, सञ्ज्ञायां कन्। माणव्यं—समूहे यत्। माणवीनं—खञ्। मुनिः—'मनेरुच्चोपधाया' इतीन्प्रत्ययः, उपधायाश्चोकारः। मौनम्—भावेऽण्। मत्वा। मतम्। मननम्। मानः। मान्यः। मन्तुम्। मन्तव्यः। मननीयः। मन्ताः, मन्तारौ। अनु—अनुमतिः। सम्—सम्मतिः। वि—विमतिः।

६३। युज, समाधौ। (To concentrate)

युज्, अनिट्, अक, आ। युज्यते। अयुक्त, अयुक्षाताम्, अयुक्षत। युयुजे। युयुजिषे इत्यादि पूर्ववत्। प्रयुक्—क्विप योगी—घिनुण्। युक्तः। युक्तिः। युक्त्वा। प्रयुज्य।

६४। सृज, विसर्गे। * (To let loose)

सृज, अनिट्, अक, आ। सृज्यते। सृज्येत। सृज्यताम्। असृजत। असृष्ट, असृक्षाताम्, असृक्षत। असृष्ठाः। ससृजे।

* धातुरयमकर्म्मकः। प्रयुज्यते च "वृन्तस्थं हरति पुष्पमनोकहानां संसृज्यते

सस्रृजिषे। स्रष्टा। सृक्षीष्ट। स्रक्ष्यति। अस्रक्ष्यत। सिसृक्षते। सरीसृज्यते। सरीसर्ष्टि इत्यादि। सर्जयति। असीसृजत्, अससर्जत्। सर्गः। वि—विसर्गः। विसृष्टः। स्रष्टुम्।

६५। लिश, अल्पीभावे। ( To decrease )

अन्तस्थात्तृतीयादिस्तालव्यान्तोऽयम्। लिश्, अनिट्, अक, आ। लिश्यते। लिश्येत। लिश्यताम्। अलिश्यत। लुङ्—अलिक्षत। लिलिशे। लेष्टा। लिक्षीष्ट। लेक्ष्यते। अलेक्ष्यत। लिलिक्षते। लेलिश्यते। लेलेष्टि, लेलिशीति। लेशयति। अलीलिशत्। लिशा—बाहुलकात् कप्रत्ययः। लेशः—घञ्।

## परस्मैपदिनः।

६६। राधोऽकर्म्मकाद्‌वृद्धावेव। ( To grow ) *

राध्, अनिट्, अक, प। राध्यति। राध्येत्। राध्यतु। राध्य। अराध्यत्। लुङ्—अरात्सीत्, अराद्धाम्, अरात्सुः। अरात्सीः, अराद्धम्, अराद्ध। अरात्सम्। अराद्‌ध्व। रराध, रराधतुः, रराधुः। रराधिथ, रराधिव। § राद्धा। राध्यात्। रात्स्यति। अरात्स्यत्। रिरात्सति। राराध्यते। राराद्धि २। राधयति। अरीरधत्। देवदत्ताय राध्यति—देवदत्तस्य दैवं पर्य्यालोचय

---

सरसिजैररुणांशुभिन्नैः।" इति कर्म्मणि प्रयोगे तु प्रक्रमभङ्गः स्यात्। "स्वाभाविकं परगुणेन विभातवायुः सौरभ्यमीप्सुरिव ते मुखमारुतस्य"; इति च सङ्गच्छते। पाणिभ्यां सृज्यते पाणिसर्ग्येत्यादयस्तु सृजतेः कर्म्मणि। सृज्यते मालामिति कर्त्तरि।

* एवकारो भिन्नक्रमे। अस्मादकर्म्मकादेव श्यन्। वृद्धिग्रहणन्तु उदाहरणप्रदर्शनार्थं, यथा वृद्धावकर्म्मक इति। एवकारस्य एवमर्थात् सिद्धायाः सकर्म्मकक्रियाव्यावृत्तेरनुवादमात्रम्। काश्यपस्तु यथाश्रुतमेवान्वयं वदन् 'अर्थावधारणार्द्देनैवकारेण अन्यत्रार्थनिर्द्देशेष्वनियमो ज्ञाप्यते' इति; तत्कर्म्मवत्सूत्रभाष्ये राध्यत्योदनः स्वयमेवेत्यवृद्धौ श्यनो दर्शनादुपेक्ष्यम्। अत्र हि सिध्यतीत्यर्थः। "व्यञ्जनानि च राध्यं" ति कौ १६४।

§ एत्वाभ्यासलोपविधौ हिंसार्थस्य राधेर्ग्रहणात्तत्र सौवादिकस्यैव सम्भवादग्रहणम्।

तीत्यर्थः, "राधीच्योर्यस्य विप्रश्ने" इति सम्प्रदानत्वात् चतुर्थी। "न दूये सात्वतीसूनुर्यन्मह्यमपराध्यति।" इति माघे द्रोहोऽर्थः।

६७। व्यध, ताड़ने। ( To strike )

ताड़नं—पीड़नम्, वेधनम्। व्यध्, अनिट्, सक, प। विध्यति। विध्येत्। विध्यतु। अविध्यत्। अव्यात्सीत्, अव्याद्धाम्, अव्यात्सुः। विव्याध, विविधतुः, विविधुः,। विविधिथ, विव्यद्ध ; विविधतुः, विविध। विव्याध, विव्यध ; विविधिव. विविधिम। व्यद्धा। विध्यात्। व्यत्स्यति। अव्यत्स्यत्। विव्यत्सति। [विव्यत्सति, दीर्घाः] वेविध्यते। वाव्यद्धि २। व्याधयति। अविव्यधत्। व्याधः—णः। व्यधः—अप्। मृगं विध्यतीति—मृगावित्, क्विप् 'नहिवृती'त्यादिना पूर्वपदस्य दीर्घः। विधुः—कुः,

६८। पुष, पुष्टौ। ( To nourish )

पुष्, अनिट्, सक, प। पुष्यति। पुष्येत्। पुष्यतु। अपुष्यत्। लुङ्—अपुषत्, अपुषताम्, अपुषन्। अपुषः, अपुषतम्, अपुषत। अपुषम्, अपुषाव। लिट्—पुपोष, पुपुषतुः, पुपुषुः। पुपोषिथ, पुपुषथुः, पुपुष। पुपोष, पुपुषिव। पोष्टा। पुष्यात्। पोक्ष्यति। अपोक्ष्यत्--कर्म्मणि—पुष्यते। अपुष्यत। अपोषि, अपुक्षाताम्, अपुक्षत। सनादौ—पुपुक्षति। पोपुष्यते। पोपोष्टि २। पोषयति। अपूपुषत्। पुष्यः—क्यप्। पुष्येण युक्तः—पौषः, अण्। पौषमहः—'तिष्यपुष्ययोर्नक्षत्रेऽणि' इति यलोपः। स्वपोषं पुष्यति इत्यादि पोषतिवन्नेयम् 'स्वे पुष' इति णमुल्। पुष्टः, पुष्टवान्। पुष्टिः। पोषः। पोष्टव्यः। पोष्यः। पोषणम्। पोष्टा। स्त्री—पोष्ट्री। पोषकः। भ्वादितुदादिक्र्यादिचुरादिष्वप्ययम्। इत आरभ्य पुषादयश्चतुःषष्टिः।

६९। शुष, शोषणे। ( To dry up )

शुष् अनिट्, सक प। शुष्यतीत्यादि पुष्यतिवत्। शुष्कः,

शुष्कवान्—निष्ठातकारस्य कः। शुष्कं व—शुष्किका। शुष्का जङ्घा यस्याः—शुष्कजङ्घा, कत्वस्य पूर्वत्नासिद्धत्वात् 'उदीचामातः स्थाने' इति ककारपूर्वत्वेन वैकल्पिक इत्वनिषेधः, 'न कोपधायाः' इति पुंवद्भावनिषेधश्च न भवति। आतपशुष्कः 'सिद्धशुष्कपक्वबन्धैश्च' इति सप्तमीसमासः। ऊर्द्ध्वं शोषं शुष्यति—'ऊर्द्ध्वे शुषिपूरोः' इति णमुल्. कषादित्वादयथाविध्यनुप्रयोगः।

७०। तुष, प्रीतौ। ( To be pleased or delighted )

प्रीतिस्तृप्तिः। तुष, अक, अनिट्, प। तुष्यति। तुतोष, तुतुषतुः। तुतोषिथ। अतुषत्। तोष्टा। तोच्यति। अतुक्षत्। तुतुक्षति। तोतुष्यते। तोतोष्टि २। तोषयति। अतूतुषत्। सर्वं पुषिवत्।

७१। दुष, वैकृत्ये। ( To be bad or corrupted )

वैकृत्यं विकृतिः। दुष, अनिट्, अक, प। दुष्यतीत्यादि पुष्यतिवत्। दोषणं, दूषणम् इति णौ 'दोषोणौ' इत्यूत्वमुपधायाः। दूषयति चित्तं, दोषयति 'वा चित्तविकारे' इत्युकारविकल्पः। दोषी—घिनुण्। दूषीका—ईकन्। दोषः। दूषकः। चित्तदूषकः। कन्यादूषकः।

७२। श्लिष, आलिङ्गने। ( To embrace )

श्लिष, अनिट्, सक, प। श्लिष्यति। श्लिष्येत्। श्लिष्यतु। अश्लिष्यत्। अश्लिक्षत् कन्यां देवदत्तः *इत्यालिङ्गन एव अङपवादः क्सः। आलिङ्गनादन्यत्र पुषादित्वादङ्—अश्लिषत् जतु काष्ठम्। शिश्लेष। श्लेष्टा। श्लिष्यात्। श्लेक्ष्यति। अश्लेक्ष्यत्। कर्म्मणि—श्लिष्यते। अश्लेषि, अश्लिक्षाताम्, अश्लिक्षत। अश्लिष्ठाः। आलिङ्गने—अश्लिक्षि, अश्लिक्षेताम्, अश्लिक्षन्त। अश्लिक्षथाः।

* "सण्विधावुपधाशब्दादन्तशब्दयत्नादपि। अपि प्राप्ते सचेव स्यात् बाहुल्यादालिङ्गने श्लिषः॥" इति उमापतिः।

सनादौ—शिश्लिक्षति। शेश्लिष्यते। शेश्लिषीति, शेश्लेष्टि। श्लेषयति। अशिश्लिषत्। श्लेष्मा—मनिन्।

## उभयपदी।

५३। शक, विभाषितो मर्षणे। ( To endure )

अयं मर्षणे दिवादिः। विभाषित इत्युभयपदी तन्त्रान्तरे प्रसिद्धः। शक्, अनिट्, सक, उ। परस्मै—शक्यति। शक्येत्। शक्यतु। अशक्यत। अशकत, अशकताम्, अशकन्। अशकः। अशकम्। शशाक, शेकतुः, शेकुः। शेकिथ, शशक्थ। शशक, शशाक, शेकिव। शक्ता। शक्यात्। शक्ष्यति। अशक्ष्यत्। आत्मने—शक्यते। शक्येत। शक्यताम्। अशक्यत। शेके, शेकाते, शेकिरे। शक्ता। शक्षीष्ट। शक्ष्यते। अशक्ष्यत। लुङ्—अशक्त, अशक्षाताम्, अशक्षत। अशक्थाः, अशग्ध्वम्। अशक्षि, अशक्ष्वहि। सनादौ—शिक्षति, शिक्षते। शाशक्यते। शाशकीति शाशक्ति। शाकयति। अशीशकत्।

क्त—शक्त्वा। शक्तः, शकितो वा घटः कर्त्तुम्—'सौनागाः कर्म्मणि निष्ठायां शकेरिटमिच्छन्ति विकल्पेन' इति वृत्तिः। शक्तः। शक्तिः—क्तिन्। शक्तव्यम्। शकनीयः। शाकः। शक्ता। शक्तिर्देवतास्य—शाक्तः।

## परस्मैपदिनः।

७४। ष्विदा, गात्रप्रक्षरणे। ( To sweat )

गात्रप्रक्षरणं घर्म्मच्युतिः। ञि ष्विदेति सेवयादयः। ष्विद,

† क्षीरस्वामी तु सहनेऽर्थे शकिधातुर्विभाषितः, विकल्पितः, पक्षे दिवादिः, पक्षे स्वादिरित्यर्थः। शक्यते, शक्नोतीति। शाकटायनश्चामुमेव विभाषितार्थमङ्गीकृत्य अस्य चोभयत्र पाठमात्रादेव सिद्धत्वादीयर्थमेव नूनं मत्वा 'शक मर्षणे' इत्येव पपाठ। अतः स्वाद्युक्तमनेन इत्युक्तम्।

(आ) अनिट्, अक, प। खिद्यति। खिद्येत्। खिद्यतु। अखिद्यत्। अखिदत्। चिखेद। खेत्ता। खिद्यात्। खेत्स्यति। अखेत्स्यत्। चिखित्सति। चेखिद्यते। चेखेत्ति २। खेदयति। अचिखिदत्। चिखेदयिषति। खिन्नः। खिन्नवान्। खेदः। द्युतादित्वादङ्सिद्धावपि अर्थभेदात् पुषादावस्य पाठः।

७५। क्रुध, कोपे। ( To be angry )

क्रुध्, अनिट्, अक, प। क्रुध्यति। देवदत्ताय क्रुध्यति—'क्रुधद्रुहे'ति कोपविषये सम्प्रदानत्वम्। क्रुध्येत्। क्रुध्यतु। अक्रुध्यत्। अक्रुधत्। चुक्रोध, चुक्रुधतुः, चुक्रुधुः। चुक्रोधिथ। चुक्रुधिव। क्रोद्धा। क्रोत्स्यति। चुक्रुत्सति। क्रोधयति। अचुक्रुधत्। क्रुद्धः। क्रुद्धा। क्रुत्। क्रुधा। क्रोद्धव्यम्। क्रोधनः—युच्।

७६। क्षुध, बुभुक्षायाम्। ( To hungry )

क्षुध्, अनिट्, अक, प। क्षुध्यति इत्यादि पूर्ववत्। क्षुत्—क्विप्। हलन्तानां टाप्—क्षुधा। क्षुधितः—क्तः। 'तदस्य जातम्' इतीतचि वा। क्षोधित्वा, क्षुधित्वा।

७७। शुध, शौचे। ( To become pure )

शुध्, अनिट्, अक, प। शुध्यति। शुध्येत्। शुध्यतु। अशुध्यत्। अशुधत्। शुशोध। शुशोधिथ। शोधयति। अशूशुधत्, इत्यादि पूर्ववत्। शुद्धः। शुद्धिः। वि—विशुद्धः। न शुद्धः—अशुद्धः। सम्—संशोधनम्। णिच्क्तः—संशोधितः।

७८। षिधु, संराद्धौ। ( To effect completely )

सिध्, (उ) अनिट्, अक, प। सिध्यति। सिध्येत्। सिध्यतु। असिध्यत्। लुङ्—असिधत्, असिधताम्, असिधन्। सिषेध। सिषेधिथ। सेद्धा। सिध्यात्। सेत्स्यति। असेत्स्यत्। सिषित्

सति । सेषिधयते । सेषिद्धि २ । अन्नं साधयति—'सिध्यतेरपारलौकिके' इति परलोकप्रयोजनव्यतिरिक्तार्थवृत्तेः सिधेः णाविचः स्थाने आत्वम् । पारलौकिके तु—तपः सेधयति तापसः । * सिद्धः, साङ्काश्यसिद्धः—'सिद्धशुष्केति सप्तमीसमासः । (उ) सिधित्वा, सेधित्वा, सिद्ध्वा । केचिदूदितं पठन्ति, तदसत्, अनुदात्तोपदेशवैयर्थ्यात् ।

७९ । रध, हिंसासंराद्ध्योः । ( To kill, to injure )

संराद्धिः पाकः । रध्, वेट्, सक, प । रध्यति । रध्येत् । रध्यतु । अरध्यत् । अरधत् । लिट्—ररन्ध, ररन्धतुः, ररन्धुः । ररद्ध, ररन्धिथ ; ररन्धथुः, ररन्ध । ररन्धिव, रेध्व ; ररन्धिम, रेध्म 'रधादिभ्यश्च' इतीड्विकल्पः । § रधिता,रद्धा । रध्यात् । रधिष्यति, रत्स्यति । अरधिष्यत्,अरत्स्यत् । रिरधिषति,रिरत्सति । रारध्यते । रारन्धीति, रारद्धि । रन्धयति । अररन्धत् । रन्धः । रन्धनम् । रन्धकः । रेधिवान्—वांसः । रद्ध्वा, रधित्वा । प्ररध्य । रधितुम्, रद्धुम् । रद्धः । इत आरभ्य अष्टौ रधादयः ।

८० । णश, अदर्शने । ( To perish )

अदर्शनं—क्षयः, मरणम् । अदर्शनं—तिरोभावः, लुक्कायनम् । नश्, वेट्, अक, प । नश्यति । नश्येत् । नश्यतु । अनश्यत् ।

---

* अत्र सिद्धिः परलोकार्थे ज्ञानविषये वर्त्तते । तापसः सिध्यति ज्ञानविशेषमासादयति, तं तपः प्रयुङ्क्ते, स च ज्ञानविशेष उत्पन्नः, परलोके जन्मान्तरे फलमभ्युदयलक्षणमुपसंहरन् परलोकप्रयोजनो भवति । अन्नं साधयति ब्राह्मणेभ्यो दास्यामीत्यत्र तु सिधेर्निष्पत्तिरर्थः । तस्याः प्रयोजनमन्नं तस्य यद्दानं तत्पारलौकिकम्, न पुनर्निष्पत्तिरेवेति साक्षात् परलोकप्रयोजने सिद्ध्यर्थे चरितार्थत्वान्निषेधस्येह न प्रवृत्तिः ।

§ रधादित्वादिवभाषापि साध्यते । परत्वादविकल्प इत्येक इति दुर्गवृत्तिः ।

लुङ्—अनेशत्, अनशत्; अनशताम्, अनशन् * अनशन्। अनशम्, [ अनेशम् ] लिट्—ननाश, नेशतुः। नेशिथ, ननंष्ठ नेशथुः। नेशिव, नेश्व; नेशिम, नेश्म। नशिता, नंष्टा। नश्यात्। नंक्ष्यति, नशिष्यति। प्रणश्यति—'उपसर्गादसमासेऽपीति णत्वम्। प्रनंष्टेत्यादौ तु 'नशेः षान्तस्य' इति णत्वनिषेधः। अन्तग्रहणस्य भूतपूर्वषान्तत्वाश्रयणार्थत्वात् प्रणङ्क्ष्यतीत्यादावपि न णत्वम्। सनादौ—निनशिषति, निनङ्क्षति। नानश्यते। नानंष्टि, नानशीति। नाशयति। अनीनशत्।

क्त्वा—नशित्वा, नष्ट्वा। नंष्ट्वा—पा ६।४।३२। नश्वरः—क्वरप्। पित्त्वात् स्त्रियामीप्—नश्वरी। प्रणश्यतीति—प्रणट्, प्रनक् 'नशेर्वा' इति पदान्तस्य कुत्वम्। नष्टः। नष्टवान्। दुःखेन नाशयितव्यः—दूणाशः, खल् पृषोदरादिः। नंशुकः—णुक्प्रत्यये नुमागमः। नशितुम्, नंष्टुम्। णिच्—नाशयितुम्। नाशनम्। वि—विनाशनम्। नाशः—घञ्। प्रणाशः। नाशकः। नष्टिः।

८१। तृप, प्रीणने। ( To please )

प्रीणनं तर्पणम्। "नाग्निस्तृप्यति काष्ठानाम्" कर्मणि षष्ठी। तृप्, वेट्, सक, प। तृप्यति। तृप्येत्। तृप्यतु। अतृप्यत्। अतार्प्सीत्, अत्राप्सीत्, अतर्पीत्, अतृपत्। अतार्प्सिष्टाम्, अत्राप्सिष्टाम्, अतर्पिष्टाम्, अतृपताम् इत्यादि। ततर्प, ततृपतुः ततृपुः। ततर्पिथ, ततर्प्थ, तत्रप्थ, ; ततृपथुः, ततृप। ततर्प, ततृपिव। तर्पिता, तर्प्ता, त्रप्ता। तृप्यात्। तर्पिष्यति,

* "नशिमन्योरलिड्येत्वं छन्दस्यपि पचेरपि। अनेशं मेनकेत्येतद्व्योमानं लिङि पेचिरन्॥" इति। अत्र केचिद्भाषायामेत्त्वाभाव इत्याहुः। केचिदेत्वार्थं सूत्रं विदधति, केचित् पृषोदरादौ पठन्ति, केचित् केवलममुविभक्तौ एत्वं कुर्व्वन्ति, केचित् लुङि सर्व्वत्रैव। अत्र नानाविधं मतम्।

तर्प्स्यति, त्रप्स्यति। अतर्पिष्यत्, अतर्प्स्यत्, अत्रप्स्यत्। तितर्पिषति, तितृप्सति। तरीतृप्यते। तरीतृपीति, तरीतर्प्ति, तरित्रप्ति इत्यादि। तर्पयति। अततर्पत्, अतीतृपत्। तर्पित्वा, तृप्ता। तृप्तः। फलानां तृप्तः—षष्ठीसमासनिषेधः। तृप्रः—रक्, पुरोडाशः। त्रपिष्ठः, त्रपीयान्—इष्ठेयनसू। तृपमाचष्टे—त्रपयति, त्रपादेशः। अत्र भावे इमनिच् [इमन्] नास्तीति वृत्ताबुक्तम्। तृपला लता—कलप्रत्ययः। मैत्रेयादयः स्वादावप्येमुं पठन्ति। युजादौ तुदादौ चायम्।

८२। दृप्, हर्षण-मोहनयोः। (To be gead, to be proud)

दृप्यतीत्यादि सर्वं तृप्यतिवत्। दर्पणः—नन्द्यादिः। तुदादौ चायम्। हर्षणमोचनयोरिति केचित्।

८३। द्रुह, जिघांसायाम्। (To bear hatred)

जिघांसा हन्तुमिच्छा—द्रोहः। द्रुह, वेट्, सक, प। द्रुह्यति *। द्रुह्येत्। द्रुह्यतु। अद्रुह्यत्। अद्रुहत्, अद्रुहताम्, अद्रुहन्। दुद्रोह, दुद्रुहतुः, दुद्रुहुः। दुद्रोहिथ, दुद्रोग्ध, दुद्रोढ; दुद्रुहथुः, दुद्रुह। दुद्रोह, दुद्रुहिव, दुद्रुह्व। द्रोहिता, द्रोग्धा, द्रोढा। द्रुह्यात्। द्रोहिष्यति, ध्रोक्ष्यति। अद्रोहिष्यत्, अध्रोक्ष्यत्। दुद्रोहिषति, दुद्रुहिषति, दुध्रुक्षति। दोद्रुह्यते। दोद्रोग्धि, दोध्रोढि, दोध्रोक्षि, दोद्रुहीति। द्रोहयति। अदुद्रुहत्। द्रोही—घिनुण्। द्रुहित्वा, द्रोहित्वा, द्रुग्ध्वा, द्रुढ्वा। द्रुग्धः, द्रुग्धवान्; द्रूढः, द्रूढवान्। द्रोहः। द्रोहणम्। मित्रध्रुक्, मित्रध्रुट् (ड्)। क्विपि पदान्तत्वे 'वा द्रुहे'ति वा घत्वम्, अन्यदा ढत्वम्। द्रोहितुम्, द्रोग्धुम्, द्रोढुम्।

---

* देवदत्ताय द्रुह्यति—'क्रुधद्रुहे'ति कोपविषये सम्प्रदानम्। देवदत्तमभिद्रुह्यति—'क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः' इत्युपसृष्टत्वे कर्मत्वम्।

८४। मुह, वैचित्त्ये। ( To faint )

वैचित्त्यं चित्तविकृतिः। मुह्, वेट्, अक, प। मुह्यति। मुह्येत्। मुह्यतु। अमुह्यत्। अमुहत्, अमुहताम्, अमुहन्। मुमोह, मुमुहतुः, मुमुहुः। मुमोहिथ, मुमोग्ध, मुमोढ। मुमुहिव, मुमुह्व। मोहिता, मोग्धा, मोढा। मुह्यात्। मोहिष्यति, मोक्ष्यति, मुमुहिषति, मुमोहिषति, मुमुक्षति। मोमुह्यते, मोमोग्धि, मोमोढि, मोमुहीति। मोहयति। अमूमुहत्—चित्तवत्कर्तृकत्व 'अणावकर्म्मकात्' इति परस्मैपदम्। परिपूर्वत्वे 'न पादमी' त्यादिना निषेधात्उभयपदं स्यात्। परिमोहयति-ते। परिमोही—घिनुण्। मुहित्वा, मोहित्वा; मुग्ध्वा, मूढ्वा। संमुह्य। मुग्धः, मूढः। उन्मुक्, उन्मुट्। द्रुहिवत् प्रक्रिया। मूर्खः—'मुहेः खो मुर् च' इति खप्रत्यये मूरादेशश्च।

८५। ष्णुह, उद्गिरणे। ( To vomit )

स्नुह, वेट्, सक, प। स्नुह्यति। स्नुह्येत्। स्नुह्यतु। अस्नुह्यत्। अस्नुहत्, अस्नुहताम्, अस्नुहन्। सुष्णोह, सुष्णुहतुः। सुष्णोहिथ, सुष्णोग्ध, सुष्णोढ। सुष्णुहिव, सुष्णुह्व। स्नोहिता, स्नोग्धा, स्नोढा। स्नुह्यात्। स्नोहिष्यति, स्नोक्ष्यति। अस्नोहिष्यत अस्नोक्ष्यत्। सुस्नुहिषति, सुस्नोहिषति, सुस्नुक्षति। सोष्णुह्यते। सोष्णोग्धि, सोष्णोढि, सोष्णुहीति। स्नोहयति। असुष्णुहत्। स्नोहित्वा, स्नुहित्वा; स्नुग्ध्वा, स्नूढ्वा। स्नुग्धः, स्नूढः। स्नोहः।

८६। ष्णिह, प्रीतौ। ( To love )

स्निह्, वेट्, अक, प। 'न च स्निह्यति कस्यचित्।' भट्टिः—१८।९ स्निह्यति। स्निह्येत्। स्निह्यतु। अस्निह्यत्। अस्निहत्, अस्निहताम्, अस्निहन्। सिष्णेह। सिष्णेहिथ, सिष्णेग्ध, सिष्णेढ। सिष्णेह सिष्णिहिव, सिष्णिह्व। स्नेहिता, स्नेग्धा, स्नेढा। [illegible] स्नेहिष्यति, स्नेक्ष्यति। सिस्निहिषति,

सिस्नेहिषति, सिस्निक्षति। सेष्णिह्यते। सेष्णेग्धि, सेष्णेढ़ि, सिष्णिहीति। स्नेहयति। असिष्णिहत्। स्निहित्वा, स्निग्ध्वा, स्नीढ्वा। स्निग्धः, स्नीढ़ः। उष्णिक्—'ऋत्विक्' इत्यादिना उत्पूर्वात् स्निह्यतेः क्विन्। उदोऽन्तलोपः सस्य च षत्वं निपात्यते। उष्णिहा—अजादिपाठात् टाप्।

८७। शमु, उपशमे। ( To be calm )

शम् ( उ ) सेट, अक, प। शाम्यति। शाम्येत्। शाम्यतु। शाम्य। अशाम्यत्। अशमत् अशमताम्, अशमन्। अशमत्, अशमीत् इत्यादि वोपदेवः। शशाम, शेमतुः, शेमुः। शेमिथ। शशाम, शशम; शेमिव। शमिता। शम्यात्। शमिष्यति। अशमिष्यत्। शिशमिषति। शंशम्यते। शंशमीति, शंशन्ति, शंशान्तः। शम्यते। अशमि। निशमयति वचनम्,—अमन्तत्वान्मित्त्वम्। अशामि, अशमि। निशामयति रूपं 'शमोऽदर्शने' इति दर्शने मित्त्वनिषेधः। अशीशमत्। शमी—घिनुण्। शमयतीति—शमनः, कर्त्तरि ल्युः। (उ) शमित्वा, शान्त्वा। शान्तः—'यस्य विभाषा' इतीन्निषेधः। प्रशाम्यतीति—प्रशान्, क्विपि दीर्घः, 'मो नो धातो'रिति नकारः पदान्ते। स्वरे मकारः—प्रशामौ, प्रशामः इत्यादि। शान्तिः—क्तिन्। ण्यन्तात् क्तः—शान्तः। शमितः—'वा दान्तशान्ते'ति सिद्धिः। शमलम्—कलप्रत्ययः। शम्बः—वन्। शम्बाकरोति—डाच्। शम्बुः—'शमेर्वुन्' इति वुन्प्रत्ययः। शाम्बव्यम्—यञ्। शमी—शमशब्दात् पिप्पल्यादित्वात् ङीष्। शम्या। विकारोऽवयवो वा—शामीलम् 'शम्ब्याष्टलञ्' इति टलञ्। टित्त्वात् स्त्रियां—शामीली।

८८। तमु, काङ्क्षायाम्। ( To desire )

काङ्क्षा—आकाङ्क्षा, ग्लानिरिति वोपदेवः। तम्, (उ) सेट,

सक, प। ताम्यति इत्यादि। ततास, तेमतुः, तेमुः। तेमिथ। अतमत्। अतमत्, अतमीत् इति बोपदेवः। तमिता। तमिष्यति इत्यादि। तमयति। अतीतमत्। तितमिषति। (उ) तमित्वा, तान्त्वा। निष्ठा—तान्तः, तान्तवान् इत्यादि सर्वं शमिवत्। ताम्बूलम्, ताम्बूरम्—'तमेर्वुक् च' इत्यूरोलचौ प्रत्ययौ, णिद्वद्भावाद्वृद्धिः, वुगागमश्च। ताम्रम्—'अमितम्योर्दीर्घश्च' इति रकि दीर्घः। तमसा—नदी 'अत्यमिचमितमीत्यसच्। तमः—असुन्। अवतमसं, सन्तमसम्, अन्धतमसम्—अच्समासान्तः। तमिस्रा—मत्वर्थे रः, उपधायाश्चेकारः। स्त्रीत्वमतन्त्रम्—तमिस्रं नभः।

८९। दमु, उपशमे। ( To tame )

दम्, (उ) सेट, अक, प। दाम्यतीत्यादि शमिवत्। दमयतीति—दमनः, नन्द्यादिः। अरिन्दमः—खच्। दमयते—'अणावकर्म्मकात्' इति परस्मैपदस्य 'न पादमि' इत्यादिना निषेधः। दान्तः, दमितः, 'वा दान्ते'ति ण्यन्तान्निष्ठायामनिट्त्वं, णिलुक् च पक्षे। दमुनाः—'दमेरुनसिः' इत्युस्। दण्डः—अमन्तात् डः। द्विदण्डि प्रहरति—'द्विदण्ड्यादिभ्यश्च' इति बहुव्रीहाविच्प्रत्ययान्तो निपात्यते। द्वौ दण्डावस्मिन् प्रहरणे इति विग्रहः। समुदायनिपातनस्य रूढ्यर्थत्वात् द्विदण्डा शालेत्यत्र न भवति। तिष्ठद्गुप्रभृतिषु इजिति पाठादिजन्तस्याव्ययीभावादव्ययत्वम् दण्डिनोऽपत्यं—दाण्डिनायनः इन्नन्तात् 'नड़ादिभ्यः फक्' इति फकि 'दाण्डिनायने'ति निपातनाट्टिलोपाभावः।

९०। श्रमु, तपसि खेदे च। ( To perform austerity to be wearied )

श्रम् (उ) अक, अनिट्, प। श्राम्यति इत्यादि पूर्ववत्।

श्रमयति। हत्तिकारमते विश्रामयति। "धूर्य्यान् विश्रामयेति सः" इति रघुः। श्रमणः। श्रमणा। कुमारी चासौ श्रमणा चेति कुमारश्रमणा कर्म्मधारये पुंवद्भावः। श्रमी। आश्रमः। विश्रमः। विश्रामः। परिश्रमः।

८१। भ्रमु, अनवस्थाने। ( To move unsteadily )

भ्रम् (उ) सेट्, अक, प। भ्राम्यति, भ्रमति। भ्राम्यतु, भ्रमतु। भ्राम्येत्, भ्रमेत्। अभ्राम्यत्, अभ्रमत्। लुङ्— अभ्रमत्। अभ्रमत्, अभ्रमीत् इति वोपदेवः। शेषं भौवादिकवत्। भ्रमी—शमादित्वाद्घिनुण्। अभिधानादकर्म्मकादेव अयमिष्यते, तेन भ्रमिता वनमिति त्वन्नेव।

८२। क्षमू, सहने। ( To endure )

सहनं मर्षणं, क्षमा शक्तिः। क्षम् (ऊ) वेट्, सक प। क्षाम्यति। क्षाम्येत्। क्षाम्यतु। अक्षाम्यत्। अक्षमत्, अक्षमताम्, अक्षमन्। चक्षाम, चक्षमतुः। (ऊ) चक्षमिथ, चक्षन्थ। चक्षमिव, चक्षण्व, 'म्वोश्च' इति नत्वे णत्वम्। क्षमिता, क्षन्ता। क्षम्यात्। क्षमिष्यति, क्षंस्यति। अक्षमिष्यत्, अक्षंस्यत्। चिक्षमिषति, चिक्षंसति। चङ्क्षम्यते। चङ्क्षन्ति। क्षमयति। अचिक्षमत्। क्षमी। क्षन्त्वा, क्षमित्वा। क्षान्तः। क्षान्तिः। क्षमेति षितो भौवादिकस्य।

८३। क्लमु, ग्लानौ। ( To be fatigued )

क्लम्, (उ) सेट्, अक, प। क्लाम्यति, क्लामति इत्यादि भ्राम्यवत्। चक्लाम। क्लमिता। अक्लमत्। (ऊ) क्लान्त्वा, क्लमित्वा। क्लान्तः। क्लान्तिः इत्यादि। शमवत्। अस्य शमादिपाठो घिनुणर्थः।

८४। मदी, हर्षे। ( To be glad )

मद् (ई) सेट्, अक, प। माद्यति इत्यादि। प्रमाद,

मेदतुः, मेदुः। मेदिथ। मेदिव। अमदत्। अमदीत्, अमादीत् इति वोपदेवः। मिमदिषति। मामद्यते। मामत्ति। मामदीति। धर्म्मात् प्रमाद्यति—'जुगुप्सा-विराम-प्रमादार्थानामुपसंख्यान'मिति धर्म्मोऽपादानम्। मदयति, 'मदी हर्षग्लपनयो'रिति घटादिपाठान्मित्त्वम्। अन्यत्र—मादयति, चित्तविकारमुत्पादयतीत्यर्थः। माद्यत्यनेन मन इति—मद्यम्'गदमदे'त्यनुपसर्गे यत्, 'कृत्यल्युटो बहुल'मिति करणेऽपि भवति। मदयतीति—मदनः, नन्द्यादिः। इरा जलम्, तेन माद्यतीति—इरम्मदः, खश्चि निपात्यते। उन्म दिष्णुः—इष्णुच्। उन्मादी—घिनुण्। मदः—अप्। उन्मादः—घञ्। प्रमदः, सम्मदः—'प्रमदसम्मदौ हर्षे' इत्यप्प्रत्यये निपात्यते। मदिता। (ई) मत्तः, मत्तवान्। मदिरा—'इषिमदी'त्यादिना किरच्।

८५। असु, क्षेपणे। (To throw)

असु, (उ) सेट्, सक, प। अस्यति। अस्येत। अस्यतु। आस्यत्। लुङ्—आस्थत्, आस्थताम्, आस्थन्। आस्थः, आस्थतम्, आस्थत। आस्थम्, आस्थाव, आस्थाम। लिट्—आस, आसतुः,—आसुः। आसिथ। आसम्, आसिव। असिता। अस्यात्। असिष्यति। आसिष्यत्। उपसर्गपूर्वकोऽयं विभाषया आत्मनेपदी—निरस्यतीत्यादि। एवं निरस्यते। निरस्येत। निरस्यताम्। निरास्यत। लुङ्—निरास्थत, निरास्थेताम्, निरास्थन्त। निरास्थथाः। निरास्थे, निरास्थावहि। निरासे। निरासिषे। निरसिता। निरसिषीष्ट। निरसिष्यते। निरासिष्यत। इदमेव कर्म्मकर्त्तर्य्यपि रूपम्। कर्म्मणि चिण्सिचावेव—निरासि, निरासिषाताम्, निरासिषत। निरासिष्ठाः। निरासिषि। असिसिषति, निरसिसिषति,—ते। आसयति। आसिसत्।

समस्यम्, संन्यस्यम्, समस्या—एयत् 'संज्ञापूर्वको विधिरनित्यः' इति वृद्ध्यभावः । प्रासयन्त्येतमिति—प्रासः 'अकर्त्तरि च कारके' इति घञ् । प्रासनम्—करणे ल्युट् । दृग्ग्राह्यास्यं दृहमत्यासं वा गाः पयः पाययति—'असयतौ'त्यादिना णमुल् । (उ) असित्वा, अस्त्वा । अस्तः । अस्तवान् । अस्तमनेन, असितमनेन—'सौनागाः कर्म्मणि निष्ठायां शकेरिटमिच्छन्ति विकल्पेन, 'असयतेर्भावे' इति वेट् । अस्तम् इति मान्तोऽव्ययत्पन्नम्, अव्ययमिति । असुरः—'असेरुन्' इत्युरन् । प्रज्ञादित्वादणि—आसुरः । स्वसा—'सावसोर्ऋन्' इति ऋन् । स्वसुरपत्यम्—स्वस्रीयः 'स्वसुश्छः' इति छः । पितृस्वसुरपत्यम्—पैतृष्वस्रीयः, पैतृष्वसेयः—'पितृष्वसुश्छण्' इति छण्, ढकि तु 'ढकि लोप' इत्यन्तलोपः । एवं मातृष्वस्रीयः, मातृष्वसेयः—'मातृपितृभ्यां स्वसे'ति षत्वम् । मातुस्स्वसा, मातुष्ष्वसा, पितुस्स्वसा, पितुष्ष्वसा इति 'विभाषा स्वसृपत्यो'रिति पक्षेऽलुक्षत्वविकल्पश्च ।

९६ । यसु, प्रयत्ने । ( To strive )

यस, (उ) सेट्, सक । यस्यति, यसति । यस्येत्, यसेत् । यस्यतु, यसतु । अयस्यत्, अयसत् । एवं संपूर्वकोऽपि । प्रादिपूर्वकस्य तु—प्रयस्यति इत्याद्येकमेव । ययास, येसतुः । यसिता । यसिष्यति । अयसिष्यत् यियसिषति । यायस्यते । यायस्ति, यायसीति । आयासयते—'अणावकर्म्मकाच्चित्तवत् कर्त्तृकात्' इति परस्मैपदस्य 'न पादमि' इत्यादिना निषेधः । आयासो घिनुण् । (उ) यस्त्वा, यसित्वा । यस्तः, यस्तवान् । आयासः ।

९७ । जसु, मोक्षणे । ( To setfree )

जस् (उ) सेट्, सक, प । जस्यतीत्यादि । अजस्रम्—रः ।

९८। तसु, उपक्षये, दसु च। (To fade away)

तसु, दसु, उत्क्षेपे इति दुर्गः पठति। तस्, दस्, (उ) सेट्, सक, प। तस्यति, दस्यति इत्यादि। दस्त्वा, दसित्वा। दस्तः। णिच्-क्त—दासितः, दस्तः—'वा दान्ते'त्या'दिना पक्षे णिलुगिड़भावश्च। दस्त्री—'स्फायितञ्ची'त्यादिना रक्। नित्यं द्विवचनान्तोऽयम्। "यस्य तस्य विना षष्ठीं, तेनेति कारणं विना। न जगाम गमेर्धातोर्वृद्ध्यादिति न पञ्चमी॥"

९९। वसु, स्तम्भे। (To be straight)

वस्, (उ) सेट्, अक, प। वस्यति। वस्येत्। वस्यतु। अवस्यत्। अवसत्। ववास, ववसतुः, ववसुः। वसिता। इत्यादि।

१००। व्युष, विभागे। (To divide)

अयं दाहे पूर्वं पठितः, उदाहृतश्च, इह तु विभागे अव्युष-दित्यर्थः पाठः। केचिदमुं पकारादिं दन्त्यान्तमिच्छन्ति प्युस इति। अपरे त्वयकारं पुसेति पठन्ति। व्युष्, सेट्, सक, प। व्युष्यति इत्यादि।

१०१। प्लुष, दाहे। (To burn)

प्लुष्, सेट्, सक, प। प्लुष्यतीत्यादि। इह पाठोऽप्लुषदित्यर्थः, पूर्वञ्च पाठोऽप्लोषीदिति सिजर्थः।

१०२। विस, प्रेरणे। (To send)

विस्, सेट्, सक, प। विस्यतीत्यादि। लुङ्—अविसत्, अविसताम्, अविसन् इत्यादि। विसम्—इगुपधलक्षणः कः। विस्तः—बाहुलकादौणादिकस्तन्, अगुणत्वञ्च। द्वाभ्यां विस्ताभ्यां क्रीता—द्विविस्ता, द्वैविस्तिकी।

१०३। कुस, संश्लेषणे। (To embrace)

कुस्, सेट्, सक, प। कुस्यति इत्यादि। लुङ्—अकुसत्

इत्यादि । कुसितायी—'वृषाकप्यग्नी'त्यादिना ङ्प्रत्ययान्तत्वात् ङीवुदात्तः, ऐकारोऽन्तादेशः । दुर्गस्तालव्यान्तं पपाठ, कुश-शब्दस्य दर्शनात् स तु भौवादिकादपि सिद्धः । मनोरमा-व्याख्यामते दुर्गस्यापि दन्त्यान्तः पाठः सम्मतः ।

१०४ । बुस, उत्सर्गे । ( To discharge )

बुस्, सेट्, सक, प । व्युस्यतीत्यादि । उत्सर्ग इह त्यागः । बुस्यति जलं मेघः । दन्त्यान्तोऽयम् । लुङ्—अबुसत् इत्यादि । बुसम्—इगुपधलक्षणः कः । यस्मिन् काले बुसं खले वर्त्तते, स कालः—खलेबुसम् 'तिष्ठद्गुप्रभृतीनि च' इत्यव्ययीभाव-समासः । अयं प्रथमान्त एव, विभक्त्यन्तरेण न सम्बध्यते । बस्तम्—पूर्ववत् तनोड़भावः ।

२०५ । मुस, खण्डने । ( To break )

मुस्, सेट्, सक, प । मुस्यतीत्यादि । लुङ्—अमुसत् इत्यादि । दन्त्यान्त इति सर्वे । आत्रेयस्तु कातन्त्रे मूर्द्धन्यान्तो-ऽयम् । तथाच 'राघवस्यामुषः कान्ताम्' इति भट्टिकाव्ये प्रयोग-श्चेति पाठान्तरमप्याह । मुसलम्—अस्मादेव औणादिकः कल-प्रत्ययः । मुसली—गृहगोधिका, गौरादिः मुसलेन बधमर्हति —मुसल्यः, दण्डादित्वाद् यत् । मुस्ता—तन् । मुस्तकम्—कन् ।

१०६ । मसी, परिमाणे । ( To measure )

तुर्य्यस्वरानुबन्धो दन्त्यान्तः । मस्यति धनं गृही इति मनो-रमा । मस्, (ई) सेट्, सक, प । मस्यति । मसेयत् । मस्यतु । अमस्यत् । अमसत् । ममास, मेसतुः । मसिता । मस्यात् । मसिष्यति । अमसिष्यत्, मिमसिषति । मामस्यते । मामस्ति । मासयति । अमीमसत् । मस्तः, मस्तवान्—ईदित्वादनिट्-त्वम् । मस्तकम्—संज्ञायां कन् । मस्तु—तुन् । इनन्तात्

क्विपि मा: काल इति, उणादौ मसूर इति च रमानाथ:। अश्वादयो मसीपर्य्यन्ता दन्त्यान्ता:। अत्र परिमाणस्थले परिणाम इति भीम:, परिणामो विकार इति मनोरमा।

१०७। लुट, विलोड़ने। ( To churn )

लुट, सेट, अक, प। लुट्यति इत्यादि। पुषादिपाठात् अलुटत्, भ्वादिपाठात् अलोटीदिति सिजप्यस्ति। प्रतिघाते तु द्युतादिपाठादङप्यस्ति—अलुटत्, अलोटिष्ट इति। लोटयतीति कण्ड्वादियगन्त:।

१०८। उच, समवाये। ( To be gathered together )

समवाय: सङ्गमो मिश्रणम्। उच्यति केश: स्नानेन इति मनोरमा। उच्, सेट्, अक, प। उच्यति। उच्येत्। उच्यतु। औच्यत्। औचत्। उवोच, ऊचतु:। उवोचिथ। ओचिता। औच्यात्। ओचिष्यति। औचिष्यत्। ओचिचिषति—द्विर्वचनात् पूर्वं गुण:। ओचयति। औचिचत्। माभवानुचिचत्। ओचित्वा। उचित:। औचितम्—ष्यञ्। औचिती—षित्वात् ङीष्। नियमेनोच्यति—न्योक: शकुन्त:, क:। नियमेनास्मिन् शकुन्ता: समवयन्ति—न्योको वृक्ष:, घञर्थे क:। ओक:—अच्। ओक:,गृहम्—असुन् बाहुलकात् सर्वत्र कुत्वम्। दिवौकस:। जलौकस:। ( औ ) ओकसी। उल्वम्। 'उल्वादयश्च' इति वप्रत्यये निपात:।

१०९। भृशु, भ्रन्शु, अध:पतने। ( To fall down )

भृश्, भ्रन्श्, (उ) अक, प। भृश्यति। भृश्येत्। भृश्यतु। अभृश्यत्। अभृशत्। बभर्श, बभृशतु:, बभृशु:। बभर्शिथ। बभृश, बभृशिव। भर्शिता। भृश्यात्। भर्शिष्यति। अभर्शिष्यत्। बिभर्शिषति। बरीभृश्यते, बरीभर्ष्टि, नृतवत्। भर्शयति। अबीभृशत्, अबभर्शत्। भृष्ट—क:। अभृशो भृशो

भवति—भृशायते। भार्शम्, भ्रशिमा—दृढ़ादित्वात् ष्यञि-मनिचौ। भ्रशिष्ठः, भ्रशीयान्—ऋकारस्य रशब्दः। भृश-माचष्टे—भ्रशयति। भर्शित्वा, भृष्ट्वा—उदित्त्वादिड्विकल्पः। भृष्टः। भृष्टवान्। भ्रन्श—भ्रश्यति। भ्रश्येत्। भ्रश्यतु। अभ्रश्यत्। अभ्रशत्। बभ्रंश, बभ्रंशतुः। बभ्रंशिथ। बभ्रंशिव। भ्रंशिता। भ्रश्यात्। भ्रंशिष्यति। अभ्रंशिष्यत्। बिभ्रंशिषति। बाभ्रश्यते। बाभ्रष्टि। भ्रंशयति। अबि-भ्रंशत्। भ्रंशित्वा, भ्रष्ट्वा। भ्रष्टः।

११० वृश, वरणे। ( To choose )

वृश्, सेट्, सक, प। वृश्यतीत्यादि भृश्यतिवत्। अनु-दित्त्वं विशेषः। वृशिष्ठः, वृशीयान् वृशयति। ऋकारस्य रशब्दो न भवति। "पृथुं मृदुं भृशञ्चैव कृशञ्च दृढ़मेव च। परिपूर्वं वृढ़ञ्चैव षड़ेतान् रविधौ स्मरेत्।" इति परिगणनात्।

१११। कृश, तनूकरणे। ( To be come leav )

तनूकरणमिह चीणीकरणम्। कृश्, अनिट्, सक, प। कृश्यतीत्यादि भृषिवत् अस्याप्यनुदित्त्वं विशेषः। कृशः—'अनुपसर्गात् फुल्लचीबकृशोल्लाघा' इति निष्ठायां निपातितः। सोपसर्गत्वे तु—प्रकृशितः, परिकृशितः, प्रादिसमासः। क्रशिमा, क्रशिष्ठः, क्रशीयान, क्रशयति—भृशिवत् रत्वम् इम-निच्च। कृशित्वा, कर्शित्वा—वा गुणः। कृशानुः—आनुक्।

११२। ञि तृष, पिपासायाम्। ( To be thirsty )

तृष् (ञ) सक, सेट्, प। तृष्यतीत्यादि। ततर्ष, ततृषतुः, ततृषुः। ततर्षिथ। तर्षिता। तर्षिष्यति। अतृषत्। अतर्षीत् इति च वोपदेवः। तितर्षिषति। तर्षयति। अततर्षत्, अती-तृषत्। तरीतृष्यते। तरीतर्षीति, तृतवत्। तृषित्वा, तर्षित्वा—'तृषिमृषि' इत्यादिना वा कित्वम्। तृष्णक्—नजिङ्। इयह तर्षं गाः पाययति, इयहं तर्षम् इति वा अद्य पाययित्वा इयह-

मतिक्रम्य पाययतीत्यर्थः 'अस्यतितृषो'रिति णमुल्, 'तृतीया प्रभृतीनि' इति समासविकल्पः। तृट्—तृष्णा 'तृषिशुषिरसिभ्यः कित्' इति नप्रत्ययः। ञित्त्वं वर्त्तमाने क्तार्थम्। तृषितमस्य सञ्जातं—तृषितः अश्व आदिः।

११३। हृष, तुष्टौ। (To rejoice)

हृष्, अक, सेट्, प। हृष्यतीत्यादि। लुङ्—अहृषत् इत्यादि। अन्यत् भौवादिकवत्। अयमुदिदिति स्वामी।

११४। रुष, रोषे। (To be engry)

रुष्, सेट्, अक प। देवदत्ताय रुष्यतीति 'क्रुधद्रुहे'ति कोपविषये संप्रदानत्वम्। रुष्येत्। रुष्यतु। अरुष्यत्। अरुषत्। रुरोष। रुरोषिथ। रुरुषिव। रोष्टा, रोषिता—इड् विकल्पः। रोषिष्यति। अरोषिष्यत्। रुरुषिषति; रुरोषिषति। रोषयति। अरूरुषत्। रोषित्वा, रुषित्वा, रुष्ट्वा। रुषितः, रुष्टः—निष्ठायामिड्विकल्पः।

११५। डिप, क्षेपे। (To throw)

डिप, सेट्, सक,प। डिप्यति। डिप्येत्। डिप्यतु। अडिप्यत्। अडिपत्। डिडेप। डिडेपिथ। डिडिपिव। डेपिता। डिप्यात्। डेपिष्यति। डिडेपिषति, डिडिपिषति। डिपित्वा, डेपित्वा। डेडिप्यते, डेडेप्ति २। डेपयति। अडीडिपत्। इह केचित् 'ष्टूप समुच्छ्राये' इति पठन्ति, तदनार्षं, स्तायतेः पप्रत्यये 'स्त्वं: प्रसारणमूच्चे'ति सूत्रेण वुगत्पादिते स्तूपशब्द सिद्धिः मनोरमासम्मते दुर्गगणपाठे धातुरयं दृश्यत इति तुदादौ। चुरादौ चायम्।

११६। कुप, क्रोधे। (To be engry)

कुप, सेट्, अक, प। कुप्यतीत्यादि। लुङ्—अकुपत् इत्यादि। चुकोप, चुकुपतुः। कोपिता। चुकुपिषति। चुको-

पिषति। कोपयति। अचूकुपत्। चोकुप्यते। चोकोप्मि, चोकु-
पीति। कोपनः। कोपना। भावे कुप्यते। अकोपि। कुपितः।
कुपित्वा,कोपित्वा। कोपितुम्। इट् तु सर्वत्र नित्यः। देवदत्ताय
कुप्यति—'क्रुधद्रु हे'ति कोपविषयस्य सम्प्रदानत्वम्। कुप्रम्—
अरखम् 'ऋज्रेन्द्रे'त्यादौ निपातितम्। अयं भाषार्थश्चुरादौ।

११७। गुप, व्याकुलत्वे। (To be confused or disturbed)

गुप, सेट्, अक, प। गुप्यतीत्यादि। लुङ्—अगुपत्।
गोपायति, जुगुप्सते इत्यादि अपि। गोपयतीति चुरादौ।

११८। युप, रुप, लुप, विमोहने। (To confuse)

युप, रुप, लुप, अक, प। युप्यति। रुप्यति। लुप्यति
इत्यादि। अनिट्सूत्रे तौदादिकेन लिपिना साहचर्य्यात् तस्यैव
लुपेस्तत्र ग्रहणात्—अयं सेड़ेव। योपिता, रोपिता, लोपिता।

११९। लुभ, गार्ध्ये। (To covet)

गार्ध्यमाकाङ्क्षा। लुभ, सक, प। लुभ्यति। लुभ्येत्। लुभ्यतु
अलुभ्यत्। अलुभत्, अलुभताम्,अलुभन्। लुलोभ। लुलोभिथ।
लोभिता, लोब्धा। लुभ्यात्। लोभिष्यति। अलोभिष्यत्। लुलु-
भिषति, लुलोभिषति। लोलुभ्यते। लोलुभीति, लोलोब्धि।
लोभयति। अलूलुभत्। लुभित्वा, लोभित्वा, लुब्ध्वा। लुब्धः।
लोब्धव्यम्, लोभितव्यम्। लोभ्यम्। लोभः। लोब्धुम्, लोभि-
तुम्। लोभनीयः। लोभः। लोब्धा, लोबधारी। लोभिता।
स्त्री—लोभितारी। भ्वादौ तुदादौ चायं धातुः।

१२०। क्षुभ, सञ्चलने। (To be agitated)

क्षुभ, सेट्, सक, प। क्षुभ्यति। क्षुभ्येत्। क्षुभ्यतु। अक्षु-
भ्यत्। अक्षुभत्, अक्षुभताम्, अक्षुभन्। चुक्षोभ चुक्षुभतुः,
चुक्षुभुः। चुक्षोभिथ। क्षोभिता। क्षुभ्यात्। क्षोभिष्यति। अक्षो-
भिष्यत्। चुक्षोभिषति, चुक्षुभिषति। चोक्षुभ्यते। चुक्षोब्धि।

क्षोभयति। अचुक्षुभत्। क्षुब्धा। क्षुभितः। क्षुब्धः। क्षोभः। वि—विक्षोभः। सम्—संक्षोभः। भ्वादावप्ययम्।

१२१। णभ, तुभ, हिंसायाम्। (To kill)

नभ, तुभ, सेट्, सक, प। नभ—नभ्यति, प्रणभ्यति। नभ्येत्। नभ्यतु। अनभ्यत्। अनभत्, अनभताम्, अनभन्। ननाभ, नेभतुः। नभिता। तुभ—तुभ्यति। तुभ्येत्। तुभ्यतु। अतुभ्यत्। अतुभत्। तुतोभ। तोभिता इत्यादि पूर्ववत्। इमावपि भ्वादौ क्र्यादौ च।

१२२। क्लिदू, आर्द्रीभावे। (To become wet)

क्लिद (ऊ) वेट्, सक, प। क्लिद्यति। क्लिद्येत्। क्लिद्यतु। अक्लिद्यत्। अक्लिदत्, अक्लिदताम्, अक्लिदन्। चिक्लेद। चिक्लिदतुः। चिक्लेदिथ, चिक्लेत्थ। चिक्लिदिव, चिक्लिद्व। क्लेदिता, क्लेत्ता। क्लिद्यात्। क्लेदिष्यति, क्लेत्स्यति। अक्लेदिष्यत्, अक्लेत्स्यत्। चिक्लिदिषति, चिक्लित्सति। चेक्लिद्यते। चेक्लेत्ति। क्लेदयति। अचिक्लिदत्। क्लेदित्वा, क्लिदित्वा, क्लित्त्वा। क्लिन्नः। चिक्लिदम्—इगुपधलक्षणः कः, 'वृजादीनां के द्वे भवतः' इति के द्वित्वम्। क्लेदा, क्लेदानी इति कनिनि निपात्यते। क्लेदः। विक्लित्तिः।

१२३। ञि मिदा, स्नेहने। (To love)

मिद, (ञि, आ) अक, सेट्, प। मेद्यति। मेद्येत्। मेद्यतु। अमेद्यत्। अमिदत्। मिमेद। मेदिथ। मेदिता। मिद्यात्। मेदिष्यति। अमेदिष्यत्। मिमिदिषति, मिमेदिषति। मिदित्वा, मेदित्वा। मिन्नः, मिन्नवान् 'आदितश्च' इतीण्निषेधः, 'ञीतः क्तः' इति वर्त्तमाने क्तः। मिन्नमस्य, मेदितमस्य। प्रमिन्नः, प्रमेदितः—'विभाषा भावादिकर्मणोः'

रितोऽद्विकल्पे 'निष्ठाशीङ्' इत्यादिना सेटो निष्ठायाः कित्त्व-निषेधः।

१२४। ञि ष्विदा, स्नेहनमोचनयोः।

( To be unctuous, to discharge )

ष्विद्, (ञि, आ,) सक, सेट्, प। ष्विद्यतीत्यादि। लुङ्—अष्विदत्, अष्विदताम् इत्यादि। लिट्—चिक्ष्वेद इत्यादि मेद्यतिवत्। क्ष्वेदतीति शपि अव्यक्ते शब्दे।

१२५। ऋधु, वृद्धौ। ( To increase)

ऋध् (उ) अक, सेट्, प। ऋध्यति। ऋध्येत्। ऋध्यतु। आर्ध्यत्। माभवानृध्यत्। आनर्ध, आनृधतुः, आनृधुः। आनर्धिथ। आनृधिव। अर्धिता। ऋध्यात्। अर्धिष्यति। आर्धिष्यत्। लुङ्—आर्धत्, आर्धताम्, आर्धन्। अर्दिधिषति, ईर्त्सति। अर्धयति। आर्दिधत्। (उ) ऋद्ध्वा, अर्धित्वा। ऋद्धः। ऋध्यम्—क्यप्। अर्धः—घञ्। ऋद्धिः—क्तिन्। सम्—समृद्धिः।

१२६। गृधु, अभिकाङ्क्षायाम्। ( To covet )

गृध् (उ) सेट्, सक, प। गृध्यति। गृध्येत्। गृध्यतु। अगृध्यत्। अगृधत, अगृधताम्, अगृधन्। जगर्ध, जगृधतुः। जगर्धिथ। जगृधिव। गर्धिता। गृध्यात्। गर्धिष्यति। अगर्धिष्यत्। जिगर्धिषति। जरीगृध्यते। जगर्धीति। माणवकं गर्धयते—वञ्चयतीत्यर्थः 'प्रलम्भने गृधिवञ्च्योः' इत्यकर्त्रभिप्रायेऽपि तङ्। अन्यत्र श्वानं गर्धयति गर्धयते इति वा—गर्धमस्योत्पादयतीत्यर्थः। गृध्नुः—क्नुः। गर्धनः—युच्। (उ) गर्धित्वा, गृद्ध्वा—उदित्त्वादिड्विकल्पः। गृद्धः। गृध्रः—क्रन्। इति पुषादयः। एभ्यो लुङि परस्मैपदे अङ् भवति।

केचित् अतःपरं चि चये मृग अन्वेषणे इत्यात्मनेपदे परस्मैपदे इति पठन्ति। तस्मात् चीयते, मृग्यति इत्यादि रूप-

सिद्धिः। "मृग्यन्तः पदवीं तथाप्यकरुणा व्याधा न मुञ्चन्ति माम्" इत्यादौ कण्ड्वादित्वात् सिद्धिरिति त्वाचे यमैते यादयः। दिवादौ मृगधातुमुपक्रम्य दुर्गत्रिलोचनवृत्तावयं नास्ति तदा "मृग्यन्तः पदवी"मित्यादि कण्ड्वादित्वात् सिद्धमिति पुरुषोत्तमस्यापि मतमेतदिति मनोरमालिपिः।

इति दिवादयः।

---

## अथ स्वादयः।

## उभयपदिनः।

१। षुञ्, अभिषवे। ( To cause, to bathe, to churn, to pour out, to bathe, to press out juice, to distil )

अभिषवः स्नपन-पीडन-स्नान-सुरासन्धानादिः। तत्र स्नानेऽयमकर्मकः।

सु, (ञ) अनिट्, सक, उ। लट्—सुनोति, अभिषुणोति। सुनुतः, सुन्वन्ति। सुनोषि, सुनुथः; सुनुथ। सुनोमि, सुन्वः सुनुवः; सुन्मः सुनुमः। लिङ्—सुनुयात्, सुनुयाताम्, सुनुयुः। सुनुयाः, सुनुयातम्, सुनुयात। सुनुयाम्, सुनुयाव, सुनुयाम। लोट्—सुनोतु सुनुतात्; सुनुताम्, सुन्वन्तु। सुनु सुनुतात्; सुनुतम्, सुनुत। सुनवानि, सुनवाव, सुनवाम। लङ्—असुनोत्, असुनुताम्, असुन्वन्। असुनोः, असुनुतम्, असुनुत। असुनवम्, असुन्व, असुनुव; असुन्म असुनुम। लुङ्—असावीत्, असाविष्टाम्, असाविषुः। असावीः, असाविष्टम्, असाविष्ट। असाविषम्, असाविष्व, असाविष्म। लिट्—सुषाव,

अभिसुषाव । सुषुवतुः, सुषुवुः । सुषोथ, सुषविथ ; सुषुवथुः, सुषुव । सुषाव, सुषव ; सुषुविव, सुषुविम । लुट्—सोता, सोतारौ, सोतारः इत्यादि । आशीः—सूयात्, सूयास्ताम्, सूयासुः । सूयाः इत्यादि । लृट्—सोष्यति इत्यादि । अभिसोष्यतीत्यादौ 'सुनोतेः स्यसनो'रित्युपसर्गादिति षत्वं निषिध्यते । लृङ्—असोष्यत् ।

आत्मने-लट्—सुनुते, सुन्वाते, सुन्वते । सुनुषे, सुन्वाथे, सुनुध्वे । सुन्वे, सुन्वहे, सुनुवहे । लिङ्—सुन्वीत, सुन्वीयाताम्, सुन्वीरन् । लोट्—सुनुताम्, सुन्वाताम्, सुन्वताम् । सुनुष्व, सुन्वाथाम्, सुनुध्वम् । सुनवै, सुनवावहै, सुनवामहै । लङ्—असुनुत, असुन्वाताम्, असुन्वत । असुनुथाः । असुन्वि, असुन्वहि, असुनुवहि । लुङ्—असोष्ट, असोषाताम्, असोषत । असोष्ठाः, असोषाथाम्, असोढ्वम् । असोषि, असोष्वहि, असोष्महि । लिट्—सुषुवे, सुषुवाते, सुषुविरे । सुषुविषे, सुषुवाथे, सुषुविध्वे, सुषुविढ्वे । सुषुवे, सुषुविवहे, सुषुविमहे । लुट्—सोता, सोतारौ । आशीः—सोषीष्ट, सोषीयास्ताम्, सोषीरन् । सोषीढ्वम् । सोष्यते । असोष्यत ।

सनादौ—सुसूषति, सुसूषते । सोषूयते । सोषवीति सोषोति ; सोषुतः । अभिसोषोति । सावयति । असूषवत् । सुषावयिषति ।

राजसूयः—कर्मण्यधिकरणे वा 'राजसूये'ति क्यपि निपात्यते । आसाव्यम्—ण्यत् । सोमं सुतवान्—सोमसुत्, क्विप् । सुत्वा—ङ्वनिप् । औ—सुत्वानौ । ङित्वात् स्त्रियां ङीप्—सुत्वरी । सुन्वन्—शतृप्रत्ययः । स्त्रियां—सुन्वती । सुसुन्वानः—शानङ् । सुत्या—क्यप् । आसुतीवलः यज्वा शौण्डिकश्च—क्तिन्नन्तादिवलच् 'रजःकृष्यासुती'त्यादिना वलचि दीर्घः । सुरा

—क्वन् । सुरकः—सर्पविशेषः, क्वनि ह्रस्वः । सवनम् । सुतः । सुत्वा । प्रसुत्य । सुतिः ।

२ । षिञ्, बन्धने । ( To bind )

सि (ञ) अनिट्, सक, उ । परस्मै—सिनोति । सिनोषि । सिनोमि, सिन्वः, सिनुवः । सिनुयात् । सिनोतु, सिनुतात् । सिनु, सिनुतात् । सिनवानि । लङ्—असिनोत् । लुङ्—असैषीत्, असैष्टाम्, असैषुः । लिट्—सिषाय, सिष्यतुः, सिष्युः । सिषयिथ,सिषेथ ; सिष्य । सिषाय, सिषय ; सिष्यिव, सिष्यिम । सेता । सीयात् । सेष्यति । असेष्यत् ।

आत्मने—सिनुते, सिन्वाते, सिन्वते । सिनुषे । सिन्वे, सिन्वहे, सिनुवहे । सिन्वीयाताम् । सिनुष्व । सिनवै, सिनुवावहै । असिनुत, असिन्वाताम्, असिन्वत । असिनुथाः । असिन्वि, असिन्वहि, असिनुवहि । लुङ्—असेष्ट, असेषाताम्, असेषत । असेष्ठाः, असेषाथाम्, असेढ्वम् । सिष्ये । सिष्यिषे । सिष्यिवहे । सेता । सेषीष्ट । सेष्यते । असेष्यत । सिषीषति,सिषीषते । सेषीयते । सेषयीति, सेषेति । साययति । असीषयत् ।

सितः । सितवान् । सिनो ग्रासः स्वयमेव—'सिनोतेर्ग्रासकर्म्मकर्त्तृकस्ये'ति वक्तव्येन निष्ठानत्वम् । कुशेषु,कुशैर्वा प्रसितः 'प्रसितोत्सुकाभ्यां तृतीया चे'ति तृतीयासप्तम्यौ । सयः—अच् । परिषितः, परिषयः—'परिनिविभ्यः' इति षत्वम् । सेरुः—रुः । सेत्रम्—ष्ट्रन् । सितः—वर्णः 'अञ्जिघृसिभ्यः क्तः' इति संज्ञायां क्तः । सितिमा, सैत्यम्—ष्यञिमनिचौ । सिता—शर्करा । न सिता—असिता । सेतुः—तुन् । सीरः—लाङ्गलम्,'शुषिचिमि दीर्घश्चे'ति क्रनि दीर्घः । सीरस्य इदम्,तद्वहति वा—सैरिकः, ठक् ।

३ । शिञ्, निशाने । ( To sharpen )

निशानं तीक्ष्णीकरणम् । शि ( ञि ) अनिट्, सक, उ । परस्मै—शिनोति । शिनुयात् । शिनोतु, शिनुतात् । अशिनोत् । लुङ्—अशैषीत्, अशैष्टाम्, अशैषुः । शिशाय । शेता । शेष्यति । शिष्यात् । अशेष्यत् । आत्मने—शिनुते । शिन्वीत । शिनुताम् । अशिनुत । लुङ्—अशेष्ट, अशेषाताम्, अशेषत । शिश्ये । शेता । शेषीष्ट । शेष्यते । अशेष्यत ।

४ । डु मिञ्, प्रक्षेपणे । ( To throw )

मि ( डु, ञ् ) अनिट्, सक, उ । परस्मै—मिनोति । मिनुयात् । मिनोतु, मिनुतात् । अमिनोत् । अमासीत्, अमासिष्टाम्, अमासिषुः । ममौ, मिम्यतुः, मिम्युः । ममाथ, ममिथ ; मिम्यथुः, मिम्य । ममौ, मिम्यिव, मिम्यिम । माता । मास्यति । अमास्यत् । आत्मने—मिनुते । मिन्वीत । मिनुताम् । अमिनुत । लुङ्—अमास्त, अमासाताम्, अमासत । अमास्थाः, अमासाथाम्, अमाध्वम् । अमासि, अमास्वहि । मिम्ये । मिम्यिषे, मिम्यिढ्वे । मिम्यिवहे । माता । मास्यते । अमास्यत । सनादौ—मित्सति, मित्सते । मेमीयते । मेमेति, मेमयीति । मापयति । अमीमपत् ।

प्रमाप्य—यप् । प्रमयः, ईषत्प्रमयः । ( डु ) मित्रिमम्—त्रिमक् । मीरः—क्रन् । मित्वा । मितः । मितिः । प्रमाय । मयते इति अपि । मातीति माने । मिमीते इति ह्वादौ । मीयत इति दिवादौ ।

५ । चिञ्, चयने । ( To collect )

चि ( ञ् ) अनिट्, सक, उ । परस्मै—चिनोति । चिनुयात् । चिनोतु, चिनुतात् । चिनु, चिनुतात् । अचिनोत् । लुङ्—अचैषीत्, अचैष्टाम्, अचैषुः । चिकाय, चिचाय ;

चिक्यतुः ; चिच्यतुः ; चिक्युः, चिच्युः । चिकेथ, चिकयिथ। चिचेथ, चिचयिथ । चिक्यिव । चिच्यिव । चेष्यति । अचेष्यत्। चेता । चीयात् ।

आत्मने—चिनुते । चिन्वीत । चिनुताम् । अचिनुत। लुङ्—अचेष्ट, अचेषाताम्, अचेषत । चिक्ये, चिच्ये ; चिक्याते, चिच्याते ; चिक्यिरे, चिच्यिरे इत्यादि । चेष्यते । अचेष्यत। चेता । चिषीष्ट । सनादौ—चिकीषति-ते ; चिचीषति-ते। चेचीयते । चेचेति । चाययति, चापयति—'चिस्फुरोर्णौ' वेति आत्वपक्षे पुक् । अचीचयत्, अचीचपत् । प्रणिचिनोति-'नेर्गदे'ति णत्वम् ।

निकाय्यः—ण्यदायादेशौ आदिकत्वञ्च निपात्यते । सञ्चाय्यः—क्रतुः । परिचाय्यः—अग्निः । उपचाय्यः ।—'क्रतौ कुण्डपाय्यसञ्चाय्यौ'. 'अग्नौ परिचाय्योपचाय्यसमूह्याः' इति ण्यदायादेशश्च निपात्यते । निवासादिभ्योऽन्यत्र यति चेयमित्यादि। चित्यः—अग्निः । अग्निचित्या वर्त्तते—'चित्याग्निचित्ये च' इति कर्मणि च भावे यथाक्रमं निपात्यते । अग्निचित्-क्विप् । एवं श्येनचित् । निश्चयः—अप् । पुष्पप्रचायः घञ्। चौर्य्येण चेत् पुष्पप्रचयः,—अच् । निचीयन्तेऽस्मिन्निति-निकायः, ग्रामगृहादिः । आचीयन्तेऽस्मिन्निष्टका—आकायः, अग्निः । चीयन्तेऽस्मिन्नस्थ्यादीनि—कायः, शरीरम् । गोमयानामेकत्र राशीकरणम्—गोमयनिकायः 'निवासचितिशरीरोपसमाधानेष्वादेशश्च कः' इति घञादिकत्वञ्च । चीयतेऽसौ—चितिः, शरीरम्, पाण्यादि समुदायः । इष्टकनिचयः—अच् । भिक्षुनिकायः । * चितिः—क्तिन् । द्विचितीकः

* "संघे चानौत्तराधर्य्ये" इति घञ्, आदिकत्वञ्च, प्राणिनां समूहः संघः ।

—'शेषाद्विभाषे'ति कप् 'चितेः कपी'ति पूर्वपदस्य दीर्घः। आ-क्त—आचितम्। आचितं संभवत्यवहरति पचति वा —आचितीनः,आचितिकः—खठञौ। द्व्याचितिकः,द्व्याचितः-द्व्याचितः, द्व्याचितीनः—ठन्खौ। चित्रम्—औणादिकः क्रः। चित्रीयते—क्यच्। चित्वा। चिन्वन्। चिन्वती। चिन्वानाः। "कतीह मधुलिहानाश्चिन्वाना" इति। अप—अपचयः, चयः। अपचितिः—"पूजा नमस्यापचितिः" इत्यमरः। व्या—व्याप्तिः, संग्रहः, आच्छादनम्। उद्—उच्चयः संग्रहः समवायः। उप—उपचयः, वृद्धिः। नि—निचयः, व्याप्तिः। निर्—निश्चयः। परि—परिचयः, अभ्यासः, संस्तवः। प्र—प्रचयः, व्याप्तिः। वि—सञ्चयः, चिन्ता, अन्वेषणम्। सम्—सञ्चयः।

६। स्तृञ्, आच्छादने। (To cover)

स्तृ (ञ्) अनिट्, सक, उ। परस्मै—स्तृणोति, स्तृणुतः, स्तृण्वन्ति। स्तृणोषि। स्तृणोमि, स्तृण्वः, स्तृणुवः। स्तृणुयात्। स्तृणोतु, स्तृणुतात्। स्तृणु, स्तृणुतात्। स्तृणवानि। अस्तृणोत्। लुङ्—अस्तार्षीत्, अस्तार्ष्टाम्, अस्तार्षुः। तस्तार, तस्तरतुः, तस्तरुः। तस्तर्थ। तस्तर, तस्तार; तस्तरिव। स्तर्ता। स्तर्यात्। स्तरिष्यति। अस्तरिष्यत्।

आत्मने—स्तृणुते, स्तृण्वाते, स्तृण्वते। स्तृणुषे। स्तृण्वे। स्तृण्वीत। स्तृणुताम्। स्तृणुष्व। स्तृणवै। अस्तृणुत। लुङ्—अस्तृत, अस्तृषाताम्, अस्तृषत। अस्तरिष्ट, अस्तरिषाताम्, अस्तरिषत। लिट्—तस्तरे, तस्तराते, तस्तरिरे।

---

च द्वेधा भवति एकधर्मसमावेशेन औत्तराधर्य्येण च तत्रानौत्तराधर्य्यं इति पर्युदासादितरो गृह्यत इत्यौत्तराधर्य्ये भजेव। सूकरनिचय इति संघस्य प्राणिसमुदायत्वचपलात्।

तस्तरिषे। तस्तरिढ्वे, तस्तरिध्वे। तस्तरे, तस्तरिवहे। स्तृषीष्ट,स्तरिषीष्ट। स्तरिष्यते। अस्तरिष्यत।

सनादौ—तिस्तीर्षति,—ते। तास्तर्य्यते। तस्तर्त्ति, तस्तरीति इत्यादि। स्तारयति। अतिस्तरत्। स्तृत्वा। आस्तृत्य। स्तृतः। आ—आस्तरणम्।

७। कृञ्, हिंसायाम्। ( To kill )

कृ (ञ्) अनिट्, सक, उ। कृणोति, कृणुते। कृणुयात्, कृण्वीत। कृणोतु,कृणुताम्। अकृणोत्,अकृणुत। अकार्षीत्, अकृत; अकार्ष्टाम्, अकृषाताम्। चकार, चक्रतुः, चक्रुः। चकर्थ, चक्र। चकार, चकर; चकृव। चक्रे, चक्राते। चकृषे, चकृढ्वे। चक्रे, चकृवहे। कर्त्ता। क्रियात्, कृषीष्ट। करिष्यति—ते। अकरिष्यत्,अकरिष्यत। चिकीर्षति—ते। चेक्रीयते। चरीकर्त्ति इ। कारयति। अचीकरत्। तनादौ चुरादावप्ययम्।

८। वृञ्, वरणे। (To choose)

वृ (ञ्) सेट्, सक, उ। वृणोति, वृणुतः,वृण्वन्ति। वृणुते, वृण्वाते, वृण्वते। वृणुयात्, वृण्वीत। वृणोतु, वृणुताम्। अवृणोत्, अवृणुत। लुङ्—अवारीत्, अवारिष्टाम्, अवारिषुः। अवृत, अवरिष्ट, अवरीष्ट; अवृषाताम्, अवरिषाताम्, अवरीषाताम्; अवृषत, अवरिषत, अवरीषत। अवृथाः; अवरिष्ठाः, अवरीष्ठाः; अवृषाथाम्; अवरिषाथाम्, अवरीषाथाम्, अवृढ्वम्। अवरिध्वम्, अवरीध्वम्; अवरिढ्वम्, अवरीढ्वम्; अवृषि; अवरिषि, अवरीषि। अवृष्वहि, अवरिष्वहि, अवरीष्वहि। एवं महिपरेऽपि। लिट्—ववार, वव्रतुः, वव्रुः। ववरिथ, वव्रथुः, वव्र। ववार, ववर; ववृव, ववृम। वव्रे।

वव्रूषे, ववृढ्वे। ववृवहे। वरिता, वरीता। व्रियात्, वृषीष्ट, वरिषीष्ट, वरीषीष्ट। वरिष्यति, वरीष्यति; वरिष्यते, वरीष्यते। अवरिष्यत, अवरिष्यत, अवरीष्यत्; अवरीष्यत। वुवूर्षति—ते, विवरिषति—ते। विवरीषति—ते। वेव्रीयते। वर्वर्त्ति इत्यादि६। वारयति। वारयति यवेभ्यो गाम्—आप्तुमिष्यमाणस्यापादानत्वम्। प्रवृत्तिविघातो वारणम्। कण्टकैः परिवारयति वृक्षम्, परिवारयन्ति कण्टका वृक्षं स्वयमेव—'णि श्रन्थी'ति नात्र कर्म्मवद्भावे यक्चिणौ। अवीवरत्। कर्म्मणि—व्रियते। अव्रियत। अवारि, अवारिषाताम्, अवरीषाताम्, अवरिषाताम्, अवृषाताम्। कर्म्मकर्त्तरि—'अचः कर्म्मकर्त्तरी'ति चिणो विकल्पनात् सिजपि तत्र कर्त्तृवद्वा इट्, तस्य चेटो विकल्पः, पक्षे चिण्वदिट्, प्रक्षतस्येटो दीर्घविधानात् अस्य न दीर्घ इति। अवारि, अवृत, अवरिष्ट, अवरीष्ट, अवारिष्ट इति पञ्चरूपाणि। द्विवचनादौ चिण् (इच्) वर्ज्जं चातूरूप्यम्। ध्वमि तु कर्त्तृवत् पञ्चरूपाणि। चिण्वत (इज्वत्) इचि तु मूर्द्धन्यविकल्पेन अवृढ्वम्, अवरिध्वम्। ढ्वम्। अवरीध्वम् [ढ्वम्। अवरिढ्वम्, अवरीढ्वम्, अवारिढ्वम्, अवारिध्वम् [ढ्वम्] इति सप्तरूपाणि। स्वन्तात् तथाविधात् भूधातुवत्।

वृत्यः—क्यप्। वार्य्या—ऋत्विजः, ण्यत्। पतिंवरा—खच्। नीवारः—घञ्। अधान्ये—निवरः। प्रावरः, प्रवरः—उत्तरासङ्गः, 'वृणोतेराच्छादने' प्रोपसृष्टादघञपौ, घञि 'उपसर्गस्ये'ति दीर्घः। प्रवरा गौरिति 'अवद्यपण्ये'त्यादौ वर्य्येति निपातनं कर्य्यादिकस्य। वर्म्म—मनिन्। वर्म्मी—व्रीह्यादिः। वर्म्मिणोऽपत्यं—वार्म्मिकायणिः। वर्म्मणा सन्नह्यति संवर्म्मयति। वरूथः—ऊथन्। वर्षम्—सः। वर्णः—नः वर्णी—ब्रह्मचारी,

मत्वर्थीय इनिः। वरुणः—उनन्। वरुणानी—'इन्द्रवरुणे'ति ङीषानुकौ पुंयोगे। मित्रावरुणौ देवतेऽस्य—मैत्रावरुणः, अण्। वर्णुः—नदः, नुः। वरत्रः—अत्रन्, स्त्रियामीप्-वरत्री। वृङ् सम्भक्ताविति क्र्यादौ। तथा दीर्घान्तो अटविश वरणार्थस्तत्र। वृञ् आवरण इति चुरादौ।

८। धुञ्, कम्पने। ( To shake)

धु,(ञ) अनिट्, सक, उ। धुनोति, धुनुते। धुनुयात्, धुन्वीत। धुनोतु धुनुताम्। अधुनोत्, अधुनुत। अधौषीत्, अधोष्ट। दुधाव। दुधोथ। दुधविथ। दुधुवे। दुधुविषे। धोता, धोतासि, धोतासे। धूयात्, धोषीष्ट। धोष्यति, धोष्यते। अधोष्यत्; अधोष्यत। दुधूषति, दुधूषते। दोधूयते। दोधोति। धावयति। अदूधवत्। धुत्वा। धुतः, धुतवान्। धुनिः—निः, कित्त्वादगुणः। * धूनयति—णौ नुक्। दीर्घान्तः क्र्यादौ युजादौ च। धू विधूनन इति तुदादौ च। स्वादय उभयतो भाषा वृञ् वर्ज्जमनुदात्ताः। तस्यानुदात्तमध्ये पाठ ऋकारान्तो-भयतोभाषानुरोधेन।

---

* अत्र स्वामी तु ऊस्वान्तमत्सु पठित्वा प्रयोगवशाद्दीर्घान्तमप्याह। मैत्रेयकाश्यपौ तु दीर्घान्तमाहतुः। उभयमपीति चान्द्रा इति सुधाकरः। दीर्घान्तस्य तेनैव प्रयोगो दर्शितः। "ऊर्द्ध्वं धूनोति वायुर्विवृतशिवशिरः स्रोषितकुञ्जेष्वि"ति। तत्र दीर्घान्तपाठे स्वरत्यादि सूत्रेणेड्विकल्पः। श्र्युकःकित्यनेन पुरस्तात् प्रतिषेधकाण्डारम्भ-सामर्थ्याद् धूत्वा, धूतः। दुधूषतीत्यादौ 'श्र्युकः किति' 'सनिग्रहगुहोश्चे'तीण्निषेधो भवति। लिटि त्वसुं प्रतिषेधं बाधित्वा क्रादिनियमान्नित्यमिट्। न च क्रादिनियमस्य स्वरत्यादि-विकल्पः परत्वाद्बाधक इति मन्तव्यम्, तस्य 'श्र्युकः किती'त्यनेन, पुनरपि बाधप्रसङ्गात्। धूनोति, धूनुते। धूनुयात् धून्वीत। अधूनोत्, अधूनुत। अधावीत्, अधाविष्टाम्; अधविष्ट; अधोष्ट। "स्तुसुधूञ्भ्य" इति परस्मैपदे सिचो नित्यमिट्। अन्यत्र सर्वत्र स्वरत्यादिनेड्विकल्पः।

## परस्मैपदिनः ।

१० । टु दु, उपतापे । ( To give pain )

दु, ( टु ) अनिट्, अक, प । दुनोतीत्यादि धुनोतिवत् । दावः—कर्त्तरि णः । दवः—अच् । ( टु ) दवथुः—अथुच् । दुत्वा । दुतः, दुतवान् । *

११ । हि, गतौ वृद्धौ च । ( To go, to grow )

हि, अनिट्, प । हिनोति । हिनुयात्, हिनोतु । अहिनोत्, अहैषीत्, अहैष्टाम्, अहैषुः । जिघाय, जिघ्यतुः, जिघ्युः । जिघयिथ, जिघेथ ; जिघ्य । जिघ्यिव । हेता । हीयात् । हेष्यति । अहेष्यत् । जिघीषति । जेघीयते । जेघेति । हाययति । अजीहयत् । प्रजिघाययिषति । हित्वा । विहाय । हितिः । हितः । संहितम्, सहितम्—'समो वा हिततयो'रिति मलोपविकल्पः । देवदत्तस्य हितं, देवदत्ताय वा—'चतुर्थी चाशिष्यायुष्ये'ति षष्ठीचतुर्थ्यौ । संहितोरुः—जङ् । लयः—पचाद्यच् । स्त्रियां—हयी । हेतिः—क्तिनि निपातितः । हेतुः—तुः । अन्नेन हेतुना वसति । अन्नाय हेतवे, अन्नाद्धेतोः, अन्नस्य हेतोः, अन्ने हेतौ इति वा—'निमित्तकारणहेतुषु सर्वासां प्रायोदर्शन'मिति सर्वा विभक्तयः । प्रायोग्रहणादसर्वनाम्नः प्रथमाद्वितीये न स्तः । सर्वनाम्नस्तु सर्वा एवेति विशेषः ।

१२ । पृ, प्रीतौ । ( To please )

पृ, अनिट्, अक, प । पृणोति । पृणुयात् । पृणोतु ।

---

* समियुद्रुव इति घञ्विधौ दुसाहचर्यात् निरनुबन्धकत्वाच्च दवतेरेव ग्रहणमिति तस्य अवेव भवति—सन्दव इति । स्वादौ दुग्वोर्दीर्घश्चेत्यत्र सानुबन्धकत्वात् अस्य न ग्रहणम्, निरनुबन्धकत्वात्तव दु द्रु गतावित्यस्यैव ग्रहणम् । तथाच माघे—"सदुतया दुतया" इति ।

अपृणोत्। अपार्षीत्, अपार्ष्टाम्, अपार्षुः। पपार, पप्रतुः, पप्रुः। पपर्थ, पप्रथुः, पप्र। पपार, पपर; पप्रिव। पर्त्ता। प्रियात्। परिष्यति। अपरिष्यत्। पुपूर्षति। पेप्रीयते। पारयति। अपीपरत्। प्रियत इति दिवादौ। पिपर्त्तीति जुहोत्यादौ।

१३। स्पृ, प्रीतिपालनयोः। ( To gratify, to defend

स्पृ, अनिट्, सक, प। स्पृणोति इत्यादि। पस्पार, पस्परतुः पस्पर्थ—'ऋतश्च संयोगादेरि'ति किति लिटि गुणः। स्पर्त्ता इत्यादि। स्मृ इत्येके। इमौ छान्दसाविति पारायणे।

१४। आपॢ, व्याप्तौ। ( To pervade )

आप्, ( ॢ ) अनिट्, सक, प। लट्—आप्नोति, आप्नुतः आप्नुवन्ति। आप्नोषि, आप्नुथ। आप्नोमि, आप्नुवः। आप्नुमः। लिङ्—आप्नुयात्, आप्नुयाताम्, आप्नुयुः। लोट्—आप्नोतु, आप्नुतात्; आप्नुताम्, आप्नुवन्तु। आप्नुहि, आप्नुतात्; आप्नुतम्, आप्नुत। आप्नुवानि, आप्नुवाव—वाम। लङ्—आप्नोत्, आप्नुताम्, आप्नुवन्। लुङ्—आपत्, आपताम् आपन्। आपः, आपतम्, आपत। आपम्, आपाव, आपाम। लिट्— आप, आपतुः, आपुः। आपिथ, आपथुः, आप। आप, आपिव, आपिम। आप्स्यति। आप्यात्। आप्ता। कर्म्मणि— आप्यते। आप्येत। आपि। आप्सीष्ट। ईप्सति। लुङ्— ऐप्सत्। लुङ्—ऐप्सीत्। आपयति। मा भवानापिपत्।

प्रापय्य, प्राप्य—ल्यन्तात् ल्यप्। प्राप्यम्—ण्यत्। आप्तिः—क्तिन्। आप्ता। आप्तः। आप्तवान्। जीविकां प्राप्तः —प्राप्तजीविकः; जीविकाप्राप्त इति वा—द्वितीयाश्रिते'त्यादिना

'प्राप्तापन्ने च द्वितीयया' इति च समासः। आपः—'आप्नोतेर्ह्रस्वश्चे'ति क्विप्, ह्रस्वः। द्विधा गता, अन्तर्गता आपो यस्मिन्—द्वीपम्, परीपम्, अन्तरीपम् द्व्यन्तरुपसर्गेभ्योऽप ईदि-त्यादेरीकारादेशः। समापः—'समाप इत्यप्रतिषेध' इतीत्वा-भावः। अनूपम्—'ऊदनोर्देशे' इत्यप आदेशकारः।

अदेशेऽन्वीपम्, समुद्रे यद्द्वीपं तत्र भवादि—द्वैप्यम्, द्वैपायनो व्यासः—नड़ादित्वात् फक्। द्वीपशब्देन द्वीपस्थो मुनिरुच्यते। अनन्तरापत्येऽप्यस्मिन् गोत्रत्वमारोपात्। विष्णुद्वे आप्यमव्ययमित्यत्राप्शब्दो मयडर्थे दृश्यते। तथा अपाकारेष्वाप्याः—परमाणव इति अत्र प्रत्ययो न दृश्यते। तथाच स्वामी—आप्यन्तु लभ्यादिति। परिपूर्वोऽयं रक्षणेऽपि, तथाच भवभूतिः—"पर्य्याप्नोति सुकृतं महाभाग" इति।

१५। शक्लृ, शक्तौ। ( To be able )

शक, ( लृ ) अनिट्, सक, प। शक्नोति, शक्नुतः, शक्नुवन्ति। शक्नुयात्। शक्नोतु, शक्नुतात्; शक्नुताम्, शक्नुवन्तु। शक्नुहि, शक्नुतात्। शक्नवानि, शक्नवाव। अशक्नोत्। लुङ्—अशकत् इत्यादि शक्यतिवत्। विद्यासु शिक्षते 'शिक्षेर्जिज्ञासायामि'ति तङ्, विद्याविषये ज्ञाने शक्तो भवितुमिच्छतीत्यर्थः। शक्तो घटः कर्त्तुं, शकितः इति वा इड्विकल्पः। शक्यम्—यत्। शकलम्—कलः। शक्रः—रः। शक्तः—प्रियंवदः, क्तः।

१६। राध, साध, संसिद्धौ। ( To accomplish )

राध्, साध्, अनिट्, अक, प। राध्नोति, राध्नुतः, राध्नुवन्ति। राध्नुवः। राध्नुयात्। राध्नोतु। अराध्नोत्। शेषं राध्यतिवत्। हिंसार्थत्वे तु 'राधो हिंसाया'मिति किति लिटि थलि च सेत्वेत्वाभ्यासलोपौ। अपरेधतुः। अपरेधिथेत्यादि,

तथा सन्यपि—राधो हिंसायां 'सन्यच इस्वत्तास्य' इति अच, इस्भावेऽभ्यासलोपे 'स्को'रिति सलोपे च—प्रतिरित्सतीति। साध्—साध्नोति। साध्नुयात्। साध्नोतु। असाध्नोत्। असात्-सीत्, असाद्धाम्, असात्सुः। ससाध, ससाधतुः, ससाधुः। ससाधिथ। ससाधिव। साद्धा। साध्यात् सात्स्यति। असात्स्यत्। सिषात्सति। सासाध्यते। सासाद्धि। साध-यति। असीषधत्। साधनः—ल्युः। साधुः—उण्। कात्या-यास्तु अषोपदेशं पठन्ति, तत् षोपदेशलक्षणविरुद्धम् इति माधवः। मातरि साधुः—साधुर्देवदत्तो मातरं प्रति।

## आत्मनेपदिनः।

१७। अशू, व्याप्तौ संघाते च। ( To pervade, to heap)

अश् ( ऊ ) वेट्, सक, आ। अश्नुते, अश्नुवाते, अश्नुवते। अश्नुषे, अश्नुध्वे। अश्नुवे, अश्नुवहे। अश्नुवीत, अश्नुवीथाः अश्नु-वीयाथाम्। अश्नुताम्। अश्नुष्व। आश्नुत। आश्नुथाः। आश्नुवि। लुङ्—आशिष्ट, आष्ट ; आशिषाताम्, आक्षाताम् ; आशिषत, आक्षत। आष्ठाः, आशिष्ठाः ; आशिषाथाम्, आक्षाथाम् ; आड्-ढ्वम्। आशिध्वम् [दध्वम्] आक्षि, आशिषि ; आक्ष्वहि, आशि-ष्वहि। आनशे, आनशाते, आनशिरे। आनशिषे, आनक्षे, आन-शिध्वे, आनड्ढ्वे। आनशिवहे; आनश्वहे ; आनशिमहे, आन-श्महे। अष्टा, अशिता। अशिषीष्ट, अक्षीष्ट। अक्ष्यते, अशि-ष्यते। आशिष्यत, आक्ष्यत। अशिशिषते। आशाश्यते 'सूचि-सूत्री'त्यादिना यङ्। तत्र ह्यश्नोतेरश्नातेश्च ग्रहणमुक्तं पद-मञ्जर्य्यादौ। एवं पारायणादौ आत्रेयादावपि। आष्टि२। अटतिवत् प्रक्रिया।

अष्ट्वा, अशित्वा। अष्टः। अष्टवान्—'यस्य विभाषे'त्य

नित्यत्वम्। रशना। 'अशे रश चे'ति युचि रशादेशः। आशुः व्रीहिविशेषः, उण्। शीघ्रपर्य्यायस्त्वयमव्ययम्। श्वशुरः—'शाव-शेराप्ता'विति शुशब्दोपपदे उरन्प्रत्ययः। शुशब्द आशुपर्य्यायः। श्वशुर्य्यः—अपत्यार्थे यत्। श्वश्रूः—'श्वशुरस्योकाराकारयो-र्लोपश्चे'त्युकाराकारयोर्लोपः,ऊङ्प्रत्ययश्च।श्वश्रूश्च श्वशुरश्च—श्वशुरौ 'श्वशुरः श्वश्र्वे'ति पक्षे श्वशुरस्य शेषः। अक्षरम्—'अशेः सरन्' इति सरन्। अष्टौ(अष्टन्)—कनिन्। अष्टावक्रः—'अष्टनः संज्ञायामित्युत्तरपदे दीर्घः। अष्टाभिर्गोभिर्युक्तं शकटम्—अष्टागवं 'गवि च युक्ते' विभाषायामष्टनो दीर्घ" इति दीर्घः। अष्टाविंशतिः—द्व्यष्टनः संख्यायामबहुव्रीह्यशीत्यो'रित्यशीति-वर्ज्जिते संख्यायामुत्तरपदे दीर्घः।अबहुव्रीहौति वचनादष्टनवा इत्यत्र न भवति। 'प्राक्शता' दिति वचनादष्टशतमित्यादावपि न भवति। अष्टमो भागः—आष्टमः, अष्टमः—'षष्ठाष्टमाभ्यां ञ चे'ति भागे विवक्षिते ञप्रत्ययश्चकारादंश्च। अश्वः—क्वन्। अश्वानां समूहः—अश्वीयम्,-छः। पक्षेऽण्—आश्वम्। अश्वस्य निमित्तं संयोग उत्पातो वा—आश्विकः, ठक्। अश्वेनैकाहेन गम्यते—अश्वीनः, खञ्। अश्वस्यापत्यम्—आश्वायनः 'अश्वादिभ्यः फञ्' इति फञ्। गवाश्वम् गवाश्व-प्रभृतीनि चे'ति नित्यमेकवद्भावः। अश्वस्यति वड़वा। मैथुनाय —क्यपि परतो'ऽश्वचरें' त्यसुक्। अश्वतरः—गर्दभादश्वाया-मुत्पन्न उच्यते, ष्टरच्। अत्तः 'अशेर्देवन' इति सप्रत्ययः। अक्ष परि—अक्षण[न] तथा पतितं यथा जय इति 'अक्षशलाके-त्यादिना तृतीयान्तस्याव्ययीभावः। अक्षि, अक्षिणी—'अशे-र्निदिति क्सिप्रत्ययः।

१८। ष्टिघ, आस्कन्दने। ( To assil )

ष्टिघ, सेट्,सक,आ। स्तिघ्नुते। स्तिघ्नुवीत। स्तिघ्नुताम्,

अस्तिघ्नुत। अस्तेघिष्ट। तिष्टिघे। स्तेघिता। स्तिघिषीष्ट। स्तेघिष्यते। अस्तेघिष्यत। तिष्टिघिषते, तिष्टेघिषते। स्तिघित्वा, स्तेघित्वा। तेष्टिघ्यते तेष्टिघीति, तेष्टेग्धि। स्तेघयति। अतिष्टिघत्। स्तिघितः। स्तिघितवान्।

## परस्मैपदिनः।

१९। तिक, तिग च। ( So assail )

चकारादास्कन्दन इत्यनुषज्यते। तिक, तिग, सेट्, सक, प। तिक्नोति। तिक्नुयात्। तिक्नोतु। अतिक्नोत्। अतेकीत्। तितेक। तितेकिथ। तितिकिव। तेकिता। तिक्यात्। तेकिष्यति। अतेकिष्यत्। तितेकिषति। तेतिक्यते। तेतिकीति, तेतेक्ति। तेकयति। अतीतिकत्। तिकः—कः। तैकायनिः—फिञ्। तैकायनश्च कैतवायनश्च तिकतिकाः 'तिककितवादिभ्यो द्वन्द्वे' इति बहुषु लुक्। तिग्—तिग्नोतीत्यादि तिक्नोतिवत्।

२०। षघ, हिंसायाम्। ( To kill )

सघ्, सेट्, सक, प। सघ्नोति। सघ्नुयात्। सघ्नोतु। असघ्नोत्। असघीत्, असाघीत्। ससाघ, सेघतुः। सेघिथ। सेघिव। सघिता। सघ्यात्। सघिष्यति। असघिष्यत्। सिसघिषति। सासघ्यते। सासघीति, सासग्धि। साघयति। असीषघत्।

२१। ञि धृषा प्रागल्भ्ये। ( To be boid or cofident )

धृष, ( ञि आ ) सेट, अक, प। धृष्णोति, धृष्णुयात्। धृष्णोतु। अधृष्णोत्। अधर्षीत्। दधर्ष, दधृषतुः दधर्षिथ। दधृषिव। धर्षिता। धृष्यात्। धर्षिष्यति। अधर्षिष्यत्। दिधर्षिषति। दरीधृष्यते। दरीधृषीति, दरीधृष्टि। धर्षयति।

अदीधृषत्, अदधर्षत्। धृषः—क्वप्। दधृक्, दधृषौ 'ऋत्विग्' इत्यादौ निपातनात् क्विपि द्वित्वम्, पदान्ते च कुत्वम्। धृष्णुः—क्नुः। धृष्णक्—नजिङ्। दुर्द्धर्षणः—युच्। धर्षित्वा—क्त्वाच्। धृष्टः—धृषणः 'धृषशसी वैयात्ये' इत्यनिट्त्वम्—वैयात्यादन्यत्र—धर्षितः। धृष्टं, धर्षितम्। प्रधृष्टः, प्रधर्षितः—ञीत्त्वं वर्त्तमाने क्तार्थम्।

२२। दन्भु, दम्भने। ( To deceive )

दम्भ्, (उ) सेट्, सक, प। दभ्नोति। दभ्नुयात्। दभ्नोतु। अदभ्नोत्। अदम्भीत् ददम्भ, देभतुः, देभुः ददम्भिथ। देभिव। दम्भिता। दभ्यात्। दम्भिष्यति। अदम्भिष्यत्। दिदम्भिषति, धीप्सति। दादभ्यते। दादम्भि२। दम्भयति। अददम्भत्। दम्भित्वा, दब्ध्वा—उदित्त्वादिड्विकल्पः। दब्धः, दब्धवान् 'यस्य विभाषे'त्यनिट्त्वम्। दब्धिः—क्तिन्। दम्भः।

२३। ऋधु, वृद्धौ। ( To increase )

ऋध्, (उ) सेट्, सक प। ऋध्नोति। ऋध्नुयात्। ऋध्नोतु। आर्ध्नोत्। शेषम् ऋध्यतिवत्। इत आगणान्तात् छन्दसि।

२४। अह, प्राप्तौ। ( To pervade )

अह्, सेट्, सक, प। अह्नोतीत्यादि। अयं सर्वैर्नाद्रियते।

२५। दघ, घातने पालने च। ( To deslary, to protect )

दघ्, सेट्, सक, प। दघ्नोतीत्यादि।

२६। चमु, भक्षणे। ( To eat )

चम्, (उ) सक, सेट्, प। चम्नोतीत्यादि।

२७। रि, क्षि, चिरि, जिरि, दाश, दृ, हिंसायाम्। ( To kill)

रि, क्षि, चिरि, जिरि, दाश्, दृ, सेट्, अनिट्, सक, प।

रिणोति। च्चिणोति, अयं भाषायामपि। 'न तद्यशः शस्त्रभृतां
च्चिणोति।' चिरिणोतीत्यादि। दुर्गस्तु—तिक, तिग, षघ रिवि
चिरि जिरि दाश. हृ दुङ. जिघांसायामिति पठतीति माधवः।
इति स्वादयः।

## अथ तुदादयः।

### उभयपदिनः।

१। तुद, व्यथने। (To pain)

तुद, अनिट्, सक, उ। लट्—तुदति, तुदतः, तुदन्ति।
तुदसि, तुदथः तुदथ। तुदामि, तुदावः, तुदामः। तुदते,
तुदेते, तुदन्ते। तुदसे, तुदेथे, तुदध्वे। तुदे, तुदावहे, तुदा-
महे। लिङ—तुदेत, तुदेताम्, तुदेयुः। तुदेः तुदेतम्,
तुदेत। तुदेयम्, तुदेव, तुदेम। तुदेत, तुदेयाताम्, तुदेरन्।
तुदेथाः, तुदेयाथाम्, तुदेध्वम्। तुदेय, तुदेवहि, तुदेमहि।
लोट्—तुदतु, तुदताम्; तुदतात्, तुदन्तु। तुद, तुदतात्;
तुदतम्, तुदत। तुदानि, तुदाव, तुदाम। तुदताम्, तुदेताम्,
तुदन्ताम्। तुदस्व, तुदेथाम्, तुदध्वम्। तुदै, तुदावहै, तुदा-
महै। लङ—अतुदत, अतुदताम्, अतुदन्। अतुदः, अतुदतम्
अतुदत। अतुदम्; अतुदाव, अतुदाम। अतुदत, अतुदेताम्,
अतुदन्त। अतुदथाः, अतुदेथाम्, अतुदध्वम्। अतुदे, अतुदा-
वहि, अतुदामहि।

लुङ—अतौत्सीत्, अतौत्ताम्, अतौत्सुः। अतौत्सीः,
अतौत्तम्, अतौत्त। अतौत्सम्, अतौत्स्व, अतौत्स्म। अतुत्त,
अतुत्साताम्, अतुत्सत। अतुत्थाः, अतुत्साथाम्, अतुद्ध्वम्।
अतुत्सि, अतुत्स्वहि, अतुत्स्महि। लिट्—तुतोद, तुतुदतुः,
तुतुदुः। तुतोदिथ, तुतुदथुः, तुतुद। तुतोद, तुतुदिव, तुतु-
दिम। तुतुदे, तुतुदाते, तुतुदिरे। तुतुदिषे, तुतुदाथे,

तुतुदिध्वे । तुतुदे, तुतुदिवहे, तुतुदिमहे । लुट्—तोत्ता, तोत्तारौ, तोत्तारः । तोत्तासे, तोत्तासाथे, तोत्ताध्वे । लृट्—तोत्स्यति, तोत्स्यतः, तोत्स्यन्ति । तोत्स्यते, तोत्स्येते, तोत्स्यन्ते । आशीः—तुद्यात्, तुद्यास्ताम्, तुद्यासुः । तुत्सीष्ट, तुत्सीयास्ताम्, तुत्सीरन् । लृङ्—अतोत्स्यत्, अतोत्स्यत ।

सनादौ—तुतुत्सति, तुतुत्सते । तोतुद्यते । तोतुदीति, तोतोत्ति । तोदयति । अतूतुदत् । तिलन्तुदः, विधुन्तुदः, अरुन्तुदः—खश् । तोत्त्रम्—ष्ट्रन् । प्रतोदः—घञ् । तुत्त्वा—क्त्वाच् । प्रतुद्य—ल्यप् । तुन्नः, तुन्नवान्—निष्ठा । तुत्थम्—थक् ।

२ । नुद, प्रेरणे । ( To throw )

नुद, अनिट्, सक, उ । नुदति, नुदते । प्रणुदति, प्रणुदते 'उपसर्गादसमासेऽपी'ति णत्वम् । सर्वं तुदतिवत् । नुत्त्वा । नुत्तः नुन्नः । नुत्तवान्, नुन्नवान्—'नुदविदे'ति नत्वविकल्पः । काकुजिह्वा साम्भिन्नुद्यते इति—काकुदं, तालु ।—'घञर्थे कविधानमि'ति कः, पृषोदरादित्वान्नुशब्दलोपः । शोकापनुदः—कः । * अप—अपनोदनम् । निर्—निर्णोदनम्, प्रत्याख्यानम्, खण्डनम्, आघातः । प्र—प्रेरणम् । वि-णिच्—विनोदनम्, प्रीणनम्, यापनम्, दूरीकरणम् । "वित्तं तेन विनोदय चित्तम्" इति मोहमुद्गरे । विनोदः । विनोदिनी । विनोदकः ।

---

* अयं परस्मैपदिष्वपि पठ्यते, तेनायं भाषायां परस्मैपद्येवेति वर्द्धमानः । स्वाम्यपि तथा परस्मैपदिष्वेवासु पपाठ । उभयपदमात्रे यमेवं याद्यनेकव्याख्यानविरुद्धम्, यदाहुः—उभयपदिषु पठितस्यास्य पुनः परस्मैपदिषु पाठः कर्त्रभिप्रायेऽपि परस्मैपदार्थ इति माधवः । "नुनुदे तनुकण्डु पण्डितः" इति नैषधे । परमतानुवादेनास्य उभयपदिषु पाठ इति रमानाथः । "नृपतेर्व्यजनादिभिस्तमो नुनुदे" । रघु ८।४१

३। दिश, अतिसर्जने। ( To order )

अतिसर्जनं दानम्, आदेशः, निर्देशः, कथनम्। दिश, अनिट् सक, उ। दिशति, दिशते। दिशेत्, दिशेत। दिश, दिशतात्; दिशताम्। अदिशत्, अदिशत। लुङ्—अदिक्षत्, अदिक्षताम्, अदिक्षन्। अदिक्षः। अदिक्षम्, अदिक्षाव। अदिक्षत, अदिक्षाताम्, अदिक्षन्त। अदिक्षथाः। अदिक्षि, अदिक्षावहि। लिट्—दिदेश, दिदिशतुः दिदिशुः। दिदेशिथ, दिदिशथुः। दिदेश, दिदिशिव। दिदिशे, दिदिशाते, दिदिशिरे। दिदिशिषे। दिदिशिवहे। देष्टा। देक्ष्यति, देक्ष्यते। दिश्यात्, दिक्षीष्ट। अदेक्ष्यत्, अदेक्ष्यत। दिदिक्षति, दिदिक्षते। देदिश्यते। देदिशीति, देदेष्टि। देशयति। अदीदिशत्।

दिक्, दिशौ, दिशः—क्विप्। प्रतिदिशम्—वीप्सायामव्ययीभावः, अव्ययीभावे 'शरत्प्रभृतिभ्यः' इति टच्समासान्तः। दिशा—'वष्टि भागुरी'ति वचनात् टाप्। दिशि भवम्—दिश्यम् 'दिगादिभ्यो यदि'ति यत्। नामादेशं युध्यते—णमुल्। नामादिश्य युध्यते—क्त्वाच्। दिष्टम्—क्तः। दैष्टिकः—ठक्। दिष्टिः—संज्ञायां क्तिच्। दिशति तमिति—देशः, घञ्। प्रदेशिनी—णिनिः। क्त्वाच्—दिष्ट्वा। ल्यप्—प्रदिश्य। तुम्—देष्टुम्। अप-अपदेशः, व्यप—व्यपदेशः छलः। अति—अतिदेशः, आरोपः। आ—आदेशः, आज्ञा। प्रत्यादेशः, निराकरणम्। उद्—उद्देशः उप—उपदेशः। नि—निदेशः शासनम्। प्र—प्रदानम्, निर्देशः। निर्—निर्देशः, कथनम्, विधानम्, आदेशः। सम्—सन्देशः, दानम्। "भ्रातरे राज्यं सन्दिश्य" भट्टिः ६।१४१।

४। भ्रस्ज, पाके। ( To parch )

भ्रस्ज्, अनिट्, सक उ। भृज्जति, भृज्जतः, भृज्जन्ति।

भृज्जसि। भृज्जामि। भृज्जति। भृज्जसे। भृज्जे। भृज्जेत्,भृज्जेताम्, भृज्जेयुः। भृज्जेत, भृज्जेयाताम् भृज्जेरन्। भृज्जतु, भृज्जतात्; भृज्जताम्। अभृज्जत्, अभृज्जताम्,अभृज्जन्। अभृज्जत, अभृज्जेताम् अभृज्जन्त। लुङ्—अभार्क्षीत्; अभार्ष्टाम्, अभार्क्षुः। अभार्क्षीः, अभार्ष्टम्, अभार्ष्ट। अभार्क्षम्,अभार्क्ष्व, अभार्क्ष्म। अभ्राक्षीत्, अभ्राष्टाम्, अभ्राक्षुः इत्यादि। अभर्ष्ट, अभर्क्षाताम्, अभर्क्षत। अभर्ष्ठाः, अभर्क्षाथाम्, अभर्ड्ढ्वम्। अभर्क्षि,अभर्क्ष्वहि। अभ्रष्ट,अभ्रक्षाताम्, अभ्रक्षत। अभ्रष्ठाः, इत्यादि। बभर्ज, बभर्जतुः, बभर्जुः। बभर्जिथ, बभर्ष्ठ; बभर्जथुः, बभर्ज। बभर्जिव। बभर्जे, बभर्जाते, बभर्जिरे। बभर्जिषे। बभ्रज्ज, बभ्रज्जतुः, बभ्रज्जः। बभ्रज्जिथ, बभ्रष्ठ; बभ्रज्जथुः। बभ्रज्ज, बभ्रज्जिव। बभ्रज्जे, बभ्रज्जाते बभ्रज्जिरे। बभ्रज्जिषे। भर्ष्टा, भ्रष्टा। भृज्ज्यात्, भृज्ज्यास्ताम्। भर्क्षीष्ट, भर्क्षीयास्ताम्; भ्रक्षीष्ट, भ्रक्षीयास्ताम्। भर्क्ष्यति, भर्क्ष्यते; भ्रक्ष्यति,भ्रक्ष्यते। अभर्क्ष्यत्;अभर्क्ष्यत;अभ्रक्ष्यत्,अभ्रक्ष्यत। बिभर्क्षति,—ते; बिभ्रक्षति,—ते; बिभर्जिषति,—ते। बिभ्रज्जिषति—ते। बरीभृज्ज्यते। बाभृष्टि२। भर्जयति, भ्रज्जयति। अबभर्जत्, अबभ्रज्जत्। भर्ग्यः, भ्रज्ज्यः—ण्यत्। भर्गः,भ्रज्जः—घञ्। भर्गस्यापत्यं—भार्गायणः,फञ्। भार्गिः—इञ्। भृष्टः, भृष्टवान्। भृष्टिः। भृष्ट्वा। प्रभृज्य। भृगुः—'प्रथिम्रदिभ्रस्जां सम्प्रसारणं सलोपश्च'त्यु प्रत्ययः, सम्प्रसारणं, सलोपः, कुत्वञ्च। भृगोरपत्यं—भार्गवः। बहुत्वे तु—भृगवः। भ्राष्ट्रम्—ष्ट्रन्। भ्रष्टम्, भर्ष्टुम्। भ्रज्जनम्, भर्जनम्। णिच्-क्त—भर्जितः। भर्जित इति अपि गतम्।

५। क्षिप, प्रेरणे। ( To throw )

क्षिप, अनिट्, सक, उ। क्षिपति, क्षिपते। प्रतिक्षिपति,

अतिक्षिपति, अभिक्षिपति—'अतिप्रत्यभिभ्यः क्षिप' इति क्रियाफलस्य कर्त्तृगामित्वेऽपि परस्मैपदम्। इदञ्च शुद्धे कर्त्तरि, कर्म्मकर्त्तरि तु तङ् भवत्येव—अभिक्षिपत इति। क्षिपेत्, क्षिपेत। क्षिपतु, क्षिपताम्। अक्षिपत्, अक्षिपत। अक्षैप्सीत्, अक्षैप्ताम्, अक्षैप्सुः। अक्षिप्त; अक्षिप्साताम्, अक्षिप्सत। चिक्षेप चिक्षेपिथ चिक्षिपिव। चिक्षिपे। चिक्षिपिषे। क्षेप्ता। क्षिप्यात्, क्षिप्सीष्ट। क्षेप्सीष्ट। क्षेप्स्यति, क्षेप्स्यते। अक्षेप्स्यत्, अक्षेप्स्यत। चिक्षिप्सति—ते। चेक्षिप्यते। चेक्षिपीति, चेक्षेप्ति। क्षेपयति। अचिक्षिपत्। क्षिप्यतिवत् क्तप्रयोगाः।

६। क्षुष विलेखने। ( To draw )

क्षुष, अनिट्, सक, उ। क्षुषति, क्षुषते। क्षुषेत्, क्षुषेत। क्षुषतु, क्षुषताम्। अक्षुषत्, अक्षुषत। लुङ—अक्षुक्षत्, अक्षुक्षताम्, अक्षुक्षन्। अक्षुक्षः, अक्षुक्षतम्, अक्षुक्षत। अक्षुक्षम्, अक्षुक्षाव। अक्षार्क्षीत्, अक्षार्ष्टाम्, अक्षार्क्षुः। अक्षार्क्षीः, अक्षार्ष्टम्, अक्षार्ष्ट। अक्षार्क्षम्, अक्षार्क्ष्व। अक्षाक्षीत्, अक्षाष्टाम्, अक्षाक्षुः। अक्षाक्षीः इत्यादि। आत्मने—अक्षुक्षत, अक्षुक्षाताम्, अक्षुक्षन्त। अक्षुक्षथाः, अक्षुक्षाथाम्, अक्षुक्षध्वम्। अक्षुक्षि, अक्षुक्षावहि। अक्षुष्ट, अक्षुक्षाथाम्, अक्षुक्षत। अक्षुष्ठाः, अक्षुक्षाथाम्, अक्षुड्ढ्वम्। अक्षुक्षि, अक्षुक्ष्वहि। लिट—चक्षर्ष, चक्षुषतुः, चक्षुषुः। चक्षर्षिथ। चक्षुषे,। चक्षुषाते, चक्षुषिरे इत्यादि। क्षष्टा, क्षर्ष्टा। क्षक्ष्यति, कर्क्ष्यति; क्षक्ष्यते, कर्क्ष्यते। अक्षक्ष्यत्, अकर्क्ष्यत्; अक्षक्ष्यत, अकर्क्ष्यत। आशी—क्षुष्यात्, क्षुक्षीष्ट। सनादि—चिक्षुक्षति-ते। चरीक्षुष्यते। चरीक्षुष्टि इत्यादि। कर्षयति। अचकर्षत्, अचीक्षुषत्।

क्रुष्टः । क्रुष्टवान् । क्रुष्टिः । कर्ष्टुम्, क्रष्टुम् । कर्षणम् । * स्वादौ विशेषो द्रष्टव्यः ।

## परस्मैपदी ।

७ । ऋषी, गतौ । (To go)

ऋष् ( ई ) सेट्, अक, प । ऋषति, प्रार्षति । ऋषेत् । ऋषतु । आर्षत् । आर्षीत् । मा भवानर्षीत् । आनर्ष, आनृषतुः आनृषुः । आनर्षिथ । आनृषिव । अर्षिता । ऋष्यात् । अर्षिष्यति । आर्षिष्यत् । अर्षिषिषति । अर्षयति । आर्षिषत् । अर्षित्वा । ( ई ) ऋष्टः, ऋष्टवान् । ऋषभः—'ऋषिवृषिभ्यां किदि'त्यभच्प्रत्ययः । आर्षभ्यः—वत्सः, अरः । ऋषभतरः—भारवहने मन्दशक्तिरनड्वान्, 'वत्सोक्षे'त्यादिना ष्टरन् । ऋच्छः —सक् ।

## आत्मनेपदिनः ।

८ । जुषी, प्रीतिसेवनयोः । (To please, to devote)

जुष् ( ई ) सेट्, सक, आ । जुषते । जुषेत । जुषताम् । अजुषत । अजोषिष्ट । जुजुषे । जोषिता । जोषिषीष्ट । जोषिष्यते । अजोष्यत । जुजुषिषते, जुजोषिषते । जोजुष्यते । जोजोष्टि२ । जोषयति । अजूजुषत् । जुष्यः—क्यप् । ( ई ) जुष्टः, जुष्टवान् । सजूः, सजुषौ, सजुषः—क्विप् । क्विबन्तस्य सहशब्देन बहुव्रीहौ सजूः—विद्यमानप्रतीतिरित्यर्थः । सजूः-

* 'सप्तम्याश्चोपपीडे'ति णमुल्विधौ कर्षेरिदं ग्रहणम्, न क्रुषेरिति वृत्तिः । आत्रेयस्तु व्याख्यानक्षममेतत् विशेषाभावादिति । हरदत्तस्तु यद्युभयोरपि विलेखने पाठस्तथापि तौदादिकस्य चैवविषये विलेखनवृत्तिः, तेन चेचे उपलक्ष्य वृत्तिनोपलक्ष्य इति तौदादिकात् क्त्वाप्रत्यय एव भवति, न णमुलित्याह ।

क्त्वेति सहार्थे रूढ़स्य सजूःशब्दस्य एकवचनान्तस्य ऊर्य्यादिपाठाद्गतित्वम्। जोषमिति स्वरादिपाठादव्ययत्वं, मान्तत्वं, स्वभावात् क्रियाविषयः। जुषित्वा, जोषित्वा।

९। ओ विजी, भयचलनयोः। (To fear, to tremble)

विज् (ओ, ई) सेट्, अक, आ। प्रायेणायमुत्पूर्वः प्रयुज्यते। उद्विजते। उद्विजेत। उद्विजताम्। उदविजत। उदविजिष्ट, उदविजिषाताम्, उदविजिषत। उद्विविजे। उद्विजिता। उद्विजिषीष्ट। उद्विजिष्यते। उदविजिष्यत। उद्विविजिषते। उद्वेविज्यते। उद्वेविजीति, उद्वेवेक्ति। उद्वेजयति। उदवीविजत्। उद्विजित्वा। (ई) उद्विग्नः, उद्विग्नवान्। उद्वे जितमिति ण्यन्तस्य निष्ठायामिटि। उद्वेगः—घञ्। वेवेक्तीत्यादि जुहोत्यादौ।

१०। ओ लजी, ओ लस्जी, व्रीड़ायाम्।

(To be ashamed)

लज्, लस्ज (ओ, ई) सेट्, अक, आ। लज्—लजते। लजेत। लजताम्। अलजत। अलजिष्ट। लेजे। लजिता। लजिषीष्ट। लजिष्यते। अलजिष्यत। लिलजिषते। लालज्यते। लालजीति, लालक्ति। लाजयति। अलीलजत्। लजित्वा। (ई) लग्नः, लग्नवान्। लस्ज्—लज्जते। लज्जेत। लज्जताम्। अलज्जत। अलज्जिष्ट। ललज्जे। लज्जिता। लज्जिषीष्ट। लज्जिष्यते। अलज्जिष्यत। लिलज्जिषते। लालज्ज्यते, लालज्जीति, लालक्ति—'स्कोरि'ति सलोपः। लज्जयति। अललज्जत्। लज्जित्वा। (ई) लग्नः, लग्नवान्। लज्जा—अङ्, टाप्। लज्जितः—इतच्। लजति, लाजति, लज्जति, लाज्जत्यादयश्चत्वारो भ्वादौ गताः। *

---

* अयं तवर्गपञ्चमादिरिति चान्द्राः। तन्मते नग्ननग्निकाशब्दव्युत्पत्तौ तवर्गादि-

## परस्मैपदिनः ।

११ । ओ व्रश्चू, छेदने । (To cut)

व्रश्च्, ( ओ, ऊ ) वेट्, सक, प । वृश्चति । वृश्चेत् । वृश्चतु, वृश्चतात् । अवृश्चत् । अव्रश्चीत्, अव्रश्चिष्टाम्, अव्रश्चिषुः । अव्रश्चीः, अव्रश्चिष्टम्, अव्रश्चिष्ट । अव्रश्चिषम् । अनिट्पक्षे— अव्राक्षीत्, अव्राष्टाम्, अव्राक्षुः । अव्राक्षीः इत्यादि । वव्रश्च, वव्रश्चतुः, वव्रश्चुः । वव्रश्चिथ, वव्रष्ठ । वव्रश्चिव । व्रष्टा, व्रश्चिता । वृश्च्यात् । व्रक्ष्यति, व्रश्चिष्यति । अव्रक्ष्यत्, अव्रश्चिष्यत् । विव्रश्चिषति, विव्रक्षति । वरीवृश्च्यते । वाव्रश्चीति, वाव्रष्टि ; वाव्रष्टः । व्रश्चयति । अववृश्चत् । वृश्च्यते । व्रश्चित्वा—नित्यमिट् । प्रवृश्च्य । (ओ) वृक्णः, वृक्णवान् । व्रश्च्यः—ण्यत् । व्रश्चः—घञ् । वृश्चः— सक् । व्रश्चनम् । व्रश्चनः । व्रश्चितुम्, व्रष्टुम् । क्विप्—मूलवृट्, मूलवृट् । दुर्गमते व्रश्चू च्छेदने इति पाठः ।

१२ । व्यच, व्याजीकरणे । ( To deceive )

व्याजीकरणं छलनम् । व्यच्, सेट्, सक, प । विचति ( सन्तं खलः ) । विचेत् । विचतु । अविचत् । अव्याचीत्, अव्याचिष्टाम्, अव्याचिषुः । अव्यचीत्, अव्यचिष्टाम्, अव्यचिषुः । विव्याच, विविचतुः, विविचुः । विव्यचिथ, विविचथुः, विविच । विव्याच, विव्यच ; विविचिव । व्यचिता । विच्यात् । व्यचिष्यति । अव्यचिष्यत् । विव्यचिषति । वेविच्यते । वाव्यचीति, वाव्यक्ति । व्याचयति ।अविव्यचत् । विच्यते । विचित्वा । प्रविच्य । विचितः । उरुव्यचाः—असुन् । व्याकः । विचितुम् । विचिता । विचितव्यम् । व्याचकः ।

रयं स्वामिना पठितः । मात्रेयस्वामिमैत्रेयादीनां मते धन्नस्थात्वमीयादिरेवाय्ं, मग्नमद- व्युत्पत्तिस्तु पृषोदरादित्वात् ।

१३। उच्छि, उञ्छे। (To glean)

१४। उच्छी, विवासे। (To finish)

उञ्छ् (इ) उच्छ् (ई) सेट्, सक, प। उञ्छति, उच्छतीत्यादि। स्वादौ व्याख्यातौ।

१५। ऋच्छ, गतीन्द्रिय-प्रलय-मूर्त्तिभावेषु। (To go, to fail in faculties, to congeal)

गतिर्गमनम्, इन्द्रियप्रलयः—इन्द्रियविनाशः, मूर्त्तिभावः—काठिन्यम्। ऋच्छ्, सेट्, अक, [ सक ] प। ऋच्छति। ऋच्छेत्। ऋच्छतु। आर्च्छत्। आर्च्छीत्, आर्च्छिष्टाम्, आर्च्छिषुः। आर्च्छीः। आर्च्छिषम्, आर्च्छिष्व। मा भवानर्च्छीत्। आनर्च्छ, आनर्च्छतुः, आनर्च्छुः। आनर्च्छिथ। आनर्च्छिव। ऋच्छिता। ऋच्छ्यात्। ऋच्छिष्यति। आर्च्छिष्यत्। ऋचिच्छिषति। ऋच्छयति। आर्चिच्छत्। मा भवानृचिच्छत्। 'समो गम्यृच्छी'ति संपूर्वादस्मादकर्मकात्तङ्—समृच्छते। समृच्छेत। समृच्छताम्। समार्च्छत। समार्च्छिष्ट, समार्च्छिषाताम्, समार्च्छिषत। समानर्च्छे। समृच्छिता। समृच्छिषीष्ट। समृच्छिष्यते। समार्च्छिष्यत। ऋच्छित्वा। ऋच्छितः, ऋच्छितवान्। ऋच्छाञ्चकारेति प्रयोगो 'गुरोश्च हल' इत्यकारप्रत्ययान्तादृच्छाशब्दात् कर्म्मणि द्वितीयायां न त्वामि। यतो'ऽनृच्छ' इत्याम् निषिध्यते।

१६। मिच्छ, उत्क्लेशे। (To annoy)

उत्क्लेशः पीड़ा। मिच्छ्, सेट्, अक, प। मिच्छति। मिच्छेत्। मिच्छतु। अमिच्छत्। अमिच्छीत्। मिमिच्छ। मिच्छिता। मिच्छ्यात्। मिच्छिष्यति। अमिच्छिष्यत्। मिमिच्छिषति। मेमिच्छ्यते। मेमिच्छीति, मेमेष्टि। मिच्छयति। अमिमिच्छत्।

१७। जर्ज, चर्च, झर्झ, परिभाषणभर्त्सनयोः।
( To speak, to blame )

जर्ज्, चर्च्, झर्झ्, सेट्, सक, प। जर्जति, चर्चति, झर्झति इत्यादि। चर्चिका—संज्ञायां क्वुन्, ण्वुल् वा। जर्जरः, झर्झरः—बाहुलकादरन्।

१८। त्वच, संवरणे। (To cover)

संवरणम् आच्छादनम्। त्वच्, सेट्, सक, प। त्वचति। त्वचेत्। त्वचतु। अत्वचत्। अत्वाचीत्, अत्वचीत्। तत्वाच। त्वचिता। त्वच्यात्। त्वचिष्यति। अत्वचिष्यत्। तित्वचिषति। तात्वच्यते। तात्वचीति, तात्वक्ति। त्वाचयति। अतित्वचत्। त्वचः—पचाद्यच्। त्वचं गृह्णाति—त्वचयति 'सत्यापपाश'-रूपादिना णिच्। त्वक्—क्विप्। वाक्त्वचम्—समासान्तष्टच्।

१९। ऋच, स्तुतौ। (To praise)

ऋच्, सेट्, सक, प। ऋचति इत्यादि ऋषतिवत्। अर्च्यम्—ण्यत्। ऋक्—क्विप्। ऋचो व्याख्यानम्—आर्चिकम्, ठक्। ऋचोऽर्द्धम्—अर्द्धर्चम् 'अर्द्धं नपुंसकमि'-त्येकदेशिनार्द्धशब्दस्य षष्ठीसमासः, अकारः समासान्तः। 'अर्द्धर्चाः पुंसि चे'ति पुंनपुंसकयोरयम्। 'अनृचो माणवको ज्ञेयो वह्वृचस्वरणाख्यायां'मिति विशेषे अकारप्रत्ययस्य स्मरणात् अनृक्कं साम, वह्वृक्कं सूक्तमित्यादौ शेषलक्षणः कवेव भवति। ऋक् च साम च—ऋक्सामे 'अचतुरे'त्यादिना द्वन्द्वेऽच्समासान्तः, 'नस्तद्धिते' इति साम्नष्टिलोपः।

२०। उब्ज, आर्जवे। * (To make straight)

आर्जवं सारल्यम्। उब्ज्, सेट्, सक, प। उब्जति। उब्जेत्।

* उब्ज इति अन्तस्थावकारीऽयं कारिकायामपठितत्वात्। "नभिनो वौ"रि-त्यत्र रेफसाहचर्यात् अन्तस्थावकारस्यैव ग्रहणमिति सम्प्रदायः, तेन न्युब्जतीत्यत्र

उब्जतु। औब्जत्। औब्जीत्, औब्जिष्टाम्, औब्जिषुः। उब्जाञ्चकार—२। उब्जिता। उब्ज्यात्। उब्जिष्यति। औब्जिष्यत्। उब्जिजिषति। उब्जयति। औब्जिजत्। मा भवानुब्जिजत्। न्युब्जिताः शेरतेऽस्मिन्निति न्युब्जः—रोगविशेषः 'भुजन्युब्जौ पाण्युपतापयो'रिति घञि निपातितः। ओजः—प्रकृति वलोपो गुणश्च। "न्युब्जीकृतं पात्रमुत्तोल्य"। ओज इवाचरति—ओजायते, नित्यं सलोपः। ओजसा कृतम्—तृतीयाया अलुक्। नि—न्युब्जः।

२१। उद्झ, उत्सर्गे। (To leave)

उत्सर्गस्त्यागः। कृत्स्नादिरयम्। अयमपि दोपधः, जश्त्वन्तु लाक्षणिकम्। उज्झ्, सेट्, सक, प। उज्झतीत्यादि पूर्ववत्। उद्ध्रः—नदः, कर्त्तरि क्यपि निपात्यते। षानुबन्धोऽयमिति कश्चित्, तन्न, गुरुमत्त्वादेव अङ्सिद्धेः। गोविन्दभट्टादिसम्मतमेतत्। केचिद् जोपधोऽयमिति मन्यमाना औजिज्झदित्युदाहरन्तीति रमानाथः। क्विप्—समुत्। (भ्याम्) समुद्भ्याम्। क्तः—उज्झितः। क्त्वा—उज्झित्वा।

२२। लुभ, विमोहने। (To bewilder)

विमोहनमाकुलीकरणम्। लुभ, सेट्, सक [ अक ] प।

---

दीर्घत्वमिति केचित्। अपरे ऊर्णूवृजोर्दीर्घविधानात् स्वरादेः प्रकृतेर्हलि (ऊर्जुवे) दीर्घो न भवतीति उब्जाञ्चकार इति युज्यते, तेन साधुतेत्याहुः। दीर्घाभावश्चिन्त्य इति वर्द्धमानः। ओष्ठ्योऽयं वकारस्तेन न दीर्घ इत्यपरः। कुलचन्द्रादयस्तु तत्र स्वरादेर्दीर्घो न स्यादित्याहुः। अन्यस्त्वाह—नायं दन्त्योष्ठ्यो वकारः, किन्तु ओष्ठ्य एव निर्विवादस्तेन न दीर्घः। "न नवदरा" इत्यत्र वर्ग्यबकारग्रहणात् उब्जिजिषतीत्युदाहरणं, कथमन्यथा भुजन्युब्जाविति निपातनं सुखार्थमिति टीकायामुक्तं, दीर्घाभावार्थैव निपातनौचित्यात्। तवर्गतृतीयोपधोऽयमिति जिनेन्द्रः। उपध्मानीयोपधोऽयमिति केचित्। केचित् ऊब्जतीत्यादि दीर्घादिकं प्रयुञ्जते। इति माधवीया, एतन्मते वर्गीय एव। अत्र बहवः पक्षाः।

लुभति। लुभेत्। लुभतु। अलुभत्। अलोभीत्, अलोभिष्टाम्, अलोभिषुः। लुलोभ, लुलुभतुः, लुलुभुः। लुलोभिथ। लोब्धा, लोभिता—'तोषसहे'तीड्विकल्पः। लुभ्यात्। लोभिष्यति। अलोभिष्यत्। लुलुभिषति, लुलोभिषति। लोलुभ्यते। लोलोब्धि, लोलुभीति। लोभयति। अलूलुभत्। लुभित्वा, लोभित्वा। विलुभिताः केशाः—'लुभो विमोहने' इति क्त्वानिष्ठयोर्नित्यमिट्। अर्थान्तरे लुब्ध्वा। लोब्धव्यम्, लोभितव्यम्। लोभः। लोभनीयः। लोभ्यः। गार्द्ध्ये लुभ्यतीति दिवादौ।

२३। रिफ, कत्थनयुद्धनिन्दाहिंसादानेषु। ( To boast, to fight, to censure, to kill, to give )

युद्धेति भावे निष्ठा। कत्थनं श्लाघा। रिफ्, सेट्, [सक, अक] प। रिफति इत्यादि लुभिवत्। रिरेफ, रिरिफतुः। रेफिता। रिफित्वा। रेफः। अत्र रिह इति द्राविड़ाः पठन्ति—रिहति इत्यादि। "शिशुं न विप्रामतिभीरिहन्ती"ति।

२४। तृप, तृन्फ, तृप्तौ। (To be satisfied, to please)

तृप्, तृन्फ्, सेट्, सक, प। तृप्—तृपति। तृपेत्। तृपतु। अतृपत्। अतर्पीत्—'स्पृशमृशकृषे'ति सिज्विकल्पः पौषादिकस्यैव। ततर्प। तर्पिता। तृप्यात्। तर्पिष्यति। अतर्पिष्यत्। तितर्पिषति। तरीतृप्यते। तरीतृपीति इत्यादि। तर्पयति। अतीतृपत्, अततर्पत्। तर्पित्वा। तृपितः। तृन्फ्—तृम्फति। तृम्फेत्। तृम्फतु। अतृम्फत्। अतृम्फीत्। ततृम्फ। तृम्फिता। तृफ्यात्। तृम्फिष्यति। तितृम्फिषति। तरीतृफ्यते। तरीतृम्फति। तृम्फयति। अततृम्फत्। तृफित्वा, तृम्फित्वा। तृफितः। अयं भ्वादि-स्वादिचुरादिषु।

२५। तुप, तुन्प, तुफ, तुन्फ, हिंसायाम्। (To kill)

तुप्, तुन्प्, तुफ्, तुन्फ्, सेट्, सक, प। तुपति। तुम्पति।

तुफति। तुम्फति इत्यादि पूर्ववत्। एषां भूवादौ पाठः स्वरार्थं इति सर्वैवोक्तम्।

२६। हृफ, हृन्फ, उत्क्लेशे। (To give pain)

हृफ्, हृन्फ, सेट्, अक, प। हृफति, हृम्फतीत्यादि। अत्र प्रथमः प्रथमान्त इति वामनः।

२७। ऋफ्, ऋन्फ, हिंसायाम्। (To kill)

ऋफ्, ऋन्फ् सेट्, सक, प। ऋफ्—ऋफति। ऋफेत्। ऋफतु। आर्फत्। आर्फीत्। आनर्फ, आनृफतुः। अर्फिता। ऋफ्यात्। अर्फिष्यति। आर्फिष्यत्। अर्पिफिषति। ऋफितः। अर्फित्वा। ऋन्फ्—ऋम्फतीत्यादि। ऋम्फिफिषति। ऋफित्वा, ऋम्फित्वा।

२८। गुफ्, गुन्फ, ग्रन्थे। (To string together)

गुफ्, गुन्फ्, सेट्, सक, प। गुफ्—गुफति। जुगोफ। अगोफीत्। गोफिता। गुन्फ्—गुम्फति। जुगुम्फ। अगुम्फीत्। गुम्फिता। गोफित्वा। गुम्फित्वा, गुफित्वा।

२९। उभ, उन्भ, पूरणे। (To fill wish)

उभ्, उन्भ्, सेट्, सक, प। उभ्—उभति। उवोभ, ऊभतुः। औभीत्। उभौ—कः, नित्यं द्विवचनान्तः, सर्वादित्वात् सर्वनामत्वम्। उभाववयवावस्य उभयो मणिरित्यत्र 'संख्याया अवयवे तयबि'ति तयपि 'तस्योभादुदात्तो नित्यमि'त्ययजादेश उदात्तः। उभाञ्जलि, उभयाञ्जलि; उभाहस्ति, उभयाहस्ति; उभाबाहु, उभयाबाहु—'द्विदण्ड्यादिभ्यश्चे'ति बहुव्रीहाविच्प्रत्ययान्तता निपात्यते। उभाबाहु, उभयाबाहु इत्यत्रैव निर्देशादिचो लोपः। केनोभ्यत इति—कुम्भः, कर्मणि घञ्। अयस्कुम्भः 'अतः कृकमिकंसकुम्भेति' विसर्जनीयस्य सः।

अतएव कुम्भेति निर्देशात् कथञ्चिदाकारस्य लोपः पररूपता वा। कुम्भी—गौरादित्वा'ज्जातेरस्त्री'ति वा ङीष्। अयस्कुम्भी—लिङ्गविशिष्टपरिभाषया सत्वम्। कुम्भीव नासिकास्य—कुम्भीनसः, 'अञ् नासिकायाः संज्ञायामि'त्यादिना नासिकाया नसादेशोऽच्प्रत्ययश्च। उनूभ—उम्भतीत्यादि। उभाञ्चकार औम्भीत्।

३०। शुभ, शुनूभ्, शोभार्थे। (To shine)

शुभ्, शुनूभ्, अक, सेट्, प। शुभ्—शुभति। शुशोभ। शोभिता। अशोभीत्। शोभितः, शुभितः। शुभित्वा, शोभित्वा। शुशुभिषति, शुशोभिषति। शुनूभ्—शुम्भतीत्यादि।

३१। दृभी, ग्रन्थे। (To string together)

दृभ् (ई) सेट्, सक, प। दृभतीत्यादि। ददर्भ। दर्भिता। अदर्भीत्। दृब्धः। दर्भः। सन्दर्भः। चुरादौ चायम्।

३२। चृती, हिंसाग्रन्थनयोः। (To kill, to connect together)

चृत, (ई) सेट्, सक, प। चृतति। चृतेत्। चृततु। अचृतत्। अचर्त्तीत्। चचर्त्त, चचृततुः। चचर्त्तिथ, चर्त्तिता। चृत्यात्। चर्त्तिष्यति, चर्त्स्यति। अचर्त्तिष्यत्, अचर्त्स्यत्। चरीचृत्यते। चरीचर्त्ति, चरीचृत्तः। सन्—चिचर्त्तिषति, चिचृत्सति। चर्त्तयति। अचीचृतत्, अचचर्त्तत्। (ई) चृत्तः, चृत्तवान्। स्वामिकाश्यपादस्य ईदित्वं यङ्लुगन्ताविष्ठाया-मनिट्त्वार्थमिति—चरीचृत्तः, चरीचृत्तवान्। 'यस्य विभाषे'-त्यनिट्त्वे सिद्धेऽस्येदित्त्वेन तस्यानित्यत्वज्ञापनात् धावित इति सिद्धमिति मैत्रेयः।

३३। विध, विधाने। (To pierce)

विध्, सेट, सक, प। विधति। विधेत्। विधतु। अवि-

धत्। अवेधीत्। विवेध। वेधिता। विध्यात्। वेधिष्यति। अवेधिष्यत्। विविधिषति, विवेधिषति। वेवेद्धि२। वेधयति। अवीविधत्। विधित्वा, वेधित्वा। विधिरिति विपूर्व्वात् धाञः कर्म्मणि इः, [ किः ] न त्वस्मात् औणादिक इन्, स्वरभेदात्। निष्ठा—विधितः, विधितवान्।

२४। जुड्, गतौ। (To go)

जुड्, जुन गताविति दुर्गः। जुन इति तवर्गपञ्चमान्त इत्येके। प्रयोगस्तु दृश्यते—"वृष्टिर्यौ विश्वे मरुतो जुनन्तौ"ति। जुड्, सेट्, सक, प। जुडति। जुडेत्। जुडतु। अजुडत्। अजोडीत्। जुजोड। जोडिता जुड्यात्। जोडिष्यति। अजोडिष्यत, जुजोडिषति, जुजुडिषति। जोजुड्यते। जोजुडीति, जोजोड्ढि। जोडयति। अजूजुडत्। जोडित्वा, जुडित्वा। जुडितः। अयं बन्धने ङित्त्वार्थं कुटादौ पठिष्यते। प्रेरणे चुरादौ।

२५। मृड्, सुखने। (To rejoice)

मृड्, सेट्, सक, प। मृडति। मृडेत्। मृडतु। अमृडत्। अमर्डीत्। ममर्ड। मर्डिता। मृड्यात्। मर्डिष्यति। अमर्डिष्यत्। मिमर्डिषति। मरीमृड्यते। मरीमर्ड्ढि। मर्डयति। अमीमृडत्, अममर्डत्। मृडित्वा। मृडितः। मृडः—कः। मृडानी—'इन्द्रवरुणे'ति ङीषानुकौ। मृडीकं—सुखं, मृडीकन्। अयं क्र्यादौ।

२६। पृड्, च। ( To rejoice)

चात् पूर्वोक्तोऽर्थः। पृड् सेट्, सक, प। पृडति इत्यादि मृडिवत्।

२७। पृण, प्रीणने। ( To please)

पृण् सेट्, सक, प। पृणतीत्यादि। लोकंपृणः—मूल

विभुजादित्वात् कः 'लोकस्य पृणः' इति मुम्। वृण इति दन्त्योष्ठ्यादिरप्यत्र पठितव्यः। वृणतीत्यादि।

३८। मृण, हिंसायाम्। (To kill)

मृण् सेट्, सक, प। मृणतीत्यादि। मृणालम्—बाहुलकादालच्, अगुणश्च।

३६। तुण, कौटिल्ये। (To curve)

तुण्, सेट्, अक, प। तुणति। तोणितेत्यादि। ग्रुण इति चुरादौ।

३७। पुण, कर्म्मणि शुभे। ( To be pure or virtuous)

पुण्, अक, सेट्, प। पुणतीत्यादि। पुणः—इगुपधलक्षणः कः। नि—निपुणः। पितरि निपुणः, मातरि निपुणः—'साधुनिपुणाभ्या'मिति तद्युक्तात् सप्तमी। अप्रतेरित्यपनीय 'अप्रत्यादियोग' इति वक्तव्यमित्युक्तम्। प्रत्यादयश्च 'प्रतिपर्य्यनव' इति पाणिनिनोक्ताः, तेन तैर्योगे द्वितीयैव, पितरं प्रति निपुणः, आचारनिपुणः—'पूर्वसदृशे'त्यादिना तृतीयासमासः। नैपुण्यम्——ब्राह्मणादित्वात् ष्यञ्, षित्वात् ङीष्—नैपुणी। नैपुणम्—युवादित्वादण्। अनिपुणः—तत्पुरुषो बहुव्रीहिर्वा। तस्येदम्—आनैपुणम्, अनैपुणम्'नञः शुचो'ति पूर्वपदस्य वा वृद्धिरुत्तरपदस्य तु नित्यम्।

३८। मुण, प्रतिज्ञाने। ( To promise )

मुण्, सेट्, सक, प। मुणतीत्यादि पूर्ववत्।

३९। कुण, शब्दोपकरणयोः। ( To sound, to support with gifts )

कुण्, सेट्, सक, प। कुणतीत्यादि पूर्ववत्। कूण इति चुरादौ।

४० । शुन, गतौ । (To go)

शुन्, सेट्, सक, प । शुनतीत्यादि । शुनकः—औणादिकः क्वुण् । तस्यापत्यं—शौनकः, अण् ।

४१ । द्रुण, हिंसागतिकौटिल्ये । (To kill, to go, to make crooked )

द्रुण्, सेट्, सक, प, कौटिल्यार्थे अक । द्रुणतीत्यादि । द्रुणः—खर्जूरः, इगुपधात् कः । द्रुणी—कच्छपी, गौरादित्वात् ङीष् । द्रोणः—पचाद्यच् । पूर्ववत् । ङीष्—द्रोणी । द्रोणस्य गोत्रमपत्यम्—द्रौणिः, द्रौणायनः—फगिञौ । द्रोणं पचति—द्रौणी, द्रौणकी 'तत् पचतीति च द्रोणादण् च' त्यण्ठञौ । द्विद्रोणेन धान्यं क्रीणाति—'प्रकृत्यादित्वात् तृतीया । द्वयोर्द्रोणयोः समाहारः—द्विद्रोणम्, पात्रादित्वात् स्त्रीत्वाभावः ।

४२ । घुण, घुर्ण, भ्रमणे । (To roll)

घुण्, घुर्ण्, सेट् अक, प । घुणति, घूर्णति इत्यादि । अप्यात्मनेपदिनौ ।

४३ । षुर, ऐश्वर्य्यदीप्त्योः । (To rule, to shine)

सुर्, सेट्, अक, प । सुरति । सुषोर, सुषुरतुः । सोरिता । सोषूर्य्यते । सोषोर्त्ति । सोरयति । असूषुरत् । सुरन्तीति—सुराः, कप्रत्ययः ।

४४ । कुर, शब्दे । (To sound)

कुर्, सेट्, अक, प । कुरतीत्यादि ।

४५ । खुर, छेदने । (To cut)

खुर्, सेट्, सक, प । खुरतीत्यादि । खुरः—इगुपधलक्षणः कः । कल्याणखुरा—'स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादि'ति ङीषो 'न क्रोड़ादिबह्वच' इति निषेधः । खुरणाः—'खुरखराभ्यां नस् वक्तव्य' इति नासिकाया नस्भावः । खुरणस इत्यपि भवति ।

४६। मुर, संवेष्टने। (To surround)

मुर्, सेट्, सक, प। मुरतीत्यादि। मुरः—पूर्ववत् कः।

४७। छुर, विलेखने। (To scratch)

छुर्, सेट्, सक, प। छुरतीत्यादि। छुरम्—पूर्ववत् कः। तस्येदं—छौरम्, अण्।

४८। घुर, भीमार्थशब्दयोः। (To frighten)

भीमार्त्तशब्दयोरिति कातन्त्रगणपाठः। घुर्, सेट्, अक, प। घुरतीत्यादि। घारः—पचाद्यच्। घुर्घुरः—पूर्ववत् कः, 'क्वचादीनां क्वे द्वे भवत' इति द्वित्वम्, पृषोदरादित्वान्न हलादिशेषः।

४९। पुर, अग्रगमने। (To precede)

पुर्, सेट्, सक, प। पुरति। पुरम्—पूर्ववत् कः। पुरी—गौरादित्वात् ङीष्। पूः—क्विप्। पुरः—असुन्, सान्तमव्ययम्।

५०। वृह, उद्यमने। (To work)

वृह्, (ऊ) वेट्, सक, प। वृहति। वृहेत्। वृहतु। अवृहत्। अवर्हीत्, अवर्हिष्टाम्, अवर्हिषुः। ववर्ह, ववृहतुः। ववर्हिथ, ववर्ढ। वर्हिता, वर्ढा। वृह्यात्। वर्हिष्यति, वर्क्ष्यति। अवर्हिष्यत्, अवर्क्ष्यत्। अनिट्पक्षे लुङि—अवृक्षत्, अवृक्षताम्, अवृक्षन्। विवर्हिषति, विवृक्षति। वरीवृह्यते। वरीवर्ढि, इत्यादि। वर्हयति। अवीवृहत्, अववर्हत्। वृढ्वा, वर्हित्वा। वृढः, वृढवान्। वर्हितुम्, वर्ढुम्। वर्ढव्यम्, वर्हितव्यम्। वृह्यम्।

५१। तृह, स्तृह, तृन्ह, हिंसार्थाः। (To kill, to hurt)

तृह्, स्तृह्, तृन्ह्, (ऊ) वेट्, सक, प। तृह्—तृहति। तृहेत्। तृहतु। अतृहत्। अतर्हीत्, अतृक्षत्। ततर्ह। तर्हिता, तर्ढा। तृह्यात्। तर्हिष्यति, तर्क्ष्यति। अतर्हिष्यत्, अतर्क्ष्यत्। स्तृह्—स्तृहतीत्यादि। अस्तर्हीत्, अस्तृक्षत् इत्यादि। तृन्ह्—तृंहतीत्यादि तृह्वत्। लुङ्—अतृं-

ढीत्, अतृंहिष्टाम्, अतृंहिषुः। अनिगुपधत्वात्, तृंहधातोः के सा नास्ति, अनिट्पक्षे सिजेव—अतार्क्षीत्, अतार्ढाम्, अतार्क्षुः इत्यादि। तितृंहिषति, तितृक्षति। तरीतृह्यते। तरीतृंहीति, तरीतृण्ढि इत्यादि। तृंहयति। अततृंहत्। तृंहित्वा, तृढ्वा। तृढः, तृढवान्।

५२। इष्, इच्छायाम्। (To wish)

केचिदुदितममुं पठन्ति। इष्, सेट्, सक, प। इच्छति, इच्छेत्। इच्छार्थेभ्यो वर्त्तमाने विभाषया लिङ्लटौ। इच्छेत्। इच्छतु। इच्छ। ऐच्छत्। ऐषीत्, ऐषिष्टाम्, ऐषिषुः। ऐषीः, ऐषिष्टम्, ऐषिष्ट। ऐषिषम्, ऐषिष्व, ऐषिष्म। इयेष, ईषतुः, ईषुः। इयेषिथ, ईषथुः। इयेषिव। एषिता, एष्टा। इष्यात्। एषिष्यति। ऐषिष्यत्। इष्यते, ऐष्यत। ऐषि। एषयति। ऐषिषत्। एषित्वा, इष्ट्वा। इष्टः, इष्टवान्। एषणी—करणे ल्युट्। इच्छा। इच्छन्। इच्छती, इच्छन्ती। इच्छुः। इष्टिः, बाहुलकात् क्तिन्। एष्टुम्, एषितुम्। एष्टव्यम्, एषितव्यम्। एषम्। इषः—कः। दुर्गमते—'वेषुसहे' त्यादौ विशेषणार्थ उदनुबन्धोऽयम्। इष्यतीति दिवादौ।

५३। मिष, स्पर्द्धायाम्। (To rival)

मिष्, सेट्, अक, प। मिषति। मिषेत्। मिषतु। अमिषत्। अमेषीत्। मिमेष। मेषिता। मिष्यात्। मेषिष्यति। अमेषिष्यत्। मिमिषिषति, मिमेषिषति। मिषित्वा, मेषित्वा। मिमिष्यते। मेमेष्टि। मेषयति। अमीमिषत्। मेषः—पचाद्यच्। मेषी—जातिलक्षणो ङीष्। निमेषः—घञ्। उदुन्मेषणा।

५४। किल, श्वैत्ये। (To become white)

किल्, सेट्, अक, प। किलति। चिकेल इत्यादि मिषतिवत्। किल्बिषम्—टिषच्, वुक् चागमः।

५५ । तिल, स्नेहने । (To oil)

तिल्, सेट्, अक, प । तिलति । तितेल । अतेलीत् इत्यादि । तेलतीति गतौ भ्वादौ ।

५६ । चिल, वसने । (To dress)

चिल्, सेट्, अक, प । चिलति इत्यादि । चेलम्—करणे घञ् । चेलतीति भ्वादौ ।

५७ । चल, विलसने । (To play)

चल्, सेट्, अक, प । चलतीत्यादि । चलयतीति कम्पने घटादिः । आत्रेयस्तु तिलादित्रयमिह न पठति, ज्वलादिपठितस्यापीह पाठे प्रयोजनमुञ्छतीत्यादिवत् स्वरः ।

५८ । इल, स्वप्नक्षेपणयोः । (To sleep, to throw)

इल्, सेट्, सक [ अक ] प । इलति । इलेत् । इलतु । ऐलत् । ऐलीत् । इयेल, ईलतुः । एलिता । इल्यात् । एलिष्यति । ऐलिष्यत् । एलिलिषति । एलयति । ऐलिलत् । इला—पृथ्वी, कः, टाप् ।

५९ । विल, संवरणे । (To cover)

संवरणमाच्छादनम् । विल्, सेट्, सक, प । विलति इत्यादि । आविलः । अयं दन्त्योष्ठ्यादिः ।

६० । बिल, भेदने । (To break)

बिल्, सेट्, सक, प । बिलति इत्यादि । बिलम् । अयमोष्ठ्यादिः ।

६१ । णिल, गहने । (To understand with difficulty)

निल्, सेट्, सक, प । निलति । प्रणिलति—'उपसर्गादसमासेऽपी'ति णत्वम् । निनेल । नेलिता इत्यादि ।

६२ । हिल, भावकरणे । (To express amoreous inclination)

भावकरणमभिप्रायसूचनम् । हिलति । जिहेल इत्यादि ।

९३। शिल, षिल, उञ्छे। (To glean)

शिल्, सिल्, सेट, अक, प। शिल्—शिलति। शिशेल। सिल्—सिलति। सिषेल इत्यादि।

९४। मिल, श्लेषणे। (To embrace)

श्लेषणमिह सम्बन्धीभावः। मिल्, सेट्, अक, प। मिलति इत्यादि। मिल इति स्वरितेदग्रे पठिष्यते, इह पाठे प्रयोजनं कर्त्रभिप्रायेऽपि क्रियाफले परस्मैपदम्। मिलेः कुटादित्व-मिष्यत इति कुलचन्द्रः। पञ्चभिर्मिलितव्यम्।

९५। लिख, अक्षरविन्यासे। (To write)

लिख्, सेट्, अक, प। लिखति। लिखेत्। लिखतु। अलिखत्। अलेखीत्, अलेखिष्टाम्, अलेखिषुः। लिलेख, लिलिखतुः, लिलिखुः। लिलेखिथ। लिलिखिव। लेखिता। लिख्यात्। लेखिष्यति। अलेखिष्यत्। लिलिखिषति, लिलेखिषति। लेलिख्यते। लेलिखीति, लेलेक्ति। लेखयति। अलीलिखत्। लिखित्वा, लेखित्वा। प्रलिख्य। लिखितः, लिखितवान्। लेखनः। लेखनम्। लेखनी। लेखकः। रेखा, लेखा—भिदादिपाठादङि गुणो वा रेफादेशः। हृल्लेखः—कर्म्मण्यण्।* केचिदस्यापि कुटादित्वमिष्यते। टनादौ बहुलमिति पद्मनाभः। एतन्मते लेखनं, लिखनं; लिख्यं, लेख्यं; लिखितव्यं लेखितव्यं; लिखनीयं, लेखनीयम् इत्यादि।† अभि आ- कर्षणम्, चित्री-

---

* 'हृदयस्य हृल्लेखे'ति हृद्भावः। लेख इत्यणन्तस्य ग्रहणात् घञन्ते लेखशब्दे उत्तरपदे हृदयलेख इत्यपि भवति। विन्यासार्थे सकर्म्मकोऽयम्—दन्यं लिखतीत्यादि।

† दन्तलेखकः—"नित्यं क्रीड़ाजीविकयो"रिति समासः। अत्र केचित् कुटादिश्च इत्यत्र कुटस्यादिः, कुट आदिर्येषामिति एकशेषवृत्त्या बहुव्रीहितत्पुरुषयोर्द्वयोराश्रयणात् "लिखितुं विश्वसृजोऽपि शक्तिहानिः" स्वयमेव लिखिष्यत इति समर्थयन्ते,

करणम् । उद्—उल्लेखः, कर्षणम्, भेदनम्, अभिलापः । वि—विलेखनम्, कर्षणम्, चित्रीकरणम् ।

---

## तुदादयः ।

### अथ कुटादयः ।

९९ । कुट, कौटिल्ये । ( To be crooked )

कुट्, सेट्, अक, प । कुटति । कुटेत् । कुटतु । अकुटत् । अकुटीत्, अकुटिष्ट । चुकोट, चुकुटतुः, चुकुटुः । चुकुटिथ, चुकुटथुः, चुकुट । चुकोट, चुकुट ; चुकुटिव । कुटिता । कुट्यात् । कुटिष्यति । अकुटिष्यत् । चुकुटिषति । चोकुट्यते । चोकुटीति, चोकोट्टि । कोटयति । अचुकुटत् । कुटित्वा । कोट्यः, कोटः—ण्यद्घञौ । कुटितव्यम् । कुटपः—परिमाणं, 'उषी'त्यादिना कपन् । कुटुरुः—वर्द्धकी, पक्षी च—'कुटेः किच्चे'त्युरः । कुड्मलम्—क्मलच् । कुटरः—मन्थविष्कुम्भः, बाहुलकादरः । कोटरः । कोटरावणम्—'वनगिर्य्योः संज्ञायां कोटरे'ति दीर्घः, 'वनं पुरगे'त्यादिना णत्वम्, अत्रैव च निर्देशादरे गुणः । कुटिलम्—इलच् । कुटिलिका—संज्ञायां कन् । कुटिलिकया अगारान् हरतीति—कौटिलिकः, कर्म्मारः 'अण् कुटिलिकाया' इत्यण् । कुटी—इन्नन्तात् 'कृदिकारादक्तिनः' इति ङीष् । अल्पा कुटी—कुटीरः, रः । कुटप्रतापने चुरादिः । कूट परितापे कथादिः ।

---

तेषां, लेखितेत्यादौ सर्व्वदाऽऽर्द्धधातुकप्रत्यये गुणाभावात् लिखितेत्यादि स्यात्, तत्र "रलो व्युपधादि"त्यतो सुनिश्चयन हत्तौ लेखिला, लिखित्वा, लिलिखिषति, लिलेखिषति विलेखितुमिति दर्शनात् आलेखन इति निर्देशाच्च नार्हम् । वर्द्धमानोऽपि 'आलेखनं' इति निर्देशात् तत्पुरुषो दुष्ट इत्याह । 'अर्थवेदसत्यानामापुगि'ति दीर्घोच्चारणादन्यत्रापि भवतीति केचिदिति, तेन लिखमाचष्टे—लिखापयतीति ।

६७। पुट, संश्लेषणे। ( To embrace )

पुट्, सेट्, अक, प। पुटतीत्यादि कुटिवत्। पुटः। पुटिका। अल्पः पुटः—पुटिका, महांस्तु पुटः। चुरादौ चायम्।

६८। कुच, संकोचने। ( To contract )

अतएव निर्देशात् लुग्रटि गुणः। कुच्, सेट्, सक, प। कुचति। निकुचितेत्यादि। संकोचः—'न क्वादे'रित्यकुत्वम्। कोचतीति अपि।

६९। गुज, शब्दे। ( To sound )

अव्यक्ते शब्दे इत्यात्रेयः। गुज्, सेट्, अक, प। गुजतीत्यादि। गोजः—घञ्, 'न क्वादे'रिति न कुत्वम्।

७०। गुड़, रक्षायाम्। (To protect)

गुड़्, सेट्, सक, प। गुड़तीत्यादि। गुड़ः—इक्षुविकारः, सन्नाहश्च, इगुपधलक्षणः कप्रत्ययः—'घञर्थे कविधान'मिति कर्म्मणि वा। गुड़ितो हस्ती—सञ्जातसन्नाह इत्यर्थः, तारकादित्वादितच्। गुड़ा—स्नुही, टाप्। तत्प्रायाः केशा अस्य—गुड़ाकेशः।

७१। डिप, क्षेपे। (To throw)

डिप्, सेट्, सक, प। डिपति। डिडेप। डिपितेत्यादि। डिप्यतीत्यादि दिवादौ।

७२। कुर, छेदने। (To cut)

कुर्, सेट, सक, प। छुरति। चुच्छोर। छुरितेत्यादि। छुर्य्यात्, छुर्य्यास्तामित्यादि। छुरिका—'क्वुन् शिल्पिसंज्ञयो'रिति क्वुन्। आच्छुरितकम्—सोत्प्रासो हासः, निष्ठान्तात् संज्ञायां कन्।

७३ । स्फुट, विकसने । (To break)

स्फुट्, सेट्, अक, प । स्फुटति । पुस्फोट इत्यादि । स्फोटत-इत्यात्मनेपदी अपि । स्फोटतीति विशरणार्थः परस्मैपदी तत्रैव । भेदनार्थश्चुरादौ ।

७४ । मुट, आक्षेपप्रमर्दनयोः । (To blame, to crush)

मुट्, सेट्, सक, प । मुटति । मुमोट । मुटितेत्यादि ।

७५ । त्रुट, छेदने । (To cut)

त्रुट्, सेट्, सक, प । त्रुटति । त्रुटेत् । त्रुटतु । अत्रुटत् । तुत्रोट । त्रुटितेत्यादि । 'वा भ्राश' इति अविषये श्यन् वा—त्रुट्यति । त्रुट्येत् । त्रुट्यतु । अत्रुट्यत् । त्रोटिः—ण्यन्ताद'च इरि'त्यौणादिक इप्रत्ययः । त्रोटयति इति चुरादावात्मनेपदी ।

७६ । तुट, कलहकर्म्मणि । (To quarrel)

तुट्, सेट्, अक, प । तुटति । तुतोट । तुटितेत्यादि । तुटिः—'इक् कृष्यादिभ्य' इत्यात्रेयः ।

७७ । चुट, छुट, छेदने । (To cut)

चुट्, छुट्, सेट्, सक, प । चुटति । छुटति इत्यादि ।

७८ । जड़, बन्धने । (To bind)

जुड़्, सेट्, सक, प । जुड़ति । जुजोड़ । जुड़िता । प्रेरणे चुरादिः ।

७९ । कड़, मदे । (To be proud)

कड़्, सेट्, अक, प । कड़ति । चकाड़ । कड़िता इत्यादि । अस्य ङित्कार्य्याभावादिह पाठो डकारान्तमात्रानुसारेण । अयं भ्वादौ च, पुनःपाठफलमुच्छतिवत् । कण्डते इति च ।

८० । लुट, संश्लेषणे । (To embrace)

लुट्, सेट्, अक, प । लुटति । लुलोट । लुटिता इत्यादि ।

लुण्ठति इति अपि, लुब्धतीति अपि अन्ये च। लोटतीत्युपघाते। लोटते इति द्युतादौ। लुड़ इत्येके।

८१। क्षड़, घनत्वे। (To become thick)

घनत्वं सान्द्रता। घसन इत्येके। क्षड़्, सेट्, अक, प। क्षड़ति। चक्षड। क्षड़ितेत्यादि।

८२। क्रुड़, बाल्ये। (To play or act as a child)

क्रुड़्, सेट्, अक, प। क्रुड़ति। चुक्रोड़। क्रुड़ितेत्यादि।

८३। पुड़, उत्सर्गे। (To leave)

पुड़, सेट्, सक, प। पुड़तीत्यादि। मुड़्, इत्यात्रेयः।

८४। घुट्, प्रतिघाते। (To strikxe against)

घुट्, सेट्, सक, प। घुटति। जुघोट। घुटितेत्यादि। घोटकः—णवुल्। घोटः—घञ्। अयं द्युतादावात्मनेपदी गतः।

८५। तुड़, तोड़ने। (To tear)

तोड़नं भेदः। तुड़्, सेट्, सक, प। तुड़ति। तुतोड़। तुड़ितेत्यादि। तोड़तीति अपि।

८६। थुड़, स्फुड़, संवरणे। (To cover)

थुड़्, स्फुड़्, सेट्, सक, प। थुड़्—थुड़ति। तुथोड़। थुड़िता। स्फुड़्,—स्फुड़ति, पुस्फोड़। स्फुड़ितेत्यादि।

८७। स्फुर, स्फुल, सञ्चलने। (To tremble)

स्फुर्, स्फुल्, सेट, अक, प। स्फुर्—स्फुरति स्फुरेत्। स्फुरतु। अस्फुरत्। अस्फुरीत्। पुस्फोर। स्फुरिता। स्फूर्य्यात्। स्फुरिष्यति। अस्फुरिष्यत्। पुस्फुरिषति। पोस्फूर्य्यते। पोस्फोर्त्ति—दीर्घस्यासिद्धत्वाद्गुणः। स्फारयति, स्फोरयति—'चिस्फुरोर्णौ'विति वात्वम्। अपुस्फुरत्, अपुस्फरत्।

पुस्फोरयिषति, पुस्फारयिषति। स्फर इत्येके—स्फरति। पस्फार।
स्फुल्—स्फुलतीत्यादि स्फुरतिवत्।

८८। स्फुड़, चुड़, व्रुड़, संवरणे। (To cover)

स्फुड़्, चुड़्, व्रुड़्, सेट्, सक, प। स्फुड़्—स्फुड़ति। पुस्फोड़। चुड़्—चुड़ति। चुचोड़। व्रुड़्—व्रुड़ति। वुव्रोड़ इत्यादि। अत्र क्रुड़ भृड़ निमज्जन इत्येक इत्यात्रेयः। मैत्रेयस्तु क्रुड़ं पठित्वा भृड़ इत्यप्येके इत्याह। क्रुड़ति। क्रोड़ः—वक्ष्। क्रोड़ा—अश्वानामुरः, टावन्तोऽयं स्वभावतो विशेषविषयः। कल्याणी क्रोड़ा यस्याः—सा कल्याणक्रोड़ा, बहुव्रीहावुपसर्जन-ह्रस्वत्वे 'न क्रोड़ादिबह्वचः' इति स्वाङ्गलक्षणो ङीष् निषिध्यते। क्रोड़ादिषु टावन्तस्य पाठाद्भुजान्तरमात्रवचनस्य क्रोड़शब्दस्य बहुव्रीहौ स्वाङ्गलक्षणो ङीष् विकल्प एव भवति। कल्याणक्रोड़ी, कल्याणक्रोड़ा—मयूरी। भृड़्—भृड़तीत्यादि।

## आत्मनेपदी।

८९। गुरी, उद्यमे। (To make an effort)

गुर्, (ई) सेट्, अक, आ। गुरते। गुरेत। गुरताम्। अगुरत। अगुरिष्ट। जुगुरे। गुरिता। गुरिषीष्ट। गुरिष्यते। अगुरिष्यत। जुगुरिषते। जोगूर्य्यते। जोगोर्त्ति, जोगुरीति। गोरयति। अजूगुरत्। खड्गापगारं युध्यन्ते, खड्गोपगोरमिति वा—त्वरया खड्गमुद्यम्य युध्यन्त इत्यर्थः' द्वितीयायाञ्चे'ति परीप्सायां णमुल्, 'अपगुरोर्णमुलि' इति वात्वम्। गूर्णः गूर्णवान्—ईदित्त्वादनिट्त्वम्। गूर्त्तिः—'तितुत्रे'तीण्निषेधः। दीर्घोपधोऽयं तुदादौ। हिंसागत्योर्दिवादौ।

## परस्मैपदिनः।

९०। णू, स्तवने। (To praise)

ह्रस्वान्तमात्रेयादयः पठन्ति। यथातु भाष्यं तथा दीर्घान्तः।

यदाह कुटादिसूत्रे तस्मात् नूत्वा धूत्वेत्येव भवितव्यमिति। नू, सेट्, सक, प। नुवति। नुवेत्। नुवतु। अनुवत्। अनुवीत्। नुनाव, नुनुवतुः। नुनुविथ। नुविता। नूयात्। नुविष्यति। अनुविष्यत्। नुनूषति। नोनूयते। नोनोति२। नावयति। अनीनवत्। नूत्वा। नूतः, नूतवान्। नूतिः। नावः।

९१। धू, विधूनने। (To shake)

धू, सेट्, सक, प। धुवति। दुधाव। अधुवीत् इत्यादि नुवतिवत्। धवित्रम्—करणे इत्रः, 'कुटेः किच्चे'त्यादि ज्ञापकात् कुटादिङित्त्वानित्यत्वादगुणः।

९२। गु, पुरीषोत्सर्गे। (To make void by stool)

गु, अनिट्, अक, प। गुवति। गुवेत्। गुवतु। अगुवत्। अगुवीत्। जुगाव, जुगुवतुः, जुगुवुः। जुगुविथ, जुगुथ। गुता। गूयात् गुष्यति। अगुष्यत्। गूनः, गूनवान्—'दुग्धोर्दीर्घश्चे'ति निष्ठानत्वं दीर्घश्च।

९३। ध्रु, गतिस्थैर्ययोः। (To go, to be fixed)

ध्रु, अनिट्, सक, [अक] प। ध्रुवतीत्यादि गुवतिवत्। ध्रुवः—पचाद्यच्। अत्र स्वाम्यादयो ध्रुव इति वकारान्तं धातुं पठन्ति। उक्तञ्च—'ध्रुवमपाये' इत्यत्र हरदत्तेन ध्रु गतिस्थैर्ययो-रित्यस्मात् पचाद्यच्, ये ध्रुवगतिस्थैर्ययोरिति पठन्ति, तेषामि-गुपधलक्षणः कप्रत्यय इति, अस्मिन् पक्षे सेट्। ध्रुवति। ध्रुवेत्। ध्रुवतु। अध्रुवत्। अध्रुवीत्, अध्रुविष्टाम्, अध्रुविषुः। दुध्राव, दुध्रुवतुः। दुध्रुविथ। ध्रुविता। ध्रुष्यात्। ध्रुविष्यति अध्रुवि-ष्यत्। दुध्रुविषति। दोध्रूयते। ध्रावयति। अदुध्रवत्।

# वृत् कुटादयः ।

वृत्करणं कुटादिगणसमाप्त्यर्थम् ।

## आत्मनेपदिनः ।

९४ । कुङ्, शब्दे । ( To Sound )

केचिद्दीर्घान्तमिमं पठन्तीत्यात्रेयमैत्रेयौ । शाकटायनस्तु कुङ् कूङ् शब्दे इत्युभयं पपाठ । कु ( ङ ) अनिट्, अक, प । कुवते इत्यादि नुवतिवत् ।

९५ । पृङ्, व्यायामे । ( To be busy or active )

प्रायेणायं व्याङ्पूर्वः । पृ, (ङ) अनिट्, अक, आ । व्याप्रियते । व्याप्रियेते, व्याप्रियन्ते । व्याप्रियेत । व्याप्रियताम् । व्याप्रियत । व्यापृत, व्यापृषातताम्, व्यापृषत । व्यापप्रे, व्यापप्राते । व्यापर्त्ता, व्यापर्त्तासे । व्यापृषीष्ट, व्यापृषीयास्ताम्, व्यापृषीरन् । व्यापरिष्यते । व्यापरिष्यत । व्यापुपूर्षते । व्यापेप्रियते । व्यापर्पर्त्ति इत्यादि । व्यापारयति । व्यापीपरत् । व्यापृत्य । व्यापृतवान् ।

९६ । मृङ्, प्राणत्यागे । ( To die )

मृ, (ङ) अनिट्, अक, आ । म्रियते, म्रियेते, म्रियन्ते । म्रियसे, म्रियेथे, म्रियध्वे । म्रिये, म्रियावहे, म्रियामहे । म्रियेत, म्रियेताम्, म्रियेरन् । म्रियेथाः, म्रियेयाथाम्, म्रियेध्वम् । म्रियेय, म्रियेवहि, म्रियेमहि । म्रियताम्, म्रियाताम्, म्रियन्ताम्। म्रियस्व, म्रियेथाम्, म्रियध्वम् । म्रियै, म्रियावहै, म्रियामहै । अम्रियत, अम्रियेताम्, अम्रियन्त । अम्रियथाः, अम्रियेथाम्, अम्रियध्वम् । अम्रिये, अम्रियावहि, अम्रियामहि । अमृत, अमृषाताम्, अमृषत । अमृथाः, अमृषाथाम्, अमृढ्वम् । अमृषि, अमृष्वहि । लुङ्लिङ्शिद्विषय एव आत्मनेपदीति

नियमात् अन्यत्र परस्मैपदम्। ममार, मम्रतुः, मम्रुः। ममर्थ, मम्रथुः, मम्र। ममार, ममर; मम्रिव, मम्रिम। मर्त्ता। मृषीष्ट। मरिष्यति। अमरिष्यत्। मुमूर्षति। मरीम्रियते। मर्म्मरीति, मर्म्मर्त्ति इत्यादि। मुमूर्षति। मारयति। अमीमरत्। म्रियते। अमारि। मृत्वा। मृतः, मृतवान्। न म्रियते इत्यमृतम्—वर्त्तमाने क्तः, नञ्समासः। अमरः—पचाद्यच्। मृत्युः—युक्, तुगागमश्च। मर्त्तव्यम्। मृतिः। मारः। मुमूर्षुः। मुमूर्षा। म्रियमाणः। अनु—अनुमरणम्।

## परस्मैपदिनः।

९७। रि, पि, गतौ। (To go)

रि, पि, अनिट्, सक, प। रि—रियति। रियेत्। रियतु। अरियत्। अरैषीत्, अरैष्टाम्, अरैषुः। रिराय, रिर्य्यतुः, रिर्य्युः। रिरयिथ, रिरेथ। रिर्य्यिव, रिर्य्यिव। रेता। रीयात्। रेष्यति। अरेष्यत्। रिरीषति। रेरीयते, रेरयीति, रेरेति। राययति। अरीरयत्। एवं पियतीत्यादि रियतिवत्।

९८। धि, धारणे। (To hold)

धि, अनिट्, सक, प। धियति। दिधाय, दिध्यतुः दिध्युः। दिधेथ, दिधेथ इत्यादि पूर्ववत्।

९९। क्षि, निवासगत्योः। (To dwell, to go)

क्षि, अनिट्, सक, प। क्षियति। चिक्षाय, चिक्षियतुः, चिक्षियुः। चिक्षयिथ, चिक्षेथ। क्षेतेत्यादि रियतिवत्। प्रक्षीय—'क्षिय' इति ल्यपि दीर्घः। क्षीणो देवदत्तः—अकर्मकत्वादगत्यर्थत्वाद्वा कर्त्तरि क्तः, 'निष्ठायामन्यदर्थे' इति दीर्घः। इदमेषां क्षीणं 'क्तोऽधिकरणे च'ेति ध्रौव्यार्थत्वादगत्यर्थत्वाद्वा

ऽधिकरणे क्तः । भावे—चितम्, ण्यदर्थत्वेन दीर्घाभावान्न निष्ठानत्वम् । चीणायुर्व्वलः, चितायुर्व्वलः । चीणकः, चितकः—क्तान्तादनुकम्पायां कन् । चयी 'जिदृक्षी'त्यादिनेनिः । चयतीति शपि गतम् ।

१०० । षू, प्रेरणे । ( To impel )

सू, सेट्, सक प । सुवति, सुवतः, सुवन्ति । सुवसि । सुवामि । सुषुवति—'उपसर्गात् सुनोति-सुवती'ति षत्वम् । सुवेत् । सुवतु, सुवतात् । असुवत् । असावीत्, असाविष्टाम्, असाविषुः । अभ्यषावीत् । सुषाव, सुषुवतुः । सुषविथ । सुषुविव । सुसुषाव । विसुषाव । सविता । सूयात् । सविष्यति । असविष्यत् । अभिसुसूषति । सोषूयते । सोषोति, सोषवीति । सावयति । असूषवत् । सूत्वा । सूतः । सूर्य्यः—क्यपि रुडागमः सूर्य्यस्य स्त्री देवता सूर्य्या—'सूर्य्याद्देवतायां चाब्वक्तव्यम्'इत्याप् । पुंयोगङीषोऽपवादः । अदेवतायान्तु ङीषेव—सूरी मानुषीति, 'सूर्य्यतिष्ये'ति तद्धिते ईति च भसंज्ञानिमित्ते यलोपः । सूर्य्यस्येदं सौर्य्यमित्यत्र सूर्य्यस्य छे च ङ्यां चेति नियमान्न लोपः । प्रसवी—इनिः । सवित्रम्—इत्रः । सूरः—क्रन् । सौरो मन्त्र इति प्रयोगः सूरशब्दादणि द्रष्टव्यः । सूरिश्च सूङः—क्रिरिति । सौरः, सम्प्रदायभेदः सूरस्योपासकः । सूते, सूयत इति अदादिदिवाद्योः ।

१०१ । कॄ, विक्षेपे । ( To throw )

कॄ, सेट् सक, प । किरति । किरेत् । किरतु । अकिरत् । अकारीत्, अकारिष्टाम्, अकारिषुः । चकार, चकरतुः, चकरुः । चकरिथ, चकरथुः, चकर । चकार, चकर ; चकरिव, चकरिम । करिता, करीता । कीर्य्यात् । करिष्यति, करीष्यति ।

अकरिष्यत्, अकरीष्यत्। चिकरिषति, पा ७।२।७५ अस्य दीर्घत्वं नेच्छन्तीति वामनः। हरदत्तोऽपीष्टिरेवेयमिति। भागवृत्तौ त्वत्रापि दीर्घविकल्पो दृश्यते। अवकीर्षीष्ट, अवकरिषीष्ट। चेकीर्य्यते। चाकरीति, चाकर्त्ति। कारयति। अचीकरत्।

अवकिरते हस्ती स्वयमेव। अवाकीर्ष्ट हस्ती स्वयमेव—'भूषाकर्म्मे'ति यक्चिणोः प्रतिषेधः। अत्रेड्विकल्पः अवाकरिष्ट। इटो दीर्घपक्षे अवाकरीष्ट इत्यादि त्रैरूप्यम्। कर्मणि—कीर्य्यते। अकारि—स्वरान्तानां स्यादिषु वा चिण्वदिट्।

अपस्किरते वृषो हृष्टः, अपस्किरते कुक्कुटो भक्ष्यार्थी, अपस्किरते श्वा आश्रयार्थी—'किरतेर्हर्षे'त्यादिना आत्मनेपदम्, 'अपाच्चतुष्पादि'ति सुट्। अपचस्करे। अपास्किरत। अपास्कीर्ष्ट, अपास्करीष्ट, अपास्करिष्ट, अपस्कीर्षीष्ट, अपस्करिषीष्ट। अपस्करिता, अपस्करीता। अपचिस्करिषते—अस्येटो दीर्घो नेष्यत्वम्। अपचेस्कीर्य्यते। अपचाकर्त्ति। अपस्कारयति। अपाचिस्किरत्। उपस्किरति श्वापदः। प्रतिस्किरति—'हिंसायां प्रतेश्च' इति किरतेः कात् पूर्वः सुट्। चकारेण उपः समुच्चीयते। परिनिविभ्य एव सुटः षत्वं, न प्रतेः। उपस्कारं काश्मीरका लुनन्ति—'किरतौ लवने' इति सुट्। अवस्करः—वर्चस्के सुट् निपात्यते, अन्यत्र अवकारः। रथाङ्गे—अपस्करः। विष्किरः, विकिरः—कः, सुड्विकल्पः। उत्कारो धान्यस्य, निकारो धान्यस्य। अन्यत्र उत्करः, निकरः। कीर्त्वा [करित्वा, करीत्वा।] कर्त्ता। करितुम्, करितुम्। प्रकीर्य्य। कीर्णः, कीर्णवान्। कीर्णिः। अवकीर्णमनेन—अवकीर्णी 'इष्टादिभ्यश्चेति प्रथमान्तादिनिः। अवकीर्णं नाम स्त्रियां ब्रह्मचारिणो रेतसः क्षेपः। कुरः—'कॄग्रोरुच्चे'ति उप्रत्यये साधुः। कौरवः—अण् अनपत्ये। अपत्ये तु—कौरव्यः। क्षणातीति क्यादौ।

१०२। गॄ, निगरणे। ( To swallow )

गॄ, सेट्, सक, प। गिरति, गिलति। गिरेत्, गिलेत्। गिरतु, गिलतु, गिरतात्, गिलतात्। अगिरत्, अगिलत् अगारीत्, अगालीत्, अगारिष्टाम्, अगालिष्टाम्, अगारिषुः, अगालिषुः। जगार, जगाल। जगरिथ, जगलिथ। गीर्य्यात्। गरिता, गरीता, गलिता, गलीता, गरिष्यति, गरीष्यति, गलिष्यति, गलीष्यति। अगरिष्यत्, अगरीष्यत्, अगलिष्यत्, अगलीष्यत्। जिगरिषति, जिगलिषति। जेगिल्यते। जागर्त्ति, जागरीति, जागीर्त्तः। गारयति, गालयति। अजीगरत्, अजीगलत्। नित्यं परस्मैपदम्। गार्य्यते, गाल्यते—अन्तरङ्गत्वात् पूर्वं णिलोपादजाद्यपेचो लत्वविकल्पः। गीर्य्यते। अगारि, अगालि गिरते ग्रासः स्वयमेव। अगरिष्ट, अगरीष्ट, अगीर्ष्ट ग्रासः स्वयमेव—किरादित्वाद् यक्चिणोर्निषेधः। अगलिष्ट, अगलीष्ट इति लत्वश्चोदाहार्य्यम्। अवाद्गिरतिरात्मनेपदी—अवगिरते। अवगीर्षीष्ट, अवगरिषीष्ट, अवागरीष्ट इत्यादि—२। एवम् अवगिलतम् इत्यादि सर्वत्र अजादौ लत्वमुदाहार्य्यम्। शब्दं संगिरन्ते वैयाकरणाः—'समः प्रतिज्ञाया'मिति आत्मनेपदम्। गीर्णः। गीर्त्वा। निगीर्य्य। गीर्णिः। गरीतुम्, गरितुम्। मुदं गिरतीति—मुद्गरः, पचाद्यच्। गलः—प्राण्यङ्गे। विषे तु गरः। निगारः, उद्गारः 'उन्न्योर्ग्रः' इति घञ्। स्तृणातिर्वायं शब्दार्थात् गरिष्ठः, गरिमा, गरीयान्—इष्ठादौ गरादेशः। गर्भः—'अर्त्तिगॄभ्यां भन्' इति भन्। गर्भिणी, जलगर्भिणी। समूहे—गार्भीणम्। शब्दार्थः क्र्यादौ। ज्ञानार्थश्चुरादौ। गरतीति अपि।

## आत्मनेपदिनो।

१०३। दृङ्, आदरे। ( To honour )

अयमाङ्पूर्वः। आ—दृ, ( ङ ) अनिट्, सक, आ। आद्रि-

यते। आद्रियेत। आद्रियताम्। आद्रियत लुङ्—आदृत, आदृषाताम्, आदृषत। आदृथाः, आदृषाथाम्, आदृढ्वम्। आदृषि, आदृष्वहि। आदद्रे। आदद्रिषे। आदर्त्ता। आद्रिषीष्ट। आदरिष्यते। आदरिष्यत। आदिदरिषते। आदेद्रीयते। आदर्द्दर्त्ति—३। आदारयति। आदीदरत्। आद्रियते स्वयमेव—किरादित्वात् यक्चिणोर्निषेधः। कर्म्मणि—आद्रियते। आदारि, आदारिषाताम्, आदृषाताम्, षत, षत। आदारिष्ठाः, आदृथाः, आदृढ्वम्, आदारिढ्वम् एवं स्यादिष्वपि चिण्वदिड्वा। आदृत्यः—क्यप्। आदरी—इनिः। आदरः—अप्। आदर्त्तुम्। आदृतः। आदृतवान्। आदृत्य। आदरणम्। आदृतिः। केचित्तु भये दरतीति घटादिपाठादाहुः। दृणातीति दारणे।

१०४। धृङ् अवस्थाने। ( To be, to exist )

धृ ( ङ ) अनिट्, अक, प। ध्रियत इत्यादि आद्रियतेवत्। आधारः—अधिकरणे घञ्। धर्म्मः—मनिन्। भ्वादौ धृधातौ विशेषो द्रष्टव्यः।

## परस्मैपदिनः।

१०५। प्रच्छ, ज्ञीप्सायाम्। ( To ask )

प्रच्छ, अनिट्, सक, प। पृच्छति। पृच्छेत्। पृच्छतु। अपृच्छत्। लुङ्—अप्राक्षीत्, अप्राष्टाम्, अप्राक्षुः, अप्राक्षीः, अप्राष्टम्, अप्राष्ट। अप्राक्षम्, अप्राक्ष्व, अप्राक्ष्म। लिट्—पप्रच्छ, पप्रच्छतुः, पप्रच्छुः। पप्रष्ठ, पप्रच्छिथ। पप्रच्छिव। प्रष्टा। पृच्छ्यात्। प्रक्ष्यति। अप्रक्ष्यत्। पिपृच्छिषति। परीपृच्छ्यते। पाप्रच्छीति, पाप्रष्टि, पाप्रष्ट इत्यादि। प्रच्छयति। अपप्रच्छत्। संपृच्छते—'समो गम्यृच्छी'त्यकर्म्मकात् संपूर्वकात्तङ्। संपृच्छेत।

संपृच्छताम् । समपृच्छत । समप्रष्ट, समप्रक्षाताम्, समप्रक्षत । समप्रष्ठाः, समप्रक्षाथाम्, समप्रड्ढ्वम् । समप्रक्षि, समप्रक्ष्वहि । संपप्रच्छे । संपप्रच्छिषे । संप्रष्टा । संप्रक्षीष्ट । संप्रक्ष्यते । समप्रक्ष्यत । आपृच्छते गुरुम्—'आङि नुप्रच्छ्योरुपसंख्यान'मिति तङ् । प्रश्नः—नङ् । पृच्छतीति—प्राट् । शब्दं पृच्छतीति—शब्दप्राट् 'क्विब्वचिप्रच्छ्यो'त्यादिना निरुपपदात् सोपपदाच्च प्रच्छेः क्विप्, दीर्घोऽसम्प्रसारणञ्च । पृच्छा—भिदाद्यङ् । पृष्ट्वा । आपृच्छ्य । पृष्टः, पृष्टवान् । प्रष्टव्यः । प्रच्छनीयम् । अयं द्विकर्म्मकः, अत्र "अप्रधाने दुह्यादीना"मिति लादयोऽप्रधाने भवन्ति । माणवकः पृच्छते, अप्रच्छि, प्रच्छ्यते वा पन्थानम् । अन्यदपि द्विकर्म्मकसाधारणं नाथत्यादौ प्रपञ्चितम्, तत एवावगन्तव्यम् । आ—आमन्त्रणम्, प्रस्थानम्, सम्भाषणम् । "व्रजापृच्छस्व सुहृज्जनम्" रामायणम् । "सर्वा मातॄरापृच्छ्य प्रययुः" इति भारतम् ।

१०६ । सृज, विसर्गे । ( To let loose )

विसर्गः—त्यागः, सृष्टिः, निर्म्माणम्, करणम् । तत्र व्युदभ्यां परस्त्यागार्थः, अन्यत्र करोत्यर्थः । सृज्, अनिट्, सक, प । सृजति । सृजेत् । सृजतु । असृजत् । अस्राक्षीत्, अस्राष्टाम्, अस्राक्षुः । अस्राक्षीः, अस्राष्टम्, अस्राष्ट । अस्राक्षम्, अस्राक्ष्व । ससर्ज, ससृजतुः, ससृजुः । ससर्जिथ, सस्रष्ठ । ससृजिव । स्रष्टा । सृज्यात् । स्रक्ष्यति । अस्रक्ष्यत् । सिसृक्षति । सरीसृज्यते । सरीसृजीति, सरीसर्ष्टि, सरीसृष्टः इत्यादि । सर्जयति । असीसृजत्, अससर्जत् । सृज्यते मालाम्, असर्जि मालां—अश्रद्धया निष्पादयति, अश्रद्धया निष्पादितवानित्यर्थः, 'सृजियुज्योः श्यंस्तु' 'सृजियुज्योः सकर्मकयोः कर्त्ता बहुलं कर्म्मवद्भवती'ति वक्तव्यम्, सृजेः श्रद्धोपपन्ने कर्त्त-

रोति भाष्यकारवचनात् सकर्म्मकस्यापि कर्म्मवद्भावः। सृज्यम् —'ऋदुपधादि'ति क्यप्। पाणिभ्यां सृज्यत इति—पाणिसर्ग्या रज्जुः 'पाणौ सृजेर्ण्यद्वक्तव्यः' 'समवपूर्व्वाच्चे'ति ण्यति'चजोः कुघिण्यतोरि'ति कुत्वम्। सृजति तामिति—स्रक् 'ऋत्विगि'-त्यादिना कर्म्मणि क्विन्, अमागमः कुत्वञ्च। संसर्गी—घिणुन्। रज्जुः—'सृजेरसुम् चे' त्युप्रत्ययः, सलोपोऽसुमागमश्च। तत्र सकारस्य जश्त्वे शुत्वम्। स्रग्वी—मत्वर्थे विन्। स्रजिष्ठः, स्रजीयान्, स्रजयति—'विन्मतोर्लुक्'णाविष्ठवदिति चेष्ठेमेयःसु णौ च विनो लुक्। सिसृक्षुः। सिसृक्षा। सृज्यते इति दिवादौ द्रष्टव्यम्।

१०७। टु मस्जो, शुद्धौ। ( To be drowned )

मस्ज्, ( टु, ओ ) अनिट्, अक प। मज्जति। मज्जेत्। मज्जतु। अमज्जत्। अमाङ्क्षीत्, अमाङ्क्ताम्, अमाङ्क्षुः। ममज्ज, ममज्जतुः। ममज्जिथ, ममङ्क्थ। मङ्क्ता। मज्ज्यात्। मङ्क्ष्यति। अमङ्क्ष्यत्। मिमङ्क्षति। मामज्ज्यते। मामङ्क्ति। मज्जयति। अममज्जत्। ( टु ) मज्जथुः—अथुच्। मङ्क्त्वा, मक्त्वा—'जान्तनशां विभाषे'ति वाऽनुनासिकलोपः। निमज्ज्य। मग्नः, मग्नवान्—निष्ठा। मद्गुः—ण्यत्। मद्गः—घञ्। मद्गुः उः न्यङ्क्वादित्वात् कुत्वं, पूर्व्ववत् सकारस्य दकारः। मद्गुरः—बाहुलकादुरच्, कुत्वञ्च। मज्जा, मज्जानौ—'श्वनुक्षन्नि'ति कनिनन्तो निपात्यते।

१०८। रुजो, भङ्गे। ( To break )

रुज्, ( ओ ) अनिट्, सक, प। चौरस्य चौरं वा रुजति। रुजेत्। रुजतु। अरुजत्। अरौक्षीत्, अरौक्ताम्, अरौक्षुः। अरौक्षीः। अरौक्षम्। रुरोज, रुरुजतुः, रुरुजुः। रुरोजिथ।

रुरुजिव । रोक्ता । रुज्यात् । रोक्ष्यति । अरोक्ष्यत् । रुरुक्षति । रोरुज्यते, रोरोक्ति२ । रोजयति । अरूरुजत् । निष्पूर्वोऽयं व्याधि-प्रशमने—नीरुजति मिताशी । कूलमुद्रुजः—खश् । रोगः—'पदरुजे'ति कर्त्तरि घञ् । हृद्रोगः—'वा शोकष्यञ्रोगेष्वि'ति हृद्भावविकल्पः । रुक्त्वा । प्ररुज्य । रुग्नः । रुग्नवान्—ओदित्त्वान्नत्वम् । लुग्नं—जीर्णवस्त्रं 'कपिलिकादीनां संज्ञाच्छ-न्दसो' रिति लत्वम् । रुक्—क्विप् । रुजा—भिदादेराकृति-गणत्वादङ् । गिरावत् टाप् वा ।

१०९ । भुजो, कौटिल्ये । ( To be crooked ).

भुज् ( ओ ) अनिट्, अक, प । भुजति इत्यादि । सर्वत्र रुजिवत् । मूलविभुजो रथः—'मूलविभुजादीनामुपसंख्यान'-मिति अणोऽपवादः कः ।

११० । छुप, स्पर्शे । ( To touch )

छुप्, अनिट्, सक, प । छुपति । छुपेत् । छुपतु । अच्छुपत् । अच्छौप्सीत्, अच्छौप्ताम्, अच्छौप्सुः । चुच्छोप, चुच्छुपतुः । चुच्छुपिथ । चुच्छुपिव । छोप्ता । छुप्यात् । छोप्स्यति । अच्छोप्स्यत् । चुच्छुप्सति । चोच्छुप्यते । चोच्छोप्ति२ । छोपयति । अचुच्छुपत् । छुप्त्वा । छुप्तः ।

१११ । रुश, रिश, हिंसायाम् । ( To kill )

रुश्, रिश्, अनिट् सक, प । रुश्—रुशति । रुशेत् । रुशतु । अरुशत् । अरुक्षत् । रुरोश, रुरुशतुः । रुरोशिथ । रुरुशिव । रोष्टा । रुश्यात् । रोक्ष्यति । अरोक्ष्यत् । रुरुक्षति । रोरुश्यते । रोरोष्टि२ । रोशयति । अरूरुशत् । रिश्—रिशति । रिशेत् । रिशतु । अरिशत् । अरिक्षत्, अरिक्षताम्, अरिक्षन् । रिरेश । रेष्टा । रिश्यात् । रेक्ष्यति । अरेक्ष्यत् । रेरिश्यते । रेरेष्टि२ । रेशयति । अरीरिशत् । रिष्ट्वा । रिष्टः । रेशः ।

११२। लिश, गतौ। ( To go )

लिश्, अनिट्, सक, प। लिशतीत्यादि रिशतिवत्।

११३। स्पृश, संस्पर्शने। ( To touch )

स्पृश्, अनिट्, सक, प। स्पृशति। स्पृशेत्। स्पृशतु। अस्पृशत्। अस्प्राक्षीत्, अस्पार्क्षीत्, अस्पृक्षत् इत्यादि मृशतिवत्। पस्पर्श, पस्पृशतुः। पस्पर्शिथ। पस्पृशिव। स्प्रष्टा, स्पर्ष्टा। स्पृश्यात्। स्प्रक्ष्यति, स्पर्क्ष्यति। अस्प्रक्ष्यत्, अस्पर्क्ष्यत्। पिस्पृक्षति। परीस्पृश्यते। परीस्पर्शि२। मन्त्रेण स्पृशतीति—मन्त्रस्पृक्, क्विन्। उदकं स्पृशतीत्यत्र कर्म्मण्यण्—उदकस्पर्श इति। हृदिस्पृक्, दिविस्पृगित्यत्र 'हृद्युभ्यां ङेरुपसंख्यानमि'त्यलुक्। स्पर्शो रोगः—'पदरुजविशस्पृशो घञि'ति घञ्। शेषं मृषवत्।

११४। विच्छ, गतौ। ( To go )

विच्छ्, सेट्, सक, प। विच्छायति। विच्छायेत्। विच्छायतु। अविच्छायत्। आयादय आर्द्धधातुके (असार्वधातुके) वा भवन्तीति भाविन्या आयोत्पत्तेर्विकल्पः। निवृत्तिकल्पे प्रत्ययलक्षणेनायान्तत्वात् आम्प्रत्ययः स्यात्—विच्छांकरोतीत्यादि। अविच्छायीत्, अविच्छीत्, अविच्छायिष्टाम्, अविच्छिष्टाम् इत्यादि। विच्छायाञ्चकार,—आस,—बभूव। विविच्छ, विविच्छतुः, विविच्छुः। एवमाम् लिटि सर्वत्र। विविच्छिथ। विविच्छिव। विच्छायिता, विच्छिता। विच्छाय्यात्, विच्छ्यात्। विच्छायिष्यति, विच्छिष्यति। अविच्छायिष्यत्, अविच्छिष्यत्। विविच्छायिषति, विविच्छिषति। [ वेविच्छाय्यते ] वेविच्छ्यते। विच्छाययति, विच्छायति। अविविच्छायत्, अविविच्छत्। विश्नः—नङ्। विच्छायित्वा, विच्छित्वा। विच्छायितः, विच्छितः।

११५। विश, प्रवेशने। (To enter)

विश्, अनिट्, सक, प। विशतीत्यादि विषतिवत्। नि-पूर्वक आत्मनेपदी—निविशते। 'अङ्के निविशति भया'दित्यत्र आत्मनेपदाभावः—प्रतिरूपकापेचो द्रष्टव्यः। निविशेत। निविशताम्। न्यविशत। न्यविचत, न्यविचेताम्, न्यविचन्त। निविविशे। निविविशिषे। निवेष्टा। निविचीष्ट। निवेच्यते। न्यवेच्यत। निविविचते। निवेविश्यते। निवेविशीति, निवेवेष्टि। विद्वा। प्रविश्य। विष्टः, विष्टवान्—निष्ठा। विट्,विशौ, विशः—क्विप्। देवविशा—अजादिपाठाद्धलन्तादपि टाप्। वेशः—'पद-रुजविशे'ति कर्त्तरि घञ्। गेहानुप्रवेशमास्ते, गेहंगेहमनु-प्रवेशमास्ते—'विशिपदी'त्यादिना णमुल्। तृतीयाप्रभृतित्वात् समासविकल्पः। असमासे व्याप्यमानतायां द्रव्यवचनस्य द्विवच-नम्। आसेव्यमानतायान्तु क्रियावचनस्य णमुलन्तस्य समासे तु व्याप्त्यासेवयोस्तेनैवोक्तत्वान्न द्विर्वचनम्। क्वाप्यत्र वासरूपेण भवति। गेहमनुप्रविश्यानुप्रविश्यास्ते, गेहंगेहमनुप्रविश्यास्त-इति समासस्तस्य न भवत्यनुपपदे विधानादित्येतत् सर्वं स्कान्द-त्यादावुक्तम्। ग्राममभिनिविशते 'अभिनिविशश्चे'त्याधारः कर्म्म। वेशन्तः—झच्। वेश्म—मनिन्।

११६। मृश, आमर्शने। (To touch)

आमर्दन इति क्वचित्। आमर्शनं स्पर्शः। प्रणिधानम्। परा-मर्शः। चिन्ता। मृश्, सेट्, सक, प। मृशतीत्यादि। अमार्चीत्, अम्राचीत्, अमृचत् अमृचताम्, अम्राष्टाम्, अमार्ष्टाम्; अमृचन्, अमार्चुः, अम्राचुः इत्यादि सर्वं स्पृशतिवत्। ममर्श, ममृशतुः, ममृशुः। ममर्शिथ। ममृशथुः। णिच्—मर्शयति। अमीमृशत्, अममर्शत्। आ—मर्शः, आक्रमणम्। "आमृष्टं

नः परैः पदम्" कुमार २।३१। मृष्ट्वा। प्रमृश्य। परा—परामर्शः, ज्ञानम्, वितर्कः, विवेकः, स्पर्शः।

११७। णुद, प्रेरणे। (To impel)

कर्त्रभिप्राये क्रियाफले परस्मैपदार्थः पुनःपाठः। नुद्, अनिट्, सक, प। नुदतीत्यादि पूर्ववत्।

११८। षदॢ, विशरणगत्यवसादनेषु।
(To divide, to go, to break)

सद्, (ॡ) अनिट्, सक, प। सीदति। सीदेत्। सीदतु। असीदत्। अन्यत् सर्वं भौवादिकवत्।

११९। शदॢ, शातने। (To perish gradually)

शातनमिह पातनम्। शद्, (ॡ) अनिट्, सक प। शीयते। शीयेत। शीयताम्। अशीयत। अयं शिति [ सार्वधातुके ] आत्मनेपदी अन्यत्र परस्मैपदी। लुङ्—अशदत्, अशदताम्, अशदन्। शशाद, शेदतुः, शेदुः। शेदिथ, शशत्थ, शेदथुः, शेद। शशाद, शशद, शेदिव, शेदिम। शत्ता। शत्स्यति। शिशत्सति। शाशद्यते। शाशत्ति, शाशदीति। शातयति। अशीशतत्। गतौ तु—गाः शादयति। आ-शद्, भ्वा, प (वोपदेवः) आशीयते। आशत्ता। आशात्सीत्। शादः। शाद्वलः। शतुः। शदः। भौवादिकोऽयं द्रष्टव्यः।

## उभयपदिनः।

१२०। मिल, सङ्गमने। (To unite)

मिल्, सेट्, सक, उ। मिलति, मिलते। मिलेत्, मिलेत। मिलतु, मिलतात्, मिलताम्। अमिलत्, अमिलत। अमेलीत्, अमेलिष्टाम्, अमेलिषुः। अमेलिष्ट, अमेलिषाताम्, अमे-

लिषत । मिमेल, मिमिलतु, मिमिलुः । मिमेलिथ । मिमिले । मिमिलिषे । मेलिता । मिल्यात्, मेलिषीष्ट । मेलिष्यति,—ते । अमेलिष्यत्, अमेलिष्यत । मिमिलिषति,-ते, मिमेलिषति,-ते । मेमिल्यते । मेमिलीति, मेमिल्ति । मेलयति । अमीमिलत् । मिलित्वा । मिलितः । मेलनम् । मिलनमिति पद्मनाभः । "व्यालनिलयमिलनेन" गीतगोविन्दे ८।४।२

१२१ । मुच्लृ मोचणे । ( To release )

मुच् ( लृ ) अनिट्, सक, उ । मुञ्चति, मुञ्चतः, मुञ्चन्ति । मुञ्चसि, मुञ्चथ । मुञ्चामि, मुञ्चावः । मुञ्चते, मुञ्चेते, मुञ्चन्ते । मुञ्चेत्, मुञ्चेताम्, मुञ्चेः । मुञ्चेत, मुञ्चेयाताम्, मुञ्चेरन् । मुञ्चतु, मुञ्चतात्, मुञ्चताम्, मुञ्चन्तु । मुञ्च, मुञ्चतात्, मुञ्चतम्, मुञ्चत । मुञ्चानि मुञ्चाव, मुञ्चाम । मुञ्चताम्, मुञ्चेताम्, मुञ्चन्ताम् । मुञ्चस्व, मुञ्चेथाम्, मुञ्चेध्वम् । मुञ्चै, मुञ्चावहै । अमुञ्चत्, अमुञ्चत (लृ) लुङ्—अमुचत्, अमुचताम्, अमुचन् । अमुक्त, अमुचाताम्, अमुचत । अमुक्थाः, अमुचाथाम्, अमुग्ध्वम् । अमुचि, अमुच्वहि । लिट्—मुमोच, मुमुचतुः, मुमुचुः । मुमोचिथ, मुमुचथुः, मुमुच । मुमोच, मुमुचिव । मुमुचे, मुमुचाते, मुमुचिरे । मुमुचिषे । मोक्ता । मुच्यात् । मुक्षीष्ट । मोक्ष्यति,—ते । अमोक्ष्यत्, अमोक्ष्यत । मुमुक्षति,-ते । कर्म्मकर्त्तरि—मोचते वत्सः स्वयमेव, मुमुक्षते वत्सः स्वयमेव । मोमुच्यते । मोमोक्ति, मोमुचीति । मोचयति । अमूमुचत् ।

मोक्षः—सनन्ताद्घञ् । निर्मुच्यते इति—निर्मोकः, घञि कुत्वम् । "अमोच्यमश्वं यदि मन्यसे" इत्यत्रावश्यके ण्यः, 'ण्ये आवश्यक' इति कुत्वनिषेधः । नखमुचानि धनूंषि—मूलविभुजादित्वात् कर्त्तरि कः मुच्ये र्बहिर्भूतानीत्यर्थः । जलं मुञ्चतीति —जलमुक्, क्विप् । स्त्री—जलमुची । मुक्त्वा । मुक्तिः । मुक्ता—

"क्तिच्क्तौ च संज्ञायामिति संज्ञायां क्तः। मुक्तेव—मौक्तिकम्, स्वार्थे ठक्। नमुचिः—'इगुपधात् किच्चे'ति इन्, 'न भ्राड़ि'त्यादिना नञः प्रकृतिभावः। निष्ठा—मुक्तः, मुक्तवान्। चक्रमुक्तः—'अपेतापोढ़मुक्ते'ति पञ्चमीसमासः। मोचनम्। अव—उन्मोचनम्। आ—परिधानम्। "आमुञ्चत् वर्म्म" भट्टिः १७।६। उद्—उन्मोचनम्। प्रति—प्रत्यर्पणम्, परिधानम्। "तुरङ्गं प्रतिमोक्तुमर्हसि" रघु ३।४७। वि—विमुक्तिः त्यागः।

१२२। लुप्लृ, छेदने। ( To cut )

लुप्, ( लृ ) अनिट्, सक, उ। लुम्पति इत्यादि मुञ्चतिवत्। अलुपत्, अलुपताम्, अलुपन्। अलुप्त, अलुप्साताम्, अलुप्सत। लुलोप, लुलुपतुः, लुलुपुः। लुलोपिथ। लुलुपे, लुलुपाते, लुलुपिरे, लुलुपिषे। लोप्ता। लोप्स्यति। लुप्यात्। लुप्सीष्ट। लुलुप्सति, ते। लोलुप्यते—'लुपसदे'त्यादिना भावगर्हायामेव यङ्, लुप्तनिर्द्दिष्ट इत्यत्रापूर्वकालस्यापि लुप्तशब्दस्य भाष्यकारप्रयोगात् पूर्वनिपातः। लोपयति। अलूलुपत्, अलुलोपत्। काण्यादित्वात् ह्रस्वविकल्पः। लुप्त्वा। विलुप्य। लोप्तुम्। लोपः। लुप्तः, लुप्तवान्। लोप्तव्यम्। लोप्त्वम्। लुप्तिः।

१२३। विदॢ, लाभे। ( To get )

व्याघ्रभूत्यादिमते विद्धातुरयं सेट्, कलापादिमते अनिट्, मतान्तरे वेट्, विद् (लृ) सक, उ। विन्दति, विन्दते। विन्देत्, विन्देत। विन्दतु, विन्दतात्, विन्दताम्। अविन्दत्, अविन्दत। विवेद, विविदतुः। विवेदिथ। विविदे। विविदिषे। (लृ) लुङ्—अविदत्, अविदताम्, अविदन्। अवेदिष्ट, अवेदिषाताम्, अवेदिषत। अवेदिष्ठाः। अवेदिषि। वेदिता। विद्यात्, वेदिषीष्ट। वेदिष्यति, वेदिष्यते। अवेदिष्यत् अवेदिष्यत। विविदिषति,-ते, विवेदिषति,-ते। विविद्यते। वेवेत्ति।

वेदयति । अवीविदत् । अनिट्पक्षे—परस्मैपदे क्रैयादिकविद-वत् । आत्मनेपदे—वेत्ता । वेत्स्यते । अवेत्स्यत । अवित्त, अवित्साताम्, अवित्सत । अवित्थाः, अवित्साथाम्, अविद्ध्वम् । अवित्सि, अवित्स्व । वित्सीष्ट । विविदे । विविदिषे ।

वित्त्वा, विदित्वा, वेदित्वा । संविद्य । वेत्तुं वेदितुम् । विन्दतीति—विन्दः, शः । गोविन्दः, कुविन्दः—संज्ञायां शः । यावद्वेदं भोजयति यावल्लभते तावद्भोजयतीत्यर्थः । 'यावति विन्दजीवो'रिति णमुल् । वित्तं—धनं, वित्तः—प्रसिद्धः । 'वित्तो भोगप्रतीतयो'रिति निष्ठानत्वप्रतिषेधः । अन्यत्र—विन्नः ।

१२४ । लिप, उपदेहे । ( To anoint )

उपदेहः उपचयः । लिप्, अनिट्, सक, उ । लिम्पति, लिम्पते । लिम्पेत्, लिम्पेत । लिम्पतु, लिम्पतात्, लिम्पताम् । लिम्प । अलिम्पत्, अलिम्पत । लुङ्—अलिपत्, अलिपताम्, अलिपन् । ( आ ) अलिपत, अलिप्त, अलिपेताम्, अलिप्साताम्, अलिपन्त, अलिप्सत । अलिपथाः, अलिप्थाः, अलिपेथाम्, अलिप्साथाम्, अलिपध्वम्, अलिब्ध्वम्, अलिपि अलिप्सि, अलिपावहि अलिप्स्वहि । लिट्—लिलेप, लिलिपतुः लिलिपुः । लिलेपिथ । लिलिपिव । लिलिपे । लिलिपिषे । लिप्यात्, लिप्सीष्ट । लेप्ता । लेप्स्यति-ते । अलेप्स्यत्, अलेप्स्यत । कर्मणि—लिप्यते । अलेपि । लिलिप्सति ते । लेलिप्यते । लेलेप्ति२ । लेपयति । अलीलिपत् । प्र—प्रलेपः । लिम्पः—शः । लिपिः लिबिः—इगुपधत्वात् इत्, किच्च । 'दिवाविभे'त्यादिनिर्देशात् पक्षे बकारः । लिप्त्वा, प्रलिप्य । लिप्यम् । लिप्तः । लिप्तवान् । लिप्तिः । लेपः । लेपनम् । लेप्तुम् । लेपकः । लिम्पन् । लिम्पती लिम्पन्ती । अव—अवलेपः, गर्वः ।

१२५। षिच, क्षरणे। ( To sprinkle )

क्षरणमिह सेचनम्। सिच्, अनिट्, सक, उ। सिञ्चति सिञ्चते। अभिषिञ्चति। अभ्यषिञ्चन्। सिञ्चेत्, सिञ्चेत। सिञ्च, तु सिञ्चतात्; सिञ्चताम्। असिञ्चत्, असिञ्चत। लुङ्— असिचत्, असिचताम्, असिचन्। असिचत, असिचेताम्। असिचन्त; असिक्त, असिक्षाताम्, असिक्षत। सिषेच, सिषेचिथ। सिषिचे, सिषिचिषे। सेक्ता। सिच्यात्, सिक्षीष्ट। सेक्ष्यति, सेक्ष्यते। असेक्ष्यत् असेक्ष्यत। सिसिक्षति-ते। परिषिषिक्षति ते। सेसिच्यते—'सिचो यङि' इति न षत्वम्। अभिसेसिच्यते। सेसेक्ति२। सेचयति। असीषिचत्। सेक्त्रम् —ष्ट्रन्। सिक्थम्—थक्। सेचनम्। सेक्तुम्। सिक्त्वा। सिच्य। सिक्तः। सिक्तवान्। सेकः। सेक्तव्यम्। सेचनीयः। अभि—अभिषेचनम्, तर्पणम्। अभिषेकः। उद्—उत्सेकः, गर्वः। "न तस्योत्सिषिचे मनः" इति रघु १७।२। नि— निषेकः, क्षरणम्, गर्भाधानम्। सिचयः—बाहुलकात् कयन्। मुचादयोऽनुदात्ताः, स्वरितेतः।

## परस्मैपदिनः।

१२६। कृती, छेदने। (To cut)

कृत (ई) सेट, सक, प। कृन्तति। कृन्तेत्। कृन्ततु। अकृन्तत्। अकर्त्तीत्, अकर्त्तिष्टाम्, अकर्त्तिषुः। चकर्त्त, चकृततुः, चकृतुः। चकर्त्तिथ, चकृत। चकर्त्त, चकृतिव। कर्त्तिता। कृत्यात्। कर्त्स्यति, कर्त्तिष्यति। अकर्त्स्यत्, अकर्त्तिष्यत्। चिकृत्सति, चिकर्त्तिषति। चरीकृत्यते। चरीकर्त्ति२। कर्त्तयति। अचकर्त्तत्, अचीकृतत्। विकर्त्तनः —नन्द्यादिः। (ई) कृत्तः, कृत्तवान्। कर्त्तः। कर्त्तितव्यः।

कर्त्तनीयः । कर्त्तनम् । कर्त्तिता । कृत्सम् उदकम्—'सृवृभ्यो'ति सप्रत्ययः । कृत्स्नम्—'कृत्यशुभ्या'मिति क्स्नप्रत्ययः । कृत्तिः ।

१२७ । खिद, परिघाते । (To strike)

खिद्, अनिट्, अक, प । खिन्दति । खिन्देत् । खिन्दतु । अखिन्दत् । अखैत्सीत्, अखैत्ताम्, अखैत्सुः । चिखेद, चिखिदतुः । चिखेदिथ । खेत्ता । खेत्स्यति । अखेत्स्यत् । चिखित्सति । चेखिद्यते । चेखेत्ति, चेखिदीति । खेदयति । अचीखिदत् । खित्त्वा । खिन्नः । खिन्नवान् । खेदः । खेत्तव्यम् । खेदनीयम् । खेदनम् । खेत्ता । खिदिरम्—किरच् ।

१२८ । पिश, अवयवे । (To form)

पिश्, सेट्, अक, प । पिंशति । पिंशेत् । पिंशतु । अपिंशत् । अपेशीत्, अपेशिष्टाम्, अपेशिषुः । पिपेश, पिपेशिथ । पिपिशिव । पेशिता । पिश्यात् । पेशिष्यति । अपेशिष्यत् । पिपिशिषति, पिपेशिषति । पेपिश्यते । पेपिशीति, पेपेष्टि । पेशयति । अपीपिशत् । पिशित्वा, पेशित्वा । पिशितम् । पिशिताशः—पिशाचः, पृषोदरादिः । पिशङ्गः—बाहुलकादङ्गच् । पिशङ्गा, 'पिशङ्गादुपसंख्यान'मिति आप् । पेशी—पचाद्यजन्तात् ङीष् । इति मुचादयोऽष्टौ ।

तुदादयः समाप्ताः ।

---

## अथ रुधादयः ।

## उभयपदिनः ।

१ । रुधिर्, आवरणे । (To oppose)

रुध्, (इर्), अनिट्, सक, उ । अयं द्विकर्मकोऽपि । लट्—रुणद्धि, (व्रजं गाम्) रुन्धः [रुन्द्धः] रुन्धन्ति । रुणत्सि, रुन्धः,

रुन्द्ध। रुणध्मि, रुन्ध्वः, रुन्ध्मः। रुन्धे, रुन्धाते, रुन्धते। रुन्त्से, रुन्धाथे, रुन्ध्वे। रुन्धे, रुन्ध्वहे, रुन्ध्महे। लिङ्—रुन्ध्यात्, रुन्ध्याताम्, रुन्ध्युः। रुन्ध्याः, रुन्ध्यातम्, रुन्ध्यात। रुन्ध्याम्, रुन्ध्याव, रुन्ध्याम। रुन्धीत, रुन्धीयाताम्, रुन्धीरन्। रुन्धीथाः, न्धीयाथाम्, रुन्धीध्वम्। रुन्धीय, रुन्धीवहि, रुन्धीमहि। लोट्—रुणद्धु, रुन्धात्; रुन्द्धाम्, रुन्धन्तु। रुन्धि, रुन्धात्; रुन्धम्, रुन्ध। रुणधानि, रुणधाव, रुणधाम। रुन्धाम्, रुन्धाताम्, रुन्धताम्। रुन्त्स्व, रुन्धाथाम्, रुन्ध्वम्। रुणधै, रुणधावहै,—महै। लङ्—अरुणत्, अरुणद्; अरुन्द्धाम्, अरुन्धन्। अरुणत्, अरुणद्, अरुणः, अरुन्धम्, अरुन्ध। अरुणधम्, अरुन्ध्व, अरुन्ध्म। अरुन्ध, अरुन्धाताम्, अरुन्धत। अरुन्धाः, अरुन्धाथाम्, अरुन्ध्वम्। अरुन्धि, अरुन्ध्वहि, अरुन्ध्महि। लुङ्—अरुधत्, अरुधताम्, अरुधन्। अरुधः, अरुधतम्, अरुधत। अरुधम्, अरुधाव, अरुधाम। अरौत्सीत्, अरौद्धाम्, अरौ-। अरौत्सीः, अरौद्धम्, अरौद्ध। अरौत्सम्, अरौत्स्व, अरौत्स्म। अरुद्ध, अरुत्साताम्, अरुत्सत। अरुद्धाः, अरुत्साथाम्, अरुद्ध्वम्। अरुत्सि, अरुत्स्वहि, अरुत्स्महि। लिट्—रुरोध, रुरुधतुः, रुरुधुः। रुरोधिथ, रुरुधथुः, रुरुध। रुरोध, रुरुधिव, रुरुधिम। रुरुधे, रुरुधाते, रुरुधिरे। रुरुधिषे, रुरुधाथे, रुरुधिध्वे। रुरुधे, रुरुधिवहे, रुरुधिमहे। रोद्धा। रुध्यात्, रुत्सीष्ट। रोत्स्यति, रोत्स्यते। अरोत्स्यत्, अरोत्स्यत। कर्म्मणि—रुध्यते। अरोधि। कर्म्मकर्त्तरि—अरुद्ध गौः स्वयमेव, 'न रुध' इति चिणो निषेधः। रुरुत्सति, रुरुत्सते। रोरुध्यते। रोरोद्धि२। रोधयति। अरूरुधत्। अङ्गरोधी—ग्रहादित्वाण्णिनिः। अनुरोधी—णिणन्। प्रतिरोधी—'भविष्यति गम्यादयः' इति इनन्तो भविष्यदर्थे। व्रज उपरोधं, व्रज-

नोपरोधं—'सप्तम्यां चोपपीड़रुधे'ति सप्तम्यन्ते तृतीयान्ते चोपपदे णमुल्, 'तृतीयाप्रभृतीनी'ति समासविकल्पः। रोधः—असुन्। रुधिरम्—किरच्। रोधनम्। रु धन्। रुन्धती स्त्री। रुन्धानः। रुद्धा। रुद्धवान्। रोधकः। अव— ग्वरोधः। वि—विरोधः। आ—आवरणम्। उप—निर्बन्धः, निवारणम्, निषेधः, आच्छादनम्। नि—निरोधः, निरसनम्। अनुरुध्यत इति दिवादौ।

२। भिदिर्, विदारणे। ( To separate )

भिद्, ( इर् ) अनिट्, सक, उ। लट्—भिनत्ति, भिन्तः, भिन्दन्ति। भिनत्सि, भिन्थः, भिन्थ। भिनद्मि, भिन्द्वः, भिन्द्मः। भिन्ते, भिन्दाते, भिन्दते। भिन्त्से, भिन्दाथे, भिन्ध्वे। भिन्दे, भिन्द्वहे, भिन्द्महे। लिङ्—भिन्द्यात्, भिन्द्याताम्, भिन्द्युः। भिन्द्याः, भिन्द्यातम्, भिन्द्यात। भिन्द्याम्, भिन्द्याव, भिन्द्याम। भिन्दीत, भिन्दीयाताम्, भिन्दीरन्। भिन्दीथाः, भिन्दीयाथाम्, भिन्दीध्वम्। भिन्दीय, भिन्दीवहि, भिन्दीमहि। लोट्—भिनत्तु, भिन्तात्; भिन्ताम्, भिन्दन्तु। भिन्धि, भिन्तात्; भिन्तम्, भिन्त। भिनदानि, भिनदाव, भिनदाम। भिन्ताम्, भिन्दाताम्, भिन्दताम्। भिन्त्स्व, भिन्दाथाम्, भिन्ध्वम्। भिनदै, भिनदावहै, भिनदामहै। लङ्—अभिनत्, (द्), अभिन्ताम्, अभिन्दन्। अभिनत्,(द्), अभिनः; अभिन्तम्, अभिन्त। अभिनदम्, अभिन्द्व, अभिन्द्म। अभिन्त, अभिन्दाताम्, अभिन्दत। अभिन्थाः, अभिन्दाथाम्, अभिन्ध्वम्। अभिन्दि, अभिन्द्वहि, अभिन्द्महि। लुङ्—अभिदत्, अभैत्सीत्; अभिदताम्, अभैत्ताम्; अभिदन्, अभैत्सुः। अभिदः, अभैत्सीः; अभिदतम्, अभैत्तम्; अभिदत, अभैत्त। अभिदम्, अभैत्सम्; अभिदाव, अभैत्स्व; अभिदाम, अभैत्स्म। अभित्त,

अभित्साताम्, अभित्सत। अभित्थाः, अभित्साथाम्, अभिद्ध्वम्। अभित्सि, अभित्स्वहि, अभित्स्महि। लिट्—बिभेद, बिभिदतुः, बिभिदुः। बिभेदिथ, बिभिदथुः, बिभिद। बिभेद, बिभिदिव, बिभिदिम। बिभिदे, बिभिदाते, बिभिदिरे। बिभि-, बिभिदाथे, बिभिदिध्वे। बिभिदे, बिभिदिवहे, बिभिदिमहे। लुट्—भेत्ता, भेत्तारौ, भेत्तारः। भेत्तासि इत्यादि। आशीः—भिद्यात्, भित्सीष्ट। ऌट्—भेत्स्यति, भेत्स्यते। ऌङ्—अभेत्स्यत्, अभेत्स्यत। सन्—बिभित्सति, बिभित्सते। यङ्—बेभिद्यते। बेभिदीति, बेभेत्ति। णिच्—भेदयति। अबीभिदत्। कर्म्मणि—भिद्यते। अभेदि।

भिदेलिमानि काष्ठानि—'केलिमरुपसंख्यान'मिति कर्म्मकर्त्तरि केलिमर्। भिद्यः—नदः 'भिद्योध्यौ नद' इति कर्त्तरि क्यपि निपात्यते। काष्ठभित्, प्रभित्—क्विप्। भिदुरं—काष्ठम्, कुरच्। स्वभावादयं कर्म्मकर्त्तरि। भिन्दन्। भिन्दती स्त्री। भिन्दानः। भिदा—अङ्। विदारणादन्यत्र—भित्तिः। भित्तं—शकलम्, अन्यत्र भिन्नम्। भिन्नः, भिन्नवान्। भिदिरं—वज्रम्, किरच्। उद्भित्—क्विप्। उद्भिदः—कः। भेत्तव्यः। भेदनीयः। भेद्यः। तृन्—भेत्ता। स्त्री—भेत्तारी। भेदकः। भेदनम्। भेत्तुम्। उद्—ऊर्द्ध्वभेदः, प्रकाशः। निर्—भेदः, प्रकाशः। प्रति—भर्त्सनम्, निराकरणम्। सम्—मिश्रणम्, संश्लेषः। "कदम्बसम्भिन्नः पवनः।" खल्—दुर्भेदः सुभेदः। विभित्सा। विभित्सुः।

२। छिदिर्, द्वैधीकरणे। ( To cut )

द्विधाकरण इति दुर्गः। छिद् ( इर् ) अनिट्, सक, उ। छिनत्तीत्यादि सर्वं भिनत्तिवत्। छिदुरम्—कुरच्। रज्जुच्छित्—क्विप्। चिच्छित्सुः। छिन्दन्। छिदा—भिदाद्यङ्। द्विधा-

करणादन्यत्र छित्तिः, विच्छित्तिः । छेदः—घञ् । छैदिकम्—‘छेदादिभ्यो नित्य’मिति तदर्हतीत्यस्मिन्नर्थे ठक् । शीर्षच्छेद्यः, शैर्षच्छेदिकः—“शीर्षच्छेद्यादयश्चे”ति तदर्हतीत्यर्थे । यत् ठकौ । अतएव निर्द्देशात् प्रत्ययसन्नियोगेन शिरसः शीर्षभावः । छिदिरम्—किरच् । छिद्रम्—रक् । छेद द्वैधीकरणे चुरादौ ।

४ । रिचिर्, विरेचने । ( To purge )

रिच् ( इर् ) अनिट्, अक, उ । लट्—रिणक्ति, रिङ्क्तः, रिञ्चन्ति । रिणक्षि, रिङ्क्थः, रिङ्क्थ । रिणच्मि, रिञ्च्वः, रिञ्च्मः । रिङ्क्ते, रिञ्चाते, रिञ्चते । रिङ्क्षे, रिञ्चाथे, रिङ्ग्ध्वे । रिञ्चे, रिञ्च्वहे । लिङ्—रिञ्च्यात्, रिञ्च्यातम्, रिञ्च्युः इत्यादि । रिञ्चीत, रिञ्चीयाताम्, रिञ्चीरन् । रिञ्चीथाः । रिञ्चीय । लोट्—रिणक्तु, रिङ्क्तात्; रिङ्क्ताम्, रिञ्चन्तु । रिङ्ग्धि रिङ्क्तात् । रिणचानि । रिङ्क्ताम्, रिञ्चाताम्, रिञ्चताम् । रिङ्क्ष्व, रिञ्चाथाम्, रिङ्ग्ध्वम् । रिणचै, रिणचावहै । अरिणक्, (ग्) अरिङ्क्ताम्, अरिञ्चन् । अरिङ्क्त, अरिञ्चाताम्, अरिञ्चत । लुङ्—अरिचत्, अरिचताम्, अरिचन् । अरैक्षीत्, अरैक्ताम्, अरैक्षुः । ( आत्मने ) अरिक्त, अरिक्षाताम्, अरिक्षत । अरिक्थाः, अरिक्षाथाम्, अरिग्ध्वम् । अरिक्षि, अरिक्ष्वहि । रिरेच, रिरिचतुः । रिरेचिथ । रिरिचिव । रिरिचे । रेक्ता । रिच्यात्, रिक्षीष्ट । रेक्ष्यति,-ते । अरेक्ष्यत्,-त । रिरिक्षति, ते । रेरिच्यते । रेरिचीति, रेरेक्ति । कर्म्मणि—रिच्यते । अरेचि । रेचयति । अरीरिचत् । रिक्त्वा । प्ररिच्य । रिक्तिः । रिक्तः । रेचकः । रेकः—घञ् । रिक्थम्—थक् । विरिञ्चः, विरिञ्चिः, विरिञ्चिनः—एते पृषोदरादयः । वि—विरेकः । अति—अतिरेकः । व्यति—व्यतिरेकः, अतिशयः । उद्—उद्रेकः ।

५। विजिर्, पृथग्भावे। ( To separate )

विज्, ( इर् ) अनिट्, अक, उ। विनक्ति, विङ्क्तः, विञ्जन्ति। विङ्क्ते इत्यादि सर्वं रिचिवत्। विवेकी—घिणुन्। विवेकः—घञ्।

६। क्षुदिर्, संपेषणे। ( To pound )

क्षुद्, (इर्) अनिट्, सक, उ क्षुणत्ति, क्षुन्तः, क्षुन्दन्ति। क्षुणत्सि। क्षुणद्मि, क्षुन्द्वः ...न्ते, क्षुन्दाते, क्षुन्दते। क्षुन्त्से। क्षुन्दे, क्षुन्द्वहे। क्षुन्द्यात्, क्षुन्द्याताम्। क्षुन्दीत, क्षुन्दीयाताम्। क्षुणत्तु, क्षुन्तात्; क्षुन्ताम्, क्षुन्दन्तु। क्षुन्धि, क्षुन्तात्; क्षुन्तम्, क्षुन्त। क्षुणदानि, क्षुणदाव। क्षुन्ताम्, क्षुन्दाताम्, क्षुन्दताम्। क्षुन्त्स्व। क्षुणदै, क्षुणदावहै। अक्षुणत्, ( द् ) अक्षुन्ताम्, अक्षुन्दन्। अक्षुणत्, अक्षुणद्, अक्षुणः; अक्षुन्तम्, अक्षुन्त। अक्षुणदम्, अक्षुन्द्व। अक्षुन्त, अक्षुन्दाताम्, अक्षुन्दत। अक्षुन्त्थाः, अक्षुन्दाथाम्, अक्षुन्ध्वम्। अक्षुन्दि, अक्षुन्द्वहि। लुङ्—अक्षुदत्, अक्षुदताम्, अक्षुदन्। अक्षौत्सीत्, अक्षौत्ताम्, अक्षौत्सुः। अक्षुदः, अक्षौत्सीः। अक्षुदम्, अक्षौत्सम्। अक्षुत्त, अक्षुत्साताम्, अक्षुत्सत। चुक्षोद, चुक्षुदतुः, चुक्षुदुः। चुक्षोदिथ, चुक्षुदिव। चुक्षुदे। चुक्षुदिषे। चुक्षुदिवहे। क्षोत्ता। क्षुद्यात्। क्षुत्सीष्ट, क्षुत्सीयास्ताम्। क्षोत्स्यति, क्षोत्स्यते। अक्षोत्स्यत्, अक्षोत्स्यत। चुक्षुत्सति,-ते। चोक्षुद्यते। चोक्षोत्ति। क्षोदयति। अचुक्षुदत्। क्षुद्रः—रक्। क्षुद्राभिः कृतं—क्षौद्रम्, विषयेऽञ्। इष्ठः—क्षोदिष्ठः। ईयसुः—क्षोदीयान्। इमन्—क्षोदिमा, 'स्थूल-दूर' इत्यादिना सिद्धिः। क्षुद्रमाचष्टे—क्षोदयति, णाविष्ठवत्।

७। युजिर्, योगे। ( To join )

युज ( इर् ) अनिट्, सक, उ। लट्—युनक्ति, युङ्क्तः,

युञ्जन्ति। युनक्षि, युङ्क्थः, युङ्क्थ। युनज्मि, युञ्ज्वः, युञ्ज्मः। युङ्क्ते, युञ्जाते, युञ्जते। युङ्क्षे, युञ्जाथे, युङ्ग्ध्वे। युञ्जे, युञ्ज्वहे। लिङ्—युञ्ज्यात्, युञ्ज्याताम्, युञ्ज्युः। युञ्जीत, युञ्जीयाताम्, युञ्जीरन्। युञ्जीथाः, युञ्जीयाथाम्, युञ्जीध्वम्। युञ्जीय, युञ्जीवहि। लोट्—युनक्तु, युङ्क्तात्; युङ्क्ताम्, युञ्जन्तु। युङ्ग्धि, युङ्क्तात्; युङ्क्तम्, युङ्क्त। युनजानि, युनजाव, युनजाम। युङ्क्ताम्, युञ्जाताम्, युञ्जताम्। युङ्क्ष्व, युञ्जाथाम्, युङ्ग्ध्वम्। युनजै, युनजावहै। अयुनक्, अयुनग्; अयुङ्क्ताम्; अयुञ्जन्। अयुङ्क्त, अयुञ्जाताम्, अयुञ्जत। अयुङ्क्थाः। अयुञ्जि, अयुञ्ज्वहि। लुङ्—अयुजत्, अयुजताम्, अयुजन्। अयौक्षीत्, अयौक्ताम्, अयौक्षुः। अयौक्षीः, अयुक्तम्, अयुक्त। पक्षे—अयुजः, अयुजतम्, अयुजत। अयौक्षम्, अयौक्ष्व, अयौक्ष्म। पक्षे—अयुजम्, अयुजाव, अयुजाम। आत्मने—अयुक्त, अयुक्षाताम्, अयुक्षत इत्यादि विजिर्वत्। लिट्—युयोज, युयुजतुः, युयुजुः। युयोजिथ, युयुजथुः, युयुज। युयोज। युयुजिव। युयुजे, युयुजाते, युयुजिरे। युयुजिषे, युयुजाथे, युयुजिध्वे। युयुजे, युयुजिवहे। लुट्—योक्ता, योक्तारौ इत्यादि। युज्यात्, युक्षीष्ट। योक्ष्यति, योक्ष्यते। अयोक्ष्यत्, अयोक्ष्यत। युयुक्षति, युयुक्षते। योयुज्यते। योयुजीति, योयोक्ति। योजयति। अयूयुजत्। कर्म्मणि—युज्यते। अयोजि। 'स्वराद्यन्तादुपसर्गात् अयज्ञपात्रे युजिरः' इति अकर्त्रभिप्रायेऽपि आत्मनेपदम्—प्रयुङ्क्ते, उदयुङ्क्ते 'नियुङ्क्ते' उपयुङ्क्ते इत्यादि। यज्ञपात्रे तु पात्राणि प्रयुनक्तीति परस्मैपदम्।

युग्यं—वाहनं, कर्म्मणि करणे वा क्यपि निपात्यते। अन्यत्र—योग्यं, ण्यति कुत्वम्। प्रयोज्यः, नियोज्यः—'प्रयोज्यनियोज्यौ शक्यार्थे' इति कुत्वाभावो निपात्यते। युङ्, युञ्जौ,

युज्ञः 'ऋत्विगि'त्यादिना क्विन्, ऋत्विगादिभिर्निपातनैः साहचर्य्याद्दशु युजिक्रुञ्चामन्यदपि कार्य्यम्भवतीति ज्ञापनादुपपदाधिकारेऽपि निरुपपदादयं प्रत्ययो भवति, 'युजेरसमासे' इति सर्वनामस्थाने नुन्। पदान्ते संयोगान्तलोपः, 'क्विन्प्रत्ययस्य कुरि'ति कुत्वम्। अन्यत्रानुस्वारपरवर्णौ। असर्वनामस्थाने युक्, युग्, युजौ, युजः, युग्भ्यामिति। युक्ष्वित्यत्र कुत्वे 'खरि चे'ति चर्त्वम्। अश्वयुक्—क्विप्। योक्त्रः—ष्ट्रन्। योगी—घिणुन्। घञ्—योगः, प्रयोग इत्यादि। प्रायोगिकम्—भवार्थेऽध्यात्मादित्वात् ठञ्। योगाय प्रभवति—योग्यः, यौगिकः, यत्ठञौ। युगं—घञ्, उञ्छादिपाठादगुणत्वम्, रथाङ्गे कालविशेषे। युग्यम्—यत्। संयुगे साधु—सांयुगीनम् 'प्रतिजनादिभ्यः खञि'ति खञ्, प्रतिजनादिपाठादेव संयुगशब्दस्य घञि गुणाभावः। परियोगः, पलियोगः—लत्वं वा। रुधादयोऽनुदात्ताः स्वरितेतः। युञ्जन्। प्रयुञ्जानः युञ्जती स्त्री। नियोगः, प्रयोगः। युक्त्वा, नियुज्य। प्रयोजनम्। प्रयोक्तव्यः। प्रयोजनीयः। प्रयुक्तः। प्रयुक्तवान्। योक्तुम्। युक्तिः इत्यादि। दिवादौ चुरादौ चायम्।

८। उ च्छृदिर्, दीप्तिदेवनयोः। ( To shine, to play )

अथ स्वरितौ सेटौ। छृद्, ( उ, इर् ) सेट्, अक, उ। छृणत्ति, छृन्तः, छृन्दन्ति। छृणत्सि, छृन्थः। छृन्ते। छृन्त्से। छृन्दे, छृन्द्महे। छृन्द्यात्, छृन्दीत। छृणत्तु, छृन्तात्; छृन्ताम्, छृन्दन्तु। छृन्ताम्, छृन्दाताम्, छृन्दताम्। अच्छृणत्, अच्छृन्ताम्, अच्छृन्दन्। अच्छृन्त, अच्छृन्दाताम्, अच्छृन्दत। अच्छृदत्, अच्छर्दीत्; अच्छर्दिष्ट, अच्छर्दिषाताम्, अच्छर्दिषत। चच्छर्द, चच्छृदतुः, चच्छृदुः। चच्छर्दिथ। चच्छृदे, चच्छृदिषे, [ चच्छृत्से ]। छर्दिता। छृद्यात्। छर्दिषीष्ट, छृत्सीष्ट 'सेऽसि-

चीति इड्विकल्पः। छर्दिष्यति, छर्त्स्यति; छर्दिष्यते, छर्त्स्यते। अच्छर्दिष्यत्, अच्छर्दिष्यत, अच्छर्त्स्यत्,—स्यत। चिच्छर्दिषति,—ते, चिच्छृत्सति,—ते। चरीच्छृद्यते। चर्च्छर्त्ति,३। छर्दयति,—ते। अचच्छर्दत्,—त, अचिच्छृदत्,—त। छृत्त्वा, छर्दित्वा। छृत्तः, छृत्तवान्। छृदो सन्दीपने युजादौ।

८। उ तृदिर्, हिंसानादरयोः। (To kill, to destroy)

तृद् (उ, इर्) सेट्, सक, उ।। तृणत्ति, तृन्ते इत्यादि छृदिर्वत्।

## परस्मैपदी।

### १०। कृती, वेष्टने। ( To surround )

कृत् ( ई ) सेट् सक, प। कृणत्ति, कृन्तः, कृन्तन्ति। कृणत्सि। कृणद्मि। कृन्त्यात्। कृणत्तु। अकृणत्। अन्यत्तौदादिकवत्।

## आत्मनेपदिनः।

### ११। ञि इन्धी, दीप्तौ। ( To shine )

इन्ध् (ञ, ई) सेट्, अक, आ। लट्—इन्धे, इन्धाते, इन्धते। इन्त्से, इन्ध्वे। इन्धे, इन्ध्वहे। लिङ्—इन्धीत, इन्धीयाताम्। इन्धीरन्। लोट्—इन्धाम्, इन्धाताम्, इन्धताम्। इन्त्स्व। इनधै, इनधावहै, इनधामहै। लङ्—ऐन्ध, ऐन्धाताम्, ऐन्धत। ऐन्धाः, ऐन्धाथाम्, ऐन्ध्वम्। ऐन्धि। लुङ्—ऐन्धिष्ट, ऐन्धिताम्, ऐन्धिषत। ऐन्धिष्ठाः। ऐन्धिषि। ऐन्धिष्वहि। ईधे, ईधाते, ईधिरे। इन्धिता। इन्धिषीष्ट। इन्धिष्यते। ऐन्धिष्यत। इन्दिधिषते। इन्धयति। ऐन्दिधत्। इद्धः—ञित्वाद्वर्त्तमाने

न्तः। इन्धनम्। इन्धानः। समिन्धानः। एधः—घञ्। सान्तस्त्वेधःशब्द औणादिकेऽसुनि वाहुलकान्नलोपे सिद्धः। अग्निमिन्धे इति—अग्निमिन्धः 'भ्राष्ट्राग्न्योरिन्धे' इति मुम्। समित्, समिद्—क्विप्। औ—समिधौ। सामिधेन्यः—मन्त्रः 'समिधामाधाने षेण्यण्' इति षेण्यण्। सामिधेनी—ऋक्, षित्त्वात् ङीष्, हलस्तद्धितस्येति यलोपः। अग्निमिन्धे इत्यग्नीत्—ऋत्विग्विशेषः, 'क्विप् च' इति क्विप्। आग्नीध्रः, अग्नीध्रः 'शरणे रण् भं च' इति रण्प्रत्ययः, भं चेति भत्वात् पदत्वाभावाज्जश्त्वं न भवति। शरणं—गृहम्, णित्त्वाद्वृद्धिः। 'आग्नीध्रः साधारणादञ्' इति स्वार्थेऽञ्, यद्यपीदमेव रूपं तत्प्रयोजनन्तु स्त्रियामाग्नीध्री शालेति ङीप्। विविधमिन्धे इति—वीध्रः, अग्निर्विमलश्च 'वाविन्धेः' इति वावुपसर्ग उपपदे इन्धेः क्रन्, कित्त्वादनुनासिकलोपः।

१२। खिद्, दैन्ये। ( To be distressed )

खिद्, अनिट्, अक, आ। लट्—खिन्ते, खिन्दाते, खिन्दते। खिन्त्से। खिन्दे। लिङ्—खिन्दीत। लोट्—खिन्ताम्, खिन्दाताम्, खिन्दताम्। खिन्त्स्व, खिनदै, खिनदावहै। लङ्—अखिन्त, अखिन्दाताम्, अखिन्दत। अखिन्दि। लुङ्—अखित्त, अखित्साताम्, अखित्सत। लिट्—चिखिदे, चिखिदाते, चिखिदिरे। लुट्—खेत्तेत्यादि विद्यतिवत्।

१३। विद्, विचारणे। ( To consider )

विद्, अनिट्, सक, आ। विन्ते, विन्दाते, विन्दते इत्यादि खिदिवत्। वित्तः, विन्नः—'नुदविदोन्दत्रे'ति निष्ठानत्वविकल्पः। उन्दिना साहचर्य्यादस्यैव तत्र ग्रहः। अयं भूवाद्यादिषु।

## परस्मैपदिनः ।

### १४ । शिष्लृ, विशेषणे । ( To distinguish )

विशेषणं विशेषकरणम् । विशेषणमुपरञ्जनम् । यथास्थितस्य वस्तुनो गुणान्तराधानमिति धातुप्रदीपः । आद्यस्तालव्यः अन्त्यो मूर्द्धन्यः । इतो भुनक्त्यन्ता अनुदात्ता उदात्तेतः ।

शिष्, ( लृ ) अनिट्, सक, प । शिनष्टि, शिंष्टः, शिंषन्ति । शिनक्षि । शिनष्मि, शिंष्वः । शिंष्यात्, शिंष्याताम् । शिनष्टु, शिंष्टात् ; शिंष्टाम् । शिण्ढि । शिनषाणि, शिनषाव । अशिनट्, अशिनड् ; अशिंष्टाम्, अशिंषन् । अशिनट्२ । अशिनषम् । अशिंष्व । (लृ) अशिषत्, अशिषताम्, अशिषन् । शिशेष शिशिषतुः । शिशेषिथ । शिशिषिव । शेष्टा । शिष्यात् । शेक्ष्यति । अशेक्ष्यत् । शिशिक्षति । शेशिष्यते । शेशिषीति, शेशेष्टि । शेषयति । अशीशिषत् । शिष्टः, शिष्टवान् । विशेषः, वैशेषिकं—स्वार्थे ठक् । महत्या विशिष्टः—महाविशिष्टः, 'महदाले घासकरविशिष्टेषूपसंख्यान'मिति पुंवद्भाव आत्वञ्च । शेषतीति हिंसायां भ्वादौ । शेषयतीति चुरादौ ।

### १५ । पिष्लृ, संचूर्णने । ( To grind )

पिष्, (लृ) अनिट्, सक, प । पिनष्टीत्यादि शिनष्टिवत् । शुष्कपेषं पिनष्टि, चूर्णपेषं पिनष्टि, रूक्षपेषं पिनष्टि—'शुष्कचूर्णरूक्षेषु पिष' इति शुष्कादौ कर्म्मण्युपपदे णमुल्, शुष्कं पिनष्टीत्यर्थः । उदपेषं पिनष्टि—'स्नेहने पिष' इति णमुल्, उदकेन पिनष्टीत्यर्थः, 'पेषंवासवाहनधिषु चे'ति उदभावः, सर्वत्र कषादित्वादयथाविध्यनुप्रयोगः । पिष्टमयं—'पिष्टाच्चे'ति विकारे मयट् । चौरस्य पिनष्टि—'जासिनिप्रहणे'त्यादिना

कर्म्मणि शेषे हिंसायां षष्ठी, अशेषे चाहिंसायाञ्च—चौरं पिनष्टि, धानाः पिनष्टीति द्वितीयैव भवति।

१६। भन्जो, आमर्द्दने। ( To break )

आमर्द्दनं भञ्जनम्। भन्ज् ( ओ ) अनिट्, सक, प। "भनक्त्युपवनं कपिः" इति भट्टिः। लट्—भनक्ति, भङ्क्तः, भञ्जन्ति। भनक्षि, भङ्क्थः, भङ्क्थ। भनज्मि, भञ्ज्वः भञ्ज्मः। लिङ्—भञ्ज्यात्, भञ्ज्याताम्, भञ्ज्युः। लोट्—भनक्तु, भङ्क्तात्; भङ्क्ताम्, भञ्जन्तु। भङ्ग्धि, भङ्क्तात्। भनजानि, भनजाव, भनजाम। लङ्—अभनक्, अभनग्; अभङ्क्ताम्, अभञ्जन्। अभनक्, अभनग्। अभनजम्, अभञ्ज्व। लुङ्—अभाङ्क्षीत्, अभाङ्क्ताम्, अभाङ्क्षुः। लिट्—बभञ्ज, बभञ्जतुः, बभञ्जुः। बभञ्जिथ, बभङ्क्थ। बभञ्जिव। भङ्क्ता। भज्यात्। भङ्क्ष्यति। अभङ्क्ष्यत्। बिभङ्क्षति। बम्भज्यते। बम्भञ्जीति, बम्भङ्क्ति। भञ्जयति। अबभञ्जत्। कर्म्मणि—भज्यते। (लुङ्) अभञ्जि, अभाजि, पा—६।४।३३। भङ्क्त्वा, भक्त्वा—'जान्तनशां विभाषे'ति विकल्पेन नलोपः। विभज्य। भग्नः, भग्नवान्। भङ्गुरः—घुरच्। भङ्गः—घञ्। भङ्गा, कुत्सिम्—कर्म्मणि घञन्ताट्टाप्। भङ्गानां भवनं क्षेत्रं—भङ्ग्यम्, यत्। भाङ्गीनं—विभाषया खञ्। भङ्गानां रजः—भङ्गाकटम्, 'अलावूतिलोमा-भङ्गाभ्यो रजसि कटजि'ति कटच्। भङ्गी—पिप्पल्यादित्वात् ङीष्। भाज् इति चुरादौ। भज इति भ्वादौ।

१७। भुज, पालनाभ्यवहारयोः। ( To protect, to eat, to enjoy, to suffer )

पालनं—रक्षणम्। अभ्यवहारः—भोजनम्, उपभोगः, अनुभवः। भुज, अनिट्, सक, [प] उ। (अनवने आ) परस्मै,—लट्—भुनक्ति, भुङ्क्तः, भुञ्जन्ति। भुनक्षि, भुङ्क्थः।

भुनज्मि, भुञ्ज्व। लिङ्—भुञ्ज्यात्। लोट्—भुनक्तु, भुङ्क्तात्; भुङ्क्ताम्, भुञ्जन्तु। भुङ्ग्धि, भुङ्क्तात्, भुङ्क्त। भुनजानि, भुनजाव, भुनजाम। लङ्—अभुनक् [ग्] अभुङ्क्ताम्, अभुञ्जन्। अभुनक् (ग्) अभुङ्क्तम्। अभुनजम्, अभुञ्ज्व। लुङ्—अभौक्षीत्, अभौक्ताम्, अभौक्षुः। अभौक्षीः। अभौक्तम्। अभौक्षम्, अभौक्ष्व। लिट्—बुभोज, बुभुजतुः, बुभुजुः। बुभोजिथ, बुभुजथुः, बुभुज। बुभोज, बुभुजिव। भोक्ता। भुज्यात्। भोक्ष्यति। अभोक्ष्यत्। बुभुक्षति। बोभुज्यते। बोभुजीति, बोभोक्ति।

आत्मने—भुङ्क्ते * भुञ्जाते, भुञ्जते। भुङ्क्षे, भुञ्जाथे, भुङ्ग्ध्वे। भुञ्जे, भुञ्ज्वहे। भुञ्जीत, भुञ्जीयाताम्, भुञ्जीरन्। अभुङ्क्त, अभुञ्जाताम्, अभुञ्जत। अभुङ्क्थाः, अभुञ्जाथाम्, अभुङ्ग्ध्वम्। अभुञ्जि, अभुञ्ज्वहि। लुङ्—अभुक्त, अभुक्षाताम्, अभुक्षत। अभुक्थाः, अभुक्षाथाम्, अभुग्ध्वम्। अभुक्षि, अभुक्ष्वहि। लिट्—बुभुजे, बुभुजाते, बुभुजिरे। भोक्ता। भुक्षीष्ट। भोक्ष्यते। अभोक्ष्यत। बुभुक्षते। भोजयति। अबूभुजत्। भोजयति देवदत्तं यज्ञदत्तः—'गतिबुद्धी'त्यादिना प्रयोज्यः कर्म्म, निगरणार्थत्वान्नित्यं परस्मैपदम्। इदमेषां भुक्तम्—'क्तोऽधिकरणे चे'त्यधिकरणे भावे कर्म्मणि वा वर्त्तमाने क्तः। एवं भावकर्म्मणोरुदाहार्य्यम्। भुक्ता ब्राह्मणा इति,—भुक्तमेषामस्तीत्यर्श आद्यजन्तः, 'भोज्यं भक्ष्ये' इति ण्यति अकुत्वं निपात्यते। अभक्ष्ये तु—भोग्या लक्ष्मीः। भोगः शरीरम्,—'हलश्चे'ति संज्ञायां घञ्। मातृभोगीणः—'आत्मविश्वजनभोगो-

* "भुजोऽनवने" इति आत्मनेपदम्। भुजोऽदने इति वक्तव्ये अनवन इति वचनमभ्यवहारादन्यत्रापि तदर्थं, तथाचेदमपि सिध्यति। बुभुजे पृथिवीपालः पृथिवीमेव केवलाम्" अनुभव इत्यर्थः।

त्तरपदादि'ति तस्मै हितमिति विषये खः। आचार्य्यभोगीन इत्यत्र 'आचार्य्यादणत्वं चे'ति णत्वाभावः। भुजः—'हलश्चे'ति करणे घञ्, 'भुजन्युब्जौ पाण्युपतापयो'रिति निपातनम्। भुजा—अयमेव टाबन्तः। भोजः—पचाद्यच्। भोक्तव्यः। भोजनीयः। भुक्तिः। भोक्तुम्। बुभुक्षा। बुभुक्षुः। भोक्ता, भोक्तारौ। भोजकः। भोजनम्। भुक्त्वा। उपभुज्य। भुक्तवान्।

१८। तृह, हिंसायाम्। ( To kill )

तृह्, सेट्, सक, प। तृणेढ़ि, तृण्ढः, तृंहन्ति। तृणेक्षि, तृण्ढः, तृण्ढ। तृणेह्मि, तृंह्वः, तृंह्मः। तृंह्यात्, तृंह्याताम्। तृणेढु, तृण्ढात्; तृण्ढाम्, तृंहन्तु। तृण्ढि, तृण्ढात्। तृणहानि, तृणहाव। अतृणेट्, अतृणेड्; अतृण्ढाम्, अतृंहन्। अतृणेट्, अतृणेड्। अतृणहम्, अतृंह्व। अतर्हीत्, अतर्हिष्टाम्, अतर्हिषुः। ततर्ह, ततृहतुः, ततृहुः। ततर्हिथ। ततृहिव। तर्हिता। तृह्यात्, तृह्यास्ताम्। तर्हिष्यति। अतर्हिष्यत्। तितर्हिषति। तरीतृह्यते। तरीतृहीति, तरीतर्ढि इत्यादि। तर्हयति। अतीतृहत्, अततर्हत्। तर्हित्वा। तर्हितुम्। तृहितः।

१९। हिसि, हिंसायाम्। ( To kill )

हिन्स्, ( इ ) सेट्, सक, प। लट्—हिनस्ति, हिंस्तः, हिंसन्ति। हिनस्सि। हिनस्मि। लिङ्—हिंस्यात्, हिंस्याताम्। लोट्—हिनस्तु, हिंस्तात्; हिंस्ताम्, हिंसन्तु। हिन्धि, हिंस्तात्। हिनसानि, हिनसाव। लङ्—अहिनत्, (द्) अहिंस्ताम्, अहिंसन्। अहिनत्; अहिनद; अहिनः। अहिनसम्, अहिंस्व। लुङ्—अहिंसीत्, अहिंसिष्टाम्, अहिंसिषुः। लिट्—जिहिंस, जिहिंसतुः। जिहिंसिथ। जिहिंसिव। हिंसिता। हिंस्यात्, हिंस्यास्ताम्। हिंसिष्यति। अहिंसिष्यत्।

जिहिंसिषति। जेहिंस्यते। जेहिंसीति, जेहिंस्ति। हिंसयति। अजिहिंसत्। हिंस्यते। अहिंसि। हिंसकः—वुञ्। हिंस्रम्—रः। हिंसा—'गुरोश्च हलः' इत्यकारः। हिंसित्वा। हिंसितः। हिनस्तीति सिंहः—अच्, पृषोदरादित्वाद्वर्णविपर्य्ययः।

२०। उन्दी, क्लेदने। ( To wet )

उन्द्, ( ई ) सेट्, सक, प। उनत्ति, उन्तः, उन्दन्ति। उन्द्यात्, उन्द्याताम्। उनत्तु, उन्तात्; उन्ताम्, उन्दन्तु। उनदानि। औनत्, (द्) औन्ताम्,औन्दन्। औनः, औनत्, औनद्; औन्तम्, औन्त। औनदम्, औन्द। औन्दीत्, औन्दिष्टाम्, औन्दिषुः। उन्दाञ्चकार,—आस,—बभूव। उन्दिता। उद्यात्, उद्यास्ताम्। उन्दिष्यति। औन्दिष्यत्। उन्दिदिषति। उन्दयति। औन्दिदत्।

उन्दित्वा। प्रोद्य। उन्नम्, उत्तम्—ईदित्त्वादनिट्त्वम् 'नुदविदोन्दे'ति निष्ठानत्वविकल्पः। अवोदः—घञ्, किञ्चिदार्द्रः। उन्दनम् ओद्म,—मनिन्नौणादिकः। 'अवोदैधौद्मे'ति नलोपो घञन्तगुणत्वञ्च निपात्यते। इन्दुः—'उन्देरिच्चादे'रिति उप्रत्ययः, इकारश्चोकारस्य। ओदनः—'उन्देर्नलोपश्चे'ति युचि नलोपः। उद्रम्—रक्। उदकः, उदकम्—क्वुन्नन्तो निपातितः। उदधिः क्षीरोदः,—'उदकस्योदः संज्ञाया'मिति पूर्वपदस्योत्तरपदस्योदादेशः। उदवासः। उदकस्य वाहनः—उदवाहनः। उदधिर्घटः—'पेषंवासवाहनधिषु चे'ति पेषमादावुत्तरपदे उदकस्योदादेशः, असंज्ञार्थं वचनम्। उदकस्य पात्रम्—उदकपात्रम्,—'एकहलादौ पूरयितव्येऽन्यतरस्या'मिति वोदभावः। उदमन्थः—'मन्थौदनसक्तुबिन्दुवज्रभारहारवीवधगाहेषु चे'ति मन्थादिषूत्तरपदेषूदकस्योदभावः। उदौदन

इत्यादि चोदाहार्य्यम्। उदन्वान्—घटः, उदन्वान् नाम ऋषिः—'उदन्वानुदधौ चे'ति मतुप्युदकस्योदभावः, उदधौ संज्ञायाञ्च निपात्यते, उदधिग्रहणमसंज्ञार्थम्। उदन्यति पिपासतीत्यर्थः 'अशनायोदन्येति क्यच्युदकस्योदभावः पिपासायाम्। उदक्यः—यत्।

२१। अञ्जू, व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु।

( To make clear, to anoint, to be beautiful, to go )

अञ्ज, ( ऊ ) वेट्, सक, प। अनक्ति, अङ्क्तः, अञ्जन्ति। अनक्षि; अङ्क्थः। अनज्मि, अञ्ज्वः। अञ्ज्यात्, अञ्ज्याताम्, अञ्ज्युः। अनक्तु, अङ्क्तात्; अङ्क्ताम्, अञ्जन्तु। अङ्ग्धि, अङ्क्तात्, अङ्क्तम्। अनजानि, अनजाव, अनजाम। आनक्, आनग्; आङ्क्ताम्, आञ्जन्। आनक्, ( ग् ) आङ्क्ताम्, आङ्क्त। आनजम्, आञ्ज्व। आञ्जीत्, आञ्जिष्टाम्, आञ्जिषुः—'अञ्जेः सिचो'ति नित्यमिट्। आनञ्ज, आनञ्जतुः, आनञ्जुः। आनञ्जिथ, आनङ्क्थ। आनञ्ज, आनञ्जिव, आनञ्ज्म। ऊदित्वादिड्विकल्पः। अङ्क्ता, अञ्जिता। अज्यात्। अङ्क्ष्यति, अञ्जिष्यति। आङ्क्ष्यत्, आञ्जिष्यत्। अञ्जिजिषति। अञ्जयति। आञ्जिजत्। अञ्जित्वा, अङ्क्त्वा, अक्त्वा, व्यज्य। अञ्जितव्यम्, अङ्क्तव्यम्। अक्तः, अक्तवान्। आज्यम्—'आङ् पूर्वादञ्जेः संज्ञाया'मिति क्यप्यनुनासिकलोपः। व्यङ्ग्यम्—ण्यति कुत्वम्। अङ्गः—भावे घञ्। अञ्जिका—संज्ञायां ण्वुल्, लिपिविशेषः। अञ्जनं—ल्युट्। काञ्जिकम्—अभिव्यक्तिः—'केन जलेन अञ्जिरस्ये'ति बहुव्रीहौ कप्। अञ्जलिः—अलिच्। द्वे अञ्जली परिमाणमस्य—द्व्यञ्जलम्,एवं त्र्यञ्जलम्, 'द्वित्रिभ्यामञ्जले'रिति समासान्तोऽज् द्विगौ। अद्विगौ—द्व्यञ्जलिः।

२२। तञ्चू, सङ्कोचने। ( To contract)

तञ्च्, ( ऊ ) वेट्, सक, प। तनक्ति, तङ्क्तः, तञ्चन्ति। तनक्षि। तनच्मि, तञ्च्मः। तञ्च्यात्। तनक्तु, तङ्क्तात्। तङ्ग्धि, तङ्क्तात्। तनचानि, तनचाव:। अतनक्, (ग्) अतङ्क्ताम्, अतञ्चन्। अतनक्, (ग्)। अतनचम्, अतञ्च्व। अताङ्क्षीत्। ततञ्च ततञ्चतुः। ततञ्चिथ, ततङ्क्थ। ततञ्चिव, ततञ्च्व। तङ्क्ता, तञ्चिता। तच्यात्। तङ्क्ष्यति, तञ्चिष्यति। अतङ्क्ष्यत्, अतञ्चिष्यत्। तितञ्चिषति। तितङ्क्षति। तातच्यते। तातङ्क्ति, तातञ्चीति। तच्यते। अतञ्चि। तञ्चयति। अततञ्चत्। आ— आतञ्चनम्,—ल्युट्। आतङ्कः—घञ्। तञ्चित्वा, तक्त्वा। तक्तः। तक्रम्—रक्, बाहुलकाच्चकारस्य ककारः। 'तञ्जू' इति तृतीयान्तमात्रेयादयः।

२३। ओ विजी, भयचलनयोः। ( To fear, to tremble )

विज्, (ओ, ई) सेट्, अक, प। विनक्ति, विङ्क्तः, विञ्जन्ति। विनक्षि। विनज्मि, विञ्ज्वः। विञ्ज्यात्, विञ्ज्याताम्, विञ्ज्युः। विनक्तु, विङ्क्तात्। विङ्ग्धि, विङ्क्तात्। विनजानि, विनजाव। अविनक्, [ग्] अविङ्क्ताम्, अविञ्जन्। अविनजम्, अविञ्ज्व। अविजीत्, अविजिष्टाम्, अविजिषुः। विवेज, विविजतुः, विविजिथ। विविजिव। विजिता। विज्यात्, विज्याताम्। विजिष्यति। अविजिष्यत्। विविजिषति, विवेजिषति। वेविज्यते। वेविजीति, वेवेक्ति। वेजयति। अवीविजत्। विज्यते, अवेजि। विजित्वा। विग्नः, विग्नवान्। वेगितमिति घञन्तात्तारकादित्वादितच्। वेवेक्तीत्यदादौ। उद्विजते इत्यादि तुदादौ।

२४। वृजी, वर्ज्जने। (To avoid)

वृज्, ( ई ) सेट्, सक, प। वृणक्ति, वृङ्क्तः, वृञ्जन्ति।

वृज्यात्। वृज्ञ्याम्। वृणक्तु, वृङ्क्तात्; वृङ्क्ताम्, वृञ्जन्तु। वृङ्ग्धि, वृङ्क्तात्। वृणजानि, वृणजाव,—म। अवृणक्, (ग्); अवृङ्क्ताम्, अवृञ्जन्। अवृणक्, [ग्]। अवृङ्क्ताम्, अवृणजम्, अवृञ्ज्म। अवर्ज्जीत्, अवर्ज्जिष्टाम्, अवर्ज्जिषुः। ववर्ज्ज, ववृजतुः, ववृजुः। ववर्जिथ। ववृजिव। वर्जिता। वृज्यात्। वर्जिष्यति। अवर्जिष्यत्। विवर्ज्जिषति। वरीवृज्यते। वरीवृजीति, वरीवर्क्ति इत्यादि। वर्ज्जयति। अवीवृजत्, अववर्जत्। वृज्यते। अवर्जि, वर्ज्जित्वा। (ई) वृक्तः। प्रवर्ग्यम् —णति कुलम्। अत्र वृची वरण इति दुर्गादयः पठन्ति इति माधवः। तस्यापि वृजिवद्रूपम्। अदादौ चुरादौ चायम्।

२५। पृची, सम्पर्के। (To come in contact with)

पृच्, (ई) सेट्, सक, प। पृणक्ति, पृङ्क्त इत्यादि वृजिवत्। सम्पर्कः। सम्पर्की—'संपृचे'त्यादिना घिणुन्।

इति रुधादयः।

---

## तनादयः।

## उभयपदिनः।

१। तनु, विस्तारे। (To spread)

तन् (उ) सेट्, सक, उ। लट्—तनोति, तनुतः, तन्वन्ति। तनोषि, तनुथः, तनुथ। तनोमि, तन्वः, तनुवः; तन्मः, तनुमः॥ तनुते, तन्वाते, तन्वते। तनुषे, तन्वाथे, तनुध्वे। तन्वे, तन्वहे, तनुवहे; तन्महे, तनुमहे। लिङ्—तनुयात्, तनुयाताम्, तनुयुः। तनुयाः, तनुयातम्, तनुयात। तनुयाम्, तनुयाव, तनुयाम॥ तन्वीत, तन्वीयाताम्, तन्वीरन्। तन्वीथाः, तन्वीयाथाम्, तन्वीध्वम्। तन्वीय, तन्वीवहि, तन्वीमहि। लोट्—तनोतु, तनुतात्; तनुताम्, तन्वन्तु। तनु-

तनुतात् ; तनुतम्, तनुत । तनवानि, तनवाव, तनवाम ॥ तनुताम्, तन्वाताम्, तन्वताम् । तनुष्व, तन्वाथाम्, तनुध्वम् । तनवै, तनवावहै, तनवामहै । लङ्—अतनोत्, अतनुताम्, अतन्वन् । अतनोः, अतनुतम्, अतनुत । अतनवम्, अतन्व, अतनुव ; अतन्म, अतनुम ॥ अतनुत, अतन्वाताम्, अतन्वत । अतनुथाः, अतन्वाथाम्, अतनुध्वम् । अतन्वि, अतनुवहि, अतन्वहि ; अतनुमहि, अतन्महि । लुङ्—अतनीत्, अतानीत् ; अतनिष्टाम्, अतानिष्टाम् ; अतनिषुः, अतानिषुः । अतनीः, अतानीः, अतनिष्टम्, अतानिष्टम् ; अतनिष्ट, अतानिष्ट । अतनिषम्, अतानिषम् ; अतनिष्व, अतानिष्व ; अतनिष्म, अतानिष्म ॥ अतत, अतनिष्ट ; अतनिषाताम्, अतनिषत । अतथाः, अतनिष्ठाः,-षाथाम्-ध्वम् । (१) लिट्—ततान, तेनतुः, तेनुः । तेनिथ, तेनथुः, तेन । ततान, ततन ; तेनिव, तेनिम ॥ तेने, तेनाते, तेनिरे । तेनिषे, तेनाथे, तेनिध्वे । तेने, तेनिवहे, तेनिमहे । तनिता । तन्यात्, तन्यास्ताम्, तन्यासुः ॥ तनिषीष्ट, तनिषीयास्ताम्, तनिषीरन् । तनिष्यति, तनिष्यतः, तनिष्यन्ति ॥ तनिष्यते, तनिष्येते, तनिष्यन्ते । अतनिष्यत्, अतनिष्येताम्, अतनिष्यन्त । अतनिष्यत, अतनिष्येते, अतनिष्यन्त । कर्म्मणि—तायते । तन्यते । अतानि ।

सनादि—तितनिषति,-ते, तितंसति,-ते, तितांसति,-ते । तन्तन्यते । तन्तनीति, तन्तन्ति ; तन्तान्तः । तानयति,-ते । अतीतनत्, त । अवतनोतीति—अवतानः, णः । (उ) तनित्वा, तत्वा । ततं, सततं, सन्ततम्—'समो वा हिततत‌योः'रिति मलोपः । सातत्यम्—ष्यञ्, नित्यमलोप इष्यते । वितत्य—नित्यं

(१) 'तनादिभ्यस्तथासो'रिति तथासोः पक्षे सिचो लुक् । था-साहचर्य्यादात्मनेपदस्य तग्रहणाद्गस्येह ग्रहणादतनिष्ट यूयमित्यत्र लुक् न भवति ।

नलोपः। तन्ति—क्तिच्, दीर्घानुनासिकलोपयोर्निषेधः। ततिः—क्तिनि नलोपः, 'तितुत्रेतो'ण् निषेधः। परीतत्—क्विप्, अनुनासिकलोपः तुक् च, 'नहिवृती'त्यादिना पूर्वपदस्य दीर्घः। तनुः—उः। ङीष्—तन्वी। ऊङ्—तनूः। तनूः—शरीरं 'कृषिचमीतनो'त्यूकारः। तनुः—उस्। औ—तनुषी। तन्त्रम्—ष्ट्रन्। तातः—'दुतनिभ्यां दीर्घश्चे'ति क्तप्रत्ययेऽनुनासिकलोपे पूर्वस्य दीर्घः। तितउः—परिपवनम् 'तनोतेर्डउः सन्वच्चे'ति डउप्रत्ययः, सन्वद्भावाद्द्विर्वचनादि। सूत्रे व्यस्तोच्चारणान्न सन्धिः। तननम्। तन्वन् तन्वती। तन्वाना।

२। षणु, दाने। ( To give )

सन् (उ) सेट्, सक, उ। सनोति, सनुते इत्यादि तनोतिवत्। विशेषस्तु—( लुङ् ) असनीत् असानीत्; असनिष्टाम्, असानिष्टाम्; ( आत्मने )—असनिष्ट, असात; असनिषाताम्, असनिषत। असाथाः, असनिष्ठाः; असनिषाथाम्, असनिध्वम्। असनिषि, असनिष्वहि। कर्मणि—सायते, सन्यते। सनादि—सिषासति, सिसनिषति। संसन्यते, सासायते। सानयति। असीषणत्। सात्वा, सनित्वा। सातः, सातवान्। सातिः, सतिः, सन्तिः—'सनः क्तिचि लोपश्चान्यतरस्या'मित्यकारः, पक्षे—तदभावे वा नलोपश्च। सातिः—क्तिनि निपात्यते। सानः।

चण, हिंसायाम्। ( To kill )

चण् (उ) सेट्, सक, उ। चणोति, चणुते। चणुयात्, चण्वीत। चणोतु, चणुतात्, चणुताम्, चण्वन्तु। चणुताम्। अचणोत्, अचणुत। अचणीत्, अचणिष्टाम्, अचणिषुः। अचत, अचणिष्ट। अचथाः, अचणिष्ठाः। चचाण, चेणे। चणिता, चणितासे। चण्यात्, चणिषीष्ट। चणिष्यति, चणिष्यते; अचणिष्यत्, अचणिष्यत। चिचणिषति, चिचणिषते।

चङ्क्षण्यते। चङ्क्षणोति, चङ्क्षन्ति[लट्]। क्षाणयति। अचिक्षणत्। क्षण्यते। अक्षाणि। (१) क्षत्वा, क्षणित्वा। क्षतः—क्तः। क्षान्तिरित्यत्र 'न क्तिचि दीर्घश्चे'ति दीर्घानुनासिकलोपनिषेधः।

४। क्षिणु च। (To kill)

चात् हिंसायामिति। क्षिण् (उ) सेट्, सक, उ। क्षिणोति, क्षिणुते। क्षिणुयात्, क्षिण्वीत। क्षिणोतु, क्षिणुतात्, क्षिणुताम्। अक्षिणोत्। अक्षिणुत। अक्षेणीत्, अक्षेणिष्टाम्, अक्षेणिषुः। अक्षित, अक्षेणिष्ट, अक्षेणिषाताम्, अक्षेणिषत। अक्षेणिष्ठाः, अक्षिथाः। चिक्षेण, चिक्षिणे। क्षेणिता, क्षेणितासे। क्षिण्यात्, क्षेणिषीष्ट। क्षेणिष्यति, क्षेणिष्यते। अक्षेणिष्यत्, अक्षेणिष्यत। चिक्षिणिषति, चिक्षेणिषति। चेक्षिण्यते। चेक्षिणोति, चेक्षेन्ति[लट्]। क्षेणयति। अचिक्षिणत्। क्षिण्यते। अक्षेणि। क्षित्वा, क्षिणित्वा, क्षेणित्वा। प्रक्षित्य। क्षितः। क्षितिः। अयमपि तवर्गीयोपदेशः, णत्वन्तु लाक्षणिकमितीह क्षणिवदनुस्वारीभूतो णत्वमतिक्रामतीति।

५। ऋणु, गतौ। (To go)

ऋण् (उ) सेट्, सक, उ। अर्णोति, अर्णुतः, अर्ण्वन्ति। अर्णोषि। अर्णोमि। अर्णुते, अर्ण्वाते, अर्ण्वते। अर्ण्वे। अर्णुयात्, अर्ण्वीत। अर्णोतु, अर्णुताम्, अर्ण्वन्तु। आर्णोत्, आर्णुत। आर्णीत्, आर्णिष्टाम्। आर्त्त, आर्णिष्ट। आर्थाः, आर्णिष्ठाः। आनर्ण, आनृणतुः। आनर्णिथ। आनृण, आनृणिव। आनृणे। आनृणिषे। आनृणिवहे। अर्णिता। ऋण्यात्,

(१) अनेकव्यञ्जनव्यवधानेऽपि सन्वद्भवति, त्वरादीनामत्त्वविधानज्ञापकात् अययम्युपदेशे तवर्गोपान्तः। लक्षणवशात्तु, णत्वं तेन क्षतीत्यादौ अनुस्वारपरसवर्णौ भवतः, णत्वन्त्वनुस्वारीभूतो णत्वमभिक्रामतीति तत्र तत्रोक्तत्वात् न भवति।

अर्णिषीष्ट। अर्णिष्यति, अर्णिष्यते। आर्णिष्यत्, आर्णिष्यत। अर्णिनिषति,-ते। अर्णयति,-ते। आर्णिनत्,-त। माभवानर्णिनत्। माभवानृणिनत्। माभवानृणिनत। माभवानर्णिनत। माभवानर्णिनथाः, माभवानृणिनथाः। ऋण्यते। आर्णि। ऋत्वा, अर्णित्वा। ऋतः, ऋतवान्। ऋतिः। स्वर्णः—पचाद्यचि गुणः, 'तनादीनां छन्दस्युपसंख्यानमि'त्युपसर्गस्योवङि—सुवर्ण, शोभनो वर्णोऽस्येत्यपि शक्यते व्युत्पादयितुम्। द्वाभ्यां सुवर्णाभ्यां क्रीतं—द्विसुवर्णम्, द्विसौवर्णिकम्। अर्णः—असुन्। अर्णवः—मत्वर्थीये वप्रत्यये सकारलोपः। अयमपि तवर्गीयान्तोपदेशः, णत्वन्तु लाक्षणिकम्। केषाञ्चिन्मते ऋणति, ऋणते इत्यादौ विकरणे गुणाभावः। तथा तृणघृणोररि गुणो गुणाभावश्च मतभेदात्।

६। तृणु, अदने। ( To eat )

तृण्, ( उ ) सेट्, सक, उ। तर्णोति, तर्णुते। अतर्णीत्, अतर्णिष्टाम्, अतर्णिषुः। अतृत, अतर्णिष्ट इत्यादि क्षिणुवत्। ततर्ण, ततृणतुः,ततृणुः। ततृणे इत्यादि पूर्ववत्। तृत्वा, तर्णित्वा। तृतम्। तृणम्—घञर्थे कः। तृण्या—समूहे यत्। कत्तृणम्—तृणजातिविशेषः, 'तृणे च जातौ'विति कोः कद्भावस्तत्पुरुषे, स्वाभाविकमस्य धातोर्णत्वमिति केचित्, तेषां यङ्लुकि तरीतृण्टीति भाव्यम्। अन्येषान्तु अनुस्वारीभूतो णत्वमतिक्रामतीति तरीतृन्तीति।

७। घृणु, दीप्तौ। (To shine )

घृण्, ( उ ) सेट्, अक, उ। घर्णोति, घर्णुते इत्यादि पूर्ववत्। लिट्—जघर्ण, जघृणतुः। जघृणे, जघृणाते। घृणा—भिदादेराकृतिगणत्वादङ्। शिवस्वामी घृवु'इति वकारोपधं पपाठ। तनादय उदात्ताः स्वरितेतः

## आत्मनेपदिनौ ।

८। वनु, याचने। To beg, to request )

वन्, (उ) सेट्, सक, आ। वनुते, वन्वाते, वन्वते। वनुषे, वन्वाथे, वनुध्वे। वन्वे, व(न्)नुवहे, व(न्)नुमहे। वन्वीत। वनुताम्, वन्वाताम्, वन्वताम्। वनवै, वनवावहै। अवनुत। लुङ्—अवनिष्ट, अवत; अवनिषाताम्, अवनिषत। अवनिष्ठाः, अवथाः। अवनिषि,—ष्वहि। ववने, ववनिषे। वनिता। वनिषीष्ट। वनिष्यते। अवनिष्यत। विवनिषते। वंवन्यते। वंवन्तिर। 'ग्ला-स्ना-वनुवमां चे'त्यनुपसृष्टानां मित्त्वविकल्पे वनु च नोच्यते इति घटादिकस्याग्रह इत्येके। अन्ये "अनन्तरस्य विधि"-रिति न्यायेन घटादिकस्य वनतेरेवेति, तेन वानयति, प्रवानयतीत्येव भवति। (उ) क्त्वा—वनित्वा, वत्वा। वतः, वतवान्। वन्तिः क्तिच्, (तिक्) वनी—वाञ्छा, तामिच्छतीति क्यजन्तात् ण्वुल्,—वनीयकः अर्थिपर्य्यायः। चान्द्रास्त्विमं परस्मैपदिनमाहुः, तन्मते वनोतीत्यादि।

९। मनु, अवबोधे। [ बोधने ] ( To know, to think )

मन् (उ) सेट्, सक, आ। मनुते, मन्वाते, मन्वते। मेने इत्यादि वनुवत्। दिवादौ विशेषो द्रष्टव्यः।

## उभयपदी ।

१०। डु कृञ्, करणे। ( To do )

करणं विधानम्, अनुष्ठानम्, यत्नः। कृ, (डु, ञ्) अनिट्, सक, उ। लट्—करोति, कुरुतः, कुर्वन्ति। करोषि, कुरुथः, कुरुथ। करोमि, कुर्वः, कुर्मः। कुरुते, कुर्वाते, कुर्वते। कुरुषे, कुर्वाथे, कुरुध्वे। कुर्वे, कुर्वहे, कुर्महे। लिङ्—

कुर्य्यात्, कुर्य्याताम्, कुर्य्युः। कुर्य्याः,कुर्य्यातम्,कुर्य्यात। कुर्य्याम्, कुर्य्याव, कुर्य्याम। कुर्वीत, कुर्वीयाताम्, कुर्वीरन्। कुर्वीथाः, कुर्वीयाथाम्, कुर्वीध्वम्। कुर्वीय, कुर्वीवहि, कुर्वीमहि। लोट्—करोतु, कुरुतात्; कुरुताम्, कुर्वन्तु। कुरु, कुरुतात्; कुरुतम्, कुरुत। करवाणि, करवाव, करवाम। कुरुताम्, कुर्वाताम्, कुर्वताम्। कुरुष्व, कुर्वाथाम्, कुरुध्वम्। करवै, करवावहै, करवामहै। लङ्—अकरोत्, अकुरुताम्, अकुर्वन्। अकरोः, अकुरुतम्, अकुरुत। अकरवम्, अकुर्व, अकुर्म्म। अकुरुत, अकुर्वाताम्, अकुर्वत। अकुरुथाः अकुर्वाथाम्, अकुरुध्वम्। अकुर्वि, अकुर्वहि, अकुर्म्महि। लुङ्—अकार्षीत्, अकार्ष्टाम्, अकार्षुः। अकार्षीः,अकार्ष्टम्,अकार्ष्ट। अकार्षम्, अकार्ष्व, अकार्ष्म। अकृत, अकृषाताम्, अकृषत। अकृथाः, अकृषाथाम्, अकृढ्वम्। अकृषि,अकृष्वहि, अकृष्महि। लिट्—चकार, चक्रतुः, चक्रुः। चकर्थ, चक्रथुः, चक्र। चकार, चकर; चकृव, चकृम। चक्रे, चक्राते, चक्रिरे। चकृषे, चक्राथे, चकृढ्वे। चक्रे, चकृवहे, चकृमहे। लुट्—कर्त्ता, कर्त्तारौ, कर्त्तारः। कर्त्तासि, कर्त्तास्थः, कर्त्तास्थ। कर्त्तास्मि, कर्त्तास्वः, कर्त्तास्मः। कर्त्ता, कर्त्तारौ, कर्त्तारः। कर्त्तासे, कर्त्तासाथे, कर्त्ताध्वे। कर्त्ताहे, कर्त्तास्वहे, कर्त्तास्महे। आशीः—क्रियात्, क्रियास्ताम्, क्रियासुः। क्रियाः, क्रियास्तम्, क्रियास्त। क्रियासम्, क्रियास्व, क्रियास्म। कृषीष्ट, कृषीयास्ताम्,कृषीरन्। कृषीष्ठाः, कृषीयास्थाम्, कृषीढ्वम्। कृषीय, कृषीवहि, कृषीमहि। लृट्—करिष्यति, करिष्यतः, करिष्यन्ति। करिष्यसि, करिष्यथः, करिष्यथ। करिष्यामि, करिष्यावः, करिष्यामः। करिष्यते, करिष्येते, करिष्यन्ते। करिष्यसे, करिष्येथे, करिष्यध्वे। करिष्ये, करिष्यावहे, करिष्या-

महे । लृङ्—अकरिष्यत्, अकरिष्यताम्, अकरिष्यन् । अकरिष्यः, अकरिष्यतम्, अकरिष्यत । अकरिष्यम्, अकरिष्याव, अकरिष्याम । अकरिष्यत, अकरिष्येताम्, अकरिष्यन्त । अकरिष्यथाः, अकरिष्येथाम्, अकरिष्यध्वम् । अकरिष्ये, अकरिष्यावहि, अकरिष्यामहि ।

कर्म्मकर्त्तरि—क्रियते कटः स्वयमेव । अकारि, अकृत कटः स्वयमेव । कर्म्मणि—क्रियते, क्रियेते, क्रियन्ते । क्रियसे, क्रियेथे, क्रियध्वे । क्रिये, क्रियावहे, क्रियामहे । क्रियेत, क्रियेताम्, क्रियेरन् । क्रियेथा इत्यादि । क्रियताम्, क्रियेताम्, क्रियन्ताम् इत्यादि । अक्रियत, अक्रियेताम्, अक्रियन्त इत्यादि । अकारि, अकारिषाताम्, अकृषाताम्; अकारिषत, अकृषत । अकारिष्ठाः, अकृथाः; अकारिषाथाम्, अकृषाथाम्; अकारिढ्वम्, अकृढ्वम् । अकारिषि, अकृषि; अकारिष्वहि, अकृष्वहि, एवं महि । कारिता, कर्त्ता । कारिष्यते, करिष्यते । अकारिष्यत, अकरिष्यत । स्यसिजाशीर्लुड्-विभक्तिषु कर्म्मणि स्वरान्तानां वा चिण्वदिट् । चक्रे इत्यादि । सन्—चिकीर्षति, चिकीर्षते । यङ्—चेक्रीयते । चर्करीति, चरीकरीति, चरिकरीति, चरिकर्त्ति, चरीकर्त्ति, चर्कर्त्ति । णिच्—कारयति,—ते । अचीकरत्, त । कारयति कटं देवदत्तं यज्ञदत्तः, देवदत्तेन वेति 'हृक्रोरन्यतरस्या'मिति वा प्रयोज्यः कर्म्म । णिच्—कर्म्मणि—कार्य्यते । अकार्य्यत । अकारि, अकारिषाताम्, अकारयिषाताम्; अकारिषत, अकारयिषत । कारिता, कारयिता । कारयिष्यते, कारिष्यते । अकारयिष्यत, अकारिष्यत इत्यादि ।

सम्-संस्करोति—अलंकरोतीत्यर्थः । तत्र संस्कुर्वन्ति समवयन्तीत्यर्थः । समस्करोत् । सञ्चस्कार. सञ्चस्करतुः । सञ्च-

स्करिथ। सञ्चस्करिव—'अड्भ्यासव्यवायेऽपी'ति अधिकारे 'संपर्युपेभ्यःकरोतौ भूषणे समवायेऽपी'ति कात् पूर्वः सुट्। समवायः—समुदायः। 'परिनिविभ्य' इत्यादिना सुटः षत्वं भवति—परिष्करोतीत्यादि। अड्व्यवाये तु 'सिवादीनां वाड्-व्यवायेऽपि' इति विकल्पो भवति—पर्य्यष्करोत्, पर्य्यस्करोदित्यादि। परिचस्कारेत्यादौ 'स्थादिष्वभ्यासेने'ति न षत्वम्। तत्र यतः प्राक् सितादित्यनुवर्त्तते, संपूर्वस्य क्वचिदभूषणेऽपि सुड़िष्यते। 'तत्पिः समस्कुरुत' इति। सूत्रे च दृश्यते—'संस्कृतं भक्षा' इति। उपात् कृञः—'उपात् प्रतियत्न-वैकृत-वाक्याध्याहारे' ष्विल्येतेष्वपि कात् पूर्वः सुड् भवति। प्रतियत्नः सतो गुणान्तराधानहेतुरिहाऽसावाधिक्याय वृद्धस्य वा तादवस्थ्याय। विकृतमेव वैकृतं—प्रच्छादणम्, गम्यमानार्थस्य वाक्यैकदेशस्य स्वरूपेणोपादानं वाक्याध्याहारः। एधोदकस्योपस्कुरुते—'कृञः प्रतियत्ने' इति कर्म्मणि शेषे षष्ठी। 'गन्धनादि' सूत्रेण प्रतियत्ने तङपि, उपस्करोत्यन्नं विकरोतीत्यर्थः। उपस्करोति—वाक्यैकदेशमध्याहरतीत्यर्थः। उपस्कृतं भुङ्क्ते, उपस्कृतं जल्पतीत्युदाहरणे हरदत्तेन क्रियाविशेषणं व्याख्यातम्। उत्कुरुते दोषं, श्येनो वर्त्तिकामपकुरुते, राजानं प्रकुरुते, परदारान् प्रकुरुते। गाथाः प्रकुरुते, शतं प्रकुरुते—सूचयति भर्त्सयति, सेवयते, सहसा प्रवर्त्तते गुणान्तराधानाय ईहते, प्रकर्षेण कथयति, विनियुङ्क्ते, इति क्रमेणार्थाः। 'गन्धानावक्षेपण-सेवन-साहसिक्यप्रतियत्नप्रकथनोपयोगेषु कृञ' इति एतेष्वर्थेषु वर्त्तमानात् कृञोऽकर्त्तभिप्रायेऽपि तङ्। तमधिकुरुते 'अधेः प्रसहने' इति तङ्। प्रसहनमभिभवः, अपराजयो वा। पराजयः शत्रुस्य क्षमयैव यस्तदभावः सः। तथाच भारविः—'भवादृशाश्चेदधिकुर्वते परान्' इति क्षमया

न पराजयन्ते चमन्ते इत्यर्थः। (१) क्रोष्टा विकुरुते स्वरान्—'वेः शब्दकर्म्मण' इति तङ्। विकुरुते सैन्धवः 'अकर्म्मकाच्चे'ति पूर्ववत् तङ्। विकुरुते सैन्धवः स्वयमेव, व्यकृत सैन्धवः स्वयमेव इत्यत्र यक्चिणौ न भवतः। "विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः" इत्यत्र न यक्निषेधप्रसङ्गः, यतोऽत्र स्वत एव सकर्म्मकस्य कर्म्माविवक्षयाऽकर्म्मकत्वम्, येषां त्वात्मनेपदाकर्म्मकेति धातुलक्षणं, तेषां विकरोतिरपि अर्थान्तरवृत्त्या क्वचिदात्मनेपदनिमित्तं दृष्टमिति "विकारहेतौ सति विक्रियन्त" इत्यत्र यक्निषेधेन भाव्यम्। संस्कुरुते कन्या स्वयमेव, समस्कृत कन्या स्वयमेव इत्यत्रापि भूषाकर्मकत्वान्न यक्चिणौ। पदं मिथ्या कारयते—स्वरादिदुष्टमसकृदुच्चारयतीत्यर्थः, 'मिथ्योपपदात् कृञोऽभ्यास' इति ण्यन्तात्तङ्। अनुकरोति 'अनुपराभ्यां कृञ' इति परस्मैपदम्। इदञ्च कर्त्त्रभिप्राये गन्धनादौ च प्राप्तस्य तङोऽपवादः। कृत्यम्, कार्य्यम्—'विभाषा कृ-वृषो'रिति क्यब्ण्यतौ। वासरूपेण तव्यादयोऽपीति—कर्त्तव्यं, करणीयम्। विद्या यशस्करी। श्राद्धकरः आस्तिकः, प्रेषकरो भृत्यः—टप्रत्ययः। शङ्करा नाम परिव्राजिका—अच्। शब्दकारः—अण्। दिवाकरः—'दिवाविभेत्यादिना टः। करः—अच्। कर एव कारः—प्रज्ञाद्यण्। किङ्करा—स्त्रियां टाप्। किङ्करीति तु पुंयोगे ङीष्। धनुष्करः, अरुष्करः। कर्मकरः—भृतौ टः, अन्यत्र कर्मकारः। स्तम्बकरिः—व्रीहिः। शकृत्करिः—वत्सः, व्रीहिवत्सयोरन्यत्र स्तम्बकारः शकृत्कारः। मेघङ्करः, ऋतिङ्करः, भय-

---

(१) इदानीन्तनपुस्तकेषु 'परान्' इत्यत्र रतिमिति पाठो दृश्यते, तत्र प्रसहनस्यासङ्गतेः 'अवेः प्रसहने' इत्यात्मनेपदाप्राप्तावपि कर्त्रभिप्रायविवक्षायां ञित्त्वादात्मनेपदम्।

ङ्करः—खच्। तदन्तविधित्वादभयङ्करोऽपि। क्षेमङ्करः क्षेमकारः—खच् विकल्पः। अनाढ्यः आढ्यः क्रियते येन तदाढ्यङ्करणम्—करणे ख्युन्, स्त्रियामाढ्यङ्करणी। एवं सुभगङ्करणम्। अनाढ्यङ्करणमित्यप्यपि। सुकृत्—शोभनं कृतवानित्यर्थः, क्विप्। राजानं कृतवान्—राजकृत्वा क्वनिप्। स्त्रियां राजकृत्वरी। सहकृत्वा—'सहे चे'ति भूते क्वनिप्। अलङ्करिष्णुः—इष्णुच्। चक्रिः—किः। चक्रं—घञर्थे कः। लिड्वद्भावाद्द्विर्वचनम्। चक्रीवान् नाम राजा—मतुप्, चक्रीभावो निपातनात्। भावे क्रिया—श, स्त्रियामाप्। कृतिः—क्तिन्। कृञ इति योगविभागात् क्यप् च—कृत्या। ईषदाढ्यङ्करो देवदत्तः, दुराढ्यङ्करः—खल्। चोरंकारमाक्रोशति 'कर्मण्याक्रोशे कृञः खमुञ्'इति खमुञ्। स्वादुङ्कारं भुङ्क्ते—णमुल्। यथाकारमहं भोक्ष्ये, तथाकारमहं भोक्ष्ये किन्तवानेन 'यथातथयोरसूयाप्रतिवचने' णमुल्। अकृतकारं करोति, अकृतं करोतीत्यर्थः, 'समूलाकृतजीवेषु हन्कृञ्ग्रहः'इति णमुल्। ब्राह्मण पुत्रस्ते जातः किन्तर्हि नीचैःकारमाचष्टे नीचैःकृत्य नीचैःकृत्वेति वा। "अव्यये यथाभिप्रेताख्याने कृञः क्त्वाणमुलौ'विति क्त्वाणमुलौ। तिर्य्यक्कृत्य गतः, तिर्य्यक्कृत्वा गतः तिर्य्यक्कारमिति वा। समाप्य गत इत्यर्थः, 'तिर्य्यच्यपवर्गे' इति क्त्वाणमुलौ। अपवर्गः—समाप्तिः, समासविकल्पः। मुखतःकृत्य, मुखतःकृत्वा, मुखतःकारं गच्छति—'स्वाङ्गे तस्प्रत्यये कृभ्वो'रिति क्त्वाणमुलौ। नानाकृत्य, नानाकृत्वा, नानाकारं, विनाकृत्य, विनाकृत्वा, विनाकारम्। द्विधाकृत्य, द्विधाकृत्वा, द्विधाकारम्। द्वेधाकृत्य, द्वेधाकृत्वा, द्वेधाकारम्। एवं द्वैधं कृत्येत्यादि 'नाधार्थप्रत्यये च्व्यर्थे' इति क्त्वाणमुलौ। कृतः, कृतवान्। कृतं गृह्णाति—कृतयति,

'मुण्डमिश्रे'त्यादिना णिच्। (डु) कृत्रिमं—त्रिमक्। कड़ति साधयति कड़ः—अच्। कड़ं करोति कड़ंकारं, माष-मुद्गादिकाष्ठं, तदर्हतीति—कड़ंकर्य्यः, कड़ंकरी, यच्छौ। कर्म्म—मनिन्। कर्म्म शीलमस्य—कार्म्मः, णः। कर्म्मणि प्रभवति—कार्मुकम्, उकञ्। सर्वकर्म व्याप्नोतीति—सर्वकर्म्मीणः, खः। कर्मणि घटते—कर्मठः, अठच्। कर्म्मी—इन्। कार्मणः अण् स्वार्थे। कारुः—उण्। क्रतुः—कतुः। कार्पासः—पासण्। कृकः—कः। प्रकृत्य—ल्यप्। उरीकृत्य, शुक्लीकृत्य, पटपटाकृत्य, श्रौषट्कृत्य, वषट्कृत्य, वौषट्कृत्य, कारिका-कृत्य—क्रियां कृत्वेत्यर्थः। *

कारिकाशब्दस्योपसंख्यानमिति गतित्वम्। खाट्कृत्य, सत्कृत्य—'आदरानादरयोः सदसती' इति गतित्वम्। प्रीति-पूर्वक-प्रत्युत्थानादिविषयत्वरा आदरः। अवज्ञया कर्त्तव्यं प्रत्युत्थानादिकं प्रत्युपेक्षा अनादरः। अन्यत्र सत्कृत्वा, असत्कृत्वा—शोभनमशोभनञ्च कृत्वेत्यर्थः। अलंकृत्य—'भूषणे अल'मिति गतित्वम्। भूषणादेरन्यत्र अलंकृत्वा, करणेन अलमित्यर्थः। पुरस्कृत्य—पूर्वदेशे कृत्वेत्यर्थः। पुरोऽव्यय-मिति गतिसंज्ञा। अव्ययादन्यत्र पुरःकृत्वा गतः। अस्तंकृत्य—अस्तञ्चेति गतिसंज्ञा, अस्तंशब्दोऽव्ययं मकारान्तोऽदर्श-नार्थः। द्वाविमौ योगौ करोतेरन्यविषयावपि इष्येते, यथा—

---

* ऊर्यादिच्विडाचश्चे"ति कृभ्वस्तियोगे ऊर्यादीनां गतिसंज्ञा, अस्याः प्रयोजनं समासादि। ऊर्यादीनां प्रयोगोऽपि कृभ्वस्तियोग एवेति कैयटपदमञ्जर्यौ, कथं तर्हि भवति "आविश्चक्षुषोर्भवदस्याविव रागः" इति "अभवद्युगपद्विलोचनश्रियायुग-लीढोभयस्तकभागमावि"रिति च स्वतन्त्राः कवय इति हरदत्तः। तत्राप्याविःप्रादुः-शब्दौ तावत् अन्येषामूर्यादीनामर्थस्वभावात् करोतियोग एव प्रयोगः। श्रत्शब्दस्य दधातिनैव योग इत्यन्य इति माधवः।

"तुरासाहं पुरोधाय" "अस्तं गतश्च सविता पुनरुदेति"। अद:कृत्य—'अदोऽनुपदेशे' इति गतित्वम्। उपदेश: परार्थ-वाक्यप्रयोग:। परस्य कथने तु अद:कृत्वा गत इति। तिर-स्कृत्य—'विभाषा कृञी'ति तिरसो वा गतित्वमन्तर्द्धौ वा स्त्वम्। उपाजेकृत्य, उपाजेकृत्वा,अन्वाजेकृत्य,अन्वाजेकृत्वा—उपाजे-अन्वाजे-शब्दौ विभक्तिप्रतिरूपकौ निपातौ दुर्बलस्य सामर्थ्याधाने वर्त्तेते। साक्षात्कृत्य, साक्षात्कृत्वा; उरसि-कृत्य, उरसिकृत्वा; मनसिकृत्वा, मनसिकृत्य; मध्येकृत्वा,मध्ये-कृत्य; पदेकृत्वा, पदेकृत्य; निवचनेकृत्वा, निवचनेकृत्य, हस्ते-कृत्य, पाणौकृत्य, प्राध्वंकृत्य शकटं गत: बन्धनेनानुकूलं कृत्वा गत इत्यर्थ:। 'प्राध्वं बन्धने' इति गतित्वम्। जीविका-मिव कृत्वा जीविकाकृत्य, उपनिषदमिव कृत्वा उपनिषत्कृत्य 'जीविकोपनिषदौपम्ये' इति गतित्वम्। मामधिकृत्वा ईश्वरो भवेति मां विनियुङ्क्ते इत्यर्थ:। (१)

---

(१) "साक्षात् प्रभृतीनि चे'ति कृञि वा गतित्वम्। अत्र अग्नौ वशे प्रभृतय: केचिदेजन्ता: पठ्यन्ते। ते विभक्तिप्रतिरूपका निपाता:। नम:शब्दोऽप्यत्र पठ्यते स यदा गतिसंज्ञकस्तदा उपसर्गवद्वृत्त्या कृञ: प्रणामवचनत्वं द्योतयति प्रणामापेक्षया कर्म्मणि देवादौ नम:स्वस्तीत्यत्र तद्बाधित्वा उपपदविभक्ते: कारक-विभक्तिर्बलीयसीति नमस्करोति देवानिति द्वितीयैव भवति। अगतित्वे तु करोति क्रिया कर्म्मभावापन्नं विशेष्यभूतं प्रणाममाचष्ट इति देवादावकर्म्मणि 'नम:स्वस्ती'ति चतुर्थी। तथाच भट्टि:—"नमश्चकार देवेभ्यो रावणाय नमस्कुर्य्या:" इति। "स्वयं-भुवे नमस्कृत्ये'त्यत्र तु नमसो गतित्वे कृञो विशेषकत्वात् प्राप्तां कारकविभक्तिं द्वितीयां 'क्रियार्थोपपदस्ये'ति चतुर्थी बाधते। तदत्रायमर्थो वाच्य:—स्वयंभुवं प्रीणयितुं प्रणम्येति। वर्द्धमानस्तु आह्वाय निगद्यते इतिवत् क्रियाग्रहणं कर्त्तव्य-मिति चतुर्थीमाह।

अनत्याधाने उरसिमनसी इति वा गतित्वम्। अत्याधानमुपश्लेष: तदभावो-ऽनत्याधानम्। अत्याधाने तु उरसि कृत्वा पाणिं शेते। सप्तम्यन्तप्रतिरूपकावेतौ।

णिजाद्यन्तात् कृत्प्रत्ययाः—कारयित्वा । कारितः । प्रकार्य्य । कारयन् । कारयिता । कारणा । कारणम् । कारयितव्यः । चिकीर्षितः । चिकीर्षित्वा । चिकीर्षा-अ । चिकीर्षुः-उ । चिकीर्षितव्यः । चिकीर्षरः । चिकीर्षकः ।

प्र—अनुष्ठानम् । कथनम् । गाथाः प्रकुरुते, पा—१।३। उपयोगः । साहसिक्यम् । कुलभार्य्यां प्रकुर्वाणः । विप्र—पीड़नम् । अनु—अनुकरणं, 'गुरोरनुकुर्वीत गतिभावितचेष्टितैः ।' मनुः २।६-८ । अप—अपकारः । भर्त्सनम् । अत्या—अधिक्षेपः । गार्गिकया अत्याकुरुते । अपा—अपसारणम् । 'शिवा भुजच्छेदमपाचकार' रघु—७५० । उदा—भर्त्सनम्,—श्येनो वर्त्तिकामुदाकुरुते । उपा—संस्कारपूर्वकवेदग्रहणम् । संस्कारपूर्वकपशुहिंसा । निरा—निराकरणम् । उप—उपकारः, सेवा, प्रतियत्नः, भूषणम्, समवायः, वाक्याध्याहारः । नि—निकारः । परि—परिष्कारः । प्रति—प्रतिकारः । वि—विकारः । सम्—संस्कारः । आ—णिच्—ईप्सितम्, आह्वानम् । "इतिराकारणाह्वान" मित्यमरः ।

---

'मध्येपदे निवचने चे'ति वा गतित्वम् । अनत्याधाने मध्येपदे-शब्दौ विभक्तिप्रतिरूपकौ । निवचनं वचनाभावः, सदृणमितिवदव्ययीभावः, अलुक् । अत्याधाने पदे कृत्वा शिरः शेते ।

"नितरां हस्ते पाणावुपयमने" इति नित्यं गतित्वं निपातनादलुगिति । उपयमनं दारकर्म्मेति वृत्तौ । स्वीकरणमात्रमित्यन्ये । 'हस्तेकृता मह्यास्त्वाथि' इति । 'हस्तेकृत्य त्वमास्वासी'रिति भट्टिः ।

'विभाषा कृञी'ति अधेरैश्वर्य्ये गम्यमाने कर्म्मप्रवचनीयसंज्ञा । अस्याः फलमाकड़ारादिति गतिसंज्ञाबाधः । द्वितीया तु अधिकृञो विनियोगार्थत्वात् कर्म्मणीत्येव सिद्धा अगतित्वे तु प्रादिसमासस्य कर्म्मप्रवचनीयानां प्रतिषेध इति निषेधात् वाक्यमेवंभवति । कर्म्मप्रवनीयत्वाभावे तु गतित्वात् समासे मामधिकृत्येति ।

इति तनादयः ।

---

# क्र्यादयः ।

## उभयपदिनः ।

### १। डु क्रीञ्, द्रव्यविनिमये। ( To buy )

क्री (डु, ञ) सक, उ। लट्—क्रीणाति, क्रीणीतः, क्रीणन्ति। क्रीणासि, क्रीणीथः, क्रीणीथ। क्रीणामि, क्रीणीवः, क्रीणीमः। क्रीणीते, क्रीणाते, क्रीणते। क्रीणीषे, क्रीणाथे, क्रीणीध्वे। क्रीणे, क्रीणीवहे, क्रीणीमहे। लिङ्—क्रीणीयात्, क्रीणीयाताम्, क्रीणीयुः। क्रीणीयाः, क्रीणीयातम्, क्रीणीयात। क्रीणीयाम्, क्रीणीयाव, क्रीणीयाम। क्रीणीत, क्रीणीयाताम्, क्रीणीरन्। क्रीणीथाः, क्रीणीयाथाम्, क्रीणीध्वम्। क्रीणीय, क्रीणीवहि, क्रीणीमहि। लोट्—क्रीणातु, क्रीणीतात्; क्रीणीताम्, क्रीणन्तु। क्रीणीहि, क्रीणीतात्; क्रीणीतम्, क्रीणीत। क्रीणानि, क्रीणाव, क्रीणाम। क्रीणीताम्, क्रीणाताम्, क्रीणताम्। क्रीणीष्व, क्रीणाथाम्, क्रीणीध्वम्। क्रीणै, क्रीणावहै, क्रीणामहै। लङ्—अक्रीणात्, अक्रीणीताम्, अक्रीणन्। अक्रीणाः, अक्रीणीतम्, अक्रीणीत। अक्रीणाम्, अक्रीणीव, अक्रीणीम। अक्रीणीत, अक्रीणाताम्, अक्रीणत। अक्रीणीथाः, अक्रीणाथाम्, अक्रीणीध्वम्। अक्रीणि, अक्रीणीवहि, अक्रीणीमहि। लुङ्—अक्रैषीत्, अक्रैष्टाम्, अक्रैषुः। अक्रैषीः, अक्रैष्टम्, अक्रैष्ट। अक्रैषम्, अक्रैष्व, अक्रैष्म। अक्रेष्ट, अक्रेषाताम्, अक्रेषत। अक्रेष्ठाः, अक्रेषाथाम्, अक्रेढ्वम्। अक्रेषि, अक्रेष्वहि, अक्रेष्महि। लिट्—चिक्राय, चिक्रियतुः, चिक्रियुः। चिक्रयिथ, चिक्रेथ; चिक्रियथुः, चिक्रिय। चिक्राय, चिक्रय; चिक्रीयिव, चिक्रियिम। चिक्रिये, चिक्रियाते, चिक्रीयिरे। चिक्रियिषे, चिक्रियाथे, चिक्रियिढ्वे, चिक्रियिध्वे। चिक्रिये, चिक्रियिवहे,

चिक्रियिमहे । लुट्—क्रेता, क्रेतारौ, क्रेतारः । आशीः—क्रीयात्, क्रेषीष्ट । लृट्—क्रेष्यति, क्रेष्यते । लृङ्—अक्रेष्यत्, अक्रेष्यत । सनादि—चिक्रीषति, चिक्रीषते । चेक्रीयते । चेक्रेति, चेक्रयीति । क्रापयति,-ते । अचिक्रपत्,-त ।

( डु ) क्रीत्रिमम्—त्रिमक् । क्रीतः, क्रीतवान् । अश्वेन क्रीता—अश्वक्रीती, धनेन क्रीता—धनक्रीती, 'कर्त्तृकरणे कृता बहुल'मिति तृतीयासमासः, 'क्रीतात् करणपूर्वा'दित्यदन्तात् क्रीतान्तात् प्रातिपदिकाद्विधीयमानो ङीष् भवति । * क्रयः—अच् । अवक्रीयते । व्यवक्रियतेऽनेनेति—अवक्रयः, पुंसि संज्ञायां घः । क्रयार्थं प्रसारितं—क्रय्यम् ( अचो यति ) 'क्रय्यस्तदर्थं' इत्ययादेशः । अत्र तच्छब्देन क्रयः परामृश्यते, अन्यत्र गुणे क्रेयः । क्रेतव्यः । क्रायकः,—ण्वुल् । क्रयिकः 'क्रिय इकन्नि'ति इकन् । क्रीत्वा । विक्रीय । क्रीतः । क्रयणम् । क्रेतुम् । परि-वि-अव-पूर्वः क्रीञ् आत्मनेपदी । शतेन, शताय वा परिक्रीणीते अवक्रीणीते ।

२ । प्रीञ्, तर्पणे कान्तौ च । ( To please, to shine. )

प्री ( ञ ) अनिट्, सक, उ । प्रीणाति, प्रीणीते इत्यादि-क्रीणातिवत् । पिप्राय, पिप्रिये । प्रेता । अप्रैषीत्, अप्रेष्ट इत्यादि । प्रीणयति । अपिप्रीणत् । प्रीणातीति—प्रियः, कः । प्रेष्ठ इत्यादि दिवादौ द्रष्टव्यम् ।

३ । श्रीञ् पाके । ( To cook )

श्री ( ञ् ) अनिट्, सक, उ । श्रीणाति, श्रीणीते इत्यादि-क्रीणातिवत् । शिश्राय, शिश्रिये । अश्रैषीत्, अश्रेष्ट । श्रेता । श्रेष्यति, श्रेष्यते । शिश्रीषति । श्राययति । अशिश्रयत् । श्रेयः ।

* 'साहि तस्य धनक्रीता प्राणेभ्योऽपि गरीयसी'त्यत्र तु बहुलग्रहणादवन्तेन समास इति अनदन्तत्वात् ङीष् प्रत्ययाभावः ।

४। मीञ्, हिंसायाम्। (To kill)

मी (ञ) अनिट्, सक, उ। मीनाति, मीनीतः, मीनन्ति। मीनासि, मीनीथः, मीनीथ। मीनामि, मीनीवः, मीनीमः। मीनीते, मीनाते, मीनते। मीनीषे, मीनाथे, मीनीध्वे। मीने, मीनीवहे, मीनीमहे। मीनीयात्, मीनीयाताम्, मीनीयुः। मीनीत, मीनीयाताम्, मीनीरन्। मीनातु, मीनीतात्; मीनीताम्, मीनन्तु। मीनीहि, मीनीतात्। लङ्—अमीनात्, अमीनीताम्, अमीनन्। अमीनाः इत्यादि। अमीनीत, अमीनाताम्, अमीनत। अमीनीथाः इत्यादि। लुङ्—अमासीत्, अमासिष्टाम्, अमासिषुः। अमासीः, अमासिष्टम्। अमासिषम्। अमासिष्व। अमास्त, अमासाताम्, अमासत। ममौ, मिम्यतुः, मिम्युः। ममिथ, ममाथ; मिम्यथुः, मिम्य। मिमौ, मिम्यिव। मिम्ये, मिम्याते, मिम्यिरे। मिम्यिषे, मिम्याथे, मिम्यिढ्वे,-ध्वे। मिम्ये, मिम्यिवहे। माता। मीयात्, मासीष्ट। मास्यति, मास्यते। अमास्यत्, अमास्यत। मित्सति, मित्सते। मेमीयते। मेमेति, मेमयीति। कर्म्मणि—मीयते। अमीयत। माता। मायिता। मास्यते, मायिष्यते। अमायि, अमासाताम्, अमायिषाताम्, अमासत, अमायिषत, इत्यादि। मापयति। अमीमपत्। कर्म्मणि—माप्यते। अमापि। प्रमीणाति—'हिनुमीने'ति णत्वम्। मीत्वा। मीतः, मीतवान्। प्रमाय। ईषत्प्रमयः, खल्। मयः—अच्।

५। षिञ्, बन्धने। (To tie)

सि (ञ्) अनिट्, सक, उ। सिनाति, सिनीते इत्यादि क्रीणातिवत्। सिषाय, सिष्यतुः, सिष्युः। सिषेथ, सिषयिथ इत्यादि। सेष्यति, सेष्यते इत्यादि 'आदेशप्रत्यययो'रिति षत्वम्। असैषीत्, असेष्ट। सिसीषतीत्यत्र 'स्तौतिण्यो'रित्यप्रत्वम्।

सेषीयते। सेषयीति, सेषेति। साययति। असीषयत्। सितः। सितवान्। सित्वा।—सित्य। सयनम्। सेतुम्। निषितः। विषितः। परिषितः। निषयः। विषयः। परिषयः। अन्यत्। सर्वं स्वादौ द्रष्टव्यम्।

६। स्क्नुञ्, आप्रवणे। (To go by leaps)

सौत्रोऽयमिति आचार्य्याः। केचित् आप्लवने इति पठन्ति। स्कु (ञ) अनिट्, सक, उ। स्कुनाति, स्कुनीतः, स्कुनन्ति। स्कुनासि, स्कुनीथः, स्कुनीथ। स्कुनामि, स्कुनीवः, स्कुनीमः। स्कुनीते, स्कुनाते, स्कुनते। स्कुनीषे। स्कुने, स्कुनीवहे। स्कुनीमहे। स्कुनीयात्। स्कुनीयाः। स्कुनीयाम्। स्कुनीत, स्कुनीयासाम्, स्कुनीरन्। स्कुनीथा। स्कुनीय। स्कुनातु, स्कुनीतात्, स्कुनीताम्, स्कुनन्तु। स्कुनीहि, स्कुनीतात्; स्कुनीतम्, स्कुनीत। स्कुनानि, स्कुनाव, स्कुनाम। स्कुनीताम्, स्कुनाताम्, स्कुनताम्। स्कुनीष्व। स्कुनै, स्कुनावहै। अस्कुनात्, अस्कुनीताम्, अस्कुनन्। अस्कुनाः। अस्कुनाम्, अस्कुनीत। अस्कुनीत, अस्कुनाताम्, अस्कुनत। अस्कुनीथाः। अस्कुनि, अस्कुनीवहि। पक्षे नुः—स्कुनोति, स्कुनते इत्यादि। अस्कौषीत्, अस्कौष्टाम्, अस्कौषुः। अस्कोष्ट, अस्कोषातास्, अस्कोषत। चुस्काव, चुस्कुवतुः, चुस्कुवुः। चुस्कुविथ, चुस्कोथ; चुस्कुवथुः, चुस्कुव। चुस्काव, चुस्कव; चुस्कुविव। चुस्कुवे। चुस्कुविषे, चुस्कुविध्वे, चुस्कुविढ्वे। चुस्कुवे, चुस्कुविवहे। स्कोता। स्कूयात, स्कूयास्ताम्। स्कोषीष्ट, स्कोषीयास्ताम्। स्कोष्यन्ति, स्कोष्यते। अस्कोष्यत्, अस्कोष्यत। चुस्कूषति, चुस्कूषते। चोस्कूयते। चोस्कोति २ स्काषयति। अचुस्कवत्। स्कुत्वा। स्कुत्य। स्कुतः, स्कुतवान्।

७। युञ् बन्धने। (To tie)

यु (ञ) अनिट्, सक, उ। युनाति, युनीते इत्यादि पूर्ववत्। योता। योष्यति,—ते। अयौषीत्, अयौष्टाम्, अयौषुः। अयोष्ट,अयोषाताम्,अयोष्ठाः, अयोषत। अयोढ्वम्। यूयात्, युषीढ्वम्। रु-साहचर्य्यात् आदादिक एव सेट्। युयूषति-ते। इवन्तर्धेत्यादौ अर्णुञ्-साहचर्य्यादादादिकस्यैवयुधातो रिड् विकल्पः।

८। क्नूञ्, शब्दे। (To sound)

क्नू (ञ) सेट्, अक, उ। क्नूनाति क्नूनीते इत्यादि लुनाति-वत्। अक्नावीत्। अक्नविष्ट। अक्नविष्ठाः। चुक्नाव, चुक्नुवतुः। चुक्नुवे,चुक्नुवाते। क्नविता। क्नूयात्,क्नविषीष्ट। क्नविष्यति,-ते। अक्नविष्यत्, अक्नविष्यत। चुक्नूषति,-ते इत्यादि।

९। द्रूञ् हिंसायाम्। (To kill)

द्रू (ञ), सेट्, सक, उ। द्रूणाति द्रूणीते इत्यादि क्नुञ्वत्।

१०। पूञ्, पवने। (To purify)

पू (ञ) सेट्, सक, उ। लट्—पुनाति, पुनीतः, पुनन्ति। पुनासि, पुनीथः, पुनीथ। पुनामि, पुनीवः पुनीमः। पुनीते, पुनाते, पुनते। पुनीषे, पुनाथे, पुनीध्वे। पुने, पुनीवहे, पुनीमहे। लिङ्—पुनीयात्,-याताम्,-युः। पुनीयाः, यातं, यात। पुनीयाम्-,याव,-याम। पुनीत, पुनीयाताम्, पुनीरन्। पुनीथाः, पुनीयाथाम्, पुनीध्वम्। पुनीय पुनीवहि, पुनीमहि। लोट्—पुनातु, पुनीतात्; पुनीताम्, पुनन्तु। पुनीहि, पुनीतात्; पुनीतम् पुनीत। पुनानि, पुनाव, पुनाम। पुनीताम्, पुनाताम् पुनताम्। पुनीष्व,पुनाथाम्, पुनीध्वम्। पुनै,पुनावहै, पुनामहै। लङ्—अपुनात्, अपुनीताम्, अपुनन्। अपुनाः, अपुनीतम्,

अपुनीत । अपूनाम्, अपूनीव, अपुनीम । अपुनीत, अपुनाताम्, अपुनत । अपुनीथाः, अपुनाथाम्, अपुनीध्वम् । अपुनि, अपुनीवहि, अपुनीमहि । लुङ्—अपावीत्, अपाविष्टाम्, अपाविषुः । अपावीः, अपाविष्टम्, अपाविष्ट । अपाविषम्, अपाविष्व, अपाविष्म । अपविष्ट, अपविषाताम्, अपविषत । अपविष्ठाः, अपविषाथाम्, अपविध्वम्, अपविढ्वम् । अपविषि, अपविष्वहि,-ष्महि । लिट्—पुपाव, पुपुवतुः, पुपुवुः । पुपविथ, पुपुवथुः, पुपुव । पुपाव, पुपव ; पुपुविव । पुपुवे, पुपुवाते, पुपुविरे । पुपुविषे, पुपुवाथे, पुपुविढ्वे,-ध्वे । पुपुवे, पुपुविवहे, महे । लुट्—पविता । लृट्—पविष्यति,-ते । लृङ्—अपविष्यत्, अपविष्यत । आशीः—पूयात् । पविषीष्ट। पविषीढ्वम्,-ध्वम् । पुपूषति,-ते । पोपूयते । पोपोति, पोपवीति । पावयति । अपीपवत्, । कर्म्मणि—पूयते । अपावि । अपाविषाताम्, अपविषाताम् (अक्त)—षत इत्यादि । पविता, पाविता । पविष्यते, पाविष्यते । अपाविष्यत, अपविष्यत । णिच् कर्म्मणि—पाव्यते । अपावि, अपाविषाताम्, अपावयिषाताम् ; अपाविषत, अपावयिषत । भूधातुवत् । पूतः । पूना यवाः विनष्टा इत्यर्थः—'पूञो विनाशे' इति निष्ठानत्वम् । शेषाः क्तः पवतिवत् ।

११ । लूञ्, छेदने । ( To cut )

लू, ( ञ ) सेट्, सक, उ । लुनाति, लुनीते इत्यादि पुनातिवत् । लवित्रम्—इत्रः । लूत्वा । लूनः । लूनिः । लवकः 'प्रु-सृ-ल्वः समभिहारे वुन्' इति वुन् । अभिलावः—घञ्, अपोऽपवादः । लोत्रं—ष्ट्रन् । लोतः—तन् । 'तितुत्र'तीण्निषेधः ।

१२। स्तॄञ्, आच्छादने। (To cover)

स्तॄ (ञ) सेट्, सक, उ। स्तृणाति। स्तृणासि। स्तृणामि। स्तृणीते, स्तृणीषे। स्तृणे। स्तृणीयात्, स्तृणीत। स्तृणातु, स्तृणीतात्। स्तृणीहि, स्तृणीतात्। स्तृणानि, स्तृणाव। स्तृणीताम्। स्तृणीष्व। स्तृणै। अस्तृणात्। अस्तृणीताम्। अस्तृणाः। अस्तृणाम्। अस्तृणीत। लुङ्—अस्तारीत्, अस्तारिष्टाम्, अस्तारिषुः अस्तारिषम्-ष्व। अस्तीर्ष्ट, अस्तरीष्ट, अस्तरिष्ट। तस्तार, तस्तरतुः। तस्तरिथ। तस्तरिव। तस्तरे। तस्तरिषे। तस्तरिवहे। स्तरिता, स्तरीता। स्तीर्यात्। स्तीर्षीष्ट, स्तरिषीष्ट। स्तरिष्यति,-ते। स्तरीष्यति,-ते। अस्तरिष्यत्, अस्तरीष्यत्। अस्तरिष्यत, अस्तरीष्यत। तेस्तीर्यते। तास्तरीति, तास्तर्त्ति। तिस्तीर्षति,-ते; तिस्तरिषति, तिस्तरिषते; तिस्तरीषति,-ते। स्तारयति,-ते। अतस्तरत्,-त। स्तीर्यते। अस्तारि। यज्ञे—अपिप्रस्तारः 'प्रे याऽयज्ञे' इति घञ्। यज्ञविस्तारे तु—प्रस्तरः। विस्तारः प्रथने शब्दस्य तु—विस्तरः। विष्टारः—पंक्तिच्छन्दः 'छन्दोऽनाम्नि चेति घञ्षत्वे। अवस्तारः—करणाधिकरणयोर्घञ्। स्तीर्णः, स्तीर्णवान्। स्तीर्णिः। स्तीर्त्वा।—स्तीर्य। आस्तरणम्। स्तरितुम्, स्तरीतुम्।

१३। कॄञ्, हिंसायाम्। (To kill)

कॄ (ञ) सेट्, सक, उ। कृणाति, कृणीते इत्यादि स्तृणातिवत्।

१४। वॄञ्, वरणे [भरणे च]। (To choose)

[वरणं—प्रार्थनं भरणञ्च। क्र्यादिस्तोऽयमिति दुर्गः।] वॄ (ञ) सेट्, सक, उ। वृणाति, वृणीतः, वृणन्ति। वृणीते, वृणाते, वृणते। वृणीयात्। वृणीत। वृणातु, वृणीतात्। वृणु, वृणी-

तात् । वृणीताम्, वृणाताम्, वृणताम् । अवृणात् । अवृणीत । अवारीत्, अवारिष्टाम्, अवारिषुः । अवरिष्ट, अवरीष्ट, अवूर्ष्ट; अवरिषाताम्, अवरीषाताम्, अवुर्षाताम् इत्यादि । ध्वमि— अवरिध्वम्, अवरीध्वम् ; अवूर्ढ्वम्, अवरिढ्वम्, अवरीढ्वम्, अवूर्ढ्वम् । ववार, ववरतुः, ववरुः । ववरिथ, ववरथुः, ववर । ववार, ववर, ववरिव, ववरिम । ववरे । वरिता, वरीता । । वूर्य्यात् । वूर्षीष्ट, वरिषीष्ट । वरिष्यति,-ते, वरीष्यति,-ते । अवरीष्यत्-त । अवरिष्यत्,-त । वूर्य्यते । अवारि । वुवूर्षति,-ते । विवरिषति,-ते । विवरीषति,-ते । वोवूर्य्यते । :वावरीति, वावर्त्ति । वारयति,-ते । अवीवरत्,-त । [वूर्णः, वूर्णवान् । वूर्णिः । वूर्त्वा । —वूर्य्य । वरितुम्, वरीतुम् ।

१५ । धू ञ् कम्पने । * (To shake)

धू (ञ) सेट्, सक, उ । धुनाति, धुनीतः, धुनन्ति । धुनीते, धुनाते, धुनते । धुनीयात्, धुनीत । धुनातु, धुनीतात्, धुनीतां, धुनन्तु । धुनीहि, धुनीतात् । धुनानि धुनाव । धुनीताम् । धुनीष्व । धुनै । अधुनात्, अधुनीत । अधावीत्, अधाविष्टाम्, अधाविषुः । अधोष्ट, अधविष्ट । दुधाव, दुधुवतुः । दुधविथ । [ दुधोथ ] दुधुविव, दुधुविम । [दुधुवे । दुधुविषे । दुधुविध्वे, दुधुविढ्वे । धोता, धविता । धोष्यति, धविष्यति । धोष्यते, धविष्यते । अधोष्यत्, अधविष्यत् । अधोष्यत, अधविष्यत [1] दुधूषति, दुधूषते । दोधूयते । :दोधोति, दोधवीति । धूनयति । अदूधुनत् । धूत्वा । धूत इति माधवः । अव—

* "धुनोति चम्पकवनानि धुनोत्यशोकं चूतं धुनाति धुवति स्फुटितातिमुक्तम् । वायुर्विधूनयति चम्पकपुष्परेणून् यत् कानने धवति चन्दनमञ्जरीषु ॥" इति कविरहस्यम् ।

[1] ये तु स्वरत्यादिसूत्रे धुञ् धातुं न पठन्ति, तन्मते आत्मनेपदेऽपि नित्यमिट् ।

निरासः। "व्यथामवधूय" रघु ३।६३। निर्-वि—निरासः, क्षयः। "ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः"। 'विधूतपापास्ते यान्ति ब्रह्मलोकमनामयम्।" स्मृतिः।

## परस्मैपदिनः।

१६। शॄ, हिंसायाम्। (To kill)

शॄ, सेट्, सक, प। शृणाति, शृणीतः, शृणन्ति। शृणासि, शृणासि। शृणीयात्, शृणीयाताम्। शृणातु, शृणीतात्; शृणीताम्, शृणन्तु। शृणीहि, शृणीतात्; शृणीतम्, शृणीत। शृणानि, शृणाव, शृणाम। अशृणात्, अशृणीताम्, अशृणन्। अशृणाः। अशृणाम्, अशृणीव। अशारीत्, अशारिष्टाम्, अशारिषुः। शशार, शशरतुः,शश्रतुः; शशरुः शश्रुः। शशरिथ, शश्रथुः शशरथुः; शशर, शश्र। शशार, शशर; शशरिव, शश्रिव, शशरिम, शश्रिम। 'शॄ-दॄ-प्रां ह्रस्वो वे'ति ह्रस्वपक्षे यणादेशः। कलापमते—श्राधातुना शश्रतुः इत्यादि सिद्धम्। शिशरिषति, शिशरीषति, शिशीर्षति। शेशीर्य्यते। शाशरीति, शाशर्त्ति। शारयति। अशीशरत्। शीर्य्यते, अशारि। शारः—वायुर्वर्णश्च। नीशारः—प्रच्छन्नप्रावरणः 'नेरुपसर्गस्य घञी'ति दीर्घः। शारुकः—उकञ्। शरारुः—आरुः। किंशारुः—उण्। शरुः—उः। शरीरम्—ईरम्। शरत्—अदिः। 'शरदिजः—प्रावृट् शरत्कालदिवां जे' इत्यलुक्। शरदि भवं श्राद्धं—शारदिकं 'श्राद्धे शरद' इति ठञ्। शारदी रोगः, शारदिको रोगः—'विभाषा रोगतापयो'रिति वा ठञ्, अन्यदा ऋत्वण। एवमातपेऽपि। शारदकाः—मुद्गाः, शारदका दर्भाः वुञ् संज्ञायाम् दर्भविशेषस्य मुद्गविशेषस्य चेयं संज्ञा। पराशृणाति इति—परशुः उः, बाहुलकादुप-

सर्गस्य कृत्वः । परशवे हितं—परशव्यम्, यत् । परशव्यस्य विकारः—पारशवम्, अञ्, यतो लुक् । पराञ्छृणाति पापानि —पराशरः, अच् । गर्गादित्वाद्यञि पाराशर्य्यः । पाराशर्य्येण प्रोक्तं भिक्षुसूत्रमधीयानाः—पाराशरिणः, 'पाराशर्य्यशिलालिभ्यां भिक्षुनटसूत्रयो'रिति प्रोक्ते णिनौ तदन्ता 'छन्दो ब्राह्मणानि' इत्यध्येतृवेदित्रोरण: 'प्रोक्ताल्लुगि'ति लुक्, सूत्रस्यापि छन्दस्त्वं तत्त्वयते, णिनावल्लोपयलोपौ । निष्ठा—शीर्णः । शीर्णवान् । क्ति—शीर्णिः । शीर्त्वा ।—शीर्य्य । शॄस् हिंसायामिति दुर्गः ।

१७ । पॄ, पालनपूरणयोः । ( To protect, to nourish

पॄ, सेट्, सक, प । पृणाति । पृणीयात् । पृणातु, पृणीतात् । अपृणात् । अपारीत् । पपार, पपरतुः, पप्रतुः । परिता, परीता । पूर्य्यात् । परिष्यति, परीष्यति । अपरिष्यत्, अपरीष्यत् । पिपरिषति, पिपरीषति, पुपूर्षति । पोपूर्य्यते । पापरीति, पापर्त्ति । पारयति । अपीपरत् । पूर्य्यते । अपारि । पूर्त्तः, पूर्त्तवान् । निष्ठानवर्ज्जं शृणातिवत् प्रक्रिया ।

१८ । वॄ, वरणे । ( To choose.)

व्ली, वॄ वरणे इति दुर्गः पठति । वॄ, सेट्, सक, प । वृणातीत्यादि वृञ्वत् । तेनैव वृणातीत्यादि सिद्धावपि पुनरस्योपादाने न प्रयोजनम् । नैतद्युक्तं, वृञो ञित्त्वात् सिद्धेऽपि पदद्वये यदञितो वचस्तत् कर्त्रभिप्राये क्रियाफले परस्मैपदसियद्धति । आद्यं पवर्गद्वितीयादि बहवः पठन्तीति पुरुषकारेणोक्तं, तत्राद्यशब्देन ञित् वृणातिरुच्यते । स्वामिशाकटायनावप्येवं पठित्वा भरणार्थमाहतुः । अत्र मनोरमा—ओष्ठ्यत्वात् वॄधातोः पुनःपाठ इत्येके । अयं भरणे न पठ्यते, न वरणे इत्यन्ये इति ।

१९ । भॄ, भर्त्सने । ( To blame )

भरणेऽप्येके । भॄ, सेट्, सक, प । भृणातीत्यादि वृणाति

वत्। भरः—अप्। भरणेन निर्वृत्तं—भरिमं भावप्रत्यया न्तादिमब्वक्तव्यम्' इतीमप्। चतुर्भुजस्तु हृह्रस्वत्वे नें धमि केचित्, तन्मते जह्वार, जह्वरतुः इत्यादि।

२०। शॄ, हिंसायाम्। (To kill)

शॄ, सेट्, सक, प। शृणाति। शशार इत्यादि वृणातिवत्। श्रियत इति तुदादौ।

२१। दॄ, विदारणे। (To tear)

दॄ, सेट्, सक, प। दृणाति। ददार, ददरतुः, दद्रतुः; ददरुः, दद्रुरित्यादि शृणातिवत्। विशेषस्तु 'अत्स्मृदॄत्वरे'त्य भ्यासस्य णौ चङ्यत्वम्—अददरत्। अयं घटादिपाठान्मित्— भये, दरयति, अन्यत्र दारयति। दरः—अप्। दरी—गौरादि- त्वात् ङीष्। पुरन्दरः 'पूःसर्वयोर्दारिसहो'रिति खच्। कलापमते—'पुरन्दरे'त्यादिना निपातः। भगन्दरः 'भगे च दारे'रिति, खच्। कलापमते—रूढ़ितः सिद्धिः। दारः— घञि णिलुक् कर्त्तरि। दरत्—जनपदः'दृदृभसोरदि'रित्यदि प्रत्ययः। दृषत्—'दृणातेः षुक् ह्रस्वश्चे'ति षुगागमो धातो र्ह्रस्वोऽदिश्च प्रत्ययः। वोपदेवादिमते दिवादौ चायम्।

२२। जॄ, वयोहानौ। (To grow old)

जॄ, सेट्, अक, प। नाविषये जृणातीत्यादि। अन्यत्र जीर्य्यतिवत्।

२३। धॄ, इति त्वेके। (To be old)

एके इति मैत्रेयः। धॄ, सेट्, अक, प। धृणातीत्यादि।

२४। नॄ, नये। (To lead)

नॄ, सेट्, सक, प। नृणातीत्यादि। प्रापणे घटादिः— नरयति। नरः—पचाद्यच्। ना—'नयतेर्डिच्चेति नयतेर्ऋन्'

प्रत्यय, सश्च क्तिन् । मारी, 'नृनरयोर्वृद्धिश्चे'ति शार्ङ्गरवादिपाठात् ङीष्, वृद्धिश्च ।

२५ । कॄ, हिंसायाम् । ( To kill )

कॄ, सेट्, सक प । कृणातीत्यादि कॄञ्वत् । तेनैव सिद्धे पुनः पाठः कर्त्रभिप्राये क्रियाफलेऽपि कृणातिवत् परस्मैपदार्थः ।

२६ । ॠ, गतौ ( To go )

ॠ, सेट्, सक, प । ऋणाति, ऋणीतः । ऋणासि । ऋणामि । ऋणीयात्, ऋणीयाताम् । ऋणातु, ऋणीतात्; ऋणीताम् । ऋणीहि, ऋणीतात् । ऋणानि । आर्णात्, आर्णीताम्, आर्णन् । आर्णाः । आर्णाम्, आर्णीव । आरीत, आरिष्टाम्, आरिषुः । अराञ्चकार इत्यादि । अरिता, अरीता । ईर्य्यात्, ईर्य्यास्ताम् । अरिष्यति, अरीष्यति । आरिष्यत्, आरीष्यत् । अरिरिषति, अरिरीषति, ईर्षिषति—'इट्, सनि वे'तीड्विकल्पः, गुणः, पूर्ववत् वा दीर्घश्च । अनिटि सनः कित्त्वादि-र्लीड़् । ईर्य्यते । ऐर्य्यत । आरि । आरयति,-ते । आरिरत्,-त । माभवानरिरत् । ईर्त्वा । प्रेर्य्य । समीर्णः, समीर्णवान् । 'उदीर्णरागप्रतिरोधकं जनै'रिति माघः । अरितुम्, अरीतुम् । ऋच्छतीति भ्वादौ, इयर्त्तीति जुहोत्यादौ ।

२७ । गॄ, शब्दे । ( To sound )

गॄ, सेट्, अक, प । गृणाति, गृणीतः, गृणन्ति इत्यादि । जगार इत्यादि निरसिवत् । *

---

* अपपूर्वस्य गृणातेः प्रयोगो नास्तीति । तौदादिको गृधातुरेव समपूर्वकोऽवपूर्वकश्च आत्मनेपदी नायमिति । शोर्त्रेऽनुगृणाति, प्रतिगृणाति । "अनुप्रतिगृणश्चे"ति शोतुः सम्प्रदानत्वम् । जेगीर्य्यते । जागर्त्ति प्रत्यादि । लुपसदे'त्यादौ अङ्कारविकारिभिः साहचर्यात् तौदादिकस्यैव यङ्ग्रहणमिति क्रियासमभिहार एवायं यङ् । जनन्वेधौ नु गृणातिगिरत्योरुभयोरेव यङ्ग्रहणमिति माधवः मैतत्सर्वे जल्पन्ति ।

२८। ज्या, वयोहानौ। ( To grow old )

ज्या, अनिट्, अक, प। जिनाति, जिनीतः, जिनन्ति। जिनासि, जिनीथ, जिनीथ। जिनामि, जिनीवः, जिनीम। जिनीयात्, जिनीयाताम्, जिनीयुः। जिनीयाः। जिनीयाम्। जिनातु, जिनीतात्; जिनीताम्, जिनन्तु। जिनीहि जिनीतात्, जिनीतम्, जिनीत। जिनानि, जिनाव, जिनाम। अजिनात्, अजिनीताम्, अजिनन्। अजिनाः। अजिनाम्, अजिनीव। लुङ्—अज्यासीत्, अज्यासिष्टाम्, अज्यासिषुः। अज्यासीः। अज्यासिषम्, अज्यासिष्व। जिज्यौ, जिज्यतुः, जिज्युः। जिज्यथ, जिज्याथ। जिज्यिव। ज्याता। जीयात्, जीयास्ताम्। ज्यास्यति। भावे—जीयते। अज्यायि। जिज्यासति। जेजीयते। जाज्याति। ज्यापयति। अजिज्यपत्। जीत्वा। जीनः। ज्यानिः।

२९। री, गतिरेषणयोः। ( To go, to move )

रेषणं वृकशब्दः। री, अनिट्, सक, प। रिणाति, रिणीतः। रिणासि। रिणामि। रिणीयात्, रिणीयाताम्। रिणातु, रिणीतात्। रिणीहि, रिणीतात्। रिणानि। अरिणात्, अरिणीताम्। अरिणाः। अरिणाम्। अरैषीत्, अरैष्टाम्, अरैषुः। रिराय, रिरियतुः। रिरयिथ, रिरेथ। रेता। रेष्यति। रिरीषति। रेरीयते। रीयते। अरायि। रेपयति। अरीरिपत्। निष्ठा—रीणः, रीणवान्। 'दाभारीङ्वजो नु'रिति नुः—रेणुः, धूलिः। रेफादिरयम्।

३०। ली, श्लेषणे। ( To adhere )

ली, अनिट्, सक, प। लिनाति। लिनीयात्। लिनातु। अलिनात्। अलासीत्, अलैषीत्, अलासिष्टाम्, अलैष्टाम्; अलासिषुः, अलैषुः। अलासीः, अलैषीः। अलासिषम्, अलै-

षम्; अलासु, अलेषु। ललौ, लिलाय; लिल्यतुः। ललाथ, ललिथ; लिलेथ,लिलयिथ। ललौ,लिलय,लिलाय। लिल्यिव। लाता, लेता। लीयात्। लास्यति, लेष्यति। अलास्यत्, अलेष्यत्। अन्यत् सर्वं लीयतिवत्।

२१। व्ली, वरणे। ( To choose )

व्ली अनिट्, सक, प। व्लीनाति, व्लीनीतः। व्लीनासि। व्लीनामि। व्लीनीयात्। व्लीनातु, व्लीनीतात्। व्लीनीहि, व्लीनीतात्। व्लीनानि। अव्लीनात्। अव्लैषीत्,अव्लैष्टाम्। विव्लाय-तात्। व्लीनानि। अव्लीनात्। अव्लैषीत्,अव्लैष्टाम्। विव्लाय-विव्लियतुः। विव्लेय,विव्लयिथ। विव्लियिव। व्लेता। व्लीयात् व्लेष्यति। अव्लेष्यत्। विव्लीषति। वेव्लीयते। व्लेपयति,-ते। अविव्लिपत्,-त। व्लीत्वा। व्लीणः।

२२। प्ली, गतौ। * ( To go )

प्ली, अनिट्, सक, प। प्लिनातीत्यादि व्लिनातिवत्। णौ— प्लाययति। अपिप्लयत्।

वृत्। ल्वादिगणपरिसमाप्त्यर्थोऽयम्। अन्ये तु प्वादीनामपि परिसमाप्त्यर्थोऽयमिति।

२३। व्री, वरणे। ( To choose )

व्री, अनिट्, सक, प। व्रीणाति, व्रीणीतः। व्रीणासि। व्रीणामि। व्रीणीयात्। व्रीणातु, व्रीणीतात्। व्रीणीहि। व्रीणीतात्। व्रीणानि। अव्रीणात्, अव्रीणीताम्। अव्रीणाः। अव्रीणाम्। अव्रैषीत्,अव्रैषुः। विव्राय,विव्रियतुः। विव्रयिथ विव्रेथ। विव्रियिव। विव्राय, विव्रय। व्रेता। व्रीयात्। व्रेष्यति। अव्रेष्यत्। विव्रीषति। वेव्रीयते। वेव्रेति,वेव्रयीति।

* केचिदमुं वल्योष्ठ्यादिं पठन्तो व्ली वरण इत्यमुं न पेठुः। नैते यस्य वरणार्थं पठित्वाऽमुं न पपाठ।

व्राययति,-ते। अविव्रयत,-त। केचित् अर्त्तिह्रीत्यादौ व्रीति पठित्वा व्रापयतीति पुकं विदधति।

२४। भ्री, भये। ( To be afraid )

भ्री, अनिट्, अक, प। भ्रीणाति इत्यादि व्रीणातिवत्।

२५। क्षीष, हिंसायाम्। ( To kill )

क्षी, ( ष् ) अनिट्, सक, प। क्षीणाति इत्यादि व्रीणातिवत् ( ष ) क्षिष् इति तृतीयस्वरोपधं केचित् क्र्यादौ पठन्ति, क्षिणातीति, केचिच्च चतुर्थस्वरोपधं प्वादौ निर्दिशन्ति। षड्—क्षिया। क्षीत्वा। क्षीतवान्। क्षयतीति, क्षायी। क्षीयतइति दिवादौ *। क्षिणोतीति क्षिणधातुः तनादौ। क्षिणोतीति स्वादौ।

२६। ज्ञा, अवबोधने। ( To know )

अवबोधनं ज्ञानम्। ज्ञा, अनिट्, सक, प। लट्—जानाति जानीतः, जानन्ति। जानासि, जानीथः, जानीथ। जानामि, जानीवः, जानीमः।

लिङ्—जानीयात्, जानीयाताम्, जानीयुः। जानीयाः जानीयातम्, जानीयात। जानीयाम्, जानीयाव, जानीयाम।

लोट्—जानातु, जानीतात्; जानीताम्, जानन्तु। जानीहि, जानीतात्; जानीतम्, जानीत। जानानि, जानाव, जानाम।

लङ्—अजानात्, अजानीताम्, अजानन्। अजानाः, अजानीतम्, अजानीत। अजानाम्, अजानीव, अजानीम।

लुङ्—अज्ञासीत्, अज्ञासिष्टाम्, अज्ञासिषुः। अज्ञासीः

* क्षम क्षुभ क्षिष हिंसायामिति क्र्यादौ दुर्गः पठति। अत एतानाथ एवमा- आयुः परं क्षीयत इति कर्मकर्त्तरि प्रत्यय इति माधवः। तत्करणाभावात् दिवादौ- ऽपरिपठनात्तेन क्षीयत इत्यादि भवेदिति केचिदिति धातुप्रदीपे इति।

अज्ञासिष्टम्, अज्ञासिष्ट । अज्ञासिषम्, अज्ञासिष्व, अज्ञासिष्म ।

लिट्—जज्ञौ, जज्ञतुः, जज्ञुः । जज्ञिथ, जज्ञाथ ; जज्ञथुः, जज्ञ । जज्ञौ, जज्ञिव, जज्ञिम ।

लुट्—ज्ञाता, ज्ञातारौ, ज्ञातारः । ज्ञातासि, ज्ञातास्थः, ज्ञातास्थ । ज्ञातास्मि, ज्ञातास्वः, ज्ञातास्मः ।

आशीः—ज्ञायात्, ज्ञेयात् ; ज्ञायास्ताम्, ज्ञेयास्ताम् ; ज्ञायासुः, ज्ञेयासुः । ज्ञायाः, ज्ञेयाः ; ज्ञायास्तम्, ज्ञेयास्तम् ; ज्ञायास्त, ज्ञेयास्त । ज्ञायासम्, ज्ञेयासम् ; ज्ञायास्व, ज्ञेयास्व ; ज्ञायास्म, ज्ञेयास्म ।

लृट्—ज्ञास्यति, ज्ञास्यतः, ज्ञास्यन्ति । लृङ्—अज्ञास्यत् इत्यादि ।

'अकर्मकाच्चे'ति आत्मनेपदम् ।—जानीते जानाते, जानते । जानीषे, जानाथे, जानीध्वे । जाने, जानीवहे, जानीमहे । लोट्—जानीताम्, जानाताम्, जानताम् । जानीष्व, जानाथाम्, जानीध्वम् । जानै, जानावहै, जानामहै । लिङ्—जानीत, जानीयाताम्, जानीरन् । जानीथाः, जानीयाथाम्, जानीध्वम् । जानीय, जानीवहि, जानीमहि । लङ्—अजानीत, अजानाताम्, अजानत । अजानीथाः, अजानाथाम्, अजानीध्वम् । अजानि, अजानीवहि, अजानीमहि । लुङ्—अज्ञास्त, अज्ञासाताम्, अज्ञासत । अज्ञास्थाः, अज्ञासाथाम्, अज्ञाध्वम् । अज्ञासि, अज्ञास्वहि, अज्ञास्महि । लिट्—जज्ञे, जज्ञाते, जज्ञिरे । जज्ञिषे, जज्ञाथे, जज्ञिध्वे । जज्ञे, जज्ञिवहे, जज्ञिमहे । आशीः—ज्ञासीष्ट । लुट्—ज्ञाता । लृट्—ज्ञास्यते । लृङ्—अज्ञास्यत ।

शतमपजानीते—अपलपतीत्यर्थः 'अपह्नवे ज्ञ' इति आत्मने·

पदम्। सोपसर्गोऽयमपह्नवे वर्त्तते। सर्पिषो जानीते—सर्पिषोऽपाये न प्रवर्त्तत इत्यर्थः। 'ज्ञोऽविदर्थस्य करणे' इति शेषत्वेन विवक्षिते षष्ठी।

माता सञ्जानीते, मातरं सञ्जानीते, शतं प्रतिजानीते,—'सम्प्रतिभ्यामनाध्याने' इति तङ्। 'सम्पूर्वत्वे संज्ञोऽन्यतरस्यां कर्म्मणी'ति पक्षे तृतीया। आध्यानमुत्कण्ठापूर्वकस्मरणम्, ततोऽन्यदनाध्यानम्। आध्याने तु मातुः सञ्जानाति 'अधीगर्थ' इति कर्म्मणि षष्ठी। अशेषे तु 'संज्ञ' इति द्वितीयातृतीये भवतः। मातरं सञ्जानाति, मात्रा सञ्जानाति। कृद्योगे तु—मातुः संज्ञानं कृद्योगलक्षणा षष्ठी परत्वाद्भवति। धर्मं जानीते 'अनुपसर्गाज्ज्ञ' इति कर्त्रभिप्राये तङ्। स्वयं जानाति, जानीत इति वा 'विभाषोपपदेन प्रतीयमाने' इति कर्त्रभिप्रायत्वे उपपदेन द्योत्यमाने तङ्-विकल्पः। धर्मं जिज्ञासते—'ज्ञा-श्रु-स्मृ-दृशां सनः' इति आत्मनेपदम्। अकर्मकार्थमिदम्, सकर्मकात्तु 'पूर्ववत् सनः' इति आत्मनेपदम्। अनुजिज्ञासति पुत्रं—'नानोर्ज्ञः' इति आत्मनेपदनिषेधः।* जाज्ञायते। जाज्ञाति, जाज्ञेति। ज्ञापयति,-ते। ज्ञापयाञ्चकार,-चक्रे। एवम् आम् बभूव इत्यादि। अजिज्ञपत्,-त। मारणादौ ज्ञाधातुस्तु रादिर्घटादिश्चेति वोपदेवः। मारणादौ ज्ञपयति। घटादौ विस्तरोऽस्य ज्ञातव्यः।

कर्म्मणि—ज्ञायते। अज्ञायत। अज्ञायि, अज्ञासाताम्, अज्ञायिषाताम्; अज्ञासत, अज्ञायिषत। अज्ञास्थाः, अज्ञा-

* "सन्दर्भशुद्धिं गिरां जानीते" जयदेव इति अनुपसर्गात् ज्ञाधातोर्यगादित्व-स्वीकारेण सिद्धमिति। तथाच—'अनुपसर्गाज्ज्ञ' इति पाणिनिः। कथं "ततोऽङ्ग जज्ञे गमनं सुतस्य" इति भट्टिः, उपसर्गप्रतिरूपकत्वादात्मनेपदम्। विभक्तिविपरिणामे च कर्म्मणि प्रत्यय इति जयमङ्गला इति रमानाथः।

यिष्ठाः—अज्ञाध्वम्, अज्ञायिध्वं [ ढ्वम् ] अज्ञासि, अज्ञायिषि, अज्ञास्वहि, अज्ञायिष्वहि। ज्ञास्यते, ज्ञायिष्यते। जज्ञे। ज्ञाता, ज्ञायिता। ज्ञासीष्ट, ज्ञायिषीष्ट। अज्ञास्यत, अज्ञायिष्यत इत्यादि स्यसिजादिषु चिण्वदिड् वा। ण्यन्तस्य कर्म्मणि —ज्ञाप्यते। अज्ञापि, अज्ञापयिषाताम्, अज्ञापिषाताम्, अज्ञापिषत, अज्ञापयिषत इत्यादि स्यसिजादिषु चिण्वदिड्। मारणादौ ज्ञप्यत, अज्ञपि, अज्ञपयिषाताम्, अज्ञपिषातामित्यादि ह्रस्वयुक्तः प्रयोगः।

णिच्-सन्—जिज्ञापयिषति, जिज्ञपयिषति, ज्ञीप्सति। पा—७।२।४९। "जिज्ञासमाना मुनिहोमधेनुः" रघुः २।२६। "जिज्ञासाञ्चक्रिरे" भट्टिः १४।९१। ज्ञात्वा।—ज्ञाय। ज्ञातिः। ज्ञानम्। ज्ञानीयः। ज्ञातव्यम्। ज्ञेयम्। ज्ञायकः। ज्ञाता। (स्त्री) ज्ञातारी। ज्ञपितः, ज्ञापितः, ज्ञप्तः। 'वा दान्त' इति पक्षे णेर्लुक्यनिट्त्वम्। ज्ञापनम्, ज्ञपनम्। ज्ञापना। ज्ञपना। ज्ञप्तिः। विज्ञप्तिः। ज्ञापयित्वा, ज्ञपयित्वा।—ज्ञाप्य,—ज्ञप्य। जिज्ञापयिषुः, जिज्ञपयिषुः। ज्ञीप्सुः। ज्ञीप्सा, जिज्ञापयिषा, जिज्ञपयिषा। अनुजिज्ञासन्। जिज्ञासमानः। जिज्ञासा। अभि—अभिज्ञानम्, स्मरणम्, ज्ञानम्। "अभिजानासि यत् काश्मीरेष्ववसाम—पा३।२।११२। अभिज्ञानशकुन्तलम्। अपजानानः। जानन्, जानानः। जानती। जानाना। प्रत्यभि—प्रत्यभिज्ञा, अनुभूतिः। अव—अवज्ञा। "अवजानासि मां यस्मात्" रघुः १।७८। वि-विज्ञानम्। वि-णिच्—विज्ञापनम्। आ-णिच्—आज्ञा, अनुमतिः, शासनम्, विज्ञापनम्। परि—ज्ञानम्, निश्चयः। प्रति—प्रतिज्ञा। "प्रत्यज्ञास्त क्रियापटुः" भट्टिः ८।२६।

पन्थानं प्रजानातीति—पथिप्रज्ञः 'प्रे दाज्ञ' इति अणोऽप-

वादः क। प्रज्ञा—'आतश्चोपसर्गे' इत्यङ्। पाणिन्युपज्ञम् अकालकं व्याकरणम्। *

३८। बन्ध, बन्धने ( To tie )

बन्ध्, अनिट्, सक, प। लट्—बध्नाति, बध्नीतः, बध्नन्ति। बध्नासि, बध्नीथः, बध्नीथ। बध्नामि, बध्नीवः, बध्नीमः। लिङ्—बध्नीयात्, बध्नीयाताम् बध्नीयुः। बध्नीयाः इत्यादि लोट्—बध्नातु, बध्नीतात्; बध्नीताम्, बध्नन्तु। बधान, बध्नीतात्; बध्नीतम्, बध्नीत। बध्नानि, बध्नाव, बध्नाम। लङ्—अबध्नात्, अबध्नीताम्, अबध्नन्। अबध्नाः, अबध्नीतम्, अबध्नीत। अबध्नाम्, अबध्नीव,-म। लुङ्—अभान्त्सीत्, अबान्द्धाम्, अभान्त्सुः। अभान्त्सीः, अबान्द्धम्, अबान्द्ध। अभान्त्सम् अभान्त्स्व,—स्म। लिट्—बबन्ध, बबन्धतुः, बबन्धुः। बबन्धिथ, बबन्द्ध, बबन्धथुः, बबन्द्ध। बबन्ध, बबन्धिव—म। बन्धा। बध्यात्। भन्त्स्यति। अभन्त्स्यत्। बिभन्त्सति। कर्म्मणि—बध्यते। अबन्धि। अभन्त्साताम्, अभन्त्सत। अबन्द्धाः, अभन्त्साथाम्, अभन्द्धम्। अभन्त्सि, अभन्त्स्वहि,-स्महि। बबन्धे, बबन्धिषे। भन्त्सीष्ट।

बाबध्यते। बाबन्धि, बाबन्धीति। बन्धयति,-ते। अबबन्धत्,-त। बन्धयामास,-म्बभूव।—चकार,-चक्रे।

निष्ठा—बद्धः, बद्धवान्। बन्धनम्। बन्धः। चक्रबन्धं बद्धः, चक्रबद्ध इत्यर्थः, अट्टालिकाबन्धं बद्धः—बन्धविशेषस्यैषा संज्ञा

* उपज्ञायत इत्युपज्ञा, प्रथमज्ञानं पूर्ववदङ्। अकालकं कालपरिभाषाशून्यं व्याकरणं पाणिनिना प्रथमं ज्ञातमित्यर्थः। 'उपज्ञोपक्रमं तदाद्याचिख्यासायां' निबुपज्ञोपक्रमान्तस्य तत्पुरुषस्य नपुंसकत्वं, तच्छब्देनोपज्ञोपक्रमयोरर्थः परामृश्यते। तेन यदुपज्ञं यस्योपक्रमस्य च आदिराख्यातुमिष्यत इत्यर्थः। अत्र च कालपरिभाषाशून्यव्याकरणस्य पाणिनिरादिराख्यातुमिष्यत इति माधवः।

अधिकरणे बन्धः, 'संज्ञाया'मिति च सूत्राभ्यां णमुल्। कषादित्वादयथाविध्यनुप्रयोगः। चक्रे बद्धः चक्रबद्धः, दृषदिबद्धः, दृषद्बद्धः—'सप्तमी'ति योगविभागात् समासः। 'तत्पुरुषे'बहुलमित्यलुको 'न इन्सिद्धबध्नातिषु चे'ति निषेधः, चक्रे बन्धः—चक्रबन्धः; दृषदिबन्धः दृषद्बन्धः 'सिद्धशुष्कपक्व-बन्धैश्चे'ति सप्तमीतत्पुरुषः, 'बन्धे च विभाषे'ति हलदन्तात् सप्तम्या घञन्ते बन्धशब्दे उत्तरपदे विभाषयाऽलुक्। पचाद्यजन्ते तु बन्धशब्दे उत्तरपदे 'नेन्सिद्धे'ति निषेधो भवति—चक्रबन्ध इति। हस्ते बन्धोऽस्येति—हस्तेबन्ध इति। बधिरः—किरच्। ब्रध्न—सूर्यः। बुध्नः—मूलम्। 'बन्धेर्ब्रधबुधौ चे'ति बध्नातेर्नक् प्रत्ययः, ब्रधबुधादेशौ च भवतः। बन्धुः—उः। कौमुदगन्धीबन्धुः 'बन्धुनि बहुव्रीहावि'ति ष्यङः संप्रसारणे 'हल' इति दीर्घः। बन्धुरः—उरच्। बद्धा। बन्धुम्। बन्ध्यः। बन्ध्या। बन्धव्यः। बन्धनीयः। तृच्—बन्द्धा, बन्द्धारौ। सम्—सम्बन्धः, सम्पर्कः। अनु—अनुबन्धः अनुवर्त्तनम्। नि—निबन्धः—ग्रन्थनम्, रचना निरोधः। प्रति—प्रतिबन्धः। 'प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः।' रघु—१।७९। निर्—निर्बन्धः आग्रहातिशयः।

## आत्मनेपदी।

३८। वृङ्, सम्भक्तौ। (To serve)

वृ, (ङ) सेट्, सक, आ। वृणीते, वृणाते, वृणते। वृणीषे, वृणाथे वृणीध्वे। वृणे, वृणीवहे,—महे। वृणीत, वृणीयाताम्, वृणीरन्। वृणीताम्, वृणाताम्, वृणताम्। वृणीष्व, वृणाथाम्, वृणीध्वम्। वृणै, वृणावहै। अवृणीत, अवृणाताम्, अवृणत। अवृणीथाः, अवृणाथाम्,अवृणीध्वम्। अवृणि, अवृणीवहि,-महि। असार्वधातुके तु वृणोतिवत् प्रक्रिया।

प्रपञ्चस्तत एवावगन्तव्यः। वर्य्या—स्त्रियां यति निपात्यते। पुंसि वार्य्या—ऋत्विजः, ण्यत्। वरेण्यः—एण्यः।

## परस्मैपदिनः।

४०। श्रन्थ, विमोचन-प्रतिहर्षयोः। ( To be loose, to delight )

श्रन्थ्, सेट्, सक, प। श्रथ्नाति, श्रथ्नीतः, श्रथ्नन्ति। श्रथ्नासि, श्रथ्नीथः। श्रथ्नामि, श्रथ्नीवः, श्रथ्नीमः। श्रथ्नीयात्, श्रथ्नीयाताम्, श्रथ्नीयुः। श्रथ्नातु, श्रथ्नीतात्, श्रथ्नीताम्, श्रथ्नन्तु। श्रथान, श्रथ्नीतात्; श्रथ्नीतम्,-त। श्रथ्नानि, श्रथ्नाव,-म। अश्रथ्नात्, अश्रथ्नीताम्, अश्रथ्नन्। अश्रथ्नाः। अश्रथ्नाम्। अश्रथ्नीव। लुङ्—अश्रन्थीत्, अश्रन्थिष्टाम्, अश्रन्थिषुः। अश्रन्थीः। अश्रन्थिषम्, अश्रन्थिष्व। लिट्—शश्रन्थ, श्रेथतुः श्रेथुः। शश्रन्थिथ,श्रेथतुः, श्रेथ। शश्रन्थ,श्रेथिव, श्रेथिम।* श्रन्थिता। श्रथ्यात्, श्रथ्यास्ताम्, श्रथ्यासुः। श्रन्थिष्यति। अश्रन्थिष्यत्। शिश्रन्थिषति। शाश्रथ्यते। शाश्रन्थीति, शाश्रन्ति। श्रन्थयति,-ते। अशश्रन्थत्,-त। कर्म्मकर्त्तरि 'श्रिन्थीत्यादिना' यक्चिणोर्निषेधात् श्रथ्नीते मेखला स्वयमेव, अश्रन्थिष्ट मेखला स्वयमेव इति भवति। श्रन्थना—युच्। प्रश्रथः, हिमश्रथः—घञि इह्वरभावे नलोपश्च। श्रन्थित्वा, श्रथित्वा। श्रन्थनम्। श्रन्थितव्यम्। श्रथितः।

४१। मन्थ, विलोड़ने। ( To churn )

अयं द्विकर्मकोऽपि। मन्थ्, सेट्, सक,प। मथ्नाति दधि गोपः। मथ्नीतः, मथ्नन्ति, इत्यादि श्रथ्नातिवत्। लिट्—

---

* ये तु श्रन्थादीनां किर्त्त्वविकल्पमिच्छन्ति, तेषां मते शश्रन्थतुः शश्रन्थुरित्यादपि। इदञ्च कित्त्वं पिद्वचनेष्वपीति सुधाकरः, तन्मते शश्राथ श्रेथिथ शश्रथ, शश्राथेति।

ममन्थ, ममन्थतुः, ममन्थुरित्यादि। अस्य लिटः कित्त्वं नास्तीति। कर्मकर्त्तरि यक्चिणौ स्तः—मथ्यते। मन्थनम्। मथितः। मथित्वा। मन्थित्वा। मन्थतीति विलोड़ने। 'मथि' इति हिंसासंक्लेशयोः—मन्थति।

४२। ग्रन्थ सन्दर्भे। (To put together)

ग्रन्थ्, सेट्, सक, प। ग्रथ्नातीत्यादि ग्रथ्नातिवत्। अत्रापि केचित् ग्रन्थिं पठन्ति। पुनःपाठोऽर्थभेदात्। ग्रन्थिः—इन्प्रत्ययः। ग्रन्थः। ग्रन्थनम्।

४३। कुन्थ, संक्लेषणे। (To suffer pain)

संक्लेशने इति दुर्गः। कुन्थ्, सेट्, सक, प। कुथ्नाति, चुकुन्थेत्यादि मन्थिवत्। कुथेति केचित्, तन्मते कुथ्नाति, चुकोथ, कोथितेत्यादि। कुथ्यतीति दिवादौ। कुन्थतीति भ्वपि।

४४। मृद, चोदे। (To pound)

मृद्, सेट्, सक, प। मृद्नाति, मृद्नीतः, मृद्नन्ति। मृद्नासि। मृद्नामि। मृद्नीयात्। मृद्नातु, मृद्नीतात्। मृदान; मृद्नीतात्; मृद्नीतम्। मृद्नानि, मृद्नाव। अमृद्नात्, अमृद्नीताम् अमृद्नन्। अमृद्नाः। अमृद्नाम्, अमृद्नीव। लुङ्—अमर्दीत्, अमर्दिष्टाम्, अमर्दिषुः। लिट्—ममर्द, ममृदतुः, ममृदुः। ममर्दिथ, ममृदथुः, ममृद। ममर्द, ममृदिव, ममृदिम। मर्दिता। मृद्यात्। मर्दिष्यति। अमर्दिष्यत्। मिमर्दिषति। मरीमृद्यते मर्मर्त्ति, मरीमृदीति। मर्दयति,-ते। अममर्दत्,-त। अमीमृदत्,-त। कर्मणि—मृद्यते। अमर्दि। मृत्—क्विप्। मृत्तिका—तिकन्, मृत्सा, मृत्स्ना—'सस्नौ प्रशंसाया'मिति सस्नौ। मर्दनम्। मृद्यः—क्यप्। मृदित्वा। मृद्य। मृदितः। मर्दः।

४५। मृड़, च। (To pound)

चात् पूर्वोक्तोऽर्थः। मृड़ सुखे चेति केचित्। मृड़, सेट्, सक, प। मृड्नाति इत्यादि मृदिवत्।

गुध, रोषे । ( To be angry )

गुध् सेट्, अक, प । गुध्नाति, जुगोध इत्यादि मृदिवत् । गुधित्वा । गुधितः, गुधितवान् ।

४७ । कुष, निष्कर्षे । ( To tear )

निष्कर्षोऽन्तःप्रकाशनमिति गोविन्दभट्टः । बहिष्करणमिति कश्चित् । कुष्, सेट्, अक, प । कुष्णाति । कुष्णासि । कुष्णामि, कुष्णीवः । कुष्णीयात् । कुष्णातु, कुष्णीतात् । कुषाण । अकुष्णात् । अकोषीत् । निरकोषीत्, निरकुक्षत्—'निरःकुषः' इति असार्वधातुके इड्विकल्पः । अनिष्पूर्वत्वे तु नित्यमिट् । चुकोष, चुकुषतुः । चुकोषिथ । चुकोषिव । निष्कोषिता, निष्कोष्टा । कुष्यात् । निष्कोषिष्यति, निष्कोक्ष्यति । निरकोषिष्यत्, निरकोक्ष्यत्, निश्चुकोषिषति, निश्चुकुक्षति । कर्मकर्त्तरि—कुष्यति पादः स्वयमेव, कुष्यते वा । अकुष्यत् पादः स्वयमेव । कुष्यतु कुष्यतां वा पादः स्वयमेव—'कुषिरञ्जोः प्राचां श्यन् परस्मैपदञ्चे'ति श्यन् परस्मैपदे सार्वधातुके । अन्यत्र कोषिष्यते पादः स्वयमेव, अकोषि पादः स्वयमेवेत्यादि । निष्कुषितम् 'इड् निष्ठाया'मिति नित्यमिट् । कुष्ठः—'हनिकुषी'त्यादिना क्थन् । कुक्षिः—'प्लुषिकुषिशुषिभ्यः क्सि'रिति क्सिः । सर्वत्र 'तितुत्रे'तीण्निषेधः । कौक्षेयकः—'कुलकुक्षिग्रीवाभ्यः श्वास्यलङ्कारेष्वि'ति असावभिधेये शैषिकष्ठञ् । अन्यत्र—कौक्षः, कौक्षेयः—'दृतिकुक्षी'त्यादिना भवार्थे ढञ् । निष्कोष्टुम्, निष्कोषितुम् । कोटनिष्कोषितं धनुः । "उपान्तयोर्निष्कुषितं विहङ्गैः" इति रघुः—७।६० ।

४८ । क्षुभ, सञ्चलने । ( To be agitated )

क्षुभ्, सेट्, सक, प । क्षुभ्नाति, क्षुभ्नीतः । क्षुभ्नीयात् । क्षुभ्नातु, क्षुभ्नीतात् । क्षुभाण, क्षुभ्नीतात् । क्षुभ्नानि । अक्षुभ्नात् ।

अचोभीत्, अचोभिष्टाम्, अचोभिषुः। चुचोभ, चुचुभतुः, चुचुभुः। चुचोभिथ, चुचुभथुः, चुचुभ। चुचोभ। चुचुभिव। चोभिता। चुभ्यात्। चोभिष्यति। अचोभिष्यत्। चुचुभिषति, चुचोभिषति। अचुभदिति चुभ्यतेः पुषादिपाठात्।'चुभ्नादिषु चे'ति णत्वनिषेधो यत्र तद्रूपं तत्र वेति। चोभणमित्यत्र रूपान्तरे न भवति। चुभ्नीतः, चुभ्नतीत्यादौ त्वेकदेशविकृतस्यानन्यत्वात् स्थानिवद्भावाद्भवत्येव।

४९। णभ, तुभ, हिंसायाम्। ( To kill )

नभ्, तुभ्, सेट्, सक, प। नभ्नाति,तुभ्नातीत्यादि पूर्ववत्। लुङ्—अनभीत्, अनाभीत् इत्यादि। प्रणिनभ्नाति,प्रनिनभ्नाति—'शेषे विभाषे'ति णत्वविकल्पः।

५०। क्लिशू, विबाधने। ( To torment )

क्लिश्, (ऊ) वेट्, सक, प। क्लिश्नाति,क्लिश्नीतः, क्लिश्नन्ति। क्लिश्नासि। क्लिश्नामि। क्लिश्नीयात्। क्लिश्नातु, क्लिश्नीतात्। क्लिशान, क्लिश्नीतात्। क्लिश्नानि, क्लिश्नाव। अक्लिश्नात्, अक्लिश्नीताम्, अक्लिश्नन्। अक्लेशीत्, अक्लेशिष्टाम्, अक्लेशिषुः। अनिट्पक्षे—अक्लिक्षत्, अक्लिक्षताम्, अक्लिक्षन्। चिक्लेश, चिक्लिशतुः, चिक्लिशुः। चिक्लेशिथ, चिक्लेष्ठ। चिक्लिशिव, चिक्लिश्व। क्लेष्टा, क्लेशिता। क्लिश्यात्। क्लेक्ष्यति, क्लेशिष्यति। अक्लेक्ष्यत्, अक्लेशिष्यत्। चिक्लेशिषति, चिक्लिशिषति, चिक्लिक्षति। चेक्लिश्यते। चेक्लेष्टि, चेक्लिशीति। क्लेशयति,-ते। अचिक्लिशत्,-त। क्लिशित्वा, क्लिष्ट्वा। क्लिष्टः, क्लिशितः। क्लिष्टश्च तदक्लिशितञ्चेति क्लिष्टाक्लिशितम् 'क्तेन नञ्विशिष्टेने'ति कर्मधारयः। क्लेशः। क्लिश्यते इति दिवादौ।

५१। अश, भोजने। ( To eat )

अश्, सेट्, सक, प। अश्नाति, अश्नीतः,अश्नन्ति। अश्नासि,

अश्नीयः। अश्नामि। अश्नीवः। अश्नीयात्, अश्नीयाताम्। अश्नीयुः। अश्नातु, अश्नीतात्, अश्नन्तु। अशान, अश्नीतात्; अश्नीतम्,—त। अश्नानि। आश्नात्, आश्नीताम्, आश्नन्। आश्नाः। आश्नाम्, आश्नीव, आश्नीम। आशीत्, आशिष्टाम्, आशिषुः। आशीः, आशिष्टम्, आशिष्ट। आशिषम्, आशिष्व,-ष्म। आश, आशतुः, आशुः। आशिथ, आशथुः, आश। आश, आशिव, आशिम। अशिता। अश्यात्। अशिष्यति। आशिष्यत्। अशिशिषति। अशाश्यते। अश्यते। आश्यत। आशि। आशयति। आशिशत्। माभवानशिशत्। अशित्वा। प्राश्य। अशितः। अशनम्। अश्नन्। अश्नती। अनाश्वान्—क्वसुर्रनिट् निपात्यते। अशनायति—बुभुक्षत इत्यर्थः 'अशनायोदन्यधनाये"त्यादिना बुभुक्षायामीत्वापवाद आकारः। अश्नीतपिबतेति यस्यां क्रियायां सातत्येनोच्यते साऽश्नीतपिबता—मयूरव्यंसका'वाख्यातमाख्यातेन क्रियासातत्ये' इति पाठात् समासे टाप्। आशः। प्रातराशः। अश्नुत इति स्वादौ।

५२। उ ध्रस, उञ्छे। ( To glean )

ध्रस, ( उ ) सेट्, अक,प। ध्रस्नाति। ध्रस्नीयात्। ध्रस्नातु, ध्रस्नीतात्। ध्रसान, ध्रस्नीतात्। अध्रस्नात्। अध्रसीत्, अध्रासीत्। दध्रास। दध्रसिथ। ध्रसिता। ध्रस्यात्। ध्रसिष्यति। अध्रसिष्यत्। दिध्रसिषति। दाध्रस्यते। दाध्रस्ति, दाध्रसीति। ध्रासयति,-ते। अदिध्रसत्,-त। ध्रसित्वा, ध्रस्त्वा। ध्रस्तः। अत्र चोरस्वाम्युकारं धात्ववयवमाह,तन्मते—उध्रस्नाति। उध्रसाञ्चकार इत्यादि।

५३। इष, आभीक्ष्ण्ये। ( To repeat )

आभीक्ष्ण्यं पौनःपुन्यं भृशार्थो वा तद्विषयायां क्रियायामित्यर्थः। सा च यथायोग्यम्।—तथाच श्रूयते पुरः इष्णाति—

पुरुहूत इति, अत्र भाष्यम्—असुरीयम्। पुरोहननादिरर्थो गम्यते।

इष्, सेट्, सक, प। इष्णाति, इष्णीतः। इष्णीयात्। इष्णातु, इष्णीतात्, इष्णीताम्, इष्णन्तु। इषाण, इष्णीतात्। इष्णानि। ऐष्णात्, ऐष्णीताम्, ऐष्णन्। ऐष्णाः। लुङ्—ऐषीत्, ऐषिष्टाम्, ऐषिषुः। लिट्—इयेष, ईषतुः, ईषुः। इयेषिथ। इयेष, ईषिव। एषिता। इष्यात्। एषिष्यति। ऐषिष्यत्। एषिषिषति। एषयति,-ते। ऐषिषत्,-त। माभवानिषिषत्। एषित्वा। इषितः। एषः। एषणीयम्। *

५४। विष, विप्रयोगे। ( To seperate )

विप्रयोगः विश्लेषः। विष, अनिट, सक, प। विष्णाति। विष्णीयात्। विष्णातु, विष्णीतात्। विषाण, विष्णीतात्। विष्णानि। अविष्णात्। विवेष। विवेषिथ। विविषिव। वेष्टेत्यादि अनिट्कारिकायां विषिग्रहणेन तस्यापि ग्रहणम्। अविक्षत्, अविक्षताम्, अविक्षन्।

५५। प्रुष, प्लुष, स्नेहन-सेचन-पूरणेषु। ( To love, to sprinkle, to fill )

प्रुष्, प्लुष्, सेट्,सक,प। प्रुष्णाति। प्रुष्णीयात्। प्रुष्णातु प्रुष्णीतात्। प्रुषाण,प्रुष्णीतात्। प्रुष्णानि। अप्रुष्णात्। अप्रोषीत्। पुप्रोष। पुप्रोषिथ। पुप्रुषिव। प्रोषिता। प्रुष्यात्। प्रोषिष्यति। अप्रोषिष्यत्। पुप्रोषिषति,पुप्रुषिषति। पोप्रुष्यते। पोप्रोष्टि, पोप्रुषीति। प्रोषयति,-ते। अपुप्रुषत्,-त। प्रोषित्वा, प्रुषित्वा। प्रुषितः। एवं प्लुष्णातीत्यादि।

---

* 'तीषसहेति' इड्विकल्पस्तौदादिकस्यैव, न दैवादिक-क्र्यादिकयोः एतदर्थमेव तौदादिकमुदितं पठित्वा सूत्रे तमुदितं पठन्तीति वृत्तौ स्थितम्। यत्तुदित्पाठिना तौदादिकस्यैव ग्रहणे हेतुर्दत्तेनाकारमात्रविकरणेन सहिना साहचर्य्यमुक्तम्।

५६। पुष, पुष्टौ। (To nourish)

पुष्, सेट्, सक, प। पुष्णाति, पुष्णीतः, पुष्णन्ति। पुष्णीयात्। पुष्णातु, पुष्णीतात्; पुष्णीताम्, पुष्णन्तु। पुषाण, पुष्णीतात्। अपुष्णात, अपुष्णीताम्, अपुष्णन्। अपोषीत्। पुपोष। पुपोषिथ। पोषिता। पुष्यात्। पोषिष्यति। अपोषिष्यत्। पुपोषिषति, पुपुषिषति। पोपुष्यते। पोपोष्टि, पोपुषीति। पोषयति,-ते। अपूपुषत्,-त इत्यादि। भ्वादौ दिवादौ,चायम्।

५७। मुष, स्तेये। (To steal)

अयं द्विकर्म्मकः इति केचित्। मुष्, सेट्, सक प। मुष्णातीत्यादि पुष्णातिवत्। मुषित्वा। मुमुषिषति—'रुद-विदमुषे'ति व्युपधत्वाद्विकल्पे प्राप्ते नित्यं कित्त्वम्। "मुषाण रत्नानि हरामराङ्गनाः।" इति माघः।

५८। खच, भूतप्रादुर्भावे। (To come forth)

भूतप्रादुर्भावोऽतिक्रान्तोत्पत्तिः, भूतिप्रादुर्भाव इति दुर्ग-सम्प्रदायिभाव इति तत्रार्थः। दुर्गमते खव इति अन्तस्था-चतुर्थान्तो धातुः।

खच, सेट, अक, प। खच्नाति। खच्नीयात्। खच्-नातु। खचान। खच्नानि। अखच्नात्। अखचीत, अखा-चीत्। चखाच। चखचिथ। चखचिव। खचिता। खच्यात्। खचिष्यति। अखचिष्यत्। चिखचिषति। चाखच्यते। चाखचीति, चाखक्ति। खाचयति,-ते। अचीखचत्,-त। खचित्वा। खचितः। खवभूतिप्रादुर्भाव इत्येक इति मैत्रेयः। खाम्यपि खच्नातीत्युक्त्वा खौनातिरिति सभ्या इति। खौनाति। खौनीयात्। खौनातु। खौनीहि। अखौनात्। चखाव, चखवतुः, चखवुः। अखावीत, अखवीत्। खवितः। खवित्वा इत्यादि। धातुपारायणे तु खव्नातीत्यादि।

५८ । ग्रह, उपादाने । ( To take )

उपादानं ग्रहणम् । ग्रह्, सेट्, सक, उ । लट्—गृह्णाति, गृह्णीतः, गृह्णन्ति । गृह्णासि, गृह्णीथः, गृह्णीथ । गृह्णामि, गृह्णीवः, गृह्णीमः । गृह्णीते, गृह्णाते, गृह्णते । गृह्णीषे, गृह्णाथे, गृह्णीध्वे । गृह्णे, गृह्णीवहे,—महे ।

लिङ्—गृह्णीयात्, गृह्णीयाताम्, गृह्णीयुः । गृह्णीयाः, गृह्णीयाताम्,—यात । गृह्णीयाम्, गृह्णीयाव,—म । गृह्णीत, गृह्णीयाताम्, गृह्णीरन् । गृह्णीथाः, गृह्णीयाथाम्, गृह्णीध्वम् । गृह्णीय, गृह्णीवहि,—महि ।

लोट्—गृह्णातु,गृह्णीतात् ; गृह्णीताम्, गृह्णन्तु । गृहाण, गृह्णीतात् ; गृह्णीतम्, गृह्णीत । गृह्णानि, गृह्णाव,—म । गृह्णीताम्, गृह्णाताम, गृह्णताम् । गृह्णीष्व, गृह्णाथाम्, गृह्णीध्वम् । गृह्णै, गृह्णावहै—महै ।

लङ्—अगृह्णात्, अगृह्णीताम्,अगृह्णन् । अगृह्णाः, अगृह्णीतम्, अगृह्णीत । अगृह्णाम्, अगृह्णीव, अगृह्णीम । अगृह्णीत, अगृह्णाताम्, अगृह्णीत । अगृह्णीथाः, अगृह्णाथाम्, अगृह्णीध्वम् । अगृह्णि, अगृह्णीवहि,—महि ।

लुङ्—अग्रहीत्, अग्रहीष्टाम्, अग्रहीषुः । अग्रहीः, अग्रहीष्टम्, अग्रहीष्ट । अग्रहीषम्, अग्रहीष्व, अग्रहीष्म । अग्रहीष्ट, अग्रहीषाताम्, अग्रहीषत । अग्रहीष्ठाः, अग्रहीषाथाम्, अग्रहीढ्वम्, अग्रहीध्वम् । अग्रहीषि, अग्रहीष्वहि, अग्रहीष्महि ।

लिट्—जग्राह, जगृहतुः, जगृहुः । जग्रहिथ, जगृहथुः, जगृह । जग्राह, जग्रह, जगृहिव,—म । जगृहे, जगृहाते, जगृहिरे । जगृहिषे, जगृहाथे, जगृहिढ्वे, जगृहिध्वे । जगृहे, जगृहिवहे,—महे ।

लुट्—ग्रहीता, ग्रहीतारौ, ग्रहीतारः इत्यादि । लृट्—

ग्रहीष्यति, ग्रहीष्यतः, ग्रहीष्यन्ति इत्यादि। ग्रहीष्यते, ग्रहीष्येते, ग्रहीष्यन्ते इत्यादि।

लृङ्—अग्रहीष्यत्, अग्रहीष्यत इत्यादि।

सनादि—जिघृक्षति, जिघृक्षते। जरीगृह्यते। जाग्राढ़ि। जरिगर्ढि, जरीगृहीतीत्यादि इति केचित्। जागृढ़ः। जरीगृढ़ इति केचित्। जाग्रहति। जाग्रक्षि। जागृह्वः। जाग्रहाञ्चकार। जाग्रहीता। जाग्रहीष्यति। जाग्राढ़ु, जागृढ़ाम्। जागृढ़ि। अजाग्रट्, अजागृढ़ाम्, अजागृहुः। अजाग्रट्। अजाग्रहम्। जागृह्यात्, जागृह्याताम्। जागृह्यास्ताम्। अजाग्रहीत्। जरीगृहीषते। जरिगृहीषाञ्चकार,—२। अजरीगृहीषीत्। णिच्—ग्राहयति,-ते। ग्राहयामास,—२। अजीग्रहत्,-त। णिच्,-सन्—जिग्राहयिषति। जिग्राहयिषामास—२। अजिग्राहयिषीत्। कर्म्मणि—गृह्यते। अगृह्यत। अग्राहि, अग्रहीषाताम्, अग्राहिषाताम्; अग्रहीषत, अग्राहिषत, अग्रहीष्ठा, अग्राहिष्ठाः; अग्राहिढ्वम्, अग्राहिध्वम्, अग्रहीध्वम्, अग्रहीढ्वम्। अग्रहीषि, अग्राहिषि; अग्राहिष्वहि, अग्रहीष्वहि। एवं महि। ग्रहीष्यते, ग्राहिष्यते इत्यादि। ग्रहीता, ग्राहिता; ग्रहीतारौ, ग्राहितारौ, ग्रहीतारः, गृाहितारः। ग्रहीतासे, ग्राहितासे। ग्रहीषीध्वम्, ग्रहीषीढ्वम्, ग्राहिषिढ्वम्, ग्राहिषीध्वम्। ग्रहीषीय, ग्राहिषीय इत्यादि स्यसिजादिषु चिण्वदिड्वा। णिच्कर्म्मणि—ग्राह्यते। अग्राह्यत। अग्राहि, अग्राहयिषाताम्, अग्राहिषाताम्, अग्राहयिषत, अग्राहिषत। ग्राहयिता, ग्राहिता। ग्राहयिष्यते, ग्राहिष्यते। ग्राहिषीढ्वम्, ग्राहिषीध्वम्, ग्राहयिषीढ्वम्, ग्राहयिषीध्वम् इत्यादि ण्यन्तेऽपि कर्मणि पूर्ववत् स्यसिजादिषु चिण्वदिड्वा।

प्रगृह्यं पदम् यस्य प्रगृह्यसंज्ञा विधीयते। गृह्यकाः—

शकुनयः, अखतन्त्रा इत्यर्थः। ग्रामगृह्या—चण्डालवाटिका, ग्रामाद्वहिर्भूतेत्यर्थः। अर्जुनगृह्यः—अर्जुनपक्षः 'पदास्वैरि-बाह्यापक्षेषु चे'ति क्यप्। बाह्या इति स्त्रीलिङ्गनिर्देशाल्लिङ्गा-न्तरे माभूदिति। तेन ग्रामग्राह्यश्चाण्डाल इत्यत्र ण्यदेव भवति। गृह्यका इत्यत्र अनुकम्पायां कन्। पाणिगृहीती 'पाणिगृहीती'ति ङीष्। ग्राहः, जलचरः। ग्रहः, सूर्य्यादिः। 'विभाषा ग्रह' इति कर्त्तरि वा णः। गृह्णात्युपादत्ते धान्या-दिकमिति गृहं गेहं। 'गेहे क' इति ग्रहेर्गेहे कर्त्तरि कः। यदायं तात्स्थ्यात्तद्वचनस्तदा स्वभावात् पुंलिङ्गो बहुवच-नान्तश्च। शक्तिं गृह्णाति—शक्तिग्रहः अच् प्रहरणे, 'शक्ति-लाङ्गल-तोमरयष्टिघट-घटीधनुःषु ग्रहेरुपसंख्यान'मित्यच्,अणो-ऽपवादः। एवं लाङ्गलग्रह इत्यादि। सूत्रं धारयतीति सूत्र-ग्रहः 'सूत्रे च धार्य्यर्थे' इति धारयत्यर्थाद्ग्रहेरच्। 'फलेग्रहि-रात्मम्भरिश्चे'ति इन्प्रत्यय उपपदस्य चैकारान्तत्वम्। उद्ग्राहः 'उदि ग्रह' इति घञ्। संग्राहो मल्लस्य अङ्गुलिसन्निवेशस्य दार्ढ्यमित्यर्थः'समि मुष्टा'विति घञ्। अपोऽपवादः। अवग्राहो हन्त ते वृषल! भूयात्। एवं निग्राहः'आक्रोशेऽवन्योर्ग्रह'इति घञ्। अन्यच—अवग्रहः पादस्य, निग्रहश्चौरस्य—'ग्रहवृह-निश्चिगमश्चे'त्यप्। पात्रप्रग्राहेण चरति भिक्षुः, लिप्सुः पात्रं गृहीत्वा चरतीत्यर्थः। 'प्रे लिप्साया'मिति घञ्। परिग्राहः वेद्याः—'परौ यज्ञे' इति घञ्। अन्यत्र परिग्रहो धनस्य, अप्। अवग्रहो देवस्य, अवग्राह इति वा 'अवे ग्रह' इत्यादिना वर्ष-प्रतिबन्धे घञपौ, वर्षस्य प्रतिबन्ध इत्यर्थः। तुलाप्रग्राहोऽश्वादेः, प्रग्राहो वा 'रश्मौ चे'ति वा घञ्। जीवग्राहं गृह्णाति 'समूलाकृतजीवेषु हन्-कृञ्-ग्रह' इति जीवशब्दे कर्मण्युपपदे ग्रहेर्णमुल्, कषादित्वादयथाविध्यनुप्रयोगः जीवन्तं गृह्णाती-

त्यर्थः। हस्तग्राहं गृह्णाति, पाणिग्राहं गृह्णाति—हस्तेन गृह्णातीत्यर्थः 'हस्ते वर्त्तिग्रहो'रिति करणवाचिनि हस्तार्थे उपपदे णमुल्। नामग्राहमाह्वयति नाम गृहीत्वा आह्वयतीत्यर्थः। 'नाम्न्यादिशिग्रहो'रिति नाम्न्युपपदे णमुल्। वासरूपेण क्त्वापीति नाम गृहीत्वेति। गृहीत्वा। प्रगृह्य इत्यादि। गृहीतः। गृहीतवान्। निगृहीतिः। ग्रहः। ग्रहणम्। ग्रहीतुम्। ग्रहीतव्यः। ग्रहणीयः। ग्राह्यः। ग्रहीता, गृहीतारौ, गृहीतारः। गृहीत्री। ग्राही। ग्राहकः। ग्राहिका। गृह्णन्। गृह्णती, स्त्री। जिघृक्षन्। जिघृक्षितः। जिघृक्षा। जिघृक्षुः। गृहीष्यमाणः। ग्राहिष्यमाणः। ग्राहयिता। ग्राहणा। ग्राहितः। ग्राहयितव्यः। ग्राहयन्। ग्राहयन्ती। जिग्राहयिषुः। जिग्राहयिषा। जिग्राहयिषितः। जिग्राहयिषितवान्। जिग्राहयिषन्। जिग्राहयिष्यमाणः। जिग्राहयिषिष्यमाणः। जरीगृहीतः। जरीगृहा। जरीगृहत्। जरीगृहीषितः। जरीगृहीषा। पाणिगृहणम्, परिणयः। गृहणम्। आ—आगृहः। अति—अतिक्रम्य गृहणम्। अनु—अनुगृहः। अव—अनादरः। नि—निगृहः, पीड़नम्। निगृहीतः। अव—अवगृहः। अभि—अपचिकीर्षा। उद्—उद्यमः, उद्गृहः। परि—परिगृहः, पत्नी, परिकरः, आदानम्, स्वीकारः। प्रति—प्रतिगृहः, स्वीकारः, लाभः। वि—विगृहः, सम्प्रहारः, व्यासः। सम्—संगृहः।

इति क्र्यादयः।

---

## अथ चुरादयः ।

१ । चुर, स्तेये । * ( To steal )

ण्यन्ताः प्रायेणोभयपदिनः, सेटश्च । चुर्, सक । लट्—चोरयति, चोरयतः, चोरयन्ति । चोरयसि, चोरयथः, चोरयथ । चोरयामि, चोरयावः, चोरयामः । फलवति कर्त्तरि आत्मनेपदम्—पा १।३।४।४ चोरयते, चोरयेते, चोरयन्ते । चोरयसे, चोरयेथे, चोरयध्वे । चोरये, चोरयावहे, चोरयामहे ।

लोट्—चोरयतु, चोरयतात्; चोरयताम्, चोरयन्तु । चोरय, चोरयतात्; चोरयतम्, चोरयत । चोरयाणि, चोरयाव,—याम । चोरयताम्, चोरयेताम्, चोरयन्ताम् इत्यादि ।

लिङ्—चोरयेत्, चोरयेताम्, चोरयेयुः । चोरयेः, चोरयेतम्, चोरयेत । चोरयेयम्, चोरयेव, चोरयेम । चोर- येत, चोरयेयाताम्, चोरयेरन् । चोरयेथाः, चोरयेयाथाम्, चोरयेध्वम् । चोरयेय, चोरयेवहि, चोरयेमहि ।

लङ्—अचोरयत्, अचोरयताम्, अचोरयन् । अचोरयः, अचोरयताम्, अचोरयत । अचोरयम्, अचोरयाव, अचोरयाम ।

---

* चुर इत्यकार उच्चारणार्थः प्रयोजनान्तराभावात् । न च तङर्थोऽनुदात्त स्यात् 'सत्यापपाशे'त्यादिना चुरादिभ्यः स्वार्थणिचो विधानात् अणिचः प्रयोगाभावात् । यत्र इदनुबन्धादिलिङ्ग' विशेषवचनं वा तत्र णिचो विभाषा । चुरप्रभृतयस्तु नित्यणिजन्ता एव । यत्तु 'जगणतुः जगणु'रिति लिङ्गवचनयोरभावेऽपि 'अत एकहलि'-त्यत्र वृत्तौ अण्यन्तस्य प्रत्युदाहरणं तदनित्यण्यन्ताश्चुरादय इति सामान्यवादिमतापेक्षया, न तु सिद्धान्तबुद्ध्या इति ।

वोपदेवमते चुर्कि स्तेये इति निर्देशात् चुरधातोर्विभाषया णिच् भवतीति । एवम्मते चोरयति, चोरतीत्यादयः प्रयोगाः । णिजभावपक्षे अविशेषोक्तौ परस्मैपदमेव । ण्यन्तेभ्यः ( इनन्तेभ्यः ) यङ् (चेक्रीयितं ) नास्तीति विशुन्यासुक्तम् । केचित्तु चेक्रीयितोत्पत्तेः प्रागिनो लोपे चोचुर्यते इत्याद्युदाहरन्तीति रमानाथः । विभाषितणिजन्तानां चेक्रीयित (यङन्त) प्रयोगा निरापत्तिकमेव भवन्तीति ।

अचोरयत, अचोरयेताम्, अचोरयन्त। अचोरयथाः, अचोरयेथाम्, अचोरयध्वम्। अचोरये, अचोरयावहि, अचोरयामहि।

लिट्—चोरयामास, चोरयाञ्चकार, चोरयाञ्चक्रे, चोरयाम्बभूव इत्यादि। लृट्—चोरयिष्यति,-ते इत्यादि। लुट्—चोरयिता इत्यादि। आशीः—चोर्य्यात्, चोर्य्यास्ताम्, चोर्य्यासुः। चोरयिषीष्ट इत्यादि। लुङ्—अचूचुरत्, अचूचुरत इत्यादि। लृङ्—अचोरयिष्यत् अचोरयिष्यत इत्यादि।

कर्मणि—चोर्य्यते। अचोरि, अचोरयिषाताम्, अचोरिषाताम्, अचोरयिषत, अचोरिषत, अचोरयिढ्वम्, अचोरयिध्वम्, अचोरिढ्वम्, अचोरिध्वम्, अचोरयिषि, अचोरिषि इत्यादि। चुचोरयिषति,-ते। चोरयन्, चोरयन्ती, चोरयत्। चोरयित्वा। प्रचोर्य्य। चोरितः। चोरितवान्। चोरणा। चोरयितुम्। पचाद्यच्—चोरः, प्रज्ञादित्वात् स्वार्थे अण्—चौरः। चुरादिपाठात् अ—चुरा। चुरा शीलमस्याः चौरी 'छत्रादिभ्यो णः' इति णेऽपि क्वचिदण् कृतमिति ङीप्।

२। चिति स्मृत्याम्। * ( To remember )

चिन्त् (इ) सक, वा णिच्, उ। चिन्तयति, चिन्तयतः, चिन्तयन्ति। चिन्तयतु,-तात्। चिन्तय,-तात्। चिन्तयेत्। अचिन्तयत्। चिन्तयामास—२। लुङ्—अचिचिन्तत्। चिन्तयिता। चिन्तयिष्यति। चिन्त्यात्। अचिन्तयिष्यत्। चिचिन्तयिषति। चिन्त्यते। अचिन्ति। चिन्तयित्वा।

---

* चिन्त स्मृत्यामिति सानुषङ्ग एव पठितव्ये इदित्पाठात् नलोपाभावार्थात् अस्य णिच् पाक्षिकः। नित्ये हि णिचि तस्य स्थानिवद्भावात् न क्वापि कित्परत्वमिति चिन्त इत्यादि नलोपाप्रसङ्गः। तेन चिन्तति चिचिन्त इत्यादयोऽपि प्रयोगाः। एवमन्यत्रापि इदित्वं णिज्विकल्पार्थं द्रष्टव्यम्। णिच्पक्षे उभयपदम्, अणिच्पक्षे परस्मैपदमिति विशेषविधानाभावे सर्वत्र ज्ञातव्यम्।

विचिन्त्य । चिन्तयितुम् । चिन्तितः । चिन्तितवान् । चिन्तकः । चिन्तनम् । चिन्ता—अङ् । अङि णिलोपाभावे चिन्तिया इत्यपि क्वचित् इति मैत्रेयः । एवं चिन्तयते इत्यादि । पक्षे प—चिन्तति इत्यादि । चिन्तिता । चिन्तिष्यति । अचिन्तीत् । चिचिन्त । चिचिन्तिषति । चेचिन्त्यते । चेचिन्ति, चेचिन्तीति । चिन्तित्वा । संचिन्त्य । चिन्तितुम् । चिन्तन् । चिन्तकः । चेततीति अपि संज्ञाने । चेतयत इत्याकुस्मीयः ।

३ । यत्रि, संकोचने । ( To restrain )

यन्त्र् ( इ वा णिच् ) सक, उ, अणिजन्त प । यन्त्रयति,-ते । यन्त्रयाञ्चकार,-चक्रे इत्यादि । यन्त्रयिता । यन्त्रयिष्यति,-ते । अयन्त्रत्,-त । यन्त्र्यात्,-यन्त्रयिषीष्ट । यियन्त्रयिषति,-ते । यन्त्र्यते । अयन्त्रि । यन्त्रितः । यन्त्रयित्वा । नियन्त्र्य । यन्त्रयितुम् । यन्त्रः । यन्त्रणा । अत्रापि पूर्ववत् इदित्करणात् यन्त्रतीत्याद्यपि भवति । *

४ । स्फुडि, परिहासे । ( To jest )

स्फुण्ड ( इ, वा णिच् पूर्ववत् उ, प ) सक । स्फुण्डयति,-ते । अपुस्फुण्डत्,-त । स्फुण्डयिता । पुस्फुण्डयिषति,-ते । पक्षे स्फुण्डतीत्यादि । केचित् स्फुटि परिहासे इति ।

५ । लक्ष, दर्शनाङ्कयोः । ( To observe, to mark )

लक्ष, सक, उ । लक्षयति,-ते । लक्षयतु,-ताम्, लक्षयेत्,-त, अलक्षयत्,-त । लक्षयिता । लक्षयिष्यति,-ते । लक्ष्यात्, लक्षयिषीष्ट । अललक्षत्,-त । लक्षयाञ्चकार,-चक्रे इत्यादि ।

---

* भवाभरणे 'यन्त्' इति पटित्वा 'रकारो नागमोऽपी'ति विशेषणार्थं इत्युक्तम् । अयं पाठश्चिरन्तनव्याख्यानेषु न दृश्यते, प्रत्युत यन्त्रणादिशब्दमवादेव. मैत्रेयादयो व्युत्पादयन् इति । तृतीयस्वरानुबन्धश्चिन्त्यः यन्त्र इत्यनेनैव अभिमतसिद्धेः । स्वरार्थ इति परः । अन्तस्थादिरयमिति रमानाथः ।

लिलक्षयिषति,-ते। लक्ष्यते। अलक्षि। लक्षयित्वा। विलक्ष्य। लक्षितः। लक्षणा। लक्षयितुम्। लिलक्षयिषुः। लक्षयन्। लक्षकः। लक्षणः। लक्ष्मीः 'लक्षेर्मुट् चे'ति ईकारप्रत्ययो मुडागमश्च। लक्ष्मीवान्। लक्ष्मणः 'लक्ष्म्या अच्चे'ति मत्वर्थीयो नकारप्रत्ययः ईकारस्य चाकारः। लक्षणम्। लक्षः। लक्ष्यम्। लक्षणमधीते वेद वा लाक्षिकः, लाक्षणिकोऽप्येवम्। 'उक्थादौ लक्ष्यलक्षणे'ति पाठात् ठक्। 'श्रम लक्षे'त्यग्रे।

६। कुद्रि, अनृतभाषणे। (To tell a lie)

कुन्द्र, (इ, वा णिच्) उ, अणिच्-प, अक। कुन्द्रयति,-ते। कुन्द्रयाञ्चकार,-चक्रे—२। अचुकुन्द्रत्,-त। चुकुन्द्रयिषति,-ते। पक्षे कुन्द्रति इत्यादि। अत्र स्वामी ऋदिदित्येक इति ऋदित् फलम्—अचुकोदत् इत्यादौ ह्रस्वनिवृत्तिः।

७। लड़, उपसेवायाम्। (To fondle)

लड़्, सेट्, सक, उ। लाड़यति,-ते। लाड़याञ्चकार,-चक्रे। लाड़यिता। लाड़यिष्यति,-ते। अलीलड़त्,-त। लाड्यात्। लाड़यिषीष्ट। लिलाड़यिष्यति,-ते। लाड्यते। अलाड़ि। लाड़ितः। लाड़यित्वा। लाड़यितुम्।

८। मिदि, स्नेहने। (To love)

मिन्द् (इ, वा णिच्) अक। मिन्दयति,-ते। अमिन्दयत्,-त। मिन्दयाञ्चकार,-चक्रे। अमिमिन्दत्,-त। मिन्दयिता। मिन्द्यात्, मिन्दयिषीष्ट। मिमिन्दयिषति। मिन्दयित्वा। प्रमिन्द्य। अणिच् पक्षे, प—मिन्दति। मिमिन्द। अमिन्दीत्। मिन्दिता। मिन्द्यते। अमिन्दि। स्नेहने मेदते, मेद्यतीति शप्श्यनोः। ऋदितोऽपि शपि मेधाहिंसनयोः मेदते।

९। ओलड़ि, उत्क्षेपणे। (To throw)

ओलण्ड् (इ, वा णिच्) सक। ओलण्डयति,-ते। ओल-

खड़याञ्चकार,-चक्रे। औलिलखड़त्,-त। अणिच्पक्षे प—ओलखड़ति। ओलखड़ीत्। केचिदोदितं पठन्ति, लखड़यति।

१०। जल, अपवारणे। ( To cover )

जल, सक, उ। जालयति,-तें। जालयिष्यति,-ते। जालयाञ्चकार,-चक्रे। अजीजलत्,-त। जालिता। जालित:।
जालयित्वा। नन्दिसम्मताकारौ लज इति विपरीतं पठत:।

११। पीड़, अवगाहने। ( To squeeze )

पीड़, सक, उ। पीड़यति,-तें। अपिपीड़त्,-त। अपीपिड़त्,-त। 'भ्राजी'त्यादिना उपधाह्रस्वविकल्प:। पीड़ा—भिदादिपाठादङ्। पाणावुपपीड़ं धारयति, पाण्युपपीड़ं पाणिनोपपीड़मिति वा। 'सप्तम्यां चोपपीड़े'ति णमुल्। 'धनुररिभिरसह्यं मुष्टिपीड़ं दधाने' इति वदन् भट्टिकार उपोपसर्गग्रहणमतन्त्रं मन्यते।

१२। नट, अवस्यन्दने। ( To act )

अवस्यन्दनं नाट्यम्। नट नाट्ये इति चन्द्र: पठति। नट भाषायामिति केचित्। नाटयति,-ते। अनीनटत्,-त। नाटयाञ्चकार,-चक्रे। नाटयित्वा। प्रनाट्य।

१३। श्रथ, प्रयत्ने। ( To try, to labour)

प्रस्थान इति मैत्रेय:। अति हर्षे इति बहव:। श्रथ, सक, उ। श्राथयति,-ते। अशिश्रथत्,-त। * श्राथयाञ्चकार,-चक्रे। श्राथ्यात्,—श्राथयिषीष्ट।

१४। बध, संयमने। ( To bind )

बध, सक, उ। बाधयति,-ते। बाधयाञ्चकार,-चक्रे। बाधयिष्यति,-ते। अबीबधत्,-त। बाध्यात्, बाधयिषीष्ट। बिबा-

* क्रथिमपि केचिदत्र पठन्ति। स मैत्रेयादौ न दृश्यते तथा। क्रथश्रथौ हिंसायां—क्राथयेत् क्रथयते क्रथते इति घटादौ च पठता देवेनापि न पठित:।

धयिषति-ते । बाध्यते । अबाधि । बाधितः । बाधयित्वा । प्रबाध्य । बाधयितुम् । बधस्थाने 'बन्ध' इति चान्द्रः । बन्ध इति क्र्यादौ । बध इति भ्वादौ वैरूप्ये नित्यसनन्तः—बीभत्सते ।

१५ । पॄ, पूरणे । ( To fill )

पॄ. सक, उ । दीर्घोच्चारणसामर्थ्यात् पक्षे णिच् वेति । पारयति,-ते । परति । पारयाञ्चकार,-चक्रे, पपार । अणिच्पक्षे —अतुसि, उसि—पपरतुः पप्रतुः ; पपरुः, पप्रुः । पारयिता, परीता, परिता । पारयिष्यति,-ते । परीष्यति, परिष्यति । अपीपरत्,-त । अपारीत् । पार्य्यात्-,पारयिषीष्ट ; पूर्य्यात् । पिपारयिषति, पिपरीषति, पिपरिषति, पुपूर्षति । पारितः, पूर्णः, पूर्त्तः । पारयित्वा, पूर्त्त्वा । परीतुम्, परितुम् । पारयितुम् । प्रपार्य्य । प्रपूर्य्य ।

१६ । ऊर्ज्ज, बलप्राणनयोः । ( To be strong, to live )

बल प्राणधारणे इति बलप्राणनयोर्धारणं तत्रेति । दीर्घादिरयम् । ऊर्ज्जयति धनी जीवलोके इति रमानाथः । प्राणनं जीवनमिति माधवीया ।

ऊर्ज्ज, अक । ऊर्ज्जयति,-ते । ऊर्ज्जयाञ्चकार,-चक्रे । और्ज्जिजत्,-त । ऊर्ज्जयिता । ऊर्ज्ज्यात्, ऊर्ज्जयिषीष्ट । ऊर्ज्जिजयिषति । ऊर्ज्जयित्वा, प्रोर्ज्ज्य । ऊर्ज्जितः ।

१७ । पक्ष, परिग्रहे । ( To seige )

पक्ष, सक, उ । पक्षयति,-ते । अपपक्षत्,-त । पक्षयाञ्चकार,-चक्रे । पक्षयिता । पक्ष्यात्,-पक्षयिषीष्ट । पिपक्षयिषति-ते । पक्षयित्वा । पक्षितः । पक्षः । विपक्षः ।

१८ । वर्ण, चूर्ण, प्रेरणे । ( To drive )

एवं मैत्रेयः । अन्ये तु'वर्ण वर्णने-चूर्ण प्रेरणे'इति वर्णयन्ति । वर्ण, सक, उ । वर्णयति,-ते । वर्णयाञ्चकार,-चक्रे ।

वर्णयिता। वर्णयिष्यति,-ते। विवर्णयिषति,-ते। अववर्णयत्,-त। वर्णयित्वा। प्रवर्ण्य। वर्णितः। चूर्ण—चूर्णयति,-ते। चूर्णयिता। अचुचूर्णत्,-त। चुचूर्णयिषति,-ते। चूर्णयित्वा। प्रचूर्ण्य। चूर्णितः। चूर्णयितुम्। चूर्णः। *

१९। प्रथ, प्रख्याने। ( To become famous )

प्रथ, सक, उ। प्राथयति,-ते। † प्राथयाञ्चकार,-चक्रे। प्राथयिष्यति,-ते। अपप्रथत्,-त। प्राथ्यात्, प्राथयिषीष्ट। पिप्राथयिषति,-ते। प्राथ्यते। अप्राथि। प्राथितः। प्राथयित्वा। संप्राथ्य।

२०। पृथ, प्रक्षेपे। ( To throw )

पृथ, सेट, सक, उ। पार्थयति,-ते। पार्थयाञ्चकार,-चक्रे। पर्थयिष्यति,-ते। अपपर्थत्,-त, अपीपृथत्,-त। पर्थ्यात्, पर्थयिषीष्ट। पिपर्थयिषति। पर्थयित्वा। संपृथ्य। पर्थितः।

२१। षम्ब, सम्बन्धने। ( To collect )

सम्ब, सक, उ। सम्बयति,-ते। सम्बयाञ्चकार,-चक्रे। सम्बयिष्यति,-ते। अससम्बत्-त। सिसम्बयिषति। सम्बयित्वा। सम्बितः। स्वामिमैत्रेयमते तालव्यादिरयं—शम्बयति। शम्बरं—बाहुलकादरः। साम्ब इति केचित् दीर्घवन्तं दन्त्यादिं च पठन्ति।

२२। भक्ष, अदने। ( To eat )

भक्ष, सेट, सक, उ। भक्षयति,-ते। भक्षयिष्यति,-ते। भक्षयाञ्चकार,-चक्रे। अबभक्षत्,-त। बिभक्षयिषति,-ते।

---

* वर्णं गृह्णाति वर्णयति, चूर्णैरवध्वंसयति अवचूर्णयति 'सत्यापपाशे'त्यादिना वर्णचूर्णाभ्यां प्रातिपदिकाभ्यां ग्रहणावध्वंसनयोर्णिच्।

† 'अत्स्मृदृत्वरप्रथे'त्यभ्यासस्याकारः, 'नान्ये मितो हिता'विति सम्भवद हेतुमण्णिचां चुरादिणिचि मित्वाभावात् प्रथ प्रख्यान इति घटादित्वात् मित्वमस्य न भवति।

भक्ष्यते। अबभक्षि। भक्षयित्वा। संभक्ष्य। भक्षितः।*

२३। कुट्ट, छेदनभर्त्सनयोः। ( To cut, to censure )

एवमेव बहवः। छेदनपूरणयोरिति स्वामी। छेदन इत्येवं जिनेन्द्रदुर्गौ।

कुट्ट, सक, उ। कुट्टयति,-ते। कुट्टयाञ्चकार,-चक्रे। कुट्टयिष्यति,-ते। कुट्टयित्वा। संकुट्ट्य। कुट्टितः। कुट्टाकः— 'जल्पभिक्षकुट्ट'ेति षाकण्। षित्वात् स्त्रियां कुट्टाकी। कुट्टनम्। कुट्टः। कुट्टेन निर्वृत्तं कुट्टिमं 'भावप्रत्ययान्तात् इमब् वक्तव्यः' इति, तेन निर्वृत्तमिति विषये इमप्।

२४। पुट्ट, चुट्ट, अल्पीभावे। ( To decrease )

पुट्ट, चुट्ट, अक्र, उ। पुट्टयति,-ते। पुट्टयिषति,-ते। पुट्टयाञ्चकार,-चक्रे। अपुपुट्टत्,-त। पुट्टयित्वा, संपुट्ट्य। पुट्टितः। एवं चुट्टयति,-ते। अचुचुट्टत्,-त इत्यादि।

२५। अट्ट, सुट्ट अनादरे। ( To contemn )

अट्ट, सुट्ट, सक, उ। अट्टयति,-ते। अट्टयिष्यति,-ते। अट्टयाञ्चकार,-चक्रे। आट्टिटत्,-त। दोपधोऽयम्। अट्टितः। अट्टयित्वा प्राट्ट्य। सुट्ट—सुट्टयति,-ते। असुसुट्टत्,-त। सुसुट्टयिषति,-ते।

२६। लुण्ठ, स्तेये। ( To steal )

लुण्ठ, सक, उ। लुण्ठयति,-ते। अलुलुण्ठत्,-त। लुण्ठयाञ्चकार,-चक्रे। लुण्ठितः। संलुण्ठ्य। षाकण्—लुण्ठाकः †।

* भक्षयति पिण्डं देवदत्तः। अतो हेतुमण्णिचि भक्षयति पिण्डं देवदत्तेनेति 'गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थे'ति प्रयोज्यस्य कर्मत्वं भक्षेरहिंसार्थस्येति वार्त्तिकेन निषिध्यते। अत गतिबुद्धीत्यादौ चाणिग्रहणेन हेतुमण्णिचो निषेधः।

† ननु लुण्ठतेरिदित्पाठेनापि लुण्ठयति लुण्ठतीति रूपद्वयं सिध्यति किं भ्वादौदित्पाठेन? सत्यं सिध्यतीदं रूपद्वयं लुण्ठितेति ताच्छीलिकस्तृन्न स्यात् 'जल्पभिक्षे'त्यादिना षाकणा बाधात्। लुठिपाठे तु प्रतिपदोक्तत्वादस्यैव तत्र ग्रहणमिति औणादिकात् तृनि लुण्ठितेति भवतीति उभयत्र पाठः कर्त्तव्यः।

२७। शठ, श्वठ, असंस्कारगत्योः। ( To go, &c. )

शठ्, श्वठ्, सक, उ। शाठयति,-ते। अशीशठत्,-त। शिशाठयिषति। शाठयित्वा। प्रशाठ्य। शाठितः। एवं श्वाठयतीत्यादि। लुङि—अशश्वठत्,-त। श्लाघायां शाठयत इत्याङ्कुस्मीयः। शठयति श्वठयतीति कथादौ। कैतवे शठतीति अपि गतम्। इदित् श्वण्ठ इति दुर्गः। मैत्रेयोऽपि श्वठीत्येक इति। श्वण्ठयति,-ते। अशश्वण्ठत्,-त। श्वण्ठ्यते। श्वठति। अश्वाठीत्।

२८। तुजि, पिजि, हिंसादाननिकेतनेषु।

(To kill, (to be strong,) to take, to dwell )

तुञ्ज् ( इ-तुन्ज ) पिञ्ज् ( इ—पिन्ज ) सक, उ। णिच् वा, अणिच्पक्षे प। तुञ्जयति-ते। तुञ्जयाञ्चकार,—चक्रे। अतुतुञ्जत्,—त। तुञ्जयिष्यति,-ते। तुतुञ्जयिषति,-ते। तुञ्जयित्वा। तुञ्जितः। एवं पिञ्जयति,-ते। अपिपिञ्जत्,—त, इत्यादि। इत्करणात् अणिच्पक्षे—तुञ्जति। तुतुञ्ज। अतुञ्जीत्। तुञ्जयिता। एवं पिञ्जति। पिपिञ्ज। अपिञ्जीत् इत्यादि। *

२९। पिस, गतौ। ( To go )

पिस्, सक, उ। पेसयति,-ते। पेसयिता। पेसयाञ्चकार,—चक्रे। लुङ्—अपीपिसत्,-त। पिपेसयिषति,-ते। पेस्यते। अपेसि। पेसयित्वा। पेसितः।

---

* 'तुजि हिंसायां तुजि पालने चे'ति भ्वादिपाठादेव हिंसायां तुञ्जतीत्यादिसिद्धाविदित्त्वेन णिजनित्यत्व' वलादाननिकेतनयोरपि तुञ्जतीति रूपसिद्धये, एवं तर्हि अनेनैव सिद्धौ भ्वादिपाठः किमर्थं इति चेत् पालने तुञ्जतीत्यर्थः। तुञ्जयति, पिञ्जयतीति भाषार्थावये भविष्यतः। शाकटायनस्तु 'पिजे'ति पपाठ। पिज वर्णे इत्यदादौ। इह लजि लुजि इत्यपि क्वचित् दृश्यते। तौ मैत्रेयादिभिर्न पठ्येते।

३०। षान्त्व, सामप्रयोगे। ( To appease )

सान्त्व्, सक, उ। सान्त्वयति,-ते। सान्त्वयाञ्चकार,-चक्रे। सान्त्वयिष्यति,-ते। अससान्त्वत्,-त। सान्त्व्यात्, सान्त्वयिषीष्ट। सिषान्त्वयिषति,-ते। सान्त्वयित्वा। उपसान्त्व्य। सान्त्वितः।

३१। श्वल्क, वल्क, परिभाषणे। ( To tell )

श्वल्क्, वल्क्, ( कुत्सितभाषण ) सक, सेट्, उ। श्वल्कयति,-ते। श्वल्कयिष्यति,-ते। अशश्वल्कत्,-त। शिश्वल्कयिषति,-ते। श्वल्कितः। श्वल्कयित्वा। एवं वल्कयतीत्यादि।

३२। ष्णिह, स्नेहने। ( To love, to oil )

स्निह्, सक, उ। स्नेहयति,-ते। असिष्णिहत्,-त। सिष्णेहयिषति,-ते। स्नेहितः। स्नेहयित्वा। उपस्नेह्य। स्निह्यतीति प्रीतौ दिवादिः। अत्र स्फिट इत्येके।

३३। स्मिट, अनादरे। ( To slight, to disregard)

स्मिट्, सेट्, सक, उ। स्मेटयति,-ते। असिस्मेटत्,-त। सिस्मेटयिषति,-ते। स्मेटितः। स्मेटयित्वा। प्रस्मेट्य।

अत्र 'स्मिङ्' इत्येक इति आत्रेयः। स्माययते। 'अवयवे कृतं लिङ्ग'मिति न्यायेन ण्यन्तस्य ङित्वादात्मनेपदम्। आत्वं स्मयतेरिति निर्देशात् हेतुमण्णौ विधानाच्च नास्य भवति। स्मयत इति ईषद्धासे अपि।

३४। श्लिष, श्लेषणे। To embrass)

श्लिष्, सक, उ। श्लेषयति,-ते। श्लेषयाञ्चकार,—चक्रे। श्लेषयिष्यति,-ते। अशिश्लिषत्,- त। अश्लेषयिषति,-ते। श्लेषयित्वा। संश्लेष्य। श्लेषितः। श्लेषतीति दाहे अपि। श्लिष्यतीति आलिङ्गने अपि।

३५। पथि, गतौ। ( To go )

पन्थ् ( इ, वा णिच्, ) उ, सक। पन्थयति,-ते। पन्थया-

ञ्चकार,—चक्रे । अपपन्थत्,-त । पन्थयिष्यति,-ते । पिपन्थयिषति,-ते । पन्थयित्वा । प्रपन्थ्य । पन्थितः । अणिच् पक्षे प—पन्थति । अपन्थीत् । पपन्थ । पिपन्थिषति । पन्थित्वा । पन्थितः । पथतीति पथे गतावित्यस्य शपि ।

### ३६ । पिच्छ, कुट्टने । ( To split )

पिच्छ, सक, उ । पिच्छयति,-ते । अपिपिच्छत्,-त । पिच्छयाञ्चकार,-चक्रे । पिपिच्छयिषति,-ते । पिच्छयित्वा । आपिच्छ्य । पिच्छितः ।

### ३७ । छदि, संवरणे । ( To cover )

छन्द् ( इ, वा णिच् ) सक, उ । छन्दयति । छन्दयाञ्चकार,—चक्रे । छन्दयिष्यति,-ते । अचच्छन्दत्,-त । चिच्छन्दयिषति,-ते । छन्दयित्वा, प्रच्छन्द्य । छन्दितः । पक्षे प—छन्दति । चच्छन्द । अच्छन्दीत् । छन्दित्वा । *

### ३८ । श्रण, दाने । ( To give )

प्रायेणायं विपूर्वः । श्रण् (उ) सक, उ । विश्राणयति,—ते । व्यशिश्रणत्,-त । व्यशश्रणत्,-त । विश्राणयते । व्यश्राणि । विश्राण्य । श्राणितः । घटादिस्तु श्रणति, श्रणयतीत्यादि ।

### ३९ । तड़, आघाते । ( To beat )

तड़्, सक, उ । ताड़यति ;—ते । अतीतड़त्,-त । ताड़यिष्यति,-ते । ताड़यित्वा । संताड्य । ताड़ितः । ताड़यितुम् । ताड़ना । ताड़नम् ।

---

* स्वाम्यादयश्छदेत्यनिदितं पठित्वा छादयतीत्युदाजह्रुः । तदा छादयति इति रूपस्य छद अपवारणे इत्याधृषीयेणैव सिद्धत्वादिह पाठो व्यर्थः स्यात्, इदित्वाभावे छन्दःशब्दोऽपि न स्यादिति मैत्रेयाद्युक्त इदित्पाठ एव न्याय्यः । अतएव न्यासपदमञ्जर्यादौ छद अपवारणे इत्यस्मादेव उरश्छदादि व्युत्पादितम् ।

४०। खड़, खड़ि, कड़ि, भेदे।

(To break in pieces)

खड़्, खण्ड्, कण्ड् (इ, वा णिच्) सक, उ। खाड़यति,-ते। अचीखड़त्,-त। चिखाड़यिषति,-ते। खण्डयति,-ते। अचखण्डत्,-त। कण्डयति,-ते। अचकण्डत्-त। पक्षे प—खण्डति। चखण्ड। अखण्डीत्। खण्डित्वा, प्रखण्ड्य। खण्डितः। कण्डति। चकण्ड। अकण्डीत् इत्यादि। खण्डतीति मन्थने अपि, तथा कण्ठत इति वेदे।

४१। कुड़ि, रक्षणे। (To protect)

कुण्ड्, (इ, वा णिच्) उ, सक। कुण्डयति,—ते। अचुकुण्डत्,-त। पक्षे प—कुण्डति। चुकुण्ड। अकुण्डीत्।

४२। गुड़ि, वेष्टने। (To surround)

गुण्ड् (इ, वा णिच्) सक, उ। गुण्डयति,-ते। अजुगुण्डत्,-त। जुगुण्डयिषति,-ते। अन्ये प—गुण्डति। जुगुण्ड। अगुण्डीत्। जुगुण्डयिषति। रक्षण इत्येके। प्रथमादिं द्वितीयान्तमेके पठन्ति। अवकुण्ठयति,-ते। अवकुण्ठति।

४३। खुड़ि, खण्डने। (To break in pieces)

खुण्ड् (इ, वा णिच्) सक, उ। खुण्डयति,-ते। खुण्डयाञ्चकार,—चक्रे। २। खुण्ड्यात्। खुण्डयिषीष्ट। अचुखुण्डत्,-त। चुखुण्डयिषति। खुण्डितः। खुण्डयित्वा। प्रखुण्ड्य। अणिच् पक्षे प—खुण्डति। अखुण्डीत्। चुखुण्ड।

४४। वटि, विभाजने। (To divide)

वड़ीति शाकटायनः। वण्ट्, [वण्ड] (इ, वा णिच्) सक, उ। वण्टयति,-ते। अववण्टत्-त। विवण्टयि-

षति,-ते । वण्टितः । वण्टयित्वा । संवण्ट्य । अणिच्पक्षे प—वण्टतीत्यादि, भौवादिकवत् । *

४५ । मड़ि, भूषायां हर्षे च । ( To adorn, to rejoice )

मड़ि (इ) सक, उ । मण्डयति,-ते । अममण्डत्,-त । मिमण्डयिषति । मण्डितः । मण्डयित्वा । संमण्ड्य । पक्षे—मण्डतीत्यादि पूर्ववत् । मण्डते इति वेष्टने । मड़ि भूषायामिति भ्वादौ पाठादेव मण्डतीति सिद्धेरस्येदित्त्वं नुम्मात्रार्थं, न तु णिज्विकल्पार्थम्, तेन हर्षे मण्डतीति न भवति ।

४६ । भड़ि, कल्याणे । ( To be fortunate )

भण्ड् (इ वा णिच्) अक, उ । भण्डयति,-ते । अबभण्डत्,-त । बिभण्डयिषति,-ते । भण्डति । परिभाषणे भण्डते ।

४७ । छर्द, वमने । ( To vomit )

छर्द्, अक, उ । छर्दयति, । अचच्छर्दत्-त ।

४८ । पुस्त, बुस्त, आदरानादरयोः । ( To honour, to disrespect )

पुस्त्, बुस्त, सक, उ । पुस्तयति,-ते । अपुपुस्तत्,-त । पुस्तकम् । बुस्तयति । बुस्तम् ।

४९ । चुद, सञ्चोदने । ( To drive )

सञ्चोदनं प्रश्नः, प्रेरणा च । तत्र प्रश्ने द्विकर्मकत्वम् । देवदत्तमर्थं चोदयति । चुद्, सक, उ । चोदयति,-ते । चोदया-

---

* अत्र मैत्रेयो भौवादिकस्य विभाजनार्थस्य वटेर्ङ्तुमस्वौ वण्टयतीति सिद्धे चुरादौ पाठः कर्त्रभिप्रायेऽपि परस्मैपदार्थः, अतो 'णिचश्चे'ति तङ् चुरादिष्वनस्य नेति मन्यते । अन्ये तु 'णिचश्चे'ति तत्रापीष्यत इति नेदं प्रयोजनं, किन्तु चिन्तीत्यादिवदिदित्ववशाण्णिचो विकल्पो नेति, विभाजने तु तेनैव वण्टतीति सिद्धमिति । ये तु भ्वादावपि विभाजन इति पठन्ति, तेषान्तु नैवास्य चोद्यस्यावतारः ।

ञ्चकार,—चक्रे। चोदयिता। चोद्यात्, चोदयिषीष्ट। अचूचुदत्,-त। चुचोदयिषति,-ते। चोदयित्वा। संचोद्य। चोदितः। चोदयितुम्। चोदना। चूडा—अङ् डलं दीर्घत्वञ्च। चूडालः—"प्राणिस्था'दित्यादिना लच् मत्वर्थे। चूडा नाम काचित्, तस्या अपत्य' चौडिः—'वाह्वादिभ्य'श्चेतीञ्।

५०। नक्क, धक्क, नाशने[व्यथने]। (To perish)

नक्क्, धक्क्, सक, प। अयं तवर्गीयपञ्चमादिः। नक्कयति, —ते। अननक्कत्,—त। धक्कयति,-ते। अदधक्कत्,-त।

५१। चक्क, चुक्क, व्यथने। (To suffer pain)

चक्क्, चुक्क्, सक, उ, सेट्। चक्कयति,—ते। चुक्कयति,-ते। अचुचुक्कत्,—त। चिक्केत्यपि क्वचित् पठ्यते।

५२। क्षल, शौचकर्म्मणि। (To wash)

क्षल, सक, प। क्षालयति,—ते। अचक्षलत्,—त। चिक्षालयिषति,-ते। क्षालयित्वा, प्रक्षाल्य। क्षालितः। क्षालनम्।

५३। तल, प्रतिष्ठायाम्। (To be full or complete)

तल्, अक, उ। तालयति,—ते। अतीतलत्—त। तालयाञ्चकार,—चक्रे। तितालयिषति,—ते। तालयित्वा। तालितः। तालः। तलम्—अच्, संज्ञापूर्वकत्वात् वृद्ध्यभावः।

५४। तुल, उन्माने। (To weigh)

तुल, सक, उ। तोलयति,—ते। अतूतुलत्,—त। तोलिता। तोलयाञ्चकार,—चक्रे। तुतोलयिषति,-ते। तोलयित्वा। उत्तोल्य। तोलितः। तुलेति णिचोऽनित्यत्वादिति मैत्रेयः। अन्ये तु णिजभावे प्रमाणाभावात् 'तुल्यार्थै'रित्यादौ तुलेति। निपातनादङि णिलुकि तुलेति। तुलयति, अतुतुलदिति तुलाशब्दात् 'प्रातिपदिकाद्धात्वर्थे बहुलमिष्ठ'

वञ्चे'ति णिचि'दीर्घो लघो'रिति णौ चङ्यभ्यासस्य दीर्घत्वमग्-लोपित्वात् (समानलोपत्वात्) न भवति। तुला क्रष्णस्य नास्ति'तुल्यार्थै'रिति विधीयमाना तृतीया तत्रै व'अतुलोपमाभ्या' मिति वचनान्न भवति। तुल्यश्चेतः 'कृत्यतुल्याख्या अजात्या' इति समानाधिकरणसमासः। अयञ्च पूर्वनिपातबाधनार्थः। तथा तुल्यमहानित्यत्र 'सन्महा'दिति महच्छब्दस्य प्राप्तपूर्व-निपातबाधार्थः। तुलया सम्मितं—तुल्यम्,—यत्। सम्मित-मिति व्युत्पत्तिमात्रं रूढ़शब्दश्चायं सदृशपर्य्यायः। क्रष्णस्य तुल्यः, क्रष्णेन वा 'तुल्यार्थै'रिति षष्ठीतृतीये।

५५। दुल, उत्क्षेपे। ( To shake to and fro )

दुल्, सक, उ। दोलयति,—ते। अदूदुलत्,—त। दोला-यित्वा। दोलितः। दोला—भिदादेराकृतिगणत्वात् अङ्। दुलिः कमठः—इः निपातः।

५६। पुल, महत्त्वे। ( To be great or large )

पुल्, अक, उ। पोलयति,—ते। पोलयाञ्चकार,—चक्रे। अपूपुलत्। स्वामिमते भौवादिकोऽयम्। विपुलम् निपातः।

५७। चुल, समुच्छ्राये। ( To raise )

चुल्, अक, उ। चोलयति,—ते। अचूचुलत्,—त। चोलः अण्। चोलस्यापत्यमपि—चोलः, अण्, 'कम्बोजादिभ्य' इत्यादिना अणो लुक्। निचोलः—घञ्, प्रच्छदपटः।

५८। मूल, रोहणे। ( To cause )

मूल्, सक, उ। मूलयति,-ते। अमूमुलत्,—त। मूलतीति प्रतिष्ठायाम्।

५९। कल, विल, क्षेपे। ( To throw )

कल्, विल्, सक, उ। कालयति,—ते। अचीकलत्,—त। कालयिता। कालः। वेलयति,—ते। अवीविलत्,-त।

वेला—अङ्। कलयतीति गतिसंख्यानयोः कथादौ भविष्यति। कलत इति शब्दसंख्यानयोः। वेलते इति वेलिरपि चलने। विलतीति संवरणे। क्वचित् किलेत्यप्यत्र तत् पठ्यते, मैत्रेयादीनामसम्मतम्। शैत्यक्रीड़नयोः किलतीति तुदादौ।

६०। बिल, भेदने। ( To break )

बिल, सक, उ। बेलयति,—ते। बेलतीति शपो-त्यात्रेयः।

६१। तिल, स्नेहने। ( To oil )

तिल्, अक, उ। तेलयति,—ते। अतीतिलत्,—त। तेलयिता। तिलः। तेलतीति गतौ अपि। तिलतीति तुदादौ।

६२। चल, भृतौ। ( To foster )

चल्, सक, उ। चालयति,—ते। चालयिता। अचीचलत्। चालितः। चालयित्वा। चलतीति विकसन-कम्पनयोः।

६३। पल, रक्षणे। ( To protect )

पल्, सक, उ। पालयति,—ते। अपीपलत्,—त। पालयाञ्चकार, चक्रे। पिपालयिषति,—ते। पालितः, पालयित्वा। पालनम्। पालयितुम्। पातेरपि हेतुमण्णौ 'पातेर्लुग्वक्तव्य' इति लुगागमे पालयतीत्यादि।

६४। लूष, हिंसायाम्। ( To kill )

लूष्, सक, उ। लूषयति,-ते। अलूलुषत्—त। लूषयिता।

६५। शुल्ब, माने। ( To weigh )

शुल्ब, सक, उ। शुल्बयति। अशुशुल्बत्। 'शूर्प माने' इति श्रीभद्रमैत्रेयादयः। शूर्पयति। शूर्पा—अच्। शूर्पेण क्रीतं—शौर्पं, शौर्पिकः। द्वाभ्यां शूर्पाभ्यां क्रीतं—द्विशूर्पम्।

६६। चुट, छेदने। ( To cut )

चुट्, सक, उ। चोटयति,—ते। अचूचुटत्। चुटति श्री।

६७। मुट, संचूर्णने। ( To crush )

मुट्, सक, उ। मोटयति,-ते। अमूमुटत्। मोटतीति मर्द्दने। मुटतीति प्रमर्द्दनाक्षेपयोः।

६८। पडि, पसि, नाशने। ( Te destroy )

पण्ड्, पन्स् ( इ, वा णिच ) सक, उ। पण्डयति,-ते। अपपण्डत्,-त। पक्षे प-पण्डति। अपण्डीत्। पण्डिता। पंसयति,-ते। पक्षे—पंसति। पांसुः—उः। पण्डते इति गतौ।

६९। व्रज, मार्ग, संस्कारगत्योः। ( To clear, to go )

व्रज् मार्ग, सक, उ। व्राजयति,-ते। अविव्रजत्,-त। व्रजि मार्गसंस्कारयोर्गतौ चेति मैत्रेयादयः। अत्र धनपालो मार्ग चेति पठति। स्वामी तु व्रजस्थाने वजिं पठित्वा मार्गेति द्वितीयं धातुमाह। तन्त्रान्तरे वजिव्रजौ द्वौ पठित्वा मार्गसंस्कारगती अर्थौ उक्तौ। मार्गयति,-ते। अममार्गत्,-त। अपि—व्रजति, वजति। वाजयतीति वार्त्तिकों 'वो विधूनने जुगि'ति जुगागमः। मृग अन्वेषणे कथादौ। मार्ग अन्वेषणे इति युजादौ।

७०। शुल्क, अतिस्पर्शने। ( To pay, to give, to gain )

शुल्क्, अक, उ। शुल्कयति,-ते। अशुशुल्कत्,-त।

७१। चपि, गत्याम्। ( To go )

चम्प् ( इ, वा णिच् ) सक, उ। चम्पयति,-ते। अचचम्पत्,-त। पक्षे—चम्पति। अचम्पीत्। चचम्प। चम्पकः।

७२। क्षपि, क्षान्त्याम्। ( To endure )

क्षम्प् ( इ ) अक, उ। क्षम्पयति,-ते। अचक्षम्पत्,-त। पक्षे प—क्षम्पति। क्षपयतीति प्रेरणार्थस्य कथादित्वेन।

७३। छजि, कृच्छ्रजीवने। ( To live with difficulty )

छञ्ज (इ, वा णिच्) अक, उ। छञ्जयति,-ते।

अचखञ्जत्,-त। खञ्जति। अखञ्जीत्। चखञ्ज। चिखञ्जिषति। खञ्जत इति गतिदानयोर्घटादौ।

७४। खर्त्त, गत्याम्। ( To go )

खर्त्त्, सक, उ। खर्त्तयति,-ते। अचखर्त्तत्। खर्त्तित्वा। चिखर्त्तयिषति,-ते।

७५। खभ्र, च। ( To go )

चकारेण पूर्वोऽर्थ उक्तः। खभ्र्, सक, उ। खभ्रयति,-ते। अचखभ्रत्,-त। खभ्रम्।

७६। ज्ञप, मिच्च। * ( To kill &c. &c )

ज्ञप्, सक, मित्। ज्ञपयति। अजिज्ञपत्। संज्ञापयति। निज्ञपयति। प्रज्ञपयति। स्वभावान्मारणादावप्यस्य वृत्तिरित्युक्तम्, तत्र कौमारमतेन सोपसर्गः प्रयोगः प्रदर्शित इति माधवः। जिज्ञपयिषति। ज्ञीप्सति पक्षे—'सनीवन्त'रित्यादिना इडभावः। ज्ञपितः। ज्ञप्तः। †

---

* 'ज्ञप मानुबन्धश्च' इत्यस्य व्याख्याने रमानाथ एवमाह—"ज्ञप धातुश्चुरादिर्मानुबन्धः परस्मैपदीत्यर्थः। मारणादिष्वर्थेष्वेवास्याभिधानम्। घटादित्वेनैव सिद्धे कर्त्रभिप्राये परस्मैपदार्थं एवास्य पाठ इति धातुप्रदीपः। इह तस्यानादरात् स्वार्थे हि परस्मैपदमेव तत्र ह्रेतावात्मनेपदमपीति प्रयोजन"मिति।

वा दान्ते'त्यत्र ज्ञप्त इति निपातनं ज्ञपेरिति निष्ठायां सेटीत्यत्र कैयटपदमञ्जर्युक्तत्वादिह ज्ञप्तः ज्ञपित इति मैत्रेयेणोदाहरणस्य प्रदर्शनमयुक्तमिति माधवः।

† ज्ञापने मारणादिषु चाभिधानमस्येवेति मैत्रेयादयः। अन्ये तु शाकटायनानुसारिणो ज्ञप मारणतोषणनिशामनेषु मिच्चेति पठन्ति। तथा 'इको झलि'त्यत्र न्यासे ज्ञप मिच्चेति पठित्वा, अन्ये तु ज्ञप मारणतोषणनिशामनेष्विति पठन्तीति। घटादिवदत्रापि केचिन्निशामनस्थाने निशानशब्दं पठन्ति। घटादिषु मारणादिसूत्रस्य पाठादेव मित्त्वे सिद्धे पुनर्मारणादिषु मित्त्ववचनं ज्ञपयमादिवर्ज्जमन्ये स्वार्थण्यन्ता न मित इति ज्ञापनार्थमिति पुनः पाठफलं चाहुः काश्यपादयः। ज्ञपादीननुक्रम्य 'नान्ये मितो हेतौ' इति ज्ञपादिव्यतिरिक्तानामेव अहेतुमण्णौ मित्त्वाभावस्य वक्ष्यमाणत्वात् भेदं

७७। यम च, परिवेषणे। ( To cover )

यम्, सक, उ, मित्। यमयति—ते, चन्द्रं परिवेष्टत- इत्यर्थः। अन्यत्र—नियामयति। 'नियमयसि विमार्ग-प्रस्थितानात्तदण्डः" ( शकु ५।१८ ) इति भौवादिकात् साधु। *

७८। चह, परिकल्कने। ( To be wicked )

चह्, अक, उ, मित्। चहयति,-ते। मैत्रेयस्तु चपेति पठित्वा चपयति इत्युदाजहार। चहेत्युक्तमेव चन्द्रोऽपि। अयं कथादावपि पठिष्यते, तस्य फलमग्लोपित्वात् 'सन्वल्ल-घुनी'ति इत्वस्य 'दीर्घो लघोरि'ति दीर्घस्य चाभावः, तेन अच-चहदिति भवति। इह पाठात् अचीचहत् इति इत्वदीर्घौ भवतः। तथास्य मित्वात्—अचहि, अचाहि। चहंचहं, चाहंचाहम् इति 'चिण्णमुलो'रिति दीर्घविकल्पो भवति। चहतीति भ्वादौ।

---

फलम्। किञ्चार्थविशेषपरिगणनमप्युक्तम्, प्रच्छ मीप्सायां, ज्ञप्तिः, ज्ञापयन्तुङ्ज्ञोगपां मीप्समान :इत्यत्र मीप्समानो ज्ञपयितुमिष्यमाणो बोधयितुमभिप्रेत इत्यादौ ज्ञान-मात्रे ज्ञापने च प्रयोगदर्शनात्।

ततश्चास्य यथा प्रयोगमर्थ इति ज्ञापने ज्ञानमात्रे च वृत्तिरिति प्रच्छ मीप्सायां, मीप्समानः, ज्ञपयितुमिष्यमाणः इत्यादि सर्वमुपपद्यते। ज्ञापयत्यादिप्रयोगस्तु ज्ञानमात्रवचनाज्जानातेः। घटादिमित्त्वन्तु चाक्षुषज्ञानार्थकनिशामनार्थस्य चेति इह न भवति निशामनं चाक्षुषज्ञानमित्यवोचाम।

एवञ्च चुरादिणिचो "णिचश्चे"ति कर्त्रभिप्राये तङ् नास्तीति दर्शनाश्रयणेनोक्त-त्वोक्तिः, 'णिचश्चे'त्युदितं विहितं यदिति कर्त्रभिप्रायेऽपि मारणादौ परस्मैपदसिद्धिः पुनः पाठफलमिति यद्देवेनोक्तं तदपि मतमिति माधवीया।

* चकारेण मिदित्यपेक्षत इति मैत्रेयादयः। इह परिवेषणं परिवेष्टनं, न तु भोजना, नापि वेष्टना। तत्र :हि घटादित्वात् सिद्धम्। नच वेष्टनेऽपि घटादित्वेन मित्त्वसिद्धिः, हेतुमन्ण्यन्तस्य तद्विधानात्, तस्य च वेष्टनार्थो, न तु वेष्टनमिति।

७९ । रह, त्यागे । ( To abandon )

रह्, सक, उ, मित् । रहयति,-ते । अरीरहत् । आरहि, अराहि । रहंरहं, राहंराहम् । रहतीति अपि । रंहतीति तन्नैव रहि गतावित्यस्य ।

८० । बल, प्राणने । ( To breathe )

ओष्ठ्यादिरयम् । बल, अक, उ, मित् । बलयति,-ते । अबीबलत्,-त । बलयिता । बलम् ।

८१ । चिञ्, चयने । ( To collect )

चि ( ञ, णिच् वा ) सक, उ, मित् । चपयति,-ते । चययति,-ते । अचीचयत्,-त । अचीचपत्,-त । चपयाञ्चकार,-चक्रे । चययाञ्चकार,-चक्रे । अणिचि—चयति, चयते । चिनोतीति स्वादेः ।

८२ । घट्ट, चलने । ( To shake )

घट्ट्, सक, प । घट्टयति,-ते । अजघट्टत्,-त । अपि—घट्टते ।

८३ । अस्त, संघाते । ( To collect )

संघातः राशीकरणम् । अस्त्, सक, उ । अस्तयति,-ते । आस्तितत्,-त । क्वचिदयं वक्ष्यमाणस्य पुंसेरनन्तरं पठ्यते ।

८४ । खट्ट, संवरणे । ( To cover )

खट्ट, सक, प । खट्टयति,-ते । अचखट्टत्,-त । खट्टयिता ।

८५ । षट्ट, स्फिट्ट, चुबि, हिंसायाम् । ( To kill )

सट्ट्, स्फिट्ट्,चुम्ब ( इ, वा णिच् ) सक, उ । सट्टयति,-ते । स्फिट्टयति,-ते । चुम्बयति,-ते । पक्षे चुम्बतीत्यादि । चुम्बतीति वक्त्रसंयोगे ।

८६ । पूल, संघाते । ( To collect )

पूल,सक, उ । पूलयति,-ते । अपूपुलत्,-त । पूलति अपि ।

८७। पुंस, अभिवर्द्धने। (To increase)

पुंस, सक, उ। पुंसयति,-ते। अपुपुंसत्,-त।

८८। टकि, बन्धने। (To build)

टङ्क् (इ, णिच् वा) सक, उ। टङ्कयति,-ते। अटटङ्कत्,-त। प—टङ्कति। अटङ्कीत्। उट्टङ्कः। उट्टङ्कितः। विटङ्कः।

८९। धूस, कान्तीकरणे। (To make splendid)

धूस, सक, उ। दन्त्योपान्त इति श्रीभद्रमैत्रेयादयः। मूर्द्धन्योपान्त इति स्वामी। तथाच—मैत्रेयोऽपि धूष इत्येक इति। काश्यपस्तु तालव्योपान्तमाह। धूसयति। धूसरः—बाहुलकादरः।

९०। कीट, वर्णे। [बन्धे]। (To tinge)

कीट्, अक, उ। कीटयति,-ते। अचीकिटत्,-त। कीटः।

९१। चूर्ण, सङ्कोचने। (To contract)

चूर्ण्, सक, प। चूर्णयति,-ते। पुनःपाठोऽर्थभेदकृतः।

९२। पूज, पूजायाम्। (To worship)

पूज्, सक, उ। पूजयति,-ते। पूजयामास। पूजयिता। पूजयिष्यति,-ते। पूजयाञ्चकार,—चक्रे इत्यादि। अपूपुजत्,-त। कर्म्मणि—पूज्यते। अपूजि। अपूजयिषाताम्, अपूजिषाताम्। पुपूजयिषति,-ते। पूजा—अङ्। पूजयित्वा। प्रपूज्य। पूजितो राज्ञां वर्त्तमाने क्तः, कर्त्तरि षष्ठी। "पूजितो यः सुरासुरै"रित्यार्ष इत्याहुः। पूजनम्। पूजकः। पूजनीयम्। पूज्यम्। पूजयितव्यम्।

९३। अर्क, स्तवने। (To praise)

तपने इत्येके। अर्क्, सक, उ। अर्कयति,-ते। अर्कः—'अर्चयत्यर्कमर्किण' इति दर्शनात् स्तवनपाठो युक्तः।

९४। शुठ, आलस्ये। (To be lazy)

शुठ्, सक, उ। शोठयति,-ते। शोठतीति गतिप्रतिघाते।

९५। शुठि, शोषणे। (To dry)

शुण्ठ् (इ, णिच् वा) सक, उ। शुण्ठयति,-ते। अणिच्-पक्षे प—शुण्ठति शुशुण्ठ। अशुण्ठीत्। अस्येदित्त्वादेव शुण्ठतीति सिद्धे भ्वादौ शुण्ठेः पाठः प्रपञ्चार्थः।

९६। जुड़, प्रेरणे। (To send)

जुड़्, सक, उ। जोड़यति,-ते। बन्धने जुड़तीति।

९७। गज, मार्ज, शब्दार्थौ। (To sound)

गज्, मार्ज्, अक, उ। गाजयति,-ते। अजीगजत्,-त। मार्जयति,-ते। अममार्जत्,-त। अत्र मर्च्चिरपि केचित् पठन्ति—मर्च्चयति। मर्च्चति। केचिच्च गजस्थाने गर्ज्ज इति गर्ज्जयतीति। मार्जतीति युजादौ मार्ष्टीत्यदादौ।

९८। घृ, संप्रस्रवणे। (To sprinkle)

घृ, अक, उ। अत्र चीरस्वामी—स्रावण इति पठित्वा अभिघारयतीत्युदाजहार। घरतीति अपि। जघर्त्तीति श्नौ। छान्दसौ चैतावित्युक्तम्। आघारः। घृतेनाभिघारयेदित्यादि।

९९। पचि, विस्तारवचने। (To spread)

पञ्च् (इ, णिच् वा) सक, उ। पञ्चयति,-ते। अपपञ्चत्,-त। पक्षे प—पञ्चति। अपञ्चीत्। पञ्चते इति अपि व्यक्त्यर्थे।

१००। तिज, निशाने। (To whet)

तिज्, सक, उ। तेजयति,-ते। अतीतिजत्,-त। तितिक्षते इति नित्यसनन्तस्य क्षमायाम्। तेजतीति पालनार्थस्य।

१०१। कृत, संशब्दने। (To mention)

कृत्, अक, उ। कीर्त्तयति,-ते। अचिकीर्त्तत्,-त। अची-कृतत्। कीर्त्तिः—क्तिन्।*

* कालापास्तु युचमपीच्छन्ति—कीर्त्तनेति। 'ऋदुपधाच्चाक्लृपिचृते'रित्यत्र तपर-

१०२। वर्ध, छेदनपूरणयोः। (To cut, to fill)

वर्ध्, सक, उ। वर्द्धयति,-ते। अववर्द्धत्,-त।

१०३। कुबि, छादने। (To cover)

कुम्ब् (इ, णिच् वा) सक, उ। कुम्बयति, ते। पक्षे प—कुम्बति। कुम्बा—'चिन्तिपूजी'त्यादिना युचोऽपवादोऽकारः। अपरे तु भकारान्तं पठन्ति—कुम्भयतीत्यादि।

१०४। लुबि, तुबि, अदर्शने। (To be invisible)

अर्दन इति मैत्रेयः। लुम्ब्, तुम्ब्, (इ) अक, उ। लुम्बयति,-ते। तुम्बयति,-ते। पक्षे प—लुम्बति, तुम्बति।

१०५। ह्लप, व्यक्तायां वाचि। (To speak)

ह्लप्, अक, उ। ह्लापयति,-ते। क्लप इत्येके—क्लापयति।

१०५ क। चुटि, छेदने। (To cut)

चुण्ट्, (इ, वा णिच्) सक, उ। चुण्टयति,-ते। पक्षे प—चुण्टति। अत्र क्वचित् स्फुड़ि तुड़ि इति तृतीयान्तौ पठ्येते, तावाद्येषु व्याख्यानेषु न दृश्येते इत्युपेक्ष्यौ।

१०५ ख। इल, प्रेरणे। (To send)

इल्, सक, उ। एलयति,-ते। ऐलिलत्,-त। इलतीति शे।

१०६। म्लेच्छ, म्लेच्छने। (To speak indistinctly)

म्लेच्छनम् अपशब्दनम्। "म्लेच्छो हवा एष यदपशब्द" इति श्रुतेः। म्लेच्छ्, अक, उ। म्लेच्छयति,-ते। अमम्लेच्छत्,-त। म्लेच्छतीति संघाते। म्लेच्छ, म्लेच्छ, छदन इत्यपि क्वचित् पठ्यते।

---

करणात् ऋकारोपधकीर्त्तयतिव्यावृत्त्यर्थादस्माण्णिचोऽनित्यत्वं ज्ञाप्यते। नित्ये णिचि अनुपधत्वादेव ऋकारस्याच कथम् न भविष्यतीति किं तपरकरणेनैतद्व्यावृत्त्यर्थेन, तेन कीर्त्तयतीत्यादि च भवति।

१०७। म्लेछ, अव्यक्तायां वाचि। (To speak confusedly or barbarously)

इहाप्यव्यक्तवाक्—अपशब्दनम्। म्लेच्छयति,-ते। अमिम्लेच्छत्,-त। म्लेच्छतीति अपि।

१०८। ब्रूस, वर्ह, हिंसायाम्। (To kill)

ब्रूस्, सक, उ। ब्रूसयति, ते। वर्हयति, ते। वर्हतीति वृद्धौ। वर्हते इति प्राधान्ये। वृद्धये वर्हयेदिति। अत्र गर्ज, गर्द शब्दे; गर्ध अभिकाङ्क्षायामिति क्वचित् पठ्यते।—गर्ज्जयति,-ते। गर्दयति,-ते। गर्द्धयति,-ते। गृध्यतीति दिवादौ।

१०९। गुर्द, पुर्व, निकेतने। (To dwell)

गुर्द, पुर्व, अक, उ। गूर्दयति। पूर्वयति। अत्र चीरस्वामी, पूर्वनिकेतनमासाद्य अभ्यवहारः। पारायणे द्वौ धातू इति।

११०। जसि, रक्षणे। (To protect)

जन्स् ( इ, णिच् वा ) सक, उ। जंसयति,-ते। पक्षे प—जसति। जस्यतीति श्यनि मोक्षणे। इहैव हिंसायां जासयतीति भविष्यति। तथा ताड़नेऽपि।

१११। ईड़, स्तुतौ। (To praise)

ईड़्, सक, उ। ईड़यति,-ते। ऐडिड़त्,-त। ईट्टे इत्यदादौ।

११२। जसु, हिंसायाम्। (To hurt)

जस् (उ, वा णिच्) सक, उ। जासयति.-ते। अजीजसत्,-त। अणिच्पक्षे प—जसति, अजासीत्, अजसीत् चौरस्य चौरमिति वा। जसतीति अपि। (उ) जसित्वा। जस्त्वा। जस्तम्।

११३। पिड़ि, संघाते। (To roll into a lamp)

पिण्ड्, ( इ, वा णिच् ) सक, उ। पिण्डयति,-ते। अपिपिण्डत्,-त। अणिच्पक्षे प—पिण्डति। पिपिण्ड। अपिण्डीत्।

११४ । रुष, रोषे । (To be angry)

रुष्, अक, उ । रोषयति,-ते । अरूरुषत्,-त । अपि—रोषति । अन्ये—रुष्यति ।

११५ । डिप, क्षेपे । (To throw)

डिप्, सक, उ । डेपयति, ते । डप डिप संघाते इति आकुस्मीयः । अन्ये डिप्यतीति ।

११६ । ष्टूप, समुच्छ्राये । (To heap up)

ष्टूप्, अक, उ । स्तूपयतीत्यादि । ष्टूपयति । केचित् केचिदिदं न पठन्ति ।

## आ कुस्मात्मनेपदिनः ।

कुस्मनाम्नो वेति वक्ष्यति । आ एतस्मादात्मनेपदिनः अकर्त्रभिप्रायेऽपि । आङ् अभिविधौ, मर्य्यादायामसन्देहार्थं प्रागित्येव ब्रूयात् ।

११७ । चित, सञ्चेतने । (To think)

सञ्चेतनं संज्ञानम् । चित, अक, आ । चेतयते । अचीचितत । चेतयाञ्चक्रे । चेतयमानः । 'चिन्तयति । चिन्ततीति स्मृत्यामिह गतम् । अपि—चेतति संज्ञाने ।

११८ । दशि, दंशने । (To bite)

दन्श, (इ, वा णिच्) सक, आ । दंशयते । आकुस्मीयमात्मनेपदं णिच्सन्नियोगेनेति व्याख्यातारः । तेन इदित्करणसामर्थ्याण्णिजभावे दंशतीति अपि भवति ।

११९ । दसि, दर्शनदंशनयोः । (To see, to bite)

दन्स्, (इ, वा णिच्) सक, आ । दंसयते । दंसतीति, पूर्ववदणिचि परस्मैपदम् । दंसतीति दर्शने गतमित्कीयमतेन । दस्यतीति उपक्षये अन्ये । दासत इति दाने । 'दंसेष्टटनौ न आ चे'ति टटनौ नकारस्य चाकारः । टटनोः स्वरे विशेषः दासः,

दासी—टित्वात् स्त्रियां ङीष्। दासीदासम्। गवाश्वादित्वा· देकवद्भावः। अत्र दस इति अनिदितमपि केचित् पठन्ति।

१२०। डप, डिप, संघाते। (To collect)

डप्, डिप्, अक, आ। डापयते। अडीडपत। डेपयते। अडीडिपत। डेपयतीति क्षेपे गतः।

१२१। तत्रि, कुटुम्बधारणे। (To support)

कुटुम्बधारणमिह कुटुम्बपोषणमिति। तन्त्र् (इ) सक, आ। तन्त्रयते। अततन्त्रत। पक्षे प—तन्त्रति। अतन्त्रीत्। तन्त्रम्। चान्द्राः कुटुम्बेति पृथग्धातुं पठित्वा कुटुम्बयते इत्याहुः।

१२२। मत्रि, गुप्तभाषणे। (To consult)

गुप्तभाषणं मन्त्रणा। मन्त्र् (इ, वा णिच्) सक, आ। मन्त्रयते। अममन्त्रत। मिमन्त्रयिषते। पक्षे प—मन्त्रति, मन्त्रः।

१२३। स्पश, ग्रहसंश्लेषणयोः। (To take, to embrace)

स्पश्, सक, आ। स्पाशयते। अपस्पशत। स्पशति, स्पशते इति बाधनस्पर्शयोः।

१२४। तर्ज, भर्त्स, सन्तर्जने। (To menace)

तर्ज्, भर्त्स्, सक, आ। तर्जयते। "तर्जयन्निव केतुभि" रिति भौवादिकस्य। भर्त्सयते।

१२५। वस्त, गन्ध, अर्दने। (To hurt)

वस्त्, गन्ध, सक, आ। वस्तयते। गन्धयते।

१२६। विष्क, हिंसायाम्। (To kill)

विष्क्, सक, आ। विष्कयते। हिष्केति क्वचित्—हिष्कयते।

१२७। णिष्क, परिमाणे। (To measure)

निष्क्, सक, आ। निष्कयते। निष्कः—अच्। निष्केण

कृतं—नैष्किकम्, ढक्। द्वाभ्यां निष्काभ्यां क्रतं—द्विनैष्किकः, द्विनिष्कम्—'द्वित्रिपूर्वान्निष्का'दिति पक्षे ढको लुक्। एवं त्रिपूर्वस्यापि।

१२८। लल, ईप्सायाम्। (To desire)

लल्, सक, आ। लालयते। अलीललत्। कुं लालयत्,-त इति कुलालः—कर्म्मण्यण्। कुलालेन कृता—कौलालिका 'कुलालादिभ्यो' वुञ्।

१२९। कूण, सङ्कोचने। (To contract)

कूण्, सक, आ। कूणयते। कूणिः। अन्ये तु कुणिति ह्रस्वोपधं पठन्ति। वयन्तु दीर्घोपधमिति बहु मन्यामहे। ह्रस्वोपधस्तु कथादौ भविष्यति। कुणतीति शब्दोपकरणयोः।

१३०। तूण, पूरणे। (To fill up)

तूण्, सक, आ। तूणयते। तूणः। तूणीरः—बाहुलकादीरण्।

१३१। भ्रूण, आशायाम्। (To hope)

भ्रूण्, सक, आ। भ्रूणयते। अबुभ्रूणत। भ्रूणः।

१३२। शठ, श्लाघायाम्। ( To praise )

शठ्, सक, आ। शाठयते। शठः। तस्य भावः—शाठ्यम्।

१३३। यक्ष, पूजायाम्। (To honour)

यक्ष्, सक, आ। यक्षयते। अययक्षत। यक्षः।

१३४। स्यम, वितर्के। (To consider)

स्यम्, सक, आ। स्यामयते। स्यमतीति शब्दार्थे गतम्।

१३५। गूर, उद्यमने। (To make an effort)

गूर्, सक, आ। गूरयते। क्वचिदयं लघूपध ईदिच्चेह पठ्यते। मैत्रेयस्तु चुरादौ दीर्घोपधमनीदितं पठित्वा गूरयत इत्येवोदाजहार।

१३६ । ग्रस, लक्ष, आलोचने । (To look at)

ग्रस्, लक्ष, सक, आ । ग्रासयते । अग्रीग्रसत । लक्षयते । दर्शनाङ्कनयोर्लक्षयति लक्षयते इति गतम् ।

१३७ । कुत्स, अवक्षेपणे । (To blame)

कुत्स्, सक, आ । कुत्सयते । कुत्सा—अङ् ।

१३८ । त्रुट, छेदने । (To cut)

त्रुट्, सक, आ । त्रोटयते । अयं तुदादौ च ।

१३९ । गल, स्रवणे । ( To flow )

गल्, अक, आ । गालयते । गलतीति गतम् ।

१४० । भल, आभण्डने । (To see, to behold)

भल, अक, आ । भालयते ।

१४१ । कूट, आप्रदाने । (To give)

अवसादन इत्येके, आप्रवणे इति च केचित् । कूट्, सक, आ । कूटयते । क्वचित् कुट प्रतापन इति पठ्यते । तदा कोटयते ।

१४२ । कुट्ट, प्रतापने । (To boil)

कुट्ट्, सक, आ । कुट्टयते । कथादावप्ययम् । कुटतीति तुदादौ ।

१४३ । वञ्चु, प्रलम्भने । (To deceive)

वञ्च् (उ) वा णिच्, सक, आ । वञ्चयते । वञ्चति । वञ्चित्वा, वचित्वा, वक्त्वा—'वञ्चिलुञ्च्यृतश्च'ेति सेटः क्त्वाप्रत्ययस्य कित्त्वविकल्पनात् पक्षे नलोपः, इड़भावे तु नित्यम् । *

---

* वञ्चु गताविति हरदत्तः । तन्मते इड्विकल्पेन भाव्यम् । पाठद्वयेऽपि निष्ठायां वक्तव्यम्, "गृधिवञ्च्योः प्रलम्भन' इति भौवादिकस्यैव ग्रहो नास्य, आकुस्मीयत्वादेवात्मनेपदाभिप्रायेऽपि तङः सिद्धत्वात् । पूर्वोत्तरयोगसाहचर्य्याच्च कारितण्यन्तस्यैव वञ्चेरत्र ग्रहणस्य युक्तत्वाच्च । अतएव तत्र वृत्तौ वञ्चु गताविति भौवादिक एवोपात्तः ।

१४४। वृष, शक्तिबन्धने। ( To have the power of production )

शक्तिबन्धनं प्रजननसामर्थ्यमिति केशवस्वामी। शक्तिसम्बन्ध इति मैत्रेयः। वृष्, अक, आ। वर्षयते। वर्षतीति वृष स्नेहने, वर्षत इति वर्ष स्नेहने।

१४५। मद, तृप्तियोगे। (To gratify)

एवं मैत्रेयादयः। अन्ये तृप्तिशोधन इति पठन्ति। क्षीरस्वामी तु तृप्तिशोधने तर्पणशुद्धाविति। मद्, अक, आ। मादयते। माद्यतीति हर्षे। इदित्स्वत्यादौ पाठः—मन्दते।

१४६। दिवु, परिकूजने। (To cause to lament)

दिव्, (उ) अक, आ। देवयते। परिदेवकः—वुञ्।

१४७। गृ, विज्ञाने। (To know)

गृ, सक, आ। गारयते। निगरणार्थस्य। गिरतीति। गृणातीति शब्दार्थस्य सेवनार्थस्य च गरतीति।

१४८। विद, चेतनाख्याननिवासेषु। ( To feel, to experience, to tell, to dwell )

विदु चेतन इत्युदनुबन्ध इत्येके, विद चेतनाख्यानपरिवादेष्वित्यपरे। विद्, अक, आ। वेदयते। अत्र कारिका—

---

यदाप्ययं कारितणन्तस्तदापि प्रलम्भनार्थः, न तु प्रलम्भनमिति नात्र तत्र ग्रहणप्रसङ्गः। स्वार्थणन्तादस्मात् कारितणौ वञ्चयति वञ्चयत इत्युभयं भवति। "इन्द्रनीलद्युमदः प्रधीयसीराश्रिताः कथममी जिघांसतः। उन्नतश्ववणबालनिस्वनादवञ्चयन्ति शरभान् करेणवः॥" इति प्रयोगस्य चौरादिकोऽप्यात्मनेपदीत्युक्त्वा वञ्चयन्ति मन्यपथं गमयन्तीति प्रतीतेः। प्रलम्भनाभावान्न तङिति निर्वाहात् कारितणन्तादस्मादपि "गृधिवञ्च्यो"रिति आत्मनेपदेन भाव्यमिति न मन्तव्यम्। यतः कारितणन्तस्यात्र प्रयोजनाभावात् अर्थो न सङ्गच्छते स्वार्थणन्तस्याकृष्मीयत्वात्तङा भाव्यमित्येव तस्याभिप्रायः। वनीवच्यते 'नीग्वञ्चु' इत्यादिना नीगभ्यासस्य।

"सत्तायां विद्यते ज्ञाने वेत्ति विन्ते विचारणे। विन्दते विन्दति प्राप्तौ श्यन्लुक्श्नम्शेषु च क्रमात् ॥"

१४९। मन, स्तम्भे। (To stop)

मन्, अक, आ। मानयते। अमीमनत। ज्ञाने—मन्यते। अवबोधने—मनुते।

१५०। यु, जुगुप्सायाम्। (To censure)

यु, सक, आ। यावयते। अयीयवत। यियावयिषते। यावयमानः। युनाति युनीते च बन्धने, यौतीति मिश्रणे।

१५१। कुस्म नाम्नो वा। (To smile rudely)

कुस्म्, आ। कुस्मयते। अचुकुस्मयत। *

## उभयपदिनः।

१५२। चर्च्च, अध्ययने। (To persue, to study)

चर्च्च्, सक, उ। चर्च्चयति, ते। चर्च्चति शपि। चर्च्चा—युचोऽपवादः अङ्। अङ्विधौ चिन्त्यादयः सर्वे चौरादिका गृह्यन्ते।

१५३। बुक्क, भाषणे। (To speak)

बुक्क्, सक, उ। बुक्कयति,-ते। बुक्कतीति—शपि।

---

* कुस्ममिति दृष्टं 'कुस्मयतिरकारित'मिति। कोर्नित्यसमासत्वात् उपसर्गस्य च वाच्यत्वात् कारितमेव। कुत्सितस्मयनेऽस्य वृत्तिरिति मैत्रेयदुर्गादयः। तथाच'कुस्म कुस्मयन' इति दुर्गः पठति। कुपूर्वस्य स्मयतेरेव कुस्मयत इति सिद्धे त्वणादिप्रत्यये रूपभेददर्शनार्थमस्य कथनमिति मैत्रेय इति रमानाथ आह। कुस्मयते। नाम्नी वेत्यस्यायमर्थः। यद्वा कुस्मप्रातिपदिकात् तत्करोतीति णिचि कुस्मयत इति भविष्यति। कुस्मधातोरेवाभावात् कुतो नामायमद्येतेत्याह—कुस्ममिति दृष्टमिति। कुशब्दपूर्वात् स्मयते'रन्येभ्योऽपि दृश्यत' इति डप्रत्यये 'कुगतिप्रादय' इति समासे समासभूतं नाम प्रातिपदिकमिति लक्षणनिर्णीतमित्यर्थः।

१५४ । कण, निमीलने । (To wink)

कण्, सक, उ । काणयति,-ते । अचीकणत्,-त । अचका-णत् । काणः—स्वभावादयमेकनेत्रनिमीलनवाची । कणतीति शब्दे ।

१५५ । जभि, नाशने । (To destroy)

जम्भ् (इ, वा णिच्) सक, उ । जम्भयति, ते । अज-जम्भत्, त । इदित्त्वात् पक्षे प—जम्भति । चन्द्रस्तु जभेति पठित्वा जम्भयतीति उदाजहार । जम्भत इति जृम्भणे ।

१५६ । षूद, चरणे । (To strike)

केचिदाश्रवणे इति पठन्ति । सूद्, सक, उ । सूदयति, ते । असूषुदत् । सूदत इति अपि ।

१५७ । जसु, ताड़ने । ( To hurt )

जस् (उ) सक, प । जासयति चोरस्य-'जासिनिप्रहणे'ति कर्म्मणि शेषे षष्ठी । हिंसायां पठितस्यास्य पुनःपाठोऽर्थभेदात् । नहि ताड़नं हिंसा, तज्जन्यत्वात्तस्याः । उदित्त्वादस्यापि णिज्-विकल्पितः, तेन जसतीति भवति ।

१५८ । पश, बन्धने । (To bind)

पश्, सक, उ । पाशयति,-ते । अपीपशत्,-त ।

१५९ । अम, रोगे । (To afflict with sickness)

अम्, अक, उ । चोरस्य आमयति, आमयतः, आमयन्ति । 'रुजार्थाना'मिति कर्म्मणि षष्ठी । आमः—घञ, अच् वा । "नान्ये मितोऽहेता"विति मित्त्वनिषेधः । आमयशब्दस्तु आम-पूर्वात् माधातोर्घञर्थे के मीधातोरचि वा सिद्धः ।

१५९क । चट, स्फुट, भेदने । (To kill)

चट्, स्फुट्, सक, उ । चाटयति,-ते । स्फोटयति,-ते । विकाशे स्फोटते इति अपि गतम् ।

१५९ख। घट, संघाते। (To collect)

घट्, अक, उ। घाटयति,-ते। अजीघटत्,-त।

१५९ग। हन्त्यर्थाश्च। * (To kill)

नवगण्यामुक्ता अपि हन्त्यर्थाः स्वार्थे णिचं लभन्त इत्यर्थः। घातयति,-ते। अजीघत्,-त।

१५९घ। दिवु, अर्दने। (To rub)

दिव् ( उ, वा णिच् ) सक उ। देवयति। उदित्त्वात् पक्षे प—देवतीत्याद्यपि।

१५९ङ। अर्ज्ज, प्रतियत्ने।

अर्ज्ज, सक, उ। अर्जयति,-ते। आर्जिजत्,-त। द्रव्यमर्जयतीत्यादिप्रयोगदर्शनादयमर्थान्तरेऽपि।

१५९च। घुषिर्, विशब्दने। (To proclaim)

विशब्दनं प्रतिज्ञा। 'घुषिरविशब्दन' इति सूत्रे अविशब्दन इति निषेधात् लिङ्गात् अनित्योऽस्य णिच्। 'घुषिरविशब्दने' इत्यनेनाविशब्दने निष्ठाया इड् निषिध्यते। शब्दार्थादेतस्मादनन्तरा निष्ठा नेति किं प्रतिषेधेन। इदञ्च घोषतावित्युक्तम्। मन्दबुद्ध्यनुग्रहायेह स्मारितम्। एवञ्चेरित्त्वमघुषदघोषीदित्यत्र

* अस्य रमानाथकृता व्याख्या यथा—येऽपि यत्र कुत्र हन्त्यर्थाः पठ्यन्ते, तेऽत्र चुरादौ मन्तव्याः। घातयति हन्तीत्यर्थः। हिंसयति हिनस्तीत्यर्थः। अनेनैव सिद्धे अन्येषां चुरादौ पाठः आत्मनेपदादिकृतरूपभेदो द्रष्टव्यः। पारायणिकास्तु चटस्फुटघटा हन्त्यर्थाश्चेति मन्यन्ते। अस्यार्थः—चट इत्ययं धातुः आङ्पूर्वः स्फुट इति, घट इत्ययञ्च त्रयोऽपि एते धातवः हन्त्यर्थाः सन्तः चुरादयः स्युरित्यर्थः। यथा चाटयति, आस्फोटयति, घाटयति—हन्तीत्यर्थः। अर्थान्तरेषु न चुरादित्वम्—चटति, स्फुटति, घटते। चकारात् सर्वे धातवश्चुरादौ पठ्यन्त इति धातुपारायणम्। तेन "इष्टे संख्ये पुनरपि भवान् वाहयेदश्वमेधम्"। "कोकिलो विष्णुरूपेण राजकन्यामनोहरत्"। एवं "दशवर्षसहस्राणि रामो राज्यमकारयत्।"

पक्षेऽङर्थत्वेनावयवे चरितार्थमिति अजूघुषदित्यत्र 'णिश्री'ति चङ् न बाध्यते। घोषयति,-ते। अजूघुषत्,-त। पक्षे प—घोषति। अघोषीत्। अवघुषितमिति इट्प्रतिषेधो भौवादिकस्येत्युक्तम्। *

१६० । आङः क्रन्द, सातत्ये †। ( To cry out continually )

आक्रन्द्, अक, उ। आक्रन्दयति,-ते। आचक्रन्दत्,-त। आचिक्रन्दयिषति,-ते आक्रन्दतीति आह्वानादौ।

१६१ । लस, शिल्पयोगे। ( To exercise an art )

अत्र स्वामी शिल्पोपयोगे इति पठित्वा केचिन्मूर्द्धन्यान्त' पठन्तीत्याह। लस्, अक, उ। लासयति,-ते। अलीलसत्,-त। श्लेषणक्रीड़नयोर्लसतीति अपि।

१६२ । तसि, भूष, अलङ्कारे। ( To adorn )

तन्स्, ( इ, वा णिच् ) भूष् सक, उ। अवतंसयति,-ते। तंसयाञ्चकार,-चक्रे। अततंसत्,-त। तसेरिदित्त्वाण्णिचो विकल्पे परस्मैपदी—तंसति। अतंसीत्। ततंस। तितंसिषति। वतंसति—'वष्टि भागुरिरल्लोप' मित्यल्लोपः। तितंसयिषति,-ते। तंसयित्वा। तंसितः। दीर्गास्तु अप्यपि पेठुः,—तसि भूष अलङ्कार इति। पुरुषकारे तूक्तमुभयत्रापि। भूषेवेत्येवेति

* विशब्दनमिह भाषणं, नानाशब्दनं वा। घोषयति गूढ़मर्थमभियुक्तः। 'चुषि वाह्नी'त्यादिसूत्रे विशब्दनप्रतिषेधात् चुरादेरिन् स्याद् विभाषयेति तेनेदं सिद्धं—"महीपालवचः श्रुत्वा जुघुषुः सङ्गरे भटाः।" इत्यादि अत्र केचित् चुरादिभ्यो यथाभिधानमिन्प्रत्ययः, न विकल्पः सार्वत्रिक इत्याहुः। इति रमानाथः।

† अत्र काश्यपमैत्रेयौ—आङः परः क्रन्दः सातत्ये णिचमुत्पादयतीति। इदञ्च सातत्य कथयतेरनन्तरं मैत्रेयेणागणान्तरात् धातूनन्वय पुनर्द्वितीयं परस्मैपदप्रकरणमध्येऽप्यत इत्युक्तत्वादयमपि भौवादिकस्यानुवादः, ततश्च क्रन्देर्योऽर्थ आह्वानादिस्तदपेक्षमिति बोद्धव्यम इति।

बहव:। भूष—भूषयति,-ते। अबूभुषत्,-त। भूषयाञ्चकार,-चक्रे इत्यादि। बुभूषयिषति,-ते। भूषयित्वा, संभूष्य। भूषा।

१६३। मोक्ष, असने। ( To throw )

मोक्ष्, सक, उ। मोक्षयति,-ते, शरान्। मोक्षयाञ्चकार,-चक्रे। अमुमोक्षत्, त। मुमोक्षयिषति,-ते। मोक्षित:। मोक्षयित्वा। प्रमोक्ष्य।

१६४। अर्ह, पूजायाम्। ( To worship )

अर्ह्, सक, उ। अर्हयति,-ते। आर्जिहत्,-त।

१६५। ज्ञा, नियोगे। ( To appoint )

अत्र नियोग: प्रेरणम्। स्वभावादयमाङ्पूर्व:। ज्ञा, सक, उ। आज्ञापयति,-ते। आज्ञापयिष्यति,-ते। आजिज्ञपत्,-त। आज्ञाप्य। आज्ञापित:। आजिज्ञापयिषति। मारणादौ ज्ञपयति इति गतम्। बोधने तु ज्ञपयति, विज्ञापयतीति उभयम्। घटादौ ज्ञप मिच्चेत्यत्र च विशेषो द्रष्टव्य:। नियोजनादन्यत्र जानातीति रमानाथव्याख्या।

१६६। भज, विश्राणने। ( To give )

विश्राणनं दानम्। भज्, सक, उ। भाजयति,-ते। भाजयिता। भाजयाञ्चकार,-चक्रे। अबीभजत्,-त। भाजयित्वा। विभाज्य। विभाजित:। 'भाज' पृथक् कर्मणीति वक्ष्यमाणस्य भाजयतीत्यादि। भञ्जयतीति भाषार्थेऽन्ये। भजति, भजते इति सेवायाम्। भनक्तीति आमर्द्दने।

१६७। शृधु, प्रहसने। ( To ridicule )

शृध्, ( उ, वा णिच् ) अक, उ। शर्द्धयति,-ते। अशशर्द्धत्,-त। अशशृधत्,-त। उदित्वात् अणिच्पक्षे परस्मैपदी। शर्द्धतीत्यादि। शर्द्धित्वा। शृद्धा। शर्द्धते इति शपि। शब्दकुत्सायां तुदादि: उन्दने अपि शर्द्धतीति च।

१६८। यत, निकारोपस्कारयोः। * ( To defeat, to torture )

यत्, सेट्, सक, उ। यातयति। यातयाञ्चकार,-चक्रे। अयीयतत्,-त। यियातयिषति,-ते। यातयिता। संयात्य। यातितः। निस्—प्रत्यर्पणम्—धान्यधनयोः प्रतिदानम्। परिवर्त्तः। वैरनिर्यातनम्। ऋणं निर्यातयति। प्रतिददातीत्यर्थः।

१६९। रक, लग, आस्वादने। ( To taste )

रक्, लग्, सक, उ। राकयति,-ते। अरीरकत्,-त। राकयिता। लागयति,-ते। अलीलगत्,-त। लगिता। लागयित्वा। प्रलाग्य। रघ लग इत्येक इति मैत्रेयः—राघयति, लागयति। अपरे त्वाद्यमपि रगेति तृतीयान्तमपि पठन्ति—रागयति। लगयतीति शङ्कायां, सङ्गे च घटादिः।

१७०। अञ्चु, विशेषणे। ( To individualize )

विशेषणं व्यावर्त्तनम्। उदित्त्वाद्विभाषितो णिच्। अञ्च, ( उ, वा णिच् ) सक, उ। अञ्चयति,-ते। आञ्चिचत्,-त। अञ्चयाञ्चकार,-चक्रे। आञ्चिचयिषति,-ते। अञ्चित्वा। अञ्चितः। अञ्चति। आनञ्च। आञ्चीत्। गतिपूजनयोरञ्चतीति भ्वादौ, गतियाचनयोरञ्चते इत्यपि।

१७१। लिगि, चित्रीकरणे। ( To paint )

लिङ्ग्, ( इ, वा णिच् ) सक, उ। लिङ्गयति,-ते। अलिलिङ्गत्,-त। लिलिङ्गयिषति,-ते। लिङ्गति। अलिङ्गीत्। लिङ्गिता। गतौ लिङ्गति।

---

* मैत्रेय एवमेव। क्रियानिघण्टौ तु "यते प्रेषे निराकारे पातयेदप्युपस्कृतौ" इति। क्षीरस्वामी तु निकारोपसंस्कारयोरिति पाठो दृश्यते, निकारः परिभव इति चाह। निकारः परिभवः। उपस्कारः अलङ्करणम् ताडनमिति वोपदेवः।

१७२। मुद, संसर्गे। ( To mix )

मुद्, सक, उ। मोदयति,-ते। सक्तून् घृतेन। अमूमुदत्,-त। मुमोदयिषति,-ते। मोदितः। मोदयित्वा।

१७३। त्रस, धारणे। ( To hold )

ग्रहण इति नन्दी, अत्र धारणं वारणमिति मैत्रेयः। वारण इत्येव शाकटायनः। त्रस्, सक, उ। त्रासयति,-ते। मृगान्। अतित्रसत्,-त। तित्रासयिषति,-ते। त्रंसयतीति भाषणे भविष्यति। त्रस्यति त्रसतीति दिवादावुद्वेगे।

१७४। उध्रस, उञ्छे। ( To glean )

ध्रस् ( उ ) सक, उ। क्रैयादिकस्योकार इत्, अस्य तु धातोरवयव इति काश्यपादयः। मैत्रेयस्तु पूर्व एवायं धातुरिह यत् पठ्यते, तेनायमुदिदिति। अन्ये तु उभयत्रापि धात्ववयव उकार इति। ध्रासयतीति मैत्रेयः। अन्येषामुध्रासयतीति।

१७५। मुच, प्रमोचने मोचने च। (To loose, to rejoice)

मुच्, सक, उ। ऋणं निर्मोचयति,-ते, प्रतिददातीत्यर्थः। मुञ्चतीति कल्कने अपि। तथा मोक्षणे तुदादौ।

१७६। वस, स्नेहनच्छेदापहरणेषु। ( To love, to cut, to take away )

छेदोपहरणयोरिति केचित्। वस, सक, उ। वासयति,-ते। अवीवसत्,-त। अयं निवासे कथादिर्भौवादिकश्च। वस्ते इत्याच्छादने। वस्यतीति स्तम्भने। वास उपसेवायामिति दीर्घोपधः कथादौ।

१७७। चर, संशये। ( To doubt )

चर, सक, प। संशयो हिंसा। चारयति,-ते। अचीचरत्,-त। चारयित्वा, प्रचार्य्य। चारितः। चरतीति गतौ। केचित् चर असंशये इति पठन्ति।

१७८ । च्यु, हसने । ( To lough )

सहने चेत्येके । च्यु, सक, उ । च्यावयति । अचिच्यवत्,-त । चिच्यावयिषति,-ते । च्यवत इति गतौ । चुस इत्येक इति स्वामी । चोसयति,-ते । अचुचुसत्,-त । चोसितः । चोसयित्वा ।

१७९ । भू, अवकल्कने [भुवोऽवकल्कने] । * [To mix]

भू, सक, उ । भावयति,-ते । भावयत इति प्राप्तौ युजादिः । भवतीति अपि । भू क्लृप अवकल्कने इति दुर्गः पठति । अत्र भू क्लृप इति द्वौ धातू ।

१८० । क्लृपेश्च । ( To consider to be able )

क्लृप् (ऋद) सक, उ । कल्पयति,-ते । सामर्थ्ये—कल्पते । क्षीरस्वामी तु 'क्लृपेस्तादर्थ्ये' इति पठित्वा तादर्थ्ये प्रस्तुतस्य भुवोऽर्थे मिश्रीकरणे । अथवा तच्छब्देन क्लृपिः परामृश्यते, तस्य योऽर्थः सामर्थ्यलक्षणः ।

१८१ । आ स्वदः सकर्म्मकात् । † (To taste)

आ-स्वद्, सक । आस्वादयति,-ते सुखं धनी । अन्यत्र आस्वादते ।

---

* अवकल्कनं मिश्रीकरणमिति स्वामी । पुरुषकारे अवकल्कनं चिन्तनमिति काश्यपः । धनपालस्तु 'क्लृपेस्तादर्थ्ये' इति पठित्वा अवकल्पयतीत्युदाजहार । क्वचित् स्वामिग्रन्थेऽनुकल्कनम् इति पठित्वा अनुकल्कन मिश्रीकरणमिति दृश्यते । नन्दी तु भुवो विकल्कने इति विकल्कन विपाचनमिति । तथाच दृश्यते—'तपोभावितमात्मान'मिति ।

† अत्रान्ये स्वाद इति दीर्घोपधं पठन्तो वक्ष्यमाणं स्वद आस्वादने इति धातुमपि दीर्घोपधं पठन्ति । आ कुस्मादितिवदभिविधावयमाकारः, तेन ग्रसिप्रभृतिभ्यः स्वद आस्वादन इति वक्ष्यमाणपर्य्यन्तेभ्यः सकर्म्मकेभ्य एव णिच् भवति । इदञ्च सकर्म्मकत्ववचनं क्व मेघः नेच क्रियानाम्नवाचित्वे नाप्रयुज्यतानेऽपि कर्म्मणि णयं विधिर्भवति ।

१८२। ग्रस, ग्रहणे। ( To take )

ग्रस्, सक, उ। ग्रासयति,-ते फलम्। अजिग्रसत्,-त। ग्रासयित्वा। ग्रासितः। ग्रसत इत्यदने।

१८३। पुष, धारणे। ( To hold )

पुष्, सक, उ। पोषयत्याभरणम्। पोषयति, पोषति, पुष्यति पुष्णाति इति पुष्टौ।

१८४। दल, विदारणे। ( To break )

दल, सक, उ। दालयति,-ते। दलतीति विशरणे घटादौ।

१८५। पट, पुट, लुट, तुजि, मिजि, पिजि, लुजि, भजि, लघि, त्रसि, पिसि, कुसि, दशि, कुशि, घट, घटि, बृहि, बर्हं, बल्ह, गुप, धूप, विच्छ, चौ, पुथ, लोक, लोचृ, णद, कुप, तर्क, वृतु, वृधु,

भासार्थाः [भाषार्थाः]। [To Shine] (To speak)

मैत्रेयानुरोधेनायं पाठो दण्डकस्य। भासार्था इत्येक-इति मैत्रेयः। तथाच चीरस्वामी—भासा दीप्तिरर्थो येषां ते भासार्थाः। सर्वे अकर्मकाः। एषु इदनुबन्धा उदनुबन्धाश्च वाणिचः। तत्र अणिचपक्षे परस्मैपदम्।

पट्—पाटयति,-ते। अपीपटत्,-त। पटयतीति कथादौ ग्रन्थे। पटतीति गतौ। पुट्—पोटयति,-ते। अपूपुटत्,-त। पुटयतीति कथादौ संसर्गे। पुटतीति श्ले। लुट्—लोटयति,-ते, अलूलुटत्-त। लुठ्यतीति लोटने। लोटत इति युजादौ प्रतिघाते। लुण्टयतीति लुण्ट स्तेये अपि। लुण्ठयतीति इन्द्रेन गतः। तुञ्ज् (इ)—तुञ्जयति,-ते। अतुतुञ्जत्,-त। इदित्वात् तुञ्जतीति। हिंसायामिदितोऽनिदितश्च तुजति। तोजति,-ते। मिञ्ज् (इ)—मिञ्जयति,-ते। अमिमिञ्जत्,-त। पक्षे—मिञ्जति, अमिञ्जीत्। पिञ्ज् (इ)—पिञ्जयति,-ते। पिञ्जति। लुञ्ज् (इ)

लुञ्जयति,-ते। लुञ्जति। भञ्ज (इ)—भञ्जयति,-ते। भञ्जति। सेवायां भजति,-ते। आमर्द्दने भनक्ति। भाजयतीति विश्राणने गतम्। लङ्घ (इ)—लङ्घयति,-ते। लङ्घति। शोषणे लङ्घति। लङ्घते गतौ। त्रन्स् (इ)—त्रंसयति,-ते। त्रंसति। त्रास यतीति धारणे गतम्। त्रस्यति, त्रसतीति उद्वेगे वा श्यनि। पिन्स् (इ)—पिंसयति,-ते। पिंसति। पेसयतीति गतौ गतम्। पेसतीति तु शपि। कुन्स् (इ) कुंसयति,-ते। कुंसति। स्त्रीवेशधारित्वात् भ्रुवा कुंसयति पुरुषत्वमिति भ्रकुंसः।

दन्श्। (इ)—दंशयति,-ते। अददंशत्—ते। दंशति। दशतीति दंशने। कुन्श् (इ)—कुंशयति,-ते। कुंशति। घट्—घाटयति,-ते। अयं सङ्घातेऽपि। घटत इति घटादौ चेष्टायाम्। घण्ट् (इ)—घण्टयति,-ते। घण्टति। घण्टा। वृन्ह् (इ)—वृंहयति,-ते। वृंहति। वर्हतीति वृद्धौ। वृंहतीति शब्दे। वर्ह—वर्हयति,-ते। वर्हते। वल्ह-वल्हयति,-ते। वल्हते इत्यादयो धान्ये। गुप्—गोपयति,-ते। धूप्—धूपयति,-ते। रक्षणसन्तापयोः—गोपायति धूपायतीति। गुप्यतीति व्याकुलत्वे। सन्तापे धूपतीति शे। विच्छ्—विच्छयति। विच्छायतीति गतौ। चीव्—चीवयति, ते। पुथ्—पोथयति,-ते। हिंसायां पुथ्यतीति। पुन्थतीति संक्लेशे। लोक् (ऋ)—लोकयति,-ते। अलुलोकत्,-त। लोच् (ऋ)—लोचयति,-ते। अलुलोचत्,-त। लोकते, लोचते दर्शने। नद्—नादयति,-ते। नदतीति शब्दे। कुप्—कोपयति,-ते। कुप्यतीति कोपे। तर्क—तर्कयति, ते। वृत् (उ)—वर्त्तयति,-ते। वृध् (उ)—वर्द्धयति,-ते। उदित्त्वात्, वर्त्तति, वर्द्धतीति च। वर्त्तते, वर्द्धते—वर्त्तनवृद्धयोः। वृत्यते इति दिवादौ।

१८५-६। रुठ, लजि, अजि, दसि, भृंशि, रुशि रुसि, शीक, नट, पुटि, जुचि, रघि, अहि, रहि, महि, इत्येते पञ्चदश स्वामिकाश्यपमतानुसारेण लिख्यन्ते।—

रुठ्—रोठयति,-ते। स्तेये (इ) रुण्ठति। प्रतिघाते रोठते। लज्ज् (इ)—लञ्जयति,-ते। लञ्जति। लजति, (इ)—लञ्जति भर्त्सने। लाजति, (इ) लाञ्जति भर्त्सने। लजते व्रीडे तुदादौ। प्रकाशे (इ)—लञ्जयतीति कथादौ। अनज् (इ)—अञ्जयति,-ते। अञ्जति। अनक्तीति व्यक्त्यादौ। दनस् (इ) दंसयति,-ते। दंसति। भ्रनश् (इ)—भ्रंशयति, ते। भ्रंशति। भशति, भृश्यतीति अधःपतने। रुनश् (इ)—रुंशयति, ते। रुंशति। रुनस् (इ)—रुंसयति,-ते। रुंसति। शीक्—शीकयति,-ते। शीकति, शीकते सेचने। नट्—नाटयति,-ते। अयमवस्यन्दने गतः। नटतीति नृत्तौ घटादिः। पुनट् (इ)—पुण्टयति,-ते। पुण्टति। परिवर्त्तने—पोटते। जुच् (इ)—जुञ्चयति। जुञ्चति। रङ्घ् (इ)—रङ्घयति,-ते। रङ्घति। रङ्घते गतौ। अनह् (इ)—अंहयति,-ते। अंहति। अंहते इति गतौ। रंह् (इ)—रंहयति,-ते। रंहति। रहयतीति त्यागे कथादौ भविष्यति। रंहति, रहतीति गतित्यागयोः। मनह् (इ)—मंहयति,-ते। मंहति। महयतीति कथादौ पूजायाम्। महतीति अपि। मंहते इति वृद्धौ। महीयत इति कण्ड्वादौ।

भसि, पिसि, लड़ि, दृहि, तुड़ि, नड़ि इत्यन्ये पठन्तीति स्वामी। तत्राद्यौ दृहिश्च मैत्रेयानुरोधेनास्माभिर्द्दण्डके पठिताः।

लण्ड् (इ)—लण्डयति,-ते लण्डति। लाड़यतीत्युप सेवायां गतम्। विलासे लड़तीति। तुड़्—तोड़यति,-ते।

तोड़ति। तुख्वत इति तोड़ने। तुड़ति, श्ये। नाड़यति,-ते नड़तीति गतौ श्पि।

१८७। पूरी, आप्यायने। (To satisfy)

पूर् (ई) सक, उ। पूरयति,-ते। ईदित्त्वान्निष्ठाया मनिड़र्थादस्यापि णिज्विकल्पितः, तेन पूरति। पूर्य्यत इति श्यनि।

१८८। रुज्, हिंसायाम्। (To kill)

रुज्, सक, उ। रोजयति,-ते। रुजतीति भङ्गे।

१८९। ष्वद, आस्वादने। (To ta-te)

स्वाद * इत्येके। संवरण इति चौरस्वामिप्रभृतयः। स्वद, सक, उ। स्वादयति,-ते। असिष्वदत्, त। स्वादते, स्वदते इति अपि। आस्वदीयाः।

१९०। आ धृषाद्वा। (To ridioule)

धृष प्रसहन इति वक्ष्यमाणसहिता विभाषितणिचो वेदितव्याः। आ कुस्मादिवदभिविधावाङ्। धृष् (आ) सक, प। (आ, वोप—) धर्षयति,-ते। अदीधृषत्,-त। धर्षति। धर्षयत —वोप—।

१९१। युज, पृच, संयमने। (To bind)

युज्, पृच्, सक, उ। योजयति,-ते। अयूयुजत्,-त। पर्चयति,-ते। अन्यत्र योजति। पर्चति। योक्ता। अयोचीत्। पर्चिता। अपर्चीत्। युनक्ति, युनक्ते, योगार्थे। (इ) युज्यत इति समाधौ। पृणक्ति सम्पर्के। पृङ्क्ते इति लुकि।

---

* ऋस्वोपधपाठोऽप्युपधाह्रस्वा स्वादयतीति रूपार्थः। 'सः स्विदिस्वदी'ति षत्वात् षनि सत्वमिति वक्ष्यमाणत्वात् सनन्तोऽपि सिस्वादयिषतीति रूपस्य च तुल्यत्वेऽपि असिस्वददिति रूपसिद्धिः प्रयोजनं, दीर्घोपधस्याषोपदेशत्वादभ्यासेण: परस्य सस्य षत्वं नेति।

१९२। अर्च्च, पूजायाम्। ( To worship )

अर्च्च, सक, उ। अर्च्चयति,-ते। अर्च्चतीति भ्वादौ।

१९३। षह, मर्षणे। ( To suffer )

सह, सक, उ। साहयति,-ते। साहयाञ्चकार। सहति, ससाह। साहयिता। सहिता। असीसहत्,-त। असहीत्। साहयित्वा। सहित्वा। सहत इति भ्यनुदात्तेत्।

१९४। ईर, क्षेपे। ( To throw )

ईर्, सक, उ। ईरयति,-ते। ऐरिरत्, त। ईराञ्चकार। ईरति। ऐरीत्।

१९५। ली, द्रवीकरणे। ( To melt )

ली, सक, उ। लाययति,-ते। अलीलयत्,-त। लयति। अलैषीत्। लेता। लीयते श्लेषणे, लिनातीति क्र्यादौ। *

१९६। वृजी, वर्ज्जने। ( To avoid )

वृज् (ई) सक, उ। वर्ज्जयति,-ते। वर्ज्जति। वर्ज्जिता। ईदित्त्वं निष्ठायामनिड़र्थम्—वृक्त इति। वृक्ते, वृणक्तीति। लुक्श्नमोः।

१९७। वृञ् आवरणे। ( To cover )

वृ (ञ) सक, उ। वारयति,-ते। वरति, वरते। वरिता वरीता। इटो दीर्घविकल्पः। आत्मनेपदेषु लिङ्सिचोः सनि च इड्विकल्पः, लिङि परस्मैपदे परे सिचि च इटो दीर्घाभावश्च वृङ्वत् ज्ञेयः ञित्त्वादुभयपदित्वमणिच्पक्षेऽपि वृणोति वृतत इति श्नौ। वृणीते इति सम्भक्तौ।

---

* विभाषा लीयते'रित्यात्वविकल्पमस्यापीति वदन् मैत्रेयो लीलीर्नुग्लुकाविव्यात्वपक्षे लुकौ विकल्पनात् लुकं चोदाजहार। अनात्वे तु लुक्, तदभावे वृद्ध्यौ च। तदयुक्तम्, श्यात्वे लीनाति लीयत्योर्यका निर्द्देश इति भाष्ये उक्तत्वात्, अस्यात्वाभावात्।

१९८ । जॄ, वयोहानौ । ( To grow old )

जॄ, अक, उ । जारयति,-ते । जरति । जरिता, जरीता । जीर्य्यते । जृणाति । च्चि इति नन्दी । च्चाययति,-ते । च्चयति । क्रैयादिकोऽप्येष इति नन्दी । च्चिणातीति ।

१९९ । रिच, वियोजनसम्पर्चनयोः । ( To separate, to join )

रिच्, सक, उ । रेचयति,-ते । अरीरिचत्,-त । रिरेचयिषति,-ते । रेचति । अणिच्पक्षे परस्मै, अनिट् । रेक्ता । विरेचने रिङ्क्ते, रिणक्तीति ।

२०० । शिष, असर्वोपयोगे । ( To have a tesidue)

शिष्, सक, उ । शेषयति,-ते । अशीशिषत्,-त । शेषति । शेष्टा । अशिक्षत् । शिनष्टीति विशेषणे । विपूर्वोऽतिशये— विशेषयति—ते । विशेषति ।

२०१ । तप, दाहे । ( To heat )

तप्, सक, उ । तापयति,-ते । अतीतपत्,-त । तपति । अताप्सीत् । तप्ता । तपतीति सन्तापे । ऐश्वर्य्ये—तपति, तपते ।

२०२ । तृप, तृप्तौ । ( To please )

सन्दीपन इति चीरस्वामी । तृप्, सक, उ । तर्पयति,-ते । तर्पति । तर्पिता । तृप्यतीति दिवादौ । तृपतीति शे ।

२०३ । छृदी, सन्दीपने । ( To kindle )

छृद, (ई) सक, उ । छर्दयति,-ते । छर्दति । छर्दिता । छर्दिष्यति । छृष्टः, छृष्टवान् । छृन्ते, छृणत्तीति दीप्तिदेवनयोः । धनपालशाकटायनौ तु छृदेत्यनीदितं पेठतुः, तत्र निष्ठायां छर्दितमिति । चीरस्वामिनस्तु, पान्तोऽयं, यदाहुः— चप, छृप, तृप, दृप, सन्दीपने । सन्दीपनक्रियायां चृपादय-

श्चत्वारो वर्त्तन्त इति। चर्पयति। छर्पयति। तर्पयति। दर्पयति।

२०४। दृभी, भये। ( To fear )

दृभ् (ई) अक, उ। दर्भयति,-ते। दर्भति। दर्भिता। दृब्धः—ईदित्त्वादनिट्।

२०५। दृभ, सन्दर्भे। ( To connect )

दृभ्, सक, उ। दर्भयति,-ते। अस्य अनोदित्त्वान्निष्ठायामपि सेट्त्वं विशेषः। तुदादौ दृभतीति।

२०६। श्रथ, मोचणे। ( To set free )

हिंसायामित्यपर इति पुरुषकारे। श्रथ्, सक, उ। श्रथयति,-ते। अशिश्रथत्,-त। श्रथति। शश्राथ। शश्राथीत। श्राथयतीति प्रयत्नेऽपि गतम्। श्रथयतीति कथादौ दौर्बल्ये।

२०७। मी, गतौ। ( To go )

मी, सक, उ। मायथति,- ते। अमीमयत्, त। माययाञ्चकार,-चक्रे। मयति। मेता। मिमाय, मिम्यतुः। अमैषीत्। मीतः। मीत्वा। 'सनि मीमे'त्यत्राचौरादिकैः साहचर्य्यात् मिमीषतीत्यत्रायमिम्भावो न स्यात्। मी (ञ) मिनाति, मिनीते, हिंसायाम्। मीयते, ङितः। मिनोति, मिनुते इति स्वादौ क्षेपणार्थस्य।

२०८। ग्रन्थ, बन्धने। ( To compose )

ग्रन्थ्, सक, उ। ग्रन्थयति,-ते। ग्रन्थति। अत्र देवमैत्रेयौ क्रथ हिंसायामिति स्वरितेतं पठित्वा क्राथयति,-ते। क्रथति,-ते।

२०९। म्रीक, मर्षणे। ( To touch )

म्रीक्, सक, उ। म्रीकयति,-ते। म्रीकति, म्रीकिता। सेचने म्रीकते।

२१०। चौक, च। (To touch)

चकारात् पूर्व्वोक्तोऽर्थ उक्तः। चौक्, सक, उ। चौकयति,-ते। चौकति। चौकिता।

२११। अर्द्द, हिंसायाम्। (To kill)

अर्द्द्, सक, उ। अर्द्दयति-ते। अर्द्दति, अर्द्दते। आर्द्दि-दत्,-त। आर्द्दीत्, आर्द्दिष्ट। अयं स्वरितेदिति देवमैत्रेयौ। आत्मनेपदीति शाकटायनः। गतियाचनयोरर्द्दतीति शपि।

२१२। हिसि, हिंसायाम्। (To kill)

हिन्स् (इ) सक, उ। हिंसयति,-ते। हिंसति। जिहिंस। हिंसिता। हिनस्तीति श्नमि।

२१३। आङः षदः पद्यर्थे। (To move)

पद्यर्थो गतिः। आ-सद्, सक, उ। आसादयति,-ते। आसीदतीति शपि सीदादेशः। आसत्ता। आसात्सीत्। षद्लृधातोः लृदित्वादङ्—आसदत्।

२१४। शुन्ध, शौचकर्म्मणि। (To purify)

शुन्ध्, सक, उ। शुन्धयति,-ते। शुन्धिता। शुन्धतीति शपि। शुद्धावकर्म्मकोऽयम्।

२१५। छद, आवरणे। (To cover)

स्वरितेदिति मैत्रेयदेवौ। परस्मैपदीति शाकटायनः। छद्, सक, उ। छादयति,-ते। छदति, छदते। छदयतीत्यूर्ज्जने घटादौ। छन्दयतीतीहैव संवरणे गतः।

२१६। जुष, परितर्कणे। (To think)

परितर्कणम् ऊहः, हिंसा वा। परितर्पणे परितृप्ति-क्रियायामिति चीरस्वामी। जुष्, सक, उ। जोषयति,-ते। जोषति। प्रीतिसेवनयोर्जुषत इति तुदादौ।

२१७। धूञ्, कम्पने। (To shake)

धू (ञ) सक, उ। धूनयति,-ते। धावयति,-ते। धवते। 'धूञ्प्रीञोर्नुग्वक्तव्य' इति नुक्। धूञ्प्रीञात्योरिति हरदत्त-कौमारादीनां पाठः। तन्मते प्रीञातिसाहचर्य्यात् धूञोऽपि क्रैयादिकस्यैव नुका भाव्यम्। अतएवात्र मैत्रेयो धावयतीत्यु-दाजहार। एवञ्च स्वादौ दीर्घवादिनामपि धावयतीति भवति। धुनाति, धुनीते इति क्र्यादौ। धुनोति धुनुते इति स्वादौ। धूनोति धूनुते इति तत्रैव विधूनने। धुवतीति कुटादिः।

२१८। प्रीञ्, तर्पणे। (To please)

प्री (ञ) सक, उ। अत्र केचन धातुवृत्तिकारा 'धूञ्प्रीञो-र्नुग्वक्तव्य'इति पठन्तः प्रीणयतीत्युदाहरन्ति। हरदत्तस्तु धूञ्-प्रीञोरिति श्नानुकरणाद्दैवादिकस्य नेत्याह। दैवादिकग्रहणे-नात्र चौरादिकोऽप्युपलक्षयितव्य इति पुरुषकारे। तन्मते प्राययतीति भाव्यम्। मैत्रेयोऽप्यनेनैवाभिप्रायेण प्राययती-त्युदाजहार।

२१९। श्रन्थ, ग्रन्थ, सन्दर्भे। (To compose)

श्रन्थ्, ग्रन्थ् सक, उ। श्रन्थयति,-ते। ग्रन्थयति,-ते। अशश्रन्थत्,-त। अजग्रन्थत्-त। श्रन्थति। ग्रन्थति। 'णिश्रन्थि-ग्रन्थी'ति वचनात् श्रन्थयते, ग्रन्थयते स्वयमेवेति भवति। श्रथ्-नाति, ग्रथ्नाति—श्नि। श्रन्थते, ग्रन्थते ग्रैथिल्यकौटिल्ययोः।

२२०। आपॢ, लम्भने। (To obtain)

आप् (ॢ) सक, उ। आपयति,-ते। ॡदित्वात् अङि —आपत्। 'तपिं तिपि'-मित्यादिकारिकापाठादनिट्त्वम्।—आप्ता। आप्स्यति।

२२१। तनु, श्रद्धोपकरणयोः। (To confide in, to assist)

तन् (उ) सक, उ। तानयति,-ते। उपसर्गाच्च दैर्घ्ये—

वितानयति,-ते। तनति, वितनति। तनुते इति विस्तारे। अत्र क्वचित् चन श्रद्धोपहिंसनयोरिति पठ्यते। चानयति। चनति। चनयतीति घटादौ।

२२२। वद, सन्देशवचने। (To inform)

स्वरितेत्, शाकटायनस्य मते त्वात्मनेपदी। वद, सक, उ। वादयति,-ते। वदति। वदते, वदति, व्यक्तवचने।

२२३। वच, परिभाषणे। (To speak)

वच्, सक, उ। वाचयति,-ते। वचति, वक्ता। अवाचीत्।

२२४। मान, पूजायाम्। (To worship)

मान्, सक, उ। मानयति, ते। मानति। मानिता। मानयते इति स्तम्भे। मन्यते, मनुते इति दिवादौ तनादौ च। भौवादिकस्य विचारणार्थस्यैव नित्यसनन्तत्वमित्यस्मात् लड़ाद्युत्पत्तिः।

२२५। भू, प्राप्तौ आत्मनेपदी वा। *(To obtain)

भू, सक, आ। भावयते। अबीभवत। भावयाञ्चक्रे। [भवति,] भवते। भविता।

* अयं प्राप्तौ वा णिचमुत्पादयति आत्मनेपदी चेत्यर्थः। अत्र केचिद् [illegible] णिच्सन्नियोगेनैव, तेनान्यदा नेति। नैवं यत्तु आकुस्मीयप्रकरणे भू प्राप्तौ इति [illegible] न्यासेन णिच्यात्मनेपदे वाग्रहणाण्णिचो विकल्पे च सिद्धे पुनरिह पठितं [illegible] वचनाण्णिजभावे आत्मनेपदमित्याह। इदं पुरुषकारे दूषितम्। आकुस्मीयकाण्डे भू प्राप्तौ वेति पठ्यमाने अनन्तरप्रकृतस्यात्मनेपदीति वचनस्य विकल्पः स्यात्, न पुनर् [illegible] णिच इति ण्यभावे परस्मैपदमुदाहरन्तौ धनपालशाकटायनावप्येतौ [illegible] चोक्तम्। तथा भूसूत्रे सुधाकरोऽपि भवत इति प्रस्तुतस्य वात्मनेपदे [illegible] योगेन समर्थनात् णिच्सन्नियोगेनात्मनेपदित्वादसाधनम् अतएव [illegible] प्रयुज्यत इत्याह। अन्ये तु पुराणव्याकरणेषु भुवो [illegible] प्रत्ययान्तादात्मनेपदार्थः। प्रकृते तु केवलादिति [illegible]

२२६। गर्ह, निन्दायाम्। (To censure)

गर्ह्, सक, उ। गर्हयति,-ते। गर्हति। गर्हते इति अपि।

२२७। मार्ग, अन्वेषणे। (To seek)

मार्ग्, सक, उ। मार्गयति,-ते। मार्गिता। मार्गमाण इति चानशीति माधवः। मृगयत इति कथादौ।

२२८। कठि, शोके। (To be anxious)

कण्ठ् (इ) अक, उ। कण्ठयति,-ते। कण्ठति। कण्ठिता। कण्ठत इति अपि। कठतीति कृच्छ्रजीवने। कठिः प्रायेण उत्पूर्वः—उत्कण्ठायाम्।

२२९। मृजू, शौचालङ्करणयोः। (To cleanse, to adorn)

मृज् (ऊ) उ। मार्ज्जयति,-ते। मार्ज्जति। मार्ज्जिता। मार्ष्टा। ऊदित्त्वादिड्विकल्पः। निष्ठायाम्—मृष्टः, वृद्ध्यादि मार्ष्टिवत्। मार्ज्जयतीति शब्दे गतः।

२३०। मृष, तितिक्षायाम्। (To endure)

पुरुषकारेणायं स्वरितेदित्युक्त्वा शाकटायनोऽयमात्मनेपदीत्युक्तम्। मृष्, सक, उ। मर्षयति। मर्षयते। मर्षति। मर्षते। मृष्यति मृष्यत इति दिवादौ सेचने। अपि—मर्षति।

२३१। धृष, प्रसहने। (To offend)

धृष्, अक, उ। धर्षयति,-ते। धर्षिता। शाकटायनमते आदित्वात् धृष्टः। धृष्णोतीति श्नौ। आधृषीयाः। युज पृच इत्यारभ्य धृषपर्य्यन्तेभ्यो विभाषया णिच् भवति। अत्र पश बन्धन इति केचित् पठन्ति।

वचनानुरोधेन सन्नियोगन्यायो बाध्यत इति। तथाच पर्षाम्बधं त्यत्र केचिन्न वर्षास्. भवति वर्षास् भवत इत्यात्मनेपदं दर्शितम्।

## अदन्तचुरादयः ।

२३२ । कथ, वाक्यप्रबन्धे (To speak)

कथ,सक,उ । कथयति,-ते । कथयेत्,-त । अचकथत् । कथ्येत् । कथयामास । शाकटायनमते कथापयति । एतदादयोऽदन्ताः । तत् फलञ्च कथयतीत्यादौ अल्लोपस्य स्थानिवद्भावाद् यथायोगं वृद्धिगुणयोरभावः । तथा अचकथदित्यत्र 'सन्वल्लघु-' इत्यस्य 'दीर्घो लघो'रिति दीर्घस्य चानग्लोप इति निषेधः । अन्यदपि प्रयोजनं तत्र तत्र वक्ष्यते । कथयित्वा, प्रकथय्य । कथितः । कथा । कथकः । सम्—मिथो-भाषणम् ।

२३३ । वर, ईप्सायाम् । (To desire)

वर, सक, उ । वरयति,-ते । वारयतीति वृत्रः ।

२३४ । गण, संख्याने । (To count)

गण, सक, उ । गणयति,-ते । अजीगणत्,-त । अजगणत्,-त । गणयते गणः स्वयमेवेति हरदत्तः । गणिका—ण्वुल् । गणिकानां समूहः गाणिक्यम्—यञ् ।

२३५ । शठ, श्वठ, सम्यगवभाषणे । (To speak)

अभाषण इति केचित् । शठ, श्वठ, सक, उ । शठयति,-ते । अशशठत्,-त । श्वठयति,-ते । अशश्वठत्,-त । शठिता । श्वठिता । शठः । शाठयति, श्वाठयतीति गत्यादौ गतम् । शाठयते इति श्लाघायाम् । शठतीति कैतवादौ ।

२३६ । पट, वट, ग्रन्थे । (To string)

वट वेष्टने इति क्षीरस्वामी । पट, वट, अक, उ । पटयति,-ते । अपीपटत्,-त । पाटयतीति भाषार्थे गतः । पटतीति गतौ । वट—वटयति,-ते । अववटत्,-त । वेष्टने वटति । तथा कारिते वाटयति । वाटयतीति परिभाषणे घटादिः ।

२३७। रह, त्यागे। (To abandon)

रह, सक, उ। रहयति,-ते। अररहत्,-त। रहिता। रहित्वा। रहितः। विरहः। रहतीति अपि। गतौ रंहति।

२३८। स्तन, गदी, देवशब्दे। (To thunder)

स्तन, गद, (ई) अक, उ। स्तन—स्तनयति,-ते। अतस्तनत्,-त। तिस्तनयिषतीत्यत्राषोपदेशत्वान्न षत्वम्। अभिनिस्तनो मेघस्येत्यत्र अभिनिष्टानवन्नेयं शब्दविशेषस्य संज्ञे'त्यभिनिसस्त' इति षत्वं न भवति। स्तनयित्नुः—इत्नुच्। गद—गदयति,-ते। अजगदत्,-त। गदयिता। स्तनति। गदति। स्तनगदी इति द्विवचननिर्देशो वैचित्र्यार्थ इति मैत्रेयः। अजदन्त्यपरा इति षोपदेशलक्षणे ष्मिङ्ष्विदादीनामेकस्वराणां साहचर्य्यात् अनेकस्वराणां स्तनादीनामेषां न ग्रहणम्।

२३९। पत, गतौ वा। (To fall)

वाशब्दं केचिन्न पठन्ति। अयं विकल्पेन णिचमुत्पादयति। *पत, सक, उ। पतयति,-ते। पतति। अपपतत्-त। अपतीत्। पतयालुः—आलुच्।

२४०। पष, अनुपसर्गात्। (To go)

गतावित्यत्र सम्बध्यते। पष, सक, उ। पषयति,-ते। सोपसर्गात् प्रपषतीति। अत्र केचित् तालव्यान्तं पठन्ति, तन्न सर्वैराद्रियते।

२४१। स्वर, आक्षेपे। (To blame)

स्वर, सक, उ। स्वरयति,-ते। स्वरतीति शब्दोपतापयोः।

---

* भ्वादौ पाठादेव पततीति सिद्धे णिज्विकल्पस्य प्रयोजनम् असानेकाच्त्वात् मताबकारेति आम्सिद्धिः। अपतीदित्यत्र लृदित्त्वाभावात् सिच् इति।

२४२। रच, प्रतियत्ने। (To arrange)

रच, सक, उ। रचयति,-ते। रचयेत्, रचयेत। अररचत्,-त। रचनम्। रचना। रचयिषति। रचयित्वा। विरचय्य।

२४३। कल, गतौ संख्याने च। (To go, to count)

कल, सक, उ। कलयति,-ते। कलयाञ्चकार,-चक्रे। अचकलत्,-त। कलयित्वा। संकलय्य। कालयतीति क्षेपे। कलतीति भ्वादौ।

२४४। चह, परिकल्कने। (To be wicked)

परिकल्कनं दम्भः। चह, सक, उ। चहयति,-ते। मित्प्रकरणे इह च पाठस्य प्रयोजनं तत्रैवोक्तम्। चहतीति भ्वादौ।

२४५। मह, पूजायाम्। (To worship)

मह, सक, उ। महयति,-ते। महतीति अपि। महि वृद्धावित्यस्य मंहते इति क्षीरस्वामी।

२४६। सार, कृप, श्रथ, दौर्बल्ये। (To be weak)

सार, कृप, श्रथ। अक, उ। सारयति,-ते। कृपयति,-ते।-कल्पयतीति, कल्पते इति च मतम्। श्रथयति,-ते। श्राथयतीति प्रयत्ने, मोचने श्राथयतीति, श्रथतीति आष्टपीयः।

२४७। स्पृह, ईप्सायाम्। (To desire)

स्पृह, सक, उ। पुष्पेभ्यः स्पृहयति,-ते। अपस्पृहत्,-त। स्पृहयिष्यति "स्पृहेरीप्सित" इति ईप्सितस्य सम्प्रदानत्वम्। स्पृहयिता। पिस्पृहयिषति। स्पृहयित्वा। स्पृहयालुः—आलुच्।

२४८। भाम, क्रोधे। (To be angry)

भाम, अक, उ। भामयति,-ते। भामते इति अपि। भामिनी।

२४९। सूच, पैशुन्ये। (To betray)

सूच, अक, उ। सूचयति,-ते। असुसूचत्। सूचयाञ्चकार-

चक्रे। सोसूच्यते—यङ्, अजन्तलचणस्यैकाज्विषयत्वादषोपदेशत्वात् न षत्वम्।

२५० । खेट, भचणे । ( To eat )

तृतीयान्त इति दुर्गः। खेट, सक, उ। खेटयति,-ते। अचिखेटत्,-त। आखेटना। खोट इत्यन्ये—खोटयति। खेटतीति अपि।

२५१ । चोट, चेपे । ( To throw )

चोट, सक, उ। चोटयति,-ते। चोटयिता। अचुचोटत्,-त।

२५२ । गोम, उपलेपने । ( To smear )

गोम, सक, उ। गोमयति,-ते। अजुगोमत्,-त। गोमयित्वा। गोमयः।

२५३ । कुमार, क्रीडायाम्। ( To play )

कुमार, अक, उ। कुमारयति,-ते। अचुकुमारयत्,-त।

२५४ । शील, उपधारणे। ( To practise )

उपधारणमभ्यासः। शील, सक, उ। शीलयति,-ते। अशीलयत्,-त। शीलयित्वा। अनुशील्य। शीलितः—क्तः। शीलतीति समाधौ।

२५५ । साम, सान्त्वप्रयोगे। ( To conciliate )

साम, सक, उ। सामयति,-ते। अससामत्,-त। सामयामास। साम सान्त्वन इति पठितस्य तु पाठोऽग्लोपित्वात् अससामदिति सिद्धये।

२५६ । वेल, कालोपयोगे। (To count the time )

वेल, अक, उ। वेलयति,-ते। अविवेलत्,-त। वेला। काल इत्यपि धातुरिति आत्रेयः। कालयति,-ते। अचकालत्,-त। कालिता। कालयिता। वेलयतीति अपि चलने

२५७ । पल्यूल, लवनपवनयोः । ( To cut, To wash in lye )

पल्यूल, सक, उ । पल्यूलयति,-ते । अपपल्यूलत्,-त । पल्यूलनं शोधनद्रव्यमिति नास्य पल्यूलवासः, पल्यूलयेयुरित्यत्र भाष्ये ।

२५८ । वात, सुखसेवनयोः । ( To make happy )

गतिसुखसेवनेष्वित्यन्ये । वात, अक, उ । वातयति-ते । अववातयत्, त ।

२५९ । गवेष, मार्गणे । ( To seek )

मार्गणमन्वेषणम् । गवेष, सक, उ । गवेषयति,-ते । अजगवेषत्,-त । जिगवेषयिषति । गवेषयित्वा । गवेषितः । गवेषणा—युच्, टाप् ।

२६० । वास, उपसेवायाम् । ( To perfume )

वास, सक, उ । वासयति,-ते । अववासयत्,-त । वासयिता । वासना—युच् । स्नेहनादौ वासयतीति गतम् । वसतीति वस निवासे । अयं कथादावपि । वस्ते इत्याच्छादने । वसयतीति स्तम्भे ।

२६१ । निवास, आच्छादने । ( To cover )

निवास, सक, उ । निवासयति-ते । अनिनिवासयत्,-त । अत्र केचित्—"पितेव पुत्रं दसये वचोभि"रित्यत्र घुरे पितेव पुत्रं दसये निरवसायामि स्तुतिभिरिति व्याख्यानाहुः निरवसानः इति पठन्ति ।

२६२ । भाज, पृथक्कर्म्मणि । ( To divide )

भाज, सक, उ । विभाजयति,-ते । विभाजयिष्यति । विभाजितः ।

२६३ । सभाज, प्रीतिदर्शनयोः । ( To serve, to please )

प्रीतिसेवनयोरित्यन्ये । सभाज, सक, प । सभाजयति,-ते । असभाजत्, त । सभाजयित्वा । संसभाज्य । सभाजयितुम् ।

२६४ । ऊन, परिहाणे । ( To lessen )

ऊन, सक, उ । ऊनयति,-ते । औनिनत्,-त । माभवानूनिनत् । माषेण ऊनः—माषोनः ।

२६५ । ध्वन, शब्दे । ( To sound )

ध्वन, अक, उ । ध्वनयति,-ते । ध्वनतीति अपि ।

२६६ । कूट, परीतापे । ( To burn )

परिदाह इत्यन्ये । कूट, सक, उ । कूटयति,-ते । अचुकूटत्,-त । कूटयतीति अप्रसादे ।

२६७ । सङ्केत, ग्राम, कुण, गुण, चामन्त्रणे । ( To invite)

चकारेण कूट इत्यपीति मैत्रेयः । कूट, सङ्केत, ग्राम, गुण, —सक, उ । कूटयति,-ते । सङ्केतयति,-ते । अससंकेतयत्,-त । सिसङ्केतयिषति,-ते । ग्रामयति,-ते । कूणयति,-ते । गुणयति,-ते । कुणतीति शब्दोपकरणयोः । केत श्रावणे निमन्त्रणे चेति केचित् । केतयति,-ते । निकेतयति,-ते ।

२६८ । स्तेन, चौर्य्ये । ( To steal )

स्तेन, सक, उ । स्तेनयति,-ते । अतिस्तेनत्,-त । स्तेनः । स्तेयम् । 'स्तेनाद्यन्नलोपश्चे'ति भावकर्म्मणोर्यन्नलोपौ । स्तेन्यं—स्तेनादीति योगविभागात् यत् ।

आगर्वादात्मनेपदिनः । अतः परं गर्व माने इति वक्ष्यमाणपर्य्यन्ता आत्मनेपदिनः ।

चुर इत्यारभ्य स्तेनेति पर्य्यन्तेभ्यो अनुबन्धवर्जितेभ्यः यदुभयपदं लिखितं तन्मैत्रेयमात्रमतमनुसृत्य । अपरेषां मते तु तत्र तत्र परस्मैपदं ज्ञातव्यम् ।

## अथात्मनेपदिनः ।

२६९ । पद, गतौ । ( To go )

पद, सक, आ । पदयते । अपपदत । पदयमानः । पद्यत-इति दिवादौ ।

२७० । गृह, ग्रहणे । ( To take )

गृह, सक, आ । गृहयते । गृहयाञ्चक्रे । अजगृहत । गृहयित्वा । गृहितः । गृहयालुः—आलुच् । गर्हत इति गृहे-र्गर्हेश्च अपि । गृह्णाति, गृह्णीत इत्युपादानार्थः क्र्यादौ । गर्हतीति निन्दार्थस्य ।

२७१ । मृग, अन्वेषणे । ( To seek )

मृग, सक, आ । मृगयते । अममृगत । मिमृगयिषते । मृगयित्वा । मृग्यतीति कण्ड्वादिपाठादिति मैत्रेयः । मार्गयति । मार्गतीति मार्गेराधृषीयस्य । मार्गणम् ।

२७२ । कुह, विस्मापने । ( To surprise )

कुह, सक, आ । कुहयते । अचुकुहत । कुहयिता । कुहितः । कुहना । कुहः । बाहुलकादूकारप्रत्यये कुहूशब्दमाह मैत्रेयः ।

२७३ । शूर, वीर, विक्रान्तौ । ( To be powerful )

शूर, वीर, अक, आ । शूरयते । अशुशूरत । शूरयिता । वीरयते । शूर्यते इति हिंसास्तम्भनयोः ।

२७४ । स्थूल, परिबृंहणे । ( To become stout )

स्थूल, अक, आ । स्थूलयते । अतुस्थूलत । स्थूलः । स्थविष्ठः, स्थवीयान् । 'स्थूलदूरे'त्यादिना यणादि लुप्यते, पूर्वस्य च गुणः । पृथ्वादिष्वपाठात् इमनिजित्यस्य नास्तीति नोदाहृतम् । स्थव-यति । स्थविष्ठवदिति यणादिलोपो गुणश्च ।

२७५। अर्थ, उपयाच्ञायाम्। ( To request )

अर्थ, सक,आ। अर्थयते। आर्त्तिथत। अर्थयिता। अर्थयिष्यते। अर्त्तिथयिषते। "प्रार्थयन्ति शयनोत्थितं प्रिया" इत्यादि अदन्तात् तत्करोतीति णिचि नेयम्।

२७६। सत्र, सन्तानक्रियायाम्। ( To spread )

सत्र, सक, आ। सत्रयते। अससत्रत। सत्रम्—यज्ञविशेषः।

२७७। गर्व, माने। ( To be proud )

गर्व,अक, आ। गर्वयते। अजगर्वत। गर्वयिता। गर्वितः। गर्वतीति अपि।

## परस्मैपदिनः। [ मैत्रेयमते उभयपदिनः। ]

२७८। सूत्र, वेष्टने। ( To tie )

अन्ये तु विमोचन इति पठन्तो विमोचनं मोचनाभाव इति व्याचक्षते। ग्रहनमित्यपरे। सूत्र, सक प। सूत्रयति। असुसूत्रत्। सोसूत्र्यते।

२७९। मूत्र, प्रस्रवणे। ( To discharge urine )

मूत्र, सक, प। मूत्रयति। अमुमूत्रयत्। मूत्रयिता। मूत्रयित्वा। मोमूत्र्यते।

२८०। रुक्ष, पारुष्ये। ( To be rough or harsh )

रुक्ष, अक, प। रुक्षयति। अरुरुक्षत्। रुक्षयिता। रुक्षतीति अपि।

२८१। पार, तीर, कर्म्मसमाप्तौ। ( To bring to a conclusion )

पार, तीर, सक, प। पारयति। अपपारत्। पारयिता। पिपारयिषति। तीरयति। अपपारयत। अतितीरयत्।

२८२ । पुट, संसर्गे । ( To be in contact )

पुट, अक, प । पुटयति । अपुपुटत् । पोटयतीति भाषार्थो दण्डके गतः । पुटतीति संश्लेषे तुदादिः ।

२८३ । कत्र, शैथिल्ये । ( To slacken )

कत्र, अक, प । कत्रयति । अचकत्रत् । कत्रयिता । कत्रिः—इन् । कात्रेयम्—ढकञ् । कुत्सितास्त्रयः कत्रयः इति वा कत्रिशब्दव्युत्पत्तिः । अत्र दुर्गः—कर्त्तेत्यपि पठतीति माधवः—कर्त्तयति । अचकर्त्तत्-त । चिकर्त्तयिषति, ते । कर्त्तयित्वा । वोपदेवमते 'कर्त्त' इति १ । उपर्य्यधोरेफयुक्तस्तकारः—२ । अधोरेफयुक्तस्तकारः ३ । ऊर्द्ध्वरेफयुक्तस्तकारश्चेति त्रिविधो धातुरयम् । पक्षे कात्रापयति कत्रापयति । कर्त्तापयतीत्यादि केचित् ।

२८४ । बष्क, दर्शने । ( To see )

बष्क, सक, प । बष्कयति । नायमन्यत्र दृश्यते ।

२८५ । चित्र, चित्रकरणे । ( कदाचिद्दर्शने, अद्भुतदर्शने च । )

( To paint, to show any thing wonderful )

चित्रकरणमालेख्यकरणमिति मैत्रेयः, चित्र आलेख्यकरण इति दुर्ग इति माधवः । चित्र, सक, प । चित्रयति । चित्रयिता । चित्रयाञ्चकार । अचिचित्रत् । चिचित्रयिषति । चित्र्यते । अचित्रि । चित्रयित्वा । चित्रितः । चित्र इत्ययं कदाचिद्दर्शनेऽद्भुतदर्शने च णिचमुत्पादयति । चित्रयति ।

चित्रीयते इति चित्रप्रातिपदिकादाश्चर्य्यवृत्ते'र्नमोवरिवश्चित्रङः क्यजि'ति क्यच्, तत्र हि 'चित्रङ् आश्चर्य्य इत्युच्यते, प्रातिपदिकस्य ङित्त्व'मवयवेऽकृतं लिङ्गं समुदायस्य विशेषकमिति न्यायात् प्रत्ययान्तात्तङर्थम् ।

२८६। अंस, समाघाते। ( To distribute )

अंस, अक, प। अंसयति। अंसयाञ्चकार। आंसयिषत्। आंसिसत्। अंसिसयिषति। अंसयित्वा। अंसः।

२८७। वट, विभाजने। ( To divide )

वट, सक, प। वटयति। अववटत्। विवटयिषति।

२८८। लज, प्रकाशे। ( To appear )

लज, सक, प। लजयति। अललजत्। पुनःपुनःपाठोऽर्थभेदात्। वटि,लजि इत्येके। वण्ट (इ)—वण्टयति। लञ्ज(इ)—लञ्जयति। अदन्तेषु पाठबलाददन्तत्वे वृद्धिरित्यपरे। वण्टापयति, लञ्जापयति। शाकटायनमते कथादीनामागमे पुकि वृद्धौ कथापयतीत्यादि। तत्सूत्रम्—'कथादिपायिस्फायो णौ पुग्लुग्वत्व'मिति। *

२८९। मिश्र, सम्पर्के। ( To mix )

मिश्र, सक, प। मिश्रयति। अमिमिश्रत्। गुड़मिश्रः।

२९०। संग्राम, युद्धे। ( To fight )

अयमनुदात्तेत्। तथाच तृतीयादिभ्य इत्यत्र कैयटे, 'संग्रामयतिरनुदात्तेद्बोद्धव्य'इति। पदमञ्जर्याञ्च'अनुदात्तेदयं संग्रामयतिरिष्यत' इति। 'असंग्रामयत शूर' इति भाष्ये च प्रयोगः। संग्राम, अक, आ। संग्रामयते। संग्रामयाञ्चक्रे। संग्रामयिता। अससंग्रामत। संग्राम्यते। असंग्रामि। † सिसं-

---

* एतन्मते पूर्वंच परत्र [illegible] स्थितानां सर्वेषाम् अदन्तधातूनां विभाषया पुगागमेन एवं द्वैविध्यं ज्ञेयम्। अस्माभिः पूर्वं [illegible] नोल्लेख्यमेतत्।

† संग्रामशब्दात् तत्करोतीति णिचापि सिद्धाविह संग्रामस्य पाठः सोपसर्गात् संघातात् प्रत्ययार्थः, तेन असंग्रामयत इत्युपसर्गात् पूर्वमड् भवति। तथा संग्रामयित्वेत्यत्र अधीत्येत्यादिवत् ल्यप् न भवति, सिसंग्रामयिषत इत्यत्र समो द्वित्वम् अतएव

ग्रामयिषते। सिसंग्रामयिषुः। संग्रामयित्वा। संग्रामः। वोप देवमते संग्राम ङ ञ त क् युद्धे इति गणपाठः। ञ—संग्रामयति,-ते। ञित्वे नैवोभयपदसिद्धौ ङित्करणमफलवत् कर्त्तर्य्यात्मनेपदार्थम्। एवं सर्वत्रे ति दुर्गादासः। संग्रामयतीति दुर्गः।

२८१। स्तोम, श्लाघायाम्। ( To praise )

स्तोम, अक, प। स्तोमयति। अतस्तोमत्। तुस्तोमयिषति। स्तोमः। अग्निष्टोमः। 'अग्नेः स्तुत्स्तोमे' इति षत्वम्।

२८२। छिद्र, कर्णभेदने। ( To perforate )

करणभेदन इति गुप्तः। छिद्र, सक, प। छिद्रयति। अचिच्छिद्रत्। छिद्रयित्वा। छिद्रितः। मैत्रेयस्तु छिद्रयतीति कर्णयतीति कर्णमपि पृथग् धातुमुक्त्वा। कर्णेन भाषयति कर्णयतीति व्याचष्टत इत्याह। छिद्रत्वभेद इति वोपदेवः। भेद इह रन्ध्रकरणमिति। पचे छिद्रापयति भाण्डं बालक इति दुर्गादासः। छिद्रम्।

२८३। अन्ध, दृष्ट्युपघाते। ( To become blind )

उपसंहार इत्येके। अन्ध, अक, प। अन्धयति। आन्दिधत्। अन्दिधयिषति। ( अन्धापयति )। अन्धः।

२८४। दण्ड, दण्डनिपातने। ( To punish )

अयं द्विकर्म्मक इति नाथतौ। दण्ड, अक, प। दण्डयति।

२८५। अङ्क, पदे लक्षणे च। ( To page, to mark )

अङ्क, सक, प। अङ्कयति ( अङ्कापयति ) आञ्चिकत्। अङ्कितः। अङ्कते इति भापि। तत्रैव कुटिलायां गतौ अकति।

संघातादुत्पत्तिवचनादन्यत्र धातूपसर्गसमुदयात् प्रत्यये विहिते उपसर्गाः पृथक् क्रियन्त इति ज्ञाप्यन्ते। परिवृढ्य्य त्यच ल्यबादि भवति। अस्यानुदात्तत्त्वमपाणिनीयमिति पाठस्य तदर्थतया न ज्ञापकत्वभङ्गः।

२९६। अङ्क च ( To page, to mark )

चात् पूर्वोक्तः अर्थः। अङ्क, सक, प। अङ्कयति। ( अङ्कापयति ) आञ्चिकत्। अङ्कतीति गतौ।

२९७। सुख, दुःख, तत्क्रियायाम्। (To make happy, to make sorry )

तच्छब्देन सुखदुःखे प्रातिपदिकार्थौ निर्दिश्येते। 'प्रातिपदिकाद्धात्वर्थे' इति सिद्ध इहानयोः पाठः सोपसर्गात् प्रत्ययार्थं इति मैत्रेयः। सुख, दुःख, अक, प। सुखयति। सुखयिता। असुसुखत्। सुसुखयिषति। सुखयित्वा। सुखितः। ( सुखापयति ) दुःखयति। 'सुखादिभ्यः कर्त्तृवेदनायामिति क्यङि 'अकृत्सार्वधातुकयो'रिति दीर्घे सुखायते, दुःखायते। कर्त्तृ इत्यविभक्तिको निर्देशः, तेन सुखं दुःखं वा वेदयते सुख्यति, दुःख्यतीति कण्ड्वादियगन्तस्य।

२९८। रस, आस्वादनस्नेहनयोः। ( To taste, to relish )

रस, सक, प। रसयति। अररसत्। रसः। रसतीति शपि।

२९९। व्यय, वित्तसमुत्सर्गे। ( To give wealth )

व्यय, सक, प। व्ययति। अवव्ययत्। विव्यययिषति। व्ययित्वा। व्ययितः। व्ययः। व्ययत इति गतौ।

३००। रूप, रूपक्रियायाम्। ( To form )

रूपस्य दर्शनं करणं वा रूपक्रियेति स्वामी। रूप, अक, प। रूपयति। अरुरूपत्। निरूपयतीत्यनेकार्थत्वाद्विचारणे।

३०१। छेद, द्वैधीकरणे। ( To cut )

छेद, सक, प। छेदयति। अचिच्छेदत्। छिनत्तीति रुधादौ। क्वचिदिह छद अपवारण इति पठ्यते।

३०२। लाभ, प्रेरणे। ( To throw )

लाभ, सक, प। लाभयति। अललाभत्। लभते प्राप्त्यर्थे।

३०३। व्रण, गात्रविचूर्णने। ( To wound )

व्रण, अक, प। व्रणयति। अवव्रणत्। व्रणतीति शब्दार्थे।

३०४। वर्ण, वर्णक्रियाविस्तारगुणवचनेषु। ( To paint, to delineate, to extend, to praise, to describe)

वर्णक्रिया वर्णकरणम्। वर्ण, सक, प। सुवर्णं वर्णयति। कथां वर्णयति विस्तृणातीत्यर्थः। राजानं वर्णयति स्तौतीत्यर्थः। वर्णयाञ्चकार। वर्णयिता। वर्णयिष्यति। अववर्णत्। विवर्णयिषति। वर्ण्यते। अवर्णि। वर्णयित्वा। निर्वर्ण्य। वर्णितः। वर्णं गृह्णाति—वर्णयति सत्यापेत्यादिना णिच्।

"बहुलमेतन्निदर्शनम्।"

क्वचित्तु दर्शनमिति पठ्यते। तत्रापि भावे निष्ठेति निदर्शनमित्येवार्थः। एतत् चुरादावदन्तधातुनिदर्शनं बहुलं वेदितव्यम्। अतोऽनुक्ता अपि धातवोऽदन्ता वेदितव्याः।* यथा—

१। पर्ण, हरितभावे। ( To mak green )

पर्ण, अक, प। पर्णयति। अपपर्णत्। पिपर्णयिषति।

२। विष्क, दर्शने। ( To see )

विष्क, सक, प। विष्कयति। अविविष्कत्।

---

* अत्र रमानाथकृता व्याख्या यथा—यदेतच्चुरादिषु अदन्तधातुनिदर्शनं तद्बहुलं वेदितव्यम्। अतोऽनुक्ता अपि धातव ऊहनीयाः, यथा निवासे वसयति। सञ्चलने प्रेङ्खलयति, आन्दोलयति। विलोड़ने ओजयति। आवरणेऽवगुण्ठयति। अवज्ञायाम् अवधीरयति। आवरणे तुत्थयति इत्यादि। शाकटायनादिमते अदन्तधातुभ्यो विभाषया वृद्धौ पुगागमे च कथयति कथापयतीत्यादयः प्रयोगाः।

३। चप, प्रेरणे। ( To direct )

चप, सक, प। चपयति। अचचपत्।

४। वस, निवासे। ( To dwell )

वस, अक, प। वसयति। भ्वाद्यदादिक्र्यादिष्वप्ययम्।

५। तुत्थ, आवरणे। ( To cover )

तुत्थ, सक, प। तुत्थयति। एवं गड़यति। आन्दोलयति। डलयति। वर्णयति। स्फुटयति। स्फुटा, स्फुटितः, अवधीरयतीत्यादयो यथाभिधानमिति मैत्रेयादयः। अन्ये तु भ्वादिष्वेतदन्तासु दशगणेषु धातूनां पाठो निदर्शनाय। तेन स्तन्भुप्रभृतयः सौत्राः, चुलुम्पादयो वाक्यकारीयाः, प्रयोगसिद्धा विक्लवत्यादयश्च गृह्यन्त इति। "विगलन्त्याशु जीमूता विक्लवन्ते दिवि ग्रहाः। चयन्ति विद्युतः प्रावृट् चीयन्ते कामविग्रहाः॥" इत्यादयः प्रयोगा उपपद्यन्त इत्याहुः।

गर्वादिभिन्नेभ्यः सर्वेभ्य एव ण्यन्तेभ्यः चुरादिधातुभ्य उभयपदञ्चवतीति केचित्॥

---

## अथ सौत्रा धातवः।

'ऋतेरीयङ्'।—अयं स्वार्थे। ऋतिर्घृणायां, सा चेह घृणा जुगुप्साकृपयोरित्युक्तापि ऋतीयाशब्दस्य निघण्टुषु निरूढ़ा जुगुप्सैवेति व्याख्यातारः। अत्र प्रत्ययस्य कित्त्वेनापि गुणाभावस्य सिद्धौ ङित्करणमात्मनेपदार्थमपि।

ऋत, सक, आ। ऋतीयते, ऋतीयेते। ऋतीयाञ्चक्रे इत्यादि। ङिल्लकारेषु अजादित्वात् 'आटश्चे'ति वृद्धौ आर्त्तीयत, आर्त्तीयिष्ट, आर्त्तीयिषत इत्यादि। यदायमवर्णान्तादुपसर्गात् परो भवति, तदा 'उपसर्गात् ऋतिधाता'विति वृद्धौ प्रार्त्तीयते,

उपार्त्तीयते इत्यादि भवति (१)। यदायमीयङ् आयादय आर्द्धधातुके (सार्वधातुके) वेति वचनादार्द्धधातुके न भवति, तदा आनर्त्त, अर्त्तिता, अर्त्तिष्यति, आर्त्तीत्, आर्त्तिष्यत्; अर्त्तित्वा, ऋतित्वा इत्यादि भवति (२)।

"स्तन्भु-स्तुन्भु-स्कन्भु-स्कुन्भु-स्कुञ्भ्यः श्नु श्च [नुः]। एभ्यः कर्त्तृवाचिनि सार्वधातुके श्नु भवति, चकारात् श्ना च। तत्र पञ्चमो धातुषु पठितः व्याख्यातश्च। प्रथमतृतीयौ स्तम्भार्थावकर्मकौ। द्वितीयो निष्कोषणार्थः सकर्म्मकः, चतुर्थो धारणार्थः सकर्म्मकः। सर्वे सेटः, परस्मैपदिनश्च। स्कुञ् धातुस्तु अनिडुभयपदी। उदित्त्वं क्त्वाप्रत्यये इड्विकल्पार्थम्।

स्तन्भ् (उ) लट्—स्तभ्नोति, स्तभ्नुतः, स्तभ्नुवन्ति। स्तभ्नोषि। स्तभ्नोमि, स्तभ्नुवः स्तभ्नुमः। स्तभ्नाति, स्तभ्नीतः, स्तभ्नन्तिः। स्तभ्नामि। इत्यादि।

---

(१) अत्रोपसर्गग्रहणात् धाताविति सिद्धे उपसर्गादृतीत्येव वक्तव्ये पुनर्धातुग्रहणं योगभेदेनाधिकविधानार्थमिति। 'ऋत्यक' इति पाक्षिकः प्रकृतिभावोऽत्र बाध्यते। अत्रोपसर्गग्रहणं प्राद्युपलक्षणमित्येतत्तु यत्र 'उपसर्गादध्वन' इत्यादौ उपसर्गत्वं न सम्भवति तत्रैव, इह तु सम्भवतीति हरदत्तादयः, तेनागता ऋतीयका अत्रं देशम् आर्त्तीयको देश इत्यादौ यत्क्रियायुक्ताः प्रादयस्तं प्रति गत्युपसर्गसंज्ञा इत्यङ्गादीनां गम्यादिक्रियापेक्षयोपसर्गत्वं न तु ऋतीयक्रियापेक्षयेति तां प्रत्युपसर्गत्वाभावादृगुण इति गुणः, 'ऋत्यक' इति शाकलप्रकृतिभावश्च भवतः।

(२) अत्र 'वञ्चिलुञ्च्यृतश्चे'ति सेटः क्त्विविकल्पनात् पक्षे गुणो न 'आयादय आर्द्धधातुके वे'त्यत्रार्द्धधातुकेत्यस्य विषयसप्तमीत्वादार्द्धधातुकेषु विषयभूतेषु आयादय उत्पद्यन्त इत्यर्थः, न तु भूता निवर्त्तन्त इति, अन्यथा ऋतीयशब्दात् लिटि प्रत्ययान्तत्वे नामि ईयप्रत्ययस्य निवृत्तौ अर्त्ताञ्चकारेति स्यात्, आनर्त्तेति च न स्यात्। न चार्त्तितासि अर्त्तिष्यति ऋत्यात् आर्त्तीदित्यादौ परस्मैपदं स्यात्, तथा तासादेरार्द्धधातुकस्ये यङो निवृत्तेर्निमित्तत्वात्तदपेक्षो गुणो 'न धातुलोप आर्द्धधातुक' इति निषेधान्न स्यात्, अनेनाभिप्रायेण गुणाभावः—आर्त्तिष्ट, ऋतिषीष्ट इत्यादि।

विधिलिङ्—स्तभ्नुयात्, स्तभ्नुयाताम्, स्तभ्नुयुः। स्तभ्नुयाः। स्तभ्नुयाम्। स्तभ्नीयात्, स्तभ्नीयाताम् इत्यादि।

लोट्—स्तभ्नोतु, स्तभ्नुतात्; स्तभ्नुताम्, स्तभ्नुवन्तु। स्तभ्नुहि, स्तभ्नुतात्। स्तभ्नवानि। स्तभ्नातु, स्तभ्नीतात्; स्तभ्नीताम्, स्तभ्नन्तु। स्तभान, स्तभ्नीतात्।

लङ्—अस्तभ्नोत्, अस्तभ्नुताम्, अस्तभ्नुवन्। अस्तभ्नोः, अस्तभ्नवम्। अस्तभ्नात्, अस्तभ्नीताम्, अस्तभ्नन्।

लिट्—तस्तम्भ, तस्तम्भतुः, तस्तम्भुः। तस्तम्भिथ, तस्तम्भथुः। तस्तम्भ, तस्तम्भिव, तस्तम्भिम।

लुट्—स्तम्भिता। लृट्—स्तम्भिष्यति।

आशीः—स्तभ्यात्, स्तभ्यास्ताम्, स्तभ्यासुः।

लुङ्—अस्तभत्, अस्तभताम्, अस्तभन्। पक्षे—अस्तम्भीत् इत्यादि।

लृङ्—अस्तम्भिष्यत्। सन्—तिस्तम्भिषति। यङ्—तास्तभ्यते। यङ्लुक्—तास्तम्भीति, तास्तम्भिः। तास्तब्धः। तास्तभति इत्यादि। णिच्—स्तम्भयति। अतस्तम्भत्।

प्रतिष्टभ्नोति। प्रतिष्टभ्नाति, प्रत्यष्टभ्नोत्, अत्यष्टभ्नोत्, प्रत्यष्टभ्नात् इत्यादौ स्तम्भेः 'प्राक्सितादड्व्यवायेऽपी'ति इणन्तादुपसर्गात् परत्वेन षत्वं, तत्राप्रतेरिति नानुवर्त्तते, प्रतितिष्टम्भिषति 'स्थादिष्वभ्यासेने'ति षत्वम्। अवष्टभ्नाति—अवलम्बत इत्यर्थः। अवष्टब्धा सेना—आसन्ना इत्यर्थः, 'अवाच्चालम्बनाविदूर्य्ययो'रिति षत्वम्। प्रत्यतस्तम्भदित्यत्र 'स्तन्भुसिवुसहा'मिति निषेधात् 'स्तम्भे'रिति षत्वं न भवति।

(ङ) स्तम्भित्वा, स्तब्ध्वा। स्तब्धः। प्रतिष्टब्धः। निष्टब्धः। 'प्रतिष्टब्धनिष्टब्धौ'चेति षत्वम्। स्तम्भेरिति सानुषङ्गनिर्देशादयमेव स्तभिः सौत्रो गृह्यते, न त्वत्र भौवादिकः स्तभिनभीति,

प्रतिस्तम्भादयः प्रयोगास्तत्र द्रष्टव्याः। उत्तम्भः—'उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्ये'ति पूर्वसवर्णः सकारः। एवम् उत्तभ्नोतीत्यादि।

स्तुभ्नोति। स्तुभ्नाति। स्कभ्नाति। स्कभ्नोति। स्कुभ्नोति, स्कुभ्नातीति स्तभ्नोतिवत्। विष्कभ्नोति, विष्कभ्नाति, विष्कभ्न इत्यादौ 'वेः स्कभ्नातेर्नित्य'मिति षत्वम्।

साति, सुखे। सतिरिति जिनेन्द्रहरदत्तौ तन्मतेऽयं हेतुमति ण्यन्तः। सातयति। सातयः—'अनुपसर्गाल्लिम्पे'त्यादिना शे अपि गुणायादेशौ।

जु, वेगितायां गतौ। जवति। जोतेत्यादि। स्वरान्तत्वादनिट्त्वम्। जुजूषति। अजीजवत्। णौकृतस्य स्थानिवत्त्वेन अभ्यासस्य उवर्णान्तस्य इत्त्वे दीर्घत्वम्। जवनः—युच्। प्रजवी—इनिः। जूः, जुवौ—क्विप्। जूतिः—क्तिन्। उभयत्र दीर्घनिपातः जवः—'ऋदोरबि'त्यप्। जवसवौ छन्दसीत्यज्विधानं तत्रान्तोदात्तार्थं नतु भाषायामेतद्रूपनिवृत्त्यर्थम्। विजावको नाम देशः, संज्ञायां ण्वुल्। वैजावकः—अण्।

## नामधातवः।

## तत्र परस्मैपदिनः।

"सुप आत्मनः क्यच् [यिन्]"।—आत्मनः पुत्रमिच्छति—पुत्रीयति, पुत्रीयतः, पुत्रीयन्तीत्यादि। पुत्रीयतु। पुत्रीयेत्। अपुत्रीयत्। पुत्रीयाञ्चकार—२। पुत्रीयिता। पुत्रीयिष्यति। पुत्रीय्यात्। अपुत्रीयीत्, अपुत्रीयिष्टाम्, अपुत्रीयिषुः। अपुत्रीयिष्यत्। भावे—पुत्रीय्यते, अपुत्रीयि। आत्मनो मालामिच्छति—मालीयति। मालीयाञ्चकार। अमालीयीत्। मालीयिता। आत्मनो गामिच्छति—गव्यति, इत्यादि। गव्याञ्चकार। गव्यिता। अगव्यीत्। एवं नौ—नाव्यति।

माव्याञ्चकार। नाय्यिता। ईशब्दमिच्छति—ईयति। रै—रायति। राजन्—नलोपे—राजीयति। ऋकार—ऋकारीयति। उपकारीयति। अरमिच्छति—रीयति। ऋकारऌकारयोः सावर्ण्येन अलमिच्छतीत्यादौ—इदमेव रूपम्। कुमारीयति। वधूयति। दधीयति। मधूयति।

तद्—तद्यति। यद्—यद्यति। त्वामिच्छति—त्वद्यति। मामिच्छति—मद्यति। युवां युष्मान् वा—युष्मद्यति। आवाम् अस्मान् वा—अस्मद्यति। * गोय्यति। धूय्यति। दिवमिच्छति—दिव्यति। दीव्यतीति दीर्घस्तु प्राचां प्रामादिक एव। अद-

---

* गव्यितेत्यादौ अतो लोपे 'क्यस्य विभाषे'ति हल उत्तरस्य क्यप्रत्ययकारस्य अर्द्धधातुके विधीयमानो लोपः सन्निपातपरिभाषया न भवति। अगव्यीदित्यत्र 'वद-व्रजे'त्यत्र हल्ग्रहणस्य हल्समुदायस्य प्रत्यग्रार्थत्वेऽपि अल्लोपस्य स्थानिवत्त्वेनाङ्गस्य हलन्तत्वाभावात् न वृद्धिः।

श्लिह्यति। श्लिह्यिता, श्लिहिता। अल्लोपस्य पूर्व्वविधौ स्थानिवत्त्वात् 'न धातुलोप' इति वा लघूपधगुणाभावः। अश्लिहीत्, अश्लिहिष्यत्, अत्राल्लोपस्य स्थानिवत्त्वात् हलन्तलक्षणाया वृद्धेरभावः। पुरमिच्छति—पुर्य्यति दिवमिच्छति—दिव्यतीत्यादौ 'हलि चे'ति दीर्घो रेफवकारान्तस्य धातोर्हल्परत्वे इतीह न भवति। चतुर्य्यति। अत्रापि धातुर्नरेफान्त इति दीर्घो न भवति। गिरमिच्छति—गिर्य्यतीत्यत्र गिर ऋत इत्वे रेफान्तो धातुर्न हल्पर इति। गिर्य्यिता, गिरिता। 'क्यस्य विभाषे'ति यलोपपक्षे हल्परत्वाभावात् न दीर्घः।

त्वद्यतीत्यादौ 'प्रत्ययोत्तरपदयोश्चे' त्येकार्थवृत्तयोर्युष्मदोर्मपर्य्यन्तस्य त्वमादेशौ[त्वन्मदादेशौ, कलाप] भवतः। 'त्वमावेकवचन'इत्यत्र एकस्य वचनम् एकवचनम्, न तु पारिभाषिकमिति स्थिते तत्रापि तस्यैवानुवर्त्तनात् एकार्थानुवृत्तयोरित्युक्तम्। तेन युष्मदस्मच्छब्दौ यदा एकार्थे समासस्तु द्विवह्वर्थस्तदापि त्वमौ भवतः। यथा अतित्वामिच्छति, अतिमामिच्छति—अतित्वद्यति, अतिमद्यति। युवामिच्छति—युष्मद्यति, आवामिच्छति—अस्मद्यति; अतियुवामिच्छति अतियुष्मद्यति, अत्यावामिच्छति अत्यस्मद्यति इत्यादौ युष्मदस्मदोर्द्विवचनत्वेऽपि विभक्तेर्लुप्तत्वेन तत्परत्वाभावात 'युवावौ

स्यति। कर्त्त्रीयति। गार्ग्य—गार्गीयति। वाच्—वाच्यति। अनडुह्यति। उपानह्यति। चतुर्य्यति।

कवीयति। समिध्यति। समिधिता। समिध्धिता। * अह्र्य्यति। आह्र्य्यत्। आह्र्य्यीत्।

"उस्रोमाङ्व्वटः प्रतिषेधः"।—उस्रामैच्छत्—औस्रीयत्। औङ्कारीयत्। औढ़ीयत्।

किमिच्छति। इदमिच्छति। स्वरिच्छति। मान्ताव्यय-प्रतिषेधात् वाक्यमेव। काम्यस्तु भवत्येव। इदं काम्यतीत्यादि।

"अशनायोदन्यधनाया बुभुक्षापिपासागर्द्धेषु"।—अशनायति। उदन्यति। धनायति। बुभुक्षादेरन्यस्मिन्नर्थे—अशनीयति। उदकीयति। धनीयति।

"अश्वक्षीरवृषलवणानामात्मप्रीतौ क्यचि"।—अश्ववृषयोर्मैथुनेच्छायाम्—अश्वस्यति वड़वा। वृषस्यति गौः। क्षीरलवणयोर्लालसायाम्—क्षीरस्यति बालः। लवणस्यति उष्ट्रः।

"सर्वप्रातिपदिकानां क्यचि लालसायां सुगसुकौ"।—दधिस्यति, दध्यस्यति। दधिसिता। दध्यसिता। दधिस्याञ्चकार। अदधिसीत्। अदध्यसीत्। दधिसित्वा। दध्यसित्वा। दधिसितम्, दध्यसितम्। मधुस्यति, मध्वस्यति। पुत्रस्यति। पुत्रस्यात्। पुत्रस्याञ्चकार। अपुत्रसीत्। पुत्रसिष्यति।

"काम्य च"।—पुत्रमात्मन इच्छति—पुत्रकाम्यति। पुत्रकाम्यतु। पुत्रकाम्येत्। अपुत्रकाम्यत्। पुत्रकाम्याञ्चकार।

---

'द्विवचन' इति युवावौ न भवतः। त्वमौ (त्वमदौ) तु अनेकार्थत्वात् न प्रसजतः। अतियुष्मानिच्छति—अतियुष्मयति। अत्यस्मानिच्छति—अत्यस्मयति। प्रकृत्योरनेकार्थत्वादेव त्वमौ न भवतः।

* कलापादिमते सर्वत्र अननिप्रत्यये व्यञ्जनात् परस्य यस्य लोपो विभाषया भवति। तत्तत्प्रयोगा विद्यार्थिभिः प्रयोक्तव्या अस्माभिस्ते नोल्लिखन्ते। यिप्रायोनेच्छन्ति केचित्।

अपुत्रकाम्यत्। पुत्रकाम्यिष्यति। अपुत्रकाम्यिष्यत्। पुत्रकाम्यते। अपुत्रकाम्यि। पुत्रकाम्यित्वा। पुत्रकाम्यितम्। पुत्रकाम्या।

"यस्य हलः"।—यशस्काम्यति। सर्पिष्काम्यति। मान्ताव्ययेभ्योऽप्ययं स्यादेव—किं काम्यति। स्वः काम्यति।

"उपमानादाचारे"।—पुत्रमिवाचरति—पुत्रीयति छात्रम्। विष्णूयति द्विजम्। कवीयति। गुरूयति।

"अधिकरणाच्च"।—प्रासादीयति कुट्यां भिक्षुः। कुटीयति प्रासादे। त्वयीवाचरति—त्वद्यति। मयीवाचरति—मद्यति। तस्मिन्निवाचरति—तद्यति इत्यादि।

## आत्मनेपदिनः।

"कर्त्तुः क्यङ् [ आयि ] सलोपश्च"।—'ओजसोऽप्सरसो नित्यमितरेषां विभाषया।'—कृष्ण इवाचरति कृष्णायते। ओजायते। ओजःशब्दस्तद्वति वर्त्तते वृत्तिविषये। अप्सरायते। अनयोर्नित्यं सलोपः। पयायते, पयस्यते। यशायते, यशस्यते। विद्वायते, विद्वस्यते। त्वद्यते, मद्यते। अनेकार्थे तु—युष्मद्यते, अस्मद्यते। अत्र कलापकारिका—"ओजसोऽप्सरसो नित्यं पयसस्तु विभाषया। आयिलोपश्च विज्ञेयो न चाख्यो गर्दभत्यपि॥" इति पयस इति ओजोऽप्सरोभिन्नसकारान्तोपलक्षणम् इति व्याख्यातारः।

"भृशादिभ्यो भुव्यच्वेर्लोपश्च हलः"।—अभृशो भृशो भवति—भृशायते। 'अच्वेः' इति पर्य्युदासबलात् 'अभूततद्भावे' इति लब्धम्, तेनेह न, क्व दिवा भृशा भवन्ति,—ये रात्रौ भृशा नक्षत्रादयस्ते दिवा क्व भवन्तीत्यर्थः।

"सुमनस्"।—अस्य सलोपः। सुमनायते। स्वमनायत। उन्मनायते। उदमनायत। उदमनायिष्ट।

## उभयपदिनः ।

"लोहितादिडाज्भ्यः क्यष्" ।—वा क्यषः—लोहितायति, लोहितायते । पटपटायति,-ते । यत्तु "लोहितश्यामदुःखानि हर्षगर्वसुखानि च । मूर्च्छानिद्राकृपाधूमाः करुणा नित्यवर्म्मणी" इति पठित्वा श्यामादिभ्योऽपि क्यषि पदद्वयमुदाहरन्ति, तद्भाष्यवार्त्तिकविरुद्धम् । तस्मादेभ्यः क्यङेव—श्यामायते । दुःखादयो वृत्तिविषये तद्वति वर्त्तन्ते । लिङ्गविशिष्टपरिभाषया लोहिनीशब्दादपि क्यष्—लोहिनीयति, लोहिनीयते । *

## आत्मनेपदिनः ।

"कष्टाय कर्म्मणि" ।—कष्टाय क्रमते—कष्टायते, पापं कर्त्तुमुत्सहत इत्यर्थः ।

"सत्रकक्ष-कष्टकृच्छ्रगहनेभ्यः कण्वचिकीर्षाया"मिति वक्तव्यम् ।—कण्वं पापं, सत्रादयो वृत्तिविषये पापार्थाः, तेभ्यो द्वितीयान्तेभ्यश्चिकीर्षायां क्यङ् । पापं चिकीर्षतीत्यस्वपदविग्रहः—सत्रायते, कक्षायत इत्यादि ।

---

* भृशादयस्तु—भृशश्चतृपद्रे हर्षे ह्वच्चोऽथ दुर्मनाः ।

सुमना उन्मना ओजोऽभिमनाश्चपलः शुचिः ।

मन्दमेघमन्द्रभद्रपण्डिताक्षरकाञ्चनाः ।

उत्सुको हरितो नीलः फेनः शीघ्रो भृशादयः ॥

"लोहितडाज्भ्यः क्यष्वचनं भृशादिष्वितराणि" इति वार्त्तिकात् लोहितादिगणे पठिताः मध्ये लोहितवर्ज्जमर्वे व ज्ञेयाः ॥

"लोहितजिह्मश्यामाः सुखदुःखे धूमवर्म्मगर्व्वाश्च ।

हर्षो मूर्च्छा निद्राकृपाश्च करुणादयोऽप्यद्भुतकरणात् ॥"

आख्यातचन्द्रिका ।

"कर्म्मणो रोमन्थतपोभ्यां वर्त्तिचरोः"।—रोमन्थं वर्त्तयति—रोमन्थायते। हनुचलन इति वक्तव्यम्—चर्वितस्याकृष्य पुनश्चर्वणमित्यर्थः। नेह—कीटो रोमन्थं वर्त्तयति।

"वाष्पोष्मभ्यामुद्वमने"।—वाष्पमुद्वमति वाष्पायते। उष्मायते। फेनाच्चेति वाच्यम्—फेनायते।

"शब्दवैरकलहाभ्रकण्वमेघेभ्यः करणे"।—शब्दं करोति शब्दायते। पक्षे—शब्दयति। सुदिनदुर्दिननीहारेभ्यश्च—सुदिनायते इत्यादि।

"क्यङ्मानिनोश्च"।—कुमारीवाचरति—कुमारायते। हरिणीवाचरति—हरितायते। गुर्व्वीवाचरति—गुरूयते। सपत्नीव—सपत्नी[त्नी]यते। युवतिरिव—युवायते। पटीव—पटीयते। मृद्वीव—मृदूयते। श्वश्रूयते। द्रोणीयते। पट्वीमृद्व्योः—पट्वीमृदूयते।

"न कोपधायाः"।—पाचिकायते।

"आचारेऽवगल्भक्लीवहोड़ेभ्यः क्विप् वा"।—अवगल्भते, क्लीवते, होड़ते। अवगल्भाञ्चक्रे, क्लीवाञ्चक्रे होड़ाञ्चक्रे। पक्षे—अवगल्भायते इत्यादि।

"सुखादिभ्यः कर्त्तृवेदनायाम्"।—सुखं वेदयते—सुखायते। कर्त्तृग्रहणादन्यत्र परस्य सुखं वेदयते।

"तपसः परस्मैपदञ्च"।—तपश्चरति—तपस्यति।

"नमोवरिवश्चित्रङः क्यच्"।—नमस्यति पूजयतीत्यर्थः। वरिवस्यति शुश्रूषत इत्यर्थः। चित्रीयते विस्मयत इत्यर्थः। विस्मापयत इत्यन्ये। चित्रङो ङकार आत्मनेपदार्थः।

## परस्मैपदिनः।

"सर्व्वप्रातिपदिकेभ्यः क्विप् वा वक्तव्यः।"—कृष्ण इवाचरति—कृष्णति। कृष्णतु। कृष्णेत्। अकृष्णत्। कृष्णाञ्चकार।

क्षिणिता ! क्षिणिष्यति । क्षण्यात् । अक्षणीत् । चिक्षणिषति । अ इवाचरति—अति, अतः, अन्ति ।

"आतो लोप इटि च" ।—मालेवाचरति—मालाति । लिट् —मालाञ्चकार । लङ्—अमालात् । लुङ्—अमालासीत् । कविरिव—कवयति । आशीः—कवीयात् । लुङ्—अकवयीत् । माधवस्तु नामधातोरपि वृद्धिमिच्छति—अकवायीत् । विरिव— वयति । लिट्—विवाय,विव्यतुः । लुङ्—अवयीत्, अवायीत् । श्रीरिव—श्रयति । लिट्—शिश्राय, शिश्रियतुः । पितेव— पितरति । आशीः—पिचियात् । भूरिव—भवति । लुङ्—अभा- वीत् । लिट्—बुभाव । द्रुरिव—द्रवति । लुङ्—अद्रावीत् ।

"अनुनासिकस्य क्विझलोः" ।—इदमाचरति—इदामति । राजेव—राजानति । पन्था इव—पथीनति । मथीनति । ऋभुक्षीणति । द्यौरिव—देवतीति माधवः । क इव—कति । चकौ इति हरदत्तः । माधवस्तु 'यल्लोपौ' इति वचनात् णलि वृद्धिं बाधित्वातो लोपाच्चक इति रूपमाह । स्व इव—सखौ । सस्व । यत्तु स्वामास स्वाञ्चकारेति तदनाकरमेव । माधवीया ।

## कण्ड्वादयः ।

### सर्वे सेटः ।

१ । कण्डूञ्, गात्रविघर्षणे । कण्डू (ञ) सक, उभयपदी । कण्डूयति, कण्डूयते (१) । कण्डूः—कण्डूयशब्दात् क्विप् यलोपः । औ—कण्ड्वौ । कण्डूतिः—क्तिन् ।

(१) 'कण्ड्वादिभ्यो यक्' इति यक् ।

## परस्मैपदिनः ।

२ । मन्तु, अपराधे । रोष इत्यपरे । अक, प । मन्तूयति । चन्द्रस्तु ञितं पठित्वा मन्तूयते इति चाह । मन्तुः [ मन्तूः ]—क्विप् ।

३ । वल्गु, पूजामाधुर्य्ययोः । वल्गु, प । वल्गूयति ।

४ । असु, [ मनस् ] उपतापे । अक, प । असूयति (१) । असूयुः—उः । असूया—अङ्, टाप् ।

५ । लेट्, लोट्, धौर्त्त्ये पूर्वभावे स्वप्ने च । दीप्तावित्येके । अक, प । लेट्—लेट्यति । लेटिता । लेटाञ्चकार । अलेटीत् । लोट्—लोट्यति, लोटिता । लोटाञ्चकार । अलोटीत् । (२)

## उभयपदी ।

६ । इरज् ईर्ष्यायाम् । इर (ञ) अक, उ । ईर्य्यति, ईर्य्यते (३) ।

## परस्मैपदिनः ।

७ । इयस्, ऐश्वर्य्ये । असुं दुर्गो न पठतीति गणरत्नमहोदधौ । इयस्, अक, प । इयस्यति ।

८ । उषस्, प्रभातीभावे । अक, प । उषस्यति रात्रिः ।

९ । वेद्, धौर्त्त्ये स्वप्ने च । अक, प । वेद्यति ।

---

(१) अत्र वर्द्धमानादयः आद्यनुसारेण असुशब्दमसितिं सान्तं पठित्वा असूञिति दीर्घान्तमेके पठन्तीत्याहुः । तन्मते—असस्यति, असूयति, असूयते इति भवति ।

(२) अत्र लेला दीप्तावित्यपि केचित् ।

(३) अत्र वर्द्धमानहरदत्तौ इरस्, इरज्, इरञ्, ईर्ष्यायामिति त्रीन् पेठतुः तन्मते इरस्यति इरज्यति, ईर्य्यति ।

१० । मेधा, आशुग्रहणे । सक, प । मेधायति । [मेध्यति । ] मेधा ।

११ । कुषुभ्, क्षेपे । सक, प । कुषुभ्यति ।

१२ । मगध, परिवेष्टने । सक, प । मगध्यति ।

१३ । नीच, दास्ये इत्यन्ये । अक, प । नीचति । नीचः ।

१४ । तन्तस्, पम्पस् दुःखे । अक, प । तन्तस्यति । पम्पस्यति ।

## अथ सुखादयः ।

१५ । सुख, दुःख, तत्क्रियायाम् । तच्छब्देन सुखदुःखार्थौ धरामृश्येते । तेन सुखदुःखरूपायां क्रियायामित्यर्थो भवति । अक, प । सुख्यति । दुःख्यति—सुखं दुःखञ्चानुभवतीत्यर्थः ।

१६ । सपर, पूजायाम् । सक, प । सपर्य्यति । अकारान्तोऽयमिति महोदधिः । सपर्य्या—तर्पणम् ।

१७ । अरर, अराकर्म्मणि । अरा प्रतोदा । अक, प । अरर्य्यति ।

## उभयपदी ।

१८ । भिषज्, चिकित्सायाम् । सक, प [ उ ] । भिषज्यति, भिषज्यतः, भिषज्यन्ति । भिषज्येत् । अभिषज्यत् । भिषजाञ्चकार [ भिषज्याञ्चकार ] भिषजिता । भिषजिष्यति । अभिषजिष्यत् । अभिषजीत् । भिषज्यात् । बिभिषजिषति । भिषजयति । अबिभिषजत् । भिषज्यते । अभिषजि । भिषजित्वा । भिषजितम् । भिषक् । कलापादिमते यलोपो विभाषया ज्ञातव्यः । भिषक् । स्त्री—भिषजी ।

## परस्मैपदिन: ।

१९ । भिषज्, उपसेवायाम् सक, प । भिषज्यति ।

२० । इषुध, शरधारणे । अक, प । इषुध्यति ।

२१ । चरण, गतौ । सक, प । चरण्यति । वरण इति भोज:—वरण्यति ।

२२ । चुरण, चौर्य्ये । सक, प । चुरण्यति ।

२३ । तुरण, त्वरायाम् । अक, प । तुरण्यति ।

२४ । भुरण, धारणपोषणयो: । सक, प । भुरण्यति ।

२५ । गद्गद, वाक्स्खलने । अक, प । गद्गद्यति । गद्गदम् ।

२६ । एला, केला खेला, विलासे । अक, प । एलायति । केलायति । खेलायति । अत्र एलास्थाने इला इत्यपरे पठन्ति—इलायति ।

२७ । लेखा, स्खलने च । लेखायति । अदन्तोऽयमित्यन्ये । तत्राती लोप: । अक, प । लेख्यति ।

२८ । लिट्, अल्पार्थे कुत्सायाञ्च । अक, प । लिट्यति ।

२९ । लाट्, जीवने । अक, प । लाट्यति ।

## आत्मनेपदिनौ ।

३० । ह्रणीङ्, रोषणे लज्जायाञ्च । ह्रणी (ङ) अक, आ । ह्रणीयते । "ह्रणीयते वीरवती न भूमि:" इति भट्टि: ।

३१ । महीयङ्, पूजायाम् । महीय (ङ) अक, आ । अत्र पूजा पूज्यमानकर्त्तृका, तेनायमकर्म्मक: । महीयते—पूजामधिगच्छतीत्यर्थ: ।

## परस्मैपदिनः ।

३२। रेखा, श्लाघासादनयोः। आसादनं प्राप्तिः, प्रापणा वा। आदौ अक, परत्र सक, प। रेखायति—श्लाघामनुभवति, अनुभावयतीत्यर्थः।

३३। द्रवस्, परिताप-परिचरणयोः। प। द्रवस्यति।

३४। तिरस्, अन्तर्द्धौ। अक, प। तिरस्यति।

३५। अगद, नीरोगत्वे। अमुं भोजो नेच्छतीति गणरत्न-महोदधौ। अक, प। अगद्यति। लेखायति रेखायतिवदर्थः।

३६। उरस्, बलार्थः। अक, प। उरस्यति—बलवान् भवतीत्यर्थः।

३७। तरण, गतौ। सक, प। तरण्यति।

३८। पयस्, प्रसृतौ। सक, प। पयस्यति।

३९। सम्भूयस्, प्रभूतभावे। अक, प। सम्भूयस्यति। अत्र गणरत्नमहोदधौ अम्बर सम्बर सम्भर इति वामन इति अम्बर्य्यति, सम्बर्य्यति, सम्भर्य्यति। अत्र गणरत्नमहोदधावेव लेट् लोटाविति पठित्वा मतान्तरेण दान्तत्वमुक्त्वा लेव्यति लोव्यतीत्युक्तम्। मतान्तरे दुवस् सन्दीपने दुवस्यतीत्युच्यते। अस्याकृतिगणत्वाद्रेखनादिभ्यो रायति धनायतीति चोक्तम्, यदा कण्ड्वादिभ्यः सन् उत्पद्यते, तदा कण्ड्वादीनां तृतीय-स्यैकाचो द्वे भवत इति कण्डूयियिषतीत्यादि।

"णिङङ्गान्निरसने।"—अङ्गवाचिनः प्रातिपदिकात् निरसने (क्षेपणे)णिङ् भवति। हस्तौ निरस्यति—हस्तयते। अजहस्तत। हस्तयामास। पादौ निरस्यति—पादयते इत्यादि।

"पुच्छभाण्डचीवराण्णिङ्"।—उत्पुच्छयते। उदपुपुच्छत। विपुच्छयते। परिपुच्छयते। भाण्डात् समाचयने—संभाण्डयते,

भाण्डानि समाचिनोति राशीकरोतीत्यर्थः । लङ्—सम-वभाण्डयत । चीवरादर्जने परिधाने च—सञ्चीवरयते भिक्षुः, चीवरमर्जयति परिधत्ते वेत्यर्थः ।

"मुण्डमिश्रश्लक्ष्णलवणव्रतवस्त्रहलकलकृततूस्तेभ्यो णिच्" ।

"प्रातिपदिकाद्धात्वर्थे बहुलमिष्ठवच्च ॥"

—मुण्डं करोति मुण्डयति । व्रताद्भोजनतन्निवृत्त्योः—पयः शूद्रान्नं वा व्रतयति । वस्त्रात् समाच्छादने—संवस्त्रयति ।

हलादिभ्यो ग्रहणे—हलिं कलिं वा गृह्णाति हलयति, कलयति । लुङ्—अजहलत् । अचकलत् । कृतं गृह्णाति—कृत-यति । तूस्तानि विहन्ति—वितूस्तयति । तूस्तं केशा, जटी-भूता केशा इत्यपरे । केचित् पापमिति । 'प्रातिपदिका-द्धात्वर्थे'—इत्येव सिद्धे केषाञ्चिद्ग्रहणं सापेक्षेभ्योऽपि णिजर्थम् —मुण्डयति माणवकम् । मिश्रयति अन्नम् । श्लक्ष्णयति वस्त्रम् । लवणयति व्यञ्जनम् ।

"सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोकसेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्णचुरा-दिभ्यो णिच् ।"—सत्यस्यापुगर्थम्—सत्यं करोति आचष्टे वा—सत्यापयति । अर्थवेदयोरप्यापुग्वक्तव्यः—अर्थापयति, वेदाप-यति । पाशं विमुञ्चति—विपाशयति । रूपं पश्यति—रूपयति वीणया उपगायति—उपवीणयति । तूलेनानुकुष्णाति—अनुतूलयति, तृणाग्रं तूलेनानुघट्टयतीत्यर्थः । श्लोकैरुपस्तौति—उपश्लोकयति । सेनया अभियाति—अभिषेणयति । उपसर्गात्—अभ्यषेणयत् । सन्—अभिषिषेणयिषति । लोमान्यनुमार्ष्टि—अनुलोमयति । त्वचः संवरणे—त्वचं गृह्णाति—त्वचयति । अतत्वचत् । वर्मणा संनह्यति—संवर्मयति । वर्णं गृह्णाति—वर्णयति । चूर्णैरवध्वंसयति—अवचूर्णयति । अवाचुचूर्णत् । सूत्रं करोति—सूत्रयति । असुसूत्रत् । पटुमाचष्टे—पटयति ।

अपोपटत् [अपपटत्] अश्वेनातिक्रामति अश्वयति। आशिश्वत्। हस्तिन्—हस्तयति।

कंसवधमाचष्टे कंसं घातयति*राजागमनमाचष्टे राजानमागमयति। कंसम् अजीघतत्। राजानमजीगमत्। रात्रिं विवासयति। सूर्य्यमुद्गमयति। सूर्य्यमुदजीगमत्। मृगान् रमयति। स्वयं मृगरमणमनुभवन् अन्यस्मै तद्दर्शनमाचष्टे इत्यर्थः।

करिभिरवबध्नाति अवकरयति। परशुना छिनत्ति परशयति। दात्र—दात्रयति। श्वेताश्वमाचष्टे—श्वेतयति। अशिश्वेतत्। शिश्वेतयिषति। अश्वतर—अश्वयति। गालोड़ित—गालोड़यति। ह्वरक—ह्वरयति। मतान्तरे ह्वरकस्थाने आह्वरकपाठः। केचित् श्वेताश्वादीनां चतुर्णां धात्वर्थे णिङ्प्रत्यये यथासंख्यमश्वादीनां लोपे श्वेतयते इत्यादि आत्मनेपदोदाहरणं प्रतिपद्यन्ते। पारायणिकास्त्वर्थवणिचमनुवर्णयन्ति। तदानीं श्वेतयति, श्वेतयते इत्यादि। एनीमाचष्टे—एतयति। दरदमाचष्टे—दारदयति। पृथुं—प्रथयति। लुङ्—अपिप्रथत्, अपप्रथत्। मृदुं—म्रदयति। अमिम्रदत्, अमम्रदत्। भृशं, कृशं, दृढ़ं—भ्रशयति, क्रशयति, द्रढ़यति। लुङ्—अबभ्रशत्, अचक्रशत्, अदद्रढ़त्। अबिभ्रशत्, अचिक्रशत्, अदिद्रढ़त्। परिवृढ़—परिव्रढ़यति। पर्य्यवव्रढ़त्। जड़ि—जड़यति। जड़ि-

---

* "आख्यानात् कृतस्तदाचष्टे कृल्लुक् प्रकृतिः प्रत्यापत्तिः प्रकृतिवच्च कारकम्" इति वार्त्तिकम्। हेतुमण्णिचः प्रकृतेर्हननादेः हेतुमण्णौ यादृशं कारकं धातावनन्तर्भूतं द्वितीयान्तं यादृशञ्च कार्य्यं कुत्वतत्वादि तदिहापीत्यर्थः।

"श्वेताश्वाश्वतरगालोडिताह्वरकाणामश्वतरेतकलोपश्च॥"

"पृथुं मृदुं भृशञ्चैव कृशञ्च दृढ़मेव च।

परिपूर्वं वृढ़ञ्चैव षडेतान् रविधौ स्मरेत्॥"

साख्यत् औजिढ़त्। [औड़िढ़त्] अढ़साख्यत्—औजढ़त्, [औड़ढ़त्] पयस्विनं पयस्विनीं वा पयसयति। अपपयसत्। "प्रत्यन्तं काच्"। त्वमाचष्टे—त्वापयति। त्वां मां वाचष्टे—त्वापयति, मापयति। युवाम्, आवाम् वा आचष्टे—युष्मयति, अस्मयति। श्वानमाचष्टे—शावयति, शूनयतीत्यपि केचित्। विद्वांसमाचष्टे—विद्वयति। विदावयतीत्यपरे। विदयतीति केचित्। उदञ्चमाचष्टे—उदीचयति। लुङ्—उदैचिचत्। प्रत्यञ्चम्—प्रतीचयति। प्रतप्राचिचत्। प्रकृतिभावपक्षे—प्रतिअचिचत्। सम्यञ्चमाचष्टे—समीचयति। सम्यचिचत्, समिअचिचत्। तिर्य्यञ्चमाचष्टे—तिरायति। अतितिरायत्। सध्र्यञ्चमाचष्टे—सध्रायति। असंसध्रायत्। विष्वद्र्यञ्चम्—विष्वद्रायति। अविविष्वद्रायत्। देवद्र्यञ्चम्—देवद्रायति। अदिदेवद्रायत्। अदद्र्यञ्चम्—अदद्रायति। आददद्रायत्। अदमुयञ्चम्—अदमुआययति। आददमुआयत्। अमुमुयञ्चम्—अमुमुआययति। आमुमुमुआयत्। भुवं—भावयति। अबीभवत्। भ्रुवम्—अबुभ्रवत्। श्रियम्—श्राययति। अशिश्रयत्। गाम्—गावयति। अजूगवत्। रायम्—राययति। अरीरयत्। नावम्—नावयति। अनूनवत्। स्वम्—स्वयति। स्वाशस्वत्। स्वर् अव्ययं—स्वयति। असिस्वत्। बह्वम्—भावयति। बह्वयतीत्यन्ये। भूयतीति केचित्। स्रग्विणं—स्रजयति। असस्रजत्। श्रीमतीं श्रीमन्तं वा—श्रययति। अशिश्रयत्। ह्रस्वं—ह्रसयति। क्षिप्रं—क्षेपयति। क्षुद्रं—क्षोदयति। स्थूलं—स्थवयति। अतुस्थवत्। दूरम्—दवयति। अदूदवत्। युवानं—यवयति। कनयति—'युवाल्पयोः' इति वा कन्। अयूयवत्। अचीकनत्। अन्तिकं—नेदयति। अनिनेदत्। बाढं—साधयति। अससाधत्। प्रशस्यं—श्रापयति। अशिश्रपत्। प्रशस्यति। प्राशशसत्।

वृद्धं—ज्यापयति, वर्षयति, अजिज्यपत् । अववर्षत् । प्रियं—प्रापयति । अपिप्रपत् । स्थिरम्—स्थापयति । अतिस्थपत् । स्फिरं—स्फापयति । अपिस्फपत् । उरुम्—वरयति । [वारयति] अवीवरत् । बहुलं—बंहयति । अबबंहत् । गुरुम्—गरयति । अजीगरत् । तृपं—त्रापयति । अतित्रपत् दीर्घं—द्राघयति । अदद्राघत् । वृन्दारकम्—वृन्दयति । अववृन्दत् । *

## अथ प्रत्ययमाला ।

"कण्डूयतेः सन्" । कण्डूयियिषति । क्यजन्तात् सन्—पुपुत्रीयिषति, पुतित्रीयिषति, पुत्रीयियिषति, पुपुतित्रीयियिषति । अशिश्वीयिषति, अश्वीयियिषति । इन्द्रीयतेः सन्—इन्दिद्रीयिषति, इन्द्रीयियिषति । चिचन्द्रीयिषति । चन्दिद्रीयिषति, चन्द्रीयियिषति । चिचन्दिद्रीयियिषति । प्रियमाख्यातुमाचक्षाणं प्रेरयितुं वेच्छति—पिप्रपयिषति, प्रापिपयिषति, प्रापयियिषति । उरुं विवारयिषति, वारिरयिषति, वारयियिषति । वाढं सिसाधयिषतीत्यादि रूपचयम् । यङ्सन्ण्यन्तात् सन्—बोभूयिषयिषति । यङ्णिच्सनन्तात् णिच् बोभूययिषयति ।

---

* "स्थूलदूरयुवह्रस्वक्षिप्रक्षुद्राणां यणादिपरं पूर्वस्य च गुणः ॥" "युवाल्पयोः कनन्यतरस्याम् ।" "विन्मतोर्लुक् ॥" "प्रियस्थिरस्फिरोरुबहुलगुरुवृद्धतृप्रदीर्घवृन्दारकाणां प्रस्थस्फवर्बंहिगर्वर्षत्रप्द्राघिवृन्दाः ।" "अन्तिकबाढयोर्नेदसाधौ ॥" "प्रशस्यस्य श्रः" "ज्य च ।" "वृद्धस्य च ।" इत्यादिगणसूत्राण्यनुसन्धेयानि ॥

समाप्ता नामधातवः ।

## ग्रन्थशेषः ।

येषामनुग्रहत एव विवेकहीनो
विघ्नैः पुनःपुनरपि प्रतिहन्यमानः ।
सङ्कल्पसिद्धिजनितां मुदमस्मु वेऽद्य
तान् मातृतात-चरणान् प्रतमोऽभिवन्दे ॥

---

या सायणेनारचि धातुवृत्तिः
सारं समाकृष्य ततोऽन्यतश्च ।
मयायमारोप्यत "धातुरूप-
कल्पद्रुमः" काम्यफलाय लिप्सोः ॥

राज्ञा श्यामलवर्म्मणा क्रतुकृते यः कान्यकुब्जस्थला-
दानीतः शुनको यशोधर इति ख्यातो यथार्थाभिधः ।
विप्रो वेदविदांवरो बहुतपाः सम्मानसम्पद्युतं
वङ्गान्तर्गतसिद्धविक्रमपुरे संस्थापितश्चादरात् ॥

तत्पवित्रकुलोत्पन्नः सद्विद्याचारभूषितः ।
जनको जयचन्द्रो मे उमा माता तपस्विनी ॥
नवहयाष्टैकशाकाब्दे कृष्णजन्माष्टमीदिने ।
तयोः स्वर्गतयोः पादपद्मेष्वेष समर्प्यते ॥
ढाकाप्रदेशविख्यात-धलच्छलनिवासिना ।
शर्म्मणा गुरुनाथेन कलिकाताप्रवासिना ॥

सम्पूर्णोऽयं ग्रन्थः ।

---

इति शम् । ओं तत्सत् ।

देवाक्षरेण धात्वर्थं व्याख्याय राजभाषया ।
अष्टरामयुगाब्दे संवर्द्ध्य पुनरङ्कितः ।